भाषा विचार और वास्तविकता

बेंजमिन ली व्होर्फ की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का संकलन

सम्पादक तथा भूमिका लेखक
जॉन बी० कैरोल

प्राक्कथन
स्टूअर्ट चेज

अनुवादक
डा० रामनिवास शर्मा
भाषा-विज्ञान विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

This book is the Hindi translation (of the sixth paperback Printing, June 1971) of the original English book entitled—Language, Thought and Reality—by Benjamin Lee Whorf and published by Massachusetts Institute of Technology Cambridge, Massachusetts. The translation rights were obtained by the commission for Scientific and Technical Terminology. It has been brought out under the scheme of Production of University level books sponsored by Govt of India, Ministry of Education and Social Welfare.

प्रथम संस्करण : 1975
प्रतियाँ : 1100
मूल्य : सत्ताईस रुपये पचास पैसे (Rs. 27.50)

मुद्रक : लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

प्रस्तावना

बेंजमिन ली व्होर्फ भापाविज्ञान जैसे अपेक्षाकृत नए विज्ञान के परम विद्वान थे । वे बुद्धिजीवी, अध्ययनशील तथा विचारशील थे । उन्होने भाषा-शिक्षण कही प्राप्त नही किया था, आन्तरिक प्रेरणा के अनुरोध ने उन्हें शब्दो और भापा के अध्ययन के लिए वाध्य किया । उन्होने दो प्रकार के बिल्कुल विभिन्न कार्यो इन्जीनियरी और भापाविज्ञान मे श्रेष्ठता प्राप्त की । व्होर्फ के अनुसार भापा मनुष्य का सर्वोत्तम अलंकरण है, जिसे वह धारण करता है तथा भापाविज्ञान का वास्तविक उद्देश्य भापा के गहन अन्धकार को आलोकित करना है ।

वे समस्त विश्व के लिए एक पद्यति पर आधारित एक ऐसी सामान्य भाषा की रचना करना चाहते थे जिसमे हमारी सभी भाषाओं का सर्वांगीकरण हो सके । उन्होने माया लोगो की लुप्तप्राय लेखन-प्रणाली, मैक्सिको के अज्तेक लोगो और अरिज़ोना के होपियो की भापाओ के विभिन्न क्षेत्रों का सूक्ष्म अध्ययन किया, जो लगभग पूर्णतया उपेक्षित था ।

प्रस्तुत पुस्तक जॉन वी० कैरोल द्वारा व्होर्फ की चुनी हुई रचाओ का सकलन है । इसका प्रकाशन पहली बार 1956 मे हुआ । इसमे व्होर्फ के भापा सबधी ज्ञान, सर्जनात्मक कल्पना तथा भापायी सापेक्षता के विचार आदि विलक्षण गुणो का एक साथ समावेश है । इस पुस्तक मे व्होर्फ के प्राय वे सभी लेख सम्मिलित है जो उनके भापायी सापेक्षता सिद्धान्त के अनुरूप है ।

व्होर्फ ने अर्थ का विश्लेषण करने के लिए भापाविज्ञान को उपकरण के रूप मे प्रयोग करके भापाविज्ञान के क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । उन्होने दो प्रमुख परिकल्पनाएँ की है, पहली यह कि चिन्तन के सभी ऊँचे स्तर भापा पर आश्रित है, और दूसरी के अनुसार एक व्यक्ति द्वारा स्वभाववश प्रयुक्त की जानेवाली भापा की सरचना उसके उस दृष्टिकोण को प्रभावित करती है, जिसके माध्यम से वह अपने वातावरण को समझता है ।

एक वस्तुनिष्ठ विद्वान होने के कारण व्होर्फ ने ऐसी कोई भी तदर्थ सरचना प्रस्तुत नहीं की जिसका परीक्षण न किया जा सके या जिसका सामान्यीकरण न हो सके । यही कारण है कि भापायी सापेक्षता का सिद्धान्त उन लोगो के लिए भी रोचक है, जो भापा विशेषज्ञ नहीं है । इस प्रकार व्होर्फ ने जो सुयोग्यता सामान्य भापाविज्ञान तथा भापा क्षेत्र-पद्यतियो मे अपने प्रशिक्षण रहित अध्ययन के बल पर प्राप्त की, वह असाधारण थी ।

प्रस्तुत पुस्तक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, भाषाविज्ञान के अनुसंधाताओं तथा उन अध्यापकों के लिए उपयोगी है जो भाषाविज्ञान पर मनन चिन्तन कर रहे हैं। **भाषा, विचार और वास्तविकता** अपने विषय की राजरचना है।

शिक्षामन्त्री, हरियाणा एवं अध्यक्ष,
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

निदेशक,
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

अनुवादक की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक बेंजमिन ली व्होर्फ के लेखों के, जॉन बी० कैरोल द्वारा संकलित एवं संपादित रूप Language, thought & Reality, का हिन्दी रूपान्तर है। प्रस्तुत शीर्षक का विधान स्वयं व्होर्फ ने एक ऐसी पुस्तक के लिए किया था जिसे वे कालिज स्तर की पाठ्यपुस्तक के रूप मे लिखना चाहते थे। उस पुस्तक की रूपरेखा मात्र देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि भाग्यवश वह पुस्तक लिख दी गई होती तो आज का भाषाविज्ञान अर्थ-विश्लेषण की दिशा मे बहुत पहले प्रगति कर चुका होता। जॉन बी० कैरोल ने प्रस्तुत संस्करण के लिए यही शीर्षक उपयुक्त समझा और इसमे व्होर्फ के लगभग वे सभी लेख सम्मिलित किये जो उनके भाषायी-सापेक्षता सिद्धान्त के अनुरूप थे, या जिन्हे मध्य अमरीकी भाषा-विज्ञान तथा सामान्य भाषा-विज्ञान के क्षेत्र मे सर्वाधिक रोचक तथा उपयोगी माना जाता है।

व्होर्फ अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न विचारक तथा शोधकर्त्ता थे। साधारण से साधारण तथ्यो एवं घटनाओ पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करना उनका स्वभाव था। भाषाओं का वर्णनात्मक विवरण देने मे वे अत्यधिक कुशल थे, परन्तु विवरण मात्र देने से वे सन्तुष्ट नही होते थे। उनका प्रयत्न भाषा के मूलभूत तत्त्व अर्थात् 'अर्थ' के अन्वेषण की दिशा मे होता था। उन्होंने 'ओलिगोसिन्थीसिस' तथा बायनरी ग्रुपिंग जैसे सिद्धान्तो को विभिन्न भाषाओ मे खोजने का प्रयत्न किया। उनका विचार था कि इन तत्त्वो की सहायता से मानवजाति के लिए एक मूलभूत सामान्य भाषा की रचना की जा सकती है। वे एक ऐसी भावी सामान्य भाषा की कल्पना कर रहे थे जो ध्वनियो के मूलभूत मनोवैज्ञानिक अर्थों से रचित एक ऐसी आदर्श, परन्तु स्वाभाविक भाषा हो जिससे सभी विभिन्न भाषाएँ उस एक भाषा के नियमो मे ढल सकें। व्होर्फ स्वयं मानते थे कि इस समय उनकी बात अत्यन्त कल्पनाशील प्रतीत हो सकती है परन्तु उनका यह दृढ विश्वास था कि वे ऐसे सिद्धान्तो की खोज मे प्रयत्नशील हैं जिनके द्वारा यह कल्पना साकार हो सकती है। उनके उपरोक्त सिद्धान्त अतिरंजित भले ही प्रतीत हो परन्तु उनका प्रस्तुतीकरण अत्यन्त मौलिक एवं विचक्षण था। खेद है कि वे इन सिद्धान्तो का प्रौढ विवरण स्वयं प्रस्तुत नही कर पाए।

अर्थ के प्रति व्होर्फ की रुचि इस बात मे स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने भाषा-विज्ञान को तत्वत. अर्थ की खोज बताया है। यही कारण है कि "भाषा-विज्ञान चिन्तन के सिद्धान्त के लिए अथवा अन्ततोगत्वा सभी मानव सम्बन्धी विज्ञानों

के विश्लेषण के लिये आधारभूत है।" व्होर्फ के अनुसार, "किसी भी सामान्य व्यक्ति को भाषा-विज्ञान ध्वनि प्रभेदो की बाल की खाल निकालने मे अत्यधिक व्यस्त तथा जटिल व्याकरण लिखना हुआ प्रतीत हो सकता है, परन्तु सच्ची बात तो यह है कि इसका वास्तविक ध्येय भाषा के गहन अन्धकार को प्रकाशित करना, तथा उसके द्वारा अधिकांश विचार को, संस्कृति को या किसी समाज के प्रति दृष्टिकोण को प्रकाशित करना है—उस किसी स्वर्णिम पदार्थ के प्रकाश से जिसे मैंने अर्थ के रूपान्तरकारी सिद्धान्त के नाम से पुकारा जाता सुना है।"

अर्थ की उपेक्षा करने के कारण मनोविज्ञान के विभिन्न सम्प्रदायो की कटु आलोचना करते हुए व्होर्फ महोदय ने उन सब को अभावग्रस्त तथा सामान्य मन के सुविचरित वैज्ञानिक सूक्ष्म परीक्षण करने मे असमर्थ पाया। उसका एक-मात्र कारण यह है कि, "किसी भी सम्प्रदाय ने एक सत्य पर बल नही दिया जिसे हम सिद्धान्त का महान तथा सम्भवत. मूलभूत तत्त्व MEANING (अर्थ) शब्द से अभिहित करते है।"

व्होर्फ के सभी लेखो मे अन्ततोगत्वा अर्थ के गम्भीर विशलेषण के दर्शन होते हैं। माया शिलालेखो में माया लोगो की लुप्तप्राय: लेखन पद्धति को पढ़ने का विपय हो, अथवा मैक्सिको के अज्तेक लोगों या अरिज़ोना के होपियों की भाषा के विशलेषण की जटिल समस्या हो; आग लगने के भाषायी कारणो का विवेचन हो, अथवा आदिम समाजों में चिन्तन की परिचर्चा; मानव तथा उसकी संस्कृति का सहसम्बन्ध दिखाने का प्रसंग हो, अथवा भाषा का सम्बन्ध संज्ञान से, चिन्तन से, या बाह्य जगत् की वास्तविकता के साथ दिखाने का सदर्भ हो, भाषा-विज्ञान को सुनिश्चित विज्ञान सिद्ध करने का विषय हो अथवा होपियो की वास्तुकला का भाषायी विशलेषण हो, हम व्होर्फ को मन की गहराईयो में, भाषा की जटिल प्रक्रियाओ मे, मानव की विचित्र संस्कृतियो तथा उनके अभ्यासगत व्यवहारों मे, एक ही तत्त्व की खोज में प्रवृत्त पाते हैं और वह है उनका मौलिक तत्त्व—"अर्थ"। स्टूअर्ट चेज के शब्दो मे "व्होर्फ ने अर्थ का विश्लेपण करने के लिए भाषा-विज्ञान को उपकरण के रूप मे प्रयुक्त करके अर्थ-विज्ञान के क्षेत्र मे एक महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। संचार एवं अर्थ का कोई भी विद्यार्थी उनकी उपेक्षा नही कर सकता। या यू कहिये कि कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति वाला वैज्ञानिक अथवा वैज्ञानिक प्रवृत्ति वाला दार्शनिक उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। व्होर्फ बड़े विश्वास के साथ घोषणा करते है, कि भाषा-विज्ञान चिन्तन के सिद्धान्त का मूलाधार है तथा सभी मानव विज्ञानो के अन्तिम विश्लेषण के लिए इसका ज्ञान आधारभूत है।"

व्होर्फ की चिन्तन प्रणाली अत्यन्त वैज्ञानिक थी। शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए किसी भी वैज्ञानिक को आत्मनिष्ठता के बन्धनो से मुक्त होकर वस्तुनिष्ठता के क्षेत्र में आना पडता है। परन्तु यह कार्य प्रत्यक्ष रूप मे सरल प्रतीत होते हुए भी अत्यन्त दुष्कर है। आत्मनिष्ठता के कुछ बन्धन इतने अदृश्य

तया दृढ होते है कि उनका पता लगाने और उनसे मुक्त होने के लिए एक विशेष प्रकार के मानसिक प्रशिक्षण एवं अभ्यास की आवश्यकता है। वास्तव मे किसी भी व्यक्ति का चिन्तन उस भाषा-विशेष की दया पर निर्भर करता है जो उस समाज मे अभिव्यक्ति का साधन बन चुकी है। चिन्तन प्रणाली को निर्धारित करने वाली भाषायी अभिरचनाओ की जटिल व्यवस्थाएँ व्यक्ति की आलोचनात्मक चेतना से, तथा उसके नियन्त्रण से बाहर होती है। अतः यह धारणा कि हम अपने विचारो को व्यक्त करने मे पूर्णतया स्वतन्त्र है, "एक बहुत बडा भ्रम है।" यह तथ्य वस्तुनिष्ठता का गर्व करने वाले आधुनिक विज्ञान के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। "क्योकि इसका अभिप्राय यह हुआ कि कोई भी व्यक्ति प्रकृति का पूर्णतया निष्पक्ष भाव से वर्णन करने मे समर्थ नही है। अपितु विशेष प्रकार के अर्थ प्रतिपादन से उस समय भी नियन्त्रित होता है जबकि वह अपने आपको सर्वथा मुक्त मानता है।" व्होर्फ के अनुसार इन विषयो मे स्वतन्त्रता के निकट केवल वह भाषा-विज्ञानी हो सकता है जो बहुत सी विविध भाषायी व्यवस्थाओ से परिचित हो।

व्होर्फ ने भाषाओ की नैसर्गिक भिन्नताओ की खोज मे विभिन्न भाषा वर्गो की भाषाओं का गम्भीर अध्ययन किया और उस प्रसिद्ध धारणा की स्थापना की जिसे आज **भाषायी-सापेक्षता सिद्धान्त** के नाम से अभिहित किया जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार भाषायी अभिरचनाएँ स्वयं यह निश्चित करती है कि कोई व्यक्ति इस विश्व को किस प्रकार गोचर करता है तथा इसके विषय मे किस प्रकार सोचता है। अत. भिन्न भाषायी व्यवस्थाओ का प्रयोग करने वाले विभिन्न वर्गो के लोगो का गोचरण एव चिन्तन भिन्न होने के कारण उनका "विश्व-स्वरूप" भी भिन्न होगा। प्रत्येक प्रेक्षक के समक्ष ससार एक विचित्र बहुदर्शी सस्कारों के प्रवाह की भाँति उपस्थित होता है जिसे प्रेक्षक अपने मस्तिष्क मे विराजमान भाषायी व्यवस्थाओ द्वारा ही व्यवस्थित करता है। वह प्रकृति का विभाजन करता है, उसे धारणाओ मे व्यवस्थित करके उन पर महत्त्वो का आरोपण कर देता है; अधिकतर इसलिये कि उन्हे इस प्रकार व्यवस्थित करने की सहमति समस्त भाषा-भाषी जन-समुदाय से प्राप्त होती है, तथा उनके भाषायी ढाँचे के अनुसार ही नियमबद्ध की गई है। यह सत्य है कि सहमति अप्रत्यक्ष एव अनभिव्यक्त है परन्तु सभी शर्ते पूर्णतया आवश्यक है। हम तब तक विचारो को वाग्व्यापार द्वारा अभिव्यक्त नही कर सकते जब तक कि इस सहमति मे निर्दिष्ट शर्तो का पूरी तरह पालन न करें। इसका अभिप्राय यह हुआ कि प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट अभिरचनाएँ हैं तथा इन अभिरचनाओ का सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के साथ महत्त्वपूर्ण कारण-कार्यात्मक सहसम्बन्ध है। ये अभिरचनायें यह निश्चित करती है कि किसी एक संस्कृति मे पला व्यक्ति वास्तविकता का विश्लेषण किस प्रकार करे। दो भिन्न सस्कृतियो मे पले दो प्रेक्षक उसी एक वास्तविकता का नितान्त भिन्न परन्तु मान्य विश्लेषण प्रस्तुत कर सकते हैं। यही

भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त है जिसके अनुसार "सभी प्रेक्षक एक ही भौतिक प्रमाण के द्वारा विश्व का वही रूप नही देख पाते जब तक कि उनकी भाषायी पृष्ठ-भूमियाँ या तो समान न हों या उनका किसी प्रकार से आशकन न किया जा सकता हो ।" भाषा अनुभव की सूचना मात्र देने का कार्य नही करती अपितु उस भाषा को बोलने वाले लोगो के अनुभवो को परिभाषित करने का अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य भी करती है । भाषा न केवल विचारो को अभिव्यक्त करती है अपितु उन्हे रूप भी प्रदान करती है । दार्शनिक जगत् के लिए भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त सर्वथा नया नही है । योरोप मे इस सिद्धान्त के लक्षण अठारवी शताब्दी के उत्तरार्घ मे James Harris, Johann George, Hamann, Johann Gott fried Von Herder प्रभृति विद्वानो की कृतियो मे परिलक्षित होने लगे थे, परन्तु सबसे पहले Wilh elmlvon Humboldt के लेखो मे इस सिद्धान्त ने प्रमुख महत्त्व प्राप्त किया । हम्बोल्ट पहले व्यक्ति थे जिन्होने अपने पूर्ववर्ती दार्शनिको के बिखरे विचारो को एक स्पष्ट तथा व्यवस्थित रूप प्रदान किया तथा भाषायी सापेक्षता को एक प्रौढ सिद्धान्त के रूप मे प्रस्तुत किया । योरोप के अनेक विचारको पर हम्बोल्ट का प्रभाव पड़ता रहा है । बीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जर्मनी के अनेक विद्वानो ने जिन्हे HUMBOLDTIAN भी कहा जाता है, हम्बोल्ट के सिद्धान्तो को पुनरुज्जीवित किया । इनमे Earnst cassirer, Johan Leo weisgerber, Jost Trier, Gunter Ispen प्रभृति विद्वानो के नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

अमरीकी जगत् को इस सिद्धान्त से परिचित कराने का श्रेय फ्रेन्ज बोआस एडवर्ड सपीर तथा बैंजमिन ली व्होर्फ को है । आज इन सिद्धान्तो को मुख्यत सपीर-व्होर्फ परिकल्पना के नाम से अभिहित किया जाता है । यह सत्य है कि भाषायी सापेक्षता से सम्बन्धित परिकल्पना पर व्होर्फ से पहले भी अनेक दार्शनिकों ने अपने विचार प्रकट किए है परन्तु व्होर्फ ऐसे दार्शनिक भाषिक थे जिन्होंने अनेक अकाट्य तर्को द्वारा अपने दृष्टिकोण को प्रौढ एव रोचक ढग से प्रस्तुत किया । व्होर्फ ने अनेक लेखो के माध्यम से इस परिकल्पना की पुष्टि की । इनके ये लेख अमरीकी विद्वानों मे चर्चा के विषय बन गए । कुछ विद्वान इस मत के पक्ष में रहे तो अन्य विद्वानो ने इसकी कटु आलोचना की । परिणामस्वरूप मार्च 1953 मे शिकागो विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग मे एक सम्मेलन हुआ जिसमे भाषा-विज्ञान, नृतत्वविज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा अन्य विपयो के उन विद्वानो ने भाग लिया जो अर्थ की समस्याओ तथा भापा और सस्कृति के अन्य पक्षो के साथ सम्बन्धो मे समान रूप से रुचि रखते थे ।

हैरी होयेर (Harry Hoijer) के अनुसार उस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य "व्होर्फ के लेखो द्वारा प्रस्तुत की गई भाषायी-सापेक्षता परिकल्पना के सन्दर्भ मे उठाई गई उन समस्याओ को स्पष्टतया परिभाषित करना था जो कि भाषा तथा सस्कृति के अन्य पक्षो के पारस्परिक सम्बन्ध को प्रकट करने का प्रयत्न

करती है, साथ ही इन समस्याओं के अध्ययन एवं विश्लेषण के बारे में जो कुछ हुआ है या किया जा रहा है उन सब का पर्यालोचन करना, तथा इस क्षेत्र मे भविष्य में किए जाने वाले शोधकार्य की योजना का विवेचन करना और यदि सम्भव हो सके तो इस क्षेत्र से सम्बन्धित शोधकार्य को समन्वित करना था*।" इस सम्मेलन मे व्होर्फ के पक्ष एवं विपक्ष मे अत्यन्त लाभकारी चर्चाएँ हुई। शोध की वे दिशाएँ प्रस्तावित की गई जिससे भाषा और संस्कृति के सहसम्बन्ध पर महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा सकें। इस सम्मेलन के पश्चात् अनेक विद्वानो ने व्होर्फ के लेखो मे रुचि दिखाई। जॉन० वी० कैरोल ने तीन वर्ष पश्चात् 1956 में व्होर्फ के लेखो का प्रस्तुत संकलन Language, Thought and Reality शीर्षक के अन्तर्गत सम्पादित किया। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर व्होर्फ के सिद्धान्तो को लक्ष्य करके विद्वानो मे एक विवाद सा खडा हो गया। अनेक भाषिकों, मनोवैज्ञानिकों, नृतत्वविज्ञानियों तथा दार्शनिको ने इस विवाद में भाग लिया। अनेक लेख प्रकाशित किए गए, सम्मेलन हुए, तरह तरह की योजनाएँ बनाई गईं, और परीक्षण किए गये। भाषाविज्ञान के क्षेत्र मे व्होर्फ के विचारो का व्यापक प्रभाव पडा। इसके परिणामस्वरूप व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान (Contrastive Linguistics), मनोभाषा-विज्ञान (Psycholinguistics), समाज भाषाविज्ञान (Sociolinguistcs) नृतत्व भाषा-विज्ञान (Anthropological Linguistics) तथा प्रयोगात्मक भाषा-विज्ञान (Applied Linguistics) जैसी नई शाखाओं का सुव्यवस्थित विकास हुआ। इन सभी शाखाओ पर अनेक महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किये जा रहे है।

व्होर्फ के विचार अत्यधिक सूक्ष्म, गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण तथा तकनीकी भी है, अत उनकी विचार संवाहिनी भाषा भी सामान्य स्तर से उठकर कही कही सुबोधता की कोटि को भी लाँघ जाती है। विद्वत्ता के साथ सुबोधता भी बनी रहे यह सम्भव नही। प्रस्तुत अनुवाद करते समय यह प्रयत्न अवश्य किया गया है कि भाषा यथासम्भव सुबोध ही बनी रहे, परन्तु फिर भी यदि अनेक स्थलो पर भाषा मे जटिलता के दर्शन हो तो इसमे अनुवादक के सामर्थ्य की अपनी परिसीमाओ के साथ साथ मूलग्रन्थ की भाषायी जटिलता भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है। वैसे भी प्रत्येक भाषा की अपनी चहेती शाब्दिक तथा व्याकरणिक प्रविधियाँ होती हैं जिनका प्रयोग सूचना देने, विश्लेषण करने तथा अनुभव का वर्गीकरण करने के लिए किया जाता है। इसलिए एक भाषा के विचार दूसरी भाषा मे पूर्णतया सफलतापूर्वक व्यक्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। व्होर्फ का भाषायी-सापेक्षता सिद्धान्त इस तथ्य पर आधारित है। उनके अनुसार भाषा मे परिवर्तन हमारे ब्रह्माण्ड के मूल्यांकन को परिवर्तित कर सकता है। अत. एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद बिना अर्थक्षय के नही किया जा सकता। यह सत्य है कि एक कुशल अनुवादक दोनो भाषाओ की मूल प्रवृत्तियो को समझ कर

*Hoijer Harry; Language in Culture, pp.viii.

अनुवाद को मूल के निकटतम ले जाने का प्रयत्न कर सकता है। जिन विद्वानों को इस पुस्तक का मूल अंग्रेजी रूप पढने का अवसर मिला है वस्तुत वे ही प्रस्तुत अनुवाद की कठिनाईयो का सही मूल्याकन कर सकते है। अमरीका के एक मेधावी दार्शनिक एव भाषा-मर्मज्ञ के विचारो को हिन्दी भाषा-भाषियो के लिए सुलभ बनाने के उद्देश्य से यह प्रयास किया गया है। व्होर्फ के विचारो का किस मात्रा में सही प्रतिनिधित्व हो पाया है इसका निर्णय केवल सुविज्ञ पाठक ही कर सकते है।

आभार प्रदर्शन

मेरा सौभाग्य है कि आदरणीय डा० देवीशंकर द्विवेदी (उस समय अध्यक्ष भाषा-विज्ञान विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) ने प्रस्तुत अनुवाद करने का कार्य मुझे सौपा। उनकी स्नेहमयी प्रेरणा के लिए, जो मुझे सदैव मिलती रही, तथा समय समय पर मिलने वाले अनेक उपयोगी सुझावो के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। साथ मे आदरणीय डा० रमेशचन्द्र मेहरोत्रा, अध्यक्ष, भाषा-विज्ञान विभाग, रायपुर (म० प्र०) के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ, कि उन्होने अनूदित पाण्डुलिपि के कुछ अशो को बड़े मनोयोग मे पढा तथा अनेक उपयोगी सुझाव देकर मुझे प्रोत्साहित किया।

मैं अपने अनुज डा० राजेन्द्र निवास गोड़ (शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय, कुरुक्षेत्र), तथा परिवार के उन सभी सदस्यो के प्रति सस्नेह आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की, तथा गृहस्थ के अनेक दायित्वो से मुझे सर्वथा मुक्त करके इस कार्य को सम्पन्न करने का अवसर प्रदान किया।

हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डा० कृष्ण मधोक के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, उनसे मुझे सौजन्यपूर्ण व्यवहार के साथ साथ सदैव स्निग्ध सहयोग मिलता रहा जिसके बल पर इन दिनो कुछ अस्वस्थ रहते हुए भी इस दुष्कर कार्य को अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर पाया हूँ। श्री मदनमोहन गोस्वामी, डा० पृथ्वीराज कालिया तथा उन सभी व्यक्तियो का मैं आभारी हूँ जिन्होने इस पुस्तक के प्रकाशन मे व्यक्तिगत रुचि लेकर इस कठिन दायित्व को कुशलतापूर्वक निभाया।

रामनिवास शर्मा

विषयसूची

परिशिष्ट

प्राक्कथन

अद्यावधि नितान्त भिन्न प्रतीत होने वाली घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्ध के ज्ञाता महापुरुष का जन्म कभी-कभार ही होता है, जो मानवीय ज्ञान को नए आयाम प्रदान करता है। दिक् और काल की सापेक्षता का निरूपण करने वाला आइन्स्टाइन एक ऐसा ही व्यक्ति था। एक अन्य क्षेत्र मे तथा कुछ विराट् स्तर पर बैन्जमिन ली व्होर्फ (Benjamin Lee Whorf) एक ऐसे ही व्यक्ति थे, जिनकी गणना सम्भवत. एक दिन फ्रैन्ज बोअस (Franz Boas) तथा विलियम जेम्स (William James) जैसे समाज-शास्त्रियो की श्रेणी मे की जाएगी।

भाषा हमारे अन्तरतम विचारो को किस प्रकार एक रूप प्रदान कर सकती है, यह जानने के लिए उन्होंने मानवभाषा एवम् मानवचिन्तन-पद्धति के पारस्परिक सम्बन्ध को अच्छी तरह समझा।

इस प्रकार हमारा परिचय सापेक्षता के एक नए सिद्धान्त से कराया जाता है, जिसके अनुसार सभी प्रेक्षक एक ही भौतिक प्रमाण के द्वारा विश्व का सही रूप नहीं देख पाते; जब तक कि उनकी भाषायी पृष्ठभूमियाँ या तो समान न हों अथवा उनका किसी प्रकार से अंशांकन न किया जा सकता हो।

भारोपीय भाषाओं का मोटे रूप मे अंशांकन इस प्रकार किया जा सकता है: अंग्रेज़ी, फ्रैन्च, जर्मन, रूसी, लैटिन, ग्रीक तथा शेष भाषाएं। परन्तु व्होर्फ का कथन है कि चीनी, माया तथा होपी भाषाओं का अंशांकन सरचनात्मक दृष्टि से यदि असम्भव नही तो कठिन अवश्य है। चीनी भाषा बोलने वाले प्रकृति तथा विश्व का विभाजन पाश्चात्य भाषाभाषियो से भिन्न प्रकार से करते है। अमरीकी-इण्डियनो, अफ्रीकियों तथा बहुत-सी अन्य भाषाएं बोलने वालों के द्वारा प्रकृति तथा विश्व का विभाजन बिल्कुल ही अलग ढंग से किया जाता है।

व्होर्फ भाषाविज्ञान जैसे अपेक्षाकृत नए विज्ञान के परम विद्वान थे। मेरा विश्वास है कि उनके इतने प्रभावशाली होने का एक कारण यह था कि उन्होंने इसका प्रशिक्षण कही प्राप्त नही किया था। उन्होंने एम० आई० टी० (MIT) मे रासायनिक इन्जीनियरी की शिक्षा प्राप्त की, जिससे उन्हे प्रयोगशालीय शोध-विधि एवम् निर्देशन-पद्धति की उपलब्धि हुई। भाषाविज्ञान की उपलब्धियाँ तो उनमें से मानो निचोड़कर निकाली गई थीं। किसी आन्तरिक प्रेरणा के अनुरोध ने ही उन्हे शब्दो और भाषा के अध्ययन के लिए बाध्य किया। यदि आप यह समझते हो कि उन्हे विदेशी भाषाओ पर आधिपत्य प्राप्त करने की भावना ने

बाध्य किया होगा, तो मैं कहूँगा कि नहीं, अपितु किसी भाषा के क्यों और कैसे जैसे प्रश्नों एवम् उसकी अर्थ-वहन करने की क्षमता ने ही, उन्हे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था।

एक लेखक के नाते मेरी रुचि बहुत समय से अर्थ-विज्ञान मे रही है, जिसकी परिभाषा कभी-कभी 'अर्थ का व्यवस्थित अध्ययन' कह कर दी जाती है। मेरे विचार में जिस विषय पर लेखक बात कर रहा है, उस विषय को उसके द्वारा अच्छी तरह जान लेने मे कोई हानि नही। व्होर्फ ने अर्थ का विश्लेषण करने के लिए भाषाविज्ञान को उपकरण के रूप मे प्रयोग करके अर्थविज्ञान के क्षेत्र मे एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सचार एवम् अर्थ का कोई भी विचारशील विद्यार्थी उनकी उपेक्षा नही कर सकता। इस कथन में हम यह भी जोड़ सकते है कि कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति वाला वैज्ञानिक, अथवा वैज्ञानिक प्रवृत्ति वाला दार्शनिक उनकी उपेक्षा नही कर सकता। वे बड़े विश्वास के साथ घोषणा करते हैं कि 'भाषाविज्ञान' चिन्तन के सिद्धान्त का मूलाधार है, तथा सभी मानव-विज्ञानो के अन्तिम विश्लेषण के लिए इसका ज्ञान आधारभूत है। सम्भवतः उनका कथन ठीक है। विज्ञान की प्रत्येक पर्याप्त प्रगति, जैसे कि परिमाणवाद (Quantum Theory) आदि, मे सचार सम्बन्धी सकट उपस्थित हो जाता है। उपलब्धि के सम्बन्ध मे अन्वेषकों को पहले अपने-आपको समझाना पड़ता है और फिर वैज्ञानिक जगत् को इस विषय में जानकारी देनी होती है।

जैसा कि मैं समझ पाया हूँ व्होर्फ ने दो प्रमुख परिकल्पनाए की है :

पहली, कि चिन्तन के सभी ऊँचे स्तर भाषा पर आश्रित हैं ;

दूसरी, कि एक व्यक्ति द्वारा स्वभाववश प्रयुक्त की जाने वाली भाषा की सरचना उसके उस दृष्टिकोण को प्रभावित करती है, जिसके माध्यम से वह अपने वातावरण को समझता है। विश्व का चित्र एक भाषा से दूसरी भाषा मे बदल जाता है।

II

प्रथम परिकल्पना को पर्याप्त मात्रा मे समुचित वैज्ञानिक समर्थन प्राप्त है। उदाहरण के लिए जीव-विज्ञानी जूलियन हक्सले (Julian Huxley) का कथन है कि शब्द सम्बन्धी धारणाओं के विकास द्वारा ही मानव के चिन्तन की समस्त आगामी उपलब्धियो के लिए द्वार खुला है। व्होर्फ के अनुसार भाषा मनुष्य का सर्वोत्तम अलकरण है, जिसे वह धारण करता है। दूसरे प्राणियो ने अपरिष्कृत सचार-व्यवस्था का विकास किया है, परन्तु वास्तविक भाषा का नही। मानव-जाति को पाल पोषकर जवान करने मे, मानव-सम्प्रदायो को सगठित करने, तथा सस्कृति के प्रवाह को पीढी-दर-पीढी अविच्छिन्न बनाए रखने मे भाषा एक प्रमुख कारण है। हक्सलें तो यहाँ तक कहने का साहस करते है कि सस्कृति के माध्यम से रूपान्तरण ,जो निस्सन्देह भाषा पर आधारित है, विकास की जैविक प्रक्रियाओ का सम्भवतः विस्थापन करता है। उदाहरण के लिए, अब

आगामी हिमयुग आएगा तो मानव-प्राणी (Homo Sapians) फर पैदा करने की अपेक्षा वातानुकूलित-सयन्त्रो का उत्पादन बढ़ा देगा ।

दार्शनिको एवम् जीवविद्या-विशेषज्ञो की दृष्टि मे तर्क करने की शक्ति ही 'मनुष्य की विलक्षणता' का कारण है । पजो, दाँतो, मोटी खाल, पैरों की द्रुतगति या शारीरिक शक्ति द्वारा ही सुरक्षित न रह पाने के कारण मानव-प्राणी को आपत्ति के कठिन क्षणो मे निकल भागने का मार्ग झाँकना पड़ता है । यही चिन्तन अपना अस्तित्व वनाए रखने के लिए उसका सवसे वडा शस्त्र वना रहा है।

सम्भवत प्रत्येक व्यक्ति विचारो के इतने तीव्र ववण्डर का अनुभव करता है कि उसे शब्दो द्वारा व्यक्त नही किया जा सकता । लिखते समय प्रायः मेरे साथ ऐसा ही होता है । परन्तु विचारो के इन आकस्मिक ववण्डरो से निपटने से पहले, मैं उन्हे शब्दो मे अभिव्यक्त करता हूँ तथा उन शब्दो को शान्तिपूर्ण चिन्तन या वहस के लिए लिख लेता हूँ । विचारो के ऐसे ववण्डर जो शब्दवद्ध नही हो पाए, लिखित रूप मे कभी भी उपलब्ध नही हो सकेंगे।

सम्भवत. व्होर्फ की प्रारम्भिक परिकल्पना का 'कार चलाने' के साथ एक अच्छा सादृश्य दिखाया जा सकता है। सीधी सडको पर चालक के चालन-चक्के पर रखे गए हाथ का मार्ग-निर्देशन करने के लिए प्रकाश की लहरे तथा ध्वनि की लहरे पर्याप्त रहती है। परन्तु घास के भरे चौराहो के वीच से गुजरने के लिए, अथवा सड़को के नक्शे पढने के लिए, सहज क्रिया से कुछ अधिक ध्यान की आवश्यकता पडेगी । एक वहुत चतुर वनमानुष (चिम्पैन्जी) पहला कार्य करना तो सीख सकता है, परन्तु दूसरा कार्य सदा ही उसके सामर्थ्य के वाहर रहेगा ।

III

प्रेक्षण स्थल एवम् प्रयोगशालाओं[1] मे परिश्रम करने से जी चुराने वाले यूनानी लोग, जोकि मानसिक रूप से वहुत ही सक्रिय थे, तर्क तथा विवेचन के क्षेत्र मे प्रवेश करने वालो मे प्रथम थे । अपने प्रतिवादी को वाद-विवाद मे तथा कानूनी वहस मे किस प्रकार हराया जा सकता है तथा राजनीतिक आन्दोलनो मे सर्वाधिक प्रभावशाली नारे किस प्रकार चुने जाते है—युवको को यह सव सिखाने वाले कूटतार्किक (Sophist) प्रकटत. एजियन के मेडीसिन एवेन्यू ब्वायज (Madison-avenue boys of the Aegean) ही थे । अरस्तू ने निगमन का आविष्कार किया, तथा तादात्म्य के नियम से आरम्भ करते हुए विचार के तीन नियमो (Three Laws of Thought) का निर्माण किया, जिनके अनुसार ए, ए है, ('A' is 'A') अव भी, और सदा के लिए भी—जिसके विरुद्ध कभी-कभी हम सर्वविशारदों, विरोध भी प्रकट करते है ।

---

1. इतिहासकार जेम्स हार्वे राबिन्सन (James Harvey Robinson) यहाँ अधिक संख्या में दासों की उपस्थिति को इनका कारण बताता है।

यूनानी यह मान कर चलते थे कि भाषा का आधार एक सार्वलौकिक तर्क का अदूषित सार है, तथा यह तत्त्व सभी प्राणियो मे समान रूप से मिलता है, कम-से-कम सभी चिन्तनशील व्यक्तियो मे तो अवश्य ही। उनका विश्वास था कि शब्द वह माध्यम है जिससे यह गूढतर दीप्ति अभिव्यक्ति प्राप्त करती है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि किसी भी भाषा में अभिव्यक्त की गई विचारधारा का अनुवाद, अन्य भाषा मे बिना किसी अर्थक्षय के किया जा सकता है ।

विशेष रूप से शैक्षिक केन्द्रो मे यह मत 2500 वर्षों तक निरन्तर बना रहा है। व्होर्फ अपनी दूसरी मुख्य परिकल्पना मे इसे स्पष्ट रूप से चुनौती देते है । उनका कहना है कि भाषा मे परिवर्तन, हमारे ब्रह्माण्ड के मूल्याकन को रूपान्तरित कर सकता है ।

सयुक्त-राष्ट्र के कुशल अनुवादकों का प्रतिदिन का अनुभव भी पर्याप्त मात्रा मे उनका समर्थन करता है। उदाहरणार्थ, रॉकफेलर फाउण्डेशन (Rockefeller Foundation) के अनुदान से सहायता प्राप्त राज्य विभाग के एडमण्ड एस० ग्लेन (Edmund S. Glenn) ने भाषा[2] के कारण धारणाओं मे भेद का रहस्य जानने के लिए सयुक्त राष्ट्र की ढेर सारी अनूदित लिपियो की जाँच-पड़ताल की। श्री ग्लेन ने जो दृष्टान्त एकत्रित किए उनमे एक अग्रेज़ी भाषी, 'I assume' **'मैं मानता हूँ'** कहता है, तो फ्रासीसी दुभाषिया 'I deduce' **'मैं अनुमान करता हूँ'** कहता है जबकि एक रूसी दुभाषिया 'I consider' **'मैं विचार करता हूँ'** कहता है—परन्तु तब तक 'धारणा' का भाव ही समाप्त हो चुका होता है।

लगभग एक से 20 उदाहरणों को अलग करके, श्री ग्लेन ने यह निष्कर्ष निकाला कि अनुवाद तकनीक जबकि प्रकट रूप मे बिल्कुल सहज प्रतीत होता है, किन्तु रूसी और अग्रेजी बोलने वाले प्रतिनिधियो के बीच ऐसी स्थितियो मे सचार की मात्रा शून्य प्रतीत होती है। इन दृष्टान्तो के सम्बन्ध मे यदि भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं को बोलने वाली पाश्चात्य जातियो मे कुछ इस प्रकार की कठिनाई हो सकती है, तो यह आश्चर्य की बात नही है कि बिल्कुल भिन्न परिवारों की भाषाओ मे इससे कही अधिक चौडी दरार मुँह फाड़ती प्रतीत होती है, जैसे होपी इण्डियनो की भाषा तथा अग्रेजी के बीच । यही वह क्षेत्र है जिसे व्होर्फ ने अत्यधिक परिश्रम से विकसित किया, और जिसे उसने मुख्यरूप से अपनी भाषायी सापेक्षता की धारणा का आधार बनाया।

अग्रेज़ी भाषा मे हम कहते हैं 'Look at that wave' (उस लहर को देखिए), परन्तु प्रकृति मे लहर कभी एकल तथ्य के रूप मे घटित नही होती।

---

2. Peter T. White, 'The Interpreter : Linguist plus Diplomat' New york Times Magazine, November 6, 1955.

एक होपी भाषी कहता है 'Look at that slosh'। होपी का वह शब्द, जिसका अंग्रेज़ी निकटतम पर्याय Slosh है, जलराशि मे गति का द्योतन करने वाली लहर की गति की भौतिकता के अधिक अनुरूप है।

हम अंग्रेज़ी भाषा मे कहते हैं 'The light flashed' (एक रोशनी चमकी)। एक चमक उत्पन्न करने के लिए यहाँ किसी चीज़ की आवश्यकता अनिवार्य है। Light (रोशनी) उद्देश्य है, और Flash (चमकी) विधेय। आधुनिक भौतिकी की प्रवृत्ति, जिसका मुख्य बल क्षेत्र पर है, उद्देश्य-विधेय आदि तर्क वाक्यो से दूर है। इस प्रकार एक होपी-इण्डियन अधिक अच्छा भौतिक-विज्ञानी है, जब वह पूरी घटना के लिए केवल एक शब्द *Reh-pi*—flash बोलता है, न उद्देश्य, न विधेय, और न ही कोई काल-तत्त्व। प्राय: हम प्रकृति मे अदृश्य इकाइयो का अनुमान करते हैं, जो अचानक प्रकट होती हैं, और अन्य चमत्कार दिखाती हैं। क्या हम उन्हे इस लिए प्रस्तुत करते हैं कि हमारे कुछ क्रियापदो को अपने से पहले कुछ संज्ञाओ की आवश्यकता पड़ती है ?

एक होपी के विचारो मे घटनाओ के विषय मे स्थान (स्पेस) तथा काल दोनो ही सम्मिलित रहते है, क्योकि उसके जगत् सम्बन्धी विचारो में इन दोनो मे से कोई भी अकेला नही होता। इस प्रकार उसकी भाषा क्रियापदो के लिए कालो के विना ही सुचारु रूप से चलती है और स्वभावत: उसे स्पेस-काल के अर्थों मे सोचने की अनुमति देती है। आइस्टाइन (Einstein) की सापेक्षता को पूरी तरह समझने के लिए एक पाश्चात्य व्यक्ति को अपनी बोलचाल की भाषा को छोडना पड़ता है, तथा 'कलन' की भाषा को अपनाना पड़ता है। परन्तु व्होर्फ के कथन का अभिप्राय यह है कि एक होपीभाषी ने अपने अन्दर एक प्रकार का कलन (Calculus) बना रखा है।

"अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रांसीसी या इटालियन में भावों का रूपात्मक व्यवस्थीकरण उस समय अपर्याप्त एवम् नीरस प्रतीत होता है"—जब विशेष प्रकार के तथ्यो के वर्गों का विवेचन करने के लिए उनका मुकाबला अमरीण्डियन भाषाओं के लचीलेपन एवम् ऋजुता से किया जाता है। व्होर्फ हमे पाश्चात्य लोगो के सम्मुख आने वाली पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग की, लिंग सम्बन्धी कठिनाई का निर्देशन देते हैं, तथा हमारे अन्दर स्वभावजन्य 'द्विमूल्य परक' 'either-or' (या 'यह'—या 'वह') तर्क का निरूपण करते हैं।

क्या यहां होपी भाषा हमारी अन्यमित अंग्रेज़ी भाषा से अधिक ऊँचा चिन्तन-स्तर एवम् परिस्थिति का अधिक विवेकशील विश्लेषण प्रस्तुत करती है ? हाँ, यह करती है। इन क्षेत्र में तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में अंग्रेज़ी भाषा होपी की तुलना में ऐसे है, जैसे एक लाठी तलवार की तुलना में।

अन्य प्रश्न-वर्गों के विषय मे अंग्रेज़ी तलवार हो सकती है और होपी भाषा लाठी। दोनो ही भाषाएं अपने-अपने बोलने वालो के अनुभवो एवम् समस्याओं

के निमित्त सदियों से, मुख्यत: अचेतन रूप में विकसित होती आई है, और हम इनमे से किसी एक को अधिक ऊँची अथवा अधिक परिष्कृत नही कह सकते, क्योकि मानव-समाज, सामग्रियो की प्राप्ति तथा उपभोग के विषय मे जबकि अत्यधिक भिन्न है, तो भाषा मे परिलक्षित होने वाला मानव-मन, आदिम ढग से कार्य करने के कोई दृष्टात प्रस्तुत नही करता...... "अमरीकी-इण्डियन भाषाओ एवम् अफ्रीकी भाषाओ मे कारणता, गति, परिणाम, गतिशील या ऊर्जायुक्त गुण, अनुभव की प्रत्यक्षता, चिन्तनकार्य के सभी विषय, निस्सन्देह विवेकशीलता का सार आदि के सूक्ष्मतया रचित, सुन्दर ढग से तर्कसगत प्रभेदो का बाहुल्य है।"

जैसा कि आप श्री कैरोल (Caroll) द्वारा लिखित उत्कृष्ट जीवन-चरित मे देखेंगे कि व्होर्फ ने अमरीकी-इण्डियन भाषाओ के अध्ययन के प्रारम्भिक चरणो मे ही कुछ माया शिलालेखो तथा तेपोज्त्लान (Tepoztlan) के एक अज्तेक मन्दिर के शिलालेख मे समानता का पता लगा लिया था। मैं भी उस चट्टानी मन्दिर पर उसी वर्ष सन् 1930 मे चढा था, भले ही मेरा उद्देश्य चित्रलिपियो को पढना नही था। अज्तेक के साथ-साथ उन्होने माया का अध्ययन भी जोड लिया और फिर होपी भाषा भी सम्मिलित कर ली। उन्होने इन तीनो मे से अन्तिम को सर्वाधिक सूक्ष्म एवम् अभिव्यजक पाया तथा होपी भाषा के शब्द-कोश का सम्पादन भी किया, जो आज तक अप्रकाशित है। यदि वे अपनी इण्डियन भाषाओ के प्रति नीरस वैज्ञानिक होने की अपेक्षा कुछ अधिक स्नेह-शील है, तो उन्हे क्षमा कर देना बहुत आसान बात है।

IV

ऊपर दिए गए उद्धरणों में से बहुत से उद्धरण मैंने एक ऐसे निबन्ध से लिए है, जो अब तक अप्रकाशित था तथा जिसे व्होर्फ ने 1936 मे लिखा था। यह निबन्ध इस पुस्तक का छठा अध्याय है। इसमे आदिम जातियों की विचार-प्रक्रियाओ का विवेचन किया गया है। उन्होने इसे एच० जी० वेल्स (H. G. Wells) एच० एल० मेनकेन (H. L. Mencken) तथा सपीर (Sapır) जैसे कुछ अन्य विशिष्ट भाषा-वैज्ञानिको के पास भेजने की योजना बनाई थी। अच्छा होता यदि उन्होने ऐसा कर दिया होता क्योकि इस निबन्ध मे उनके ज्ञान, सर्जनात्मक कल्पना, भाषायी सापेक्षता का विचार, तथा उनकी भविष्य के लिए आशाए इत्यादि सभी विलक्षण गुणो का एक साथ समावेश है। मुझ जैसे साधारण व्यक्ति की समझ मे निबन्ध का सार इस प्रकार है:

सार्वभौमिक मानव-विचार का कोई एक तात्विक संग्रह नहीं है। विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले विश्व को विभिन्न प्रकार से देखते है, विभिन्न प्रकार से उसका मूल्य आँकते है —कभी बहुत कम, और कभी बहुत अधिक। चिन्तन सीखी गई भाषा से सापेक्ष होता है। आदिम भाषाएँ कोई नहीं है।

बहुत सी अज्ञात भाषाओं के विश्वसम्बन्धी रूप को खोजने के लिए शोधकार्य की आवश्यकता है। इनमें से अब कुछ भाषाओं के लुप्त हो जाने का भय है।

किसी समय एक पद्धति पर शायद कभी एक वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का विकास करना सम्भव हो जाए। किसी दिन सभी जातियाँ भाषा की पूरी क्षमता का प्रयोग करेंगी और हमसे अधिक स्पष्ट रूप में मननचिन्तन कर सकेंगी।

सिद्धान्ततः इसका अर्थ भाषायी सापेक्षता का अन्त हो सकता है, परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि पहाड़ लाँघ लिया गया है। अगला महान कार्य भाषा के ऐसे नए रूपों को गढ़ना होगा जो हमें वास्तविकता के अधिक समीप ला सकें, तथा हमारी क्षमता की ऊर्जा बढ़ा सकें। "जहाँ तक हम भविष्य का पूर्वाभास कर सकें, उसे हमें मानसिक विकास के अर्थों में ही करना चाहिए।"

हम सब के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि बैन्जमिन ली व्होर्फ के मानसिक विकास का असमय ही अवच्छेद हो गया।

स्टूअर्ट चेज़

जार्जटाऊन कनैक्टीकट
23 नवम्बर, 1955

भूमिका

बैन्जमिन ली व्होर्फ (Benjamin Lee Whorf) के जीवन का विवरण, एक ओर तो विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न व्यापारी के रूप में दिया जा सकता है। वे उन कतिपय व्यक्तियों में से एक हैं जो सामान्य प्रशिक्षण तथा ज्ञान के प्रयोग, लगन एवं सूक्ष्मदर्शिता के योग से किसी भी प्रकार की व्यावसायिक संस्था के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। दूसरी ओर उनके जीवन का विवरण असाधारण रूप से योग्य तथा अध्यवसायी शोधकर्ता के रूप में दिया जा सकता है, जिसने माया लोगों की लुप्तप्राय: लेखन-प्रणाली का तथा मैक्सिको के अज़्तेक लोगों और अरिज़ोना के होपियों की भाषाओं के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन किया, जो लगभग पूर्णतया उपेक्षित थे। इनमें से कोई भी एक विवरण जीवनकथा लिखने के उद्देश्य से व्होर्फ को विशेष रोचक बना सकने में असमर्थ है तथापि, जब इस बात की पूरी अनुभूति हो जाती है कि उनमें दोनों ही जीवन-वृत्तियों का समानरूप से योग है, अर्थात् एक ओर तो उन्होंने व्यापारिक गतिविधियों में मान्यता प्राप्त की, और साथ ही वे विद्वत्ता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा के उच्च शिखर पर जा पहुँचे (यह प्रतिष्ठा उन्होंने किसी उच्चतर प्रमाणपत्र द्वारा प्रमाणित होने वाले औपचारिक प्रशिक्षण के सामान्य प्रारम्भिक ज्ञान को प्राप्त किए बिना ही प्राप्त की; इसके अतिरिक्त 'मानव तथा उसकी संस्कृति' पर चल रहे समसामयिक वाद-विवादों में उन्होंने 'भाषा का चिन्तन तथा संज्ञान के साथ सम्बन्ध' के विषय में चुनौती देने वाले परिकल्पित सिद्धान्तों के एक वर्ग का समावेश कराया) तो उनका जीवन-चरित साधारण दिलचस्पी से कहीं अधिक रुचि का विषय बन जाता है।

उनका जन्म 24 अप्रैल 1897 में मेसाच्यूसेट्स (Massachusetts) में विन्थ्रोप (Winthrop) में हुआ था, तथा वे हेरी चर्च (Harry Church) और साराह इडना ली व्होर्फ (Sarah Edna (Lee) Whorf) के पुत्र थे। वे पुरानी अमरीकी जाति के वंशज थे, तथा यात्रियों के उतरने के तुरन्त बाद ही उनके पूर्वज इंग्लैंड से प्रोविन्स टाऊन (Province-town) तथा बे-कालोनी (Bay-Colony) के अन्य भागों में बसने के लिए आए थे। इंग्लैण्ड में व्होर्फ नाम योर्कशायर के वेस्ट राइडिंग (West Riding) में पर्याप्त रूप से पाया जाता है, तथा उस प्रदेश में बहने वाली व्होर्फे (Whorfe) नदी के नाम के साथ शायद इस नाम का कोई अस्पष्ट सम्बंध हो।

बेन्जमिन और उनके दो छोटे भाई अपनी व्यक्तिगत विशिष्टताओं के होते हुए भी बहुत मिलते-जुलते थे। बेन्जमिन बुद्धिजीवी, अध्ययनशील तथा विचार-शील थे। जॉन (John) जिनका जन्म 1903 मे हुआ, एक प्रसिद्ध कलाकार बने। विशेष रूप से वे जलरंगो की चित्रकारी के क्षेत्र मे प्रसिद्ध हुए। रिचर्ड (Richard) जिनका जन्म 1906 मे हुआ, ने चलचित्रो तथा रगमच के अभिनेता तथा निर्देशक का वैशिष्ट्य प्राप्त किया।

उनके बुद्धिजीवी पिता कलाकार तथा नाटककार थे। मेसाच्यूसेट्स की शिल्प-विज्ञान सस्था मे उदासीन से विद्यार्थी के रूप ,मे थोडा-सा जीवन बिताकर,. (ऐसा कहा जाता है, कि उन्होंने इन्जीनियरी के अध्ययन मे प्रवृत्त होने की रुचि प्रकट नही की) हेरी चर्च व्होर्फ (Harry Church Whorf) ने वाणिज्य-कला में, जिसे वे डिजाइनिंग कहते थे, अपने को प्रवृत्त किया। डिजाइनिग एक ऐसा व्यवसाय था जिसमे उन्होने अपनी नक्शानवीसी की प्रतिभा तथा उर्वर कल्पना का सदुपयोग किया। इस कार्य मे वे बहुत अधिक सफल रहे। धुलाई पाउडर के कनस्तरो के चारो ओर अकित डच कन्याओ की शृखला का प्रसिद्ध मार्का उनकी शेष कृतियों मे आज भी उपलब्ध है। उन्होने पत्थर पर फोटो उतार कर, उससे छापने की तेजी से विकसित होने वाली कला मे स्वय को प्रवीण कर लिया। परन्तु वे अपने व्यवसाय की सीमाओ के भीतर ही बँधे रहने मे सन्तुष्ट नही थे। उन्होने अपने कलात्मक गुणो का बहुत से साहसी कार्यों के लिए प्रयोग किया। इन कार्यों मे रगमच तथा डिज़ाइनिग अग्रगण्य थे। उन्होने गिरजाघरो तथा धर्मार्थ सस्थाओ के लिए भी नाटक लिखे तथा उनका निर्देशन भी किया। उन्होने बॉबी शैफ्टो (Bobby-Shafto) के लिए एक सगीतात्मक सुखान्त नाटक लिवरेटो (Libretto) भी लिखा था जो एक बार बोस्टन (Boston) मे खेला भी गया। उन्हे विविध विषयो पर सजीव एवं सचित्र भाषण देने मे बहुत आनन्द आता था तथा स्पष्ट ही वे श्रोतागण का मनोरजन करने मे बहुत दक्ष थे। 1934 मे अपनी मृत्यु के समय भी वे मेसाच्यूसेट्स के तटवर्ती क्षेत्र के भू-विज्ञान, इतिहास, जीव-जन्तु तथा वनस्पति आदि से सम्बन्धित एक पाण्डुलिपि पर काम कर रहे थे।

अपनी प्रथम सन्तान के जन्म से पूर्व भी हेरी व्होर्फ तथा उनकी पत्नी, विन्थ्रोप के एक साधारण से मकान मे रह रहे थे, जो उत्तर मे बोस्टन बन्दरगाह के पास ही प्रायद्वीप पर स्थित एक आवासक्षेत्रीय उपनगर था। घर मे पिता द्वारा किए गए आरेखण-चित्रो, पुस्तको, पाण्डुलिपियो, रसायनो, चित्रकला सम्बन्धी उपकरणो तथा कुछ फुटकर सामग्री के सग्रह द्वारा असाधारण रूप से कुतूहली तथा जिज्ञासु तीनो लड़को को एक प्रेरक वातावरण प्राप्त हुआ। तीनो ही लडके इस सामग्री से लाभ उठा सकने वाली प्रतिभा से सम्पन्न थे। अपने छोटे भाइयो के समान बेन्जमिन ने शीघ्र ही ड्राइग मे पर्याप्त कौशल प्राप्त कर लिया, परन्तु रसायनो, रंगो तथा फोटोग्राफी के उपकरणों ने उन्हे सबसे अधिक आकृष्ट

किया। उन्हें ऐसे प्रयोग करने बहुत अच्छे लगते थे, जैसे एक ही पात्र में विभिन्न रंगों से विभिन्न तहें बनाना। रसायनों से सम्बन्धित इन प्रथम अनुभवों ने ही बेन्जमिन को बाद में मेसाच्यूसेट्स शिल्प-विज्ञान संस्था में रासायनिक इन्जीनियरी का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया होगा ।

वे हाई स्कूल के पश्चात् विन्थ्रोप के पब्लिक स्कूल में गए, जहाँ बताया जाता है कि उन्होंने अच्छा काम किया। हमें यह भी बताया जाता है कि उन्होंने अपनी एकाग्रता की शक्तियों का विकास इसी समय किया, यहाँ तक कि यह एकाग्रता कभी-कभी स्पष्ट अन्यमनस्कता की सीमा तक पहुँच जाती थी। एक बार कोयले की टोकरी भरने के लिए उन्हें कोठड़ी में भेजा गया, उन्होंने इसे भरा और रसोई में अंगीठी के पास उसके स्थान पर न ले जाकर उसे वे सीधे अपने कमरे में ले आए। (उनके बाद के जीवन में, उनके मित्र प्रायः कभी-कभी यह शिकायत करते थे कि गली में वे पहचानने का आभास तक न देकर पास से गुज़र जाते थे।) यद्यपि वे विशेष सबल नहीं थे तो भी आसपास के छेड़खानी करने वाले लड़कों से अपने छोटे भाइयों को बचाने के लिए उन्हें अपनी शारीरिक शक्ति पर काफी विश्वास था । उन्हें विशेष रूप से जॉन के साथ जो उनसे 6 वर्ष छोटा था, बौद्धिक खेल खेलना बहुत भाता था। गूढ़ संकेतिकी का खेल उनका प्रिय खेल था। बेन्जमिन अपने भाई के द्वारा बनाई गई जटिल से जटिल समस्या-लिपियों का समाधान कर लेते थे । इसी बीच, जब अकेले होते तो बेन्जमिन अत्यन्त उत्सुकता से पढ़ते और विनोदपूर्ण पदों की रचना करके अपना मनो-रंजन करते ।

सन् 1914 में विन्थ्रोप हाई स्कूल से स्नातकीय उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने रासायनिक इन्जीनियरी (कोर्स 10) को मुख्य रूप से ग्रहण कर मेसाच्यूसेट्स शिल्प-विज्ञान संस्था में प्रवेश प्राप्त किया । वहाँ उनकी शैक्षिक प्रगति केवल सामान्य स्तर की प्रतीत होती है। उनके रिकार्ड से यह पता चलता है कि उन्हें सर्वोच्च कोटि के अंक कभी प्राप्त नहीं हुए, (यहाँ H साधारणतया आजकल के A से मिलता है) । यहां तक कि अंग्रेज़ी अथवा फ्रेंच निबन्ध-लेखन में भी उन्हें कभी अच्छे नम्बर नहीं मिले। निस्सन्देह, यह उस सन्दिग्ध सम्बन्ध पर एक टिप्पणी है जो कालेज में आँकी गई योग्यता तथा बाद के जीवन की वास्तविक योग्यता के बीच रहता है। अपने अन्तिम वर्ष के शरत् सत्र में आर० ओ० टी० सी० (ROTC) के ग्रीष्मकालीन कैम्प में एक रहस्यमय रोग के लग जाने से व्होर्फ को कक्षा से अनुपस्थित रहने के लिए बाध्य होना पड़ा, तथा उन कमियों को पूरा करने की आवश्यकता ने आगामी ग्रीष्म ऋतु में रासायनिक इन्जी-नियरी में विज्ञान के स्नातक की उपाधि की प्राप्ति को अक्तूबर 1918 तक के लिए स्थगित कर दिया।

हम नहीं जानते कि जब वे एम० आई० टी० (M I T) में विद्यार्थी थे तो व्होर्फ ने अपने लिए किस प्रकार के व्यावसायिक जीवन की योजना

बनाई थी। सम्भवतः वे किसी प्रकार के रसायन-उत्पादन-केन्द्र अथवा किसी कारखाने मे इन्जीनियर के रूप मे नौकरी पाने की आशा रखते थे। उनका व्यावसायिक जीवन अत्यन्त असाधारण सिद्ध होना था, क्योंकि वे ऐसे विषय में विशेषज्ञ के रूप मे उभरे, जो उस समय उनके स्कूल के द्वारा भी इन्जीनियरी का एक अलग क्षेत्र वडी मुश्किल से माना जाता था, और इस विषय मे उन्होंने एम० आई० टी० के विद्यार्थी-परिषद् को एक पत्र मे शिकायत भी की थी। सन् 1919 मे एम० आई० टी० से स्नातकीय उपाधि ग्रहण करने के कुछ ही समय वाद एक कम्पनी ने उन्हे अग्नि-रक्षा इन्जीनियरी मे प्रशिक्षार्थी के रूप मे चुना तथा मृत्यु पर्यन्त 22 वर्ष तक उन्हे नियुक्ति पर रखा। हर्टफोर्ड अग्नि बीमा कम्पनी (Hartford Fire Insurance Company) की समिति के अध्यक्ष सी० एस० क्रेमर (C. S Kremer) के द्वारा तैयार किए गए व्यौरे के अनुसार उनका चुनाव कम्पनी के एक अधिकारी श्री एफ० सी मूर (Mr. F. C. Moore) द्वारा किया गया था जो स्वयं भी एम० आई० टी० का स्नातक था, तथा जिस पर स्वतः चालित फव्वारो से युक्त इमारतो के बीमे करने एव उनका प्रवन्ध करने का उत्तरदायित्व था। मूर के द्वारा अग्नि-निवारक इन्जीनियरो के लिए चलाए गए कम्पनी के स्कूल से स्नातकीय उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् व्होर्फ को देश के उत्तर-पूर्व भाग मे कम्पनी के द्वारा बीमा की गई सम्पत्तियो के अग्नि-निवारक-निरीक्षण-कार्य मे सहायता करने के लिए हर्टफोर्ड मे कम्पनी के गृह-मन्त्रालय मे नियुक्त किया गया। कम्पनी एक ऐसे कार्य का विकास करना प्रारम्भ कर रही थी जो उस समय व्यापार के क्षेत्र मे एक नया विचार था, अर्थात् सम्पत्ति-स्वामियों तथा पालिसी-धारको की सेवा के रूप मे अग्नि-निवारक इन्जीनियरी निरीक्षण। इस कार्य के लिए उन्हे निरन्तर यात्राए करनी पडी, और वे इस कार्य मे अत्यन्त कुशल हो गए। उनके सम्वध मे क्रेमर लिखते है, 'मेरे विचार से वे वहुत थोडे समय मे ही इतने दक्ष एवम् विचक्षण अग्नि-निवारक-निरीक्षक वन गए, जितना कि आज तक कोई भी न वन सका। वे अत्यधिक व्यावहारिक थे। तथ्यो के रूप मे वे जो कुछ जानते थे, उसे उन्होंने कुछ विभिन्न उत्पादक व्यापारो के इन्जीनियरो तथा कुशल व्यक्तियो को सिखा दिया।" उन्होंने उन सयन्त्रो के निरीक्षण मे अधिकाधिक विशिष्टता प्राप्त की जो उत्पादन मे रासायनिक प्रक्रियाओ का प्रयोग करते थे।

एक वार जव वे एक रासायनिक सयन्त्र का निरीक्षण कर रहे थे, तो उन्हे किसी विशेष इमारत मे अन्दर जाने से इस आधार पर रोक दिया गया कि इसमे एक गोपनीय प्रक्रिया है। यहाँ तक कि उस सयन्त्र के अध्यक्ष ने भी, जिसके लिए वे पत्र भी लाए थे, आग्रह किया कि कोई भी वाहरी व्यक्ति इस इमारत को नही देख सकता। व्होर्फ ने कहा—क्या आप ऐसी ऐसी चीजें वना रहे है? उत्तर 'हाँ' मे था। इस पर व्होर्फ ने एक कागज़ उठाया, जल्दी से एक रासायनिक सूत्र उस पर लिखा, तथा वह कागज़ उस सयन्त्र के अध्यक्ष को यह कहते हुए सौप दिया—"मेरे विचार मे आप यही कुछ कर रहे है?" आश्चर्य-चकित निर्माता ने उत्तर दिया, "मि०

व्होर्फ आप यह सब कैसे जान गए ?" इसका उत्तर व्होर्फ ने बड़ी शान्ति से दिया : "आप अन्य किसी प्रक्रिया से इसे बना ही नहीं सकते थे।" यह कहने की आवश्यकता नहीं कि तब उन्हें उस इमारत में प्रवेश कराया गया जिसमें वह गुप्त प्रक्रिया चालू थी।

रासायनिक निर्माताओं में उनका इतना अधिक सम्मान होता था कि उनकी सलाह बड़ी उत्सुकता से ली जाती थी। कनेक्टीकट (Connecticut) में एक बहुत ही पेचीदे रासायनिक संयन्त्र के निरीक्षण में उन्होंने प्रबन्धकों को सुझाव दिया कि किसी विशेष प्रक्रिया को तब तक छोड़ दिया जाए जब तक कि उसे अधिक सुरक्षित न बना लिया जाए, तथा यह भी संकेत दिया कि यह कैसे किया जा सकता है। सुझाए गए सुधार को कार्यान्वित कर लेने के कुछ समय पश्चात् प्रबन्धकों ने उस प्रक्रिया को तब तक रोके रखा जब तक कि व्होर्फ वहाँ वापिस न लौट आए, और उन्होंने कार्य को आगे बढ़ाने की अनुमति न दे दी।

जो लोग व्होर्फ के केवल भाषा-वैज्ञानिक कार्य को ही जानते हैं, उनको यह बड़ा अजीब लगेगा कि व्होर्फ की प्रशंसा न केवल उनके तकनीकी कौशल के लिए ही की जाती थी, बल्कि अपनी कम्पनी के लिए व्यापार को बढ़ावा देने की उनकी योग्यता की भी प्रशंसा की जाती थी। एक बार उनसे कुछ पब्लिक स्कूलों के अग्नि-निवारक-निरीक्षण के लिए कहा गया जिनसे कम्पनी को मामूली सी रकम मिल सकती थी। उनके द्वारा प्रस्तावित सुझावों ने विद्यालय के प्रबन्धकों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने व्होर्फ की कम्पनी को, अपने बीमे के लेखे-जोखे का प्रबन्धक नियुक्त करने का निर्णय किया। यह स्थानीय कार्यकर्ता के लिए बहुत आश्चर्य की बात थी, क्योंकि उसे इस विशेष विद्यालय के प्रबन्धकों तक पहुँच पाना सदा कठिन लगता था।

व्होर्फ के नियोजकों द्वारा उनकी सेवाओं के महत्त्व की विशिष्टता, सन् 1928 में उनकी विशेष कार्यकर्ता के रूप में नियुक्ति तथा 1940 में कम्पनी के सहायक-सैक्रेटरी के रूप में चुनाव से प्रकट हो जाती है। ऐसा रहा होगा कि कम्पनी को उनके भाषा-विज्ञान तथा मानव-विज्ञान के क्षेत्र में कार्यों पर गर्व था, तथा हम जानते हैं कि कम्पनी इन गतिविधियों[1] को जारी रखने के लिए उन्हें आकस्मिक अवकाश देने में बहुत उदार भी थी। परन्तु प्रमुखतया उनका मूल्य अपने नियोजक के लिए की गई वास्तविक सेवाओं के लिए समझा जाता था, जो अवश्य ही साधारण न होकर बहुत उच्च श्रेणी की रही होंगी। यह निस्सन्देह अनोखी बात है कि उन्होंने बिल्कुल विभिन्न दो प्रकार के कार्यों में श्रेष्ठता प्राप्त की। यद्यपि उनके जीवनकाल

---

1. फिर भी, इन यात्राओं पर व्होर्फ प्रायः व्यापार को विज्ञान के साथ जोड़ लेते थे। सन् 1930 में मैक्सिको की क्षेत्रीय यात्रा के दौरान उन्होंने कम्पनी की मैक्सिको शहर की एजन्सी का भी निरीक्षण किया तथा अपनी उपलब्धियों एवम् प्रस्तावों की एक विस्तृत रिपोर्ट भी लिखी।

की कुछ विशेष अवधि मे किया गया पाण्डित्यपूर्ण कार्य, जीवन-पर्यन्त काम करने वाले अन्य बहुत से रिसर्च प्रोफेसरो के काम की बराबरी करने के लिए काफी था, तो भी वे अपने व्यापारिक कार्यो के लिए काम के प्रत्येक दिन लगभग आठ घण्टे लगाया करते थे। उनके मित्र प्राय. इस विषय मे अन्दाज़े लगाया करते थे कि उन्होने इस व्यवसाय मे ही रहना क्यो चुना। यद्यपि उनके जीवन के अन्तिम वर्षो मे कुछ शैक्षिक शोध-सस्थानो पर कार्य करने का प्रस्ताव उनके सामने रखा गया, परन्तु उन्होने निश्चित रूप से यह कह कर उन्हे अस्वीकार कर दिया कि उनकी वर्तमान व्यापारिक स्थिति उन्हे अधिक सुखकर जीवन तथा अपने ढग से बौद्धिक अभिरुचियो को विकसित करने के लिए अधिक स्वतन्त्र अवसर प्रदान करती है।

बीमा कार्य, भाषायी अध्ययन तथा विस्तृत अध्ययन मानो उनको व्यस्त रखने के लिए काफी न थे। वे कुछ एक सामाजिक कार्यो जैसे हर्टफोर्ड चैम्बर ऑफ कामर्स (Hartford Chamber of Commerce) की अग्नि-निवारक- कमेटी की सेवा आदि के लिए समय निकाल लेते थे। लगभग 1928 के पश्चात् वे 'मेन्ज़ क्लब' (Men's Club), ऐतिहासिक सोसायटियो, तथा इसी प्रकार की कुछ अन्य सस्थाओ के समक्ष एक व्याख्याता के रूप मे बहुत अधिक प्रसिद्ध हो गए।[2]

सन् 1920 मे उन्होने सेलिया इनेज पेखम (Celia Inez Packham) से विवाह किया, और उनके तीन सन्ताने हुई—रेमण्ड बेन (Remond Ben), राबर्ट पेखम (Robert Packham) तथा सेलिया ली (Celia Lee)। लगभग कुछ उसी ढग से जैसे कि उनके पिता ने उनके लिए किया था, उन्होने भी मानो चुम्बकीय प्रतिष्ठान के द्वारा अपनी आनन्दप्रद कौतुहल तथा निर्बाध कल्पना को उन बच्चो मे प्रवेश कराया।

उनके अपने ही कथनानुसार व्होर्फ की सन् 1924 तक भाषाविज्ञान मे कोई रुचि नही थी, परन्तु कोई भी व्यक्ति उन बौद्धिक उमगो की तरगो की परम्परा को देख सकता है, जिन्होने व्होर्फ को भाषाविज्ञान मे रुचि के लिए प्रेरित किया। किशोरावस्था मे ही रासायनिक प्रयोगो मे व्यस्त रहने के साथ-साथ वे पढ़ने के लिए बहुत लालायित रहते थे। हमे पता चला है कि प्रेसकॉट (Prescott) की 'मैक्सिको की विजय' (Conquest of Mexico) कई बार पढकर उनकी रुचि मध्यकालीन अमरीकी प्राग्-इतिहास (Middle American Pre-history) मे हो गई थी। एक बार उनके पिता एक माया राजकुमारी के विषय मे

2. व्होर्फ से मेरा परिचय उस भाषण के सुनने के परिणाम-स्वरूप बढ़ा, जो उन्होंने हर्टफोर्ड के बाल-संग्रहालय में 1 दिसम्बर 1929 को दिया था। उस भाषण का शीर्षक, जैसा कि Chalk talk में घोषित किया गया—"मैक्सिको के अज्तेक व माया-इण्डियन" था।

लिखे गए नाटक के लिए रंगमंच की रचना करने में लगे हुए थे। इस सम्बन्ध में उन्होंने माया पुरातत्त्व से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों का संकलन किया। युवा बेन में रंगमंच अभिरचना के उस परिणामी प्रदर्शन से बहुत कौतूहल जागृत हुआ, जिसमें निश्चय ही माया मन्दिरों के अलंकृत अग्रभाग चित्रित थे तथा सम्भवत: यहीं से उन्होंने माया चित्रलेखों के अर्थ के विषय में जिज्ञासा करनी आरम्भ की होगी। जैसा कि पहले बताया गया है, उनकी कूटलिपि में अभिरुचि ने ही इस कौतूहल को प्रबल किया होगा। परन्तु यदि ऐसा ही था, तो बहुत समय तक यह कौतूहल प्रसुप्त रहा। इसके स्थान पर उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर काफी समय बिताना आरम्भ कर दिया। उनकी रुचि वनस्पति-विज्ञान में हो गई तथा उन्होंने हज़ारों पौधों और वृक्षों के लिए अंग्रेज़ी तथा लैटिन भाषा के नाम सीख लिए। (यह उनकी स्थायी रुचि थी। सन् 1930 में अपनी मैक्सिको की यात्रा पर उन्होंने मैक्सिकन वनस्पति पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिखीं और सन् 1936 में अपनी भाषायी नोटबुक के पृष्ठों पर हम उन द्वारा वनस्पतिशास्त्रीय शब्दावली तथा कौतूहलों पर प्रश्न-चिह्न लगे देखते हैं।) इसके विरोध में कुछ समय के लिए उनकी रुचि ज्योतिषशास्त्र में बहुत अधिक हो गई तथा अपने मित्रों के लिए जन्म-पत्रियाँ बनाकर वे अपना मनोरंजन किया करते थे। किशोरावस्था में ही वे ऐसे लक्षण प्रकट करने लगे थे जिन्हें लेखन सनक का रोग (Pathalogical-grapho-mania) कहा जा सकता है, क्योंकि 17 वर्ष की आयु में ही उन्होंने दैनन्दिनी लिखना प्रारम्भ कर दिया था। यह एक ऐसा अभ्यास था जिसे उन्होंने आजीवन बनाए रखा। उन्होंने एक प्रकार की गुप्त-लेखन-विधि का आविष्कार किया, जिसका प्रयोग वे यदाकदा अपनी दैनन्दिनी के कुछ अंशों को छिपाने के लिए किया करते थे, एवम् जिसका प्रयोग 'स्वप्नग्रन्थमाला' के लिए अपने स्वप्नों को लिखने के लिए भी करते थे।

हर्टफोर्ड में बस जाने के कुछ ही समय बाद विज्ञान एवम् धर्म के तथाकथित विरोध के विषय में व्होर्फ अधिकाधिक चिन्तन करने लगे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे गिरजाघरों के पादरियों द्वारा दिए गए संस्कारों के रूढ़िवादी विचारों से अत्यन्त प्रभावित थे, जो कभी-कभी विज्ञान के आधुनिकतम सिद्धान्तों का विरोध करते हुए प्रतीत होते हैं। इस विषय में वे इतने लीन हो गए कि उन्होंने इस विषय पर 1,30,000 शब्दों की एक पाण्डुलिपि लिखी, जिसे उपन्यास के रूप में धार्मिक दर्शन की एक पुस्तक कहा जाता है। यह पाण्डुलिपि जो 1925 में सम्पन्न हुई, प्रकाशकों के पास भेजी गई, और व्होर्फ के विरोध करने पर भी इसे सभी प्रकाशकों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। एक अन्य संक्षिप्त पाण्डुलिपि लगभग इसी समय पूरी हुई, जिसका शीर्षक था, 'Why I have discarded Evolution' (मैंने विकास को क्यों नकारा)। उत्पत्तिशास्त्र के जिस प्रसिद्ध विद्वान को यह पाण्डुलिपि समीक्षार्थ भेजी गई, उसने व्होर्फ के प्रत्येक तर्क का क्रमानुसार विनम्रतापूर्ण खण्डन करते हुए उत्तर दिया कि यद्यपि यह पाण्डुलिपि पहले-पहल तो किसी सनकी व्यक्ति

की रचना प्रतीत हुई किन्तु शीघ्र ही इसके कौशल एवम् बोधात्मकता ने इसे अन्यथा सिद्ध किया।

इसी बीच व्होर्फ के अध्ययन ने उसे यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया कि विश्वोत्पत्ति और विकास सम्बन्धी वाईवल तथा वैज्ञानिक लेखे-जोखों के बीच स्पष्ट असगति शायद 'ओल्ड, टेस्टामैण्ट' के पैने भाषायी भाष्य मे निहित है। इसी कारण सन् 1924 मे उन्होने अपना मन हिब्रू भाषा के अध्ययन की ओर लगाया।

कुछ लोगो को शायद यह बहुत आश्चर्य की वात लगे कि भाषाविज्ञान मे व्होर्फ की रुचि उनकी धर्म मे रुचि से उत्पन्न हुई थी। प्रसग वश पाठक को उस महत्त्वपूर्ण सम्वन्ध का भी स्मरण कराया जा सकता है, जो वहुत समय से भाषायी एवम् धार्मिक प्रयत्नो मे रहा है—जैसे Septuagint मे प्रतिनिधित भाषा-विज्ञान सम्बन्धी कार्य मे, तथा लिखित गॉथिक की उलफिलास की रचना मे, जिसमे उसने वाईवल का अनुवाद किया था, ये सम्बन्ध मिलते हैं; साथ ही 17वी तथा 18वी शताब्दी में धर्मार्थ नियुक्त व्यक्तियो के द्वारा सैकडो यूरोपीय भाषाओ के अध्ययन मे, और समकालीन भाषायी प्रतिनिधियो द्वारा किए गए पूर्णतया वैज्ञानिक अन्वेषणो मे ये सम्बन्ध स्पष्ट रूप से मिलते है। साधारणत: व्होर्फ की रुचि वाईवल के किसी भी अनुवाद में नही थी, वे गम्भीरतापूर्वक विश्वास करते थे कि वाईवल के अर्थविज्ञान के नए दृष्टिकोण से ही मौलिक मानवीय तथा दार्शनिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। हम नही जानते कि वे इस निष्कर्ष पर स्वतन्त्र रूप से ही पहुँचे थे, या नही। हमे इतना पता है कि सन् 1924 के आसपास एक पुस्तक उनके ध्यान मे आई जो उनके विचारो को पुष्ट कर सकी होगी, तथा जिसने कम-से-कम उन्हे भाषाविज्ञान के अधिक सन्निकट खीच लिया होगा। वे अव तक अप्रकाशित परन्तु प्रस्तुत सग्रह मे छपे एक लेख मे स्वयं इस वात का प्रमाण देते है। यह पुस्तक जिसका ज्ञान समकालीन विद्वानो को भी वहुत कम था, एक फ्रासीसी नाटककार तथा भाषावैज्ञानिक एवं 19वी शताब्दी (1768–1824) के पूर्वार्द्ध के रहस्यवादी एण्टोइने फेब्रे डी ओलिवेट (Antoine Febre d' Olivet) की रचना थी। इसका शीर्षक *La Langue he braique restituee* था। यह पेरिस से 1815-16 मे 2 जिल्दो मे प्रकाशित हुई थी। सम्भवत: व्होर्फ ने इस दुर्लभ कृति का अग्रेजी अनुवाद पढा था, क्योकि इसके अनुवादक नया लुइस रेडफील्ड (Nayan Louise Red-field) का नाम उनके नोट्स मे आया है।[3]

Grand dictionnaire universal du xix siecle) के अनुसार फेब्रे डी ओलिवेट की मृत्यु हो गई "aliec le reputation d'un

3. कुमारी रेडफील्ड ने, जो कई वर्षों तक हर्टफोर्ड में रहीं, फेब्रे डी ओलिवेट की कई कृतियों का अनुवाद किया था।

fou ou d'un visionnaire" । वे एक उदासीन नाटककार थे तथा अपने जीवन के उत्तरकाल में वे गहन भाषावैज्ञानिक पाण्डित्यपूर्ण रचनाओं की ओर प्रवृत्त हुए । अपनी पुस्तक *La langue hebraique* में, जो कि इस क्षेत्र में उनकी महान कृति है, उन्होंने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि *Book of genesis* के गूढ़ार्थ को हिब्रू त्रिव्यंजन धातु की संरचना के आमूल विश्लेषण से स्पष्ट किया जा सकता है । उनके अनुसार हिब्रू वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण में एक अन्तर्निहित अर्थ है:—उदाहरणार्थ Aleph वर्ण उनकी दृष्टि में 'विचारों की शक्ति, एवम् स्थिरता, तथा एकता का चिह्न है तथा उसको निश्चित करने वाले सिद्धान्त का प्रतीक है।' वर्ण Yodh' menifestation आविर्भूति का प्रतीक था । फेब्रे डी ओलिवेट लिखते हैं, कि "इस प्रकार आंशिक धातु, Aleph-yodh अथवा waw, उस केन्द्र का, द्योतन करती है जिसकी ओर इच्छा प्रवृत्त होती है, उस स्थान का, जहाँ वह अपने आप को स्थिर करती है; तथा क्रिया के उस क्षेत्र का द्योतन करती है, जहाँ यह कार्य करती है।" क्योंकि उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था कि Tsadhe वर्ण 'अन्त' का द्योतन करता है, अत: उन्हें यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ कि त्रिव्यंजन धातु Aleph-yodh (or waw)-Tsadhe का अर्थ था 'किसी अन्त की ओर प्रवृत्त होने वाली कोई इच्छा'। यह धातु-चिह्न का सिद्धान्त हिब्रू व्याकरण के सभी भागों, तथा कई सौ हिब्रू धातुओं के अर्थ-निर्णय पर लागू किया गया था।

यह सारा कार्य अंशत: भाषा के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालने के लिए भाषायी अध्ययन के रूप में, (उन्होंने दावा किया कि उन्हें यह चुनने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि क्या चीनी, संस्कृत या हिब्रू उनकी योजना का आधार बन सकती हैं) तथा आंशिक रूप से, मूसा के सृष्टिशास्त्र के गूढ़ अर्थ को खोज निकालने की उनकी इच्छा की पूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया था। अंग्रेज़ी के उस अनुवाद में, जिसे फेब्रे डी ओलिवेट ने कृपा करके प्रस्तुत किया था, बाईबल की पहली पंक्ति इस प्रकार है—"AT-FIRST-IN-PRINCIPLE (सबसे पहले-सिद्धान्त-में); उसने एलोहिम (AElohim) को उत्पन्न किया, (उसने अस्तित्व में आने के लिए प्रेरित किया, उसने सिद्धान्त-रूप में प्रादुर्भूत किया, उसने देवताओं को, भूतों के आदिभूत को उत्पन्न किया), जो स्वलोकों का स्वयं आत्म-स्वरूप, तथा भूलोक का स्वयं आत्म-स्वरूप था।" वे यह टिप्पणी भी करते हैं कि यह किसी उस व्यवस्था का 'परिणाममात्र' नहीं है, जिस व्यवस्था को उसने 'लगभग सुखद सम्भावनाओं या अटकलों' के आधार पर स्थापित किया है, परन्तु यह मूसा की 'वास्तविक भाषा' है, जिसकी मैंने उन संरचनात्मक सिद्धान्तों के अनुसार व्याख्या की है, जिन्हें सन्तोषप्रद सीमा तक विकसित करने के लिए मैंने बहुत ही परिश्रम किया है।

फेब्रे डी ओलिवेट के आश्चर्यजनक परिणामों की सन्दिग्धता के पश्चात् भी प्रतीत होता है कि उनकी पुस्तक ने व्होर्फ पर गहरा प्रभाव डाला, जिन्होंने

बाद में उसे किसी भी युग के शक्तिशाली भाषायी-प्रतिभा-युक्त व्यक्तियों में से एक बताया था। व्होर्फ का विश्वास था कि फेब्रे डी ओलिवेट द्वारा दिए गए बाईबल सम्बन्धी भाष्यो के प्रयत्नो को बहुत महत्त्व नही दिया जा सकता, परन्तु उनका 'धातु-चिह्न' वास्तविक रूप मे उस तथ्य का पूर्वाभास था, जिसे आजकल Phoneme (स्वनिम) कहा जाता है। जिस बात ने व्होर्फ को आकर्षित किया वह थी फेब्रे डी ओलिवेट की प्रणाली। उदाहरण के लिए हिब्रू वर्णमाला के वर्णो के अर्थों का निश्चयीकरण करने के लिए फेब्रे ने, जिन-जिन धातुओ मे वे वर्ण आते थे, उन धातुओ के विविध रूपों की तुलना तथा विरोध बहुत कुछ इस तरह से किया, जैसे कि कोई अग्रेजी वर्ण 'एम' (M) का अर्थ निश्चित करने के लिए अग्रेजी के सभी 'एम' (M) से आरम्भ होने वाले सामान्य शब्दो मे इनके सामान्य अर्थ को निकालने का प्रयत्न करे। हम यह कल्पना कर सकते है कि फेब्रे, 'मदर' (Mother) और 'मर्डर' (Murder) जैसे विरोधी शब्दो मे भी सामान्य तत्त्व पा सके होगे। किन्ही सीमाओ तक ही यह प्रणाली आगे धकेली जा सकती है, परन्तु फेब्रे उन सीमाओ का भी उल्लघन कर चुके थे। तथापि यह सत्य है कि एकल अक्षरो को पहचानने का ऐसा तकनीक सार रूप मे समकालीन भाषाविज्ञान मे स्वनिमो और रूपिमो को पहचानने की विधियो के समान है। जैसा कि हम देखेंगे, व्होर्फ की विधियाँ अपने कार्य के बहुत से क्षेत्रों में फेब्रे की विधियो के समान है। माया चित्रलेखो को पढने के पूर्व प्रयत्नो और अज्तेक की सरचना पर लिखे उनके अप्रकाशित लेख मे इसका विवरण दिया गया है। एक अन्य और सम्भवत: अधिक गम्भीर विधि का, जो फेब्रे की विधियो से मिलती है, प्रतिनिधित्व उनकी आन्तरिक अर्थो के लिए साहसी और विचक्षण खोज में मिलता है। जिस प्रकार फेब्रे हिब्रू धातु के एक खण्ड मे निहित महत्त्व को खोजने के लिए अपनी कल्पना को चरम सीमा तक ले गए, उसी प्रकार व्होर्फ भी कोरे भाषायी तथ्य से उसके चरम लक्ष्य का निष्कर्ष निकालने के लिए निरन्तर जूझते रहे।

फेब्रे डी ओलिवेट के कार्य की खोज ने व्होर्फ को अधिक विस्तृत तथा गहन रूप मे भाषा के विषय पर पढने के लिए प्रेरित किया। उन्होने वाटकिन्सन (Watkinson) पुस्तकालय के बहुत अच्छे सग्रहों का सदुपयोग किया। सन् 1857 मे इस विद्वतापूर्ण शोध पुस्तकालय की स्थापना इगलैण्ड मे उत्पन्न हुए हर्टफोर्ड के एक धनी व्यापारी के वसीयतनामे के अनुसार हुई थी। उस पुस्तकालय मे कभी-कभी वंश-परम्परा-विज्ञ, अथवा कला-इतिहासकार आते थे, जो उसमें पडे सैकडो हजारो विभिन्न प्रकार के धूल भरे ग्रन्थो का अध्ययन करना चाहते थे। यह पुस्तकालय वाड्सवर्थ एथेनियम (Wadsworth Atheneum) नाम से प्रख्यात किले की तरह बने भवन के ऊपरी भागो मे बना हुआ था। उस भवन मे हर्टफोर्ड पब्लिक लायब्रेरी तथा कनेक्टीकट ऐतिहासिक सोसायटी[4] (Connecticut Histo-

4. सन् 1952 मे 'वाटकिन्सन पुस्तकालय' हर्टफोर्ड (Hartford) में ट्रिनीटी कालेज (*Trinity college*) के नए आधुनिक एवम् बड़े भवन में ले जाया गया।

rical Society) के संग्रह भी थे। व्यापार के धन्धों से निवृत्त होने के पश्चात् जब भी व्होर्फ वहाँ पहुँचते तो वहाँ का शान्त वातावरण तथा पुस्तकों की गन्ध उन्हें एकाग्रता प्रदान करती थी। इसके प्रथम पुस्तकालय-अध्यक्ष, जेम्स हैमण्ड ट्रम्बुल (James Hammond Trumbull) थे, जो अन्य विशिष्टताओं के साथ-साथ अमरीकी-इण्डियन साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, तथा लोक-साहित्य के भी विद्वान थे। 1863 से 1893 तक पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में अपने सेवाकाल में ट्रम्बुल ने अमरीकी इण्डियन नृवंशविद्या, लोक-साहित्य तथा भाषा सम्बन्धी पुस्तकों का पुस्तकालय में इस सीमा तक असाधारण संग्रह किया कि वह एक बड़े विश्वविद्यालय का पुस्तकालय लगने लगा था। इस संग्रह द्वारा व्होर्फ की रुचि मैक्सिको सम्बन्धी पुरातत्वों एवम् ज्ञान में पुन: जागृत हुई जिससे उनका ध्यान विशेष रूप से अज़्तेक (नहुअत्ल) भाषा तथा बाद में माया चित्रलेखों के लिए गुप्त लिखावट की ओर आकर्षित हुआ। हम नहीं जानते कि विशेषतया अज़्तेक भाषा के अध्ययन के लिए व्होर्फ को प्रेरित करने वाला कौन-सा कारण था। सम्भवत: संयोग से उन्हें नहुअत्ल का एक विवरण मिला, जिसने उन्हें *La langue hebraique* में उपलब्ध विचारों का स्मरण करा दिया। कुछ भी हो, व्होर्फ ने अज़्तेक का अध्ययन सन् 1926 में आरम्भ किया। शायद उन्होंने माया पर गम्भीर रूप से कार्य सन् 1928 तक आरम्भ नहीं किया था। उन्होंने केवल वाटकिन्सन पुस्तकालय में ही अध्ययन नहीं किया, अपितु हर्टफोर्ड से बाहर जब भी वे व्यावसायिक यात्राओं पर जाते तो सुगमता से जिस किसी पुस्तकालय से लाभ उठा सकते थे, उठाते थे। उन्होंने शीघ्र उन्नति की और हावर्ड विश्वविद्यालय के ए० एम० तोज़र ब्रुकलिन म्यूज़ियम के एज० जे० स्पिण्डन सहित मैक्सिकन पुरातत्त्व एवम् भाषाविज्ञान के विभिन्न विद्वानों से पत्र-व्यवहार आरम्भ कर दिया। डा० स्पिण्डन के सुझाव पर उन्होंने उस मैक्सिकन पाण्डुलिपि के एक पृष्ठ के अनुवाद पर काम करने के प्रयत्नों में अपने को प्रवृत्त किया जिसकी फोटो-प्रतिलिपि हावर्ड विश्वविद्यालय के 'पीबॉडी म्यूज़ियम' (Peabody Museum) में प्राप्य थी। इस कार्य का परिणाम वह लेख था जो सितम्बर 1928 में अमरीकनों की तेइसवीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के सामने पढ़ा गया। इसी के समान पहला विद्वत्तापूर्ण प्रकाशन *An Aztec Account of the Period of the Toltec Decline* (1928)[5] था। व्होर्फ ने इसके सम्बन्ध में स्वयं लिखा है कि, "यह लेख इतिहास एवम् इतिवृत्त के विस्तृत वर्णन में एक प्राचीन पदार्थ संग्रहकर्ता की अभिरुचि को प्रकट करता है, तथा उस भाषाविज्ञानी के अभिमान को व्यक्त करता है, जो एक अस्पष्ट अज़्तेक शब्द के रहस्य को जबर्दस्ती खींच निकालना चाहता है।"

---

5. व्होर्फ की कृतियों की ग्रन्थतालिका (पुस्तक के अन्त में) देखिए। इसके पीछे उन सम्बन्धित कृतियों की एक छोटी सूची भी दी गई है, जिनका यहाँ निर्देश किया गया है।

कांग्रेस के सामने पढ़े गए इस लेख ने बहुत से लोगों का ध्यान इस युवा बीमा कार्यकर्ता के प्रति आकृष्ट किया, तथा उसका प्रचार किया। समाचारपत्रो में छपी रिपोर्टो ने उसे उन 'रहस्यो के उद्घाटनकर्ता' के रूप मे अभिनन्दित किया, जिन रहस्यो ने बड़े-बड़े विद्वानो को कौतूहल में डाल रखा था। लगभग उसी समय, एक अन्य अज्तेक अनुवाद पूरा हुआ, जो सन् 1929 मे *The Reign of Huemac* शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

ये प्रकाशन उनके अध्ययनकाल के प्रथम तथा सहज परिणाम थे। व्होर्फ भी तुलनात्मक भाषा-विज्ञान मे जुटे हुए थे। सम्भवत: उन्हे अन्य किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नही थी। उन्होने केवल स्पिण्डन एवम् टोज़र जैसे व्यक्तियो से सक्षिप्त एवम् आवश्यक परिचय प्राप्त कर लिया होगा, तथा इसके अतिरिक्त पैन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के जे० एल्डन मेसन से भी सम्पर्क स्थापित किया होगा, जिनसे उनकी भेट सन् 1924 की ग्रीष्म ऋतु मे हुए सर्वप्रथम लिंग्विस्टिक इन्स्टीचूट मे हुई थी। अमरीकियो की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस मे व्होर्फ ने टोल्टेक इतिहास पर लेख पढने के अतिरिक्त एक दूसरा लेख भी पढा था। इस लेख ने बहुत कम लोगो का ध्यान आकृष्ट किया, परन्तु यह लेख उनकी वास्तविक रुचियो के अधिक निकट था। इसका साधारण-सा शीर्षक 'अज्तेक लिंग्विस्टिक्स' था। इस लेख ने उनके इस दृढ विश्वास को प्रकट किया कि अज्तेक ओलिगोसिन्थेटिक (Oligosynthetic) भाषा है, अर्थात् इसके सभी शब्द अपेक्षाकृत थोडे से तत्त्वो से बने हुए है, वे तत्त्व बहुत थोड़े से है। सम्भवत: 50 के लगभग मूल एकाक्षरिक धातु हैं, "जिनमे से प्रत्येक धातु अपने मौलिक अर्थ को खोए बिना विस्तृत स्वराघात-परिवर्तन मे समर्थ, एक सामान्य धारणा को अभिव्यक्त करती है।" (अथवा, ऐसी ही बात उन्होने लेख के प्रकाशित साराश मे लिखी है।) इस समस्या पर ध्यान देते हुए कि क्या वही धातु, जो अज्तेक में प्राप्त हुई है, अज्तेक से सम्बन्धित भाषाओं मे भी मिलती है? इस विषय मे अपने निष्कर्षो से वे एकदम सन्तुष्ट हो गए। सन् 1928 के अन्त तक वह कार्य, जो उन्होंने तेपेकनो, पिमम, तथा अज्तेक—सभी मैक्सिकन भाषाओ के पारिवारिक सम्बन्धो पर किया था, टोज़र एवम् स्पिण्डन को इतना आशाजनक लगा कि उन्होने व्होर्फ को सलाह दी कि वे 'सोशल साइन्स रिसर्च कॉन्सिल' से शोध-छात्रवृत्ति प्राप्त कर ले, ताकि वे आवश्यक सामग्री प्राप्त कर सके, तथा अधिक गहन रूप से अध्ययन कर सके। व्होर्फ ने इस प्रस्ताव को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि वे ऐसी छात्रवृत्ति का उपयोग, वाटकिन्सन लायब्रेरी के लिए 'अज्तेक पाण्डुलिपियाँ' खोजने के निमित्त मैक्सिको की यात्रा के लिए करेंगे, क्योकि उस पुस्तकालय के एक प्रबन्धक ने अज्तेक सामग्री का सग्रह करने की इच्छा प्रकट की थी। टोजर की सलाह थी कि यदि वे मैक्सिको जाना ही चाहते हैं, तो उनके लिए आधुनिक नहुअत्ल की खोज करना श्रेयस्कर होगा। इस सुझाव को व्होर्फ ने आसानी से मान लिया। 6 दिसम्बर 1928 के मेसन को लिखे गए पत्र मे, उस छात्रवृत्ति के सन्दर्भ मे जिसके लिए वे आवेदन-पत्र भेज रहे थे, टिप्पणी

करते हुए व्होर्फ ने कहा कि, "इसमें संशय है कि यह छात्रवृत्ति मुझे मिल पाएगी या नहीं, क्योंकि ये छात्रवृत्तियां पी० एच० डी० की उपाधि-प्राप्त व्यक्तियों के लिए होती हैं। यद्यपि कभी-कभी अपवादस्वरूप ये दूसरे व्यक्तियों को भी दी जाती हैं, पर वे अपवाद विरले एवम् कठिन होते हैं, जिनके लिए बहुत अच्छी सिफारिशों की आवश्यकता होती है।" 'सोशल साइंस रिसर्च कॉन्सिल' को दिए गए प्रार्थनापत्र के साथ एक तो उनकी पाण्डित्यपूर्ण योजना का सामान्य विवरण भेजा गया था, दूसरे, लगभग एक सम्पन्न लेख भी साथ ही भेजा गया था जिसका शीर्षक था 'Notes on the Oligosynthetic Comparison of Nahuatl, and Pimam, with special reference to Tepecano' (विशेष रूप से टेपेकनो तथा नहुअत्ल और पिमम के तुलनात्मक अध्ययन पर टिप्पणी)। इन प्रपत्रों में से पहले प्रपत्र अर्थात् पाण्डित्यपूर्ण योजना के सामान्य विवरण में व्होर्फ ने अपने-आप को निश्चित रूप से कल्पनाशील व्यक्ति सिद्ध किया। परन्तु उन्होंने छात्र-वृत्ति प्रार्थनापत्र की जाँच करने वाली कमेटी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए इसकी विषयवस्तु को उद्धृत करना भी आवश्यक समझा :

इस शोध छात्रवृत्ति की सहायता से, अगर सम्भव हो सका तो मैं 'ओलिगो-सिन्थीसिस' के सिद्धान्त को सजीव विषय बनाने के लिए मैक्सिकन भाषा-विज्ञान पर पर्याप्त काम करने तथा उसे प्रकाशित करने की योजना बनाना चाहता हूँ, तथा साथ ही एक ऐसी योजना भी बनाने का विचार है जिससे अन्य अन्वेषक 'किसी भाषा' के मौलिक आधार में रुचि विकसित कर सकें।

इसके पश्चात् जब मैं इस प्रकार कुछ और अधिक प्रसिद्ध हो जाऊँगा, तो मेरा अगला कदम उस तत्त्व में रुचि उत्पन्न करना होगा, जिसे मैं हिब्रू एवम् सेमिटिक भाषाओं में द्विचर समूहन (Binary Grouping) कहता हूँ। यह सत्य है कि मैं इस पर अब भी काम कर रहा हूँ, तथा सेमिटिक भाषाओं पर शोध-कर्ताओं का ध्यान इस ओर आकृष्ट करने के लिए आगे भी इस पर काम करता रहूँगा।

द्विचर समूहन के भी एक प्रचलित विषय बन जाने पर मैं इस सिद्धान्त तथा 'ओलिगोसिन्थैटिक' के सिद्धान्त में तादात्म्य स्थापित करना आरम्भ करूँगा, और इस प्रकार हिब्रू तथा सेमिटिक भाषाओं में निहित गहन सिद्धान्त की तह तक पहुँच जाऊँगा।

मेरा अगला कार्यक्रम वाग्व्यवहार के समस्त आदिम मूलभूत आधारों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए इन सिद्धान्तों का प्रयोग करना होगा। यह एक नए विज्ञान की नींव रखने के समान होगा, तथा, यद्यपि इस कार्य का निष्पादन कुछ समय पश्चात् भविष्य में होगा, तो भी मुझे विश्वास है कि यह कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो सकता है। इससे आगे इस विज्ञान के और

सम्भव विनियोग भी किए जा सकते है—जैसे मानव-जाति की मौलिक सामान्य भाषा का पुनरुद्धार करने के लिए, अथवा ध्वनियों के मौलिक मनोवैज्ञानिक अर्थो से रचित एक आदर्श स्वाभाविक भाषा का निष्पादन करने के लिए, सम्भवतः ऐसी भावी सामान्य भाषा की रचना के लिए जिसमें हमारी सभी विभिन्न भाषाओं का सवांगीकरण हो सके; अथवा, यूं कहिए कि वे सभी भाषाएं उसी के नियमों में ढल सकें। इस समय यह बात अत्यन्त काल्पनिक प्रतीत हो सकती है, परन्तु अन्य क्षेत्रों में जो कुछ विज्ञान ने किया है, यह कार्य उससे कम वैशिष्ट्यपूर्ण नहीं रहेगा, जब इसे मार्गदर्शन के लिए शुद्ध सिद्धान्त प्राप्त हो जाएँगे, और मेरा विश्वास है कि मेरा कार्य ऐसे सिद्धान्तों को खोजने की ओर प्रवृत्त है। इन खोज कार्यो के चरम विकास के साथ बाईबल में मिलने वाले ब्रह्माण्ड-विज्ञान में निहित उन मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक एवम् दार्शनिक अर्थो का स्पष्ट प्रकटीकरण होगा, जो इस अध्ययन के प्रारम्भ करने में मूल प्रेरणा हैं।

व्होर्फ के छात्रवृत्ति के प्रार्थनापत्र के साथ सलग्न दूसरे पत्र के आरम्भ के कुछ पैराग्राफो मे ओलिगोसिन्थेसिस की और अधिक व्याख्या की गई है।

ओलिगोसिन्थेसिस एक ऐसी भाषा-रचना का नाम है जिसमें सभी शब्द, या लगभग सारा शब्दभण्डार धातुओं अथवा अर्थयुक्त तत्त्वों की एक छोटी सी संख्या में सीमित किया जा सके, बिना इस बात की अपेक्षा किए कि इन धातुओं या तत्त्वों को मौलिक माना जाए, जिन्हे हम भाषा के पूर्ववर्ती रूप मानते हैं, या जिनकी कभी भी स्वतन्त्र सत्ता न रही हो; क्योंकि उनकी सत्ता केवल शब्दों के ऐसे अंगों के रूप में मान ली जाती है, जो सदैव अवियोजित 'पूर्ण' रहे हैं। लेखक ने ऐसी संरचना का मैक्सिको की नहुअत्ल या अजतेक भाषा मे पता लगाया था, जिस पर उसने बहुत से कार्य किए, और तभी उसने ओलिगो-सिन्थेसिस शब्द का प्रस्ताव किया था. . . .। संक्षेप में निष्कर्ष ये हैं कि लगभग सभी, तथा नहुअत्ल के सम्भवतः समस्त परिचित शब्दभण्डार का व्यु-त्पादन लगभग 35 धातुओं के विभिन्न संयोगों तथा विभिन्न अर्थगत विकासों से हुआ है। इन धातुओं को लेखक 'तत्त्व' के नाम से अभिहित करना अधिक उचित समझता है। इन तत्त्वों में से प्रत्येक 'तत्त्व', एक सामान्य 'भाव' का प्रतीक है जिसमें सम्बन्धित विचारों के आसपास के क्षेत्र का भी कुछ अर्थ सम्मिलित होता है, तथा जिसमें केन्द्रीय 'भाव' अज्ञात रूप से झलकता है। ये 35 तत्त्व (अब यह बहुत ही असंभावित सा प्रतीत होने लगता है कि उनकी संख्या बढ़ जाए) विस्तृत प्रातिपदिक-विश्लेषण से प्राप्त किए गए है, तथा प्रस्तुत लेख के परिशिष्ट में इनकी सूची दी गई है। ये तत्त्व हजारों नहुअत्ल शब्दों के अर्थ की व्याख्या करते है। इन शब्दों में हाल ही में सीखे गए शब्दों की बहुत बड़ी संख्या भी सम्मिलित है, तथा इन शब्दों का वही अर्थ था जो उनके तत्त्वों से प्रत्याशित था। इसके अतिरिक्त, यह मेरे लिए अधिकाधिक प्रमाणित सिद्ध

होता जा रहा है कि इन तत्त्वों को मौलिक धातु तथा प्रस्तुत भाषा के पूर्व-कालीन तथा पूर्वज माना जाना चाहिए। मेरा पहला मत कि ये तत्त्व समी-करणात्मक सादृश्यमूलक व्युत्पत्ति का परिणाम हो सकते है—कुछ हल्का प्रतीत होने लगा है। स्पष्टतया यहाँ हमारे सम्मुख एक संरचना है, जो विचारोद्भावन के मार्ग, तथा ओष्ठ, जिह्वा, और स्वरतान्त्रिक क्रियाओं, (अर्थात् व्यंजन और स्वर) के अनुक्रमों के बीच एक पूर्णतया क्रमबद्ध अनुरूपता है, जिसका भाषायी, उच्चारण-अवयवात्मक तथा मनोवैज्ञानिक महत्त्व हो सकता है।

द्विचर समूहन ने एक ऐसे सिद्धान्त का निर्देश किया, जिसके विषय मे व्होर्फ का विश्वास था कि यह सिद्धान्त हिब्रू धातुओ मे अन्तर्निष्ठ है, जैसा कि एक अप्रकाशित पाण्डुलिपि के एक उद्धरण मे देखा जा सकता है: "एक द्विचर वर्ग, सेमिटिक धातुओ का वर्ग है, जिसमे सामान्य रूप से दो व्यजनो का एक विशेष अनुक्रम समान रूप से मिलता है तथा इस अनुक्रम वाली सभी धातुएँ एक भाषा मे होती है, तथा कुछ अपवादो को छोडकर इन सभी धातुओ का निर्धारण कुछ थोडे से विशिष्ट अर्थों के लिए हो जाता है।"

ये उद्धरण विशेष रोचक हो जाते है जब हम इन्हे फेब्रे डी ओलिवेट के लिए व्होर्फ के प्रारम्भिक उत्साह के सन्दर्भ मे देखते है। आगे टिप्पणी के रूप मे यह कहा जाना चाहिए कि, व्होर्फ ने ओलिगोसिन्थेसिस के सिद्धान्त का विनियोग माया सम्बन्धी अपनी प्रथम रचना मे करना आरम्भ कर दिया था। माया के विषय मे उन्होने एक लेख 'Stem Series in Maya' दिसम्बर 1929 में 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका' (जिसके वे उसी समय सदस्य बने थे) के सामने पढ़ा था। लिंग्विस्टिक सोसाइटी की प्रोग्राम कमेटी को दिए गए इस लेख के सक्षिप्त सार मे व्होर्फ ने यह सकेत दिया है कि *QE*-से आरम्भ होने वाले बहुसख्यक माया प्रतिपादिको का अर्थ है 'turn' (मुडना)। वे आगे लिखते हैं कि, "इसी प्रकार दूसरी श्रेणियाँ भी है—जैसे *QI*-'प्रकाश फेकना', 'दीप्त होना', 'जलना', 'बिखरना', *QI-,QU-*, 'अन्दर की ओर' *BI*-'हिलना', *TA*-'जोड़ना' *TZA*-'समीप आना या इकट्ठे लाना'; *MA*-गुजरना। दूसरे शब्दों मे "विचारधारा ध्वन्यात्मकतावाद का अनुसरण करती है।"

उनके शोध-छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र के 'एस एस आर सी' (SSRC) का उत्तर अनुकूल होने के कारण, व्होर्फ ने मैक्सिको के लिए क्षेत्रीय यात्रा के प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिए। उन्होने अपनी कम्पनी से कुछ सप्ताह की छुट्टी ली, तथा जनवरी 1930 मे श्रीमती व्होर्फ तथा उनकी माता के साथ मैक्सिको शहर के लिए रवाना हो गए—जहाँ जाते हुए उन्होने लुईसिआना (Louisiana) के तुलेन (Tulane) विश्वविद्यालय के 'मिडल-अमेरिकन-रिसर्च' विभाग के पुस्तकालय मे शोध-कार्य करते हुए कुछ दिन बिताए। मैक्सिको शहर मे पहुँचने पर उन्होने अज्तेक भाषा के लिए मैक्सिकन विशेषज्ञो, विशेष रूप से मैक्सिको के नेशनल सग्रहालय के

प्रोफैसर मेरिआनो रोजस (Mariano Rojas) की सहायता ली। अशतः उनकी सहायता से उनकी कई ऐसे उत्कृष्ट सूचकों तक पहुँच हो गई, जो अज्तेक का एक ऐसा रूप बोलते थे जिसके विषय मे कहा जाता था कि यह रूप उस बोली के इतना निकट है, जितना इन हजारो वर्षो मे अधिक से अधिक उस रूप के निकट हो सकता है जो अज्तेक की क्लासिकल बोली कभी मोन्तेजुमा (Montezuma) के समय मे 'तेनोच्तित्लान' (Tenochtitlan) (अब अमेरिका शहर) मे बोली जाती थी। ये व्यक्ति मिल्पा एल्टा (Milpa Alta) के रूप मे ज्ञात फेबरल (Feberal) जिले के दूरस्थ उपनगर मे रहते है, तथा यह उनकी भाषा है, जिसका व्होर्फ ने विशद भाषायी विश्लेषण किया, जो उनकी मृत्यु के बाद होयेर (Hoijer) के लिग्विस्टिक स्ट्रक्चर्ज ऑफ नेटिव अमेरिका (Linguistic Structure of Native America) मे सन् 1946 मे प्रकाशित हुआ। इसी बीच व्होर्फ ने मार्गदर्शी पुरातात्त्विक सामग्री की खोज के लिए मैक्सिकन देहात मे चारो ओर छान-बीन की। तेपोज्तलन (Tepoztlan) के गाँव से ऊपर स्थित एक भग्न मन्दिर मे, जहाँ उन्होने और आगे भाषायी अध्ययन किए, उन्हे सयोगवश एक उत्कीर्ण आकृतियो का समूह मिला जो अब तक विद्वानो की पैनी दृष्टि से ओझल ही रह गया था। उनके तीक्ष्ण प्रेक्षण तथा अज्तेक एवम् माया लेखाचित्रीय कला से अति-परिचय ने उन्हे लगभग एकदम यह पहचानने मे समर्थ कर दिया कि ये आकृतियाँ अज्तेक कैलेण्डर के 'दिवस चिह्नो' के रूप मे अपने साधारण रूपो से भिन्न है तथा मायालिपि-चिह्नो से कुछ समानताएँ रखती है। नहुअत्ल चित्रलेखो तथा प्राचीन माया चित्रलेखों मे निश्चित तथा स्पष्ट रूप से प्रमाणित किए जा सकने वाले सम्बन्धो की यह खोज, जैसाकि व्होर्फ इसे मानते थे, प्रस्तुत सकलन मे, पुनर्मुद्रित लेखो मे से एक लेख 'मैक्सिकन तथा माया दिवस चिह्नो को मिलाने वाला एक मध्य मैक्सिकन शिलालेख' (A Central Mexican Inscription combining Mexican and Maya day) का आधार थी। यह व्होर्फ की कार्य-पद्धतियो का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है तथा माया चित्रलेखो मे उनकी बाद की गवेषणाओ की ओर सकेत करने वाला यह उनका प्रथम प्रकाशन भी है।

मैक्सिको से अपनी वापसी के पश्चात् कई वर्षों तक व्होर्फ उस सामग्री पर काम करने मे लगे रहे, जो उन्होने अपने मैक्सिको मे निवास के समय एकत्रित की थी। न केवल यह आवश्यक था कि एल्पा एल्टा नहुअत्ल (Alpa Alta Nahuatl) के भाषायी विश्लेषण की रूपरेखा प्रस्तुत की जाए, अपितु यह भी अत्यन्त आवश्यक था कि मैक्सिकन तथा माया 'दिवस चिह्नो' से सम्बन्धित खोजो द्वारा, उन प्रशस्त किए गए मार्गो का अनुसरण भी किया जाए, जिनके प्रभाव से उसके द्वारा पहले ही विकसित की गई कुछ सूझबूझो तथा विचार-पद्धतियो का सुधार सम्भव था। माया चित्रलेखो से सम्बन्धित प्रकाशनो की एक प्रमुख माला लगभग इसी समय सर्वप्रथम हावर्ड विश्वविद्यालय के 'पीबॉडी म्यूजियम' द्वारा प्रकाशित एक प्रबन्ध 'माया लेखन मे ध्वन्यात्मक

मूल्य के कुछ लक्षण' (The Phonetic Value of Certain Characters in Maya Writing) 1933 और वाद मे प्रकाशित एक लेख 'माया लेखन-पद्धति तथा इसका अर्थ-निर्धारण' (Maya Writing and its decipherment) 1935 द्वारा प्रारम्भ हुई। पहले प्रकाशन मे, जिसे तैयार करने के लिए हावर्ड के प्रोफेसर टोज़र ने उन्हे प्रेरित किया था उन्होने विस्तृत रूप मे और प्रमाणो सहित अपनी तर्क अभिधारणा को प्रस्तुत किया कि माया लेखन कम से कम आशिक रूप से स्वनिक था, और उन्होने प्राचीन पाण्डुलिपियो मे से एक से साधारण प्राचीन माया पाण्डुलिपि का नमूने के रूप मे अनुवाद भी प्रस्तुत किया। क्योकि माया लेखन मे स्वनिकता की परिकल्पना कम से कम 50 वर्ष पूर्व माया विद्वानो द्वारा छोडी जा चुकी थी, अत. उस समय उनका प्रकाशित होना ही इस बात का प्रमाण है कि व्होर्फ के लेख अत्यधिक प्रभावशाली रहे होगे। बाद का प्रकाशन, 'माया लेखन पद्धति तथा इसका अर्थ-निर्धारण' (Maya Writing and its decipherment) रिचर्ड सी० ई० लॉंग (Richard C. E. Long) द्वारा 'माया रिसर्च' जरनल मे प्रकाशित समीक्षा का उत्तर था। श्री लॉंग द्वारा विस्तार मे किए गए आक्षेपो का उत्तर देने के साथ-साथ व्होर्फ ने यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि वे लॉंग की पद्धति को मौलिक रूप से गलत क्यो मानते है। उन्होने माया पाण्डुलिपि का आदर्श अनुवाद भी प्रस्तुत किया। इस निबन्ध मे इसके अतिरिक्त उन्होने उल्लेख किया कि वे एक पाण्डुलिपि 'First step in the decipherment of Maya Writing' (माया लेखन के अर्थ-निर्धारण मे प्रथम प्रयास) पर कार्य कर रहे है, जिसे वे थोडे ही समय वाद प्रकाशित करने की आशा रखते है। इस तरह व्होर्फ के कागज़ो से प्राप्त यह पाण्डुलिपि अधूरी तथा अप्रकाशित ही रही; यद्यपि इसके कुछ अश एक निबन्ध मे उद्धृत हुए है, जिसे व्होर्फ ने सन् 1940 मे वैज्ञानिक काग्रेस के सामने पढा था। यह निवन्ध प्रस्तुत सग्रह मे पुनर्मुद्रित है। सन् 1933 के पश्चात् माया-विद्वानो द्वारा अपनी कृति के प्रति किए गए काफी रूखे स्वागत से व्होर्फ को वहुत अधिक निराशा हुई। उन्हे पूर्ण विश्वास था कि उनके भाषायी उपगम मे ही माया चित्रलेखो के निश्चयीकरण की कुजी निहित है। 1940 मे जो लेख उन्होने पढा, वह स्पष्ट रूप से इस उपगम के लिए समर्थन पाने का अन्तिम दृढ़ प्रयत्न था।

जो व्यक्ति, भाषाविज्ञान के क्षेत्र मे उनके घनिष्ट सहकर्मी वने, मैक्सिको की यात्रा से पूर्व तक उनमे से हरेक के साथ व्होर्फ के व्यक्तिगत या पत्र-व्यवहार द्वारा वहुत कम सम्वन्ध रहे थे। उनके ज्ञानक्षेत्रीय सम्वन्ध मुख्यतया मैक्सिकन पुरातत्त्व के विशेषज्ञो के एक वर्ग के साथ थे, जिनमे से कोई भी ऐसा न था जो विशेष रूप से सामान्य भाषाविज्ञान मे सुयोग्य हो, अथवा उसमे रुचि रखता हो। इन सव वातो के दृष्टिगत, व्होर्फ ने जो सुयोग्यता सामान्य

भाषा-विज्ञान तथा भाषा क्षेत्र-पद्धतियो मे अपने प्रशिक्षण-रहित अध्ययन के बल पर प्राप्त की, वह असाधारण थी। तथापि उनकी प्रतिभा कभी पूर्णरूप से परिपक्व न होती, यदि वे यथासमय एडवर्ड सपीर (1884-1939) से न मिले होते, जो उस समय के न केवल अमरीकी भाषाओ के ही, बल्कि सामान्य भाषा-विज्ञान के भी अग्रगण्य एवम् सर्वमान्य विद्वान थे। निस्सन्देह, व्होर्फ सपीर के कार्य से अवगत थे तथा नि.सशय उन्होने बहुत अधिक रुचि के साथ सपीर की पुस्तक 'लैंग्वेज' (न्यूयार्क, 1921) पढी थी। सर्वप्रथम, वे सपीर से बहुत थोडी देर के लिए सितम्बर 1924 की अमरीकनो की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस मे मिले, उनसे खुलकर बाते 1929,, 1930 मे वैज्ञानिक सोसाइटियो की उत्तरवर्ती सभाओ मे भेंट के दौरान की थी। फिर भी व्होर्फ सपीर से कोई घनिष्ट सम्बन्ध उस समय तक नही बना सके, जब तक कि सपीर 1931 की सर्दियो मे शिकागो विश्वविद्यालय से येल विश्वविद्यालय मे भाषा-विज्ञान पढाने के लिए, मानवविज्ञान के प्रोफेसर के रूप में अपना स्थान ग्रहण करने के लिए नही आए थे। व्होर्फ ने सपीर द्वारा आयोजित येल विश्वविद्यालय मे अमरीकी-इण्डियन भाषाविज्ञान के पहले कोर्स मे अपना नाम दर्ज कराने मे कुछ भी समय नही लगाया। व्होर्फ के कागजो में एक पाण्डुलिपि मिलती है, जिसका शीर्षक है 'दि स्ट्रक्चर आफ दि अथबास्कन लैंग्वेजिज' (The Structure of the Athabaskan Languages) यह एक ऐसा 'टर्म-पेपर' था जिसे सपीर ने प्रथम श्रेणी में रखा था तथा उसकी खूब प्रशसा भी की। यद्यपि व्होर्फ ने अपना नाम पी-एच०, डी० की उपाधि प्राप्त करने के प्रोग्राम मे दर्ज कराया था, परन्तु न तो उन्होने कोई प्रयत्न किया, न ही कोई उच्च उपाधि प्राप्त की। वे शुद्ध बौद्धिक लक्ष्यो के लिए अध्ययन करते रहे। भाषाविज्ञान में व्होर्फ की नई औपचारिक रुचि के अध्ययन के प्रभाव स्पष्ट रूप में दिखाई पडते है। 'ओलिगोसिन्थेसिस', 'द्विचर समूहन', तथा अन्य असाधारण भाषायी सिद्धान्तो मे उनकी आरम्भिक अभिरुचि कम से कम इस सीमा तक सुसस्कृत बन गई थी, कि उन्हें सपीर जैसे व्यक्तियो के दीर्घ अनुभव के प्रकाश मे इनका पुनरीक्षण करने का सौभाग्य मिला। (1931 के पश्चात् व्होर्फ के किसी भी लेख में मैं ओलिगोसिन्थेसिस के विचार का उल्लेख नही पा सका हूँ।) अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि व्होर्फ उन भाषायी सिद्धान्तों तथा तकनीको के सम्पर्क मे पहुँच गए, जो उस समय सर्वाधिक विकसित माने जाते थे, तथा साथ ही उन समस्याओ के भी सम्पर्क मे आए जिनका समाधान नितान्त आवश्यक समझा जाता था। अन्त मे, येल विश्वविद्यालय मे पढते समय उनका सम्पर्क सपीर के गम्भीर विद्यार्थियों के एक छोटे से वर्ग से हुआ, जिसमे मौरिस स्वदेश, स्टेण्ले न्यूमेन, जॉर्ज ट्रेगर, चार्ल्स वोजेलिन, मेरी हास तथा वाल्टर डिक जैसे व्यक्ति सम्मिलित थे। इन सभी ने भाषा-विज्ञान अथवा मानवविज्ञान के क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 1937-38 में व्होर्फ, येल विश्वविद्यालय मे मानवविज्ञान के प्राध्यापक हो गए।

इस प्रकार सपीर के साथ व्होर्फ के साहचर्य ने, अमरीकी-इण्डियन भाषा-विज्ञान के क्षेत्र को और आगे विकसित करने की उनकी इच्छा को तीव्र करने का काम किया। माया चित्रलेखो के विषय मे, 1933 मे शून्यचिह्न की व्याख्या के विषय मे प्रकाशित अपने एक लेख मे दिए कुछ सुझावो के लिए व्होर्फ ने सपीर को श्रेय दिया। तथापि, व्होर्फ को उतो-अज्तेकन भापाओ (भाषाओ का एक बडा वर्ग जिसके सम्बन्ध सपीर ने स्थापित किए थे) तक अपने कार्य को वढाने तथा विशेष रूप से अज्तेक की दूर की सम्बन्धी होपी भाषा का अध्ययन आरम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करने मे सम्भवतः सपीर का वहुत अधिक प्रभाव था। दिसम्बर 1932 मे व्होर्फ ने न्यू हेवन (New Haven) मे आयोजित 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका' की सभा मे 'दि करैक्टरिस्टिक्स ऑफ दि उतो-अज्तेकन स्टॉक' (The Characteristics of the Uto-Aztecan-stock) नाम का एक लेख पढा। उतो-अज्तेकन भाषाविज्ञान (होपी से अलग) पर उनके आगे के कार्य का प्रतिनिधित्व क्रोएबर (Kroeber) के 'उत्तो-अज्तेकन लैंग्वेज ऑफ मैक्सिको' (1935) की समीक्षा, तथा अन्य कुछ लेखो 'दि कम्पेरेटिव लिंग्विस्टिक्स ऑफ उतो-अज्तेकन' (1935), 'दि ओरिजिन ऑफ अज्तेक टी एल' (1937), तथा (जी० एल० ट्रेगर के साथ) 'दि रिलेशनशिप ऑफ उतो-अज्तेकन एण्ड तानोअन' द्वारा किया गया है। इन लेखो मे व्होर्फ ने एक वृहद् परिवार के भाषावर्ग का पता लगाया, जिसके लिए उन्होने 'मेक्रो-पेन्यूटिअन' नाम इसलिए प्रस्तावित किया कि उसमे पेन्यूटिअन, उतो-अज्तेकन, माया, तथा मिक्से-जोक्वे-हुअवे, भाषाओ को भी सम्मिलित किया जा सके। वाद मे, उन्होने इस ढाँचे का प्रयोग सपीर के अमेरिकन-इण्डियन भाषाओ के वर्गीकरण का सशोधन तैयार करने के लिए भी किया।

यथार्थ भाषायी कार्य मे, व्होर्फ अपने होपी अध्ययन के लिए प्रसिद्ध थे। सम्भवत. सपीर की कृपा से उन्होने होपी के एक देशीय वक्ता से सम्पर्क स्थापित किया, जो काफी सुविधापूर्वक, उस समय न्यूयार्क शहर मे रहने लगा था। सपीर द्वारा प्राप्त किए एक छोटे से शोध-अनुदान की सहायता से 1932 की वसन्त ऋतु के आरम्भ मे व्होर्फ ने होपी के भाषायी विश्लेषण को विकसित करने पर अत्यन्त परिश्रम से कार्य किया। सपीर द्वारा दिये गये प्रशिक्षण से प्राप्त क्षेत्रीय पद्धतियो का भी उसमे प्रयोग किया। व्होर्फ तथा उनका सूचक न्यूयार्क वेदर्सफील्ड (जहाँ व्होर्फ रहते थे) मे एक दूसरे के पास आते-जाते रहते थे। सन् 1938 मे व्होर्फ को अरिजोना मे होपी के आरक्षित क्षेत्र मे थोडा समय विताने का अवसर मिला। 1935 तक उन्होने होपी भाषा का एक कामचलाऊ व्याकरण तथा शब्दकोश तैयार कर लिया था। होजर के 'लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्ज ऑफ नेटिव अमेरिका' (1946) मे होपी भाषा के व्याकरण की एक सक्षिप्त रूपरेखा के अतिरिक्त, एक खाका भी व्होर्फ ने 1939 के अन्त मे तैयार किया था। इन अध्ययनो का मुख्य परिणाम अप्रकाशित ही रहा। तथापि, हमे होपी भाषा के विषय मे दो सक्षिप्त परन्तु प्रभावशाली लेखो

'दि पन्कच्युअल एण्ड सेग्मेण्टेटिव आस्पेक्टस् ऑफ वर्वज इन होपी' (1936 मे प्रकाशित तथा उससे पहले दिसम्बर 1935 में 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका' के सामने एक लेख के रूप मे पढा गया) तथा "सम वर्वल केटेगरीज ऑफ होपी' (1938) के लिए कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्हे उन्होने अपने जीवनकाल मे ही प्रकाशित किया था। इन लेखो का वहुत अधिक विकास एवम् विस्तार वाद में लोकप्रिय लेखो द्वारा हुआ। हम यह भी देख सकते है कि होपी का विचित्र व्याकरण, होपी भापा के मातृभाषी को, पदार्थों को समझने तथा देखने की एक भिन्न विधि को सुझा सकता है। सवसे पहले उन्होने यह दावा किया कि "होपी लोगो के पास व्यवहार के लिए एक अधिक अच्छी भाषा है.......हमारी आधुनिकतम वैज्ञानिक शब्दावली से भी अधिक लोचयुक्त भाषा है।" इसके पश्चात् उन्होने 'एन अमेरिकन-इडियन मॉडल ऑफ दि यूनिवर्स' नामक लेख भी लिखा जो सम्भवत: 1936 मे लिखा गया, परन्तु 1950 तक अप्रकाशित ही रहा। यह लेख होपी भाषा की दिक्-काल सम्वन्धी धारणा के विषय में होपी क्रिया-व्यवस्था के निहित अर्थों की छान-बीन करता है। होपी भाषा पर किये जाने वाले कार्य ने लगभग उसी समय 'ए लिंग्विस्टिक कन्सीडरेशन ऑफ थिन्किग इन प्रिमिटिव कम्यूनिटीज' नामक लेख (प्रस्तुत सग्रह मे प्रथम वार प्रकाशित) के लेखन को अवश्य प्रभावित किया होगा। 'सम वर्वल केटेगरीज ऑफ होपी' (1948) लेख मे कुछ रोचक प्रभेदो पर विचार किया गया है, जिन भेदो को होपी भाषा उन घटनाओ के प्रकारो तथा रीतियो के वीच करती है, जिन्हे अग्रेजी भाषा समान समझती है। 'लिंग्विस्टिक फैक्टर्ज इन दि टर्मिनॉलोजी ऑफ होपी आर्चीटेक्चर' (1940 मे लिखा गया परन्तु 1953 तक अप्रकाशित) लेख मे यह धारणा व्यक्त की गई है कि होपी विचारधारा सहज रूप से अधिवास, अथवा भूमि या फर्श के स्थान को अलग करती है, जिस स्थान पर अधिवास उस प्रयोग से घटित होता है जिस प्रयोग मे अधिवास को रखा जाता है, जवकि अग्रेजी भापा की इन्हे मिलाने मे प्रवृत्ति होती है, जैसे जहाँ 'स्कूल' एक संस्था एवम् एक इमारत दोनो ही रूपो मे समझा जाता है। (निश्चय ही क्या हम सामान्य ज्ञान से महसूस नही करते कि एक सस्था अवश्य ही किसी प्रकार की इमारत मे आश्रित होती है?) सम्भवतः व्होर्फ 1939 मे लिखे गये लेख 'दि रिलेशन ऑफ हेविच्युअल थॉट एण्ड विहेवियर टू लैंग्वेज' तथा तीन अन्य लेखों के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध है, जो 1940 तथा 1941 मे टेक्नॉलोजी रिव्यू मे प्रकाशित हुए थे। ये सभी लेख काफी सीमा तक उनके होपी भाषा में कार्य पर आधारित हैं। ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण वात यह है कि पहले तो ये लेख वहुत पहले किये गये भाषायी विश्लेपण की दृढ नीव पर आधारित थे, दूसरे, इनमे अभिव्यक्त भाषायी सापेक्षता के विचार व्होर्फ के मस्तिष्क मे नये नही थे; इसके विपरीत, इन विचारो के वीज पहले ही, यदि और पहले नही तो 1935 मे तैयार की गई सामग्री में स्पष्ट थे।

एम० आई० टी० के 'टेक्नॉलोजी रिव्यू' के लिए लिखे गये तीनो लेख तथा

ब्रह्मविद्या की एक भारतीय पत्रिका मे प्रकाशित 'लैंग्वेज, माइण्ड एण्ड रिएलिटी' लेख साधारण पाठको को सम्बोधित करके लिखे गये थे। निश्चय ही व्होर्फ के मस्तिष्क मे भाषाविज्ञान को साधारण जनता के सामने एक ऐसे ढग से लाने का विचार था, जिस ढंग से भाषा-विज्ञान को प्रस्तुत करने का आज तक किसी ने प्रयत्न नही किया था। वास्तव मे उन्हे आधुनिक भाषा-विज्ञान को लोकप्रिय बनाने वालों में प्रथम होने का श्रेय दिया जा सकता है। फिर भी उन्होने अनुभव किया कि भाषा-विज्ञान को लोकप्रिय बनाना असम्भव होगा, तथा ऐसा करने का बहुत कम प्रयोजन होगा, जब तक कि भाषा-विज्ञान को रोचक न बनाया जाए। व्होर्फ के मतानुसार वह सन्देश यह था कि "हम 'कैसे', और 'क्या' सोचते है" इसके विषय मे बताने के लिए भाषा-विज्ञान के पास बहुत कुछ है।

जिन कारणो से 'टेक्नॉलोजी रिव्यू' के लिए लेख लिखने को वे प्रेरित हुए, उनका यहाँ विवेचन करना रोचक रहेगा। 1932 मे ही व्होर्फ तथा 'टेक्नॉलोजी रिव्यू' के सम्पादक जे० आर० किलियन जूनियर (अब एम० आई० टी० के अध्यक्ष) के बीच पत्र-व्यवहार हुआ। किलियन का ध्यान व्होर्फ के मैक्सिकन 'दिवस चिह्नों' पर लिखे लेख की ओर आकृष्ट हुआ था। किलियन ने व्होर्फ को अपनी मैक्सिको यात्रा का विवरण लिखने के लिए कहा, तथा पूछा कि क्या उन्होने इन्जीनियरी, वास्तुकला तथा व्यावहारिक विज्ञानो के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली किसी सामग्री की खोज की है? व्होर्फ ने लगभग अवज्ञापूर्वक उत्तर दिया कि इस यात्रा का इन्जीनियरी, वास्तु-कला अथवा व्यावहारिक विज्ञानो से कोई सम्बन्ध नही है— अनुसधान पूर्णरूपेण वैज्ञानिक शोध-भावना से किया गया था, परन्तु यह सामाजिक विज्ञानो के क्षेत्र मे था, भौतिक विज्ञानो के क्षेत्र मे नही। तथापि, बाद मे वे अपनी यात्रा पर एक लेख लिखने के लिए सहमत हो गये। परन्तु लगता है कि किसी कारण से ऐसा लेख लिखा नही गया। इसके बाद व्होर्फ तथा अध्यक्ष कार्ल टी० काम्पटन के बीच पत्र-व्यवहार 1939 के उत्तरार्द्ध मे हुआ। व्होर्फ ने पत्र-व्यवहार एक मामूली सी कठिनाई के परिणामस्वरूप प्रारम्भ किया, जो उन्हे भूतपूर्व विद्यार्थियो के रजिस्टर द्वारा भेजी गई प्रश्नावली को भरते समय हुई थी। प्रश्नावली मे बीमा, बीमा इन्जीनियरी, अग्निकाण्ड-निवारण, या ऐसे ही अन्य क्षेत्रो का कोई उल्लेख नही था, जिनके विषय मे व्होर्फ महसूस करते थे कि इन व्यवसाओ को इन्जीनियरी व्यवसायो के रूप मे मान्यता मिलनी चाहिए। उन्होने इस भूल को अध्यक्ष काम्पटन के ध्यान मे लाना चाहा तथा अपने कार्य की प्रकृति के विषय मे विस्तारपूर्वक लिखा। इसी पत्र मे उन्हे अपनी अन्य ऐसी गतिविधियो का उल्लेख करने का अवसर प्राप्त हुआ, जो प्रश्नावली के शीर्षको के उत्तर के रूप मे ठीक नही बैठती थी—उदाहरणार्थ, अमरीकी-इण्डियन भाषाओ पर उनकी खोज। उत्तर मे अध्यक्ष काम्पटन ने इस बात की व्याख्या देने के बाद कि प्रश्नावली मे जो भी छूटा है, वह जानबूझ कर छोड़ा हुआ नही बल्कि सक्षेपीकरण के कारण ही ऐसा हुआ है, व्होर्फ के व्यावसायिक कार्य मे रुचि व्यक्त की तथा 'टेकनॉलोजी रिव्यू' मे उनके पत्र को छापने की अनु-

मति माँगी। अनुमति दी गई तथा पत्र (बहुत सक्षिप्त रूप मे) रिव्यू के जनवरी 1940 के अक मे देखा जा सकता है। रिव्यू के सम्पादक जूनियर एफ० जी० फासेट (F. G. Fassett, jr) ने परवर्ती पत्र-व्यवहार में 14 नवम्बर 1939 को व्होर्फ को लिखा : "आपके भाषायी अध्ययन, पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति के लिए रुचिपूर्ण एव प्रेरक सम्भावना प्रस्तुत करते है। "क्योकि वास्तविकता का विश्लेषण भाषा का विषय है, तथा इन विश्लेषणो की सापेक्षता का महत्त्व ऐसे अध्ययनो द्वारा दिखाया जा सकता है, जो भाषायी अभिव्यक्ति के अन्तर्गत सम्भव विभिन्नता की एक बहुत बडी शृखला प्रस्तुत करते है। आगे यह भी पता चलेगा कि ब्रह्माण्ड तथा मानव को समझने के लिए, इनमे तथा विज्ञान के प्रयत्नो मे सम्बन्ध है। मेरा विचार है कि आपके अक्तूबर के पत्र मे दिए गए कथन मे अन्तर्निहित विचारो को, रिव्यू ग्रुप के पाठको को लक्ष्य करके परिवर्धित लेख के रूप मे छापना काफी अच्छा रहेगा। क्या यह अभिरुचि के उज्ज्वल भविष्य का पूर्व लक्षण है?" वास्तव मे ऐसा था, क्योकि बहुत शीघ्र व्होर्फ ने अपना प्रथम लेख 'साइन्स एण्ड लिंग्विस्टिक्स', 30 जनवरी 1940 मे प्रकाशनार्थ दिया जो शीघ्र ही रिव्यू मे छप भी गया था। इस लेख का रिव्यू के नियमित पाठको, तथा रीप्रिन्ट प्राप्तकर्ताओ की ओर से खुलकर भावभीना स्वागत हुआ जिसका तात्पर्य यह था कि उनके और लेख भी प्रकाशित किए जाएँ। दूसरा लेख 'लिंग्विस्टिक्स एँज एँन एग्जेक्ट साइन्स' 16 सितम्बर 1940 को प्रस्तुत किया गया था। व्होर्फ द्वारा तीसरा एवम् अन्तिम लेख 'लेंग्वेजिज एण्ड लौजिक' 14 फरवरी 1941 को उस समय दिया गया जब उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, एवम् उनकी शारीरिक दुर्बलता पहले ही उनकी लिखावट मे प्रकट होने लगी थी।

उस वर्ष के दौरान जबकि वे भाषाविज्ञान पर प्रतिभा-सम्पन्न लेख लिख रहे थे और साथ ही साथ अस्वस्थता से लड रहे थे, उनमे एक अन्य अभिरुचि जागृत हुई। उनके सबसे बड़े पुत्र ने एक भाषण सुना तथा उसका विवरण उन्हें दिया। इस भाषण के कारण व्होर्फ का परिचय फ्रित्ज कुन्ज (Fritz Kunz) से हुआ, जो एक सुविख्यात वक्ता एव लेखक थे, तथा 'फाउण्डेशन फॉर इनटेग्रेटिड एजूकेशन इन्कार्पोरेटड' (Foundation for integrated education Inc.) के कार्यकारी उपाध्यक्ष थे। कुन्ज तथा व्होर्फ की कई समान रुचियाँ थी (जैसा कि कुन्ज ने मुझे लिखा है)। भारत के दर्शन एवम् तात्विकी मे दोनो की रुचि थी। यही कारण था जो काफी घनिष्ठता से काम करने के लिए उन्हें एक दूसरे के समीप ले आया। इसी मित्रता के परिणामस्वरूप कुन्ज ने व्होर्फ को यह सुझाव दिया कि वे भारत मे मद्रास से छपने वाली एक थियोसोफिकल पत्रिका के लिए भाषा-विज्ञान के विषय मे एक लेख लिखें। 'लेंग्वेज़ माइण्ड एण्ड रिएलिटी' उनके इसी सुझाव का परिणाम था। कुन्ज एक नई पत्रिका **मेन करण्टस इन माडर्न थॉट** की स्थापना करने वाले थे। 1940 के उत्तरार्द्ध और 1941 के पूर्वार्द्ध मे व्होर्फ ने इसके पहले कुछ सस्करण निकालने मे उनकी बहुत सहायता की

थी। यह पत्रिका (अब तक भी प्रकाशित होती है: परन्तु एक भिन्न रूप मे) बहुत रोचक तथा आसाधारण गुणो वाली थी। इस पत्रिका का लक्ष्य विचारो को सुलझाने तथा प्राकृतिक विज्ञान, समाज-विज्ञान, साहित्य, गणित, तर्क तथा ,दर्शन आदि के सभी क्षेत्रो के विषय मे सूचना देना था। इसकी सामग्री मुख्यतया अपने ग्राहको के द्वारा लिखी जाती थी। उन दिनो अनुलिपिबद्ध रूप मे प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के पृष्ठो की रगीन छपाई, इसके विषय-वस्तु की परिचायक थी। वास्तव मे व्होर्फ ने प्रथम ग्रन्थखण्ड मे दर्जनो पृष्ठ लिखे, जिनमे पुस्तको की अत्यधिक सर्जनात्मक समीक्षाएँ तथा इस प्रकार के विविध विषयो पर लेख सम्मिलित है, जैसे The Hurrians of the old Chaldea (प्राचीन चाल्दिया के हुरियन), Shrinking glass (सिकुडता हुआ शीशा), तथा Notes on ,the demonstration of Wetter Water (वैटर वाटर के प्रदर्शन पर टिप्पणी)। उनकी एक 'पुस्तक-समीक्षा 'आदिम समाजो के अर्थशास्त्र' की दो पुस्तको पर आधारित है जिसका शीर्षक बहुत ही उत्तेजनात्मक है— We may end the war that is within all wars that are waged to end all war (हम उस युद्ध को समाप्त कर सकते है जो उन सभी युद्धो के अन्दर विद्यमान है, जिन्हे सभी युद्धो को समाप्त करने के लिए लडा जाता है)। व्होर्फ लिखते है कि "ये पुस्तके एक प्रकार के उस अनुसधान के उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अर्थशास्त्र के पुराने ढग के भौतिकवादी सिद्धान्त को धीरे-धीरे स्थानच्युत कर रहा है। क्योकि, मार्क्सवादी साम्यवाद, एवम् निजी पूँजीवाद, दोनो ही अर्थशास्त्र के रुढिबद्ध भौतिकवादी सूत्रीकरण पर आधारित है, इसलिये तथ्य के ऐसे अकाट्य वैज्ञानिक प्रतिपादन, 'कि आर्थिक व्यवहार सस्कृति से अनुबन्धित होता है, यान्त्रिक प्रतिक्रियाओ से नही'—सम्भव है कि यह विचार एक नये युग का सूत्रपात करने वाला हो।" यह उद्धरण उन बहुत से उद्धरणो मे से एक है जिनका उल्लेख व्होर्फ के विशाल मानवतावाद तथा सर्वजनहिताय उनकी चिन्ता को प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है। व्होर्फ भाषाविज्ञान के अन्तर्निहित अर्थो को (Main Currents) के पाठको के सम्मुख प्रस्तुत करना भी नही भूले। एक वैज्ञानिक सभा मे कई रोचक तथ्यो के विषय मे जो उन्हे अच्छे लगे थे, सूचना देते हुए उन्होने 'A Brotherhood of Thought' नामक लघु लेख मे लिखा है :

चीनी भाषा में 'शब्द' के लिए कोई शब्द नहीं है। इसकी निकटतम वस्तु 'tsz' तत्त्व है जिसका अनुवाद 'शब्द' किया जाता है, परन्तु इसका अर्थ अक्षर या 'आक्षरिक तत्त्व' अधिक उचित है। बहुत से ऐसे तत्त्व कभी स्वतन्त्र रूप में घटित नहीं होते, बल्कि कुछ संयोगो में ही घटित होते है जैसे *Pyr* शब्द *Pyrometer* में। शब्दभण्डार की इकाइयों के अर्थो में शब्द एक अथवा दो अक्षरों वाले होते हैं—इस तथ्य को परम्परागत चीनी-लेखन-पद्धति ने छिपा लिया है, क्योकि इस पद्धति में प्रत्येक अक्षर को अलग-अलग लिखा जाता है। येल विश्वविद्यालय के डा० वाई० आर० चाओ ने Rl 12 30/40 की लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ़

अमेरिका की एक मीटिंग में पढ़े गए लेख 'Word Conception in Chinese' (चीनी भाषा में शब्द सम्बन्धी धारणाएं) में इस तथ्य का संकेत दिया था। चीनी व्याकरण की प्रकृति को अब समझा जाना प्रारम्भ हुआ है। डा० चाओ तथा अन्य विद्वानों ने इस धारणा का पूरी तरह खण्डन कर दिया है कि चीनी एक एकाक्षरिक भाषा है। उसी मीटिंग में येल विश्वविद्यालय के ही डा० जी० ए० केनेडी ने 'चीनी भाषा में जटिल विशेषणात्मक अभिव्यक्तियों' का विश्लेषण करते हुए यह दिखाया कि चीनी भाषा में सम्बन्धवाचक उपवाक्य नहीं हैं, और यह भी निर्णय लिया कि इस प्रकार के सम्बन्धों की तर्कसंगति को भिन्न प्रकार की क्रम-व्याख्या नियन्त्रित करती है। यदि इस तर्कसंगति में प्रयुक्त तत्व *te* का अनुवाद *ish* किया जाये तो The house that Jack built चीनी भाषा में इस प्रकार अभिव्यक्त होगा : This is Jack--ish build-ish in-ish house अर्थात् Jack-ish build-ish in-ish lie-ish malt-ish इत्यादि।

पर्याप्त रूप में इस बात का अनुभव नहीं किया गया है कि विश्वव्यापी भ्रातृत्व एवम् सहयोग का आदर्श निष्फल हो जाता है, यदि इसमें दूसरे देशों में रहने वाले अपने बन्धुओं के साथ भावात्मक तथा बौद्धिक रूप से समाञ्जस्य करने की योग्यता निहित न हो। पश्चिम ने पूर्व का कुछ भावनात्मक ज्ञान तो सौन्दर्यपरक एवम् प्रेमपत्रों आदि की शैली के माध्यम से प्राप्त कर लिया है, परन्तु इस ज्ञान से बौद्धिक खाई भरी नहीं गई है, और हम उस तर्कसंगत चिन्तन सम्बन्धी ज्ञान के निकट तक भी नहीं पहुँचे हैं जो वैज्ञानिक विचारों के वास्तविक प्राच्य रूपों या प्रकृति के विश्लेषण में प्रतिबिम्बित होना है। इसके लिए देशीय भाषाओं के तर्कों के भाषायी अन्वेषण की आवश्यकता है, और यह अनुभूति भी आवश्यक है कि उनकी हमारे चिन्तन अभ्यासों के साथ समान रूप से वैज्ञानिक प्रामाणिकता है।

इस दीर्घकालीन रोग के कारण 44 वर्ष की आयु में ही 26 जुलाई 1941 को व्होर्फ का प्राणान्त हो गया। जितना कुछ वे जानते थे, उससे भी अधिक कार्य उन्होंने अपने जीवन मे निष्पन्न किये, तथापि, जीवित रहकर वे जो कुछ कर सकते थे, यह सब कुछ उसका एक अशमात्र है। उनकी मृत्यु का समाचार केवल स्थानीय समाचारपत्रो मे सम्पादकीय निधन सूचनाओ मे ही नही छपा, बल्कि न्यूयार्क टाइम्ज जैसे समाचारपत्रो ने भी इस ओर ध्यान दिया, तथा बाद मे कई प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं मे भी यह समाचार छपा।

व्होर्फ के व्यक्तित्व तथा काम करने की आदतों के विषय मे कुछ टिप्पणी किये विना, मैं इस जीवनी-सम्बन्धी सस्मरण को समाप्त नही कर सकता। सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि वे प्रत्येक कार्य मे अत्यन्त गहन एवम् स्थिरतापूर्वक ध्यान केन्द्रित करने मे समर्थ थे। किसी भी विषय के साथ वे उपेक्षा या असावधानी का व्यवहार नही करते थे। बहुत ही सुन्दर, साफ, तथा स्पष्ट लिखाई में पैन्सिल के

साथ लिखी गई पाण्डुलिपियाँ उनकी अतिसावधानी के दृष्टान्त है। उनकी टाइप की हुई लिपियो मे गलती का मिलना बहुत ही दुर्लभ है (वे लगभग सदा विद्वतापूर्ण पाण्डुलिपियो तथा चिट्ठी-पत्री की टाइप स्वयम् ही किया करते थे)। वे अभी और अधिक काम करना चाहते थे। उनके प्रकाशित लेख उनकी हस्तलिखित सामग्री के एक छोटे से अशमात्र का ही प्रतिनिधित्व कर पाते है। सचमुच उनकी पाण्डुलिपियाँ वृहदाकार है। आवश्यकता पडने पर वे विना किसी झिझक के विशाल भाषायी सामग्री के पृष्ठो के पृष्ठ सामान्य लिपि अथवा मुद्रक लिपि मे नकल करने का कष्ट भी कर सकते थे। लिखने मे वे स्वय को कलात्मक, विश्वासोत्पादक तथा सहज ढग से व्यक्त कर सकते थे। कभी-कभी तो उनका पहला प्रारूप ही अल्पतम सशोधनो के साथ अन्तिम होता था। फिर भी, लगभग सदा ही वे टाइप से पहले पेन्सिल से प्रारम्भिक प्रारूप वनाते थे, यहाँ तक कि चिट्ठी-पत्री के लिये भी वे ऐसा ही करते थे। विद्वता के प्रति इस अथक उपासना से ही व्होर्फ की शक्ति एव स्वास्थ्य की हानि हुई, यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से वे कभी थके हुए प्रतीत नही होते थे। स्वभाववश वे रात को देर तक काम करते तथा नीद की छोटी-सी झपकी लेकर अथवा अपने यान्त्रिक वडे पिआनो पर शास्त्रीय सगीत की कुछ धुने निकालने के बाद आराम किया करते थे। कार्यालय मे अपने कार्य के घण्टो के प्रति वे कुछ अनियमित थे। वहुत से अवसरो पर तो आने तथा जाने दोनो मे ही देर किया करते थे। परन्तु जितना समय भी वे वहाँ रहते, वहुत काम करते। व्यायाम के लिए उन्हे चलना अच्छा लगता था। अपने आफिस से 'वैदर्स फील्ड' मे अपने घर तक वे चार-पाँच मील की पैदल यात्रा करते तथा मार्ग मे सम्भवत वाटकिन्सन पुस्तकालय मे रुका करते थे।

सामाजिक जीवन का महत्त्व उनके लिए वहुत कम था, सिवाय उन अवसरो के, जव कि इसमे उनके वे भाषाई सहकर्मी सम्मिलित होते जिनके लिए उनकी उपस्थिति सदा ही आनन्ददायक होती थी। वे अपने चारो ओर प्रसन्नतापूर्ण जिज्ञासा का वातावरण वनाये रखते थे। उनके पास वताने के लिए सदैव रोचक एव नई वाते हुआ करती थी।

जैसा कि मैंने किसी और स्थान पर भी चर्चा की है—व्होर्फ शान्त तथा चिन्तनशील अध्यापक थे। कुछ याद करने के लिए अपना दिमाग टटोलते हुए अथवा किसी समस्या के कारण सोचते हुए वे वहुत अधिक समय तक चुप नही रहते थे। तथापि जव कभी वे अपनी किसी नई जानकारी के विषय मे, जो उन्होने प्राप्त की होती, मुझे वताने के लिए तत्पर होते तो उनकी टिप्पणियो की सुगमता तथा स्पष्टता लगभग विस्मयकारी हुआ करती थी। उनके व्यवहार का ढग न तो एक विद्वान जैसा था और न ही एक व्यापारी जैसा—वे केवल शान्त, अविचल, तथा सहज-प्रेरणास्वरूप प्रतीत होते थे। स्वार्थपरता उनके लिए विल्कुल ही अजनवी थी, और यह उनके प्रति श्रद्धाजलि का विषय है कि वे अपने महत्त्वपूर्ण विचारो को दूसरे विद्वानो के साथ वाँटने मे अत्यधिक उदार थे।

II

इस ग्रन्थ का शीर्षक *Language, Thought and Reality* उस पुस्तक का शीर्षक है जिसे व्होर्फ लिखना चाहते थे। मृत्यु के समय छोड़े गये उनके कागजों मे से इसकी एक सक्षिप्त सी रूपरेखा प्राप्त हुई है। यह पुस्तक एडवर्ड सपीर तथा एण्टोइने फेब्रे डी ओलिवेट की स्मृति को समर्पित की जानी थी, तथा इसमे वास्तविकता के वाह्य जगत के विषय मे हमारे चिन्तन के स्पष्टीकरण के लिए भाषा-विज्ञान के आशयो को प्रस्तुत करने की योजना थी। टिप्पणियो से इस वात का सकेत मिलता है कि कॉलेज की पाठ्यपुस्तक के रूप मे तैयार की जाने वाली इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के अन्त मे उपयुक्त प्रश्नोत्तरी के साथ इसके परिशिष्ट मे लैटिन, ग्रीक, हिब्रू, कोटा, अज्तेक, होपी, शॉनी, रूसी, ताओस, चीनी तथा जापानी की भाषागत रूपरेखाए भी सम्मिलित की जानी थी। यह पुस्तक भले ही कभी लिखी नहीं गई, परन्तु मेरा विश्वास है कि प्रस्तुत सस्करण के लिए इसका शीर्षक उपयुक्त है, जिसमे व्होर्फ के प्राय. सभी वे लेख सम्मिलित है जो उनके भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त के अनुरूप है। उनके इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य की भाषायी सरचना, कम से कम एक परिकल्पना के रूप में, उस विधि को प्रमाणित करती है जिसके द्वारा वह वास्तविकता को समझता है तथा उसके अनुसार व्यवहार करता है। इस सस्करण में व्होर्फ के वे लेख भी सम्मिलित है जिन्हे मध्य अमरीकी भाषाविज्ञान तथा सामान्य भाषाविज्ञान मे सर्वाधिक रोचक तथा उपयोगी माना जाता है।

व्होर्फ की समस्त लेख-श्रेणी का अध्ययन उस आधारभूत विषय-वस्तु को प्रकाशित करता है, जिसकी जड़े भाषायी कार्य के प्रथम चरणो के साथ-साथ उनके प्रारम्भिक चिन्तन मे निहित थी। हम पहले ही देख चुके हैं कि कैसे व्होर्फ ने वहुत पहले, 1925 मे ही फ्रासीसी रहस्यवादी तथा हिब्रू विद्वान फेब्रे डी० ओलिवेट के उन सिद्धान्तो को सत्य प्रमाणित करने का प्रयत्न किया, जिन सिद्धान्तो के अनुसार हिब्रू के कुछ वर्णो तथा वर्ण-सयोगो के रहस्यपूर्ण एव तात्विक मूलभाव थे। इनको सत्य प्रमाणित करने के लिए व्होर्फ ने स्वय को, प्रतीयमान रूप से असम्बन्धित भावो की सूक्ष्म एवम् गहरी समानताओ के साथ खेलता हुआ पाया। शुष्क, भंगुर एव विखरे हुए शब्दो की मूलभूत धारणाओ को छिपाने वाले वाह्य आवरण के पीछे का रहस्य जानने का यह उनका पहला कदम था। एक छोटे से लेख मे, जिसे मैंने 'On the Connection of Ideas' (भावो के सम्वन्धो के विषय मे) शीर्षक दिया है, हम व्होर्फ को मौलिक मानसिक व्यापारो के विषय मे चिन्तामग्न तथा भाषा द्वारा प्रतिनिधित, जकड़े हुए जाने के कारण व्याकुल होते हुए पाते है। यह लेख जो यहाँ पहली वार छपा है, 1927 मे मनोवैज्ञानिक होरेस वी० इग्लिश को एक पत्र के रूप मे लिखा गया था। डा० इग्लिश ने तभी मनोवैज्ञानिक शब्दों का एक शब्दकोश लिखा था। इस लेख मे व्होर्फ डा० इग्लिश से भावो के नए प्रकार के साहचर्य के लिए एक नया शब्द वताने का अनुरोध कर रहे थे। व्होर्फ किसी भी

भाषा मे विद्यमान धारणाओ या शब्दो से अधिक सामान्य या अमूर्त प्रकृति की धारणाओ या शब्दो की खोज मे सलग्न थे। उस समय के मनोवैज्ञानिक सम्प्रदायो मे से कोई भी उनको वास्तविक सहायता देने मे समर्थ नही था। इस विषय में व्होर्फ ने उस छोटे से अप्रकाशित नोट मे शिकायत भी की थी, जिसको पूर्णतया ऐच्छिक शीर्षक 'On Psychology' (मनोविज्ञान के बारे मे) देकर यहाँ छापा गया है। तो भी व्होर्फ का अधिकतर कार्य मनोविज्ञान के अत्यधिक निकट है। मूलभावो के लिए खोज ने व्होर्फ को बहुत से उपमार्गो पर चलने के लिए प्रेरित किया। यहाँ तक कि अज्तेक तथा माया भाषाविज्ञान सम्बन्धी कार्यों मे भी व्होर्फ ने कई उपमार्गों को अपनाया। माया चित्रलेखो पर लिखे गए दो लेख जो इस सस्करण मे सम्मिलित है, इस तथ्य की केवल एक झलक प्रस्तुत करते है। परन्तु यह बात और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती—यदि उनके अप्रकाशित लेख 'Stem Series in Maya and certain Maya Hieroglyphs' (माया तथा कुछ माया-चित्रलेखो में प्रतिपादिक श्रेणी) को, जिसके विषय में पहले ही सकेत दिया जा चुका है, यहाँ छापना वाञ्छनीय समझा जाता। दुर्भाग्यवश, हमे यह सन्देह होता है कि प्राय. व्होर्फ उन भावो का विन्यास करने में अपने को बहुत अधिक स्वच्छन्दता दे देते थे, जो भाव दूसरो को पूर्णतया असम्बद्ध प्रतीत होते है। उदाहरणत उनके 'प्रतिपदिक श्रेणी' (Stem series) के लेख मे एक स्थान पर वे माया धातुओ की श्रेणियो को उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत करते है, जिनके विषय मे उनका विश्वास था कि उनमे परिक्षेपण या छितराव के सभी भाव थे : be dispersed (बिखरा हुआ होना), disappear (लुप्त हो जाना), spread (फैल जाना), radiate (प्रकाशित करना) shine (चमकना)। व्होर्फ ने यह पाण्डुलिपि समीक्षा के लिए सपीर को दी। सपीर ने उस पाण्डुलिपि के साथ यह टिप्पणी नत्थी कर दी "मुझे अफसोस है, परन्तु मैं विश्वासपूर्वक नही कह सकता कि मैं 'स वर्ग' की सगतता उसी प्रकार स्पष्ट रूप से अनुभव करता हूँ जैसे आप करते है। उदाहरण के लिए sand, white, weave cloth, much, dislocate आदि आधारभूत परिक्षेपण के आधार पर पूरी तरह आत्मपरक रचना प्रतीत होती है।"[6] व्होर्फ अर्थगत निष्कर्षो को वस्तुनिष्ठ विषय बनाने की आवश्यकता के प्रति सजग हो गए। उनके प्रकाशित कागजो मे प्रयोग के लिए एक सक्षिप्त सा प्रस्ताव मिलता है, जिसमे किसी भी व्यक्ति को अज्तेक शब्दो की एक ऐसी श्रेणी दी जाएगी, जिसमे सबके अग्रेजी मे अर्थ दिए होगे तथा सभी वर्ण *ZE* से युक्त होगे। विषयी को इन शब्दो के लिए किसी प्रकार के समूहन पर पहुँचने के लिए कहा जाना था, उसे यह भी बताया जाना था कि वह

---

6. **स-वर्ग की सामग्री पर निबन्ध** The Phonetic Value of certain Characters in Maya Writing (1933), p. 11 **में छपने से पूर्व पर्याप्त मात्रा में पुनः काम किया गया था।**

निर्णय कर सकता है कि (1) *ZE*-का सर्वत्र एक ही अर्थ है, अथवा (2) कि यहाँ दो, तीन या अधिक *ZE*-है जिनके स्पष्ट तथा बिल्कुल असम्बद्ध अर्थ है अथवा (3) *ZE*-का अर्थो से कोई सम्बन्ध ही नही है। स्पष्ट ही व्होर्फ ने ऐसा प्रयोग कभी नही किया।

यह भी याद रखना होगा कि व्होर्फ ने बहुत पहले इस तथ्य का अवलोकन किया अथवा वे विश्वास करते थे कि उन्होने अवलोकन कर लिया है कि हिब्रू, अज्तेक, तथा माया भाषा, अग्रेजी तथा उन अन्य भाषाओ से भिन्न योजना पर रचित प्रतीत होती है जिन्हे उन्होने बाद मे SAE (Standard Average European) भाषाओ के नाम से अभिहित किया। उन्होने इन भाषाओ को Oligosynthetic भाषाएँ कहा,—अर्थात् ऐसी भाषाएँ जिनकी शब्दावली तत्त्वो की एक बहुत छोटी सख्या से निर्मित है। सन् 1924 मे पढे गए अज्तेक भाषाविज्ञान से सम्बन्धित एक लेख मे उन्होने कहा कि "पहले, प्रत्येक तत्त्व उच्चारण-व्यवहार का बहुत साधारण सा अश है, और दूसरे, एक व्यापक भाव या सम्बन्धित भावो का समूह है जो इस व्यवहार के अश के अनुरूप है।" उनका विचार था कि वे अज्तेक भाषा के शब्द-भण्डार का विश्लेषण ऐसी कुछ धातुओं से करने मे सफल हो गए है जिनकी सख्या 35 से अधिक नही है। वे आगे यह भी कहते है कि—"अब इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह Oligosynthetic तथ्य भाषा-मनोविज्ञान के बहुत कम खोजे गए क्षेत्र मे कुछ नई सीमाओ का उद्घाटन करता है। इसके अन्तर्गत हम किसी भाषा के भावोद्भावना सम्बन्धी समस्त क्षेत्र को 35 प्राथमिक धारणाओ मे इस प्रकार विभाजित किया देखते है कि यह भावो के वास्तविक क्षेत्र की एक योजना अथवा मानचित्र हमारे सम्मुख पहली बार प्रस्तुत करता है। इससे पहले जब भावो का वितरण कोटियो मे किया जाता रहा है, तो वे कोटियाँ किसी दार्श-निक के अन्तर्दर्शन के परिणामस्वरूप रही होंगी, परन्तु, एक भाषा का यह भाव-मानचित्र ऐसा नही है—हम इसकी उपलब्धि उसी तरह करते है जैसे हम प्रकृति के तथ्यो की, तथा इसकी अभी तक अस्पष्ट दिखने वाली समाकृति हमे चुनौती देती है कि हम इसका अनुसन्धान प्रयोगात्मक एवम् आगमनात्मक प्रणालियो से करे।" इन कुछ-कुछ साहसिक भावो मे हम पहले ध्वन्यात्मक प्रतीकवाद की धारणा के प्रति एक विशेष अनुरोध देख सकते है। वह धारणा यह है कि ध्वनियो तथा अर्थो के बीच अन्तर्निहित सम्बन्ध (किसी भाषा मे स्थापित किये गए यादृच्छिक सम्बन्धो के अतिरिक्त) हो सकते है, तथा दूसरे, हम देख सकते है भाषायी सापेक्षता के सिद्धान्त का एक धुँधला सा सकेत। ध्वन्यात्मक प्रतीकवाद की समस्या दीर्घकाल से भाषा-वैज्ञानिको तथा मनोवैज्ञानिको को चुनौती देती रही है। एडवर्ड सपीर ने, जो इस धारणा के प्रति सहानुभूति रखते थे, एक प्रयोग किया, जिसने एक विशिष्ट दिशा का सकेत दिया[7], और यह समस्या समकालीन मनोवैज्ञानिको के समक्ष आज भी बनी

---

7. Edward Spier . *A Study in Phonetic Symbolism*, J. Exp. Psychol. 12-225-239 (1929)

हुई है। व्होर्फ के Oligosynthetic सिद्धान्त मे पूर्वाभासित भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त के प्रसग मे मूल भाव है, "व्यापक भाव या सम्बन्धित भावो के एक समूह की धारणा" जिसका सम्बन्ध एक भाषायी तत्त्व से जोडा जा सकता है, क्योकि यह उस धारणा के बिल्कुल निकट है जिसके अनुसार अर्थगत भावो की भिन्न सस्थितियो वाली भाषाएँ सम्भव भावो के क्षेत्रो के भिन्न 'मानचित्र' प्रस्तुत कर सकती है, या जैसा कि व्होर्फ ने स्वय कुछ समय पश्चात् कहा कि "भिन्न भाषाएँ अनुभव के भिन्न खण्डीकरण" प्रस्तुत कर सकती है ।

भाषायी सापेक्षता की धारणा, सम्पूर्ण रूप मे, उस समय तक विकसित नही हुई जब तक कि व्होर्फ ने सपीर से पढना आरम्भ नही किया। होपी भाषा, जिसका व्याकरण अज्तेक तथा माया से भी कही अधिक जटिल एवम् सूक्ष्म है, का विश्लेषण आरम्भ करने के पश्चात् ही वे इस तथ्य का महत्त्व समझने लगे कि सापेक्षता की धारणा का विकास न केवल 'शब्दीकरण' के भेदो का अवलोकन करने से अपितु व्याकरणिक सरचना के निरीक्षण द्वारा अधिक सुचारु एवम् प्रभावोत्पादक ढग से किया जा सकता है। इस सग्रह में होपी भाषा पर छपे लेख स्वय प्रमाण है, क्योकि इन लेखो मे व्होर्फ, होपी क्रिया की काल एवम् पक्ष-व्यवस्था, होपी मे सज्ञा-वर्गों की स्थिति आदि के विषय मे की गई अपनी प्रेरक खोज की सूचना देते है ।

व्होर्फ का भाषाविज्ञान सम्बन्धी समस्त दृष्टिकोण उनके प्रारम्भिक धार्मिक चिन्तन के अतिरिक्त अर्थ की मौलिक समस्याओ मे अभिरुचि के कारण विकसित हुआ, या मैं यूँ कहना चाहूँगा कि इस दृष्टिकोण का विकास मूलभूत बौद्धिक व्यापारो के कारण हुआ। 1936 के आसपास लिखे गए तथा पहली बार इस सग्रह मे छपे अत्यन्त रोचक एवम् ज्ञानप्रद लेख 'A Linguistic Consideration of thinking in Primitive Communities' (आदिम समाजो मे चिन्तन का भाषायी विवेचन) मे व्होर्फ महोदय अनुरोध करते है कि "भाषाविज्ञान तत्वत अर्थ की खोज है ।" वे लिखते है कि "भाषाविज्ञान का वास्तविक उद्देश्य भाषा के गहन अन्धकार को आलोकित करना है, तथा इसके द्वारा विचार, सस्कृति तथा किसी विशेष सम्प्रदाय के जीवन के प्रति दृष्टिकोण सम्बन्धी गहन अन्धकार को 'किसी स्वर्णिम पदार्थ' से आलोकित करना है, जिसे मैंने 'अर्थ का यह रूपान्तरकारी सिद्धान्त' अभिहित होता सुना है।" व्होर्फ को प्रक्रिया की अपेक्षा वास्तविक तात्पर्य की अधिक चिन्ता रहती थी —अर्थात् उनकी यह जानने मे अधिक दिलचस्पी है कि किन्ही सूक्ष्म अर्थो मे क्या सोचा जा रहा है न कि उन प्रक्रियाओ मे जिनके द्वारा कोई व्यक्ति सोच सकता है, और यह दृष्टिकोण ही उन्हे 'विषयवस्तु से पूर्ण या सारगर्भित' भाषाविज्ञान की ओर ले गया न कि मनोविज्ञान की ओर, जो अपनी सामान्यीकृत, उद्दीपन-अनुक्रिया-सरचना की चिन्ता के कारण अपेक्षाकृत 'विषयवस्तु रहित' या सारहीन है। इसमे सन्देह नही कि व्होर्फ यह विश्वास करते हुए प्रतीत होते

है कि विचारो की विपयवस्तु, 'चिन्तन की प्रक्रिया' को प्रभावित करती है, या भिन्न विपयवस्तु भिन्न प्रकार की प्रक्रियाओ को जन्म देती है, अत: विपयवस्तु पर ध्यान दिए विना प्रक्रिया सम्बन्धी सामान्यीकरण असम्भव हो जाता है। उनका यह विश्वास भी था कि विभिन्न भापायी सरचनाओ की तुलना से विचारो की विपय-वस्तुपरक भिन्नताओ, तथा चिन्तन-प्रक्रिया एवम् सामान्य व्यवहार पर उनके अनुरूपी प्रभावो का चमत्कारपूर्ण रहस्योद्घाटन होगा। भापा की सरचनाओ मे प्रकट तथा सूक्ष्म दोनो प्रकार के भेद खोज निकालने मे वे अत्यन्त विचक्षण थे, तथा वे भेद कम से कम भापायी स्तर पर पूर्णतया प्रदर्शनीय थे। वे यही पर नही रुके वल्कि किसी प्रकार भिन्न भाषा-तथ्यो से सम्वन्धित व्यवहारगत विभिन्न-ताओ के प्रमाण खोज निकालने का प्रयत्न करते रहे। यद्यपि यह प्रयत्न, सम्भव है, पूर्ण सफल न रहा हो परन्तु फिर भी सपीर अभिनन्दन-ग्रन्थ के लिए सन् 1939 के ग्रीष्म मे लिखे गए लेख 'The Relation of Habitual Thought and Behaviour to Language' (भाषा के साथ अभ्यासगत विचार तथा व्यवहार का सम्वन्ध) मे इसे मूर्त रूप दिया गया है। यह उनका अन्तिम लेख था जो उन्होने मुख्यत: अपने सहयोगियों को सम्वोधित करके लिखा था। भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त इस सग्रह के अन्तिम चार लेखों मे अत्यन्त रोचक ढग से प्रस्तुत किया गया है। ये लेख मुख्य रूप से साधारण पाठको के लिए लिखे गए है।

व्होर्फ के भापायी सापेक्षता के सिद्धान्त, या अधिक निश्चित रूप से, व्होर्फ-सपीर परिकल्पना ने, (क्योकि इस विचार को विकसित करने मे सपीर का भी योग था) यह कहने की आवश्यकता नही है, काफी ध्यान आकर्पित किया है। 'टेकनॉलोजी रिव्यू' मे लिखे गए किसी-न-किसी लेख के पुनर्मुद्रणो (जिनका प्रारम्भ 1941 मे ही Hayakawa की *Language in Action* नामक पुस्तक, जो ग्रन्थ क्लव द्वारा चुनी गई थी, मे हो गया था) के माध्यम से इन लेखो का विषय साधारण जनता, भाषाविज्ञानियो, मानवशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिको की जानकारी मे आया। भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त न जाने क्यो उन लोगो को भी रोचक लगता है जो विशेषज्ञ नही है। सम्भवत: यह उस तथ्य की ओर सकेत है कि हम अनजाने मे ही, भाषा के गठन द्वारा वास्तविकता के एक विशेष रूप को देखते रहने की चाल मे फँमे रहते है, और इस सिद्धान्त के द्वारा चाल का पता लगने पर हम ससार को एक नई अन्तर्दृष्टि से देख सकते है। तथापि, यह निश्चित है कि जातियो अथवा सस्कृतियो के वीच सञ्चार-व्यवस्था की विफलता के लिए भाषायी सापेक्षता को बुद्धिसगत वनाने के किसी भी सस्ते अनुरोध को क्षमा करना व्होर्फ की इच्छाओ से बहुत दूर की वात है। इसके विपरीत वे आशा करेगे कि भाषायी सापेक्षता का पूर्ण वोध 'मासाय' भाषाओ (Standard Average European)की कल्पित श्रेष्ठता सम्वन्धी मनोवृत्ति को कुछ विनम्रता की ओर ले जाए तथा मानवो के वीच 'विचारो के भ्रातृत्व' को स्वीकार करने के लिए अधिक अनुकूल वना सके, जैसा कि उन्होने ऊपर

उद्धृत किए गए एक छोटे से लेख मे लिखा था। परन्तु आदिम भाषाओ मे खोज-कार्य, सस्कृतियो के बीच बौद्धिक खाई पाटने मे सहायता करने के निमित्त यदि नही भी है, तो भी व्होर्फ आग्रहपूर्वक कहेगे कि इन भाषाओ के 'तर्को' का अनुसन्धान हमारे अपने चिन्तन-अभ्यासो को समझने मे सहायक होगा।

वास्तव मे, भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त की प्रामाणिकता आज तक पर्याप्त रूप मे प्रदर्शित नही की गई है, न ही इसका स्पष्ट रूप से खण्डन किया गया है। इस बात पर सहमति प्रकट कर दी गई प्रतीत होती है कि भाषाएँ बहुत से विचित्र एवम् आश्चर्यजनक रूप मे एक दूसरे से पृथक् होती है परन्तु यह एक विवादास्पद विषय है कि क्या भाषा की सरचना सम्बन्धी ऐसी विभिन्नता का सम्बन्ध 'ससार को देखने' या 'समझने' के तरीको की वास्तविक भिन्नताओ के साथ है। इस प्रकार के सम्बन्ध की सम्भावनाओ से, जो बहुत अधिक प्रभावित हैं, उनमे Kluckhohn एवम् Leighton (1946) Laura Thompson (1950) Hoijer (1953) तथा Kluckhohn (1954) के नाम उल्लेखनीय है। उदाहरणार्थ Kluckhohn एवम् Leighton का कथन है कि नवाहो भाषा हमारी भाषा से मूलत. इतनी भिन्न है कि नवाहो जाति के मन को समझने के लिए नवाहो की भाषायी सरचना का ज्ञान पूर्वापेक्षित है। वे नवाहो तथा अग्रेजी के बीच अनुवाद की भारी कठिनाइयो का उल्लेख करते है, तथा उनका आशय है कि दोनो भाषाएँ वास्तव मे दो भिन्न ससारो मे क्रियाशील होती है। Hoijer का दावा है कि उसने ऐसे सकेत खोज निकाले है जिनके अनुसार नवाहो क्रिया-पदीय व्यवस्था (कि लोग कार्यो का आरम्भ नही करते अपितु उनमे केवल भाग लेते हैं, या उनमे प्रवृत्त हो जाते है) मे अन्तर्निहित विश्व के स्वरूप तथा नवाहो की पौराणिक कथाओ मे मिलने वाली अकर्मण्यता तथा सामान्य अशान्ति या भाग्यवादिता मे परस्पर सम्बन्ध है।

दूसरी ओर व्होर्फ के प्रणाली-तन्त्र एवम् निष्कर्षो के दो कटु आलोचक Lenneberg (1953) तथा Feuer (1953) रहे है। Lenneberg मुख्यत. व्होर्फ के प्रणाली-तन्त्र पर आक्षेप करते है। प्रथम, वे व्होर्फ की उस अनुवाद-प्रणाली की आलोचना कई आधारो पर करते है, जिसका प्रयोग उन्होने भाषाओ मे भिन्नता दिखाने के लिए किया है। 'बन्दूक साफ करने' जैसी घटना के भाषायी व्यवहारो मे बहुत अधिक विभिन्नताओ का निश्चित रूप से यह अर्थ नही होता कि उस घटना के प्रत्यक्षण मे भी सवादी भिन्नता हो, यह भी सम्भव है कि वे भाषा के उन लाक्षणिक विकासो का परिणाम हो जिनके विषय मे साधारणतया वक्ता को बोध न हो, (ठीक इसी तरह जैसे हम साधारणतया breakfast के बारे मे breaking a fast के रूप मे नही सोचते)। द्वितीय, Lenneberg आग्रहपूर्वक कहते है कि भाषायी तथा अभाषायी घटनाओ का अलग-अलग प्रेक्षण अवश्य किया जाना चाहिए, तथा उनका सह-सम्बन्ध दिखाने से पहले उनका विवरण भी दे दिया जाना चाहिए और यह कि इस प्रकार की घटनाओं के बीच

किसी प्रकार का साहचर्य दिखाने के लिए प्रमाण के सामान्य नियमो को लागू करना चाहिए। अन्यथा, भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त उलझन मे डालने वाला बन जाता है, या कम से कम पुनरुक्ति-परक तो इस दृष्टि से हो ही जाता है कि 'विश्व के स्वरूप' मे भिन्नताओ का एक मात्र प्रमाण अन्त मे भाषायी भिन्नता ही निकलता है। सामाजिक दार्शनिक Feuer का विश्वास है कि कारण-कार्य-न्याय के आधार पर भिन्न भाषा बोलने वाली सस्कृतियो से यह अपेक्षित नही है कि स्पेस, काल, कारणता तथा भौतिक ससार के अन्य मूलभूत तत्त्वो का प्रेक्षण करने के उनके ढग भी भिन्न हो, क्योकि अस्तित्व के लिए इन तत्त्वो का सही प्रेक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

क्योकि इन पर, तथा अन्य तर्कमूलक प्रणाली-तन्त्र एव मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों पर, भाषा-वैज्ञानिको, मानव-शास्त्रियो, मनोवैज्ञानिको एवम् दार्शनिको के एक विशेष सम्मेलन मे पूर्णरूप से वाद-विवाद हो चुका है, (Hoijer 1954)। अत: यहाँ उनका विस्तृत वर्णन करना निरर्थक है। यहाँ पर सम्भवत. यह अपेक्षित है कि उस सम्मेलन मे व्याप्त तत्वत. नकारात्मक, निराशावादी मनोवृत्ति का प्रतिकार इस तथ्य की ओर सकेत करके किया जाए कि व्होर्फ-सपीर परिकल्पना पर अब तक सही ढग का शोधकार्य अत्यन्त अल्पमात्रा मे किया गया है। Brown तथा Lenneberg (1954) ने एक प्रयोग किया था जिसने प्रदर्शित किया कि रंगो को पहचनाने तथा उन्हे याद रखने की योग्यता मे भेदो का सम्बन्ध विशिष्ट रगो के नामो की प्राप्यता से था। इस प्रयोग के अतिरिक्त ऐसे शोध-कार्य वास्तव मे नही हुए, जिन्होने भाषायी सरचनाओ तथा अभाषायी व्यवहार के बीच सह-सम्बन्ध का पर्याप्त परीक्षण किया हो। इस प्रकार के शोधकार्य की ओर सकेत करने वाले अनेक सुझाव Osgood एवम् Sebeok (1954) द्वारा सम्पादित प्रबन्ध मे दिए गए है।

एक अन्य विचार भी है, जिस पर व्होर्फ-सपीर परिकल्पना से सम्बन्धित विभिन्न विचार-विमर्श करते समय पर्याप्त बल नही दिया गया, जैसे कि भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त इतना पुनरुक्तिपरक नही है जितना कि इसे सिद्ध करेने की चेष्टा की गई है। यह कहा जा चुका है कि हम पुनरुक्ति का उल्लेख केवल तब करते है जब हम भाषाओ की भिन्नताओ से 'विश्व-स्वरूप' सम्बन्धी व्यवहार में भिन्नताएँ दिखाने का अनुरोध करे। यह भी कहा जा चुका है कि उन अभाषायी व्यवहारो का पता लगाना भी आवश्यक है जिनका सह-सम्बन्ध भाषायी भेदो से है। यह निस्सन्देह वाञ्छनीय होगा, परन्तु अभाषायी व्यवहारात्मक सहसम्बन्धियो से निरपेक्ष, केवल भाषायी भिन्नताओ मे रुचि रखने के लिए अभी कुछ कहना शेष है। यदि हम यह मानते है कि अप्रकट अन्तर्निहित व्यवहार का अस्तित्व है, जिसमे मानसिक अवस्थाएँ, वर्ग, मनोवृत्तियाँ, 'मध्यस्थीय प्रक्रियाएँ' आदि है, तो हमे यह मानना पडेगा कि ऐसा व्यवहार जनता के प्रेक्षण की पहुँच से परे है, केवल शाब्दिक सूचना के माध्यम को छोड़कर। इनके पीछे इस प्रकार की मानसिक

प्रक्रियाओ के अस्तित्व की कल्पना चाहे हम वास्तव मे करे या न करे, परन्तु हमे प्रेक्षण एवम् ज्ञान से सम्बन्धित मुख्य दत्त सामग्री के रूप मे, शाब्दिक अनुक्रियाओ को उनके विभिन्न रूपो सहित अत्यधिक महत्त्व देना पडता है।

मान लीजिए कि अब हमे पता चला है कि कुछ पर्यावरणगत परिस्थितियो मे परिवर्तन करने से हम किसी दत्त भापाभापियो द्वारा प्रस्तुत की गई शाब्दिक सूचनाओ मे सवादी परिवर्तन कर सकते है, उदाहरणार्थ, हम यह पता लगाने मे सफल हो सकते है कि इस तरीके से हम यह नियन्त्रण प्राप्त कर सकते है कि कई शब्दो मे से (प्रत्येक शब्द कई पर्यावरणगत उद्दीपनो मे से एक के लिए होता है), कौन से शब्द का प्रयोग परिस्थिति की सूचना देने वाले वाक्य के 'उद्देश्य' के रूप मे किया गया है। इससे आगे, मान लीजिए कि किसी दूसरी भापा के वोलने वालो पर प्रयोग करने के पश्चात् हमे ज्ञात हुआ कि भिन्न पर्यावरणगत परिस्थितियो के अनुरूप उक्त वाक्य मे परिवर्तन करना असम्भव है, और यह कि सभी वोलने वाले परिस्थिति की सूचना देने वाले वाक्य के उद्देश्य के रूप मे कई उद्दीपनो मे से एक के लिए अनिवार्य रूप से भाषायी अभिव्यक्ति का प्रयोग करते है, तथा यह भी कि पूछे जाने पर इस भापा के वोलने वालो ने वताया कि किसी वाक्य मे उद्देश्य के स्थान पर किसी अन्य भाषायी अभिव्यक्ति का प्रयोग करना 'अस्वाभाविक' या निरर्थक होगा। तव भाषायी व्यवहारो मे अन्तर अपने-आप मे रोचक होगे, तथा हमे यह निष्कर्ष निकालना होगा कि बोलने वालो के शाब्दिक व्यवहार का विवरण देने के लिए वाक्यो के उद्देश्य-घटको का वरण करने के निमित्त हमे भाषा-सरचना को ध्यान मे रखना होगा। आगे, यदि हमे वाक्य के उद्देश्य के व्याकरणिक अर्थ के विषय मे कुछ मूलभूत ज्ञान हो तो हम दो भापाओ की सज्ञानात्मक प्रक्रियाओ की कुछ तुलना करने मे समर्थ हो सकते है। उदाहरणार्थ, मान लीजिए, वाक्यगत उद्देश्य का व्याकरणिक अर्थ 'सभाव्यकर्तृ के रूप मे देखा गया पदार्थ', हो तो तब हमे यह निष्कर्ष निकालने की अनुज्ञा मिल जानी चाहिए कि उदाहरण के लिए ली गई दूसरी भापा के बोलने वाले कुछ विशिष्ट उद्दीपनो को, 'सभाव्य कर्ताओ' के रूप मे शीघ्र ही नही देख पाते है।

इस उदाहरण को कई वातो मे अस्वाभाविक होना पडा है. अशत इसलिए कि हमे अव तक पता नही है कि क्या वर्णित प्रकार की भिन्नताएँ भिन्न-भापा-भापियो मे मिल सकती है, तथा अशत इसलिए कि हम अच्छी तरह नही जानते कि व्याकरणिक कोटियो के व्यवहारगत सह-सम्वन्धियो का विवरण किस प्रकार दिया जाना चाहिए। तथापि, यही वह भापा-भिन्नता है जिसे व्होर्फ अन्तर्दृष्टि के आधार पर प्रस्तुत करते है। वे यह मानकर चलते है कि भापाओ के वीच प्रभेद घटनाओ की सूचना देने की विधियो के अनुरूप होगे तथा हम अन्तर्दृष्टि द्वारा उन व्याकरणिक एवम् व्यवहारगत शक्तियो का अनुभव कर सकते है, जो उन भापायी तथ्यो के आधार है, जिनका वह वर्णन करता है। हमे यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि हमने भाषायी भिन्नताओ तथा इन भिन्नताओ द्वारा डाले गए दवाव के विपय मे विस्तारपूर्वक

सूचनाएँ प्राप्त करनी केवल आरम्भ की है, परन्तु जब हमे यह सूचना प्राप्त हो भी जाएगी तो इसका अधिकाश भाग निश्चित रूप से उन वाचिक व्यवहार एवम् पर्यावरणगत प्रेरणा-ग्रन्थियो के क्षेत्र-विषयक होगा जो इस वाचिक व्यवहार को उत्पन्न करते है।

भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त चाहे प्रामाणिक है अथवा नहीं, परन्तु इसके विषय मे जिस सावधानी का उल्लेख करने की आवश्यकता है, वह यह है कि इसने जिस दिलचस्पी को उभारा है और भविष्य मे भी उभारता रहेगा, उसे भाषा-सार्वभौमिकताओं के महत्त्व से दूसरी ओर ध्यान आकृष्ट करने की छूट नही मिलनी चाहिए। भाषा-सार्वभौमिकताएँ, अर्थात् सभी भाषाओ मे मिलने वाले तथ्य, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इतने ही अधिक रोचक हो सकते है जितनी कि भाषायी भिन्नताएँ। क्या यह सच है कि सभी भाषाओं के वाक्यो मे उद्देश्य-विधेयात्मक रचनाएँ मिलती है? क्या सभी भाषाओ मे किसी-न-किसी प्रकार का सज्ञा-क्रिया विरोध मिलता है? क्रिया-काल व्यवस्था के कौन से वैशिष्ट्य है जो सभी भाषाओ मे सामान्य रूप से मिलते है? इन प्रश्नों के उत्तर संज्ञानात्मक कार्यो के सामान्यीकृत मनोविज्ञान के विकास मे सहायक हो सकते है।

क्योंकि व्होर्फ मुख्यत. अपने भाषायी सापेक्षता सम्बन्धी विचारो के कारण जाने जाते है, इसलिए इस ग्रन्थ में उनके वही लेख प्रस्तुत किए गए है जिनका इस विषय से सगत सम्बन्ध है। तथापि, कम से कम दो अन्य क्षेत्रो में उनके अध्ययन मान्यता प्राप्ति के अधिकारी है।

व्होर्फ का दुर्बोध अज्तेक लेखो के अनुवाद करने का प्रारम्भिक कार्य निस्सन्देह शानदार था तथा मध्य अमरीकी शोध के एक उपेक्षित पक्ष के प्रति विशिष्ट योगदान था। अज्तेक के अनुवाद करने में उनकी अभिरुचि का स्थान शीघ्र ही माया चित्रात्मक लेखो के अन-अकीय अंशो को पढने की विधियो की खोज ने ग्रहण कर लिया। कम से कम इस क्षेत्र मे व्होर्फ के कार्य की प्रामाणिकता अत्यधिक विवादास्पद है। इस तथ्य से कोई भी इन्कार नही कर सकता कि इस क्षेत्र मे उनके प्रेक्षण अत्यधिक सूक्ष्म थे, तथा उनका 'जाँच कार्य' अन्वेषी एवम् निपुण है। कोई अविशेषज्ञ यह नहीं कह सकता कि व्होर्फ को माया चित्रात्मक लेखो के अर्थ-निर्णय मे वास्तव मे कितनी सफलता प्राप्त हुई। उनके द्वारा प्रस्तुत की गई अनुवाद-प्रक्रिया मे बहुत अधिक सत्याभास है जैसा कि इस ग्रन्थ मे पुनर्मुद्रित लेख 'Decipherment of the Linguistic Portions of Maya Hieroglyphs (माया चित्रलेखो के भाषायी अशों का अर्थ निर्धारण) से विदित है। व्होर्फ एक अत्यन्त वस्तुनिष्ठ एवम् बुद्धिमान विद्वान थे, अत उन्होने कोई ऐसी तदर्थ सरचना प्रस्तुत नही कि जिसका परीक्षण न किया जा सके या जिसका सामान्यीकरण न हो सके। तथापि व्होर्फ के जीवनकाल मे ही कई माया विद्वानो, जिनमें Long (1935-36), Andrews (1938) तथा सबसे अधिक कटुतापूर्ण J. Eric, S. Thompson (1950) शामिल है, द्वारा आपत्ति की गई। फिर भी, Long तथा Andrews द्वारा की गई आलोचनाएँ मुख्यत: गौण विषयो से सम्बन्धित थी। उनमे से कुछ को तो व्होर्फ ने मान भी लिया था। ऐसा प्रतीत होता है

कि Thompson ने व्होर्फ की उस अत्यधिक सुदृढ शिकायत का कोई उत्तर नही दिया जिसमे उन्होने कहा कि माया चित्रात्मक लेख सम्बन्धी शोधकार्य की परम्परा भाषायी प्रमाणो की उपेक्षा करने की रही है।

इतनी देर बाद, अर्थात् 1939 मे Tozzer (1939) अपने इस विश्वास को प्रकट करने को उत्सुक था कि माया चित्रात्मक लेखो मे पर्याप्त मात्रा मे ध्वन्यात्मक घटक है, जैसा कि व्होर्फ का आग्रह था। हमे यह भी बताया गया है कि प्रसिद्ध माया विद्वान Herbert J. Spinden व्होर्फ द्वारा 1940 मे आठवी 'अमरीकी वैज्ञानिक कॉंग्रेस' मे पढ़े गए लेख के विषय मे काफी उत्साह दिखा रहे थे। इस लेख को यहाँ इसलिए सम्मिलित किया गया है, क्योकि माया चित्रात्मक लेखो के अध्ययन मे वहुत कम प्रगति हुई है। यह लेख इस समस्या से सम्वन्धित तथा सामान्य रूप से लेखन-पद्धतियो के विषय मे व्होर्फ की धारणाओ को बहुत अच्छी तरह प्रस्तुत करता है।

अन्तत, सामान्य भाषाविज्ञान के प्रति व्होर्फ के योगदान को कम नही समझना चाहिए। उनके Oligosynthesis तथा Binary Grouping (द्विचर समूहन) के सिद्धान्त निश्चित रूप से अतिरञ्जित थे। सपीर का शिष्य वनने के बाद Febre d' Olivet के कार्य की प्रशसा जारी रखने के अतिरिक्त उन्होने इस प्रकार के सभी सिद्धान्तो के प्रति अनुरोध करना वन्द कर दिया था। तथापि, व्होर्फ ने Olig-Osynthesis के अपने सिद्धान्त को वैशिष्ट्यपूर्ण मौलिकता एवम् विचक्षणता द्वारा विकसित किया है, और यह सम्भवत. दुर्भाग्य की वात है कि प्रकाशन के लिए, वे सिद्धान्त का पूर्ण एवम् प्रौढ विवरण, स्वय प्रस्तुत नही कर पाए। क्योकि, यह भली भाँति कल्पनीय तथ्य है कि कुछ ऐसी भाषाएँ है, जिनके अज्तेक तथा माया-भाषाएँ सम्भव दृष्टान्त है, जिनकी सारी शव्दावली मे व्याप्त उपरुपिमिक तत्त्व उन प्रासगिक Phonesthemes अर्थवाहक ध्वनियो की अपेक्षा अधिक उत्पादक है, जिन्हे अग्रेजी भाषा मे देखा गया है, (जैसे sp, spit, splash, spray, spout, sputter, splatter इत्यादि मे, जो कुछ विद्वानो की दृष्टि मे 'शक्तिशाली वहिर्मुखी गति' के भाव का वहन करता है)।

कुछ भी हो व्होर्फ भाषायी विवरण देने मे दक्ष थे। Milpa Alta Aztec तथा Mishongnovi Hopi की, उनकी, रूपरेखाएँ अनुकरणीय है। उनका वैशिष्टय न केवल प्रचलित सूक्ष्म ध्वनिमिक तथा रुपात्मक विवरण देने मे है, अपितु व्याकरणिक कोटियो के अर्थ की खोज पर असाधारण वल देने मे भी निहित है। इस प्रकार की प्रणाली की कुछ झलक प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित लेखो मे देखी जा सकती है। होपी के लिए 'Some Verbal Categories of Hopi' नामक लेख मे तथा अग्रेजी या अन्य भापाओ के लिए सामान्य रूप मे 'Grammatical Categories' नामक लेख मे इस प्रणाली की झलक मिलती है, जहाँ उन्होने 'प्रकट' तथा 'अप्रकट' व्याकरणिक कोटियो का अन्तर दिखाया है तथा पहली वार Cryptotype (गूढ प्ररूप) शव्द का प्रयोग किया है। मेरा विश्वास है कि अव यह स्पष्ट शव्दो मे कहा जा सकता

है कि समकालीन भाषाविज्ञानियो ने व्होर्फ की गूढ प्ररूप सम्बन्धी धारणा के पूरे आशय को समझना अभी आरम्भ ही किया है।

व्होर्फ जब केवल ध्वन्यात्मक तथा ध्वनिमिक समस्याओ पर भी कार्य करते थे तो उनका कार्य अत्यधिक मौलिक होता था। स्पष्ट ही ये Allophone शब्द को प्रस्तावित करने वाले पहले व्यक्ति थे जो आजकल भाषाविज्ञानियो द्वारा साधारण रूप मे प्रयुक्त किया जाता है। अग्रेजी एकाक्षरो की उनकी रूपरेखा, जोकि 'Linguistics as an Exact Science' नामक उनके लेख मे प्रस्तुत की गई है, उस समय अग्रेजी ध्वनि-समूहो के बारे मे तथ्यो का मौलिक समन्वय था। उन्होने अग्रेजी की अपनी बोस्टन बोली की स्वनिमिकी पर एक रोचक लेख लिखा, जो उनकी मृत्यु के उपरान्त सन् 1943 मे प्रकाशित हुआ।

व्होर्फ भाषायी सरचनाओं के रोचक एवम् सूक्ष्म तत्त्वो के हर प्रकार से अत्यधिक विचक्षण प्रेक्षक थे। उदाहरणार्थ, शॉनी एक ऐसी भाषा थी जिसका उन्होने पहले अध्ययन नही किया था, उसके विषय मे सूचनाओ का एक वृहत् सग्रह, उनके हाथों मे पड़कर आकृति-क्षेत्र सम्बन्धो पर कुछ नए दृष्टिकोणो को सुझाने मे समर्थ हुआ, जिसके उदाहरण शॉनी शब्द-रचना में दिए गए है। यहाँ पाठक को इसी ग्रन्थ मे प्रकाशित 'Gestalt Technique of Stem Composition in Shawnee' नामक लेख पढने का सुझाव दिया जाता है। भाषायी सरचना मे अपनी अन्तर्दृष्टियो के सभी आधारो को मानो एक ही पुलन्दे मे लपेटने के लिए, व्होर्फ को एक बार एक ऐसी रूपरेखा बनाने का अवसर मिला जिसके विषय मे उनका विचार था कि मानव-शास्त्र के क्षेत्र-कार्यकर्ता उसका प्रयोग नई भाषाओ के विषय मे सूचना एकत्रित करने के लिए कर सकते है। इस रूपरेखा का Murdock के द्वारा 'Outlines of Cultural Materials' (1938) नाम के एक प्रकाशन मे निर्देश किया गया था, परन्तु यह पहले कभी प्रकाशित नही हुई थी। इस विश्वास पर कि यह अब भी उपयोगी है, यद्यपि इसके प्रकाशन मे बहुत विलम्ब हो गया है, फिर भी मैंने इसे प्रस्तुत सग्रह मे व्होर्फ द्वारा दिए गए शीर्षक 'Language : Plan and Conception of Arrangement' के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया है। निस्सन्देह यह लेख अपने रेखात्मक स्वरूप तथा सक्षिप्त शैली द्वारा अस्पष्ट रूप से प्राय. सकेतित अर्थो को समझने के लिए पाठक से पर्याप्त मात्रा मे भाषायी सूक्ष्मताओ के ज्ञान की अपेक्षा करता है। परन्तु कम से कम इस प्रकार पाठक के अन्दर कुछ उस उत्पादक कल्पना को प्रेरित करने के लिए उपयोगी हो सकता है जो प्रत्येक विषय मे व्होर्फ का वैशिष्ट्य था।

विशेष नोट

पाठक को सचेत किया जाता है कि इस ग्रन्थ मे होपी के लिए प्रयुक्त ध्वन्यात्मक लेखन-प्रणाली प्रत्येक लेख मे प्रयुक्त विशेष पद्धति के अनुसार बदलती रहती है। इस लेखन-प्रणाली को नियमित करने के प्रयत्न के लिए बहुत अधिक भाषायी खोज की आवश्यकता पड़ती जिसे सम्पन्न करने के लिए सम्पादक तैयार नही था।

आभार स्वीकृतियाँ

ह्वोर्फ के पहले और कही प्रकाशित, वहुत से लेखो को इस ग्रन्थ मे सम्मिलित करने की अनुमति के लिए यहाँ आभार प्रदर्शित किया जाता है :

Dr Sol Tax सम्पादक के प्रति 'A Central Maxican Inscription Combining Mexican and Maya Day Signs' लेख के लिए, जो *American Anthropologist* ग्रन्थखण्ड 34 स० 2, से लिया गया है। Dr. Bernard Bloch सम्पादक के प्रति 'The Punctual and Sagmentative Aspects of Verbs in Hopi' 'Some Verbal Categories of Hopi' तथा 'Grammatical Categories' लेखो के लिए जो *Language* ग्रन्थखण्ड 12 स० 2, ग्रन्थखण्ड 14 स० 4, तथा ग्रन्थखण्ड 21 स० 1 से क्रमश. लिए गए है।

Dr. C F Voegelin सम्पादक के प्रति 'An American Indian Model of the Universe' तथा 'Linguistic Factors in the Terminology of Hopi Architecture लेखो के लिए, जो 'International Journal ot American Linguistics ग्रन्थ खण्ड 16 स० 2, तथा ग्रन्थखण्ड 11 स० 2 से लिए गए है।

Leslie Sapir सम्पादक के प्रति 'The Relation of Habitual Thought and Behaviour to Language' लेख के लिए, जो *Language Culture and Personality* Pp 75-93 (Menasha Wis, Sapir Memorial Publication Fund, 1941) से लिया गया है।

Dr. Leonard Carmichael सचिव, 'Smithsonian' सस्था के प्रति, 'Decipherment of the Linguistic Portion of Maya hieroglyphs' लेख के लिए जो *'Smithsonian Report for 1941'* pp 479-502 से लिया गया है।

Dr N Sri Ram, अध्यक्ष 'The Theosophical Society' के प्रति 'Language Mind & Reality' लेख के लिए, जो *'The Theosophist'* जनवरी 1942 से लिया गया है।

इस ग्रन्थ मे व्होर्फ के कई लेखो के लिए चित्र J Martin Rosse द्वारा विशेष रूप से पुन. तैयार किए गए है। J Martin Rosse ने व्होर्फ के *Technology Review* के लिए 1940 तथा 1941 मे लेखो के लिए उन अपरिष्कृत रूप-रेखाओ को परिष्कृत किया था, जिनका अपरिष्कृत रूप स्वय व्होर्फ ने तैयार किया था।

मैं उन अनेक महानुभावो का भी आभारी हूँ जिन्होने ऐसी सूचना तथा कागजात दिए है, जो इस सस्करण को तैयार करने के लिए वहुत आवश्यक थे। Dr George L. Targer ने मुझे यह निर्णय लेने मे सहायता दी कि व्होर्फ के लेखो मे से कौन-कौन से सम्मिलित किए जाने चाहिए। Prof C. F. Voegelin ने वहुत से दुर्लभ पुनर्मुद्रण दिए, तो, 'Language . Plan and Conception of Arrangement'

की हस्तलिपि प्रति Prof. Normon Mcquown से प्राप्त हुई। Prof. Herbert Hackett ने ग्रन्थ-सूची सम्बन्धी कई बातो के बारे मे बताया, जो अन्यथा मुझ से छूट सकती थी।

विशेषतः मैं व्होर्फ परिवार के कई सदस्यों—व्होर्फ की विधवा पत्नी Mrs. Celia Peckham Whorf तथा उनके भाई John Whorf, जो Province town, Massachusetts मे रहते है, के प्रति बहुत आभारी हूँ, जिन्होने मुझे साक्षात्कारो की अनुमति प्रदान करने की कृपा की। व्होर्फ के पुत्र Robert Peckham Whorf के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिन्होने मुझे व्होर्फ के लेखो तथा पत्रो की जाँच करने के लिए अपने घर मे कई दिन ठहरने की अनुमति दी, तथा कई पाण्डुलिपियाँ ले जाने की अनुमति दी, जिनमे से कुछ इस ग्रन्थ मे पहली बार छपी है।

आरलिंग्टन मैसाच्यूसेट्स, जॉन बी० कैरोल
जून, 1955

भावों के सम्बन्धों के विषय में[1]

320 वॉलकॉट हिल रोड,
वैदर्सफील्ड, कॉन
जुलाई, 12, 1927

प्रिय डा० इंग्लिश,

मैं आपको आपके लघु शब्दकोश के सम्बन्ध मे पत्र लिखने की सोच रहा था, विशेष रूप से आपसे एक ऐसे शब्द के विषय मे पूछने के लिए जो एक मनोवैज्ञानिक धारणा को अभिहित कर सके। परन्तु मुझे इससे पहले अवसर ही प्राप्त न हुआ, और अब मुझे पता नही कि इस मौसम मे आप अपने मिडल टाऊन के पते पर होगे भी या नही। मै यह अवश्य कहना चाहूँगा कि मुझे यह शब्दकोश बहुत अच्छा लगा। यह सचमुच बहुत रोचक है, और रोचक होना शब्द-कोश के लिए अत्यन्त दुर्लभ बात है। यही नही, यह शब्दकोश बहुत उपयोगी भी है। परन्तु मुझे इस कोश मे अथवा अन्य किसी स्थान पर, एक ऐसे तथ्य के लिए जिसमे मेरी अभिरुचि है, एक मान्यता प्राप्त शब्द नही मिल पाया है। मैं यह जानना चाहूँगा कि क्या आप ऐसे किसी शब्द से परिचित है अथवा ऐसा कोई शब्द सुझा सकेंगे ?

मैं एक ऐसा शब्द नही खोज पाया हूँ जिसकी आवश्यकता मुझे भावो के बीच एक प्रकार के सम्बन्ध, या बन्धुता, नैकट्य, सामीप्य, सम्बद्ध वैशिष्ट्य को अभिहित करने के लिए है। भावो के बीच सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने वाला एकमात्र मनो-वैज्ञानिक शब्द मेरी समझ मे Association है। परन्तु इसका एक सुनिश्चित अर्थ है, और यह उस अर्थ का द्योतन नही कर पाएगा जो अर्थ मेरे मन मे है। किसी अन्य

---

1. यह अप्रकाशित लेख मुझे व्होर्फ के कागजो में अंशतः टाइप किया गया तथा अंशतः हस्तलिखित पत्र के रूप में मिला था। यह 12 जुलाई 1927 की तिथि से अंकित था। यह मनोविज्ञानी डा० होरेस बी० इंग्लिश को लिखा गया था जो उस समय वेसलेयन (Wesleyan) विश्वविद्यालय में थे, तथा जिन्होने मनोवैज्ञानिक शब्दकोश तभी प्रकाशित किया था। यह स्पष्ट नहीं है कि यह पत्र कभी समाप्त करके भेजा भी गया था या नहीं। डा० इंग्लिश को, जो इस समय ओहयो स्टेट विश्वविद्यालय में है, धुँधली सी याद है कि उन्हे ऐसी कोई चीज कभी मिली थी। मैने इस लेख मे जहाँ-जहाँ आवश्यक समझा कुछ सम्पादकीय परिवर्तन तथा संशोधन कर दिए है।

शब्द के अभाव मे जिसे मै भावो का 'सम्बन्ध' कहना चाहूँगा, वह भावो के Association से बिल्कुल अलग चीज है। भावो को जोडने के प्रयोग करते समय यह आवश्यक है कि Association का निराकरण किया जाए, क्योकि इसमे एक ऐसा सायोगिक वैशिष्ट्य है जो 'सम्बन्धो' में नही मिलता। व्यक्ति को तुरन्त उस पहले भाव पर नही पहुँच जाना चाहिए जो उसके मन में ऐसे आता है जैसे एक 'स्वतन्त्र साहचर्य' के प्रयोग मे आता है। अतः प्रयोग को एक नियन्त्रित साहचर्य के रूप मे मान लिया जा सकता है, तथापि यह अपने क्षेत्र में बिल्कुल 'स्वतत्र' हो सकता है, क्योकि कोई भी सम्बन्ध सम्भव हो सकता है।

'सम्बन्ध' भाषायी दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, क्योकि यह भावो के विनिमय के साथ सम्बद्ध है। 'सम्बन्ध' की कसौटियो में से एक आवश्यक कसौटी यह है कि दूसरे लोग उसे समझ सके। अत' प्रयोग-व्यक्ति की वैयक्तिकता का प्रवेश इसमें उस सीमा तक नही हो सकता, जिस सीमा तक कि 'स्वतन्त्र साहचर्य' में हो सकता है, जबकि लोगो में सामान्य रूप से उपलब्ध होने वाली धारणाओ के वर्ग द्वारा इसमे अपेक्षाकृत अधिक भाग लिया जाता है। इस प्रकार की धारणाओ के एक ऐसे सामान्य वर्ग के अस्तित्व का मूल्य अभी तक भली-भाँति आँका गया नही जान पडता, जिसकी सम्भवतः अपनी निजी व्यवस्था है, यद्यपि उसका अब तक अध्ययन नही हुआ है। तो भी मुझे यह भाषा भावो की विनिमेयता का अपरिहार्य सहगामी प्रतीत होती है। यह इस विनिमेयता के सिद्धान्त को धारण करती है तथा एक अर्थ मे 'सार्वभौमिक' भाषा है, जिसे विभिन्न विशिष्ट भाषाएँ समाविष्टकर लेती है।

'सम्बन्ध' के एक दृष्टान्त के रूप मे down (नीचे) के भाव पर पहले विचार कीजिए और तब इन शब्दो के भावो पर भी विचार कीजिए— set (नीचे रखना, बैठाना), sink (डूबना), drag (घसीटना), drop (छोड देना), fall (गिरना), hollow (धँसा हुआ गड्ढा इत्यादि), depress (घसकाना), lie (लेटना)। मैं इन्हे 'क' वर्ग से अभिहित करूँगा। यह स्पष्ट है कि down तथा 'क' वर्ग के प्रत्येक भाव का परस्पर 'सम्बन्ध' है। अब 'ग' वर्ग पर विचार कीजिए जिसमे upright (सीधा), heave (साँस भरना), hoist (ऊपर उठाना), tall (लम्बा), air (वायु) uphold (उठाना या धारण करना), swell (उभार) है। यहाँ पर इन शब्दो के भाव तथा up (ऊपर) के भाव मे सम्बन्ध है। एक सम्बन्ध-प्रयोग मे किसी प्रयोग-व्यक्ति को जब down भाव की उपलब्धि होती है तो वह उसका सम्बन्ध 'क' वर्ग के किसी भी भाव से या इन्ही जैसे भावो से जोड सकता है, परन्तु वह इसका सम्बन्ध 'ग' वर्ग के किसी भाव अथवा उससे मिलते-जुलते किसी भाव से नही जोडेगा। परन्तु प्रश्न यदि केवल Association का होता तो वह down का 'ग' वर्ग के किसी भाव से साहचर्य स्थापित कर सकता था। उदाहरणार्थ, हो सकता है कि कभी उसे ऐसा कटु अनुभव हो चुका हो कि जब वह भारी ज्वार के समय नाव मे बैठा हुआ था और यह अनुभव कर रहा था कि वह निरन्तर नीचे

जा रहा है और इस बात की स्मृति उसके मन मे वैसी ही बनी हो। परन्तु इस साहचर्य को सम्बन्ध नही कह सकते। इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत अनुभव से ही होगा, उस सामाजिक या सामूहिक अनुभव से नही जो धारणाओ के सामान्य वर्ग मे निहित है। क्योकि उसके साहचर्य का कारण बिना स्पष्टीकरण के तुरन्त समझ मे नही आएगा, उसके लिए उसके व्यक्तिगत अनुभव से सम्बन्धित स्पष्टीकरण की आवश्यकता रहेगी। तात्कालिक बोधगम्यता के इस अर्थ मे swell का सम्बन्ध up या इसी प्रकार के किसी अन्य भाव से है, और यह भाव DOWN के भाव से स्पष्टत: अलग है। अत. 'सम्बन्ध' की धारणा की आगे व्याख्या करते हुए यह कहा जा सकता है कि सम्बन्धो को वैयक्तिक अनुभवो का सकेत किए बिना ही बोधगम्य होना चाहिए तथा उनमे तात्कालिक बोधगम्यता होनी चाहिए। अन्तर्वर्ती सम्बन्धो अर्थात् दूसरे सम्बन्धो के माध्यम से प्रकट होने वाले सम्बन्धो को 'सम्बन्धो की शृखला' या 'मार्ग', या सम्भवत. 'सचार-व्यवस्था' कह सकते है।

यहाँ भावो के एक अन्य वर्ग 'ख' का निर्माण भी सम्भव हो सकता है जो 'क' तथा 'ग' वर्गो की मध्यस्थता करे, ताकि हम विभिन्न शृखलाओ या सम्बन्धक सचार-व्यवस्थाओ के मार्गो के माध्यम से 'क' वर्ग से 'ग' वर्ग पर पहुँच सके तथा साहचर्य की सहायता के बिना ही पूर्णतया सम्बन्धक ढग से down (नीचे) से up (ऊपर) तक पहुँच सके।

उदाहरणार्थ :

	1	2	3	4	5	6	7	8
A	set	sink	drag	drop	hollow	depress	lie	down
B	stand	heavy	pull	precipice	space	bear	extend	
C	upright	heave	hoist	tall	air	uphold	swell	up

प्रयोग-व्यक्ति down तथा up के बीच के भावो के ढेर मे से अपना मार्ग बनाते हुए सदैव इन्ही मार्गो पर नही चलते, अपितु प्राय: अन्य मार्ग ढूँढ लेते है। उदाहरण के लिए M. F नामक प्रयोग-व्यक्ति ने इस प्रकार का मार्ग अपनाया—set-heavy-swell up। जब उससे set-heavy सम्बन्ध का स्पष्टीकरण करने के लिए कहा गया तो पता चला कि set के साथ स्थिरीकरण या स्थिरता की दृढ भावना अनिवार्य रूप से सलग्न है, तथा इससे जडीकरण, जमाव, कडापन, मोटापन या सघनता की व्यञ्जना होती है जैसे जेली (या दही) का जम जाने मे (set हो जाना), जबकि प्रयोग-व्यक्ति की दृष्टि मे heavy का भाव न केवल 'भार' है अपितु पिण्ड, सघनता, चिपचिपाहट या श्यानता भी है, तथा यह ऐसा भाव है जो पूर्ववर्ती set के भाव से मिलता-जुलता है। यह एक वास्तविक सम्बन्ध है, यद्यपि प्रयोगकर्ता इसे तुरन्त नही समझ सका, किन्तु वैयक्तिक अनुभव के सकेत के बिना इसे शीघ्र ही समझ लिया गया। heavy swell का सम्बन्ध भी तुरन्त नही समझा जा सका था, परन्तु पता चला कि heavy (भारी), शब्द ने तत्वत:

'मात्रा' या 'पिण्ड' के भाव को द्योतित किया है जिसमें Massiveness (महाकायता) Size (आकार) तथा वृद्धि भी सम्मिलित थी, अत: enlarge (परि-वर्धन करना), expand (विस्तारित करना,) Swell (फूलना) इत्यादि, यह भी वास्तविक सम्बन्ध है। वही प्रयोग-व्यक्ति up से आरम्भ करके इस क्रम से down तक पहुँचा—up hoist-pull-drag-down । W. W. नामक प्रयोग-व्यक्ति ने यह क्रम अपनाया—down drop-heavy-hoist-up । heavy- hoist (भारी-ऊपर उठाना), सम्बन्ध का स्पष्टीकरण माँगने पर यह ज्ञात हुआ कि heavy (भारी) भार के अनुभव या धारण करने का, अथवा किसी पदार्थ के उठाने का सकेत देता है, जो तत्वत: ऊपर उठाने की क्रिया है। यदि heave उठाना, उछालना, (फूलाना) शब्द से प्रयोग-व्यक्ति अधिक परिचित होता तो उसने hoist के स्थान पर heave को ही चुना होता।

परन्तु एक भिन्न एव असम्बन्धित प्रक्रिया उस समय प्रकाश मे आई जब एक युवक ने past (अतीत) के भाव पर पहुँचते ही अगले क्रम के रूप मे उसी वर्ग मे प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान before (सामने) शब्द की उपेक्षा करते हुए hiding (छिपना) शब्द चुना। यह फिर भी एक सम्बन्ध हो सकता था यदि इसका सन्तोषजनक स्पष्टीकरण मिल जाता। परन्तु सर्वोत्तम स्पष्टीकरण जो उसने प्रस्तुत किया वह यह था कि सामान्यत. हमारा अतीत अप्रिय होता है, अत. हम उसे याद न करना ही श्रेयस्कर समझते है, इसलिए यह hiding (छिपना) है । सम्भवत सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने का यह एक भोडा ढग था, लेकिन ऐसा जान नही पडा । उसने इस सुझाव के साथ अपनी सहमति प्रकट नही की कि past (अतीत) का अर्थ है receded (पीछे गया हुआ), withdrawn (निष्का-सित), retired (एकान्तित), concealed (छिपा हुआ), न ही वह इस विचार से सहमत हुआ कि past (अतीत) का अर्थ है gone (गया हुआ), vanished invisible (अदृश्य), concealed (छिपा हुआ), तथा न ही इस विचार से कि past (अतीत) का अर्थ existent (in memory) विद्यमान (केवल स्मृति मे). परन्तु not apparent (अप्रत्यक्ष), stored up (सचित), hoarded (गुप्त स्थान मे सचित, अत. छिपाया हुआ), इत्यादि। परन्तु वह अतीत के नितान्त दूरस्थ भाव अर्थात् अप्रियता के भाव पर हठ करता रहा। अत. मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि या तो इस व्यक्ति के अप्रिय अतीत ने इसके चिन्तन को अतिरञ्जित कर दिया है, या यह मनोविश्लेषण सम्बन्धी साहित्य पढता रहा है, अथवा यह अपने-आप को मानवद्वेषी या दोषदर्शी दिखाना चाहता है। कुछ भी हो इस विषय मे हमे व्यक्तिगत व्यवहार का सामना करना पड रहा था, जो निस्सन्देह Association तो था परन्तु 'सम्बन्ध' नही। जब उसे यह बताया गया कि मुझे ऐसे 'सम्बन्धो' की आवश्यकता है जिनका व्यक्ति-गत अनुभवो से कोई सम्बन्ध न हो तो उसने स्वीकार किया कि यह सम्भवत. उसके साहचर्य पर लागू न हो और तब उसने before (सामने) शब्द चुना।

कभी-कभी कोई प्रयोग-व्यक्ति साहचर्य के माध्यम से एक वास्तविक 'सम्बन्ध' पर तुरन्त पहुँच जाता है, तथा वाद मे उसे 'सम्बन्ध' के विषय मे पता चलता है। औसत से अधिक बुद्धि से युक्त कॉलिज के एक नए स्नातक W.W. नाम के प्रयोग-व्यक्ति ने वताया कि वह drag तथा down के सम्वन्ध के विषय मे इस प्रकार सोचता है : drag का अर्थ होता है खीचना, तथा चीजे नीचे की ओर जाती है; क्योकि उन्हे गुरुत्व आकर्पण द्वारा खीचा जाता है। उसने कुछ दिन पूर्व ही भौतिकी की परीक्षा दी थी। मैंने उससे पूछा कि क्या वह इस सम्वन्ध को पहचान सकता था यदि उसने गुरुत्वाकर्पण का नाम न सुना होता, और उसने कहा कि सम्भवतः वह इस सम्वन्ध के विषय मे नही जान सकता था। मैने उसे सुझाव दिया कि यदि गुरुत्वाकर्पण किसी प्रकार के वाह्य दवाव के कारण एकत्र घनीकरण सिद्ध हो जाए तो उस सम्वन्ध का क्या होगा। एक सकेत मात्र ही उसे सही सम्वन्ध का ज्ञान प्राप्त करने मे पर्याप्त रहा, जो केवल एक भाषायी अर्थ का सम्वन्ध है—अर्थात् drag-trail, dangle (घसीटना या लटकना), जो कुछ घसीटा जा रहा है वह सामान्यत. नीचे की ओर होता है, ऊपर की ओर नही। एक असाधारण रूप से मेधावी विद्यार्थी भी प्राप्त की गई शिक्षा के द्वारा सिद्धान्त का, तथ्यो से भेद समझने मे कितना असमर्थ रहता है—यह उदाहरण उस अयोग्यता तथा वास्तविकता पर एक रोचक टिप्पणी है। (या सम्भवत. विशेष रूप से इस प्रकार के विद्यार्थी की योग्यता पर? अर्थात् यदि मेधावी (intelligent) का अर्थ है—शीघ्र सीखने वाला, सम्भवत, इसका अर्थ ग्रहणशील भी है, अत अत्यन्त आशु-विश्वासी भी ?)

क्या आप इस प्रकार की वन्धुता के लिए connection (सम्वन्ध) से अच्छे किसी अन्य शब्द का सुझाव दे सकते है। मैं यह कहना चाहूँगा कि 'सम्वन्ध' के विषय मे मेरी मानसिक धारणा ऐसे विचारो की विल्कुल नही है, जिन्हे उन सयोजक वन्धनो द्वारा एक साथ जोड़ दिया गया हो जो उनके पास छोटे-छोटे कुडी-छल्लो की भाँति होते है। यह 'सातत्य' की धारणा अधिक है—जहाँ एक अविछिन्न माध्यम के अन्तर्गत भाव आपेक्षिक अवस्थितियो के रूप मे विद्यमान रहते है। up जैसे एक भाव को देखिए और कहिए कि हम जिस स्थान पर है, उस स्थान से यह किसी विशेप स्थिति के सदृश है। अव मैं यह समझ सकता हूँ कि गति की तरह की कोई घटना हमारे साथ घट सकती है। up का भाव एक प्रकार का प्रतिवेशी सामीप्य है तथा हम उस प्रतिवेश को छोड़ रहे है। हम यह निश्चित रूप से नही कह सकते कि कोई प्रतिवेश कहाँ छूट गया है। हम यह जानते है कि up से सम्वन्धित भाव एक भिन्न अर्थभेद ग्रहण करता जा रहा है। यह rise (उठना) भाव की तरह विकसित हो रहा है, परन्तु जव कुछ मात्रा मे परिवर्तन हो चुका है या गति हो चुकी है तव हमे पता चलता है कि हम एक भिन्न स्थल पर है, अव भाव निश्चित रूप से rise (उठना) है, up (ऊपर) नही। गति निरन्तर वनी रहती है और rise (उठना) left (छोड़ना) हो जाता है। left (छोड़ना)

अज्ञात रूप से carry (ले जाना) बन जाता है तथा वह sustain (बनाए रखना) बन जाता है। अब हम up (ऊपर) के पडौस से निश्चित रूप से बाहर है। गति की दिशा परिवर्तित करने से इनमे से कोई-सा भी भाव कोई अन्य चीज भी बन सकता है। sustain (बनाए रखना) nourish (पालन-पोषण करना) बन सकता है या वह continue (जारी रखना) भी हो सकता है। nourish (पालन-पोषण करना) feed (भोजन खिलाना) भी हो सकता है, एवम् continue (जारी रखना) long (दीर्घ) भी हो सकता है।

मनोविज्ञान के बारे में*

मनोविज्ञान ने शोध का एक ऐसा क्षेत्र विकसित किया है, जो स्वय अपने लिए तो निस्सन्देह उपयोगी एवम् मूल्यवान हो सकता है, किन्तु यह सामान्य मानव-मन अथवा आत्मा की समस्याओ पर कोई प्रकाश नही डालता। कोई भी व्यक्ति जो आन्तरिक अथवा मानसिक जीवन के नियमो, या यू कहिए कि आन्तरिक 'क्षेत्र-विज्ञान' के विषय में पूरी तरह जानना चाहता है उसे, उसके मत विविध कठिनाइयों द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान भण्डार, तथा स्वाभाविक अनुमानो, अन्तर्प्रज्ञाओ, समवेदनाओ तथा सामान्य ज्ञान के आश्रय पर ऐसे छोड दिया जाता है मानो मनो-विज्ञान नाम के विज्ञान का अस्तित्व ही न हो। दृष्टान्त के रूप मे ऐसा व्यक्ति एक अध्यापक, शिक्षक, प्रवन्धक, राजनयिक कार्यकारी हो सकता है; वह कोई भी ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसे मानवीय सूक्ष्मताओ की समस्याओ का विवेचन करना पड़ता हो, विशेप रूप से किसी प्रकार के नेतृत्व से सम्बन्धित व्यक्ति। यदि वह पुस्तकों की सहायता लेता है तो उसे इस विषय से सम्बन्धित कही अधिक सूचना उस साहित्य से मिल जाएगी जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नही लिखा गया है, अर्थात् वह सूचना उसे किसी मनोविज्ञान की पाठ्य-पुस्तक की अपेक्षा उपन्यासकारो, नाटककारो तथा कवियों की श्रेष्ठ कृतियो से अधिक मिल सकेगी। मनोविज्ञान ने कुछ ऐसे मार्गो का अनुसरण करना अधिक पसन्द किया, जिन्होने उसे वास्तविक मानसिक क्षेत्र से सम्भवत: सदा के लिए विमुख कर दिया है।

पहले, प्रयोगात्मक प्रयोगशाला-मनोविज्ञान के पुराने सम्प्रदाय ने निश्चित रूप से शरीर-विज्ञान की एक शाखा का रूप ग्रहण कर लिया है। इसके निष्कर्ष तथा मूल्य सभी शरीरविज्ञान को प्रभावित करते है। मानसिक तथ्यो के विद्यार्थी के लिए शरीर के रचनातन्त्र का ज्ञान निस्सन्देह मूल्यवान तो हो सकता है, परन्तु केवल सहायक

*यह नोट जो अब तक प्रकाशित नहीं हुआ था, मुझे हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में व्होर्फ के कागजों में मिला था। इसकी रचना की तिथि अज्ञात है, यद्यपि मैं यह अनुमान लगाने का साहस करूँगा कि यह लगभग उसी समय लिखा गया था जिस समय डा० इंग्लिश को पत्र लिखा गया था, अर्थात् 1927 में। नोट का अन्तिम भाग अत्यधिक संक्षिप्त है। सम्भवतः यह उस लम्बे लेख की रूपरेखा मात्र है जिस लेख को व्होर्फ ने लिखने का विचार किया था। मैंने इसे शीर्षक दिया है, तथा बहुत ही कम सम्पादकीय परिवर्तन किए हैं।

सूचना के रूप में न कि किसी अन्य रूप में। रक्त के ऑक्सीकरण एवम् मस्तिष्क की तन्त्रिकाओ की प्रतिक्रियाओ की विस्तृत व्याख्याएँ, इन्द्रियवोध, तथा साहचर्य कालादि सभी इसी कोटि के है। इसके अतिरिक्त इस विज्ञान द्वारा एकत्रित किए गए गौण तथ्यो के विशाल समूह की भयावह निष्फलता तथा एकीकरण के सिद्धान्तो के अभाव से कोई भी व्यक्ति प्रभावित (एवम् खिन्न) हो जाता है।

दूसरे, व्यवहारवादी सम्प्रदाय पुन. पुराने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के कुछ चुने हुए पक्षो को लेकर अपने वास्तविक स्वरूप मे प्रकट होने लगा है। मेरा यह निजी विश्वास है कि इसमे पुराने सिद्धान्तो का कई प्रकार से परिष्करण हुआ है, तथा कई क्षेत्रो मे इसने हमारे ज्ञान को वढाया भी है। व्यवहार के दृष्टिकोण से सोचने की शिक्षा देने के कारण यह काफी उपयोगी रहा है। परन्तु सव कुछ कहने और करने पर भी यह कोई भी ऐसी वात नही सिखाता जो नई हो। इसने हमे वताया है कि व्यवहार को भौतिक विधियो से किस प्रकार 'अनुवन्धित' किया जा सकता है, परन्तु यह उन्ही पद्धतियो द्वारा वताया जिन्हे हम पहले से जानते है, यद्यपि उनकी व्याख्या कुछ अधिक व्यवस्थित रूप मे की गई है। यह सुस्पष्ट हो गया है कि हम वास्तविक वित्तीय अपेक्षाओ के या तो सहयोग से या उनके विरोध से ही 'अनुवन्धन' कर सकते है। इस तथ्य से हम पहले ही अवगत थे, परन्तु वित्तीय नियमो के अनुसार एवम् उनके सहयोग से 'अनुवन्धन' करने मे हमारी विशेष अभिरुचि है। इसमे सन्देह नही कि वैज्ञानिक के रूप मे अथवा उन्मत के रूप मे, जनता के नेता के रूप मे अथवा एक अधीर व्यक्तित्व मे एक अच्छे कर्मचारी के रूप मे, अथवा ऐसे व्यक्ति के रूप मे जो अपनी नौकरी पर टिक नही सकता, प्रेरणा देने वाले एक सहायक के रूप मे, अथवा प्रत्येक कार्य मे वाधा उत्पन्न करने वाले चिडचिड़े स्वभाव के व्यक्ति के रूप मे, प्रेरणा एव प्रतिक्रिया की वही प्रक्रिया एक मनुष्य को 'अनुवन्धित' करती है। परन्तु व्यवहारवाद हमे यह नही बताता कि मानवी सूक्ष्मताओ एवम् अमूर्तताओं के साथ वास्तविक रूप मे अनुरूप होने के लिए हमे किन पद्धतियो पर कार्य करना चाहिए। व्यवहारवाद केवल उन तथ्यो की घोषणा व्यवहारवादी शब्दो मे करता है जो सामान्य ज्ञान मे पहले ही भली प्रकार ज्ञात है।

मेरी दृष्टि मे जेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने 'मन' के विषय मे एक महत्त्वपूर्ण सत्य का पता लगाया है, वह है—मानसिक क्षेत्र में समाकृतियो का महत्त्व। साथ ही मनोवैज्ञानिको के पास वहुमुखी यान्त्रिक, प्रयोगात्मक तथा व्यक्तिगत ऐसी सामग्री है जिसकी आवश्यकता इस विस्तृत विपय को विकसित करने के लिए पडती है, तथा उस सामग्री का अधिकाश भाग मुख्य रूप से प्राणी स्तर पर ही लागू होता है। जव हम मानव-जीवन को समझने के लिए समाकृतिपरक सिद्धान्त का प्रयोग करने की चेष्टा करते है, तो हमे तत्काल सास्कृतिक तथा भाषायी (सस्कृति का भाग), विशेष रूप से भाषायी भाग मानव-स्तर पर समाकृतिपरक के सर्वोत्कृष्ट महान क्षेत्र के रूप मे प्रतीत होने लगता है। अत: जेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक इस विषय को यही छोड देते है। इस क्षेत्र का मर्म समझने के लिए न तो उनके पास समय है और न ही

अपेक्षित भाषायी प्रशिक्षण। इसके अतिरिक्त पुराने प्रयोगशाला-मनोविज्ञान से रिक्थ के रूप मे प्राप्त किए गए विचार एवम् शब्दावली उपयोगी होने की अपेक्षा भारमात्र है।

मनोविश्लेषण ही एक मात्र ऐसी पद्धति है, जो वास्तविक रूप मे मानसिक सामग्री का विवेचन करती है तथा यह कभी-कभी निष्कर्षो पर भी पहुँचती है। परन्तु यह पद्धति केवल 'अपसामान्य' एवम् 'विक्षिप्तता' के क्षेत्र मे ही कार्य करती है और यह भी सुस्पष्ट होता जा रहा है कि अपसामान्य, सामान्य को समझने की कुञ्जी नही है। इसके अतिरिक्त मनोविश्लेषण अमूर्त्तताओ का विवेचन करने मे इतना दृढ प्रतिज्ञ है कि यह बाह्य ससार को लगभग तिरस्कार की दृष्टि से देखता है, और निरन्तर मानसिक प्रतिबिम्बो के क्षेत्र मे भटकता जाता है। इस पर इसके प्रवर्तक फ्रॉयड (Freud) की अत्यधिक गहरी छाप पडी है। फ्रॉयड को एक ऐसा सनकी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति कहा जा सकता है, जिसमे गहरे परन्तु दुर्बोध सत्यो को देखने की प्रतिभा है, तथा जिस पर धारणा की सनक सवार रहती है, एवम् निराले सनकी सिद्धान्त के कारण जिसकी प्रतिभा अस्तव्यस्त है। यह चिकित्सालय के लिए प्रयोगाश्रित उपकरण तो कुछ समय के लिए बन सकता है, परन्तु मेरी समझ मे नही आता कि यह सामान्य मन के सुविचारित वैज्ञानिक सूक्ष्म परीक्षण का साधन कैसे बन सकता है।

तो अब सभी सम्प्रदायो का विवेचन कर लिया गया है तथा सभी अभावग्रस्त पाए गए है। मानव-मन के विषय मे ज्ञान के जिज्ञासु को बाध्य होकर दीर्घकाल से एकत्रित किए गए अनुभवजन्य प्रेक्षणो के उस अम्बार पर आश्रित होना पडता है, जिसे कभी-कभी सनातनकालीन बुद्धिमत्ता (Wisdom of the Ages) कहा जाता है, या अन्तर्दृष्टि-युक्त ग्रन्थ-रचयिताओ के ग्रन्थो पर, अपनी ही अन्तर्प्रज्ञा पर, तथा उन गिने-चुने सामान्य सत्यो पर आश्रित होना पडता है, जिनका वह यहाँ-वहाँ से, उपरोक्त सम्प्रदायो के सिद्धान्तो से चयन करता है।

एक सत्य, जो निष्पक्ष दृष्टिकोण के समक्ष उपस्थित होता है, परन्तु जिस पर किसी भी सम्प्रदाय मे बल नही दिया गया है, वह है—सिद्धान्त का महान् तथा सम्भवत मौलिक महत्त्व जिसे हम Meaning (अर्थ) शब्द से अभिहित करते है। 'अर्थ' निकटतम रूप मे 'भाषा-विज्ञान' से सम्बन्धित है। इसका सिद्धान्त प्रतीकवाद है, परन्तु भाषा एक महान् प्रतीकवाद है, जिससे अन्य प्रतीकवाद मार्ग-प्रदर्शन प्राप्त करते है।

मैक्सिकन तथा माया के दिवस चिह्नों का संयुक्त रूप प्रस्तुत करने वाला केन्द्रीय मैक्सिको का एक शिलालेख*

सन् 1930 की शरद् ऋतु मे जब मैं मैक्सिको मे नहुअत्ल भाषायी शोधकार्य मे व्यस्त था, तब Morelos राज्य मे Tepoztlan नाम के गाँव मे जाकर मैंने शहर से बहुत ऊँचे एक चट्टानी बुर्ज पर स्थित अधिष्ठाता देवता Tepoztecatl के भग्न-मन्दिर से उत्कीर्ण आकृतियो की एक पट्टी का सलग्न रेखाचित्र बनाया। (चित्र : 1)।

मन्दिर का विवरण Saville,[1] Seler,[2] Novelo[3] ने भी दिया है, परन्तु उनमे से किसी ने कही भी इन आकृतियो पर विचार नही किया जिनका विवेचन यहाँ किया गया है। इमारत की बनावट से सकेत मिलते है कि ये अज्तेक राजा Ahuitzotl जो 1502 मे मरा, के शासनकाल की है।[4] क्योकि विचाराधीन आकृतियाँ इससे भी हजार वर्ष पूर्व की आकृतियो से समानता रखती है, इसलिए सम्भव है कि मन्दिर बनाते समय ये आकृतियाँ या तो कलात्मक परम्पराओ के अनुरूप उत्कीर्ण की गई हो अथवा इस प्रदेश के पुराने शिल्प-विद्या सम्बन्धी कार्यो से नकल की गई हो। ये आकृतियाँ एक पट्टी की रचना करती है जो अन्दर के कमरे या प्रागण की अन्दर की दीवारो पर अधिक बड़े उत्कीर्णनो की बहुत अधिक स्पष्ट चित्रवल्लरी (प्रस्तरगल) के सिरे के साथ-साथ फैली हुई है। यह खाका और टिप्पणी जो मैंने दी है, प्रागण के आधे दक्षिणी भाग मे स्थित पट्टी के स्पष्ट रूप से सुरक्षित भाग से सम्बन्धित है।

---

* *American Anthropology* से पुनर्मुद्रित, 34. 296-302 (1932)

1 Bull. Amer. Mus, Nat, Hist (1896), also Monum. Records, Feb. 1898

2 Bull. 28, Bur Amer. Ethnol, 347, *Die Wands Kulpturen in Tempeldes Polquegottes Von Tepoztlan*, Gesamm. Abh, 3. 487

3. *Guia pare visitar las principalas ruinas arpueologicas del estado de Mareios*, Publioa Sec. Education, Publica, 3, (1929)

4 देखिए Seler, Bull 28, Bur. Amer. Ethnol.

चित्र 1. तेपोज्तेकातल के मन्दिर में शिलालेख, तेपोज्त्लान, मोरेलोस, मैक्सिको

मेरा विचार है कि शैलीगत रूप से तथा साधारण सम्भावनाओ के आधार पर ये आकृतियाँ किसी भी विद्यार्थी को Tonalamatl के दिवस चिह्नो की पट्टी ही प्रतीत होगी, जैसे कि मैक्सिकन प्राचीन पाण्डुलिपियो मे मिलने वाले चित्रो के साथ-साथ सतत धारावाहिक रूप मे चित्रित मिलती है। परन्तु बहुत से चिह्न अपने उस मैक्सिकन रूप से बहुत कम समानता रखते है जो अज्तेक नामो *Cipactli*, *Enecatl*, *Calli* आदि के बहुत समान है। तथापि, जैसा कि हम आगे देखेगे, चिह्न *Acatl*, *Malinalli* और *Atl*, व्यावहारिक रूप से अपने नियमित मैक्सिकन रूप है, और इसके अतिरिक्त, विषय को अधिक अच्छी तरह समझने के लिए निश्चित रूप से अलग-अलग चिह्नो की ठीक सख्या है। परन्तु इसके अतिरिक्त यहाँ पर एक और असाधारणता मिलती है, कि ये चिह्न माया नामो *Imix*, *Ik*, *Akbal*, आदि से मिलते-जुलते मायारूपो और मैक्सिकन न लगने वाले माया रूपो से असदिग्ध समानता रखते है, और ये चिह्न भी अपने उचित स्थानो पर है। निस्सदेह यह खण्डहर ऐतिहासिक माया क्षेत्र से बहुत दूर है, क्योकि यह मैक्सिको शहर से 40 मील दूर Taltec तथा उत्तर Toltec के प्रभाव वाले प्रदेश मे है।

जब मैने इन आकृत्तियो का रेखाचित्र बनाया तो उनके सामान्य अज्तेक से भिन्न रूप ने शीघ्र ही मुझे आकर्षित किया, परन्तु यह प्रथम स्पष्ट आभास कि मै एक माया चित्रलेख बना रहा हूँ, मुझे तब हुआ जब मैने चित्र न० 1, चिह्न न० 10 को नकल करना प्रारम्भ किया। एक अति सामान्य माया चित्रलेख, जिस (चित्रलेख) का अति सामान्य रूप चित्र न० 2, चिह्न न० 10 मे दिया गया है, के साथ तुलना करने पर समानता का सकेत मिलता है। यह माया चिह्न एक हाथ है जिसका वैशिष्ट्य् एक उदग्र अँगूठा है, जो न्यूनाधिक अँगुलियो के सामने है, और निरपवाद रूप से, जिसमे कलाई पर एक वलय है, जिसमे एक केन्द्रीय विन्दु होता है तथा वलय से बाहर को निकली हुई एक घुण्डी होती है। अँगुलियाँ प्राय. अँगूठे की ओर झुकी हुई है, परन्तु माया स्मारको पर कुछ ऐसे भी रूप है जिनमे अँगुलियाँ सीधी फैलाई गई है जैसे Tepoztlan आकृत्ति मे। यह चिह्न बहुत अधिक तथा विविध रूप से प्रयुक्त होने वाला चित्रलेखात्मक तत्व है परन्तु विशेषतया यह एक लेखिम[5] है जो दिवस चिह्न Manik का प्रतिनिधित्व करती है। मैक्सिकन दिवस-चिह्न

---

5. Grapheme (लेखिम) एक पद है जिसकी रचना Morpheme (रूपिम) तथा Semanteme (अर्थिम) के सादृश्य पर विशेष रूप से एक भाषायी तत्व के रूप में किसी लिखित प्रतीक का द्योतन करने के लिए Idiogram (भावलेख) Pictograph (चित्रलिपि) या अस्पष्ट वर्णों के स्थान पर की गई है। चित्रलेखों का विवेचन करते हुए एक ऐसा पद अपेक्षित है जो प्रयोग में लाई गई द्योतक प्रक्रिया के विषय मे किसी प्रकार की धारणा न रखता हो।
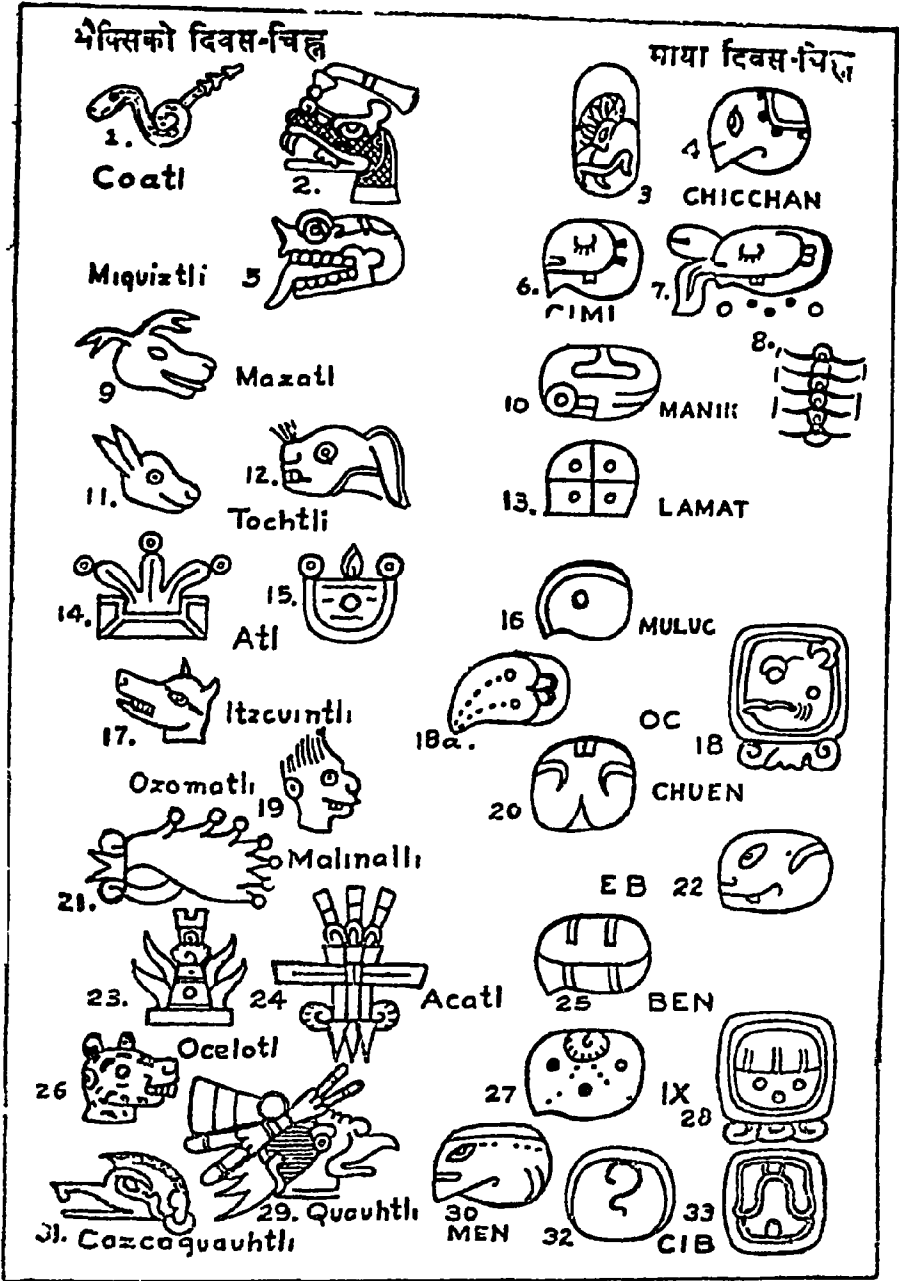
चित्र 2. मैक्सिको तथा माया दिवस चिह्न : कोअत्ल-चिच्छानसे दका-क्वाहत्ली-चिह्न तक उनके क्रमानुसार दिए गए हैं। ग्रन्थ सूची सम्बन्धउल्लेख : 1, 9, 11, 15, 17, 19, 23, 26 साहागुन पाण्डुलिपि से; 1, 2 तथा पसे; 14 प्राचीन पाण्डु-लिपि से; 12 तथा 31 फेयेरवारी-मायेर पाण्डुलिपि से; तेल्लेरिआनो-रेमेन्सिस से; 21, 24, तथा 29 सेलेर की aractere des inscriptions से; 3, 4, 6, 13, 16, 18, 20, 22, 25, 27 28, 30 मोरले की *Introduction to Maya hieroglyphs* (3, 18, 24 शिलालेखीय रूप पृष्ठ 38 से, 33 पृष्ठ 95 से, अन्य पाण्डुलिपि रूप पृष्ठ 39 से); 7, मृत्यु के देवता की चित्रलिपि, ड्रेस्डेन पाण्डुलिपि पृष्ठ 15; 8, उक्समाल से नर-कंकाल का प्रतिनिधित्व करने वाला चित्र, स्पिण्डन के *Maya Art* से; तथा 32 पेरेसिआनस पाण्डुलिपि, स्पिण्डन के *Maya Art* पृष्ठ 94 से; 10 त्रो कोर्त्तेसिआनस प्राचीन पाण्डुलिपि से, 18 माया चित्रलिपि कुत्ते के सिर पर आधारित तथा OC (18) से सम्बन्धित ड्रेसेन पाण्डुलिपि से।

पद्धति मे हाथ से जरा सी भी समानता रखने वाला कोई लेखिम नही है। Manik से मिलने वाले चिह्न को Mazatl कहा जाता है, और उसका लेखिम है--हिरण का सिर (चित्र 2 स० 1)।

क्या यह हो सकता है कि यह लेखिम, Tepoztlan की हस्तआकृति के चित्र Manik Mazatl का प्रतिनिधित्व करता हो? क्या अन्य चिह्न इस धारणा द्वारा अपेक्षित अपने उचित स्थानो पर प्राप्त है? आओ हम देखते है। दोनो दिवस चिह्न पद्धतियो मे Manik-Mazatl से पहले के चिह्न को समान नाम से पुकारा जाता है—माया मे Cimi और अज्तेक मे Miquiztli और दोनो का अर्थ है 'मृत्यु'। दोनो पद्धतियो मे इसका लेखिम है मृत्यु का सिर या मृत्यु के देवता का सिर,—पर दोनो पद्धतियो मे शैलीगत रूप से यह चिह्न भिन्न है। चित्र 2 स० 5, लेखिम का अज्तेक रूप दिखाता है—एक मांसरहित खोपडी, और चित्र 2 स० 6 लेखिम का माया रूप। चित्र 2 स० 7 मे माया के मृत्युदेव का वह चित्रलेख है जो प्राचीन माया पाण्डुलिपियो मे मिलता है। माया और अज्तेक लेखन की दिशा हमारे लेखन की दिशा जैसी ही है—बाए से दाए। हाथ के बाई ओर की आकृति (चित्र 1 स० 9) Miquiztli या Cimi से कोई समानता नही रखती। परन्तु बडे आश्चर्य की बात है कि हाथ के दायी ओर की आकृति (चित्र 1 स० 11) माया के मृत्युदेव के चित्रलेख से बड़ी कुतूहली समानता रखती है। सिर के साथ जोडे गये दो उपसर्ग इस लेखिम का वैशिष्ट्य है तथा अन्यत्र कही उपलब्ध नही होते। Tepoztlan चित्र चिह्न मे एक ऐसा प्रत्यय है जो मृत्युदेवता के लेखिम मे नही मिलता, परन्तु वह अन्य माया-चित्रलेखो का एक आवश्यक तत्व है। यह तत्व मास द्योतक चिह्न Kankin का वैशिष्ट्य है, तथा Seler के अनुसार नर-ककाल का प्रतिनिधित्व करता है। यह चिह्न चित्र 2 स० 8 मे प्रदर्शित ककालीय प्रतिनिधित्व से सम्बन्धित प्रतीत होता है, जो चित्र स्पिण्डन (Spinden) की पुस्तक *Maya Art* (माया कला) के पृष्ठ 86, चित्र 115 से लिया गया है। इस पुस्तक मे स्पिण्डन ने माया लोगो के हड्डियो और मृत्यु के कलात्मक प्रतीकवाद का विवेचन किया है।

तथ्य यह है, जैसा कि शीघ्र ही सिद्ध भी किया जायेगा कि हमारे पास एक ऐसा शिलालेख है जो किसी अज्ञात कारण से उल्टे क्रम अर्थात दाए से बाए मे लिखा हुआ है तथा यह मृत्युदेव के चिह्न Cimi—Miquiztli का प्रतीक है। एक बार इसका अनुभव हो जाने पर इस विषय का विद्यार्थी शीघ्र ही एक अन्य माया चिह्न को पूर्णतया देख पाएगा जैसे चित्र 1 स० 1 मे हाथ के बाई ओर की नौवी आकृति। मैक्सिकन पद्धति मे Mazatl के बाद के नौवे चिह्न को Cozcaquauhtli कहा जाता है और इसका लेखिम गिद्ध का सिर (चित्र 2 स० 31) या कालर पहने हुए गिद्ध है। माया पद्धति मे Manik के बाद का नौवा चिह्न Cib कहलाता है, और इसका लेखिम (चित्र 2 स० 32, 33) प्रश्नचिह्न की तरह की एक टेढी रेखा है अथवा कभी-कभी ऊपर या पीछे की ओर मुडे हुए *C* वर्ण की तरह की रेखा होती है। यह अन्तिम लेखिम Tepoztlan आकृति का रूप है।

वक्र रेखा के पास दो विन्दु माया Cib मे नही मिलते, तथापि वे एकरूपता को दृढ करते है। क्योकि Cib चिह्न शराव के वर्तनो पर पाया जाता है—इस तथ्य से Seler ने इसका सम्बन्ध एक ऐसे ही चिह्न से जोड दिया जो अज्तेक लोगो द्वारा अपने पीने के वर्तनो पर वनाया जाता है तथा जिसे Ometoch कहा जाता है, जिसका यह Ometoch नाम नशे के देवता Om Tochtli के कारण पडा है। इसका शाब्दिक अर्थ है—'दो खरगोश'। इस देवता को प्राय. Tepoztlan आकृति से मिलते-जुलते चिह्न से युक्त ढाल उठाये हुए दिखाया जाता है (उदाहरण के लिए उसके Totochtin नाम के नीचे Sahagun Madrid Manuscript)। Sahagun चित्र पर एक अज्तेक लेख के अनुसार यह देवता एक Ometoch Chimalli धारण करता है अर्थात् दो खरगोश—इस कुल-चिह्न से युक्त एक ढाल। हमारे प्रस्तुत विषय मे दो विन्दु दो खरगोश नाम के मख्या वाले भाग की केवल स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। Ome Tochtli और Tepoztkcatl समान देवता समझे जाते है, ताकि Tepoztlan मे उनका विशेष सम्प्रदाय अपने प्रतीक को दिवस चिह्न लेखिम की तरह प्रयुक्त करे, जवकि अन्यत्र कही यह इस प्रकार से प्रयुक्त नही होता। अभिप्राय यह है कि उन्हे इसका उपयोग कर लेना चाहिए था—Tochtli या खरगोश के लिए नही, प्रत्युत Cozcaquauhtli या गिद्ध के लिए, जो सभी चिह्नो मे से माया Cib की स्थिति के समान है।

अव हम स० 10 या Manik से Cib की ओर के पहले अन्य चिह्नो की स्थिति का निरीक्षण करते है। चिह्न स० 9 वहुत अधिक कटा-फटा है तथा उसे किसी भी रूप मे स्पष्ट रूप से पहचाना नही जा सकता। तो भी, मैक्सिकन चिह्न Tochtli (चित्र 2 स० 12 मे प्रदर्शित) के रूप के साथ तुलना करने पर यह इस रूप के कटे-फटे उत्कीर्णन के साथ मिलता दिखाई देगा।

अगला चिह्न न० 8 परवर्ती चिह्न न० 7 से पहले वहुत छोटे से स्थान पर वना हुआ है तथा एक ऐसे कोण पर स्थित है जहाँ पट्टी दीवार के कोने पर मोड़ खाती है। यदि इसकी तुलना चित्र 2 स० 14 मे प्रदर्शित अज्तेक चिह्न Atl (पानी) के लेखिम के साथ की जाये तो एकरूपता प्रमाणित हो जायेगी।

अगला चिन्ह स० 7 Aztec Itzcuintli (कुत्ता) तथा माया Oc के स्थान पर है। यह एक सिर की तरह से है जो कुत्ते की अपेक्षा चिडिया के या अन्य किसी पक्षी के समान दिखता है। निश्चित रूप से यह उस स्वाभाविक कुत्ते के सिर (चित्र 2 स० 17) से वहुत थोडी सी समानता रखता है जो मैक्सिकन पद्धति मे इस दिवस-चिह्न के लिए लेखिम है। अव चिडिया का सा परम्परागत सिर (चित्र 2 स० 18 अ मे दिखाया गया) प्राचीन माया पाण्डुलिपियो मे अति सामान्य चित्रलेखात्मक तत्वो मे से एक है। Beyer[6] ने यह

6. Amer. Anthrop. 31 (1929)

दिखाया है कि यह रूढिगत ढग से प्रस्तुत सिर कुत्ते के सिर से लिया गया है। Itzcuntli से मिलने वाला माया दिवस-चिह्न Oc कहलाता है, और इसके दो स्पष्ट लेखिम-रूप होते हैं। प्राचीन पाण्डुलिपियो के रूप की Tepoztlan से कोई समानता नही है। Tepoztlan रूप के साथ चित्र 2 स० 18 मे प्रदर्शित माया शिलालेखों के रूप की तुलना की जा सकती है। कुत्ते के चित्रलेख की और आगे भी तुलना की जा सकती है, क्योंकि इसमें सदैव दो कुन्दे वाली एक आकृति से युक्त प्रत्यय होता है, जबकि Tepoztlan चित्रचिह्न दो घुण्डीवाली आकृति मे युक्त एक चौकोर ढाचा सिर के साथ जुडा हुआ दिखाता है।

चिह्न 6 की माया Chuen चित्र 2 स० 20 के साथ विशेष समानता दिखाई देती है, तथा अज्तेक Ozomatli (चित्र 2 स० 19) के स्वाभाविक बन्दर के सिर से सर्वथा भिन्न है।

चिह्न 5 उसी स्थिति के लिए अज्तेक लेखिम से मिलता है। यद्यपि यह अधिक कटा-फटा होता है तथा पत्थर मे विवर इसके एक भाग से खोदा हुआ प्रतीत होता है। जिह्वा के समान पताकाओं से बनी कूचिका, जो Malinalli का वैशिष्ट्य है, पहचानी जा सकती है (देखिए चित्र 2 स० 21 मे प्रदर्शित Malinalli का रूप)। यहाँ माया रूप का कोई चिह्न नही है। (चित्र 2 स० 22)

चिह्न 4 उचित स्थिति में मेक्सिकन Acat के कुछ रूपो के स्पष्ट लक्षणों को दिखाता है (देखिए विशेषतया चित्र 2 स० 24 मे दिखाया गया रूप)। माया Ben चित्र 2 स० 25 में प्रदर्शित, बिल्कुल भिन्न है।

चिह्न 3 बडा विचित्र है। निश्चय ही यह मक्सिकन Ocelotl एक हिंसक जन्तु का सिर, चित्र 2 स० 26 के समान नही है। न ही माया IX चित्र 2 स० 27, 28 के साथ ही इसकी कोई बाह्य समानता है, तो भी बड़े विचित्र ढग से इसमें IX लेखिम के दो तत्व है। लेखिम के, वास्तव में, आवश्यक तत्व है—तीन बिन्दु तथा Tepoztlan आकृति मे बडी प्रमुखता से तीन बडे बिन्दु बायी ओर तथा तीन छोटे बिन्दु दायी ओर दिखाए गए है। IX लेखिम के प्राचीन पाण्डुलिपि-रूप से भिन्नता दिखाने वाली दो अभिरसिक बिन्दु-चिह्नित रेखाए है, तथा Tepoztlan चिह्न एक ढाल की आकृति को धारण करता है, जिस पर समान रूप में बनाई गई दो रेखाए हैं।

चिन्ह 2 की, न तो माया Men (चित्र 2 सं० 30) से समानता है न अज्तेक Quauhtli (एक गरुड का सिर) के साधारण रूप से। परन्तु Seler[7] ने Quauhtli (चित्र 2 स० 29) के एक रूप को चित्रित किया है, जिसमे गरुड़ सिर पर कुछ धारण करता है जो बडे ही रोचक ढग से विशेषताओ मे Tepoztlan आकृति से मिलता है। यह हमे चिह्न स० 1 अथवा Cib पर ले आता है, जिसका हम पहले ही विवेचन कर चुके हैं। इससे परे भी एक चिह्न है जिसे

7. Caracti'ere des inscriptions Azteques et Mayas.

मैंने दिखाया नही है, क्योकि वह बहुत ही कटा-फटा तथा पहचाना जाने के लिए दुर्बोध्य है और मै अच्छी ड्राइग भी नही कर पाया। यह चिह्न अज्तेक Olin या माया Caban के साथ कोई समानता नही रखता।

चिह्न 11 अथवा Cimi के दायी ओर पट्टी क्या दिखाती है? एक खाली स्थान जहाँ कि पत्थर टूट गया है। इस स्थान से आगे एक और चिह्न स० 12 है। निस्सन्देह हम नही जानते कि इस खाली स्थान पर कोई चिह्न खोदे गए थे या नही—अथवा, यदि खोदे गए थे तो कितने—यद्यपि मुझे यह कहना चाहिए कि इस खाली स्थान पर केवल दो चिह्न होगे। इस स्थान पर दो चिह्न मान लेने से सख्या मे बारहवाँ चिह्न (सख्या मे) चौदहवाँ हो जाएगा, जो अज्तेक Calli अथवा माया Akbal की स्थिति है, परन्तु जिनमे से एक की भी इस चिह्न से समानता नही है। यह चिह्न रूढिगत सर्प का जबडा है जो मध्य-कालीन अमरीकी कला का प्रेरक है। इसलिए मेरा विचार है कि उस टूटे हुए स्थान पर कोई चिह्न मानने की आवश्यकता नही है, तथा हमारे पास यहाँ Cimi Miquiztli से पहले एक दिवस चिह्न है जो माया Chicchan (चित्र 2 स० 3, 4) Aztec Coatl (सर्प) (चित्र 2 स० 1, 2) है। सामान्य अज्तेक रूप इस चित्र की सीमा तक रूढ़ नही किया गया है।

शायद ये ही चित्र थे जिनका Novelo ने अपने शब्दो मे सकेत किया है: hay otros jeroglificos cuya interpretacion no ha sido posible de hacer, alguno de los cuales tienen Cierta semejanza con los Mayas. माया प्रभाव का वह इन शब्दो मे सकेत देता है— parece existir en los relieves de origen tlahuica (Tepoztlan y xochicalco) cierta influencia maya cuya cultura florecio, en Mexico como se sabe en los primeros siglos de la Era Cristiana.

वह यह भी बताता है कि बहुत दूर-दूर के Chiapas तथा Guatemala क्षेत्रो से, जो कभी माया सस्कृति के क्षेत्र थे, आने वाले तीर्थयात्री तेपोज्त्लान का मन्दिर देखने के आदी थे।

तथापि, मैक्सिको शहर से कुछ दूर इस स्थान पर लेखिमो द्वारा द्योतित उन दिवस चिह्नो का मिलना निश्चित रूप से अनपेक्षित है, जो 'चिव' एव 'मानिक' की भाति दूरवर्ती मध्य-अमरीका मे प्राचीन माया साम्राज्य की उन इमारतो पर उत्कीर्ण किए जा रहे थे, जो उस अज्तेक मन्दिर के काल से भी एक दशाब्दी तथा उससे भी कुछ अधिक पहले की है, जिस पर ये रूप सामान्य अज्तेक रूपो के साथ अदल-बदल कर प्रकट होते है। ये चिह्न-श्रेणियाँ पीछे की ओर क्यो लिखी गई थी? यहाँ पुन. तुलना करने योग्य एकमात्र बात जो मै सोच सकता हूँ, माया सम्बन्धी एक तथ्य है: माया शिलालेखो मे एक सख्या-श्रेणी उस समय उल्टे क्रम मे लिखी जाती है जब गणना पीछे की ओर, अतीत में की जा रही हो, अर्थात् किसी दूसरी तिथि की प्राप्ति के लिए जब मूल प्रारम्भिक तिथि मे

से इसका कुल जोड घटाया जाता है, जोडा नही जाता । क्या यह तेपोज्त्ल शिलालेख तोनालामात्ल को भूतकाल मे पीछे हटता हुआ दिखाना चाहता है।

हमे, यहाँ पहली वार एक प्रमाण प्राप्त होता है जो माया-चित्रलेखो तथा नहुअत्ल के वीच सुनिश्चित, स्पष्टतया प्रामाण्य पारस्परिक सम्वन्ध दिखाता है। मैक्सिकन तथा माया लेखिमो का सम्वन्ध, जो अपने-आप को कई स्थानो पर प्रकट करता है, एक सम्पूर्ण विषय है, जिसके वारे मे मैं किसी अन्य समय विस्तारपूर्वक भाषायी दृष्टिकोण से विवेचन करने की आशा करता हूँ।

होपी क्रियाओं के कालबिन्दु-निष्ठ तथा खण्डात्मक पक्ष*

होपी भाषा की क्रियाए, अपने क्रियार्थक पक्षो तथा वाच्यो के सम्पन्न एवम् अभिव्यजक विकास के लिए विचारणीय है। मै इस लेख मे नौ वाच्यो (अकर्मक, सकर्मक, निजवाचक, कर्मवाच्य, अर्धकर्मवाच्य, परिणामवाचक, विस्तारित कर्म (वाच्य), सम्बन्धवाचक तथा समाप्ति सूचक) तथा नौ पक्षो (कालविन्दुनिष्ठ, अवधिवोधक, खण्डात्मक, काल-विन्दु-निष्ठ-खण्डात्मक, आरभमाण, वर्धमान, स्थान-वोधक, प्रक्षेपीय, सातत्य-वोधक) मे से केवल दो का विवेचन करूगा। यह वात ध्यान मे रखनी चाहिए कि यहाँ पूर्णतावोधक तथा अपूर्णतावोधक पक्ष नही है; क्योकि वास्तव मे होपी भाषा क्रिया की समाप्ति या असमाप्ति के वैषम्य को किसी प्रकार भी औपचारिक रूप नही देती। होपी के पक्ष भिन्न प्रकार के वैषम्यों को औपचारिक रूप देते है, जैसे दृश्य सत्ता के विन्दु-स्थान तथा विस्तार-स्थान, तटस्थ दिक् अथवा स्थान से निरपेक्ष या फिर दोनो मे। होपी मे तीन काल भी है: तथ्यात्मक या वर्तमान-भूत, भविष्यत् तथा सामान्यीकृत अथवा प्रयोगात्मक। होपी क्रियाए सात गणो या क्रियारूपो मे विभक्त है जिनकी विभक्ति-व्यवस्था मे थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। पहले गण मे, जो सवसे वडा तथा सवसे अधिक उत्पादक है, कुछ ऐसी कोटियाँ है जो दूसरे गणो मे नही है। उन्ही कोटियो में खण्डात्मक पक्ष भी है।

गण-1 का सरल रूप (व्यजन स्वर व्यजन स्वर) (CVCV) रूप वाली धातुमात्र है, और वह अन्य पुरुष एक वचन अकर्मक वाच्य, काल-विन्दु-निष्ठ पक्ष और वर्तमान-भूत काल मे है। खण्डात्मक पक्ष की रचना इस धातु के अन्त्य अभ्यास, तथा आवधिक प्रत्यय *ta* जोड कर की जाती है, और यह पक्ष निम्न प्रकार के वैशिष्ट्य वाली सरल धातु के अर्थ मे परिवर्तन करता है: धातु द्वारा द्योतित तथ्य, कालविन्दु निष्ठ पक्ष मे एक विन्दु के चारो ओर व्यक्त, विस्तारित खण्डात्मक चरित्र वाले एक विशाल तथ्य की पुनरावृत्त अन्त.सम्बद्ध खण्डो की श्रेणी मे आविर्भूत हो जाता हे। इसका विस्तार प्राय. मुख्य रूप से एक ही विमा मे होता है, और वह दिक् और काल या दोनो से निरपेक्ष है। इस परिवर्तन की प्रकृति उदाहरणो द्वारा अच्छी तरह समझायी जा सकती है।

---

* *Language* 12 : 127-131 (1936) से पुनर्मुद्रित। यह लेख दिसम्वर 1935 में Linguistic Society of America के सम्मुख पढ़ा गया था।

ha'ri	यह एक वृत्ताकारिक कोण मे झुका हुआ है	*hari'rita*	यह एक घुमावदार रेखा मे उत्तरोत्तर वृत्ताकारित कोण बनाता हुआ स्थित रहता है। (उदाहरणार्थ सजावट के घुमावदार नमूनो मे प्रयुक्त)
ho''ci	यह एक तीखा न्यून-कोण बनाता है	*hoci'cita*	यह टेढा-मेढा है ।
pa''ci	यह दान्तेदार है	*paci'cita*	यह दान्तेदार बनाया हुआ है
pi'va	यह नाली या मोरी युक्त है	*piva'vata*	यह क्रमिक मोरियो और नालियो मे फैला हुआ है (क्षेत्र के विषय मे कहा जाता है)
ca'mi	यह किनारे से अन्दर की ओर कटी हुई है	*cami'mita*	यह कटावदार है, यह किनारे के साथ-साथ कटाव के रूप मे कटी हुई है

इनमे, तथा ऐसे ही अन्य उदाहरणो मे तथ्य कुछ इस प्रकार का है कि इसे अपने प्रकटीकरण के क्षेत्र के लिए कठोर या अर्धकटोर पदार्थ अपेक्षित है। जब यह स्थिति होती है तो काल-बिन्दु-निष्ठ अकर्मक पक्ष कुछ कर्मवाच्य[1] के वैशिष्टय वाला होता है और खण्डात्मक पक्ष तथ्य को दिक् की एक विमा के साथ-साथ बहुगुणित रूप मे ऐसे दिखाता है जैसे दो शीशो के मध्य एक मोमबत्ती की लौ। दोनो ही पक्षो मे, तथ्य, स्थापित प्रभाव के रूप मे, तथा तत्पश्चात् कटोर पदार्थ मे सुरक्षित बना हुआ, अपने को प्रकट करता है, और हमारे समक्ष इस 'प्रभाव' की प्रभावशाली झाकी प्रस्तुत कर दी जाती है, क्योकि इसकी प्रकृति दिक् मे है।

तथापि मान लीजिए कि धातु के द्वारा द्योतित तत्व ऐसा है जिसे अपने प्रकटीकरण-क्षेत्र के लिए अकठोर या चल पदार्थ अपेक्षित है, जैसे कोई भी तरल पदार्थ या चल अणुओ का पुज। ऐसी स्थिति मे पदार्थ की यह विरूपता, जिसका निरूपण धातु के द्वारा किया गया है, एक स्थायी विरूपता नही होगी, परन्तु उसका परिणाम

1. यह वास्तविक कर्मवाच्य नहीं है क्योंकि यहाँ कोई बाह्य कर्ता नहीं है, यह स्थैतिक (static) भी नहीं है (कम-से-कम साधारण अर्थो में बिल्कुल नहीं), क्योंकि यह कालगत अवधि का द्योतन नहीं करता; यह वास्तविक कर्तृवाच्य भी नहीं है, क्योकि यहाँ क्रिया तथा परिणाम दोनों को ही एक रूप में दिखाया गया है ।

पदार्थ के अन्दर तरगात्मक या स्पन्दनात्मक आलोडन मात्र होगा। अग्रेजी-भाषियो के दृष्टिकोण मे अकर्मक अव 'निष्क्रिय' प्रतीत नहीं होगा, परन्तु निश्चित रूप से 'मक्रिय' होगा। साथ ही कालविन्दु-निष्ठ पक्ष निरूपता के एक स्पन्दन का, या विकार का द्योतन करेगा, जवकि खण्डात्मक पक्ष स्पन्दन के समस्त अनुक्रम या क्षेत्र को द्योतित करेगा—दोनो, स्पेस के अन्तर्गत विस्तारित रूप मे एवम् काल के अन्तर्गत निरन्तरता के रूप मे।

अत. उदाहरणार्थ

wa'la	यह (अर्थात् एक तरल पदार्थ) कम्पायमान करता है, एक धक्का देता है।	*wala'lata*	यह लहरो मे उछल रहा है, यह समुद्र को लात मार कर उछाल रहा है।
no'sa	वहुत से वाहर आते है (यह व्यक्तियो अथवा विषयो के लिए कहा गया है।)	*nosa'sata*	यह निरन्तर समूहो मे वाहर आ रहा है, यह वाहर फूट पड रहा है, या वौछार कर रहा है (जैसे, यह फव्वारे पर लागू होता है।)

यह वात नोट कर लीजिए कि तरल पदार्थीय प्रपचो के साथ खण्डात्मक पक्ष दोनो है—क्षणात्मक, काल-विन्दु-निष्ठ के वैषम्य मे, काल के अन्तर्गत 'आवधिक', काल-विन्दु-निष्ठ के निश्चित रूप से 'पता लगाया हुआ' स्थान के वैपम्य मे, दिक् मे विस्तारित। कुछ तत्व दोनो मे अर्थात् तरल एवम् कठोर पदार्थो मे प्रकट होने की सामर्थ्य रखते है, विशेष रूप से वे जिनकी परिभाषा किसी विशेष प्रकार के रूपरेखात्मक शब्दो मे दी गई हो.—जैसे *ta'ho* (यह तरगित घुमाव प्रदर्शित करता है), या किसी को तरगित करता है, *taho'hota* किसी तरल पदार्थ का सकेत करते समय इसका अर्थ होता है 'यह तरगित हो रहा है,' उदाहरणार्थ तरल सतह, एक साप (एक हिलती हुई रस्सी), परन्तु किसी अचल पदार्थ का सकेत करते समय इसका अर्थ है 'यह शख की तरह का है' या 'यह तरगित नमूना वनाता है'।

परन्तु, पुन मान लीजिए कि धातु द्वारा द्योतित प्रपच एक ऐसी शक्ति के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है, जिसे भौतिकी मे वलाघूर्ण (Torque) (घूर्णन उत्पन्न करने की प्रवृत्ति) कहते है और जो किसी भी प्रभाव के प्रकट होने के लिए अपेक्षा करता है कि पदार्थ एक ऐसा पिण्ड हो जिसमे कम-से-कम किसी मात्रा मे कठोरता हो और फिर भी कुछ मात्रा मे दूसरे पिण्डो की सापेक्ष गतिशीलता की उसमे समार्थ्य हो। इस विषय मे एक अकेली विकृति या विस्थापन, काल-विन्दु-निष्ठ के द्वारा 'द्योतित की गई' की तरह या तो एक दोलन होगा या इस पिण्ड का 'एक घुमाव' होगा, और वह धातु के अर्थ मे विवक्षित मात्रा के अनुसार ही होगा। जवकि यदि प्रभाव निरन्तर वना रहता है तो यह दोलनो की शृखला मे या सतत घुमावो मे निरन्तर चलता रहेगा, और यह भी सम्भव है कि उस समय

यह दिक् मे किसी प्रकार का विस्तार प्राप्त न करे; तब यह खण्डात्मक पक्ष का अर्थ होगा। इस प्रकार के अर्थ के प्रकार है :—

wa'ya दोलायमान कम्पन करता है (हिलाए गए छोटे वृक्ष की तरह)।
sa'ya एक ओर से दूसरी ओर दोलन करता है।
pi'ya पखो के जोडे की तरह फडफड़ करता है।
ta'ya झकझोरने वाला कम्पन करता है।[1]
so·'ya घेरा बनाता है (अक्ष पर घूमना तथा एक वृत्तांश मे आगे बढना।)
ro'ya एक घुमाव या ऐठन बनाता है।
ri'ya द्रुतगति से चक्कर काटता है।

इस बात पर ध्यान देना काफी दिलचस्प है कि इन वलाघूर्ण गतियों में से (यद्यपि सभी नही) बहुत सी *ya* मे अन्त होने वाली प्रकृतियो द्वारा द्योतित है। इस प्रकार के खण्डात्मक पक्ष अंग्रेजी के उन आवविक रूपो के समान हैं जो स्पन्दनात्मक या आवर्ती गतियो का द्योतन करती हैं, जैसे :—

waya'yata	यह हिल रहा है	*pi·ya'yata*	यह पख फड़फड़ा रहा है।
saya'yata	यह दोलायत हो रहा है	*so·.yata*	यह चारो ओर चक्कर काट रहा है।
roya'yata	यह आवर्त्तन कर रहा है	*riya'yata*	यह फिरक रहा है, तेजी से घूम रहा है।

mi·'ma 'लुढकना' के विषय मे, जहाँ घूमने के साथ पार्श्विक गति भी होती है, वहाँ हमे आवश्यक रूप से विस्तारित गति का पक्ष *mi'ma'mata'* 'यह लुढकता जा रहा है' मे प्राप्त होता है।

तथ्य के इस सामान्य वर्ग का एक और प्रकार है जो काल-विन्दु-निष्ठ रूप से एक धक्के, सघर्ष या अन्य आकस्मिक परन्तु अनिवार्य रूप से क्षणिक प्रकृति वाले विघूर्णन के रूप मे प्रकट होता है एवम् उस स्पन्दनात्मक तथ्य से भी सम्बन्धित है जो प्राकृतिक जगत मे धक्को के द्रुत ताँतो मे घटित होता है। ऐसे स्थानो पर अग्रेजी मे दो भिन्न प्रकृतियो का प्रयोग होता है, परन्तु होपी भाषा एक ही 'प्रकृति' के काल-विन्दु-निष्ठ तथा खण्डात्मक पक्षो का प्रयोग करती है। निर्जीव जगत् मे से एक उदाहरण है ti'li 'इसे हल्का सा धक्का लगता है', *tul'lita* यह स्पन्दन कर रहा है' (इजन, डिब्बा या गाडी की तरह)। परन्तु होपी भाषा इस प्रकार के बहुत से तथ्यो को सजीव जगत् में भी देखती है, उदाहरणार्थ :

ti·'ri·	वह अचानक प्रारम्भ करता है	*ti ri·'ri·ta*	वह काप रहा है, हिल रहा है।
wi'wa	वह किसी चीज पर लडखडाता है, या उसकी टागे अचानक पकड ली गई हैं, जैसे फासे मे बधा हुआ घोड़ा।	*wiwa'wata*	वह लडखडाता जा रहा है या लगड़ाता जा रहा है।

saro उसके दात किसी कठोर या ककरीली चीज़ पर टकराते है, जैसे खाने मे। — saro'rota वह जबर्दस्ती किसी कठोर पदार्थ पर दात मार रहा है।

hero वह अन्दर से अचानक थोथी गर्गल ध्वनि करता है — herorota वह खुर्राटे भर रहा है।

ऐसे क्रियारूपो का प्रयोग शरीर या शरीरावयवो की तालयुक्त चेष्टाओ को व्यक्त करने के लिए भी प्राय. किया जाता है।

wili अपने स्थान से आगे बढ़े विना वह पग उठाता है। — wikikita वह एक स्थान पर पैर पीट रहा है या एक स्थान पर नाच रहा है।

Kwi'la वह पग बढाता है — Kwitalata वह आगे चलता है (यह अग्रेजी के Walking forward 'आगे चल रहा है' के समान नही है, क्योकि वह अग्रेजी अभिव्यक्ति लगभग काल-विन्दु-निष्ठ है)

yoko वह एक वार सिर हिलाता है — yokokota वह सिर हिला रहा है।

इसके अतिरिक्त यह तथ्य एक सूक्ष्म माध्यम के भीतर एक विन्दु पर विक्षोभ सम्बन्धी भी हो सकता है। उसे विज्ञान के अनुसार गैसीय या ईथरीय के रूप मे वर्गीकृत किया जाएगा। ऐसा माध्यम स्पेस मे गति या विस्तार के विषय मे बहुत कम या बिल्कुल ही सूचना नही देता और इन विषयो मे खण्डात्मक काल के अन्तर्गत केवल स्पन्दन व्यक्त करता है :

ri''pi यह एक चमक देता है — ri pi'pita यह झिलमिला रहा है।

[1]i'wi यह एक शोला देता है — [1]pi'wiwita यह शोले दे रहा है।

[1]i mi' यह विस्फोट करता है, गोले की तरह शब्द करता है। — [1]i mi mi ta यह गड़गड़ा रहा है।

अन्त मे, घटनाओं का ऐसा वर्ग भी है जिस पर खण्डात्मक पक्ष लागू नहीं होता। यह 'मानसिक', 'भावनामय', या अन्य 'आन्तरिक' या मनोवैज्ञानिक अनुभवो पर लागू नहीं होता। इसका सम्बन्ध केवल दृष्टिगोचर जगत् से है।

इस समस्त चर्चा का, केवल एकपक्ष के रूप दिखाने के अतिरिक्त और भी महत्त्व है। यह इस बात का दृष्टान्त है कि भाषा किस प्रकार अनुभव का व्यवस्थीकरण उपस्थित करती है। भाषा के विषय मे हम यह सोचने को तो तैयार है कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का एक तकनीक है, परन्तु यह अनुभूति करने की ओर हमारी प्रवृत्ति नहीं है, कि भाषा सर्वप्रथम सवेदी अनुभव की धारा का एक वर्गीकरण तथा व्यवस्था है, जिसका परिणाम एक विशेष जगत्-व्यवस्था मे होता है; जगत्

का एक विशेष खण्ड जो आसानी से उस तरह के प्रतीको द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है जिस तरह के प्रतीको को भापा अपने प्रयोग मे लाती है। दूसरे शब्दों मे, भापा एक अपरिष्कृत ढग से परन्तु साथ ही साथ व्यापक तथा वहुमुखी ढग से वही कुछ करती है जो विज्ञान करता है। हम अभी देख चुके है कि होपी भापा किस प्रकार एक विशेष क्षेत्र की रूपरेखा खीचती है जिसे प्राचीन भौतिकी कहा जा सकता है। हम यह भी देख चुके है कि किस प्रकार अत्यधिक पूर्ण सगति तथा वैज्ञानिक सुनिश्चितता सहित प्रकृति के हर प्रकार के स्पन्दनात्मक तथ्यो का वर्गीकरण साधारण सी विकृतिपरक भिन्न प्रक्रियाओ द्वारा किया जाता है। प्रकृति के किसी विशेष प्रकार के विश्लेषण का परिणाम उपयुक्त रूप से वढाया जा सकता है, और कुल मिलाकर यह वास्तविक भौतिकी के साथ इतना सुसगत है कि उसका विस्तार वडे उपयुक्त ढग से उन वहुविध तथ्यो से किया जा सकता है, जो पूर्णतया आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी ससार से सम्वन्ध रखते है—मशीनो तथा यन्त्रावलियो की गतियाँ, लहरप्रक्रियाए तथा स्पन्दन, वैद्युतीय एवम् रासायनिक प्रपच—अर्थात् वे चीजे जिन्हे होपी लोग न तो जानते थे और न ही जिनकी कल्पना कर सकते थे तथा जिनके लिए हमारे पास भी निश्चित नामो का अभाव है। वास्तव मे होपी लोगो के पास एक भाषा है जो इन रचनात्मक तथ्यो का विवेचन करने के लिए हमारी आजकल की नवीनतम वैज्ञानिक शव्दावली से भी अधिक सज्जित है। यह केवल इसलिए है कि उनकी भाषा दो अनुभवो के बीच एक सामान्य वैषम्य स्थापित करती है, जो वैषम्य एक ऐसे वैपम्य के समकक्ष है जिसका हमारे विज्ञान ने पता लगाया है, और वह सर्वव्यापक तथा प्रकृति मे मूलभूत है। आधुनिक भौतिकी की धारणाओ के अनुसार प्रकृति के ससार मे एक कण तथा स्पन्दनो के क्षेत्र का वैषम्य दिक् और काल, भूत, वर्तमान, तथा भविष्य के उन वैपम्यो की अपेक्षा अधिक मौलिक है जो वैषम्य हमारी भाषा हम पर थोपती है। होपी भापा का पक्ष-वैषम्य, जिसका हमने अभी विवेचन किया है, क्रियापदो मे अविकल्पी होने के कारण होपी-भाषा भापियो को स्पन्दनात्मक तथ्य पर ध्यान देने और प्रेक्षण करने के लिए लगभग वाध्य कर देता है, और इसके अतिरिक्त उन्हे ऐसे तथ्यो के लिए नाम खोजने तथा उनका वर्गीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वास्तव मे भाषा स्पन्दनात्मक प्रपचो के शव्दो मे तथा उन काल-विन्दु-निष्ठ घटनाओ मे, जिनके साथ (शब्द) सम्वन्धित है, असाधारण रूप से सम्पन्न है।

विश्व का अमरीकी-इण्डियन स्वरूप*

मैं, यह मान लेना, निराधार समझता हूँ कि एक होपी की, जो केवल होपी भाषा तथा अपने समाज के सास्कृतिक विचारो से ही अवगत है, दिक् तथा काल सम्बन्धी वे ही धारणाएँ है जो हमारी हैं, जिन्हे प्राय अन्त.प्रज्ञा माना जाता है, तथा सामान्यत: सार्वभौम भी। विशेषत उसकी काल-विषयक कोई ऐसी सामान्य धारणा अथवा अन्त प्रज्ञा नही है, जिसमे काल, अबाध रूप से एक ऐसा प्रवाहशील सातत्यक हो, जिसमे विश्व की प्रत्येक वस्तु एक समान गति से अग्रसर होती है तथा भविष्य से निकल कर वर्तमान से होती हुई भूत मे प्रविष्ट हो जाती है; या, जिसमे, इसकी विपरीत स्थिति मे, प्रेक्षक निरन्तर कालावधि के प्रवाह मे भूत से दूर, भविष्य के अन्दर ले जाया जा रहा हो।

दीर्घकालीन एव ध्यानपूर्वक किए गए अध्ययन एव विश्लेषण के पश्चात्, यह ज्ञात हुआ है, कि होपी भाषा मे ऐसे कोई शब्द, व्याकरणिक रूप, सरचना या अभिव्यक्तिया नही हैं जो उस ओर सीधा निर्देश करे जिसे हम काल कहते है, या भूत, वर्तमान, या भविष्य की ओर, या स्थायी अथवा चिरस्थायी की ओर, या गतिशील की अपेक्षा शुद्धगतिक के रूप मे गति की ओर, (अर्थात् किसी विशेष प्रक्रिया मे गतिशील प्रयत्न के प्रदर्शन की अपेक्षा 'दिक्' अथवा 'काल' मे एक सतत स्थानान्तरण के रूप मे), या 'स्पेस' का ऐसा ही निर्देश करे जिसमे विस्तार अथवा सत्ता के उस तत्व को छोड दिया गया हो, जिसे हम काल कहते हैं, और इसलिए विवक्षा के कारण एक ऐसा अवशेष छोड दे जिसे काल के रूप मे निर्दिष्ट किया जा सके। अत. होपी भाषा मे 'काल' का न तो अभिव्यक्तगत और न ही कोई विवक्षित निर्देश है।

---

* कुछ महत्त्वपूर्ण भाषायी टिप्पणियो के साथ इस लेख की पाण्डुलिपि उन कागजों में मिली जो व्होर्फ ने अपनी मृत्यु के समय छोड़े थे, तथा जिन्हे जार्ज एल ट्रेगर को सौंप दिया गया था। डा० ट्रेगर तथा डा० इ० ए० केनार्ड ने बिना कोई विशेष परिवर्तन किए प्रकाशनार्थ इस पाण्डुलिपि का सम्पादन किया, और यह लेख यहाँ पर उसी रूप में प्रस्तुत किया गया है जिस रूप में यह *Int J Amer Linguistics*, 16 : 67—72 (1950) में छपा था। आन्तरिक प्रमाण एवम् व्होर्फ के पत्र-व्यवहार में प्राप्त कुछ टिप्पणियों से यह सकेत मिलता है कि लेख सन् 1936 के आसपास लिखा गया था।

तथापि होपी भाषा विश्व के समस्त दृश्य-प्रपच का व्यावहारिक, अथवा कार्यान्वयन के अर्थ मे शुद्ध रूप से विवरण देने तथा स्पष्टीकरण करने मे समर्थ है। अतः मै यह मान लेना निराधार समझता हूँ कि होपी चिन्तन मे ऐसी कोई धारणा है, जैसे, कल्पित अन्तर्दर्शिता द्वारा अनुभूत काल का प्रवाह है, या यह, कि एक होपी व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि, 'सामग्रियो मे से एक' के रूप मे, उसे प्रदान करती है। यह ठीक इसी तरह है जैसे उकलीदस Euclidean के रेखागणित के अतिरिक्त भी कितने ही प्रकार के रेखागणित सम्भव हो सकते हैं, जो स्पेसीय समाकृतियो का वैसा ही परिशुद्ध विवरण दे सकते हैं। अतः यह सम्भव है कि विश्व के समान रूप से प्रामाणिक विवरण, हमारे काल तथा स्पेस सम्बन्धी सुपरिचित वैषम्यों का प्रयोग किए बिना भी दिए जा सकते हैं। आधुनिक भौतिकी का सापेक्षतावाद ऐसे ही दृष्टिकोणो मे से एक है, जिसे गणितीय भाषा मे कल्पित किया गया है तथा होपी का Weltanschauung एक दूसरा दृष्टिकोण है जो नितान्त भिन्न है, अगणितीय है तथा भाषायी है।

अतः होपी भाषा और सस्कृति मे तात्विकी ठीक इसी तरह निहित है जैसे हमारे काल तथा स्पेस सम्बन्धी तथाकथित साधारण विचार (एक तात्विकी) मे निहित है, अथवा सापेक्षतावाद सिद्धान्त मे निहित है; तथापि, यह इन सब से भिन्न प्रकार की तात्विकी है। विश्व की सरचना का विवरण होपी पद्धति के अनुसार देने के लिए, जहाँ तक सम्भव हो सके, इस तात्विकी को, जो होपी मे ही उचित रूप से वर्णनीय है, हमारी भाषा मे अभिव्यक्त की जा सकने वाली समानता के द्वारा 'सुस्पष्ट' करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सत्य है कि समानता कुछ अपर्याप्त होगी, तथापि ऐसी धारणाओ का लाभ उठाते हुए प्रयत्न करना चाहिए जिन्हे हमने होपी के विश्व-विषयक विचारो की आधारभूत व्यवस्थाओ के सापेक्ष आनुकूल्य द्वारा बनाया है।

इस होपी दृष्टिकोण मे काल अदृश्य हो जाता है, तथा इस तरह बदल दिया जाता है कि वह अब अधिक देर तक हमारी कल्पित अन्तर्प्रज्ञा या श्रेण्य न्यूटिनी विधि का समरूप तथा तात्कालिक कालरहित स्पेस नही रहता। इस के साथ साथ नई धारणाएँ तथा अमूर्तताएँ चित्र मे आ उभरती हैं, और इस प्रकार के काल या स्पेस के बिना विश्व का वर्णन करने का काम अपने हाथ मे ले लेती है। ये ऐसी अमूर्तताएँ है जिनके लिए हमारी भाषा मे पर्याप्त शब्दावली का अभाव है। ये अमूर्तताएँ जिनकी समानता पर हम अपने लिए होपी की तात्विकी का पुनर्निर्माण करने का प्रयत्न करते है, हम मे निश्चित रूप से मनोवैज्ञानिक या सम्भवतः रहस्यवादी वैशिष्ट्य से युक्त प्रतीत होगी। ये विचार वे हैं, जिन्हें हम तथाकथित जीववादी या प्राणतत्ववादी विश्वासो का अनिवार्य अग समझने के अभ्यासी है, या केवल रहस्यवादी की चेतना द्वारा ही अनुभव किए जा सकने वाले उन अदृश्य पदार्थो की अन्तर्दृष्टियाँ तथा अनुभूतियो के अलौकिक एकीकरण का अग समझने के, या उनका अग मानने के आदी

हैं, जिनका विवरण विचारो की तथाकथित रहस्यविद्या और (या) गुप्तविद्या-व्यवस्थाओ मे मिलता है। ये अमूर्तताएँ, निश्चित रूप से, होपी भाषा के स्पष्ट शब्दों मे मिलती है, या इससे भी अधिक उस भाषा की सरचना तथा व्याकरण मे अर्न्तगूढ है तथा होपी सस्कृति एव व्यवहार मे भी अभिलक्षित हैं। होपी भाषा तथा सस्कृति के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करने के मेरे प्रयत्न मे, जहाँ तक मैं ध्यानपूर्वक दूर रख सका हूँ, वे दूसरी व्यवस्थाओ के प्रक्षेपण नही है। तथापि, यदि MYSTICAL (रहस्यात्मक) शब्द-सयोग आधुनिक पाश्चात्य वैज्ञानिक की दृष्टि मे एक गाली हो तो यहाँ इस बात पर अवश्य वल देना चाहिए कि होपी तात्विकी की ये आधारभूत, अमूर्तताएँ एव अभिधारणाएँ, निष्पक्ष दृष्टि मे, व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक दृष्टि से समान रूप मे (या होपियो के लिए कुछ अधिक) न्यायसंगत हैं; विशेषत. जव हम उनकी तुलना अपनी तात्विकी के प्रवाहशील काल तथा स्थिर स्पेस से करते हैं, जो मूल मे उतने ही रहस्यात्मक हैं। होपी की अभिधारणाएँ सभी तथ्यो एव उनके सम्बन्धो का समान रूप से वर्णन करती है, तथा होपी सस्कृति के सभी पक्षो मे सघटन लाने के लिए अधिक अच्छी तरह सहयोग देती है।

हमारी भाषा, चिन्तन, एव सस्कृति की आधारभूत तात्विकी (मैं यहाँ आधुनिक एव विल्कुल भिन्न आधुनिक विज्ञान की सापेक्षतावादी तात्विकी की वात नही करूँगा) विश्व पर दो महान ब्रह्माण्डीय रूपो 'स्पेस' तथा 'काल' का आरोपण करती है, स्थिर त्रिविमात्मक अनन्त स्पेस, तथा शुद्धगतिक एकविमात्मक समरूप में तथा सतत प्रवाहशील काल—जो वास्तविकता के दो नितान्त पृथक् तथा असम्वद्ध पक्ष है (इस परिचित चिन्तन-प्रणाली के अनुसार)। काल का प्रवाहशील साम्राज्य, पुन:, त्रिधा विभाजन का विषय है. भूत; वर्तमान तथा भविष्य।

होपी तात्विकी के भी अपने ब्रह्माण्डीय रूप है, जो अनुपात मे, तथा विस्तार मे, इन्ही के तुल्य है। वे क्या हैं ? यह तात्विकी विश्व पर दो भव्य रूपो का आरोपण करती है, जिन्हे शब्दावली की प्रथम निकता के रूप मे हम Manifested 'आविर्भूत' तथा Manifesting 'आविर्भूत होती हुई' (या Unmanifest अनाविर्भूत) या पुन: Subjective 'आत्मनिष्ठ' तथा Objective 'वस्तुनिष्ठ' कहेगे। वस्तुनिष्ठ या आविर्भूत वह सभी कुछ है जो इन्द्रियगम्य है ऐसा ऐतिहासिक भौतिक विश्व जो वास्तव मे वर्तमान और भूत मे भेद दिखाने का कोई प्रयत्न नही करता, परन्तु उस सव का वहिष्कार करता है जिसे हम भविष्य कहते है। 'आत्मनिष्ठ' या 'आविर्भूत होता हुआ' 'MANIFESTING' वह सव कुछ है, जिसे हम भविष्य कहते है, परन्तु इतना ही नही, इसमे समान रूप से तथा अप्रमेय रूप से वह सव कुछ सम्मिलित है जिसे हम मानसिक कहते हैं—प्रत्येक वस्तु जो मन मे रहती है, या प्रकट होती है, या होपी जिसे 'हृदय मे' कहना अधिक उचित समझेगे, न केवल मनुष्यो के हृदयो मे अपितु पशुओ, पौधो तथा वस्तुओ के, प्रकृति के सभी रूपो, तथा प्रतीतियो के अन्दर तथा पीछे प्रकृति के हृदय मे, तथा जिसकी अनुभूति एक मे अधिक मानवशास्त्रियो ने

निहितार्थता एव विस्तारण द्वारा की है, तथापि, स्वय किसी होपी द्वारा इसकी चर्चा नही की जायेगी क्योकि स्वय यह विचार ब्रह्माण्ड के हृदय के अन्तर्गत धार्मिक तथा जादू सम्बन्धी श्रद्धायुक्त-भीति से भरा हुआ है। आत्मपरक क्षेत्र (हमारे दृष्टि-कोण से आत्मपरक परन्तु होपी के लिए अत्यन्त वास्तविक तथा जीवन, शक्ति एव ऊर्जा से स्फुरणशील) न केवल हमारे भविष्य को समाविष्ट करता है, जिसके अधि-काश रूप को होपी, यदि सुनिश्चित 'रूप' मे नही तो 'साररूप' मे लगभग पूर्व-निर्धारित मानता है, परन्तु सारी मनोवृत्ति, बौद्धिकता, (करण) तथा मनोभाव, जिसका सार एव विशिष्ट रूप है....चेतना के लक्षण से युक्त, सप्रयोजन इच्छा का आविर्भाव की ओर प्रयास'—उस आविर्भाव की ओर प्रयास, जो बहुत अधिक प्रतिरोधित एवं विलम्बित है, परन्तु किसी न किसी रूप मे अवश्यम्भावी है। यह एक क्षेत्र है 'प्रत्याशा' का, कामना एव प्रयोजन का, जीवन को सशक्त बनाने का, निमित्त कारणो का, उस विचार का, जो आन्तरिक क्षेत्र (होपी हृदय) से स्वय चिन्तन के रूप मे बाहर प्रकट हो रहा है। यह एक गतिशील अवस्था मे है, तथापि यह गति की अवस्था नही है—यह किसी भविष्य से निकल कर हमारी ओर नही बढ रहा है, परन्तु सक्रिय एव मानसिक रूप में पहले से ही हमारे साथ है, तथा इसकी गतिशीलता, परिणाम तक पहुचाने मे या प्रकटीकरण के क्षेत्र मे सक्रिय है, अर्थात् आत्मनिष्ठ मे गति के बिना क्रमश. उस परिणाम की ओर विकसित होने में सक्रिय है जो वस्तुनिष्ठ है। अग्रेजी मे अनुवाद करते समय एक होपी भाषी कह सकता है कि ये इकाइया जो कारणता की प्रक्रिया मे है 'will come' (आयेगी) या वे—होपी 'Will Come to them' (उनके पास आयेंगे); परन्तु उनकी अपनी भाषा मे कोई ऐसी क्रिया नही है जो हमारे Come या go के सदृश हो, जिनका अर्थ 'सरल एव सामान्य गति' हो, हमारी निरी शुद्धगतिक धारणा। इस विषय में वे शब्द, जिनका अनुवाद Come होता है, परिणाम तक पहुचाने वाली प्रक्रिया का निर्देश, उसे 'गति' कहे बिना ही करते है—वे है 'यहाँ परिणाम तक पहुचाता है' (pewi), या 'इस से दूर परिणाम तक पहुचता है' (angqo), या 'पहुच गया' (pitu बहुवचन OKI) जो केवल अन्त्य आविर्भाव का निर्देश करते है अर्थात् किसी विशेष स्थान पर वास्तविक रूप मे पहुचने का, न कि इसकी पूर्ववर्ती किसी गति का।

आत्मनिष्ठ का यह क्षेत्र या आविर्भाव की प्रक्रिया का क्षेत्र जो इस विश्वव्यापी प्रक्रिया के परिणामभूत वस्तुनिष्ठ के क्षेत्र से पृथक् है, सीमान्त क्षेत्र मे, परन्तु फिर भी अपने क्षेत्र में, अस्तित्व के उस पक्ष को सम्मिलित करता है जिसका समावेश हम अपने वर्तमान काल मे करते है। यह वह है जो आविर्भति मे

---

1. इस विचार का कभी-कभी उल्लेख 'प्राण' की आत्मा (hikwsu) तथा किसी महान शक्ति के रूप में (?a'ne himu) किया गया है। इन शब्दों का कुछ निम्न एवम् कुछ कम ब्रह्माण्डीय अर्थ भी हो सकता है यद्यपि उसमें भयावहता का पुट अवश्य रहता है।

विकसित होना आरम्भ कर रहा है, अर्थात् कोई चीज जिसका किया जाना आरम्भ हो रहा है, जैसे 'सोना आरम्भ करने लगा है' या 'लिखना शुरू करने लगा है' (going to sleep or starting to write) परन्तु अभी पूरी तरह सक्रिय नही है। इसका निर्देश उसी क्रियारूप [होपी व्याकरण की मेरी शब्दावली मे 'Expective form' प्रत्याशी रूप] द्वारा किया जा सकता है, और प्राय किया भी जाता है, जो हमारे 'भविष्य' या 'होना', 'इच्छा करना', 'आवश्यकता होना', 'इरादा करना', 'ठान लेना' आदि का निर्देश करता है। अत आत्मनिष्ठा का यह निकटतर छोर वाहर निकल आता है, तथा हमारे वर्तमान काल के अश को सम्मिलित कर लेता है, जैसे प्रारम्भ का क्षण; परन्तु होपी योजना मे हमारे वर्तमान का अधिकतर अश वस्तुनिष्ठ क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, और इस प्रकार वह हमारे भूतकाल से अप्रभेद्य है। होपी में एक अन्य क्रिया-रूप (Inceptive) आरम्भमाण भी है जो उद्गामी आविर्भूति के छोर का निर्देश उल्टे ढग से करता है—अर्थात् वस्तुनिष्ठ से सम्बन्धित के रूप मे, उस छोर के रूप मे जिस पर वस्तुनिष्ठता प्राप्त की जाती है, इसका प्रयोग आरम्भ करने, या प्रवर्तित करने की क्रिया अभिलक्षित करने के लिए किया जाता है, और अधिकाश दृष्टान्तो मे प्रत्याशी के मिलते-जुलते प्रयोग के अनुवाद से इसका कोई स्पष्ट अन्तर नही है। परन्तु कुछ विशेष निर्णायक स्थलो पर महत्त्वपूर्ण एव मौलिक अन्तर प्रकट हो जाते हैं। आरम्भमाण, जो वस्तुनिष्ठ एवं परिणाम-पक्ष का निर्देश तो करता है परन्तु प्रत्याशी की तरह आत्मपरक एव कारणात्मक पक्ष का निर्देश नही करता, वह आरम्भमाण एक ही सास मे कारणता के कार्य की समाप्ति का सकेत देता है तथा आविर्भूत के आरम्भ की अभिव्यक्ति करता है। यदि क्रियापद मे कोई ऐसा प्रत्यय है जो कुछ-कुछ हमारे कर्मवाची के समकक्ष माना जा सके, परन्तु उसका वास्तविक अर्थ यह हो कि कारणता 'प्रयोग-वस्तु' के ऊपर एक विशेष परिणाम उत्पन्न करने के लिए टकराती है—अर्थात् 'खाना खाया जा रहा है' तो उसमे निर्देश करने वाले आरभमाण प्रत्यय का जोडना कारण सम्बन्धी 'अवसान' के अर्थ को उत्पन्न करता है। मौलिक क्रिया आरम्भमाण अवस्था मे हैं; अत. जो कुछ कारणता इसके पीछे है वह समाप्त हो रही है। यहाँ कारण-वाचक प्रत्यय द्वारा स्पष्ट रूप से अभिलक्षित कारणता ऐसी ही है जिसे हम भूतकाल कहते हैं, और उस क्रिया-पद मे सम्मिलित है—यह (भूत) तथा आरम्भ-माणी, तथा एककथन मे अन्तिम अवस्था (आशिक अथवा पूर्णतया खाए गए (पन) की अवस्था) का अकारणीयकरण। इसका अनुवाद होगा It stops getting eaten 'यह खाया जाना समाप्त होता है'। आधारभूत होपी तात्विकी को जाने विना यह समझना असम्भव हो जायेगा कि एक ही प्रत्यय किस प्रकार प्रवर्तन अथवा समापन को द्योतित कर सकता है।

यदि हमे अपनी तात्विक शब्दावली होपी तकनीकी शब्दो के समान बनानी हो, तो हमे सम्भवत. आत्मपरक क्षेत्र के विषय मे 'आशा का' या 'आशा करने के

क्षेत्र' के रूप मे बात करनी चाहिए। प्रत्येक भाषा मे इस प्रकार के शब्द है, जिन्हे अर्थ का ब्रह्माण्डीय विस्तार प्राप्त हो जाता है, तथा जो अपने अन्दर एक असूत्रित दर्शन की मौलिक अभिधारणाओं का क्रिस्टलीकरण कर लेते हैं या निश्चित रूप धारण कर लेते है, जिसमे एक जाति के, एक सस्कृति के, समाज के, यहाँ तक कि एक युग के, विचार निहित होते है। हमारे ऐसे शब्द है Reality (वास्तविकता) Substance (पदार्थ) Matter (द्रव्य) Cause (कारण) तथा Space (स्पेस) Time (काल) Past (भूत) Present (वर्तमान) तथा Future (भविष्य) आदि जिनका विवेचन हम अभी कर चुके है। होपी भाषा मे इसी प्रकार का एक शब्द है जिसका अनुवाद प्राय. 'आशा' किया जाता है, Tunatya 'यह आशा करने की प्रक्रिया मे है, यह आशा करता है, इसके लिए आशा की जाती है, यह आशायुक्त होकर सोचता है, या यह आशा सहित सोचा जाता है' इत्यादि। होपी के अधिकाश तात्विकी शब्द क्रियाए है—वे योरोपीय भापाओ की तरह सज्ञापद नही है। Tunatya क्रियापद अपने 'आशा' के भाव मे हमारे Thought (विचार) desire (कामना), तथा cause (कारण) आदि शब्दो के कुछ तत्व निहित रखता है, जिन्हे कभी-कभी इसका अनुवाद करने के लिए प्रयुक्त करना चाहिए। यह शब्द वास्तव मे वह 'पद' है जो होपी 'वस्तुनिष्ठ तथा आत्मनिष्ठ' के महान द्वैत सम्बन्धी विश्व-दर्शन का क्रिस्टलीकरण करता है। यह ब्रह्माण्ड के आत्मपरक, अप्रकट, मौलिक तथा कारणात्मक पक्ष का निर्देश करता है, तथा फलप्राप्ति एव प्रकटन के प्रति उस उत्तेजक क्रिया का निर्देश करता है जिससे वह खौलती रहती है—'आशा करने की एक क्रिया', अर्थात् मानसिक कारणात्मक क्रिया, जो सदैव आविर्भूत क्षेत्र पर तथा क्षेत्र के अन्दर दबाव डालती रहती है। जैसे होपी समाज से परिचित कोई भी व्यक्ति जानता है कि होपी इस प्रस्फुटन-क्रिया को बढते हुए, पौधो मे बादलों के बनने मे, तथा वर्षा के रूप मे, तथा उनके घनीभाव मे, कृषि तथा वास्तुकला की सामाजिक क्रियाओ की सुविचारित योजनाओ तथा मनुष्य के सभी आशा करने, इच्छा करने, प्रयास करने, तथा ग्रहण करने के विचार मे, तथा जैसे यह सबसे अधिक विशिष्ट रूप मे प्रार्थना मे सकेन्द्रित है, होपी सम्प्रदाय की निरन्तर आशान्वित प्रार्थना मे, जिसका सहयोग लोक प्रचलित साम्प्रदायिक 'अनुष्ठान' एव 'रहस्य' देते है। जमीदोज कीवों मे गुह्य कर्मकाण्ड—ऐसी प्रार्थनाए है, जो सामूहिक होपी-विचार तथा इच्छाशक्ति के दबाव का सचालन आत्म-निष्ठ से वस्तुनिष्ठ तक ले जाने के लिए करती है। tun'atya के आरम्भमाण रूप tun'atyava का अर्थ 'आशा करना आरम्भ करता है' नही होकर 'आशा करने पर आशा सच हो जाती है' (अर्थात्, पूर्ण हो जाती है) होगा। तर्कसगत रूप से इसका यह अर्थ क्यों होना चाहिए ? यह, जो कुछ पहले कहा जा चुका है, उससे स्पष्ट हो जाना चाहिए। आरभमाण, वस्तुनिष्ठ की पहली आविर्भूति को द्योतित करता है, परन्तु tun'atya का मौलिक अर्थ आत्मनिष्ठ क्रिया या शक्ति है, अत: ऐसी क्रिया का 'आरंभमाण', उसकी समाप्ति अथवा उसकी

अन्तिम स्थिति है। तब यह कहा जा सकता है कि tun'atya 'सच' होना आत्मनिष्ठ के वैपम्य मे, वस्तुनिष्ठ के लिए होपी पद है। दोनो पद एक ही धातु के रूप-रचनापरक दो भिन्न अर्थभेद है, जैसे कि दो ब्रह्माण्डीय स्वरूप एक ही वास्तविकता के दो पक्ष है।

जहाँ तक स्पेन का सम्बन्ध है, आत्मनिष्ठ एक मानसिक साम्राज्य है, वस्तुनिष्ठ अर्थो मे एक 'साम्राज्य' जिसमे स्पेस है ही नही। परन्तु यह प्रतीकात्मक रूप मे ऊर्ध्वाधर विमा से सम्बन्धित प्रतीत होता है, तथा इसके ध्रुव, शिरो-विन्दु एव भूगर्भस्थ है, तथा वस्तुओ का 'हृदय' भी है जो आलकारिक ढग से हमारे inner (आन्तरिक) शब्द के सदृश है। वस्तुनिष्ठ ससार मे प्रत्येक विन्दु के समकक्ष एक ऐसा ऊर्ध्वाधर तथा सशक्त रूप से आन्तरिक अक्ष है, जिसे हम भविष्य का उद्गमस्रोत कहते हैं। परन्तु होपी के पास कोई कालात्मक 'भविष्य' नही है, आत्मनिष्ठ स्थिति मे ऐसी कोई चीज नही है जो वस्तुनिष्ठ अवस्था मे मिलने वाली परिवर्तनशील भौतिक समाकृतियो तथा दूरियो से वधे हुए क्रमो तथा अनुक्रमो के सदृश हो। प्रत्येक आत्मनिष्ठ अक्ष से, जिसे लगभग ऊर्ध्वाधर अक्ष तथा पौवे के वर्धन अक्ष के समान माना जा सकता है, वस्तुनिष्ठ साम्राज्य का विस्तार प्रत्येक भौतिक दिशा मे होता है, यद्यपि ये दिशाएँ अधिक विशिष्ट रूप से क्षैतिज स्तर तथा चार मौलिक दिग्विन्दुओ द्वारा प्रदर्शित की गई है। 'वस्तु-निष्ठ' विस्तार का एक महान ब्रह्माण्डीय रूप है, यह अस्तित्व के सभी, निश्चित रूप से विस्तारात्मक पक्षो का समावेश कर लेता है, तथा यह सभी अन्तरालों एव अन्तरो को सम्मिलित कर लेता है—सभी अनुक्रमीकरण एव सख्याओ को (सम्मिलित कर लेता है)। होपी के (DISTANCE) फासले मे वह सव सम्मिलित है जिसे पहले ही घट चुकी घटनाओ के वीच कालिक सम्वन्ध के अर्थ मे काल कहते हैं। होपी लोग 'काल' तथा गति की धारणा वस्तुनिष्ठ साम्राज्य के अन्तर्गत शुद्ध रूप से व्यापारात्मक अर्थ मे वनाते है—जो घटनाओ को मिलाने वाले व्यापारों की विशालता एव जटिलता का विपय है—जिससे कि 'काल' का तत्व भी इन व्यापारो मे भाग लेने वाले किसी भी स्पेस के तत्व से पृथक् न किया जाए। भूतकाल में दो घटनाएँ एक लम्बे 'काल' (होपी मे 'काल' के समकक्ष कोई शब्द नही है) के अन्तर से तव घटित हुई मानी जाती है, जव वहुत सी आवर्ती भौतिक गतियाँ उनके वीच इस प्रकार घटित हो चुकी हो, जिससे कि वे वहुत दूर तक चल ले, या दूसरी विधियो से भौतिक प्रदर्शन का विशाल आकार सकलित कर ले। होपी तात्विकी इस प्रकार के प्रश्न कि क्या दूरवर्ती गाव मे, भी पदार्थो का प्रस्तुत क्षण मे इसी प्रकार अस्तित्व है जैसे कि उनके अपने गाँव मे नही उठाती; क्योकि इस विपय मे यह स्पष्ट शब्दो मे व्यावहारिक है, और कहती है कि दूरवर्ती गाँव मे घटित होने वाली किन्ही घटनाओ की तुलना अपने गाँव की किन्ही भी घटनाओ से की जा सकती है। यह तुलना केवल एक ऐसे आकार के अन्तराल द्वारा की जा सकती है, जिसके अन्तर्गत 'काल' एवं 'स्पेस' दोनो ही के रूप हैं।

प्रेक्षक से दूरी पर होने वाली घटनाएं वस्तुनिष्ठ रूप मे ही उस समय जानी जा सकती है, जब वे भूत (कालिक) हो (अर्थात् वस्तुनिष्ठ में रखी जा चुकी हो) तथा अधिक दूर हो चुकी हो, अधिक 'भूत-कालिक' हो (आत्मनिष्ठ की ओर से जिन पर अधिक कार्य किया गया हो)। होपी भाषा, जो हमारी संज्ञा-पदो के प्रति अभिरुचि की अपेक्षा क्रिया-पदो को अधिक पसन्द करती है, हमारे वस्तु विषयक प्रस्तावो को घटना विषयक प्रस्तावो मे निरन्तर बदलती रहती है। किसी दूरवर्ती गाँव मे क्या घटना घटती है यदि एक अनुमान (आत्मनिष्ठ) नही, अपितु एक वास्तविक घटना (वस्तुनिष्ठ), यहाँ केवल बाद मे जानी जा सकती है। यदि वह 'इस स्थान' पर घटित नही होती तो वह **इस समय** घटित नही होती, यह **उस स्थान पर** और **उस** समय घटित होती है। 'यहाँ' की घटना, तथा 'वहाँ' की घटना दोनो ही वस्तुनिष्ठ है, जो सामान्य रूप से हमारे भूतकाल के समान है, परन्तु वहाँ घटित घटना वस्तुनिष्ठ रूप से अधिक दूरवर्ती है, हमारे दृष्टिकोण से जिसका अर्थ है कि जैसे 'यहाँ' घटित घटना से वह स्पेस में अधिक दूर है वैसे ही भूतकाल में भी हम से दूर है।

जैसे कि वस्तुनिष्ठ साम्राज्य अपने विस्तार परक विशेष वैशिष्ट्य का प्रदर्शन करता हुआ प्रेक्षक से दूर—उस अज्ञेय दूरी की ओर फैल जाता है, जो दोनो प्रकार से दूर है, अर्थात् स्पेस मे बहुत दूर तथा काल मे दीर्घातीत है, तब तक ऐसी स्थिति आती है, जहाँ विस्तार अपने विस्तृत विवरण मे ज्ञेय होना बन्द हो जाता है तथा विशाल दूरी मे खो जाता है, और जहाँ आत्मनिष्ठ मानो दृश्यो के पीछे से खिसकता हुआ वस्तुनिष्ठ मे लीन हो जाता है; ताकि प्रेक्षक से—सभी प्रेक्षको से—इस कल्पनातीत दूरी पर, सभी को अपने परिवेश मे अन्तर्विष्ट करने वाला वस्तुओ का एक अन्त तथा आदि है, जहाँ पर यह कहा जा सकता है कि स्वय अस्तित्व आत्मनिष्ठ एव वस्तुनिष्ठ को निगल जाता है। इस साम्राज्य की सीमान्त भूमि इतनी ही 'आत्मनिष्ठ' है जितनी कि यह 'वस्तुनिष्ठ'। यह प्राचीनता का तल रहित गर्त है, 'काल' तथा 'स्थान' कथाओ की वस्तु है जिन्हे केवल आत्मनिष्ठ रूप से या मानसिक रूप से जाना जा सकता है। होपी लोग यह अनुभव करते है और प्राय. अपने व्याकरण मे अभिव्यक्त भी करते है कि वे चीजे जिन्हे कथाओ या कहानियो मे बताया जाता है, वे इसी प्रकार से प्रामाणिक एव वास्तविक नही होती जैसे कि वर्तमान समय की चीजे तथा व्यावहारिक उपादेयता की चीजे। जहाँ तक आकाश की आत्यन्तिक दूरी तथा नक्षत्रो का सम्बन्ध है, उनके विषय मे जो जाना जाता है, या समझा जाता है, वह सब कल्पनापरक है, अनुमानात्मक है—अत एक प्रकार से आत्मपरक है, जिसकी प्राप्ति अवलोकन तथा सचलन (गति) की वस्तुनिष्ठ दूरियो तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओ की अपेक्षा आन्तरिक ऊर्ध्वाधर अक्ष तथा शिरोबिन्दु के ध्रुव के माध्यम से अधिक की जाती है। पुराणकथाओ का धुन्धला अतीत, पृथ्वी पर (स्वर्लोक मे नही) उसकी समकक्ष वह दूरी है जो आत्मनिष्ठ रूप से वास्तविकता के ऊर्ध्वाधर

अक्ष के द्वारा पातालीय ध्रुव के मार्ग से प्राप्त की जाती है—अतः यह पृथ्वी के प्रस्तुत तल से नीचे रखी जाती है, यद्यपि इसका यह अर्थ नही है कि मौलिक पुराणकथाओ का पाताल-लोक एक सूराख या कन्दरा है जैसा कि हम सामान्यतः समझने की गलती कर सकते है। यह Palatkwapı 'लाल पर्वतो पर' है; एक भूमि जो हमारी पृथ्वी की तरह हे परन्तु जिसके साथ हमारी भूमि का सम्बन्ध एक दूरस्थ आकाश का सा है—और इसी प्रकार हमारी पृथ्वी का आकाश भी कथाओ के सूरमाओ द्वारा आक्रान्त रहा है, जिन्हे वहाँ पृथ्वी जैसा ही एक अन्य क्षेत्र प्राप्त होता है।

अव यह समझा जा सकता है कि होपियो को किस प्रकार उन पदों के प्रयोग की आवश्यकता नही जो यथार्थ स्पेस अथवा काल के रूप का निर्देश करते हो। हमारी भापा मे ऐसे पद हमारी विस्तार की, व्यापार की, तथा चक्रीय प्रक्रियाओ की अभिव्यक्तियो मे ढाल दिए जाते है , वशर्ते कि वे वस्तुनिष्ठ साम्राज्य का निर्देश करते हो। उन्हे आत्मनिष्ठता की अभिव्यक्तियो मे ढाल दिया जाता है, यदि वे आत्मनिष्ठ साम्राज्य, 'भविष्य', वित्तीय मानसिक, पुराणकथा काल तथा अदृश्य रूप से दूरस्थ तथा सामान्यतः अनुमानपरक का निर्देश करते हो। अत होपी भापा अपने क्रिया-पदो के लिए कालो के विना ही अपना कार्य सुचारू रूप से चलाती है।

आदिम समाजों में चिन्तन का भाषायी विवेचन*

किसी जीवित आदिम सस्कृति के अध्ययन मे व्यस्त नृकुलविज्ञानी ने प्राय: आश्चर्य किया होगा; 'कि ये लोग क्या सोचते है ? कैसे सोचते है ? क्या इनकी बौद्धिक तथा तर्कसम्मत प्रक्रियाएँ हमारे समान है या मौलिक रूप से भिन्न है ?" परन्तु सम्भवत: उसने इस विचार को मनोवैज्ञानिक पहेली समझ कर त्याग दिया है और तेजी से अपना ध्यान अधिक सरलतापूर्वक निरीक्षणीय पदार्थों की ओर पुन. लगा दिया। फिर भी, आदिम समाज मे विचार तथा चिन्तन की समस्या शुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक तथा केवल मनोवैज्ञानिक समस्या नही है। यह बहुत अधिक मात्रा मे सास्कृतिक है। इसके अतिरिक्त यह अधिकतर सास्कृतिको तथ्यो के 'विशेपतया ससक्तिशील समुच्चय' का विषय है जिसे हम भापा कहते है। यह समस्या भापा-विज्ञान की सहायता से सुलझाई जा सकती है, और जैसा कि मुझे सिद्ध करने की आशा है कि इस समस्या को सुलझाने के माध्यम

* यह लेख मुझे बिना तारीख की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में उनके कागजों में से प्राप्त हुआ जिन्हें व्होर्फ ने अपनी पत्नी के पास छोड़ दिया था और कुछ ही समय पहले वे उसके बेटे राबर्ट व्होर्फ को सौंप दिए गये थे। पाण्डुलिपि पूर्ण प्रतीत हुई (केवल कुछ पादटिप्पणियो को छोड़कर)। परन्तु यह लगभग अपरिष्कृत अवस्था में थी, जिस पर मेरे लिए कुछ सम्पादकीय कार्य करना आवश्यक हो गया। पाण्डुलिपि पर टिप्पणियाँ यह संकेत देती हैं कि व्होर्फ इसे प्रकाशित करने की नीयत से तैयार कर रहे थे। उसने उन व्यक्तियो के नामों की सूची भी तैयार कर ली थी जिनके पास वह अनुमुद्रित प्रतियाँ भेजने की योजना बना रहे थे, जिसमें Jung, N (Ayan) L (ouise) Redfield, Sapir, Carroll, Wayne Dennio (Claude) Bragdon, H. G. wells तथा H. L. Mencken के नाम भी सम्मिलित हैं। हम इस लेख के लिखे जाने की तिथि 1936 के अन्तिम दिनो मे दो कारणों से रखते हैं: पहला, यह उसके लेख 'The Punctual and segmentatvie aspects of verbs in Hopi' के 1936 में प्रकाशित होने के पश्चात् लिखा गया होगा जिसका उन्होंने प्रस्तुत लेख में उल्लेख किया है, और दूसरा, सम्भवत: 1937 में लिखे गए लेख Grammatical categories का पूर्ववर्ती है, क्योंकि वह 'गूढ प्रारूप' सम्बन्धी कारणो का प्रस्तुत लेख की अपेक्षा कुछ अधिक विकसित रूप प्रस्तुत करता है।

भाषाविज्ञान पर एक विशेष प्रकार का वल देने की आवश्यकता है जो सपीर, ल्योनार्ड,व्लूमफील्ड तथा दूसरे भाषाविज्ञानियो की कृतियो के माध्यम से विकसित होना आरम्भ हो गया है । यद्यपि बोआस ने इसका प्रारम्भ दसियो वर्ष पहले अपने 'हैण्डबुक आफ अमेरिकन इण्डियन लेंगवेजिज' (*Handbook of American India Languages*) की भूमिका मे कर दिया था ।

चिन्तन के विषय मे स्पष्ट रूप में वर्णित लक्षणो मे से एक लक्षण कार्ल युग का है, जिसमे चार मूलभूत मानसिक कार्यो में भेद दर्शाया गया है । सवेदन, भावना, चिन्तन, तथा अन्त प्रज्ञा ।[1] एक भाषा-विज्ञानी के लिए यह बात स्पष्ट है कि युग की परिभाषा के अनुसार चिन्तन के अन्तर्गत एक वहुत वडा भाषायी तत्व है जिसकी प्रकृति सुनिश्चित अभिरचनात्मक है जब कि भावना केवल अभाषायी है, भले ही वह भाषा के माध्यम का प्रयोग करे; हालाँकि चिन्तन द्वारा किए गए भाषायी प्रयोग से यह प्रयोग बिल्कुल भिन्न होगा। चिन्तन को भाषा की अपनी भूमि कहा जा सकता है, जबकि, 'भावना' मूल्यो की उस भावना का विवेचन

1. उस पाठक से जो युग के सभी विचारों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, मैं कहना चाहूंगा कि ये व्यापार-विषयक उसकी धारणाएं तत्त्वत: पूर्ववर्ती मनोवैज्ञानिकों की हैं जैसे Wundt, जिनमें वह अपनी विचक्षण अन्तर्दृष्टि तथा मौलिक सिद्धान्तो का स्पष्टीकरण जोड़ देता है। युंग के दृष्टिकोण का वैशिष्ट्य यह है कि उसके द्वारा चारों व्यापारों का प्रभेद न केवल गुणात्मकता की दृष्टि से अपितु एक ऊर्जा-सिद्धांत के व्यापारों की पृथक ऊर्जा व्यवस्थाओं के रूप में किया गया है। युंग की 'लिबिडो' मननशक्ति वह वैशिष्ट्य है, जो उन्हें केवल प्रक्रियाओं एवं मनोग्रन्थियों से पृथक् प्रदर्शित करता है। (वे अपेक्षाकृत बन्द व्यवस्थाएं है)। दूसरे शब्दों में यदि मैं युंग को सही रूप में समझ पाया हूं तो चिन्तन के लिए प्राप्त होने वाली कोई भी (लिबिडो) मनःशक्ति या ऊर्जा, भावना या संवेदन के रूप में, या इसके उलट रूप में रूपान्तरित नहीं हो सकती, केवल एक तरह से रूपान्तरित हो सकती है वह है अचेतन में जाने से तथा उसके अन्दर इतनी दूर सरक जाने से कि वह प्राचीन अप्रभेदीकृत, या अवस्था, या समरूप अवस्था पर पहुँच जाए। यह 'लिबिडो' सम्बन्धी धारणा मनोरोग-विज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है और यह 'चिन्तन सम्बन्धी भाषा-विज्ञान' के लिए भी महत्त्वपूर्ण हो सकती है, यदि यह सत्य हो कि चैत्तीय ऊर्जा, जो भाषायी प्रक्रिया (चिन्तन-व्यापार में सम्मिलित) के लिए उपलब्ध है, एक भेदीकृत ऊर्जा है, जो एक बन्द व्यवस्था की गाड़ी में चढ़ी हुई है, तथा इन व्यवस्थाओ के बीच रूपान्तरणीय नहीं है। तथापि, इस प्रकार का दृष्टिकोण उन भाषायी विधियो के लिए किसी भी तरह अनिवार्य नहीं है जिनका मैं यहाँ विवेचन कर रहा हूँ;

[ये विचार युंग के *Psychological Types* (*Baynes* द्वारा अनूदित, न्यूयार्क तथा लंदन, 1923) में मिलेंगे—JBC]

करती है जो भाषा मे निहित है, परन्तु वह उसके सीमा-प्रान्त मे ही होती है। ये युंग द्वारा प्रतिपादित तर्कसगत दो मानसिक कार्य है, तथा वैषम्य द्वारा उसके तर्कसगति रहित दो कार्य है। सवेदन तथा अन्त प्रज्ञा को आसानी से अभाषायी कहा जा सकता है। यह सत्य है कि बात करने, सुनने, और समझने की प्रक्रिया मे इनका भी योग है परन्तु यह योग उनके समस्त विस्तार के अतिलघु अश तक ही सीमित है। अतः हम चिन्तन को उस कार्य के रूप मे अलग कर सकते है जो बहुत हद तक भाषायी है।[2]

मूक चिन्तन का भाषायी पक्ष—बिना बोले सोचना, ऐसा पक्ष है जिसका अभी बहुत कम मूल्य समझा गया है। मूक चिन्तन जैसा कि कुछ विद्वान मानते है, मौलिक रूप से दमित वाग्व्यापार या अश्रवणीय रूप से बुदबुदाए शब्द या स्वर-तन्त्रियो का मूक आलोडन नही है।[3] इस प्रकार की व्याख्या; भाषायी सूक्ष्मताओं से अनभिज्ञ, तथा सामान्य बोध रखने वाले व्यक्ति को ही सही प्रतीत हो सकती है। 'सामान्य-बोध', जैसे सामान्य सास्कृतिक व्यवस्थाओ के विषय मे अनभिज्ञ होता है, वैसे ही उसे इस तथ्य का बोध नही होता कि स्वय बोलने की प्रक्रिया एक जटिल सास्कृतिक व्यवस्था का प्रयोग करती है। प्रयोजन अथवा अर्थ, शब्दो तथा रूपिमो का परिणाम नही है, अपितु शब्दो तथा रूपिमो के अभिरचना-परक सम्बन्ध द्वारा प्रकट होता है। किसी रूपिम का पार्थक्य जैसे 'जॉन' या Come 'आ' आदि स्वय एक उच्चस्तरीय विशेषीकृत प्रकार की अभिरचनाएँ हैं या सूत्र हैं, इकाइयाँ मात्र नहीं हैं।[4] शब्द तथा रूपिम गतिपेशीय-प्रतिक्रियाए है,

---

2. कुछ लोगो ने चिन्तन को पूर्णतया भाषायी मान लिया है। मेरा विश्वास है कि Watson यह विचार रखता है, या रखता था। इस सम्बन्ध में *Watson* की बहुत बड़ी खूबी यह है कि वह पहला व्यक्ति था जिसने मौन चिन्तन के अन्तर्गत एक बहुत बड़े तथा उपेक्षित, या अमान्यता-प्राप्त भाषायी तत्व को दिखलाया, तथा उसकी शिक्षा दी। उसका दोष यह है कि उसने इसे सम्पूर्ण रूप में सम्पन्न किया, सम्भवतः यह अनुभव न करने या कम से कम इस पर बल न देने मे भी उसका दोष है कि चिन्तन का भाषायी-पक्ष जीव विज्ञान-परक ढंग से संगठित प्रक्रिया 'वाक्' या 'भाषा' नहीं है, परन्तु एक सांस्कृतिक संगठन है अर्थात् (a language) एक भाषा है। कुछ भाषा विज्ञानी यह मत भी रख सकते हैं कि चिन्तन पूर्णतया भाषायी है।
3. [इस पाद टिप्पणी के लिए कोई मूल-पाठ प्राप्य नहीं है। सम्भवतः व्होर्फ ने वाट्सन को पुनः उद्धृत करने का निश्चय किया हो, जो वाक् पेशियों की उप-मुखरित गतियो के साथ विचार का तादात्म्य मानता है। उसका लेख देखिए, 'Is thinking merely the action of language mechanism? (V)', Brit J. Psychol., 11 · 87–104 (1920).—JBC]
4. किसी शब्दावली सूची मे शब्द के स्पष्ट पार्थक्य में भी उनका वही अर्थ निकलता है जो अभिरचनाबद्ध 'शृंखलता के सम्भाव्यों' से उन्हें प्राप्त होता है, जो उनसे

परन्तु शब्दो तथा रूपिमो को जोडने वाले वे तत्व पेशीय प्रतिक्रियाए नही है जो ऐसी कोटियाँ तथा अभिरचनाओ का निर्माण करते हैं जिनमे भाषायी अर्थ विद्यमान रहता है, और वे तत्व अपेशीय प्रकार की तन्त्रिका-प्रक्रियाओ एव अनुवन्धो के सदृश मूक, अदृश्य तथा व्यष्टि रूप मे अदर्शनीय है।[5] ये वुदवुदाए हुए शब्द नही हैं अपितु शब्दो के वीच एक प्रकार की घनिष्टता है जो उन्हे किसी भी अर्थपरक परिणाम के हेतु एक साथ कार्य करने मे समर्थ वना देती है। यही घनिष्टता अपने भाषायी स्वरूप मे ही विचार का वास्तविक सार है; तथा अन्त में वुद-

शाखित होते हैं तथा भाषायी सूत्रीकरणों को जटिल अभिरचनाओं के साथ जोड़ देते हैं।

5. सुनिश्चित रूप से अधिघोषित भौतिकवादियों को यह छूट दी जा सकती है कि वे सम्वन्धों के इस उत्पत्ति-स्थान को मस्तिष्क कोशिकाओं की शृंखलाओं एवं पथों से वना हुआ या कुछ भी समझें, जो अन्य भौतिक-रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा अपने आप को जोड़ते हैं अथवा सम्वन्धित करते हैं। परन्तु RAPPORT (घनिष्ठता) की प्रकृति जानने का तथा उत्पत्ति-स्थानीय सम्बन्धो की संरचना का इस विधि के द्वारा कोई सुराग इससे अधिक प्राप्त नहीं हो सकता, जितना कि अलग-अलग कवीले की सामाजिक व्यवस्था की रूपरेखा खींचने का सुराग उसके व्यक्ति विशेषो के रक्तवर्गो से मिल सकता है। जिस व्यक्ति की चिन्तन-प्रक्रिया से हमारा सम्वन्ध है केवल उसी के द्वारा वोली गई भाषा के विचक्षण अध्ययन द्वारा ही इसका निश्चयीकरण किया जा सकता है और यह उन व्यक्तियो के लिए मौलिक रूप से भिन्न होगी जिनकी भाषाएँ मौलिक रूप से भिन्न प्रकार की हैं। जैसे सांस्कृतिक तथ्यो का केवल सांस्कृतिक रूप में ही निश्चयीकरण किया जा सकता है जीवविज्ञानपरक ढंग से नहो। इसी प्रकार भाषायी तथ्य भी जो इसी तरह सांस्कृतिक हैं, तथा विचार के भाषायी तत्व का भी समावेश करते है, भाषायी विधि से निश्चित किए जा सकते हैं। वे केवल भाषा द्वारा निश्चित नहीं किए जाते अपितु भाषाओं द्वारा किए जाते हैं। यदि वे सभी चिन्तक, जिनका अध्ययन किया जा रहा है, हमारी भाषा (मान लीजिए अंग्रेजी) वोलते हों, तो अंग्रेजी भाषा का वह आवश्यक विचक्षण अध्ययन उसी अनुसन्धाता द्वारा किया जा सकता है जिसने अत्यधिक भिन्न भाषाओ का अध्ययन किया हो तथा जो उनका अंग्रेजी के साथ वैषम्य दिखाने में समर्थ हो, क्योकि केवल इसी रीति से उन केवल कोरे सम्वन्धों के अस्तित्व के वोध को चेतना की अग्रिम पंक्ति में लाया जा सकता है, जो किन्हीं भी शव्दीकृत धारणाओ के सदृश नहीं हैं; परन्तु तथापि रूपिमों के अनुबन्धों का तथा चिन्तन की धाराओ की आकृति का नियन्त्रण करते हैं। (यह पाद-टिप्पणी एक प्रारम्भिक प्रारूप से ली गई है, तथा इस स्थान पर व्होर्फ द्वारा अभीष्ट टिप्पणी का प्रतिनिधित्व करती है—JBC)।

वुदाने या काकलीय कम्पन आदि को अर्थपरक दृष्टि से अनावश्यक बना देती है। अपेशीय प्रक्रियाएं जो बहुत ही आवश्यक वस्तु है, अपनी प्रकृति के अनुसार वे किसी विशेष भाषा की सरचना के अनुरूप एक अनुबन्ध अवस्था मे है तथा काकलीय व्यापार से परे या व्यापार-युक्त, अथवा व्यापार रहित किसी भी प्रकार इन प्रक्रियाओं तथा श्रृंखलताओं की क्रियाशीलताएं है। चेतना की सबसे अग्रिम पक्ति मे, या जिसे 'अचेतन मस्तिष्क व्यापार का गहरा कूप कहा जाता है,' उसमे, ये सर्वत्र ही भाषायी अभिरचनात्मक व्यापार है, तथा इन्हे 'चिन्तन' कहलाने का अधिकार प्राप्त है।

इसके अतिरिक्त मूक चिन्तन का पेशीय कम्पन के रूप मे विश्लेषण, जो निगृहीत शब्दो तथा रूपिमो के सदृश है, तथा वह चिन्तन का उससे अधिक यथार्थ विश्लेषण नही हो सकता जितना कि भाषा का वास्तविक शब्दो तथा रूपिमो के रूप मे विश्लेषण यथार्थ होता है। एक नितान्त अपरिष्कृत तथा सर्वाधिक अप्रौढ व्याकरण भी उससे अधिक प्रभावशाली विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता है, परन्तु एक वैज्ञानिक व्याकरण तो अनिवार्य रूप से सम्बन्धो का गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

उदाहरणार्थ अग्रेजी मे लिग-सम्बन्धो की ऐसी व्यवस्था है, जिसका रूपिमो मे बाह्य प्रतिनिधित्व लगभग न्यूनतम है। इसकी पेशीय प्रतिक्रियाए केवल दो सर्वनामो He तथा She के रूप मे है।[6] पेशीय प्रक्रियाए जो लिग की जुडी हुई सज्ञाओ को कार्यान्वित करती है, लिग की दृष्टि से समरूप है, परन्तु ऐसी पेशीय-प्रक्रिया तथा सर्वनाम He या She को कार्यान्वित करने वाली अन्य पेशीय-प्रक्रियाओ के बीच 'अनुबन्ध' (1) लिंग मे भिन्न प्रकार का होता है, (2) एक अपेशीय-प्रक्रिया, क्योंकि दो पेशीय-प्रक्रियाए पृथक् है और वे दीर्घकालीन विश्राम अवधि द्वारा अन्तरित भी हो सकती है। लिंग-सज्ञाए जैसे Boy (लडका), Girl (लडकी), Father (पिता), Wife (पत्नी), Uncle (चाचा), Woman (स्त्री), lady (महिला), जिनमे हज़ारो George, Fred, Mary, Charlie, Isabel, Isadore, Jane, John, Alice, Aloysius, Esther, Lester, आदि ऐसे नाम भी सम्मिलित हैं जिनमे लिंगदर्शी कोई भी ऐसे चिह्न नही है जैसे लैटिन मे–*us* या–*a* प्रत्येक पेशीय प्रक्रिया मे है; परन्तु तथापि इन हजारो शब्दो मे से प्रत्येक का अनिवार्य रूप से अनुबन्धात्मक सम्बन्ध है जो इसे पूर्ण सूक्ष्मता के साथ या तो he शब्द के साथ या She के साथ जोड़ता है, जो फिर भी इस तरह प्रकट व्यवहारपरक चित्र मे नही जाता जबतक कि वृत्तान्त की विशेष परिस्थितियों द्वारा अपेक्षित न हो।[7] ये हजारो अनुबन्धात्मक प्रक्रियाए सर्वनाम

---

6. वास्तव में उनके his, him, her, hers आदि रूप-रचनाओ को सम्मिलित करते हुए।
7. पाण्डुलिपि में सीमान्तीय टिप्पणी यह संकेत देती है कि व्होर्फ इस पादटिप्पणी

के सामान्य केन्द्र-विन्दु के चारों ओर परिक्रमा करती हुई तथा समान लिंग वाली हजारो सज्ञाओ तक ऐसी मानसिक मनोग्रन्थि से शाखा वनाती हुई (होती है) जिनका सम्वन्ध (1) अपेशीय तथा अकार्यान्वित क्षेत्र से, (2) युग की परिभापा मे 'चिन्तन' कार्य से (3) भापायी तथा सास्कृतिक अनुक्रम से है।

ऐसा कोई सुस्पष्ट कारण दिखाई नही देता जिसकी वजह से ऐसी मनोग्रन्थि अकेले शब्दों या जिन वर्ग-चिह्नो के साथ यह सम्वद्ध है, उनकी आवश्यक रूप से सक्रियकरण की अपेक्षा किए विना विचारो की अन्य सामग्री के साथ विभिन्न प्रकार्यात्मक सम्बन्धो मे न बध सके। किसी विशेष सस्कृति मे हम, उदाहरणार्थ, लिंगो के बीच श्रम-विभाजन के विषय मे सोच रहे हो सकते है और हमे female (स्त्रीलिंग) तथा male (पुल्लिंग) आदि किताबी शब्दो के विषय मे सोचना भी न पड़े तथा ऐसे विषय पर चिन्तन करते समय हमे निरन्तर इनका उल्लेख भी न करना पड़े। जब हमे ऐसे प्रश्नो का समाधान करना पडता है तो हम अपने मन मे सम्भवत: जो कुछ करते हैं, वह यह है कि हम तथ्यो को एक प्रकार के दो लिंग-वर्गों की अभ्यासगत चेतना के रूप मे छाट कर अलग कर लेते है, जो हमारे विचार-ससार मे एक स्थायी वर्गीकरणात्मक तथ्य के रूप मे रहती है, तथा जो धारणा के रूप मे 'लिंग' या भावनात्मक मूल्य के रूप मे लिंग से बिल्कुल भिन्न है। किसी लिंगीय वर्गीकरण की छायात्मक, अमूर्त तथा शब्द-रहित रूपरेखा का आधार 'लिंग', (Sex) या 'महिला' आदि जैसा शब्द नही है। यह भाषाई (UTTERANCE) उच्चारण से भिन्न (Linguistic RAPPORT), भाषायी घनिष्ठ सम्पर्क है। अंग्रेजी मे, सम्भवत:, यह भाषायी लिंगभेदीय लिंग-व्यवस्था से सम्वन्धित दो महान अनुवन्धी वन्धनो की मनोग्रन्थियो का 'पूर्णतर चेतना' की ओर उठना है। कोई भी, यह कह सकता है, कि यह George, Dick , तथा William जैसे शब्द-वर्ग का, या Jane. Sue तथा Betty वर्ग के 'सर्वनामीय-अनवन्ध' का सम्पूर्ण दवाव है जो 'चिन्तन' मे कार्य करता है, और यह पुरुष, (male) या स्त्री, (female) की तरह शाब्दिक धारणा नही है। परन्तु चीनी या होपी की तरह लिंगीय लिंग-व्यवस्था रहित भापा मे, लिंग-वर्गीकरण सम्वन्धी कोई भी चिन्तन ऐसी प्रकृति का नही हो सकता। सम्भवत , यह एक शब्द या भावना या लिंग सम्वन्धी धारणा या प्रतीक या अन्य किसी चीज के चारो ओर कार्यान्वित होगा।

अंग्रेजी के लिंग की तरह, कोई भाषायी वर्गीकरण, जिसका किसी वर्ग के शब्दो के साथ जोडा हुआ कोई प्रकट चिह्न नही है, परन्तु जो अनुवन्ध-वन्धनो के अदृश्य 'केन्द्रीय-मिलान' (Exchange) के माध्यम द्वारा इस प्रकार कार्य करता है जिससे

द्वारा यह स्पष्ट करना चाहता था कि लिंग द्वारा संयोजित संज्ञाओं का प्रयोग उन विशेष व्यक्तियों के जानने पर निर्भर नहीं है जिनका वे निर्देश कर सकते हैं, यद्यपि यह अनिवार्य रूप से उन व्यक्तियो का (सेक्स) लिंग की दृष्टि से वर्गीकरण करता है—J.B.C.]

कि वह वर्ग का निर्देश करने वाले अन्य शब्दो को निश्चित कर दे। इसे मैं, एक प्रकट वर्ग से वैषम्य दिखाने के लिए अप्रकट वर्ग कहता हूँ, जैसे लटिन मे लिंग है। नवाहो भाषा मे विषयो के सम्पूर्ण ससार का अशतः 'सजीवता', तथा अशत. 'आकृति' पर आधारित अप्रकट वर्गीकरण है। निर्जीव विषय दो श्रेणियों मे विभक्त है जिन्हे भाषा-विज्ञानी 'गोलाकार' तथा 'लम्बे विषय' कहते है।[8] वास्तव मे ये नाम उचित प्रतिनिधित्व नही करते, वे सूक्ष्म को स्थूल रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं, अतः विफल रह जाते है। स्वय नवाहो भाषा मे ऐसे कोई शब्द नही है, जो इन वर्गो का सुचारु रूप से विवरण प्रस्तुत कर सके। एक 'अप्रकट लिंग' की तरह, 'अप्रकट धारणा' की परिभाषा की जा सकती है, तथा अपने ढग से वह इतनी सुनिश्चित होगी जितनी 'स्त्री जाति' जैसी धारणाएँ है, परन्तु यह बहुत ही भिन्न कोटि की है, यह किसी शब्द का सादृश्य नही है, अपितु यह किसी घनिष्ठता-व्यवस्था का सादृश्य है तथा इसके बोध मे अन्तः प्रज्ञा सम्बन्धी गुण है। हम यह कहेगे कि यह 'अनुभूत' की जाती है, 'समझी' नही जाती। सम्भवत. यह उस कोटि का विचार या धारणा है जिसे हिन्दू दर्शन मे 'अरूप' (या रूप रहित) कहते है। नवाहो की तथाकथित गोलाकार या लम्बी सज्ञाएँ न तो स्वय चिह्नित होती हैं और न ही किन्ही सर्वनामो द्वारा निर्दिष्ट की जाती है। उनका निर्देश केवल अत्यधिक महत्त्वपूर्ण धातु-प्रकृति द्वारा किया जाता है, क्योकि 'गोल' या 'लम्बे' 'कर्ता' अथवा कर्म के लिए एक भिन्न धातु अपेक्षित होती है। बहुत सी अन्य धातु-प्रकृतियाँ इस भेद के प्रति उदासीन रहती है। एक ऐसे नये पदार्थ को, जिसके लिए नवाहो मे कोई नाम नही है, सादृश्य के अनुसार किसी एक वर्ग मे रख दिया जाता है—सादृश्य ऐसा नही जैसा कि हमे प्रतीत होता है, परन्तु ऐसा, जो कि नवाहो की दो मनोग्रन्थियो के साराश द्वारा निर्दिष्ट है। यह भी समव है कि एक अप्रकट भाषायी वर्ग पदार्थों के किसी महान द्वि-विभाजन का व्यवहार न करे और उसका बहुत ही सूक्ष्म अर्थ हो सकता है, तथा यह भी हो सकता है कि प्रकट रूप से चिह्नित कुछ रूपो से युक्त कतिपय विशिष्ट भेदक 'प्रतिधानों' को छोडकर उसका कोई भी प्रकट निर्देश न हो। अत. यह वह कोटि है जिसे मैं Cryptotype 'गूढ-प्ररूप' कहता हूँ। यह एक प्रच्छन्न, सूक्ष्म तथा दुर्ग्राह्य अर्थ है, जो किसी भी वास्तविक शब्द के समकक्ष नही, तथापि भाषायी विश्लेषण द्वारा, प्रकार्यात्मक दृष्टि से व्याकरण मे महत्वपूर्ण दिखाया जाता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी के निपात UP जिसका अर्थ है 'पूर्णतया', अन्त तक जैसे (Break it up) (इसे तोड डालो), 'Cover it up' (इसे ढक दो), 'Twist it up' (इसे मरोड डालो), 'Open it up' (इसे (पूरी तरह) खोल दो), मे, और उनका प्रयोग केवल चार विशिष्ट गूढ-प्ररूप वाली प्रक्रियाओ को छोड़ कर किसी

---

8. (वास्तव में, नवाहो क्रियापदीय व्यवस्था निर्जीव पिण्डों की दो से अधिक श्रेणियां प्रस्तुत करती है, एक ऐसा सत्य जो व्होर्फ के दृष्टिकोण को अधिक प्रामाणिक बनाता है—J.B.C.)

भी ऐसी क्रिया के साथ हो सकता है जो एकाक्षरीय या द्वयाक्षरीय हो, तथा वलाघात आदि-अक्षर पर हो। इनमे से एक गूढ प्ररूप सीमा-रहित छितराव की है, अत. कोई यह नही कहता कि 'Spread it up, Waste it up, drain it up'[9] या 'Filter it up'। दूसरा गूढ रूप ऐसे दोलन का है जिसके अग विक्षिप्त नही होते। हम यह कभी नही कहते 'Rock up a Cradle, wave up a flag, Wiggle up A finger nod up one's head' आदि आदि।[10] तीसरा गूढ-प्ररूप अचिर-स्थायी सघात वाला है, जिसमे मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाए भी सम्मिलित हैं : Kill 'मारना', Fight 'लडना', इत्यादि। अतः हम यह कभी नही कहते 'Whack it up, tap it up, state it up, stam it up, Wrestle him up, hate him up।[11] चौथा, निर्देशित गति 'हिलना', 'उठाना', खीचना', 'धकेलना', 'रखना' आदि वाला है, जिसके साथ UP का दिशापरक अर्थ है Upward (ऊपर की दिशा मे) या फिर व्युत्पादित अर्थ होते हैं, यद्यपि इस अर्थ का क्रिया द्वारा विरोध भी किया जा सकता है और फलस्वरूप एक असगत अर्थ उत्पन्न हो सकता है जैसे Drip it up। इन गूढ-प्ररूपों के सेट से बाहर UP का प्रयोग सकर्मको के साथ पूर्णताद्योतक-अतिशय द्योतक अर्थो मे हो सकता है।

दूसरा अग्रेजी गूढ-प्ररूप, आच्छादन, (परिवेष्टन) घेरना तथा सतही या पृष्ठीय-संलग्नता आदि अर्थो वाली सकर्मक क्रियाओ का है जिसका प्रतिघात वह है जहाँ विपरीत अर्थ दिखाने के लिए—UN को उपसर्ग के रूप मे जोड़ा जाता है। अतः हम Uncover (उघाड़ना); Uncoil (खोलना); undress (कपड़े उतारना), Unfold, (फैलाना, खोलना); Unlock (ताला) (खोलना,) Unroll (फैलाना), untangle (सुलझाना); untie (खोलना), unwind (खोलना); तो कहते हैं, परन्तु unbreak, undry, unhang, unheat, unlift, unmelt, unopen, unpress, unspill' आदि नही कह सकते। केवल कुछ शब्दो को छोडकर जो अधिकतर अर्थ-प्राचीन है, जैसे, 'Unsay, Unthink, Unmake,), वास्तविक क्रियाओ मे—UN का विपरीतार्थक उपसर्ग के रूप मे

---

9. 'Burst' इस गूढ़ प्ररूप से सम्बन्धित है, बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाला Bust गूढ प्ररूप नहीं है।
10. एक उपान्तीय टिप्पणी में व्होर्फ Shake up का उल्लेख करता है कि यह क्रियारूप अंगों के कम्पन को द्योतित करता है। पाठक को संयोगवश ध्यान में रखना चाहिए कि इस सारे विवेचन का सम्बन्ध सकर्मक धातुओं से है, जैसा कि पेरा के अन्त में स्पष्ट कर दिया गया है।
11. (एक उपान्तीय टिप्पणी में व्होर्फ, Strike up (a band) hit it up जैसी अभिव्यक्तियों की ओर संकेत करता है। परन्तु यह उल्लेख भी करता है कि ये वास्तविक सकर्मक नहीं हैं और इन्हें मान्यता नहीं दी जाएगी। वह Sing, Shout, Cry जैसे क्रियापदो के प्रति भी ऐसा ही संकेत देता है—J.B C)

प्रयोग केन्द्राभिमुखी घेराव या परिवेष्टन तथा सलग्नता के अर्थो का सम्पाती है।[12] अग्रेज़ी भाषा मे कोई भी ऐसा अकेला शब्द नही है जो हमे इस अर्थ की सही कुन्जी दे सके, या जिसमे हम इस अर्थ को ठूस सके, अत गूढ प्ररूपीय अर्थो की प्रकृति के अनुरूप ही यह अर्थ, 'सूक्ष्म' है, 'अमूर्त' है। तथापि, यह अमूर्त विचार अत्यन्त सुनिश्चित शब्द वर्गो एवम् व्याकरणिक रूपो की सीमा निर्धारित करता है, तथा इसे अपने विचार-निर्माण के स्तर से खीचकर बाहर निकालता जाता है। इसे अर्ध-अन्त प्रज्ञापरक ढग से समझा जा सकता है। ऐसा करने के लिए हमे गूढ प्ररूप के अर्थ पर चिन्तन करने की आवश्यकता है, जैसे, कुछ अपने ही ढग की क्रियाओ के अर्थ पर जिनमे UN—जोडा जाता है, या उस मुक्त सादृश्यीकरण की प्रणाली के प्रयोग की आवश्यकता है, जो Frued तथा Jung के Free Association 'मुक्त-साहचर्य' के समान है। अत. मैं एक नये घडे हुए क्रियापद *Flummick* की कल्पना करता हू। मान लीजिए कि *Flummick* का अर्थ 'किसी चीज मे टिन का कनस्तर बाँधना है', तो यह गूढ-प्ररूप के अन्तर्गत आ जाता है, और मैं यह कह सकता हू जैसे '*He unflummicked the dog*'; परन्तु यदि इसका अर्थ 'अलग ले जाना' हो तो किसी की भी प्रवृत्ति 'जोडने या एक साथ रखने' के अर्थ मे *Unflummick* रूप बनाने की नही होगी जैसे '*He unflummicked the set of radio parts*' ऐसा रूप विचित्र तथा अस्वीकार्य प्रतीत होगा। इसी प्रकार Camouflage तथा Wangle जैसे नए शब्दो के ग्रहण करने से पहले गूढ प्ररूप का ज्ञान हमे यह भविष्यवाणी करने मे समर्थ बना देता है कि हम uncamouflage it तो कह सकेंगे पर unwagle it नही।

इस गूढ-प्ररूप से वैषम्य दिखाने के लिए मैं उस भाषायी कोटि को 'प्रकट-प्ररूप' नाम देता हू, जिसका स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष वर्ग-अर्थ होता है तथा एक रूपात्मक चिह्न या रूपिम इसके साथ होता है अर्थात् प्रकट प्ररूप 'सुप्रतिष्ठित' रूपात्मक कोटि है। UP तथा UN के अर्थ प्रकट प्ररूप है, तथा ऐसे ही विविध काल, पक्ष, वाच्य वृत्तिया तथा अन्य निर्दिष्ट रूप होते है जिनका सभी व्याकरणो मे

12. [एक उपान्तीय टिप्पणी से यह स्पष्ट है कि व्होर्फ Unstart Unbalance तथा undo जैसे शब्दो पर पाद-टिप्पणी मे विचार करना चाहता था। व्होर्फ पाठक को कुछ कृन्दतीय अथवा विशेषण रूपों के बारे में सचेत करना चाहता है, जैसे Unbroken, Unheated, Unopen इत्यादि। जिन में Un उपसर्ग एक क्रिया का विपर्यय द्योतित नहीं करता परन्तु एक विशेषण के रूप में अभिव्यक्त अवस्था के उलट का द्योतन करता है। इस तरह की सम्भावना का अनुमान लगाना काफी दिलचस्प है कि Unsay, Unthink, Unmake जैसे शब्दो के प्रचलित हो जाने का कारण ठीक यह तथ्य है जिसके अनुसार Uncover, Uncoil, Undress जैसे शब्दों द्वारा प्रतिनिधित्व गूढ़-प्ररूपो के दबाव के कारण उन्हें अपना स्थान छोड़ना पड़ता है—J.B.C.]

अध्ययन होता है। इस समय तक व्याकरण सम्बन्धी शोध का सम्बन्ध मुख्य रूप से प्रकट प्ररूपो के अध्ययन तक सीमित रहा है। एक विशेष प्रकार का व्याकरण ऐसे विवरण देता है मानो भाषायी अर्थ पूर्णतया उन्ही मे रहते हो। किसी मानवशास्त्री को ऐसे व्याकरण से ऐसे ही सन्तुष्ट नही होना चाहिए जैसे उसे उस मानव-विज्ञान से सन्तुष्टि नही होती जो केवल सकारात्मक व्यवहारो का तो वर्णन देता है परन्तु निषेधो तथा परिवर्तनो की अभिरचना का विवरण नही देता। यह भी दिखाया जा सकता है, कि कम से कम कुछ भाषाओ मे भाषायी अर्थ प्रकटप्ररूपो तथा गूढप्ररूपो के पारस्परिक प्रभावो के परिणामस्वरूप प्रकट होता है, केवल प्रकट प्ररूपो द्वारा ही नही होता।

अतः होपी मे पक्ष तथा काल रूपो का प्रयोग गूढप्ररूपों द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। उदाहरणार्थ, वे किसी क्रिया या अवस्था के आरम्भ करने की अभि-व्यक्ति के ढग को नियन्त्रित करते हैं, जैसे अंग्रेजी मे 'begins to do' (करना आरम्भ करता है) या 'begins to be' (होना आरम्भ होता है।) पहले, एक भिन्न प्रकार के रूप (प्रकट-प्ररूप) का प्रयोग किया जाता है, तथा वह प्रयोग क्रिया के कर्तृवाची अथवा अकर्तृवाची (या तो कर्मवाच्य या अगति वाच्य) पर निर्भर करता है, और यह 'गूढप्ररूपी' का वैशिष्ट्य है, क्योकि होपी व्याकरण की रूपा-त्मक सामग्री 'कर्तृ' तथा 'अकर्तृ' का वैषम्य स्थापित नही करती। इसके अति-रिक्त होपी भाषा (किसी के) 'अन्दर', 'पर', 'ऊपर', होने को, या किसी अन्य स्पेसीय सम्बन्ध मे होने को, कर्तृ (वाच्य) के वर्ग मे रखती है, परन्तु 'लाल' 'लम्बा' 'छोटा', 'सुन्दर', 'घूमा हुआ', (तीर आदि का) निशाना बने हुए, को अकर्तृ-वर्ग के रूप मे रखती है। इस सदर्भ मे 'प्रेरणार्थक' तथा 'अप्रेरणार्थक' वास्तव मे, कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य से अधिक अच्छे शब्द है। और, यदि क्रिया कर्तृवाचक है तो 'आरम्भ करने' का प्रकटप्ररूप इस बात पर निर्भर करता है कि तीन गूढ़ प्ररूपो मे से कौन-सा अपेक्षित है। अधिकतर क्रियाओ के साथ या तो हम आरम्भ-माण पक्ष का प्रयोग कर सकते है या भविष्य काल का। यहाँ 'विश्लेषण', यह सकेत देता हुआ प्रतीत होता है कि होपी भाषा इन क्रियाओ के कर्ता को एक गति-शील सामञ्जस्य द्वारा इन क्रियाओ मे तथा इनके द्वारा कार्य करता हुआ मानती है। कर्ता अपने-आप को उत्तरोत्तर कार्य मे समञ्जित करता है, तथा सारे ही कार्य-व्यापार मे इस समञ्जन को बनाए रखता है, या तो प्रभाव के विकास के लिए, या उसके स्थिरीकरण अथवा उस कार्य की निरन्तरता के लिए। होपी भाषा[13] इसमे सोना, मरना, हँसना, खाना तथा बहुत से आंगिक कार्यो तथा बहुत से परि-वर्तक व्यापारो, जैसे काटना, झुकना, ढकना, रखना, तथा हज़ारो दूसरो को भी

---

13. उपान्तीय टिप्पणी में व्होर्फ लिखता है कि "यह पहले-पहल विचित्र भले ही लगे, परन्तु प्रकाश डालने वाला है"।]

सम्मिलित करती है। दूसरा गूढ़ प्ररूप प्रारम्भ अभिव्यक्त करने के लिए केवल भविष्य काल का प्रयोग करता है तथा सरल रेखा, समान गति की क्रियाओं, दौड़ना, भागना, जाना, आना, किसी स्थान मे, या स्थान पर, या अन्य स्पेसीय सम्बन्ध मे होना, खोलना, बन्द करना, तथा कुछ अन्य क्रियाओं को भी सम्मिलित करता है। विश्लेषण से लक्षित होता है कि यहाँ पर कर्ता पूर्ण रूप से एक नयी पदवी को तत्क्षण प्राप्त करते हुए के रूप मे वर्गबद्ध किया गया है, किसी प्रक्रिया मे या प्रक्रिया के अन्दर से गतिशील होकर कार्य करते हुए के रूप मे नही। तीसरा गूढ प्ररूप प्रारम्भ को प्रक्षेपी पक्ष के माध्यम से व्यक्त करता है जो एक प्रकट प्ररूप है तथा अन्य स्थानो पर प्रयुक्त होने पर जिसका अर्थ है—'अग्रसरी क्रिया द्वारा करता है।' इस गूढ-प्ररूप का अर्थ होता है कि कर्ता किसी प्रभाव के क्षेत्र मे पकडा गया है तथा समन्वित हो गया है, या मानो उसके द्वारा प्रवाहित कर लिया गया है, तथा इसमे गुरुत्वाकर्षणात्मक एवम् गतिशील-जड़तापरक प्रपच सम्मिलित हैं, जैसे गिरना, लुढकना, बिखरना, कूदना, चक्कर काटना आदि, तथा चाहे हमें अजीब लगे, परन्तु इसमे बाहर जाना, अन्दर आना भी सम्मिलित है। होपी भाषा-विज्ञान के तर्कानुसार कोई व्यक्ति घर मे प्रवेश करते समय या घर से बाहर जाते समय अपने को फेंकता है या अपने-आपको एक नए प्रभाव के हाथो-सौपता है, जैसे कि कोई 'गिरता हुआ' या 'कूदता हुआ' सौंपता है।

उस मानवशास्त्री के लिए, जिसने बहुत अधिक सीमा तक अपने मन मे यह धारणा बना ली है कि भाषा-विज्ञान मानव-विज्ञान के कारखाने के किसी एकान्त कोने मे एक अत्यधिक विशेषीकृत तथा जटिल रूप से तकनीकी 'कोष्ठ' है, यह बात स्पष्ट समझने की आवश्यकता है कि भाषा-विज्ञान तत्वत. अर्थ की खोज है। किसी भी बाह्य व्यक्ति को, भाषा-विज्ञान, ध्वनि प्रभेदो की बाल की खाल निकालने मे अत्यधिक व्यस्त, ध्वन्यात्मक व्यायाम करता हुआ, तथा एक जटिल व्याकरण लिखता हुआ प्रतीत होता है जिसे केवल वैयाकारणिक ही पढ सकते हैं। परन्तु सच्ची बात यह है कि इसका वास्तविक ध्येय भाषा के गहन अन्धकार को प्रकाशित करना है, तथा उसके द्वारा अधिकांश विचार को, संस्कृति को, या किसी समाज के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को प्रकाशित करना है। उस, 'किसी स्वर्णिम' पदार्थ के प्रकाश से जिसे मैंने 'अर्थ के रूपान्तरकारी सिद्धान्त' के नाम से पुकारा जाता सुना है। जैसा कि मैंने दिखाने का भी प्रयत्न किया है कि यह 'भाषा को बोलना सीखने तथा समझने' आदि के उन ध्येयो मे कही बढ कर है, जिन्हे एक व्यावहारिक भाषा-शिक्षक ध्येय मानता है। संस्कृति के अनुसन्धाता को, भाषा-विज्ञान का आदर्श, मनोविज्ञान की समस्याओ के प्रति उस स्वत. शोधप्रणाली के रूप मे अपनाना चाहिए जिन्हे वह अब तक एक ऐसी दूरबीन मानने मे संकोच करता रहा हो, जिसे यदि सही सकेन्द्रित किया जाए तो उसमे से उन सभी शक्तियो के वास्तविक रूप दिखाई देंगे जिन्हें वह अब तक अदृश्य तथा अशरीरी-विचार का अबोधगम्य शून्य मानता रहा है।

II

मनोवैज्ञानिक अन्तर्धाराओं का बोध, भाषायी ज्ञान पर विजय-प्राप्ति के निमित्त पहुंचने वाली अन्तिम वस्तु है, दोनों मे—अर्थात् 'व्यक्ति' मे तथा 'इतिहास' मे। किसी विदेशी को अपनी भाषा पढ़ाने के प्रयत्नों का परिणाम कुछ प्रकट रूपात्मक अभिरचनाओ के बोध के रूप मे होता है : जसे रूपावली तथा रूपरचनाकृत प्रकृतियां। प्राचीनतम ज्ञात व्याकरण, इस प्रकार की कीलाक्षर शब्द-सूचियां है, जो एक समानार्थकता प्रस्तुत करती है, जैसे सुमेरी तथा सामी अक्कादी के बीच। इससे अगला कदम उस समय तक नही रखा गया, जब तक कि भारत तथा ग्रीक दोनो मे, दर्शन ने भाषायी अभिरचनाओ तथा तर्कणा मे सम्बध का पता नही लगा लिया। इसका परिणाम दर्शनशास्त्र के लिए तर्कशास्त्र के रूप मे हुआ, तथा व्याकरण के लिए प्राचीन भारोपीय भाषाओ की अधिक उत्कृष्ट व्याकरणिक कोटियो के रूप मे हुआ। सामी ससार मे व्याकरण मुख्यत. रूपात्मक रहा, श्रेण्या हिब्रू तथा अरबी व्याकरणों ने, जो अधिकतर ऐसी रूपावली से बने हुए थे जिन्हे केवल कूट नामो द्वारा ही जाना गया था, इन भाषायी वर्गो के अर्थो मे प्रवेश करना तो अलग रहा इनके वैशिष्ट्य बताने की भी चेष्टा नही की। लैटिन व्याकरण भी अपनी आदि शब्दावली सहित तुलना की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक था। उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ में योरोपीय विद्वानो द्वारा, प्राचीन हिन्दू व्याकरण की खोज ने, इन विद्वानो को उस व्याकरण की रूपात्मक पूर्णता से बहुत प्रभावित किया। परन्तु इसने कुछ मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओ को भी प्रकाशित किया, जैसे शब्दो की समास-रचना-विधि के अन्दर भिन्न अप्रकट विचारो की मान्यता, तथा तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि इत्यादि के रूप मे समासों का वर्गीकरण।[14]

उन्नीसवी सदी के बड़े से बड़े विद्वान भी रूपात्मक तथा प्रकट सरचनाओ से अधिक परे नही जा सके, सिवाय इसके कि वे श्रेण्य व्याकरण तथा दार्शनिक धारणाओं पर सवार होकर केवल उन्ही भाषाओं की अवधि तक यात्रा करते रहे जिनका वे अध्ययन करते थे। इस कथन का महान अपवाद भी है,—वह उन आश्चर्यजनक प्रतिभाशाली व्यक्तियो में से एक है, जो अपने समकालीन विद्वानो को विस्मय-विमूढ

---

14. तत्पुरुष समास वे है जिनमें एक पद दूसरे पद की विशेषता प्रकट करता हो जैसे अंग्रेजी के Self-made, foot soldier आदि; द्वन्द्व समास वे है, जिनमें पद एक दूसरे के साथ सामानाधिकरण में हो, अंग्रेजी में निकटतम उदाहरण के रूप में bread and butter जैसे उपवाक्य है जिन्हें संस्कृत में एक ही समस्त पद में परिणत किया जा सकता है। बहुव्रीहि समास विशेषणात्मक समास है जिसका सम्बन्धवाचक अर्थ होता है और एक संस्कृत के शब्द द्वारा दृष्टान्त दिया जा सकता है, जिसका अर्थ है सूर्य की कान्ति रखने वाला 'सूर्यकान्त'। देखिए—William Dwight whitney, Sanskrit Grammar (Harvard University Press, 1931, chapter XVII, J.B.C.]

करते हैं तथा अपना कोई उत्तराधिकारी नही छोड़ते । इन विचारों, जैसे घनिष्ठता व्यवस्था, अप्रकट कोटिया, गूढ़ प्ररूप मनोभाषायी अभिरचन, तथा भाषा, सस्कृति का अभिन्न अग है, आदि का प्रवर्त्तक, जहाँ तक मुझे पता है, उन्नीसवी शती का एक फ्रान्सीसी वैयाकरण Antoine Fabre d' Olivet (1768-1825) है,[15] जिसने सामी भाषाओं पर, विशेष रूप से हिब्रू पर, अनुसन्धान कार्य किया, यद्यपि उसके कार्य ने Mendel के भाषोत्पत्ति-मूलक कार्य की तरह अपने काल के विचारो को बिल्कुल प्रभावित नही किया । दुर्भाग्यवश, यह कार्य उस समय भी दुर्बोध था, और अब भी है । इसका रचयिता रहस्यवादी तथा धार्मिक तत्वमीमासक था जिसने अपने इस स्वभाव को किसी भी काल के सर्वश्रेष्ठो मे से एक, तथा शक्तिशाली भाषायी प्रतिभा के कार्य के साथ मिश्रित कर दिया । इसके परिणाम-स्वरूप उसने Genesis का रहस्यवादी तथा गूढ-ज्ञानवादी अनुवाद प्रस्तुत किया, या यू कहिये, कि यह एक औपनिषदिक व्याख्या थी, जो ब्रह्माण्ड का एक स्तम्भित करने वाला दृश्य था, तथा वह दृश्य भयकर सजीव चित्र-लिपियों से भरा हुआ था। इस दृश्य ने शीघ्र ही अपने-आप को आलोचना तथा परित्याग का विषय बना लिया । रूढिवादियो द्वारा किए गए उसके इस परित्याग से वह उग्र वामपक्ष की प्रशसा भी प्राप्त न कर सका, क्योकि उसके बाइबल सम्बन्धी विचार एक साथ इतने अधिक रूढिभजक तथा लोकोत्तर थे कि वे किसी भी धर्मग्रन्थ-भाष्य-पद्धति को सन्तुष्ट नही कर सके। परन्तु Fabre d' Olivet के कार्य का सुनिश्चित भाषावैज्ञानिक कार्य जो 1815-16 मे प्रकाशित होने वाले *La langue he'braique Restituee* मे मिलता है,[16] यदि Genesis सम्बन्धित अलौकिक उपनिषद् से अलग कर के देखा जाए तो आज भी शुद्ध भाषायी मापदण्ड पर आधारित पाया जायेगा, तथा वह एक महान मनोवैज्ञानिक विलक्षणता एव विचारो से युक्त मिलेगा जो उसके काल से बहुत अग्रिम माने जा

---

15. (मैंने वे तिथियाँ दे दी हैं जिन्हें व्होर्फ देना चाहता है वे *Grand Dictionnaire Universal du xixe Siecle* के अनुसार है। ध्यान रखिये कि उपनाम Fabre d' Olivet है, d' Olivet नहीं—J.B.C.]

16. [मैंने वे तिथियाँ अपनी ओर से दी हैं जिनके लिए व्होर्फ ने पाण्डुलिपि में रिक्त स्थान छोड़ दिया था । इस दुर्लभ ग्रन्थ का पूरा शीर्षक *La langue he'braique restitue'e, et le ve'ritable sens des mots he'breux re'tabliet prouve' par leur analyse radicale* है । इसकी प्रतियाँ Library of Congress Cornell University Library में तथा कतिपय अन्य अमरीकन पुस्तकालयों में मिल सकती हैं । यह भी सम्भावना है कि व्होर्फ ने इस ग्रन्थ का परिचय Nayan Louise Redfield द्वारा किए गए इसके अनुवाद *The hebraic tongue restored* (New York and London, G. P, Putnams Sons 1921). से प्राप्त किया हो J.B.C. ।]

सकते हैं। इस सदर्भ मे यह भी कहना उचित होगा कि यद्यपि वह कार्य Jacob Boehme, या William Blake की कोटि तक रहस्यवादी है, तथापि Fabre d' Olivet उस गुप्त विद्या तथा सख्या सगुनौती की वाजीगरी से मुक्त था जिससे हिब्रू की प्राचीन यहूदी परम्परा लदी हुई थी। और, जबकि उसने व्याकरण की समस्त रूढ़ीवादी Hiphil- Hophal धारणा को परे फेंक दिया, उसने साथ-साथ लैटिन तथा ग्रीक के अभिरचनो को हिब्रू पर लादने से भी इन्कार कर दिया। उसकी हिब्रू पूरी तरह अपने कदमो पर ऐसे खड़ी है जैसे वोअस की चिनूक भाषा। उसने क्रिया-पदावली का मनो-भाषायी आधार पर विवरण देने की पद्धति को मान्यता दी, अलग-अलग उपसर्ग तथा प्रत्ययो पर उनके कार्य एव अर्थ की दृष्टि से विचार किया, स्वर अभिरचनो की अर्थमीमासा, तथा स्वरों की अर्थगत रचना का विवेचन किया, तथा यह प्रदर्शित किया कि कितनी हिब्रू प्रवृत्तियाँ अर्थयुक्त अगो मे खडित की जा सकती है जैसे अग्रेजी के शब्द flesh, flicker, clash click, clack, crack, crash, lick, lash आदि खण्डित किए जा सकते है। हिब्रू लेखन-पद्धति के अक्षरो की वास्तविक ध्वन्यात्मक तत्वों के साथ एकरूपता को अस्वीकार करते हुए तथा यह देखते हुए कि ये तत्व केवल ध्वनि नही है अपितु रूढिवद्ध, सहिता वद्ध, तथा अभिरचनावद्ध अर्थपरक ध्वनिया हैं, वह शब्दावली के साथ संघर्ष करते हुए परन्तु भाषायी तथ्यो मे वास्तविक अन्तर्दृष्टि का परिचय देते हुए Phoneme स्वनिम की धारणा तक पहुच गया जिसे उसने 'Sign' (चिन्ह) या 'Vocal Sign' (मौखिक चिन्ह) नाम दिया। उसने शब्दो तथा चिन्हों के वीच जटिल घनिष्ठता के तथ्य पर वल दिया। इस घनिष्ठता के भाग के रूप मे 'फोनीम' निश्चित अर्थगत कार्य ग्रहण कर सकती है। अग्रेजी मे ð स्वनिम (*th* का घोषरूप) अग्रेजी के गूढ प्ररूपी निश्चय-वाचक निपातो आदि मे आती है (The This There Then आदि)। अत: *th* ध्वनि के घोष रूप को नए तथा काल्पनिक शब्दो मे स्वीकार करने के विरुद्ध मानसिक दवाव उपस्थित रहता है जैसे *thug*, *thag*, *thob thuzzle* आदि मे निश्चयवाचक अर्थ न होने के कारण। यदि किसी नए पृष्ठ पर हमे एक नया शब्द (जैसे *thob*) मिल जाए तो हम सहज-प्रवृत्तिवश उसे अघोष ध्वनि प्रदान करेंगे जो think शब्द मे *th* को प्राप्त है। परन्तु यह कोई 'सहज-प्रवृत्ति' नही। यह, पुनः वही हमारा पुराना मित्र भाषाई घनिष्ठता है। किसी शब्द को आप निश्चयवाचक अर्थ प्रदान कीजिए, उदाहरणार्थ *Thag* को 'वाड के ऊपर' के समान मानिए और हम तुरन्त There वाली ð घोष ध्वनि को यहाँ प्रतिस्थापित कर देंगे। Fabre d' Olivet को ऐसी सभी वातो के विषय में पता था।

इसके अतिरिक्त, *Fabre d' Olivet* केवल व्याकरणिक ढग से ही नही अपितु मानवशास्त्रीय ढग से सोचता था। उसकी दृष्टि मे भाषा एक ऐसी 'क्षमता' नही है जो केवल अपने ही स्थान पर उदात्त है, अपितु एक ऐसी चीज़ है, जिसे उस मानविक व्यापार तथा सस्कृति के प्रकाश मे समझा जाना चाहिए, जिसका यह एक

भाग है। यह विशेषीकृत भाग भले ही हो परन्तु इसके सिद्धान्त शेष सभी से भिन्न नही हैं। मुख से उच्चरित चिह्न (Phoneme) एक अत्यधिक विशेषीकृत चेष्टा है अथवा प्रतीकात्मक कार्य है, और भाषा एक सम्पूर्ण कायिक व्यापार का विकास है, जो प्रतीकात्मक होकर, फिर, अपनी प्रतीकात्मकता को अधिकाधिक मौखिक माध्यम की ओर मोड़ती रहती है—आधुनिक भाषा मे इस प्रकार अभिव्यक्त की जाने वाली उसकी ऐसी ही शिक्षा है।

इसके पश्चात हमे आयरलैंड के James Byrne (1820–97) तक पहुचने से पहले, चिन्तन का भाषायी माध्यम से विवेचन करने वाला कोई भी महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व दृष्टिगोचर नही होता। उसका अध्ययन ससार भर की ज्ञात भाषाओं के व्याकरणिक सरचना सम्बन्धी सर्वेक्षण के अत्यधिक मूल्यवान विचार पर आधारित था। उसका 'महान' ग्रन्थ,—कम-से-कम, 'धारणा मे महान' ग्रन्थ कहलाने योग्य है—यद्यपि इसे दो खण्डो मे प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से, सम्भवतः, महान नही कहा जा सकता, जिसे उसने *General Principles of Structure of Language* नाम दिया, तथा जो 1885 मे प्रकाशित हुआ।[17] इसका उल्लेखनीय वैशिष्ट्य था, 'होटेण्टोट' से लेकर 'चीनी' तक भूमण्डल पर मिलने वाली सभी भाषाओं की व्याकरणिक रूपरेखाओं का सक्षिप्त रूप में प्रस्तुतीकरण। अमरीका से बाहर के लगभग सभी भाषायी परिवारो का तथा अमरीका की बहुत सी भाषाओं को उसके ग्रन्थ मे प्रतिनिधित्व प्राप्त है। इस सर्वेक्षण पर Byrne ने अपना मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त स्थापित किया है; और मुझे तो कम-से-कम यह महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है कि Byrne ने भाषा-सरचना के आधार पर उन दो मौलिक मनोवैज्ञानिक प्रकार के वैषम्यो का पता लगाया, बहुत दिन बाद, जिन्हे युग ने मनोरोग-विज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया तथा उन्हे extraversion (बहिर्मुखता) एव introversion (अन्तर्मुखता) के प्रकार नाम दिया। युंग ने यह भी दिखाया कि किस प्रकार सारे इतिहास मे इन दो प्रकारो के विरोध के परिणाम-स्वरूप उत्तरोत्तर दर्शन तथा धर्म के क्षेत्र मे मौलिक विवाद तथा विच्छेदकारी सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। Byrne ने स्वतन्त्र रूप से पता लगाया, या वह समझता था कि उसने पता लगाया—कि भाषायी सरचना तथा दो प्रकार की मनोवृत्तियो मे पारस्परिक सम्बन्ध है—एक तेज प्रतिक्रिया वाली, तेजी से चिन्तन करने वाली तथा चचल मनोवृत्ति, दूसरी मन्द प्रतिक्रिया वाली, मन्दगति से चिंतन करने वाली परन्तु अधिक गहन एव शान्त (मनोवृत्ति)। मन्दगति से चिन्तन करने वाली मनोवृत्ति के विषय मे, जो उसकी अन्तर्मुखी वृत्ति का सकेत देती है, युग का मत था कि यह उन सश्लिष्ट भाषाओं के साथ विद्यमान रहती है जिनमे प्रकट कोटि की जटिल रूप-प्रक्रिया होती है, तथा अत्यधिक

17. [तिथियो की आपूर्ति मैंने की है, Byrne के जीवनकाल की तिथि भी मैंने ही दी है। यहाँ पर तथा इससे आगे व्होर्फ अपनी पाण्डुलिपि में Thomas Byrne नाम लिखता है परन्तु ऐसा स्मृति-दोष के कारण हुआ होगा—JBC]

व्युत्पत्ति, तथा शब्द-रचना होती है, और उनकी पराकाष्ठा बहुसंश्लेषणात्मक भाषाओं के रूप मे मिलती है। उसके द्वारा प्रतिपादित तेज चिन्तन वाली (बहिर्मुखी) मनोवृत्ति, कुल मिलाकर, सरल रूपप्रक्रिया, संश्लेषण के अभाव, विश्लेषणात्मक या चरम-सीमा के रूप में अयोगात्मक भाषाओ के साथ विद्यमान रहती है।

परन्तु, जबकि मै इस प्रकार के निष्कर्ष की सम्भावना के प्रति सहानुभूति रखता हूं, जो निस्सन्देह एक महान उपलब्धि हो सकती है, तथा Byrne द्वारा युग के सिद्धान्त के पूर्वानुमान से प्रभावित भी हू, परन्तु मुझे Byrne का सामान्यमत युक्तियुक्त एवं प्रत्यायक इसलिए प्रतीत नही हुआ क्योकि मैं अच्छी तरह अनुमान लगा सकता हू कि Byrne नितान्त अपर्याप्त सामग्री से अपना काम चला रहा था। इतना अवश्य है कि यह कार्य अपने ही ढग के बौद्धिक स्तर वाले मनुष्य के ज्ञान के लिए सबसे बडे महत्त्व की चीज है, विशेषत भविष्य के लिए, क्योकि Byrne द्वारा शीघ्रता एवं असावधानीपूर्वक किए गए उस वास्तविक महान कार्य का सम्पादन, यथासम्भव, सुचारु रूप से किया जा सकता है। ऐसा करने के लिए Byrne द्वारा प्रयुक्त की गई भाषाओ के अतिरिक्त, न केवल, बहुत सी अन्य भाषाओ का, विशेषत. अमरीकी भाषाओं का सर्वेक्षण अपेक्षित है, अपितु, प्रत्येक भाषा के उसके अपने अभिरचन तथा वर्गों पर आधारित, वैज्ञानिक रूप से बनाए गए, ऐसे व्याकरण की भी आवश्यकता है जो व्याकरणिक तर्क तथा सामान्य पूर्वानुमानो एव पूर्वाग्रहो से यथासम्भव मुक्त हो। Byrne ने अपनी सामग्री पुराने ढर्रे के ऐसे व्याकरणो से प्राप्त की जो औपचारिक तथा श्रेण्य ढग के थे। ये व्याकरण, किसी भी अवसर पर, पराई भाषा की अभिरचनाओ तथा विचारो की फौज की फौज किसी बेचारी बदकिस्मत भाषा पर लाद सकते है। न ही तो इन व्याकरणो मे से कोई, और न स्वय Byrne ही, किसी भाषा का अपने ही ढग का ऐसा अद्वितीय विवरण दे सका जैसा कि Fabre D' Olivet ने दिया था; वास्तव में वह योग्यता मर चुकी थी। परन्तु जब तक वह योग्यता पूर्णतया विकसित वैज्ञानिक तकनीक के रूप में पुन: जीवित नही की जाती, तथा इसका प्रयोग दूसरे विश्व-सर्वेक्षण तथा तुलना के लिए नही किया जाता, तब तक मनुष्य अपने बौद्धिक जीवन के मूलाधार से अनभिज्ञ रहेगा। वह भूमण्डलीय स्तर पर 'मानव-विचार" से सम्बन्धित यह विवेचन करने मे असमर्थ रहेगा कि मानव जाति के विषय मे उसका स्वरूप क्या है।

बोअस द्वारा अमरीकी इण्डियन-भाषाओ पर किए गए आक्षेपो के काल मे, तथा उसके बाद भी, वह योग्यता पुन: जीवित होकर रहने लगी; विशेष रूप से उसकी पुस्तिका[18] की उचित रूप से प्रख्यात भूमिका के अन्तर्गत, सिद्धातो के आदर्श

18. Boas, Franz (ed): *Hand book of Indian American Languages* (Parts 1 and 2), Washington, D. C. Government Printing Office, 1911–22 (Bull 40, Bur Amer. Ethnol. Sithsonian Institution,—JBC

तथा प्रणालियो के विवरण के बल पर उस योग्यता मे एक नए प्राण का संचार हो गया। बोअस के साथ, यह आधुनिक वैज्ञानिक रूप मे, तथा स्वीकार्य विज्ञान-सम्प्रदाय के रूप मे, प्रकट इस तरह नही हुई, जैसे कि पहले रहस्यात्मकता लिए हुए प्रचुर उत्पादक-कल्पना के रूप मे प्रकट हुई थी। बोअस ने इतिहास मे दूसरी बार, परन्तु, वैज्ञानिक ढग मे पहली बार, यह दिखाया कि 'भाषा', अपने ही अद्वितीय ढग से, तथा 'श्रेण्य-परम्परा' की कोटियो को बलपूर्वक लादे बिना, किस प्रकार विश्लेषित की जा सकती है। इस नए दृष्टिकोण के तकनीक का पर्याप्त विकास रुक-रुक कर होना था। जब बोअस की देखरेख मे अमरीकी भाषाओ ने अपनी विचार-कोटियो की अद्वितीय सूक्ष्मताए तथा जटिलताए प्रकट करनी आरम्भ की, तो उस समय तक स्वनिमिक कलन (Phonemic Calculus) अभी पैदा भी नही हुआ था। अमरीकी क्षेत्रीय भाषाविज्ञान, Fabre की तरह कल्पनात्मक अन्तर्ज्ञान के शानदार बुद्धिकौशल मे स्वनिम 'रूपस्वनिम' सम्बन्धी अन्तर्दृष्टि प्राप्त नही कर सका। पहले उसे आधुनिक भाषाओ के क्षेत्र मे कार्य करने वाले स्वनविज्ञान-विशेषज्ञों द्वारा विकसित की जाने वाली इन धारणाओ की उसे प्रतीक्षा करनी पडी, तथा पहले-पहल उसमे मनोवैज्ञानिक विचक्षणता का भी अभाव था।

रगमंच पर सपीर के प्रकट होते ही, नया युग दूसरे अक मे प्रविष्ट हुआ—एक वास्तविक आधुनिक भाषायी दृष्टिकोण के क्षेत्र मे—विशेषत. उस समय जबकि 1921 मे उसकी *Language*[19] नामक कृति प्रकाशित हुई। चिन्तन के प्रति भाषायी उपगम के प्रयोग का आरम्भ करने तथा उसे वैज्ञानिक प्रामाणिकता देने तथा इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान तथा मानव-विज्ञान के लिए भाषा-विज्ञान का महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए सपीर ने किसी भी अन्य विद्वान की तुलना मे अधिक कार्य किया है। इस दृष्टिकोण के एक बार आरम्भ हो जाने पर कि 'भाषाविज्ञान चिन्तन के सिद्धान्त के लिए, तथा अन्ततोगत्वा सभी मानव-सम्बन्धी विज्ञानो के विश्लेषण के लिए आधारभूत है, इस उदीयमान अनुभूति तथा विकासशील विचार के प्रत्येक सहयोगी का नामोल्लेख करना एक कठिन काम है। दिलचस्पी रखने वाले पाठकों को, आंशिक एव अत्यन्त अपूर्ण सलग्न ग्रन्थ-सूची देखने का सुझाव दिया जाता है।

III

चिन्तन विषयक विवेचन, जो प्राचीन समाज पर लागू होता है, मानवशास्त्र के लिए दो प्रकार से महत्त्वपूर्ण है। पहले, उसी प्राचीन समाज मे सास्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक-भाषायी अन्तर्दृष्टियो की प्राप्ति के लिए, विशेषत. यदि एक ही अनुभवाता द्वारा कार्य किया गया हो तो एक दूसरे पर बहुत ही लाभप्रद प्रभाव पडने की आसानी से आशा की जा सकती है। हमारे पास सपीर की तथा अन्य विद्वानो की जानकारी

19. तिथि की आवृत्ति मैने की है। पूरा संकेत इस प्रकार है : Sapir. Edward. *Language · An Introduction to the Study of Speech* New York: Harcourt Brace Co., 1921, VII 238 pp —JBC—

देने वाली शिक्षा तथा ऐसे प्रमाण है जो सिद्ध करते है कि यह एक सत्य है। भाषा-विज्ञान का मौलिक तत्व 'अर्थ की खोज' है, तथा जैसे-जैसे विज्ञान इसकी प्रणालियो को सुधारता जाता है, तो इस खोज के कारण यह अनिवार्य रूप से अधिक मनोवैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक होता जाता है, जबकि वह 'कथन' की लगभग गणितीय सुनिश्चितता को भी बनाए रखता है, जिसे वह तथ्यो के भाषायी क्षेत्र की सुव्यवस्थित प्रकृति से प्राप्त करता है।

आइए, हम यह मान लेते हैं कि एक नृकुल-विज्ञानी इस बात का पता लगाता है कि होपी लोग अपनी वर्षा-सम्बन्धी प्रार्थनाओ में बादल के विषय मे इस प्रकार बात करते हैं मानो वे सजीव हों। वह यह जानना चाहेगा कि यह कोई रूपक है, अथवा कोई विशेष धार्मिक या (अनुष्ठान सम्बन्धी) औपचारिक अलकार है, या यह उनका बादल के विषय में सोचने का साधारण एवं सामान्य ढंग है। यह ऐसी समस्या है जिसका अत्यधिक अर्थयुक्त उत्तर भाषा दे सकती है, और हम तुरन्त ही यह देखने के लिए मुड पड़ते हैं कि क्या इस भाषा मे ऐसी लिंग व्यवस्था है जो निर्जीव को सजीव से भिन्न रूप में प्रदर्शित करती है, और यदि ऐसा है तो बादल को किस श्रेणी मे रखती है। हमे पता चलता है कि होपी मे लिंग है ही नही। परम्परा-पद्धति के, बोअस से पूर्वकालीन, व्याकरण इस स्थान पर आकर रुक जाएगें, और यह समझ लेगे कि वे एक उत्तर दे चुके हैं। परन्तु सही उत्तर उसी व्याकरण द्वारा दिया जा सकता है जो अप्रकट तथा प्रकट सरचना एवं अर्थ का विश्लेषण करता है क्योंकि होपी भाषा-सज्ञाओ की सजीव श्रेणी को गूढ-प्ररूपो और केवल गूढ-प्ररूपो के रूप में भिन्न मानती है। निर्णायक प्रतिघात बहुवचन बनाते समय उपस्थित होता है। जब बाँसुरी समाज (Flute Society) के सदस्य, जिन्हे Flutes 'बाँसुरियाँ' भी कहा जाता है, तो इस (अप्रकट-रूप से) निर्जीव सज्ञा (बासुरी) का बहुवचन सजीवन सज्ञाओ के बहुवचन की तरह बनाया जाता है। परन्तु ʔo.'maw 'बादल' शब्द सदैव का बहुवचन, सदैव सजीव सज्ञाओ की भाति बनाया जाता है, इसका कोई अन्य बहुवचन नही होता, यह निश्चित रूप से 'निर्जीवता' के गूढ़-प्ररूप से सम्बन्ध रखता है। अत: इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है कि क्या बादलों की सजीवता एक अलकार है, या भाषा की औपचारिकता है; या इस बात का उत्तर मिल जाता है कि यह किसी विचार की गहरी एवं सूक्ष्म रूप से व्यापक अन्तर्धारा से विकसित होता है; और कुछ नही तो कम-से-कम एक नए अर्थ की बाढ तो आ ही जाती है।

अत: तथाकथित प्राचीन मानव तथा आधुनिक मानव की मनोवृत्तियो के सभी नही तो कम से कम कुछ भेदों का—चाहे वे वास्तविक हो अथवा काल्पनिक—विश्लेषण करने मे भाषा को समर्थ होना चाहिए। क्या प्राचीन मानव-समाज आधुनिक सभ्य मानव की मनोवृत्ति से भिन्न एक ऐसी इकाई श्रेणी बनाते हैं जो उनकी और इसकी सभ्यता की भिन्नताओ से अतिरिक्त है, तथा जिसका सकेत *Levy*

Bruhl की Participation Mystique[20] की धारणा मे मिलता है, तथा 'आदिम-मानव' की 'जवोधशैशव' के साथ समानता मे मिलता है, जिसका प्रयोग Freud और युग ने किया है, या (पुन. सामान्य सस्कृति से अलग) क्या सभ्य आधुनिक मानव मनोवृत्ति का एक इकाई वर्ग है क्योकि सभी आधुनिक सभ्य भारोपीय भाषाओं मे महान समानताए है, जबकि इसके विपरीत भाषा-सरचना के सम्पन्न वैभिन्य को प्रतिबिम्बित करने वाली मनोवृत्ति की बहुत सी भिन्नताए हैं। यह महान मनोवैज्ञानिक जगत-व्यापक प्रश्नो मे से केवल एक है जो भाषाविज्ञान के क्षेत्र मे आता है, तथा एक निष्पक्ष एव सकारात्मक सुनिश्चित उत्तर की अपेक्षा करता है, जिसका केवल भाषा-वैज्ञानिक अनुसधान कर सकता है। हम इस प्रकार की मनोवृत्ति के विषय मे, Participation Mystique के निर्दिष्ट अर्थ मे सोचने के अभ्यस्त होने के कारण उसे अपनी चिन्तन की मनोवृत्ति से कम, तथा कम तर्कसगत मानते है। तथापि, बहुत सी अमरीकी इण्डियन तथा अफरीकी भाषाए सुचारु रूप मे गठित, सुन्दर रूप मे तर्कसंगत कारणता, क्रियाशीलता, परिणाम, गतिशील तथा ऊर्जा-गुण, अनुभूति की प्रत्यक्षता, इत्यादि से सम्बन्धित प्रभेदो के प्राचुर्य मे युक्त है,—उनमे चिन्तन-कार्य के सभी विषय है, निस्सन्देह, तर्क-सगति के सार है। इस विषय मे वे योरोपीय भाषाओ से बहुत आगे बढी हुई है।[21] सबसे

20. [Levy–Bruhl. Lucien. Les *Fonctions mentales dones les societies inferieures*, Paris 1912. Participation Mystique विषय के साथ विशेष प्रकार के मनोवैज्ञानिक सम्बन्धो का निर्देश करता है, जिनमें व्यक्ति अपने तथा विषय के बीच पार्थक्य को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता—JBC]

21. उदाहरणार्थ, मेरे लेख 'The Punctual and Segmentaaive aspects of verbs in Hopi' में आवृत्तिपरक तथा स्पन्दनात्मक तथ्यों का विवेचन देखिए, या [Lacuna (अन्तराल)]के उदाहरण Watkins' Chichewa में देखिए।

[सम्भवतः व्होर्फ क्रियापदीय व्यवस्था का निर्देश करना चाहता था, जो कार्यों के प्रेरणार्थक पक्षो का बहुत सूक्ष्म विवेचन करती है। उदाहरणार्थ, उसमे कई भूतकाल हैं जिनका प्रयोग न केवल संकेतित भूतकाल (पिछली रात से, या रात से पहले) की परोक्षता पर निर्भर करता है, अपितु इस बात पर भी, कि क्या कार्य वर्तमान को प्रभावित करना जारी रखता है या नहीं। उसमे सात 'वाच्य' भी हैं जो उद्देश्य, क्रिया तथा विधेय में भिन्न प्रकार के सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करते हैं। देखिए pp. 49-57, 72-81. 'A Grammar of Chichewa, a Banty language of British Central Africa, by Mark Hanna *Watkins*, *Languaga Discrtation* no, 24, 1937. व्होर्फ द्वारा अपने लेख 'Language, Mind. and Reality' मे किए गए विवेचन में देखिए (p. 265 f.) –JBC]

अधिक प्रभावोत्पादक ढग से विचक्षण प्रकार के प्रभेद प्राय वे हैं, जो अप्रकट तथा गूढ-प्ररूपीय स्तरो तक किए गए विश्लेषण द्वारा प्रकट होते है। इसमे सन्देह नही है कि अप्रकट कोटियो मे प्रकट कोटियो की अपेक्षा अधिक तर्क सगत होने की प्रवृत्ति रहती है। लैटिन या जर्मन के चिह्नित लिंगो की अपेक्षा अग्रेजी का अचिह्नित लिंग अधिक तर्कसम्मत है तथा वास्तविकता के अधिक निकट है। जैसे-जैसे बाह्य चिह्न कम होते जाते है वैसे ही वर्ग, एक विचार के चारो ओर, वर्ग के सदस्यो के अर्थो मे जो भी सश्लेषण करने वाले सिद्धान्त है—उन सब पर अधिक आश्रित होने के लिए घनीभूत होता जाता है। यह सत्य भी हो सकता है कि बहुत से अमूर्त विचार इसी प्रकार अस्तित्व मे आते है। कुछ रूपात्मक तथा बहुत अधिक सार्थक न होने वाले भाषायी वर्ग, जिन्हे प्रकट रूपो द्वारा निर्दिष्ट किया गया है, मोटे रूप मे तथ्यो की शृखलाबद्धता के साथ ऐसे ढग से मेल खा सकते है जिससे कि इस 'समकक्षता' की तर्क-सम्मति की प्रतीति होने लगती है। ध्वन्यात्मक परिवर्तन के कारण भेदक चिह्न, अन्त्य प्रत्यय, या कुछ भी लुप्त हो सकता है और वर्ग रूपात्मक से अर्थपरक कोटि का हो जाता है। अब इसका प्रतिघात वह है जो इसे एक वर्ग के रूप मे वशिष्ट्य प्रदान करता है, और इसका भाव वह है जो इसका एकीकरण करता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, और प्रयोग बढता जाता है, वैसे ही यह एक तर्काधार के चारो ओर उत्तरोत्तर व्यवस्थित होता जाता है। यह अर्थ की दृष्टि से अनुकूल शब्दो को आकर्षित करता है, तथा उन पहले सदस्यो को छोड देता है जो अब अर्थ की दृष्टि से अनुपयुक्त हो गए हैं। अब 'तर्क' वह है, जो इसे एक साथ मिलाकर रखता है, तथा इसका तर्क उस एकता का अर्थपरक सहयोगी बन जाता है, जिसका समाकृतिपरक पक्ष अपेशीय अनुबन्धो का एक पुज है जो शब्दो के समस्त बेडे को एक साथ लंगर डलवा कर उन्हे उनके सामान्य प्रति-घात के साथ बाध देता है। अर्थ की दृष्टि से यह तथ्यो के पीछे सिद्धान्त का एक गहन प्रोत्साहन इस प्रकार बन गया है, जैसे निर्जीवता के, 'पदार्थ' के, अमूर्त लिंग के, अमूर्त व्यक्तित्व के, शक्ति के भाग, कारणता के भाग—कारणता की वह प्रकट कोटिपरक धारणा (शब्दीकरण) नही, जो शब्द 'कारणता' के सदृश है, परन्तु अप्रकट भाग, 'सवेदन' (Sensing) या जिसे सामान्य रूप से (परन्तु युग के अनुसार गलत ढंग से) 'भावना' कहते है— यह भावना कि कारणता का कोई सिद्धान्त अवश्य होना चाहिए। बाद मे इस अप्रकट भाव की एक शब्द के रूप मे, तथा दार्शनिको द्वारा आविष्कृत एक शाब्दिक धारणा, जैसे 'कारणता' के रूप में लगभग द्विरावृत्ति हो सकती है। इस दृष्टिकोण से बहुत से अशिक्षित (आदिम) समाज, जिनका उप-विवेकशील होना तो दूर रहा—मानव मस्तिष्क को सभ्य मानव की विवेकशीलता से उच्चतर तथा अधिक जटिल स्तर पर कार्य करता हुआ दिखा सकते हैं। हम यह नही जानते कि 'सभ्यता' 'विवेकशीलता' का पर्याय है। इन प्राचीन गणो मे दार्शनिको का अभाव सम्भव है, जिनका अस्तित्व ऐसी आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर करता है, जिसे इतिहास-काल में बहुत कम सभ्यताओ ने प्राप्त किया है, या,

सम्भवत: अत्यधिक तर्कशीलता स्वयं अपने-आप को परास्त कर सकती है; या किसी अन्य क्षतिपूरक सिद्धान्त को विकसित कर सकती है। ये सभी प्रश्न तत्वत: मानव-शास्त्र संबंधी हैं, जिनके लिए नृकुलविज्ञान, तथा मनोविज्ञान भाषाविज्ञान के बीच सम्पर्क, सम्भवत: सब से अधिक युक्तियुक्त मार्ग प्रस्तुत करता हुआ प्रतीत हो सकेगा।

दूसरे मार्ग का, जिसकेद्वारा 'चिन्तन' का भाषायी विवेचन मानवशास्त्र के लिए महत्त्वपूर्ण है, सम्बन्ध भविष्य से है; सम्भवत:, सब से अधिक, मानव-जाति के सुदूर भविष्य से है, जबकि वह किसी और ही रूप में विकसित हो चुकी होगी और हमें आशा करनी चाहिए कि वह आज के मानव से बहुत अधिक ऊंची ही होगी। निकट भविष्य पर दृष्टिपात करते हुए यह वाञ्छनीय है कि मानवशास्त्र, भाषाविज्ञान को उस समय की तैयारी के लिए सहयोग दे जो कि अधिक दूर स्थगित नहीं किया जा सकता, जब भाषा का सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक 'जगत-सर्वेक्षण' सम्भव ही नहीं अत्यन्त आवश्यक भी होगा, जिसका पूर्वाभास James Byrne के ग्रन्थों में मिलता है, और इस बार सहयोग इस ढंग से दिया जाएगा जिससे कि हमारा विज्ञान नए सत्य के उस प्रचुर धन से सम्पन्न हो जाएगा जो खोजे जाने की प्रतीक्षा में उस क्षेत्र में दबा पड़ा है।

जैसे-जैसे समय वीतता जाता है, उस प्रकार का ज्ञान, जिसे उपरोक्त सर्वेक्षण उद्घाटित करेगा,—विद्या-सम्बन्धी अध्यवसायों के क्षेत्र से बाहर भी अधिकाधिक दिलचस्पी तथा महत्त्व का विषय बनता जा रहा है। क्योंकि आजकल रचे जाने वाले विश्व-इतिहास में इसका बहुत बड़ा हाथ हो सकता है। पारस्परिक सहानुभूति प्राप्त करने की समस्या, भाषायी बाधाओं की समस्या, प्रचार तथा विज्ञापन की, शिक्षा की, मनुष्यों के मामलों को बिना अनुचित संघर्ष सुलझाने के तकनीक की समस्या, भौतिक विज्ञान द्वारा लाए गए परिवर्तनों के साथ-साथ चल सकने वाली बुद्धि की समस्या, अर्थात् ये सभी समस्याएं 'भाषा तथा विचार' के इस विषय की उलझन में अवश्य पड़ती हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भाषा के प्रश्न में रुचि रखता है, यद्यपि, या तो लोग इसे जानते नहीं हैं, या इसे जानते हैं, और समझते हैं कि वे इसके विषय में सभी कुछ जानते हैं। उदाहरणार्थ आजकल Odgen की कुशल कृत्रिम भाषा, जिसे वह 'वेसिक इंग्लिश' कहता है, के विस्तृत प्रयोग का आन्दोलन चल रहा है, जिसे व्यापारियों, शिक्षकों, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में रुचि रखने वाले लोगों, तथा H. G. Wells जैसे सामाजिक भविष्यवक्ताओं से पर्याप्त रूप में सहानुभूति मिली है। अलग वैठे रहकर इस प्रकार के भाषायी आन्दोलनों को अवैज्ञानिक कह कर शान से निन्दा करने का कोई लाभ नहीं है। चाहे अवैज्ञानिक है या नहीं—वे आज के भाषायी तथ्य अवश्य हैं, और फिर भाषा-विज्ञान, जो एकमात्र इस प्रकार के आन्दोलनों के महत्त्वपूर्ण आधारभूत सिद्धान्तों का संचालन करने में समर्थ है, क्यों एकान्त उदासीनता अपनाकर तमाशा देखता रहे और उन्हें गलतियाँ करते रहने दे

जो अपनी अपरिष्कृत परन्तु महान् शक्ति का उपयोग कल के चिन्तन को परिवर्तित करने मे लगा रहे है ? 'बेसिक इंग्लिश' लोगो को अच्छी लगती है क्योंकि वह सरल प्रतीत होती है। परन्तु, वे जिन्हे यह सरल प्रतीत होती है, या तो जानते है, या सोच लेते है कि वे अंग्रेजी जानते है। यहाँ एक बाधा उपस्थित होती है। प्रत्येक भाषा उस भाषा को बोलने वाले के लिए सरल प्रतीत होती है, क्योंकि उन्हे इसकी सरचना का बोध नही होता। परन्तु अंग्रेजी कुछ भी हो सकती है, परन्तु सरल नही है—यह एक विस्मयकारी जटिल व्यवस्था है, जिसमे अप्रकट कोटियो, गूढ-प्ररूपो, वरणात्मक पदिमो, अनुक्रमात्मक पदिमो[22], काफी पेचीदा अर्थयुक्त बलाघात-अभिरचनाओ, एवम् अनुतान-अभिरचनाओ का बाहुल्य है। जहाँ तक स्वर-गुणिमिक जटिलता का सम्बन्ध है अंग्रेजी निस्सन्देह अपने-आप मे एक श्रेणी है, इस विषय मे संसार भर की सबसे अधिक जटिल भाषाओ मे से एक होने के नाते, कुल मिलाकर यह इतनी पेचीदा है जितनी कि अमरीका की अधिकाश बहु-सश्लिष्ट भाषाए—यह तथ्य ऐसा है जिससे हम आनन्दपूर्वक अनभिज्ञ है। अंग्रेजी में जटिल सरचना मुख्यत अप्रकट कोटि की है, जो उसके विश्लेषण को और भी अधिक कठिन बनाती है। अंग्रेजी सीखने वाले विदेशियो को इसे अचेतन रूप से समाविष्ट करना पड़ता है—एक प्रक्रिया जिसमे वर्षो लग जाते है,—वह भी बडी मात्रा मे बोली जाने वाली अंग्रेजी की बम्बारी को निरन्तर सहते रहने के बल पर, ऐसे अवसर पर कोई व्याकरण ऐसा नही है जो इसे सिखा सके। जैसा बेसिक इंग्लिश के सम्बन्ध मे है, वैसा ही अन्य कृत्रिम भाषाओ के विषय मे भी है। क्योकि, कतिपय सास्कृतिक रूप से प्रमुख, योरोपीय भाषाओ की आधारभूत सरचनाओ, तथा कोटियो को स्वाभाविक मान लिया जाता है। उनके पूर्वानुमानो का जटिल जाल, मिथ्या सरलता का आधार बना लिया जाता है। हम "a large black and white hunting dog" कहते है और यह कल्पना कर लेते हैं कि बेसिक इंग्लिश मे प्रत्येक व्यक्ति ऐसा ही करेगा। परन्तु मौलिक रूप से भिन्न मातृभाषा वाले व्यक्ति से कैसे आशा की जा सकती है कि वह "hunting white black large a dog." नही कह सकता ? अंग्रेजी के विशेषणो का सम्बन्ध गूढ-प्ररूपो से है जिनका निश्चित स्थान नियुक्त है, तथा उनका सूत्र सुनिश्चित तथा जटिल है, परन्तु देख लीजिए कि बेचारा इण्डियन अपने चिन्तन को बिल्कुल दूसरे ढग से व्यवस्थित करता है। परन्तु ऐसे व्यक्ति को, जिसे बेसिक इंग्लिश का प्रयोग करना है, 'वास्तविक रूप मे बोली जाने वाली अंग्रेजी' की अत्यधिक पेचीदा अप्रकट सरचना को पहले जानना पडेगा या सीखना पड़ेगा।

---

22. उपान्त्तीय टिप्पणी Membership in Covert Categories of a certain type अप्रकट कोटियों में विशेष प्रकार की सदस्यता प्रतीत होती है तथा Leonard Bloomfield की *Language* (New york, 1933) का भी निर्देश है, जहाँ पदिमों के विषय पर अध्याय 10 12 में तथा दूसरी जगह विचार किया गया है—JBC

हम यहाँ उस गलती का उल्लेख कर रहे हैं जिसे ऐसे अधिकांश लोग करते हैं जो भाषा के सामाजिक प्रश्नों का समाधान करने का प्रयत्न करते हैं। वे भोलेपन से यह मान बैठते हैं कि भाषा शब्दीकरण का एक ढेर लगाने के सिवाय और कुछ नहीं है, और यह कि बस यही कुछ है जिसकी आवश्यकता किसी प्रकार के या सभी प्रकार के विवेकयुक्त चिन्तन के लिए पड़ सकती है, इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण विचार, जिन्हें भाषा की संरचना तथा समाकृतिपरक घनिष्ठता प्रस्तुत करती है, उनकी समझ से बाहर हैं। यह भी सम्भव हो सकता है कि भाषा प्रकट रूप से जितनी सरल होती जाती है उतनी ही वह गूढ़-प्ररूपों तथा अन्य अप्रकट रचनाओं पर निर्भर करने लगती है। उतना ही अधिक यह अचेतन पूर्वकल्पनाओं को छिपाती है, उतने ही अधिक इसके 'शब्दीकरण' परिवर्तनशील एवं अपरिभाषेय या अनिर्वचनीय बनते जाते हैं। क्या यह अन्तर्राष्ट्रीय सरल भाषा के भावी समर्थकों के लिए एक मछलियों की सुन्दर पतीली नहीं होगा, जिसे चूल्हे पर चढ़ाने में उनका हाथ होगा? क्योंकि इन क्षेत्रों में गम्भीर चिन्तन करने के लिए हमें भाषाओं के समर्थ विश्व-सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

IV

और अब, अधिक सुदूर भविष्य की ओर दृष्टिपात करते हुए, भाषा-विज्ञान के विषय का निरीक्षण करने तथा समस्त मानवजाति के दृष्टिकोण से चिन्तन पर इसके प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए हमें एक अधिक विशाल दृष्टिकोण अपनाने की अनुज्ञा होनी चाहिए। ऐसा करने के लिए हमें घिसीपिटी उक्ति से प्रारम्भ करने से डरना नहीं चाहिए। मनुष्य, भाषा के कारण, तथा चिन्तन के महान विकास के कारण, अन्य पशुओं से भिन्न हो जाता है। जहाँ तक हम उसके भविष्य की पूर्व कल्पना कर सकते हैं, हमें यह कल्पना उसके मानसिक विकास के रूप में करनी चाहिए। हमारे पास यह मानने के सिवाय और कोई चारा नहीं है कि चिन्तन के भावी विकास ही मानव जाति के लिए प्राथमिक महत्त्व की चीजें हैं। वे इस पृथ्वीतल पर या ब्रह्माण्ड में, मनुष्य के अस्तित्व की अवधि भी निर्धारित कर सकते हैं। चिन्तन के लिए उपलब्ध सम्भावनाएं, सम्बन्धों को मान्यता प्रदान करने की सम्भावनाएं हैं, तथा मानसिक या बौद्धिक स्तर पर उन सम्बन्धों के साथ कार्यान्वित करने के तकनीकों की ऐसी खोज हैं, जो बदले में सम्बन्धों की उत्तरोत्तर विशाल होने वाली तथा अधिक विचक्षणात्मक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था को जन्म देंगी। ये सम्भावनाएं भाषायी अभिव्यक्ति की व्यवस्थाओं के साथ अनिवार्य रूप से बँधी हुई हैं। मानव में उसके विकास की कहानी मानव के भाषायी विकास की कहानी है—सम्बन्धों को पहचानने, चुनने, संगठित करने, तथा सम्बन्धों के साथ व्यवहार करने, की हजारों नितान्त भिन्न व्यवस्थाओं की लम्बी कहानी है। इस विकासात्मक प्रक्रिया की प्रारम्भिक अवस्थाओं में मिलने वाली भाषा की वास्तविक प्राचीन धातुओं के विषय में हमें कोई ज्ञान नहीं है। जो कुछ भी हम कम-से-कम पता लगाने की स्थिति में हैं, वे हैं

इस विकास के परिणाम, जो हमे इस पृथ्वीतल पर चारो ओर प्रसारित रूप मे आज भी विद्यमान दिखाई देते है। ससार भर के भाषायी वर्गीकरण के ज्ञान का, केवल प्रारम्भ ही, हमे प्रमाण के रूप मे मिलता है। व्याकरण विषयक साधारण सामान्यीकरणो मे, तथा तर्कशास्त्र एव 'विचार-मनोविज्ञान' के सम्बन्धित क्षेत्र मे हम उसी स्थिति मे है जिसमे Linnaean से पहले वनस्पति-शास्त्र था। जीव-विज्ञान के रूपक का प्रयोग करते हुए मैं कहना चाहूगा कि हमारे पास अभी तक वर्तमान भाषायी जीव-जातियों के विवरण जैसी कोई चीज नही है।

सौभाग्यवश, जीव-विज्ञान के लिए ससार भर का व्यवस्थित वर्गीकरण पहले हुआ, तथा उसने ऐतिहासिक एव विकासात्मक प्रणाली के लिए आधार स्थापित कर दिया। दुर्भाग्यवश, अन्य सास्कृतिक अध्ययनो की भाति भाषा-विज्ञान मे भी विपरीत स्थिति रही है। जब मनुष्य की भाषा तथा विचार सम्बधी धारणाए, ससार की विभिन्न प्रकार की सैकडो विद्यमान भाषाओ मे से केवल कुछ एक भाषा-प्रकारो पर ही आधारित थी, तब मानव पर विकास-सिद्धान्त के थोपे जाने से उसके प्रदेशीय भाषायी पक्षपात को दुस्साहस प्राप्त हुआ, तथा उसने उस थोथी शान को प्रोत्साहित किया जिसके अनुसार उसकी अपनी चिन्तन-पद्धति तथा कतिपय योरोपीय भाषाएं, जिनपर वह आधारित है,—भाषा के विकास-कुसुम तथा पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करने वाली मानी जाती है। यह तो ऐसी बात है जैसे Linnaean से पूर्वकालीन कोई वनस्पति-शास्त्री, जिसने विकास-सिद्धात का विचार ग्रहण कर लिया हो, यह कल्पना करले कि समस्त कृषि द्वारा उत्पादित गेहू तथा जई हिमालय पर किसी सीमित क्षेत्र मे मिलने वाले 'एस्टर' पौधे से उच्चतर विकासात्मक स्तर का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रौढ जीव-विज्ञान के दृष्टिकोण के अनुसार दुर्लभ एस्टर ही निश्चित रूप से उच्च विकासीय श्रेष्ठता का अधिकारी है, गेहूं को उसकी प्रतिष्ठा तथा सर्वव्यापकता केवल मनुष्य के अर्थशास्त्र तथा इतिहास के कारण प्राप्त है।

योरोपीय भाषाओ की श्रेष्ठता तथा चिन्तन-अभ्यासो का प्रादुर्भाव भी (भाषाओ के विषय मे अत्यल्प ज्ञान के सिवाय) और किसी कारण से नही हुआ। आधुनिक सभ्यता को प्राप्त करने वाली सस्कृतियो की कतिपय भाषाए, जो समस्त भूमण्डल पर फैलने का विश्वास दिलाती है, तथा सैकडो विभिन्न विजातीय भाषाओ की समाप्ति का कारण बन सकती है, उनके विषय मे यह सोचना निरर्थक है कि वे किसी प्रकार की जातीय श्रेष्ठता से युक्त है। इसके विपरीत अशिक्षित जातियो की भाषाओ, विशेष रूप से अमरीका की भाषाओ के थोडे से सही वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि हमारी भाषाओ से इन भाषाओ मे सम्बन्धो की व्यवस्था कितनी अधिक सुनिश्चित तथा सूक्ष्म रूप से सुविस्तृत है।[23] बहुत सी अमरीकी भाषाओ के साथ

23. इस विषय पर पाण्डुलिपि मे एक उपान्तीय टिप्पणी मिलती है। "निष्कर्ष—गलती इस बात के मान लेने में है कि भाषा का कार्य केवल विचारो का

तुलना में अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी या इटली की भाषाओं का रूपात्मक व्यवस्थीकरण दरिद्र तथा नीरस प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ हम होपियों की भांति संवेदन के माध्यम के संबंध को 'चेतना में परिणाम' के ढंग से भिन्न ढंग में अभिव्यक्त क्यों नहीं करते; जैसे, 'मैं देखता हूं कि यह लाल है', तथा 'मैं देखता हूँ कि यह नया है' के बीच अन्तर है? हम बिल्कुल भिन्न प्रकार के दो सम्बन्धों को 'That' से स्पष्ट रूप में मिलाकर एक कर देते हैं; जबकि होपी भाषा यह संकेत देती है कि पहले कथन में 'देखना' एक 'लाल' संवेदन को प्रस्तुत करता है, और दूसरे में देखने की प्रक्रिया एक अनिश्चित प्रमाण प्रस्तुत करती है जिससे नवीनता का अनुमान किया जाता है। यदि हम उसके रूप को 'मैं सुनता हूं कि यह लाल है' या 'मैं सुनता हूं कि यह नया है' के रूप में बदल दें तो हम योरोपीय, उसी लंगड़े 'कि' (that) से चिपके रहेंगे; परन्तु होपी भाषा ऐसे अवसर पर एक अन्य संयोजक का प्रयोग करती है और 'लाल' तथा 'नए' में कोई भेद नहीं करती, क्योंकि दोनों ही विषयों में, चेतना के समक्ष जो महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण है, वह एक मौखिक सूचना सम्बन्धी है; तथा न तो वास्तविक रूप में संवेदन है, और न ही अनुमानपरक परिणाम। क्या यहाँ होपी भाषा, हमारी अभ्यसित अंग्रेजी भाषा से अधिक ऊंचा चिन्तन स्तर तथा परिस्थिति का एक अधिक विवेकशील विश्लेषण प्रस्तुत करती है? हाँ, यह करती है। इस क्षेत्र में तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में अंग्रेजी, होपी की तुलना में ऐसे है जैसे एक लाठी तलवार की तुलना में। ऊपर दिए गए उदाहरणों में that के द्वारा अभिव्यक्त किए सम्बन्धों के भेद को समझ सकने से पहले, हमें सोचना भी पड़ता है तथा प्रश्न पर कुछ झिझकना भी पड़ता है, या हम किसी से इसकी व्याख्या करवा लेते हैं, जब कि एक होपी इन सम्बन्धों का भेद श्रम-रहित सरलता से कर लेता है। क्योंकि उसकी भाषा के रूपों ने उसे ऐसा करने का अभ्यास प्रदान किया है।

BIBLIOGRAPHY

[पाण्डुलिपि के अन्त में Bibliography notes शीर्षक के अन्तर्गत एक अनुभाग है जो पुस्तक-सूची का एक ढांचा मात्र है; इसमें केवल नाम हैं। मैंने पादटिप्पणी-संकेतों में पहले ही निम्नलिखित नामों का उल्लेख किया है। Bloomfield Boas, Byrne, Fabre d' Olivete, Jung, Sapir, Watkins and Watson.

संचारण है।" संचारण शब्द पर बल देने का व्होर्फ का अभिप्राय यह है कि वह स्पष्ट करना चाहता है, कि भाषा न केवल विचार का संचारण करती है अपितु उसे आरम्भ करने का कार्य भी करती है। हम इस लेख की मुख्य धारणा स्वीकार कर लेते हैं तो यह ऐसा निष्कर्ष है जिसे स्वीकार करने के लिए हमें बाध्य होना पड़ता है—JBC

नीचे अब मैं उन नामों का उल्लेख करूंगा जो, सम्भवत, व्होर्फ के मन में थे, कुछ के विषय मे तो वह स्पष्ट सकेत देता है —]

De Angulo, Jaime 'Tone patterns and verb forms in a dialect of Zapotek' *Language* 2 238-250 (1926)

Flournoy, Theodore *Metaphysique et Psychologie.* Geneva, 1890. [This may not be the relevant work.]

Haas, Mary [Whorf probably referred to unpublished material which he has seen. See her sketch of Tunica, an American Indian language, in H Hoijer, *Linguistic Structures of Native America* New York, 1946 –JBC]

Jones, William, and Michelson, Truman. 'Algonquian (Fox)' Pp. 735-873 in Boas, F (editor). *Handbook of American Indian Languages,* Part I. Washington : Government Printing Office, 1911

Koffka, K. *Principal of Gestalt Psychology.* New York Harcourt, Brace and Co., 1935.

Lowes, John Livingston *Road to Xanadu.* Harvard University Press, 1927. [Whorf misremembered the author's name as Dickinson He comments, "Interesting for illustrations of the dredging up of linguistic material from the unconcious"]

Murdock, George P Our *Primitive Contemporaries* New York : Macmillan, 1934

Newman, Stanley S *A Grammar of Yokuts, an American Indian Language of California.* Unpublished Ph D dissertation, Yale Univ. 1932 Aalso *Yokuts Language of California* New York, 1944 (Viking Fund Publication in Anthropology, no. 2)

Morice, Adrian G. *The Carrier language (Dene family), a grammar and dictionary combined* St. Gabriet-Modling near Vienna, Austria, 1932

Ogden, Charles K *Basic English : A General Introduction with rules and grammar.* London. K Paul, Trench, Trubner, 1930. [Whorfs citation is to Ogden and Richards, but I believe he meant to refer to this book about Basic English]

Swadesh, Morris [Whorf probably referred to unpublished material which he had seen. See Swadesh's sketch of South Greenland Eskimo in H Hoijer, *Linguistic Structures of Native America.* New York, 1946–JBC]

Trager, George L "The phonemes of Russian" *Language,* 10 : 334-344 (1934).

व्याकरणिक कोटियाँ*

भारोपीयेतर भाषाओं का विवरण प्रस्तुत करने के लिए परम्परागत व्याकरणों से ली गई शब्दावली—जैसे क्रिया, संज्ञा, विशेषण, तथा कर्मवाच्य आदि का प्रयोग करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति, भ्रमोत्पादक होने की गम्भीर सभावनाओं की आशंकाओं से भरी हुई है। साथ ही यह भी वाञ्छनीय है कि हम इन शब्दावलियों की परिभाषा इस ढंग से करें कि हम उनसे प्राप्त होने वाली बड़ी सुविधा का लाभ उठा सकें, और जहाँ कहीं सम्भव हो वहाँ विजातीय (भारोपीयेतर) भाषाओं पर इन्हें वैज्ञानिक एवम् संगत रूप से लागू कर सकें। ऐसा करने के लिए हमें संसार की भाषाओं में मिलने वाली व्याकरणिक कोटियों का पुनरीक्षण करना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि हम भाषायी तथ्यों के विषय में विश्वव्यापी दृष्टिकोण अपनाएँ, यथासम्भव नई धारणाएँ बनाएँ तथा शब्दावली में आवश्यक संवर्धन करें। ये कथन अंग्रेजी पर समान-रूप से लागू होते हैं, क्योंकि अंग्रेजी भाषा सामान्य भारोपीय भाषाओं की अभिरचना से लगभग इतनी ही भिन्न है जितनी कि कुछ अमरीकी-इण्डियन भाषाएँ।[1]

श्रेण्यकालिक नमूनों पर आधारित अमरीकी-इण्डियन भाषाओं की रूढ़िगत व्याकरणों के प्रतिक्रिया के फलस्वरूप रुपिमों पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति अधिक रही है, जिनके द्वारा बहुत से व्याकरणिक रूपों का निर्देश किया जाता है। यह दृष्टिकोण उन बहुत से शब्दवर्गों की उपेक्षा कर जाता है जिनका निर्देश रूपिम प्रत्ययों द्वारा नहीं किया जाता, अपितु अभिरचना-प्रकारों द्वारा किया जाता है; जैसे कुछ रूपिमों के व्यवस्थित परिहार द्वारा, शाब्दिक चयन द्वारा, शब्द-क्रम द्वारा जो वर्ग-क्रम भी है; सामान्यतः निश्चित भाषायी समाकृतियों

---

* *Language* 21 : 1–11 (1945) से पुनर्मुद्रित। *Language* के सम्पादक द्वारा दिए गए नोट के अनुसार "यह लेख Franz Boas उस समय के *Int. J. Amer. Linguistics* के सम्पादक की प्रार्थना पर 1937 के अन्तिम चरण में लिखा गया था। इसकी हस्तलिपि C. F. Voegelin एवम् Z. S. Harris द्वारा किए गए बोअस-संग्रह से प्राप्त हुई। बोअस की सूची *Language Monograph* नं० 22, 1945 में भी दी गई है।

1. लेखक अपने सहयोगियों Dr. George L. Trager तथा Dr. Morris Swadesh के प्रति आभार प्रकट करना चाहता है, जिनके साथ व्याकरणिक कोटियों की कुछ समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ।

के साहचर्य द्वारा। किसी भाषा की खोज के प्रारम्भ में 'प्रकार्यात्मक' प्रकार की परिभाषा का परिहार करना चाहिए, उदाहरणार्थ, किसी एक श्रेणी का शब्द, जैसे 'सज्ञा' एक शब्द है, जो 'यह यह कार्य करता है,' विशेष रूप मे तब जब कि भेद दिखाने की यह एकमात्र कसौटी हो, क्योकि एक विशेष शब्द 'क्या करता है' इस विषय मे लोगों की धारणाएँ एक अपरिचित भाषा मे भी इतनी ही भिन्न एवम् विविध हो सकती है जितनी उनकी अपनी भाषाओ, भाषार्थी-प्रशिक्षणो तथा दार्शनिक अभिरुचियो मे हो सकती है। कोटियाँ जिनका व्याकरणो में अध्ययन किया जाता है, समाकृतिपरक तथ्यो द्वारा अभिज्ञेय है और ये तथ्य सभी प्रेक्षकों के लिए समान है। तथापि, मैं प्रकार्यात्मक परिभाषाओ के प्रति पूर्ण अविश्वास की उस भावना से सहमत नही हू जो आजकल के वैयाकरणो मे दिखाई देती है। जब एक बार कोटियो की रूपरेखा समाकृतिपरक तथ्यों के आधार पर बना दी गई हो तो अनुसन्धान के आगे बढने पर प्रकार्यात्मक या सक्रियात्मक प्रतीकवाद का प्रयोग वाञ्छित हो सकता है। समाकृतिपरक शोध-सामग्री से सम्बन्धित प्रकार्यात्मक परिभाषाएँ, रूपो के अर्थ-प्रतिपादन करने की सम्भव विधियो के रूप मे, मान्य हो सकती है। ऐसे विषयो मे अर्थ एक प्रकार का लक्षण-वर्णन होता है जो स्पष्ट रूप से सभी अर्थपरक तथा समाकृतिपरक, ज्ञात एवम् ज्ञातव्य, तथ्यो का विवरण प्रस्तुत करता है।

सबसे पहले हम प्रकट तथा अप्रकट कोटियो का भेद दिखाते है।

प्रकट कोटि, वह कोटि है, जिसका एक रूपात्मक निर्देशक होता है जो (केवल कुछ विरले अपवादो को छोडकर) उस प्रत्येक वाक्य मे होता है जिसमे उस कोटि का सदस्य हो। निर्देशक के लिए यह आवश्यक नही कि वह उसी शब्द का अश हो जिसे उस कोटि के साथ रूपावली के अर्थ मे सम्बन्धित माना जाता है—अर्थात् इसके लिए पर-प्रत्यय, उपसर्ग, स्वर-परिवर्तन या कोई अन्य 'विभक्ति' होना आवश्यक नही है; परन्तु यह एक पृथक् शब्द हो सकता है, या पूरे वाक्य की एक विशिष्ट अभिरचना। अत: अंग्रेजी में सज्ञाओ का बहुवचन एक प्रकट कोटि है जिसका निर्देशन रूपावली-शब्द में (अपेक्षित सज्ञा मे)–s–प्रत्यय या स्वर-परिवर्तन द्वारा किया जाता है, परन्तु fish, sheep तथा जाति अथवा देश का निर्देश करने वाले कुछ बहुवचनो मे इसका निर्देशन क्रियापद के रूप द्वारा, आर्टिकल के प्रयोग के ढग आदि द्वारा किया जाता है। 'fish appeared' मे किसी आर्टिकल का अभाव बहुवचन का निर्देश करता है, 'the fish will be plentiful' मे बहुवचनीकारक विशेषण इसका द्योतन करता है, 'the Chinese arrived और the kwakiutl arrived मे निश्चयात्मक आर्टिकल तथा एकवचनीय निर्देशक जैसे, person, Chinaman, Indian आदि का अभाव, बहु-वचन का द्योतन करता है। इन सभी दृष्टान्तों मे बहुवचन प्रकट रूप से निर्दिष्ट है, तथा इसी प्रकार, कुछ अपवादो को छोडकर, अंग्रेजी के सभी संज्ञा-बहुवचन निर्दिष्ट होते है। अत अंग्रेजी मे सज्ञा

बहुवचन एक प्रकट कोटि है।[2] दक्षिणी paiute में एक क्रिया का कर्ता-पुरुप उपशाब्दिक तत्व (बद्धरूपिम) द्वारा, जो पृथक रूप से प्रयुक्त नहीं हो सकता, अंग्रेजी के "–s" की तरह निर्दिष्ट होता है, परन्तु इसका क्रिया के साथ जोड़ा जाना आवश्यक नहीं है, इसे वाक्य के किसी भी पहले महत्त्वपूर्ण शब्द के साथ जोड़ा जा सकता है। अंग्रेजी में जिसे क्रिया की विध्यर्थक वृत्ति कहा जा सकता है, एक प्रकट कोटि है, जिसका निर्देशन 'Can' या 'Could' रूपिमों द्वारा किया जाता है—जो वाक्य में क्रिया से पृथक् प्रयुक्त शब्द है, परन्तु इस कोटि से युक्त प्रत्येक वाक्य में इनकी उपस्थिति रहती है; यह कोटि रूपविज्ञान की क्रिया व्यवस्था का वैसे ही अंग है जैसे कि मानो यह संस्कृत या अल्गोन्वियन जैसी श्लिष्ट भाषाओं के क्रिया-रूपों में बद्धरूपिम द्वारा निर्दिष्ट हो। इसका रूपिम 'Can' उसी क्रियार्थद्योतक व्यवस्था में समानाधिकरण तत्व का स्थानापन्न बन सकता है जैसे 'May', 'Will'; परन्तु एक शाब्दिक इकाई की भाँति (जैसे possibly) उनके साथ साधारण रूप में जोड़ा नहीं जा सकता। होपी में भी परस्पर व्यावर्तक प्रकारता की कड़ी व्यवस्था है जिसका द्योतन पृथक् शब्दों द्वारा किया जाता है।

एक अप्रकट कोटि का निर्देशन, चाहे रुपिमों द्वारा हो या वाक्य अभिरचना द्वारा हो, विशेष प्रकार के वाक्यों में ही होता है, न कि उन सभी वाक्यों में जिनमें उस कोटि का शब्द या तत्व मिलता हो। किसी शब्द की कोटि-सदस्यता तब तक स्पष्ट नहीं होती, जब तक कि उसे इन विशेष प्रकार के वाक्यों में से किसी एक में प्रयुक्त करने या निर्दिष्ट करने का प्रश्न न उठे, और तब हमें पता चलता है कि यह एक ऐसी कोटि से सम्बन्ध रखता है जिसके साथ किसी तरह का विशेष व्यवहार अपेक्षित है; वह व्यवहार निषेधात्मक भी हो सकता है जैसे उस प्रकार के वाक्य का बहिष्कार। इस विशेष व्यवहार को हम कोटि का प्रतिघात भी कह सकते हैं। अंग्रेजी में अकर्मक क्रियापद अप्रकट कोटि में है जिनका निर्देशन कर्मणि कृदन्त, तथा कर्मवाच्य एवम् प्रेरणार्थक वाच्यों के अभाव द्वारा किया जाता है। इस कोटि के क्रियापद का प्रतिस्थापन, (जैसे—go, lie, sit, rise, glean, slap, arrive,

---

2. वैसे कुछ सम्भव अथवा सैद्धान्तिक रूप में सम्भव वाक्यों की छोटी सी संख्या ऐसी है, जैसे 'the fish appeared' जिसमें बहुवचन का एकवचन से भेद नहीं है। परन्तु वास्तविक बोलचाल में इस प्रकार के वाक्य एक बड़े प्रसंग में जड़े होते हैं जो पहले ही चर्चित वस्तुओं के एकवचन या बहुवचनत्व का निर्णय किए होता है, (अन्यथा ऐसे वाक्य के उच्चारण की सम्भावना नहीं होगी) प्रकट तथा अप्रकट कोटि का भेद दिखाने के लिए ऐसे अल्प-संख्यक प्रकारों पर विचार नहीं किया गया है, अर्थात् वे किसी श्रेणी के प्रकट सिद्ध होने में बाधक नहीं हैं। अप्रकट कोटियों में अचिह्नित रूप अपेक्षाकृत अधिक हैं, प्रायः बहुसंख्यक हैं और उनका भेद प्रसंग द्वारा भी स्पष्ट नहीं होता।

appear, rejoice) इस प्रकार के वाक्यो मे नही कर सकते जैसे--'It was cooked' यह पकाया गया था, (It was being cooked) यह पकाया जा रहा था, (I had it cooked to order) मैंने इसे आज्ञा देकर पकवाया था। अत: 'अकर्मक' की यदि समाकृतिपरक ढग से परिभाषा दी जाए तो वह परम्परागत अग्रेजी व्याकरण मे प्रयुक्त (डम्मी) अकर्मक से सर्वथा भिन्न वस्तु है; यह एक वास्तविक व्याकरणिक श्रेणी है जिसका निर्देशन इनके द्वारा, या अन्य नियम-बद्ध व्याकरणिक वैशिष्ट्यो द्वारा किया जाता है, जैसे कि क्रियापद के पश्चात् सज्ञा या सर्वनामों का न आना। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के वाक्यो का प्रयोग नहीं करता 'I gleaned it' (I appeared the table)। हाँ, यह भी सत्य है कि इन्ही शब्दिमों से बनी हुई यौगिक रचना सकर्मक हो सकती है जैसे 'sleep (it) off', 'go (him) one better'। अमरीकी बोलचाल के टक्साली रूप 'go hay wire, go South Sea Islander', आदि आदि। क्रियापद के पश्चात् कोई शब्द या वाक्याश एक अप्रकट विशेषण होता है, दृष्टान्त के रूप मे 'go completely haywise'.

अप्रकट कोटि के एक अन्य प्रकार का प्रतिनिधित्व अग्रेजी का 'लिंग' करता है। प्रत्येक जातिवाचक सज्ञा तथा व्यक्तिगत रूप से दिया गया नाम किसी विशेष लिंग से युक्त होता है, परन्तु विशेष प्रकट चिह्न केवल उस समय दृष्टि-गोचर होता है जब सज्ञा का सकेतन पुरुषवाचक सर्वनाम के एकवचन द्वारा किए जाने का अवसर उपस्थित हो--या नपुसकलिंग वर्ग के विषय मे इसका निर्देशन प्रश्नवाचक और सम्बन्ध वाचक सर्वनामो (what) क्या, (which) कौन सा द्वारा किया जा सकता है। यहाँ पर व्याकरणिक बन्धन लिंग-व्यवस्था की प्रकट कोटि से कुछ कम कड़ा नही है, उदाहरण के रूप मे, लैटिन मे लगभग सभी सज्ञाओं का लिंग निर्देशक होता है। निस्सन्देह अग्रेजी के अधिकाश जातिवाचक सज्ञा शब्दों के लिंग-ज्ञान के लिए वास्तविक (सेक्स) (लिंग) तथा वैज्ञानिक जीवशास्त्रीय एवम् शारीरिक वर्गीकरण का ज्ञान स्वय व्याकरणिक श्रेणियो के ज्ञान के स्थान पर उपयोगी हो सकता है, परन्तु अन्तत: इस प्रकार का ज्ञान बहुत ही सीमित रूप मे उपयोगी रहेगा, क्योकि पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग श्रेणियो का अधिकाश भाग हजारो व्यक्तिगत नामो से भरा पडा है और एक ऐसा विदेशी जो पाश्चात्य योरोपीय ईसाई नामो की सास्कृतिक पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ है उसे तो सीखना, पडेगा अर्थात् ध्यानपूर्वक देखना होगा कि "Jane" 'She' वर्ग के अन्तर्गत है और "John" 'he' वर्ग मे है। ऐसे बहुत से नाम है जो प्रकट रूप मे समान आकृति वाले हैं परन्तु उनमे लिंग विषयक विरोध है, जैसे—Alice : Ellice : Alison · Addison, Aubrey, Winifred : Wilfred, Myra : Ira: Esther . Lester.[3] न ही किसी प्रकार के (प्राकृतिक) गुणो का ज्ञान ही

3. अन्तरिम लिंग या उभयलिंगय नाम बहुत कम हैं: 'Frances (Francis)', Jessie (Jessie)', or Jess, Jean (Gene) Jocelyn Sidney, Wynne',

हमारे प्रेक्षक को यह बता पाएगा कि स्वयं जीवविज्ञान सम्बन्धी नाम (जैसे animal, bird, fish आदि) 'it' वर्ग के हैं। सामान्यत: छोटे जीव 'it' होते हैं; बड़े पशु प्राय: 'he' होते हैं, 'dogs', 'eagles' और 'turkeys' प्राय: 'he' हैं, 'cats' तथा 'wrens' प्राय: 'she' वर्ग के हैं। शरीर के अंग तथा समस्त वनस्पति संसार 'it' है, देश तथा प्रदेश कल्पित व्यक्तित्व के रूप में (स्थान के रूप में नहीं) 'she' हैं, 'Cites', 'Societies' और 'Corporation' कल्पित व्यक्तित्व के रूप में 'it' हैं, मानविक शरीर 'it' है, एक प्रेतात्मा 'it' है, प्रकृति 'she' है। जलयान जो बादवान से युक्त है—या इन्जन वाला है, जिसका नाम छोटा यान रख दिया गया है 'she' है, बिना नाम वाली किश्तियाँ, डोंगियाँ, तथा बेड़े 'it' हैं। अंग्रेजी लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ, जिन्हें भाषा सीखने वाले करते हैं, विशेषत: वे लोग जिनकी अपनी भाषा में लिंगभेद नहीं है, हमें यह बता सकती हैं कि हमारी भाषा में ये अप्रकट व्याकरणिक कोटियाँ हैं, तथा यह भी बता सकती हैं कि ये अशुद्धियाँ, स्वाभाविक तथा असांस्कृतिक भिन्नताओं का, भाषा के अन्तर्गत, प्रतिबिम्ब मात्र नहीं हैं।

बहुत सी अमरीकी भाषाओं में, संज्ञाओं की वे श्रेणियाँ जो वास्तविक या प्रकट आकृति पर आधारित हैं, या तो 'प्रकट' या 'अप्रकट' कोटि वाली हो सकती हैं। नवाहो भाषा में वे अप्रकट हैं। कुछ शब्द 'वृत्ताकार' श्रणी के हैं, दूसरे लम्बे पदार्थों की श्रेणी के हैं, कुछ अन्य ऐसे हैं जो आकार पर आधारित नहीं हैं। कोई प्रकट चिह्न, श्रेणी का द्योतन प्रत्येक वाक्य में नहीं करता। वर्ग-चिह्न, जैसे अंग्रेजी में लिंग, एक प्रतिघात है; (परन्तु) सर्वनाम नहीं, किन्तु कुछ विशेष धातुओं का चयन जो एक श्रणी के साथ प्रयुक्त होते हैं किसी अन्य के साथ नहीं होते, एक प्रकार का प्रभेद स्पष्ट करते हैं, यद्यपि बहुत सी ऐसी धातु हैं जो इस प्रभेद के प्रति उदासीन हैं। मुझे सन्देह है कि कम-से-कम नवाहो भाषा में ये प्रभेद सभी प्रेक्षकों के लिए समान प्रतीत होने वाले अभाषायी वस्तुपरक प्रभेदों की भाषायी मान्यता-मात्र हैं, और वे अंग्रेजी के लिंग से कुछ अधिक नहीं है; बल्कि ये अप्रकट व्याकरणिक कोटियाँ प्रतीत होते हैं। अत: नवाहो भाषा सीखने वाले को शिक्षण के अंग के रूप में यह भी सीखना होगा कि 'शोक' वृत्ताकारी श्रेणी के अन्तर्गत है। किसी भी प्रेक्षक के 'सामान्य बोध' के अनुसार अंग्रेजी की लिंग श्रेणी तथा नवाहो की आकृति श्रेणी जैसी अप्रकट कोटियों के विषय में पहली धारणा यह होगी कि ये केवल भिन्न प्रकार के अनुभव या ज्ञान के प्रभेदमात्र हैं क्योंकि हम 'jane went to her house' (जेन अपने घर गई) इसलिए कहते हैं कि हमें पता है कि जेन स्त्री है। वास्तव में जेन के विषय में हमें कुछ जानने की आवश्यकता

और सम्भवत: दो चार और। इनकी संख्या बढ़ सकती है यदि हम उपनामों को भी सम्मिलित कर लें तो, जैसे 'Bobby, Jerry', आदि, परन्तु कुल मिलाकर उदाहरण अपेक्षाकृत् इतने कम हैं कि हमारी व्यवस्था को किसी प्रकार भंग नहीं करते।

भी नही है, जेन चाहे केवल एक नाममात्र हो सकता है, तथा पिडस नाम को टेलीफोन पर सुनकर हम कह उठते है—'What about her' 'उस स्त्री के विषय मे क्या बात है?' 'सामान्य बोध' एक पग और पीछे हट कर कह सकता है कि हम जानते है कि 'जेन' नाम केवल स्त्रियो को दिया जाता है । परन्तु यह अनुभव भाषायी अनुभव है, यह अग्रेज़ी को प्रेक्षण द्वारा सीखना मात्र है । इसके अतिरिक्त यह दिखाना आसान है कि सर्वनाम की अन्विति केवल नाम के साथ होती है, अनुभव के साथ नही । मै किसी भी मोटर गाडी, एक ढांचे, या तोप का नाम 'जेन' रख सकता हूँ, और इसे प्रत्येक सार्वनामिक सकेतो के लिए 'She' पद की आवश्यकता पडेगी । मेरे पास दो सुनहरी मछलियाँ है, मै एक का नाम जेन और दूसरी का नाम डिक रख देता हूँ । मैं अब भी कह सकता हूँ कि 'Each gold fish likes its food' 'प्रत्येक मछली अपनी खूराक पसन्द करती है'। परन्तु यह नही कह सकता ' Jane likes its food better than dick ' 'जेन अपना खाना डिक से अधिक पसन्द करती है' । मुझे कहना पड़ेगा 'Jane likes her food' 'जेन अपना खाना पसन्द करती है।' 'dog' शब्द (नपुसक) सामान्य लिग वर्ग के अन्तर्गत है, और 'he' तथा 'it' को (सर्वनाम के रूप मे) प्राथमिकता देता है, परन्तु लिंग के अनुसार श्रेणीगत 'dog' का 'नाम' अपने सर्वनाम का निर्धारण करता है। तब 'हम Tom came out of its kennel' नही कहते अपितु 'Tom came out of his kennel' कहते है, तथा 'Lady came out of her kennel,' 'The female dog came out of its (her) kennel,' कहते है। कुत्तो के 'Fido' आदि जैसे नाम 'he' वर्ग के होते है: "Towser came out of his kennel' हम कहते है 'See the cat chase her tail' परन्तु यह कभी नही कहते 'See dick chase her tail,'। 'child', 'baby' 'infant' आदि शब्द सामान्य-लिग वर्ग के है और 'it' सर्वनाम ग्रहण कर सकते है, परन्तु बच्चो के दिए गए नाम केवल 'he' या she ही ग्रहण कर सकते है । मैं कह सकता हूँ 'My baby enjoys its food' परन्तु यह कहना भाषायी रूप मे ग़लत होगा कि 'My baby's name is Helen—See how Helen enjoys its food' न ही मैं यह कह सकता हूँ कि 'My daughter enjoys its food' क्योकि 'daughter baby' के असदृश व्याकरणिक रूप से स्त्रीलिंगवाची श्रेणी में है ।

विजातीय भाषाओं की बहुत सी अप्रकट कोटियो के विषय मे भी यही बात मानी जा सकती है। जहाँ उन्हे वस्तुपरक प्रभेदो का अभिज्ञान समझा जाता है, वहाँ वास्तविकता यह हो सकती है कि वे केवल व्याकरणिक कोटियाँ है जो वस्तुपरक अनुभव से एक विशिष्ट सीमा तक मेल खाती है। यह सत्य है कि वे अनुभव का प्रतिनिधित्व कर सकती है, परन्तु उसी अनुभव का जो एक निश्चित भाषायी योजना के रूप मे अनुभूत हो—न कि उस अनुभव का जो सभी प्रेक्षको के लिए समान है। दूसरी ओर बहुत सी अमरीकी भाषाओ मे उपस्थित एवम् अनुपस्थित, दृश्य एवम् अदृश्य के प्रभेद अनुभवात्मक भिन्नता का प्रतिनिधित्व कर सकते है, और

फिर हमें ऐसी अनुभवात्मक भिन्नताओं को शुद्ध व्याकरणिक वर्गीकरण पर आरोपित करना पड़ सकता है जिसके परिणामस्वरूप ऐसी मिश्रित श्रेणियाँ बन सकती हैं—जैसे—'अनुभवात्मक—वर्तमान+व्याकरणिक—स्त्रीलिंग ।'

अप्रकट कोटि को गूढ़ प्ररूप का नाम भी दिया जा सकता है—एक ऐसा नाम जो इस प्रकार के शब्द-वर्ग की गुप्त किंवा प्रच्छन्न प्रकृति की ओर ध्यान दिलाता है, विशेष रूप से तब जबकि उनके भावों में प्रबल विरोध न हो, और न ही उनमें बहुधा घटित होने वाले प्रतिघात हों जैसे 'सर्वनाम' । वे बड़ी आसानी से हमारी दृष्टि से बच सकते हैं और उन्हें परिभाषित करना भी कठिन हो सकता है, तथापि वे भाषायी व्यवहार पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। समाकृतिपरक ढंग से ऊपर परिभाषित अंग्रेज़ी की अकर्मक क्रियाएँ गूढ़ प्ररूप कही जा सकती हैं। एक इसी प्रकार का गूढ़ प्ररूप 'संयोजक विघटन' वाले क्रियापदों का हो सकता है, जैसे be, become, seem, stay, remain आदि, जिनके कर्मवाची तथा प्रेरणार्थक रूप नहीं होते परन्तु संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण उनके अनुवर्ती हो सकते हैं। अंग्रेज़ी के सकर्मकों के (एक प्रच्छन्न कोटि जिसमें run, walk, return आदि वास्तव में अधिकांश अंग्रज़ी क्रियाएँ सम्मिलित हैं) कर्मवाची तथा प्रेरणार्थक रूप होते हैं और उनके अनुवर्ती संज्ञा तथा सर्वनाम हो सकते हैं परन्तु केवल विशेषण नहीं। देश और नगरों के नाम अंग्रेजी प्रच्छन्न कोटि के हैं, उनमें प्रतिघात यह है कि वे पुरुषवाची सर्वनामों द्वारा उपपदों in, at, to, from के कर्म के रूप में निर्दिष्ट नहीं किए जाते । हम कह सकते हैं कि 'I live in Boston'—मैं बोस्टन में रहता हूँ, परन्तु यह नहीं कह सकता कि 'I live in it' 'मैं इसमें रहता हूँ' । इस प्रकार की प्रच्छन्न कोटि के शब्द का संकेत in it—'इसमें', 'at it इस पर', 'to it' इसको' के स्थान पर 'there' वहाँ या here 'यहाँ' द्वारा किया जाता है और from it (इससे) के स्थान पर from there (here) (यहाँ से) द्वारा किया जाता है। बहुत सी अमरीकी भाषाओं में ऐसे स्थान नाम एक व्याकरणिक श्रेणी बनाते हैं। होपी में उनके कर्ता तथा कर्मकारक रूप नहीं होते, वे केवल अधिकरणवाची कारकों में घटित होते हैं । अज्तेक भाषा में वे विशिष्ट अन्त्य रूप वाले होते हैं, तथा विशेष पूर्व सर्गों के प्रयोग का बहिष्कार किया जाता है।

अंग्रेज़ी के विशेषण उपश्रेणियों सहित दो प्रच्छन्न कोटियों में विभक्त किए जा सकते हैं। एक शब्द-वर्ग जो ऐसे 'जन्मजात' गुणों का अर्थ-निर्देश करता है जैसे रंग, पदार्थ, भौतिक स्थिति (घन, तरल, छिद्रिल, कड़ा आदि) उद्गम-स्थान, जाति, राष्ट्रीयता, कार्य, प्रयोग इत्यादि। इस समूह का एक प्रतिघात है, और वह यह है कि इसे दूसरे वर्ग की अपेक्षा संज्ञा के अधिक निकट रखा जाता है जिसे हम अजन्मजात गुणों में से एक कह सकते हैं; यद्यपि यह पहले समूह का अवशेष है तथा उससे बाहर है और उसमें प्रमाण, आकृति, स्थिति, मूल्यांकन के (नैतिक, सौन्दर्यपरक, आर्थिक) विशेषण सम्मिलित हैं। ये जन्मजात गुण वाले समूह से पहले आते हैं, जैसे

Large red house —बड़ा लाल घर (Red large house —लाल बड़ा घर नही), 'Steep Rocky hill—तीखी चट्टानी पहाड़ी', 'Nice smooth floor —अच्छा चिकना फर्श'। सन्तुलित विरोध दिखाने के लिए क्रम उलटा भी जा सकता है, परन्तु सामान्य बलाघात अभिरचना को परिवर्तित करते ही यह पता चल जाता है कि रूप बदला जा रहा है और कुछ विचित्र-सा लगने लगता है। सामान्य अभिरचना में मुख्य बलाघात या तो संज्ञा पर होता है (steep rocky hill) या अन्तर्निहित विशेषण पर (Pretty French girl)। हम विशेषणो का क्रम उलट नहीं सकते तथा 'Frech pretty girl' नही कह सकते, यह रूप French plain girl से विषमता दिखाता है, परन्तु इस प्रकार विषमता दिखाने वाले विशेषणो की अभिरचना अंग्रेजी की प्रकृति के विरुद्ध है। उचित वैषम्य तो 'plain French girl' है। खैर, हम बलाघात अभिरचना को बदल कर विशेषणों को उलट सकते है, तो 'French pretty girl' कह सकते है। यदि विरोध 'Spanish pretty girl' से हो तो, यद्यपि ऐसे रूप स्पष्ट ही अपवाद-स्वरूप है।

प्रच्छन्न कोटि का विरोधी पद Phenotype प्रकट कोटि के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है, और जब किसी प्रकार की सन्दिग्धता की आशका न हो तो इसे उस निर्देशक चिह्न पर भी लागू किया जा सकता है जो वाक्य मे प्रकट कोटि के साथ आता हो।

प्रकट तथा अप्रकट कोटियों, या गोचर और अगोचर प्ररूप का प्रभेद व्याकरणिक कोटि सम्बन्धी सिद्धान्त के दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रभदों में से एक है। दूसरे प्रभेद को हम वरणकोटियाँ तथा प्रवर्तक कोटियो का प्रभेद कह सकते हैं।

वरणकोटि एक व्याकरणिक श्रेणी है जिसकी सदस्यता, कुछ बड़ी श्रेणी की तुलना में, नियत तथा सीमित है। एक प्राथमिक वरणकोटि या शाब्दिक कोटि वह है जिसकी तुलना में उससे अगली बड़ी श्रेणी भाषा का समूचा शब्दकोष है। जब किसी शब्द का वरण नियत सदस्यता वाली श्रेणी से, जो समूचे शब्द-समूह के साथ एकसीम नही है, किया जाता है तो उस शब्द मे विशेष अर्थगत तथा व्याकरणिक गुण निश्चित कर लिए जाते है, ताकि एक विशिष्ट व्याकरणिक गुण 'एक शब्दिम में' तो सम्भव हो सके परन्तु सभी शब्दिमो मे नही। अंग्रेजी के अतिरिक्त अधिकाश भारोपीय भाषाओं में मिलने वाले सुपरिचित शब्दभेद शब्दिम कोटियाँ है। अंग्रेजी मे स्थिति विचित्र है जिसका विवेचन आगे किया जाएगा। शब्दिम-कोटियाँ या तो प्रकट हो सकती है या अप्रकट। होपी भाषा एक ऐसी भाषा का दृष्टान्त है जिसमे वे अप्रकट है। सम्भवतः माया भाषा भी इसी प्रकार का दूसरा दृष्टान्त हो सकती है यद्यपि उसके विषय में पूरी और स्पष्ट जानकारी का अभाव है। होपी भाषा में सज्ञा (प्रातिपदिक) और क्रिया (धातु) के सरल प्रकृति-रूपो मे कोई भेद नही है, और इस प्रकार के वाक्य भी सम्भव है जिनमें वाक्यगत अन्तर भी नही पड़ता, अत. *le! na* या *pam le! na* का अर्थ है.—'यह एक बाँसुरी है'

और *pe! na* या *pampe! na* का अर्थ है—'वह इसे लिखता है।' अतः प्रकट गुणों के सम्बन्ध में संज्ञा और क्रिया रूप समान हो सकते हैं। परन्तु ऐसे वाक्य बनाना बड़ी आसानी से सम्भव हो सकता है जिनमें *le! na* के साथ कारक प्रत्यय जोड़े जा सकते हैं; परन्तु कुछ अन्य रूपों में *pe! na* के लिए ऐसा करना बिल्कुल असम्भव है, और इससे उलटी स्थिति में भी ऐसा ही है। यह सब कुछ सीखना पड़ता है, और कोई भी व्यक्ति वाक्य देखकर सदैव नहीं बता सकता कि le! na तथा pen! a शब्दकोश के भिन्न विभागों से सम्बन्धित हैं।

सम्भवतः प्रकट शब्दिम कोटियों का पता चलाना अधिक सामान्य है, जैसे लैटिन, फ्रेंच, अज्तेक, तुबतुलबल (Tiibatulabal) ताओस, नवाहो में। फ्रांसीसी में *ange* तथा *mange* शब्द-समूह के दो अलग-अलग विभागों (संज्ञा और क्रिया) से सम्बन्धित हैं और वाक्य में सदैव एक ऐसा वैशिष्ट्य रहता है जो इस तथ्य को प्रकट करता है। फ्रांसीसी में इस प्रकार के युग्म नहीं मिलेंगे। *ilmange : il ange C'est un ange : C'est un mange Ange* के विरोध में *mange* तो सम्भव हो सकता है परन्तु कुछ विशेष तथा संक्षिप्त वाक्यों के प्रकारों के आधार पर जिनमें रूपात्मक भेदों का अभाव भी है, इन कोटियों को प्रकट कोटि कहना उचित नहीं। लैटिन, अज्तेक, तुबतुलबल (Tiibatulabal) और ताओस में यह भेद न केवल वाक्य में ही निर्दिष्ट होता है अपितु प्रायः स्वयं रूपावली शब्द में भी। तथापि संज्ञा, क्रिया या अन्य 'शब्दभेद' का यह प्रकट चिह्न सही वर्ग से बाहर के किसी भी शब्द के लिए अन्तरित नहीं किया जा सकता। जो (निर्देशक) चिह्न अप्रकट शब्दिम कोटि के साथ रहता है, उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि वह किसी अन्य कोटि जैसे कारक, पुरुष या काल आदि का प्रतिनिधित्व करे, यद्यपि यह लैटिन, ग्रीक और संस्कृत में इस प्रकार का प्रतिनिधित्व करता है। उत्तो-अज्तेक भाषाओं की शब्दिम संज्ञाओं के साथ संलग्न रूप में मिलने वाले निरपेक्षिक परप्रत्ययों का मौलिक रूप में वर्ग-निर्देशक चिह्न होने के अतिरिक्त और कोई वैशिष्ट्य नहीं है, यद्यपि अज्तेक में उन्हें 'वचन' के साथ भी जोड़ दिया जाता है, और उन्हें 'आर्टिकल' के रूप में समझने के निमित्त अनावश्यक पटुता का भी व्यर्थ प्रयोग किया गया है। ताओस में 'निरपेक्षिक प्रत्यय' संज्ञाओं की वरणश्रेणी के साथ जुड़ते हैं परन्तु वे लिंग और वचन का भी संकेत करते हैं। लैटिन में संज्ञाओं (जिनमें विशेषण भी सम्मिलित हैं) तथा क्रियाओं में भेद वरणात्मक तथा प्रकट है, परन्तु विशेषण और विशेष्य (सत्ववाचक) में भेद वरणात्मक तथा अप्रकट है; तुलना कीजिए *est gladius* तथा *est bonus*। जैसा कि सभी अप्रकट कोटियों के विषय में विदित ही है कि इनका भेद सही प्रकार का वाक्य बनाने पर ही स्पष्ट होता है : *est bona* मिलता है परन्तु *est gladia* नहीं।

शब्दिम कोटियों में न केवल संज्ञाएँ, क्रियाएँ, विशेषण तथा अन्य 'शब्दभेद'

सम्मिलित है, परन्तु 'पूर्ण' एवम् 'रिक्त[4]' शब्द या प्रकृति (प्रातिपदिक एवम् घातु) रूप भी सम्मिलित है, जैसे चीनी भाषा मे, तथा शायद वाकशान (Wakashan) भाषाओ मे भी और इससे भी भिन्न प्रकार के भेद जैसे अल्गोन्कियन की शब्दिम श्रेणियो मे प्रकृतियो के बहुत से ऐसे वर्ग, जिनमे भिन्न प्रकार की संयोजन-शक्तियाँ है तथा शाब्दिक मिश्र के अन्तर्गत विभिन्न स्थितियाँ भी सम्मिलित है।

एक परिवर्तक कोटि अवरणात्मक कोटि है—अर्थात् सामान्यतः यह इच्छानुसार उपयोजित तथा वियोजित की जा सकती है। इसके प्रकार पर निर्भर करते हुए इसे किसी भी 'मुख्य शब्द' (कोई भी शब्द, छोटी तथा विशेषीकृत वरणात्मक कोटियों को छोडकर जैसे निपात आदि) पर लागू किया जा सकता है, या अधिकतर, किसी भी शब्द पर जो किसी भी पूर्वापेक्षित बड़ी कोटि के अन्तर्गत आता हो, वह कोटि या तो वरणात्मक हो सकती है या एक अन्य परिवर्तक कोटि। भारोपीय तथा अज्तेको-तानोअन[5] भाषाओ के कारक, काल, पक्ष, अर्थ तथा परिवर्तक कोटियाँ है, जिन्हे इच्छानुसार उन शब्दो पर लागू किया जा सकता है जो उपयुक्त बडी कोटि के सदस्य है, 'कारक' संज्ञाओ की एक बड़ी कोटि के परिवर्तक है, 'काल, पक्ष और वाच्य' क्रियाओं की एक बडी कोटि के परिवर्तक है। अतः वह व्यक्ति जो केवल भारोपीय प्रकार के व्याकरणों मे दक्ष है, वह केवल वरणात्मक तथा परिवर्तक कोटियो के प्रभेदो को, शब्दभेद के अन्तर को, तथा वाच्य प्रकार के व्याकरणिक रूपो की समस्या को ही अपने समक्ष रखता है। परन्तु बहुत अधिक भिन्न प्रकार की भाषाओं में ये परिचित प्रकार के 'अर्थ' तथा 'कार्य' वरणात्मकता तथा परिवर्तकता के साथ उसी ढग से सम्बन्धित होना बन्द कर देते है, तथा व्याकरण मे नितान्त भिन्न प्रकार के गठबन्धनो का साम्राज्य हो जाता है, और जब तक इस तथ्य को मान्यता नही दी जाती, तब तक व्याकरण की एक पर्याप्त धारणा की उपलब्धि नही हो सकती.। यह आवश्यक नही कि 'पक्ष' जैसी परिवर्तक कोटियो के लिए 'संज्ञा' और 'क्रिया' जैसी बडी-बड़ी कोटियाँ बनाई जाएँ। नितिनेत (Nitinat)[6] भाषा (और शायद निकट रूप से सम्बन्धित

4. एक 'रिक्त' शब्द या प्रातिपदिक सम्भवतः व्याकरणिक अथवा वाक्यविन्यास संकेतों के लिए एक-एक नए ढंग से विशेषीकृत रूप हैं, जो एक विशिष्ट अर्थ के साथ युक्त होना स्वीकार नहीं करता। उदाहरणार्थ—इस प्रकार के रूप का किसी अन्य कोटि के 'प्रतिघात' होने के अतिरिक्त और अर्थ न हो, या वह परिवर्तक कोटि का चिह्नक मात्र हो (देखिए अगला पैरा)।

5. बी. एल. व्होर्फ तथा जी. एल. ट्रेगर, 'The relationship of Uto-Aztecan and Tanoan' *Amer Anthrop.*, 39 : 609–24 (1937).

6. देखिए Mary Haas Swadesh and Morris Swadesh, 'A Visit to the other world : a Nitinat text' *Int. J. Amer Enguistics*, 7 : 3 4 (1933)

नूत्का और क्वकुत्ल (Nootka और Kwakutl) में भी सभी मुख्य शब्दों के पक्ष होते हैं जैसे सांतत्य बोधक, क्षणिक, आरंभमाण इत्यादि। दोनों (1) run 'दौड़ने के' लिए शब्द में तथा (2) 'घर' के लिए शब्द में इस पक्ष का निर्देशन करने वाले तत्त्व मिलते हैं।

हम 'परिवर्तक' पद का प्रयोग केवल इस कोटि के विशिष्ट श्रेणीगत अर्थ तथा कार्य का द्योतन करने के लिए कर सकते हैं। अतः [अंग्रेज़ी का वर्तमान-कालिक कृदन्तीय अर्थ 'परिवर्तक' कोटि का है। हम परिवर्तक पद का प्रयोग इस प्रकार के अर्थ को उत्पन्न करने वाले व्याकरणिक व्यापार का द्योतन करने के लिए भी कर सकते हैं। अतः इससे किसी प्रकार की संदिग्धता उत्पन्न नहीं होती यदि हम इसका प्रयोग उस तत्त्व या अभिरचना के लिए भी करें जो परिवर्तक का निर्देश करती है। अतः हम कह सकते हैं कि अंग्रेज़ी में वर्तमानकालिक कृदन्तीय परिवर्तक' '-ing' प्रत्यय लगाने में है,[8] या संक्षेप में वह '-ing' है। जहाँ अधिक सूक्ष्म स्पष्टता वाञ्छनीय है वहाँ हम प्रकट निर्देशक चिह्न को परिवर्तक का एक संकेत कह सकते हैं। अन्ततः, यह प्रभेद बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, कभी-कभी एक ही परिवर्तक के कई संकेतों में भेद दिखाना आवश्यक हो जाता है। प्रकट कोटियों के उदाहरण देते समय हमने अंग्रेजी के संज्ञा बहुवचन का उल्लेख किया था जो एक परिवर्तक कोटि है। परिवर्तक अथवा बहुवचन प्रकार का अर्थ दोनों ही बहुत प्रकार के सभी उदाहरणों के प्रसंग में एक ही चीज़ हैं परन्तु वे संकेत, जिनके द्वारा यह बहुवचन परिवर्तक fish शब्द पर लागू किए जाते हैं, एक उदाहरण से दूसरे उदाहरण के प्रसंग में भी भिन्न हैं। उन संकेतों में हम '-s, es' भी जोड़ सकते हैं जिनसे fishes रूप बनता है। क्योंकि sheep deer, moose, Caribou आदि गूढ़ प्ररूप कोटि के हैं जो -s का बहिष्कार करते हैं, और मछेरों की मछलियाँ, fish जैसे trout, bass, Salmon, maekerel, cold आदि जिनका विरोध निम्न श्रेणी की मछलियों से दिखाया जा सकता है—जैसे Sharks, Skates, eels, Sculpinsek) एक अन्य प्रकार की गूढ़प्ररूप कोटि के अन्तर्गत हैं, हम उनके लिए इस अन्तिम संकेत का प्रयोग नहीं कर सकते। इस उदाहरण के अनुसार परिवर्तकों तथा संकेतों के बीच एक के साथ एक का तदनुरूप होना आवश्यक है। जहाँ इस प्रकार की 'एक के साथ एक' की अनुरूपता बड़े पैमाने पर मिलती है वहाँ यह प्रथा सी हो गई है कि उस भाषा को ऐसे 'योगात्मक' जैसे शब्द से अभिहित किया जाए जो चित्रात्मक तो है परन्तु बहुत अधिक वैज्ञानिक नहीं है। तुर्की जैसी ठेठ योगात्मक भाषाओं के विषय में ऐसा उल्लेख किया गया है, मानों उनमें एक की एक के साथ अनुरूपता हो और उनकी परिवर्तक कोटि के अतिरिक्त अन्य कोई कोटि न हो। Yana के व्याकरण में (Hokan, Stock, California) अधिकतर परिवर्तक कोटियाँ हैं, परन्तु साथ ही कुछ वरणात्मक कोटियाँ भी हैं जैसे प्रातिपदिकों का एक वर्ग जो किसी भी शाब्दिक-मिश्र के आरम्भ में आता है, तथा एक ऐसा वर्ग जो दूसरे स्थान पर आता है।

वरणात्मक कोटियो के क्रिया तथा सज्ञाओं मे इस प्रकार के अर्थगत प्रभेदों को बदले मे परिवर्तक कोटियों द्वारा भी दिखाया जा सकता है; अर्थात् सम्भव परिवर्तक कोटियो मे न केवल वाच्य पक्षादि ही सम्मिलित हैं, परन्तु क्रियाकरण और स्थिरीकरण[7] भी सम्मिलित हैं, उदाहरणार्थ yana मे जहाँ कही भी विशिष्ट प्रत्ययो का प्रयोग या सकेतो का प्रयोग किसी प्रकृति से क्रिया-पद बनाता है तब वहाँ उन्ही अर्थो मे 'क्रियाओं का वर्ग' नही होता, जिन अर्थो मे फ्रैंच, लैटिन, ग्रीक, होपी, अज्तेक, ताओस तथा नवाहो मे होता है—अर्थात् एक वरणात्मक वर्ग नही होता; वहाँ पर क्रियापदों के स्थान पर 'क्रियाकरण' होते है। सेमेटिक के तथाकथित सज्ञा और क्रियापद परिवर्तक हैं, जो अधिकतर स्वर-व्यञ्जन अनुक्रम अभिरचना वाले सकेतों द्वारा सामान्य रूप से शब्दिमों पर उपयोज्य होते हैं, यद्यपि शब्दिम सम्वन्धी उपयोज्यता की व्यापकता में कही-कही व्यवधान भी है। हिब्रू भाषा मे स्थिरीकरण के बहुत से सकेतो मे एक से e-e है, और a-a क्रियाकरण के अन्य बहुत से संकेतो मे से ,एक जैसे—berek[8] घुटना, barak वह घुटने के बल झुका, derek(सडक) darak वह चला, geber पुरुष शक्तिशाली gabar वह शक्तिशाली था; hebel धागा; habal उसने बाँधा; melek राजा; malak उसने राज्य किया, gedem पूर्ववर्ती : gadam वह पूर्ववर्ती था, vgel पैर : ragel —वह पैदल गया। इसमे सन्देह नही कि हिब्रू के बहुत से ऐसे संज्ञापद है जिनके क्रियाकरण रूप हमे लिखित रूप मे उपलब्ध नही हैं, परन्तु ऐसा अधिकतर इसलिए प्रतीत होता है, क्योकि लिखित हिब्रू, जिसका हमे ज्ञान

---

7. 'स्थिरीकरण' पद का प्रयोग उन रूपों का परिवर्तक दिखाने के लिए किया जाता है जिनका विरोध क्रियाकरण के साथ इसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार वरणात्मक कोटि के रूप में संज्ञाओं का विरोध क्रिया के साथ ऐसी भाषाओं में किया जाता है जिनमें ये विरोध उपस्थित न हों। 'स्थिरीकरण' पद का प्रयोग यहाँ पर नामीकरण या नामिकीकरण के स्थान पर किया गया है, क्योंकि ये पद रूढ़ प्रयोगों के कारण परिवर्तकों की अपेक्षा व्युत्पत्ति का संकेत देते है जबकि 'स्थिरीकरण' यह सोचने में हमारा सहायक बनता हैं कि प्रस्तुत संज्ञारूप किसी क्रिया से व्युत्पन्न नहीं हैं परन्तु केवल एक शब्दिम है जो विशेष समाकृतियों के भाग के रूप में एक विशेष सार्थक व्याकरणिक रञ्जीकरण द्वारा प्रभावित मात्र हैं।

8. क्योंकि इन हिब्रू उदाहरणों का प्रयोग केवल स्वर-अभिरचना दिखाने के लिए किया गया है , उनका अभिलेखन निकटतम रूप-स्वनिमिक लिपि में किया गया है जो ब्, ग्, क् आदि स्पर्शो का भेद दिखाने का प्रयत्न नहीं करती और न ही उन संघर्षी ध्वनियों का भेद दिखाती है जो स्वर के पश्चात् नियमित रूप में वर्णनीय परिस्थितियों में उन स्पर्शों के स्थान पर आते हैं।

है—पुरानी सजीव भाषा के सभी स्रोतों का प्रतिनिधित्व नहीं करती। अधिकतर शब्दिमों पर इन परिवर्तकों की सामान्य उपयोज्यता अरबी भाषा में अधिक दिखाई पड़ती है। परन्तु वे क्रिया-पद तथा संज्ञाएँ जो परिवर्तक कोटियों में हैं, सेमेटिक की अपेक्षा अपनी भाषाओं में अधिक मिल सकते हैं। अंग्रेज़ी शब्द-समूह दो मुख्य वरणात्मक विभागों में विभक्त हैं। एक विभाग के अन्तर्गत अधिकांश बड़े क्रियापद तथा प्रत्ययान्त शब्द हैं जिनमें 'reduce, survive, undertake, perplex, magnity, reciprocate' और वरणात्मक संज्ञाएँ जैसे instrument, elephant, longevity altruism आदि हैं। संज्ञाओं और क्रियाओं की वरणात्मक कोटियों में बहुत कम संख्या में छोटे शब्द मिलते हैं, जैसे heart, boy, street, road, town, sit, see, hear, think। अंग्रेज़ी इस वरणात्मक शब्दावली के प्रसंग में, फ्रेन्च या होपी की तरह है। शब्द-समूह का दूसरा भाग जिसमें अधिकांश छोटे परन्तु कुछ बड़े शब्द भी सम्मिलित हैं, जिनमें क्रियाकरण या स्थिरीकरण इच्छानुसार लागू किया जा सकता है: जैसे head, hand, stand, walk, exchange, sight, skin, weave, dog, surrender, massage[9] इत्यादि। शब्दावली का यह भाग अरबी की तरह है, यद्यपि सूचक चिह्न बिल्कुल भिन्न प्रकार के हैं। स्थिरीकरण के सूचक चिह्नों में आर्टिकल (उपपद), बहुवचन के चिह्न सम्बन्धवाचक सर्वनामों तथा वरणात्मक विशेषणों के अनुवर्ती होने की स्थिति आदि सम्मिलित हैं। क्रियाकरण के सूचक चिह्नों में कर्ता सर्वनाम की अनुवर्ती स्थिति, सर्वनाम से पूर्ववर्ती स्थिति, संज्ञाएँ, या स्थिरीकरण, काल-रूप, सहायक-क्रियाएँ, तथा वृत्ति सूचक निपात आदि सम्मिलित हैं।

किसी एक ही भाषा में क्रियाकरण तथा स्थिरीकरण के अर्थगत सम्बन्धों में विस्तृत विभेद हो सकते हैं। जब क्रियाकरणों का उनके समानवर्ती स्थिरीकरणों के साथ वैषम्य दिखाया जा सकता है तो क्रियाकरण कुछ इस प्रकार के विचारों को अनियमित रूप से जोड़ता हुआ प्रतीत होता है जैसे "he engagea in—उसने अपने-आप को व्यस्त किया (शिकार करने, कूदने, नाचने आदि में), "behave like'—की तरह आचार किया। (माँ, बढ़ई, कुत्ते आदि की तरह)," "be in—के अन्दर होना (कोठी, छत्ता)", "put in—अन्दर रखना (स्थान, सीट, आसन) जेब, गैरिज)","make, add, stall—बनाना जोड़ना, स्थापित करना (बुनना, पौधा, छत, नलिका, टीन), "take away—उतारना या दूर करना (छाल, छिलका, भूसा, हड्डी)," "get—प्राप्त करना (मछली, चूहा)," "use—प्रयोग करना (भाला

---

९. अंग्रेजी में विशेषणीकरण एक अन्य प्रकार का परिवर्तक है जो केवल कोरे शाब्दिक तथा वरणात्मक संज्ञाओं पर लागू किया जाता है; परन्तु कुछ वरणात्मक विशेषण भी हैं और उनका विशेष्य के रूप में परिवर्तन नहीं किया जाता है।

हथौडा, कमानी, बिगुल), जबकि स्थिरीकरण इस प्रकार के विचारो को अनियमित रूप से जोडता हुआ प्रतीत होता है जैसे "result–परिणाम (बुनना, पौधा, रूप)" "means–साधन (रौगन, पगडण्डी)," "action or place–क्रिया या स्थान (चलना, रपटना, पग धरना, गिरना)", "instrument–उपकरण (उठाना, ढँकना, बाँधना, बकसुआ, चिमटी)" आदि। कतिपय शब्दो मे यह अनियमितता या अच्छे शब्दो मे 'यह लोच' जो सेमेटिक तथा अग्रेजी मे भी पाई जाती है, वह क्रियाकरण तथा स्थिरीकरण के साधारण परिवर्तको का वैशिष्ट्य है। और इसका वैषम्य भिन्न प्रकार के अनेक परिवर्तक रखने की स्थिति से दिखाया जा सकता है, जिसमे प्रत्येक भिन्न रूप से विशेषीकृत प्रकार का क्रियाकरण या स्थिरीकरण है, जैसा कि एलास्का की एस्किमो भाषा की स्थिति से प्रतीत होता है। इसका अर्थ केवल यह है कि जिस भाषा मे साधारण प्रकार के मूलभूत परिवर्तक होते है, उसमे 'एक' शब्दिम का अर्थ पूरे वाक्य से प्रभावित रहता है तथा वाक्य द्वारा उत्पन्न सम्पृक्तार्थो और व्यञ्जनाओ की बहुमुखी सम्भाव्यताओ की दया पर निर्भर करता है।

क्या ऐसी भाषाएँ भी हो सकती है जो न केवल वरणात्मक सज्ञा और क्रियाओं के बिना हो अपितु स्थिरीकरण एवम् क्रियाकरण से भी रहित हो? निश्चित रूप से हो सकती है। विधेय या घोषणात्मक वाक्य बनाने की शक्ति तथा ऐसे परिवर्तक ग्रहण करने की शक्ति जैसे वाच्य, पक्ष, काल आदि किसी प्रारम्भिक परिवर्तक जोडे बिना ही किसी मुख्य शब्द का गुण हो सकती है। ऐसी स्थिति नितिनैत (Nitinat) तथा अन्य वाकशान (Wakashan) भाषाओ के विषय मे हो सकती है। एक पृथक् शब्द, वाक्य होता है, और इस प्रकार के शब्द-वाक्यो का अनुक्रम एक मिश्र वाक्य की तरह होता है। हम अग्रेजी भाषा मे इस प्रकार के सयुक्त वाक्य की नकल कर सकते है जैसे "There is one who is a man who is yonder who does running which traverses it which is street which elongates"—"एक व्यक्ति है जो पुरुष है जो उधर का है जो भाग रहा है जो इसे पार कर रहा है जो एक गली है जो लम्बी होती है", यद्यपि इस प्रकार के विदेशीय वाक्य में केवल विधेयात्मक शब्दिम है जैसे 'One–एक, 'Man–पुरुष, 'yonder–उधर, 'run–दौडना, 'traverse–पार करना 'street–गली, 'long–लम्बी, जिसका सही अनुवाद इस प्रकार होगा 'A man yonder is running down the long street–उधर एक पुरुष लम्बी गली मे भाग रहा है।' इस प्रकार की सरचना किसी वियोगात्मक भाषा मे नही मिल सकेगी, और नितिनैत (Nitinat) जैसी बहुसश्लेषणात्मक भाषा मे यह मिल सकती है तथा सम्भव है, न भी मिले। बहुसश्लेषणात्मक भाषाएँ कुछ शब्दिमो को मिलाकर एक बडे सश्लिष्ट शब्द मे परिवर्तित कर भी सकती है और नही भी कर सकती; परन्तु इसमे यह शक्ति तो निस्सन्देह है ही कि यह किसी-न-किसी प्रकार पक्षात्मक, वृत्यात्मक तथा सयोजक तत्त्वो को (परिवर्तकों

के सूचक चिह्नों को) मिलाकर एक कर सके। इसी प्रकार की वहुसंश्लेषणात्मक भाषा के विषय में कभी-कभी कहा जाता है कि इसमें 'सभी शब्द क्रियाएँ हैं, या सभी शब्द संज्ञा हैं, जिनमें क्रिया बनाने वाले तत्त्व जोड़ दिए जाते हैं। वास्तव में इस प्रकार की भाषाओं के सन्दर्भ में 'क्रिया' और 'संज्ञा' आदि शब्द निरर्थक हैं। यह स्थिति होपी भाषा में मौलिक रूप में भिन्न है, क्योंकि, यद्यपि होपी में, 'le! na–यह बाँसुरी है', और 'pe! na–वह इसे लिखता है, दोनों ही पूर्णवाक्य हैं, वे ऐसे शब्द हैं जो वाक्य की सभी स्थितियों में समानरूप से विधेयात्मक नहीं हैं, और उनका सम्बन्ध साधारणतया भिन्न विभक्ति प्रत्ययों को ग्रहण करने वाली क्रियाओं और संज्ञाओं की वरणात्मक अप्रकट कोटि से है, और वे केवल किसी एक विशेष प्रकार के वाक्य में समान दिखाई पड़ते हैं। होपी में क्रिया संज्ञा का विभेद वरणात्मक आधार पर महत्त्वपूर्ण है, अंग्रेज़ी में यह परिवर्तक आधार पर महत्त्वपूर्ण है तथा नितिनैत (Nitinat) भाषा में इसका अस्तित्व ही प्रतीत नहीं होता।

अब तक हमने उन्हीं कोटियों का विवेचन किया है जो समाकृति तथा अर्थ की दृष्टि से विशिष्ट हैं तथा व्याकरण के विशेष सूत्र हैं। परन्तु ऐसे शब्द समूह भी मिलते हैं जो समाकृतिक रूप से भिन्न हैं परन्तु फिर भी उनके अर्थों में कोई भेद नहीं, उन्हें हम समशब्दार्थ वर्ग (Iso-semantic) या शुद्ध रूप से रूपात्मक वर्ग कहेंगे। वे पुन: दो प्रकार के हैं जिन्हें अर्थगत कोटियों के अन्तर्गत वरणात्मकों और परिवर्तकों के अनुरूप माना जा सकता है; परन्तु यहाँ पर उन्हें अच्छे शब्दों में वरणात्मक एवम् विकल्पी कह सकते हैं। वरणात्मक समशब्दार्थ वर्ग का प्रतीकीकरण 'शब्द-रूपों' और 'धातु-रूपों' द्वारा किया जाता है, जो कि संसार भर में भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ हैं, और जिनका विशेष विकास लैटिन, संस्कृत, होपी, तथा माया भाषा में हुआ है, परन्तु इनका कम विकास सामी, अंग्रेज़ी (अनियमित तथा नियमित क्रियाओं में) तथा अज्तेक में हुआ, तथा दक्षिणी पैउते (Paiute) में इनका बिल्कुल अभाव है। उनमें अर्थ-भेद रहित लिंग की तरह की श्रेणियाँ भी सम्मिलित हैं, जैसा कि बाण्टू और लाओस के कुछ लिंगों में (इन सब को सार्वनामिक अन्विति आदि से युक्त शब्दरूप कहा जा सकता है), तथा वे वर्ग, जिन्हें वाक्य में भिन्न स्थितियाँ अपेक्षित हैं, या वे मिश्र, जिनके अर्थ-प्रकारों में अन्तर नहीं है (अल्गोन्कियन में प्रकृति की स्थिति वाले वर्ग), वे वर्ग जिनमें अर्थ के प्रकारों में अन्तर के बिना एक ही परिवर्तक के लिए भिन्न सूचक चिह्नों की अपेक्षा हो जैसे हिब्रू the segholate (e-e) 'संज्ञाएँ' तथा समानान्तर स्थिरीकरण वर्ग सम्मिलित हैं। विकल्पी समशब्दार्थ वर्ग अपने नाम के अनुरूप हैं, जैसे अंग्रेज़ी में 'don't', 'Won't', 'Shan't', 'Can't', आदि का वर्ग तथा 'do not', 'will not', 'shall not', 'cannot', आदि का वर्ग। इस विषय में संक्षेप, सुविधा या बोलचाल की शैली आदि के परिवर्तकों की बात कर सकते हैं जिनका प्रयोग पूर्ववर्ती वर्ग में किया

गया है। विकल्पी वर्ग व्याकरणिक भिन्नता की अपेक्षा शैलीगत अन्तर अधिक व्यक्त करता है। अन्य विषयो मे सामान्य नियम का रूप देने योग्य कोई अन्तर प्रतीत नही होता, जैसे अग्रेज़ी में 'electrical, cubical, cyclical, historical, geometrical' के मुकाबले 'electric, cubic, cyclic, historic, geometric' आदि मे।

एक अन्य प्रकार का प्रभेद शेष रहता है: सामान्य कोटियो और विशिष्ट कोटियो का। एक विशिष्ट कोटि एक भाषा मे मिलने वाला व्यष्टि वर्ग है जैसे अग्रेजी मे कर्मवाच्य, होपी में खण्डात्मक पक्ष। वर्गीय कोटि किसी विशेष भाषा मे लागू होने वाले सीमित अर्थो के समान अथवा परिपूरक प्रकार के वर्गो को मिलाकर बनाई गई एक क्रम परम्परा है, जैसे लैटिन मे कारक और होपी मे 'वाच्य'। इस विषय में नियम विधायक या वैयाकरण की अभिरुचि एवम् अन्तर्दृष्टि पर बहुत कुछ निर्भर करता है क्योंकि विशिष्ट कोटियो को तर्कसगत योजनाओ मे नियमित करना सरल हो सकता है, तथापि वाञ्छनीय यह है कि वर्गीय कोटियाँ उन व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करे जो स्वय भाषा मे मिलती हो। हम वैयाकरण की व्यवस्थापन शैली पर तब ठीक ही सन्देह कर सकते हैं जब उसका व्यवस्थापन Enantomorphism प्रतिबिम्ब रूपवाद से व्याप्त हो जैसे एक विरोधी को प्रत्येक कोटि के साथ युग्मन करना जो उसका अभावमात्र भी हो सकता है। उन विशिष्ट कोटियो को, जो प्रतीयमान रूप मे विरुद्ध अर्थवाली हो जैसे कर्मवाच्य और कर्तृवाच्य (जब कर्तृपद का अर्थ केवल अकर्मवाची हो) एक सामान्य कोटि मे रखना चाहिए (जिसे वाच्य कह सकते हैं) लेकिन केवल तभी जबकि वे दो से अधिक हो या तब जब वे केवल दो हो, तथा सामूहिक रूप से वे एक इकाई के रूप मे रूपो की किसी अन्य व्यवस्था से विरोध प्रकट करती हो।

अन्ततः कुछ और अधिक विस्तृत अर्थों में वर्गीय कोटियो का सूत्रीकरण कुछ इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे व्याकरण के सामान्य विज्ञान की धारणाओ के सदृश हो। ऐसी कोटियाँ समूहन द्वारा बनाई जा सकती है जो हमे विभिन्न भाषाओ मे समान विशिष्ट कोटियाँ प्रतीत होती है। केवल इस प्रकार के अर्थो मे ही हम 'कर्मवाच्य' की कोटि की बात कर सकते है जिसमे उन सभी रूपो का समावेश हो जाएगा जिन्हे अग्रेजी, लैटिन, अज्तेक और दूसरी भाषाओ मे इसी नाम से अभिहित किया जाता है। ऐसी कोटियो या धारणाओ का हम वर्णनात्मक कोटियो से विरोध प्रकट करने वाली वर्गिकी (Taxonomic) कोटियाँ कह सकते हैं। वर्गिकी (Taxonomic) कोटियाँ प्रथम श्रेणी की हो सकती हैं जैसे कर्मवाच्य, कर्मकारक, या दूसरी श्रेणी की जैसे वाच्य और कारक। कदाचित् दूसरी श्रेणी वाली अधिक महत्त्वपूर्ण है और अन्ततः भाषायी धारणाओ के रूप मे अधिक मूल्यवान है, विशेष रूप से बडी से बडी व्यवस्थित रचनाओं के सामान्यीकरण के रूप मे—जबकि भाषा का विवेचन एवम् विवरण समस्त मानव-जाति के सदर्भ में किया जाता है।

होपी भाषा-विज्ञान का विवेचन*

320 बॉलकॉट हिलरोड
वेदर्जफील्ड कॉन

प्रिय जॉन,

तुम्हारी यह जानने में दिलचस्पी होगी कि अमरीकी भाषा-विज्ञान की समस्याओं पर दो घण्टे प्रति सप्ताह व्याख्यान देने के लिए मुझे येल विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग में जनवरी से जून 1938 तक के सत्र के लिए अंशकालिक प्राध्यापक पद पर नियुक्त कर लिया गया है। शरत् सत्र में इसी श्रेणी को मेरे सहयोगी श्री जार्ज एल ट्रेगर ध्वनिकी पढ़ायेंगे, अत: मैं ध्वनिकीय या ध्वनिमीय समस्याओं पर अधिक समय लगाने की योजना नहीं बनाऊँगा। मैं अपने व्याख्यानों को मुख्यत: मनोवैज्ञानिक दिशा में ले जा रहा हूँ और तथाकथित प्राचीन संस्कृतियों की अर्थ, विचार, एवं धारणा सम्बन्धी समस्याओं की ओर मोड़ रहा हूँ। इन व्याख्यानों में भाषायी खोज की उन प्रणालियों पर बल दिया जायेगा जो किसी विशेष भाषायी वर्ग के अमरीकी-इण्डियनों के चित्तीय उपकरणों या अपरिवर्तनशील दृष्टिकोणों के विषय पर कुछ प्रकाश डाल सकें। मैं मानसिक (mental) के बदले चित्तीय 'Psychic' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि यहाँ 'भाव' तथा 'विचार' के उस स्वरूप पर विचार किया जाएगा जो केवल भाषायी है। मैं भाषायी अभिरचनाओं के माध्यम से कच्चे अनुभवों को विचारों के सुसंगत एवं सरलतापूर्वक कथनीय क्षेत्र में व्यवस्थित करने के विषय पर काफी अधिक ध्यान देने की आशा रखता हूँ। कुल मिलाकर, मैं कुछ ऐसी धारणाएँ प्रस्तुत करने की आशा रखता हूँ जो सांस्कृतिक मानवशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के लिए कुतूहल उत्पन्न करने वाली हो सकती है, तथा मुझे अपने विद्यार्थियों में से इन दोनों शास्त्रों के उदीयमान प्रतिपादक प्राप्त हो सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम के लिए सामग्री तैयार करने में जो भी सहायता आप या आपका विश्वविद्यालय मुझे दे सकेगा, उसे प्राप्त करके मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, क्योंकि मैं

* निम्नलिखित लेख जो अब तक अप्रकाशित रहा है, मुझे लिखे गए एक पत्र का प्रारूप है। यह पत्र मुझे सन् 1937 के शरद् सत्र में उस समय लिखा गया था जब मैं मिनेसोटा विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का विद्यार्थी था। यद्यपि हस्तलिखित प्रारूप का कुछ अंश टाइपराइटर पर एक कार्बन कापी सहित नकल किया गया था, परन्तु यह स्पष्ट है कि यह कभी भेजा नहीं गया था, क्योंकि यह मुझे कभी नहीं मिला। यह हस्तलिखित प्रारूप परिवार के कागज-पत्रों में मिला था।

जानता हूँ कि आप और आपका विश्वविद्यालय भाषायी मनोवैज्ञानिक प्रणालियो मे रुचि रखते है। मैं यहाँ उन धारणाओ की रूपरेखा प्रस्तुत करना चाहूँगा जिन पर मैं काम कर रहा हूँ, और जो होपी भाषा पर आधारित हैं, अतः स्वाभाविक है कि मैं उदाहरणो के लिए इसी पर अधिक निर्भर करूँगा, यद्यपि मैं अज्तेक तथा माया भाषाओ पर भी कुछ समय लगाने की आशा करता हूँ। इन सामान्य समस्याओ की भूमिका क्रियापदीय रूप-विज्ञान की होपी कोटियो के विश्लेषण मे मिल सकती है, विशेष रूप से उनके विश्लेषण में जिन्हें हम सुविधा के लिए 'पक्ष' तथा 'काल' कह सकते है; यद्यपि इनका जो अर्थ श्रेण्य कालीन भारोपीय भाषा-विज्ञान मे लगाया जाता है, ठीक वह अर्थ होपी भाषा के लिए ग्रहण नही किया जा सकता। हमारे पास दो पृथक् रूपिमीय कोटियाँ हैं, जिनके प्रत्यय भिन्न रूप से व्यवहार करते है, तथा उनके स्थान भिन्न हैं, काल-प्रत्यय, वाच्य-प्रत्यय से परे आता है। इसमे तीन काल है : भूत (अर्थात् वर्तमान तक, तथा वर्तमान को सम्मिलित करने वाला भूत), भविष्य, तथा सामान्यीकृत (जो सामान्य रूप से व्यापक रूप से या कालातीत रूप से सत्य है) तथा सभी परस्पर व्यावर्तक हैं। इनमे से यहाँ केवल भविष्य के (–ni) प्रत्यय पर ही विचार किया जायेगा। इसके अर्थ की पहली निकट समानता अंग्रेज़ी के भविष्य से है। इस भाषा मे नौ पक्ष हैं जिनमे से मैं केवल आरभमाण (–va) तथा प्रक्षेपी (–to) पर मुख्य रूप से विचार करूँगा। Punctual पक्ष सरल धातुओ का पक्ष है (ऐसी प्रकृति जो प्रत्यय-रहित है, तथा उसमे किसी अन्य प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है), भूतकाल 'सरलरूप'' का काल है। आरभमाण के अर्थ की पहली निकटता अग्रेजी मे begins doing (करना आरम्भ करता है) से है (मैं होपी भूतकाल का अनुवाद अग्रेज़ी के वर्तमान द्वारा करूँगा) और प्रक्षेपी की समीपतम अभिव्यक्ति अग्रेजी मे "does with a forward movement है, (अग्रसरी गति के साथ करता है)। बाद मे मैं पुरोगत्यात्मक परिणामी या वर्धमान रूप—iwma का उल्लेख करूँगा। pyma प्रत्ययान्त एक अन्य आरभमाण की तरह का पुरोगत्यात्मक रूप है, परन्तु मैं इसे सम्मिलित नही करूँगा क्योकि इसके स्पष्टतया भिन्न अर्थ है; (is well on the way to getting it done) 'इसे करवा लेने की दिशा मे अग्रसर है।'

अग्रेजी के 'begins doing it' (करना आरम्भ करता है) का होपी भाषा मे अनुवाद करने के लिए बहुत सी भिन्न धातुओं के प्रयोग करने पर हमे पता चलता है, कि जहाँ होपी भाषा अधिकांश धातुओं के लिए आरभमाण का प्रयोग करती है, वह कुछ अन्य धातुओ के लिए प्रक्षेपी का भी प्रयोग करती है, और बहुत-सी धातुओ के लिए यह पक्ष कोटि से पूर्णतया बाहर जाकर 'भविष्य' काल का प्रयोग करती है (काल-विन्दुनिष्ठ का अथवा अनिर्दिष्ट पक्ष का प्रयोग करती है)। प्रयोग सुसगत है, तथा क्रिया के रूपात्मक प्रकार (Conjugation धातुरूप-प्रक्रिया) पर आश्रित नही है। विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि यह बडे विचित्र ढग से धातु के शाब्दिक अर्थ का अनुसरण करता है। अकस्मात् एक प्रश्न सम्मुख उपस्थित होता है। क्या कारण

है कि एक विशेष अभिरचना (begins doing it), 'करना आरम्भ करता है', जो हमे पूर्णतया एक रूप प्रतीत होती है, तथा सभी सदर्भो मे से एक सी प्रकृति वाली दिखाई देती है, तो वही द्विभाषी, अग्रेजी-भाषी होपी सूचक के समक्ष एक ऐसे 'अर्थ' के रूप में उपस्थित होती है, जो उसकी अपनी भाषा की दो (या अधिक) मौलिक अर्थ-कोटियो के मध्य इधर-उधर परिवर्तनशील होती रहती है। यह भी उल्लेखनीय है कि लगभग सभी उन स्थानो पर जहाँ आरम्भमाण का प्रयोग (begins doing), "करना आरम्भ करता है" के लिए किया गया है वहाँ होपी न केवल-va प्रत्यय का अपितु एक अभ्यास का भी प्रयोग करती है। अभ्यास का अर्थ (Punctual) काल-बिन्दुनिष्ठ पक्ष का सातत्यीकरण है और वह एक अधिक विस्तारित प्रक्रिया को द्योतित करने के लिए है। अतः वह प्रक्रिया के आरम्भ का द्योतन करने वाले रूप की तर्कसंगत पूर्वापेक्षा है, परन्तु फिर भी जहाँ प्रक्षेपी अथवा भविष्यकाल begins doing का अनुवाद करते है तो वहाँ 'अभ्यास' का प्रयोग नही किया जाता। यह तथ्य इस धारणा की पुष्टि करता हुआ प्रतीत होता है कि होपी-प्रेक्षक घटनाओ को अग्रेजी मातृभाषी की अपेक्षा एक भिन्न प्रकार से देखता है।

अतः इन अभिव्यक्तियो मे जैसे—लिखना, साँस लेना, सोना, उड़ना, लुढकना, हँसना, लडना, धूम्रपान करना, गाना, तैरना, मरना, देखना, इसे[1] उछालना, इसे मोडना, इसे खोदना, इसे खाना, इसे तोडना, इसे फाड़ना, इसे मारना, इसे बान्धना, इसे एकत्रित करना, इसे उठाना, इसे झुकाना, इसे अन्दर रखना, इसे नीचे रखना, इसे ऊपर उठाना आरम्भ करता है। आरभमाण (अभ्यसित प्रकृति पर –va) प्रयुक्त होता है। 'दौडना (आरम्भ करता है), चल पड़ना, भागना, घर की ओर जाना, दूर जाना, किसी स्थान पर जाना, ऊपर (या नीचे) जाना, बात करना, इसे खोलना, तीर छोडना, इसे चलाना (कार), किसी स्थान मे (या पर) होना आरम्भ करता है' आदि के साथ भविष्य का प्रयोग होता है। अतः दौड़ेगा, चलेगा, भाग जाएगा इत्यादि के लिए भी वैसे ही रूप बनेंगे। ऐसी अभिव्यक्तियो मे जैसे बाहर जाना (आरम्भ करता है) अन्दर जाना, आना (या होपी मे पहुँचना) नीचे गिरना, अन्तराल से गिरना, (एक भिन्न धातु) चक्कर मे चलना, मुडना, घूमना, फूट पड़ना (अकर्मक), उलट जाना, बिखरना, आरम्भ करता है, आदि के लिए प्रक्षेपी पक्ष का प्रयोग होता है। "Does with a forward movement" अग्रसरी गति द्वारा करता है—इनमे से अधिकाश के लिए उचित प्रतीत होता है, परन्तु यह बात स्पष्ट नही है कि यह दूसरे वर्गों के धातुओ के लिए भी उचित क्यो नही है, न ही यह स्पष्ट है कि इस तीसरे वर्ग में अग्रेजी के 'begins doing' (करना आरम्भ करता है) का यह आवश्यक अनुवाद क्यो है, सूचक स्वय किसी प्रकार का स्पष्टीकरण नही दे सकता।

---

1. it (इसे) एक सकर्मक क्रिया का द्योतन करता है, जिसे एक अन्तर्निहित या अभिव्यक्त कर्म की अपेक्षा रहती है।

इस प्रकार के तथ्यो से, जो केवल आरभमाण की समस्या तक ही सीमित नही है अपितु समस्त होपी व्याकरण मे व्याप्त है, मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि होपी-भाषी के लिए प्रत्येक वर्ग के क्रियापदीय प्रयोगो के बीच एक मद्धम रूप मे अनुभूत समानता का ऐसा सम्बन्ध है जिसका उनके अर्थो के अप्रकट पक्षो से कुछ प्रयोजन है, अतः वह स्वय ही एक अर्थ है, परन्तु वह चेतन चिन्तन की देहली के इतने निकट ऊपर या नीचे है कि उसे प्रयोग करने वाला अपने शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकता और उसका अनुवाद भी सम्भव नही और आगे विश्लेषण करने का मेरा प्रयोजन इस मद्धम रूप से अनुभूत, कठिनाई से चेतन (या अचेतन भी) अर्थों की प्रक्रिया को स्पष्ट करने, उनके वैशिष्ट्य बताने तथा समझने का है। इस प्रकार के दुर्ग्राह्य, गुप्त परन्तु क्रियात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण, अर्थ को मैं Cryptotype 'गूढ प्ररूप' कहता हूँ।

अतः मैं कहना चाहूँगा कि उन होपी प्रकृतियों का अर्थ, जिनका अनुवाद 'लिखते रहना, साँस लेते रहना, सोते रहना, इसे तोडते रहना' आदि होता है, इसलिए समान है कि उन सबमे गूढ प्ररूप 'क' है, जबकि दौडना, चलना, घर की ओर जाना, इसे खोलना, इत्यादि मे गूढ प्ररूप 'ख' है, और अन्दर जाना, गिरना, मुडना आदि मे गूढ प्ररूप 'ग' है। प्रत्येक समस्या के लिए अक्षर द्वारा अकन (क इत्यादि) काम चलाऊ एवं परिवर्तनशील है। गूढ़ प्ररूप, जो एक ऐसी कोटि है जिसका कोई रूपात्मक चिह्न नही, तथा जिसका अर्थ स्पष्ट रूप से प्रकट नही है, परन्तु वह एक प्रभाव मात्र के रूप मे दिखाई देने वाला अर्ध-प्रच्छन्न अर्थ है। उससे वैषम्य दिखाने के लिए मैंने आरंभमाण भविष्य और प्रक्षेपी आदि कोटियो को Phenotype 'प्रकट प्ररूप' का नाम दिया है, अर्थात् प्रकट प्ररूप एक प्रसिद्ध रूपिमीय कोटि है जिसका एक रूपात्मक चिह्न होता है और उस वर्ग का स्पष्ट रूप से प्रकट अर्थ होता है। प्रस्तुत समस्या के संदर्भ मे योजनाबद्धता के प्रयोजनार्थ हम आरभमाण, भविष्य, प्रक्षेपी को प्रकट प्ररूप 1, 2, 3 कह सकते है। यह भी विवेचन किया जाएगा कि होपी जैसी भाषा में व्याकरणिक रूपो के अर्थ गूढ़ प्ररूप तथा प्रकट प्ररूपो के पारस्पारिक प्रभावों के फलस्वरूप द्योतित होते है, केवल प्रकट प्ररूपों द्वारा नही। यह धारणा होपी को छोड़ अन्य बहुत सी भाषाओ पर लागू होती है। भाषा-विज्ञान ने अब तक पूर्णतया प्रकट प्ररूपों का ही अध्ययन किया है। गूढ प्ररूपो का अध्ययन भाषा-विज्ञान के एक अधिक मनोवैज्ञानिक पक्ष का उद्घाटन करता है।

अब तक हमारे पास तीन प्रकार के 'begin' (आरम्भ करना) रूप हैं, क 1, ख 2, ग 3। यदि हम 'begins-ing' को 'begin to be-ing' के बराबर मान ले (जो होपी मे एक ही प्रकार अनूदित होते है) और फिर begin to be—', की ओर ध्यान दे, जहाँ—एक –ing रूप नही है अपितु या तो (अ) एक विशेषण है, अथवा (ब) एक भूतकालिक कृदन्त है, तो हमे एक दिलचस्प भेद का पता चल जायेगा। जैसे begins to be sweet, etc मीठा होना, लाल होना, सफेद होना, नीला होना, गरम होना, बड़ा होना, छोटा होना, अच्छा होना, गोल होना-आरम्भ

होता है, इत्यादि एक विश्लेषण के साथ एक नया प्रकट प्ररूप (4) अर्थात् एक नया आरभमाण प्रकार का रूपिम प्रकट हो जाता है। अव–iwma जैसे प्रत्यय-युक्त एक रूप का प्रयोग होता है। यह रूप वाच्य और पक्ष का एक सयोग है : परिणामात्मक वाच्य (परिणामस्वरूप मीठा है) जमा वर्धमान पक्ष –ma (गतिशीलता के साथ करता है, या गौण रूप से एक स्थिति अथवा अवस्था मे या अवस्था की ओर "निकल जाता है" अथवा "चला जाता है")। (व) के विषय मे, जैसे "begins to be torn" फाडा जाना, उछाला जाना, खोदा जाना, काटा जाना, लिखा जाना आरम्भ होता है इत्यादि, मे यह वात अन्तर डालती है कि 'अवस्था' को परिणामात्मक माना जाए अथवा कर्मवाच्य, अर्थात् क्या जो आरम्भ हो रहा है, वह एक फटी हुई अवस्था है जो प्रकट प्ररूप (4) का प्रयोग करती है, या जो कुछ आरम्भ हो रहा है। वह एक फाडने की क्रिया है जो एक निष्क्रिय विषय पर घटित हो रही है, जो (2) भविष्य (भविष्यकाल–ni) जमा कर्मवाच्य के प्रत्यय का प्रयोग करती है। यदि किसी प्रकार गूढ प्ररूप 'ग' उपस्थित है, तो रूप ग 3, (प्रक्षेपी–to) है जैसे पहले विषय मे कर्मवाच्य के अर्थ के विना अर्थात् (begins to be split open) फट निकलना, घूमना, विखरना, आरम्भ करता है, यद्यपि यहाँ निश्चित रूप से परिणामात्मक अर्थ देने के लिए–iwma रूप का प्रयोग सम्भव है। इन सभी—begins to be– रूपो मे हम एक अन्य गूढ प्ररूप 'घ' देखते है जो 'क' एव 'ख' दोनो के अर्थो का तथा साथ मे साधारण वर्णनात्मक विशेपण को भी सम्मिलित कर लेने पर स्पष्टतया कर्मवाच्य-परिणामात्मक पक्ष है। 'घ' दो आरभमाण प्रकट-प्ररूपो 4 या 2 का प्रयोग कर सकता है। प्रकट प्ररूप 4 वास्तव मे वर्धमान पक्ष–ma है, iwa– परिणामात्मक वाच्य का चिह्न है जो 2 के साथ प्रयुक्त कर्मवाच्य के चिह्न के समान है। हमने घ 4, घ 2, प्रकार और जोड दिए है।

अब यह वात उल्लेखनीय है कि 'घ' का क, ख, ग के साथ ऐसा ही विरोध है जैसे अकर्तृवाच्य का कर्तृवाच्य के साथ। क, ख, ग कर्तृवाच्य होने के कारण समान है, अर्थात् वास्तविक क्रिया तथा परिवर्तन होते हुए दिखाई देते है, या फिर यह एक सजीव अवस्था है, एक जीवन-प्रक्रिया है, जो सोने जैसी क्रिया मे दिखाई जाती है, (हमारे दृष्टिकोण से) केवल एक ही अपवाद है 'किसी स्थान मे होना' जो बहुत सम्भव है कि एक वास्तविक अपवाद नही है, परन्तु उसी विचार का एक पक्ष है। उद्देश्य का "कार्य" कर्ता की तरह है, यदि कर्ता कुछ भी नही करता है तो भी उसे स्थान पर होना चाहिए– यही एक विचार क, ख, और ग मे सामान्य रूप से मिलता है। 'घ' मे कर्ता का कार्य उस निष्क्रिय पदार्थ की तरह है जो किसी विशेप अवस्था अथवा गुण को प्रदर्शित करने के काम आता है। सम्भवत. यह कहा जा सकता है कि पहले विषय मे उद्देश्य को प्रेरणार्थक कर्ता माना जाता है जिसे मै 'Verbation' 'क्रियाकरण' कहूँगा, अर्थात् क्रिया द्वारा अभिव्यक्त आविर्भूत (क्रिया, व्यापार, अवस्था, दशा, स्थिति, सम्बन्ध इत्यादि)।

हम अब भी क, ख, ग गूढ प्ररूपो के बीच अन्तर का स्पष्टीकरण नही कर सकते, 'परन्तु यहाँ गूढ प्ररूपीय अर्थो का एक पक्ष दिखा दिया गया है, कर्तृ-अकर्तृ या प्रेरणार्थक : अप्रेरणार्थक का विरोध होपी भाषा मे प्रकट प्ररूपो के रूप मे प्रकट होता है। परन्तु गूढ प्ररूपीय विरोध के रूप मे यह बाह्य रूप का नियन्त्रण करने के लिए निर्णायक है।

यदि हम 'begins to do' के होपी रूप देखे तो 'begins doing' के रूप की तुलना मे स्पष्ट अन्तर प्रतीत होगा। यहाँ पर होपी AL के आरम्भमाण पक्ष के रूपो से अभ्यास रूप को छोड देता है। स्पष्ट है कि होपी अनुभव करता है कि –ing रूप भावार्थकसज्ञा से कही अधिक विस्तारित प्रक्रिया को द्योतित करता है। तथापि, 'ख' गूढ प्ररूपो का अनुवाद उसी प्रकार होता है : अर्थात् –ni का प्रयोग दोनो 'begins moving' तथा 'begins to move' के लिए। 'ग' भी उसी प्रकार है अर्थात् to का प्रयोग 'begins going out' तथा 'begins to go out' के लिए। परन्तु इसके अतिरिक्त, क गूढ प्ररूप अब प्रकट प्ररूप 2 (–ni) तथा का भी प्रयोग कर सकता है, दोनो रूप एक ही प्रक्रिया के लिए एक ही अनुवाद के लिए सम्भव है। कुछ रूपो मे अर्थ का एक हल्का सा अन्तर उभर आता है। हमने एक और प्रकार क 2 जोड दिया है जिसके अर्थ मे अभ्यसित क 1 के अर्थ से हल्का सा अन्तर है। यह अन्तर पहचानना बडा कठिन है परन्तु कतिपय उदाहरणो मे दिखाया गया है और अनुमानतः प्रकट-प्ररूपी –ni तथा –va (और गूढ प्ररूपी नही है) के अन्तर से सम्बन्धित है।

गूढ प्ररूप, 'क', 'ख', 'ग', पर लौटते हुए हम देखते है कि : 'क' तथा 'ख' इस तथ्य के कारण परस्पर सम्बन्धित है कि 'क'–ni तथा –va' दोनो का प्रयोग करता है जबकि 'ख' केवल –ni का प्रयोग करता है। अतः सम्भवतः 'ग' का कोई वैशिष्ट्य है जो –va तथा –ni को अनुपयुक्त बनाकर –to की अपेक्षा करता है। 'घ' विशिष्ट रूप से अकर्तृ या अकारणात्मक है तथा इसके विरोध मे क, ख, ग तीन भिन्न प्रकार की क्रियाशीलताओ या कारणताओ का प्रतिनिधित्व करते है। स्पेस-सम्बन्धात्मक कुछ रूपो तथा कतिपय अन्य रूपो को छोडकर कारणता वैसी ही हो जाती है जैसी क्रियाशीलता। होपी के जिन भाषायी विचारो तथा दृष्टि-कोणो को मै समझ पाया हू उन सब की सहायता से एक दीर्घकालीन पुनरीक्षण तथा विश्लेषण के पश्चात् मैं इन क, ख, ग गूढ प्ररूपो के निम्नलिखित लक्षण प्रस्तुत करने मे सफल हुआ हू। 'ख' एक क्रियाशीलता है, जिसके आरम्भ का यह आशय होता है कि वह (क्रियाशीलता के) एक विशिष्ट वास्तविक मात्रा मे सुरक्षित बनी रहेगी, जिसकी प्रारम्भिक गति विषय अथवा कर्ता द्वारा प्रेरित की गई थी। 'ख' उन कार्यो का प्रतिनिधित्व करता है जो कर्ता द्वारा प्रारम्भ किए गए आवेश से उद्भूत है, परन्तु अनिवार्य रूप से ऐसे सभी कार्य नही—केवल वही, जिसमे आवेग द्वारा प्रेरित किसी तथ्य का पहला प्रारम्भ तुरन्त ही परिपूर्णरूप मे क्रियाशीलता

को प्रकट करता है, एक ऐसा रूप जिसके लिए सातत्य का अर्थ केवल कुछ अधिक समय जोडना है परन्तु और अधिक विकास करना नही है, न ही उस रूप को निरन्तर रूपान्तरित करना है। लगभग सभी उदाहरणो मे हम 'आवेग' के स्थान पर 'साकल्पिक आवेग' या सकल्प पढ सकते है, या निर्जीव कर्ता मे 'वास्तविक', या 'उसमें अनुभव किया हुआ' एक विरल रूप मे घटित होने वाला निर्जीव कर्ता (समझ सकते है)। अत. इस प्ररूप मे आत्मनिष्ठ रूप से निर्धारित प्रकार की समरूप गति सम्मिलित है जैसे दौडना, भाग जाना, तथा विभिन्न प्रकार का 'जाना'। अत. यह कहने के लिए—कि "वह दौडना आरम्भ करता है" क्रियाशीलता अपने-आप को दौडने के सफल रूप में पहले ही अवश्य दिखा चुकी होगी, जो इसके बाद किसी तरह अवस्थित नही किया जाएगा, परन्तु 'जैसा है वैसा ही' बना रहेगा। Being 'होना', अर्थात् होपी मे एक 'स्थानीय' सम्बन्ध जैसे—मे, पर, ऊपर, साथ-साथ, नीचे, साथ—इत्यादि का क्रियाकरण उसी श्रेणी मे रखा गया है जिसमे 'दौडना'। बहुत कम सकर्मक क्रियाएँ उस श्रेणी मे सम्मिलित की गई है जिसमे कर्ता अपने आवेग को तुरन्त विषयभूत पदार्थ पर इस तरह स्थानान्तरित करता है कि इसका क्रियाशील रूप तुरन्त ही पूर्णरूपेण प्रकट हो जाता है। अत 'वह इसे खोलता है' (कितना कम खोलता है यहाँ इस बात का कोई महत्त्व नही, यह खुला है और अब बन्द नही है), 'इसे बन्द करना' इसी प्रकार के विपरीत व्यापार के रूप मे वर्गीकृत किया गया है (किसी अवरोधक का खुले स्थान पर आ जाना एक प्रकार से बन्द करने की आंशिक क्रिया है, जिसे जहाँ तक सम्भव है, उस स्थिति मे बनाए रखना है, और सातत्य के द्वारा उसमे परिवर्तन नही लाया जाएगा), इसी प्रकार 'तीर छोडना' भी है।

'क' तथापि एक क्रियाशीलता है, जिसके आरम्भ का अर्थ पहले एक आवेग अथवा प्रवृत्ति के फलस्वरूप अपने-आप को क्षण भर के लिए भी बनाए रखने का नही है। यदि पहले ही आवेग का दृढीकरण न किया जाए तो हसी एक हसी न होगी, लेखन भी लेखन न होगा, अधिक से अधिक वह एक चिह्न होगा, या लेखनी का पकडना मात्र होगा, तोडना, तोडना नही होगा अपितु एक खिचाव मात्र होगा। कार्य-व्यापार की अनुभूति घटनाओ की विकासशील शृखला के रूप मे होती है, या कार्य करने के सकल्प के क्षणिक से अधिक अनुप्रयोग द्वारा यह कर्ता की एक अनुवर्ती प्रकार की सहमार्गता है जो क्रिया के लिए अपने आदर्श रूप मे क्षण भर भी स्थापित होने के लिए आवश्यक है। 'क' के कुछ अर्थ पहले पहल इसी दृष्टिकोण से विचित्र रूप मे चुने गए प्रतीत होगे, परन्तु इस विषय पर थोडा सा भी चिन्तन प्राय होपी गूढ प्ररूपी अर्थो मे एक अनोखी अन्तर्दृष्टि प्रकट करता हुआ दिखाई देगा। अतः होपी द्वारा 'सोना' ऐसे वर्ग मे रखा गया है मानो वह सोने को एक दशा मानता है जिसमे व्यक्ति एक निरन्तर अनुकूलन द्वारा विकसित होता है, ऐसी दशा नही जिसमे उसने अपने-आप को फेक दिया हो, या प्रवर्तित किया हो, जबकि 'दौडना' और 'बात करना' ऐसी दशाएँ मानी जाती है जिनमे कर्ता अपने-आपको फेकता है,

या प्रवर्तित करता है, उसमे वह विकसित नही होता न ही समजित या अनुकूलित होता है। केवल कुछ विशिष्ट क्रियाओ को छोडकर 'ख' की सभी सकर्मक क्रियाए 'क' तरह की मानी जाती हैं—किसी विषय को प्रभावित करने के लिए उसके साथ समजन करना आवश्यक है। अत: गूढप्ररूपी 'क' तत्वत. गतिशील या प्रतीकात्मक ढग से गतिशील धारणा है, भले ही यह विश्रान्ति की दशा-निर्देश करता हो, और कर्ता से गतिशीलता प्रस्फुटित होती हो। गूढ प्ररूप 'ख' सक्रिय है या प्रतीकात्मक ढग से सक्रिय है, परन्तु गतिशील नही, कर्ता एक समरूप गति की दशा में या इसकी प्रतीकात्मक रूप से समान अवस्था मे फेक दिया जाता है और वही छोड दिया जाता है।

गूढ प्ररूप 'ग' एक 'क्रियाशीलता' है, (सदैव अकर्मक) जिसमे कर्ता को केवल आरम्भिक अवस्था मे रखने मात्र की आवश्यकता है, ताकि वह स्वाभाविक प्रवृत्ति द्वारा पकड लिया जाए और वह कुछ न करने पर भी आरम्भिक अवस्था से दूर ले जाया जाए। उसे मानो प्रवृत्ति के एक साम्राज्य को सौप दिया जाता है और इसके पश्चात् वह स्वतन्त्र नही रहता और उसे आरम्भिक अवस्था के अनिवार्य विकास तथा परिवर्तन की अधीनता स्वीकार करनी पड़ती है। अत. आरम्भिक अवस्था एक आधार या सन्तुलन खो रही हो सकती है जिस पर कर्ता को गुरुत्वाकर्षण के लिए छोड दिया जाता है और वह 'गिरता है' या 'उलट जाता है' या 'विखर जाता है' या 'छलक जाता है', एक वार इस अवस्था मे प्रविष्ट होने के बाद उसे 'इसका अन्त भी देखना पड़ता है'। या जैसे मुडने, घूमने तथा अन्य यान्त्रिक क्रियाओ के विषय मे घटित होता है, यह 'जडता' हो सकती है, सवेग, प्रत्यास्थ (लचीलापन) या कोई अन्य साधारण सी अनिश्चित स्वचालित प्रवृत्ति हो सकती है, जो कर्ता को उसी क्षण पकड लेती है, जिस क्षण उसे क्रिया का पहला प्रक्षेपण, वन्दूक के घोडे की तरह, छोड़ चुका होता है। इसके लिए प्रतीक है 'फेका जाना' जो प्रक्षेपी पक्ष–'to' (अग्रसरो गति द्वारा करता है) के पीछे प्रतीकात्मक चित्र है। पहली वार यह विचित्र प्रतीत हो सकता है कि होपी 'वाहर जाने' और 'अन्दर जाने' को इसी कोटि में रखते हैं। वास्तव मे कोई वाह्य शक्ति न तो उसे पकडती है और न ही उसे चलाती है परन्तु वह एक विभाजक रेखा को अवश्य पार करके एक नए साम्राज्य मे प्रविष्ट होता है—एक वाह्य साम्राज्य मे जवकि इसे पहले वह आन्तरिक साम्राज्य का अग था, या इसके उलट (अर्थात् आन्तरिक से वाह्य साम्राज्य मे प्रवेश करता हे) और जव उसने एक वार परिवर्तन कर लिया तो वह नए साम्राज्य की प्रकृति एव नियमो के अधीन हो जाता है, क्योकि आरम्भिक अवस्था के नियम पूर्णतया पीछे छूट चुके होते है। अत एक प्रकार से 'go in' 'अन्दर जाना' और 'go out' 'क्रिया' इस गूढ प्ररूप के अन्तर्गत सभी अन्य विचारो के 'प्रतीक' के रूप मे मानी जा सकती है, इसलिए गूढ प्ररूप 'ग' गतिशील है अथवा प्रतीकात्मक रूप से गतिशील है, परन्तु गतिशीलता विषय से उद्भूत नही होती अपितु वाह्य क्षेत्र से होती है। अन्तत गूढ प्ररूप 'ब', जैसा हम देख चुके है, गति-

शील नही है या सक्रिय भी नही है, परन्तु निष्क्रिय है, अर्थात् या तो 'स्थिर' है या निश्चेष्ट है।

'प्रकट प्ररूप' का अर्थ यद्यपि प्रकट रूप से सीधा है, परन्तु इसे पूर्णतया तब तक नही समझा जा सकता, जब तक कि इनसे सम्बन्धित गूढ प्ररूपो को उनकी निमग्न अवस्था से खीच कर बाहर नही निकाला जाता, और उनके सार्थक अर्थो को कुछ सीमा तक चेतना-पटल पर नही लाया जाता। तब भिन्न गूढ प्ररूपो के साथ एक ही प्रकट प्ररूप द्वारा उत्पन्न भिन्न प्रभावो का परिणाम तथा इसके उलट (अर्थात भिन्न प्रकट रूपो के साथ एक गूढ प्ररूप का) स्वय प्रकट प्ररूप की अधिक मुखरित जानकारी तथा स्पष्टतर बोध के रूप मे होता है। अब हम '-va' तथा '-ni' के सूक्ष्म अर्थ को समझने के लिए अधिक अच्छी स्थिति मे है।

'–ni' के विषय मे हमे सम्पूर्णकाल व्यवस्था का कुछ-कुछ अन्तर्बोधपरक अध्ययन करना पडेगा, तत्पश्चात् '–ni' 'द्योतित' भविष्य-काल का। 'भविष्य-काल' यह उद्घोषित करता है कि 'घटना की प्रत्याशा वर्तमानकालिक है, और यह कि यदि यह स्वेच्छापूर्ण क्रिया है तो घटना के प्रतिकर्ता का सकल्प वर्तमानकालिक है, और यह कि प्रत्येक घटना का प्रत्येक पहला आरम्भिक बिन्दु प्राप्त किया हुआ हो सकता है, (यहाँ सदर्भ नियन्त्रण करता है) और यह (भी उद्घोपित करता है) कि इससे परे अब वर्तमान नही है अपितु भविष्य है: अर्थात् घटना कुल मिकाकर भविष्य है। जिससे कि घटना कुल मिलाकर भविष्य हो जाए, काल यह सकेत नही दे सकता कि कर्ता की प्रवृत्ति इस प्रारम्भिक बिन्दु से आगे भी बनी रहेगी, अन्यथा भविष्यता का अर्थ ही बहुत अधिक दुर्बल पड जायेगा या बिल्कुल लुप्त हो जायेगा। इसका अर्थ केवल यह होगा कि 'he is starting his doing of it' 'वह इसका करना आरम्भ कर रहा है' या 'he is starting to do it' 'वह इसे करना आरम्भ कर रहा है।' दूसरी ओर -va का अर्थ है 'अध्यवसाय सहित प्रारम्भ करता है' या 'इसे करने के लिए शक्ति का सचय कर रहा है।' यहाँ आरम्भिक बिन्दु उपस्थित है, दूसरा बिन्दु तेजी से उपस्थित होने वाला है, और ऐसे बिन्दुओं का एक सतत अनुसरण प्रतिज्ञात है। अनभ्यसित 'क' गूढप्ररूप के साथ या तो -va प्रयुक्त हो सकता है या थोडे से अर्थ-भेद के साथ -ni का प्रयोग हो सकता है जिसे 'begins to do it' 'इसे करना आरम्भ करता है' के अर्थ वाले कुछ उदाहरणो द्वारा दिखाया गया है। -ni का अर्थ है कि क्रियाशीलता प्रारम्भिक बिन्दु तक पहुच गई है, परन्तु गूढ-प्ररूप का गतिशील, परिरक्षक अर्थ स्वय यह प्रतिज्ञा करता है कि क्रिया द्वारा द्योतित की गई अस्थायी या अनवधिक अवस्था पर पर्याप्त रूप मे आरूढ रहा जायेगा। -va के विषय मे भी यही बात है, अन्तर केवल यह है कि यह आरोहण को और अधिक निश्चित बनता है। परन्तु अभ्यसित अथवा आवधिक 'क' क्रिया के साथ, हमे -va की आवश्यकता है क्योकि 'क' क्रिया मे बुधला गूढ प्ररूपीय सुरक्षण केवल आरोहण मात्र कराने मे समर्थ है, और एक स्थायी व्यापार द्वारा सतत अनुसरण की प्रतिज्ञा करने के लिए हमे उस सरक्षक सकल्प या

स्वय विषय की प्रवृत्ति की या स्वय इस (क्रिया) की दृढ घोषणा करनी पडेगी, जिसे -'va' सम्पन्न करता है। अत यह कहने के लिए कि "वह इसका काटना आरम्भ करता है" जिसका अर्थ है कि वह अपने कुल्हाडे से प्रहार कर रहा है, कम-से-कम एक प्रहार तो कर ही दिया है। (क्या उसने अधिक प्रहार किए अथवा उसी समय काटना त्याग दिया—इस विषय में हमें कुछ पता नही) हम यहाँ या तो -ni का प्रयोग कर सकते है या -va का। परन्तु यह कहने के लिए "he begins chopping it" "वह इसे काटना आरम्भ करता है", जिसका अर्थ है कि पहले प्रहार के पश्चात् दूसरा होगा, दूसरे के पश्चात् तीसरा, और इससे आगे भी होते रहेगे, हमे अभ्यास तथा -va एव -ni का प्रयोग करना पडेगा। उस विषय मे भी ऐसा ही रूप बनता है।यदि कर्म बारबार होने वाला नही है, परन्तु केवल निरन्तर होता रहता है तब भी इन्ही प्रत्ययो का प्रयोग होगा जैसे 'वह सोना आरम्भ करता है' मे।

दूसरी ओर गूढ-प्ररूप 'ख' के साथ, जिसका गूढ-प्ररूपी अर्थ है–कि एक बार यदि आरम्भिक दशा पहुच जाए (जिसके लिए केवल -ni पर्याप्त है) तो वह घटना एक विशिष्ट रूप मे आविर्भूत हो जाती है, और एक अवधि तक कम-से-कम उसी दशा को बनाए रखेगी अत यहाँ कर्ता के अध्यवसाय का सारा प्रश्न ही मानो खिडकी से बाहर फेक दिया गया है। इसका यह अर्थ है कि -va निरर्थक एव अनुपयुक्त रहेगा। सम्भवत यह उससे कुछ अधिक सोद्देश प्रेरणा का सकेत देता जितनी प्रेरणा 'ख' प्रकार की क्रियाशीलता को अभिव्यक्ति मात्र करने के लिए आवश्यक है। 'ख' प्रकार के गूढ-प्ररूपी शब्दो के विषय मे एक प्रकार की शून्यता तथा अमूर्तता है, वे एक प्रकार की गति की या अवस्था की घोषणा करते है और उसे उसी (अवस्था) पर छोड देते है। सभी 'going' गत्यर्थक, coming आगत्यर्थक, शब्द विशेष रूप से अमूर्त है, जिनके कोई वास्तविक धातु नही है · परन्तु केवल क्रिया रूप मे परिणत किए गए परसर्ग या क्रिया-विशेषण है 'to' 'को', from 'से' 'away' 'परे' इत्यादि। सम्भवत. यह होपी चिन्तन-प्रक्रिया की गहरी परतो का विषय है कि इस जड, शून्यता को किसी -va जैसे तत्त्व के प्रयोग से न तो विकृत किया जाए और न ही उसका निराकरण किया जाए। यह दृष्टात यह दिखा सकेगा कि किस प्रकार होपी जैसी भाषा मे किसी रूप का अर्थ गूढ-प्ररूपीय धारणा द्वारा अधिक गहन रूप से विश्लेषित किया जा सकता है, और किस प्रकार अर्थ की समग्रता गूढ-प्ररूपी तथा प्रकट-प्ररूपी कारणो की सयुक्त उपज है। बहुत सी भाषाओ में 'गूढ प्ररूप' की धारणा किसी विशेष काम की चीज नही, परन्तु होपी जैसी भाषाओ मे जहाँ रूपावली रचना के लिए अधिकाश प्रभावशाली सामग्री इस गहन रूप से प्रच्छन्न अवस्था मे निहित है, ठीक उसी तरह जैसे कुछ लोग ऐसे होते है जिनका मानसिक जीवन दूसरो के मानसिक जीवन की अपेक्षा बहुत कम अभिगम्य है। इन आरभमाण रूपो की अपेक्षाकृत गौण समस्या की अपेक्षा होपी भाषा मे गूढ प्ररूपो का अधिक बड़ा हाथ है। यह सत्य है कि आरभमाण के दृष्टान्त नितान्त

स्पष्ट है। मुझे विश्वास है कि मै पहला व्यक्ति हू जिसने अर्थो को इन निमग्न परतों के अस्तित्व की ओर इशारा किया है, जो इस निमग्नता के होते हुए भी सामान्य भाषायी समष्टि मे नियमित रूप से कार्य करते है।

मैं यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हू कि आप एक मनोवैज्ञानिक के रूप मे इस सामान्य विचार के विषय मे क्या सोचते है। आप जिन समस्याओ पर काम कर रहे है, उनसे इसका क्या सम्बन्ध है? इसमे सन्देह नही कि गूढ प्ररूपो का साम्य Freud की तथा उससे भी अधिक युग की अचेतन सम्बन्धी धारणा के साथ प्रतीत हो, यद्यपि इस साम्य को सम्भवत. और अधिक आगे नही बढाना चाहिए।

होपी भाषा की कुछ क्रियापदीय कोटियां~

होपी भापा के शोधकार्य के आरम्भिक चरण मे मुझे परिचित भापायी क्षेत्र मे होने का सा सुखद अनुभव हुआ था। यह वताते हुए वडा आश्चर्य होता है कि यहाँ एक विजातीय दूरस्थ भापा मिलती है, जो वहुत अधिक भारोपीय की अभिरचनाओ पर वनी है। एक ऐसी भापा जिसमे स्पष्ट रूप से अलग-अलग सज्ञाएँ, क्रियाएँ तथा विशेपण है, और जो पक्षो, कालो तथा वृत्तियो से युक्त है, तथा जिसमे वाह्य विचित्र कोटियाँ नही है, न ही पदार्थो की आकृतियो पर आधारित लिंग की तरह की कोटियाँ है; न ही ऐसे सर्वनाम है जो कवीले की स्थिति, उपस्थिति, अनुपस्थिति, दृश्यता, या अदृश्यता का सकेत करते हो।

परन्तु कुछ समय के पश्चात् मुझे पता लगा कि यह इतना सरल कार्य नही है। मैने जो वाक्य वनाए तथा अपने होपी सूचक के समक्ष प्रस्तुत किए, वे प्राय गलत थे। पहले पहल तो भाषा ही अनियमित सी लगी, परन्तु वाद मे पता चला कि भापा अपनी अभिरचना के अनुसार विल्कुल नियमित है। लम्वे समय के अध्ययन के पश्चात् तथा अपने पूर्वाग्रहो तथा पूर्वनिर्धारित धारणाओ के निरन्तर निराकरण के पश्चात् मुझे वास्तविक अभिरचनाओ का ज्ञान हो पाया। मुझे यह अनुभव न केवल होपी के विपय पर, अपितु, व्याकरणिक कोटियो तथा धारणाओ के समूचे विषय पर अत्यधिक प्रकाश डालने वाला प्रतीत हुआ। वात यह है कि होपी कोटिया कुछ इस तरह से भारोपीय के समान है कि वे पहले पहल ऐसी समानता का भ्रामक आभास उत्पन्न करती है, जो आभास कष्टदायक अनियमितताओ के कारण धूमिल पडने लगता है, तथा यह पर्याप्त रूप मे भारोपीय से इतनी भिन्न भी है जो सही रूप से निश्चित कर लिए जाने पर वहुत सी नवीन तथा प्राचीन भारोपीय भाषाओ मे कुल मिलाकर समान प्रभेद दिखाने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। अग्रेजी से होपी मे अनुवाद करने की आवश्यकता पडने पर, होपी मेरे लिए अग्रेजी को एक नए दृष्टिकोण से देखने के लिए इतनी वोधजनक हो गई जितनी कि वह स्वय होपी रूपो के अर्थ निश्चित करने के लिए थी। यह वात विशेप रूप से उन चार क्रियापदीय कोटियो के विपय मे सच है जिनका विवेचन यहाँ किया जाएगा।

पहले यहाँ निम्नलिखित सामान्य प्रभेदो की रूपरेखा प्रस्तुत करना उचित रहेगा.

1. **प्रकट कोटि :** एक कोटि, जो एक रूपिम मे निर्दिष्ट होती है जो इस कोटि मे युक्त प्रत्येक वाक्य मे मिलती है, वनाम, अप्रकट कोटि जो सामान्यत. वाक्यो

~ *Language*, 14 . 275–286 (1938) से पुनर्मुद्रित।

में चिह्नित नही होती, परन्तु विशेष प्रकार के वाक्यो में उनके लिए विशेष व्यवहार अपेक्षित है, जैसे अग्रेजी मे लिंग।

2. **शब्द कोटि :** एक कोटि (जो प्रकट, अप्रकट, या मिश्रित हो सकती है) जो शब्दवर्गो के एक प्राथमिक आनुपूर्व्य की सीमा निर्धारित करती है, प्रत्येक की सदस्यता सीमित है (जो समस्त शब्दावली के समकक्ष नही है), जैसे कि भारोपीय तथा अन्य भाषाओ के परिचित 'शब्द-भेद," बनाम परिवर्तक कोटि. "ऐसी कोटि जो या तो शब्द-भण्डार के किसी शब्द को किंचित् परिवर्तित करती है या किसी ऐसे शब्द को परिवर्तित करती है जो पहले ही एक सीमित वर्ग मे सम्मिलित कर दिया गया है, जैसे वाच्य, पक्ष और कारक आदि वर्ग में।

3. **विशिष्ट कोटि :** उपरोक्त प्रकार की कोटियो मे से कोई एक वर्ग जैसे कर्म-वाच्य, आवधिक पक्ष, बनाम सामान्य कोटि · एक उच्चतर आनुपूर्व्य जिसे समान या परिपूरक प्रकार के वर्गो को समूहित करके बनाया गया हो, जैसे वाच्य, पक्ष।

इस लेख मे विवेचित सभी कोटियाँ प्रकट तथा परिवर्तक प्रकार की है, परन्तु यह भी कहना चाहिए कि अप्रकट कोटियाँ तथा शब्द-कोटियाँ भी होपी व्याकरण मे बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऐसे वर्गो को परिभाषा देने मे असफलता के कारण व्याकरण अनियमित प्रतीत होने लगेगा। यहाँ जिन सामान्य कोटियो का विवेचन किया गया है, वे सब क्रियापदीय व्यवस्था से सम्बन्धित है तथा उन्हे दृढ कथन (assertion), वृत्ति (mode), स्थिति (status) और प्रकारता (modality) से अभिहित किया गया है।

दृढ़ कथन (Assertion)

होपी क्रियाओ के तीन दृढ कथन है·

१. सूचनात्मक (Reportive) (शून्य रूप)।

२. प्रत्याची (Expective) (-ni प्रत्यय)।

३. प्रथापरक (Nomic) (-ŋʷi प्रत्यय)।

ये अग्रेजी के कालो का लगभग अनुवाद करते है। परन्तु ये 'काल'[1] या अवधि का निर्देश नही करते। वे तीन प्रकार की सूचनाओ का भेद स्पष्ट करते है। दूसरे शब्दो मे 'दृढकथन' एक ऐसा वर्गीकरण है, जो किसी कथन की सगति के तीन पृथक् क्षेत्रो मे से उन्हे किसी एक के लिए निर्दिष्ट करता है। 'सूचनात्मक' ऐसे कथन की सूचना मात्र देने के लिए है, जो किसी विशेष अवस्था को ऐतिहासिक

1. *Language* 12 (1936) मे छपे 'The Punctual and Segmentative aspects of Verbs in Hopi' नामक लेख में मैंने दृढकथनों (assertions) का कालो के रूप मे निर्देश किया था तथा उन्हें तथ्यात्मक या वर्तमान भूत, भविष्य, एवं सामान्यीकृत या Usitative नाम दिया था।

वास्तविकता को बताता है जैसें अंग्रेजी मे 'he ran' वह दौडा, 'He is running' वह दौड रहा है, 'I see it' मैं इसें देखता हूँ।'[2]

प्रत्याशी (expective) किसी अवस्था की प्रत्याशा या पूर्वाभास की घोषणा करता है। इसका अनुवाद अंग्रेजी मे 'भविष्य काल' से किया जाता है, या 'is going to' करने वाला है, या 'begins to' करना ,प्रारम्भ करता है, के द्वारा किया जाता है, क्योंकि मनोवृत्ति, उस समय भी जबकि कार्य प्रारम्भ हो चुका है, कार्य-सम्पन्नता की सूचक होने की अपेक्षा प्रत्याशित पूर्वाभास वाली हो सकती है। क्योंकि दृढकथनो का 'काल' सें कोई सम्बन्ध नही होता।है, इसलिए प्रत्याशी मनोवृत्ति का आरोपण बीतीं हुई घटनाओ के विवरण पर किया जा सकता है। अत. इस प्रकार के अनुवाद मिलते है—was going to (करने लगा था), began to (करना प्रारम्भ किया था)। ऐसें अर्थो की कुन्जी, जो अन्यथा दुर्बोध है, इस प्रकार के अनुवादो मे निहित है, 'his doing it is (or was) expected (उसका यह करना प्रत्याशित है या था)। अत सगामी वृत्यर्थक (concursive) प्रत्यय -kaŋ, जबकि -nikaŋ मे प्रत्याशी-सगामी (expective-concursive) बनाता है, परन्तु इसका अंग्रेजी के भविष्यकाल मे 'while he will do it

---

2. (Reportive) सूचनात्मक के अन्तर्गत भूत तथा वर्तमान में कोई भेद नहीं है, क्योंकि दोनो ही निष्पादित तथ्य है। जिसे हम अपना वर्तमान-काल कहते हैं (हमारे वर्तमान के उस रूप की गणना न करते हुए जो प्रथागत के समान है) वह होपी दृष्टिकोण से दूसरों के साथ व्यतीत की गई परिस्थिति से सम्बन्धित उन्हे (दूसरो को) दी गई सूचना मात्र है, यह सूचना या तो अनावश्यक समाचार है, या ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयुक्त की जाती है, या उस स्थिति के कुछ अंशो के विषय में बताने के लिए है जिन्हें उनके साथ पूरी तरह व्यतीत नहीं किया गया है। अतः होपी के लिए 'वह दौड़ रहा है' के लिए 'वह दौड़ रहा था' से भिन्न होना आवश्यक नही है, क्योंकि वक्ता तथा श्रोता दोनो ही दौड़ने वाले को देख सकते है, तो पहले वाक्य के 'है' का अर्थ केवल यह है कि श्रोता को जो कुछ बताया जा रहा है उसे वह स्वयं देख सकता है, उसे अनावश्यक सूचना दी जा रही है तथा दूसरे वाक्य से इसका केवल यही अन्तर है। ऐसी स्थिति में होपी श्रोता को होपी व्याकरण में इस बात का अभाव नहीं दिखाई देता कि उसे यह नहीं बताया गया कि सूचना अनावश्यक है जबकि वह स्वयं देख सकता है कि ऐसा है। यदि वक्ता दौड़ने वाले को देख सकता है परन्तु श्रोता नहीं तो फिर सूचना अनावश्यक नहीं होती, परन्तु ऐसे स्थलों पर स्थिति तेजी से सूचना देने की होती है, जो 'था' के स्पष्ट भूत-कालिक अर्थ का निषेध करती है तथा होपी लोगो को हमारे 'काल-भेद' अनावश्यक प्रतीत होते हैं।

(जबकि वह इसे करेगा) के रूप मे अनुवाद करना बिल्कुल अशुद्ध होगा। इस रूप का अर्थ है 'before he does it' (उसके करने से 'पहले) अर्थात् 'while his doing it is expected' (जबकि उसका करना चल रहा है) यह प्रत्याशित है।'[3]

प्रथापरक (Nomic) किसी अवस्था की घोषणा नही करता, परन्तु कथन को शाश्वत सत्य के रूप में प्रस्तुत करता है, जैसे अग्रेजी मे 'she writes poetry' (वह कविता लिखती है) 'He smokes only cigars' (वह केवल सिगार पीता है) 'rain comes from the clouds' (वर्षा बादलों से होती है) certain dinosaurs laid eggs in sand (कुछ भयकर मगरमच्छ रेत मे अण्डे देते थे)।' ये तीन दृढ कथन कोटियाँ परस्पर व्यावर्तक है।

वृत्ति (Mode)

होपी भाषा में वृत्ति उस व्यवस्था की 'सामान्य' कोटि है जिसके द्वारा, एक वाक्य (उपवाक्य) तथा उस वाक्य (उपवाक्य) जो परवर्ती है या पूर्ववर्ती, के बीच सम्बन्ध तथा मिश्रित पार्थक्य के स्वरूप को द्योतित किया जाता है। स्वतन्त्र-वृत्ति, (Independent Mode) (शून्य रूप) का अर्थ है कि वाक्य दूसरे वाक्यो से पृथक् है, यद्यपि यह सम्भव है कि उस वाक्य का सम्बन्ध दूसरे वाक्यों से अग्रेजी के वाक्यीय सयोजक (and) (और) के द्वारा जोडा जा सकता है। परन्तु होपी लोग आश्रितान्वित रचनाओ के प्रति विशेष रुचि रखते है। वे परस्पर व्यावर्तक छह

---

3. होपी के लिए प्रयुक्त की गई लेखन-प्रणाली स्वनिमिक है तथा American Anthropological Association (अमरीकी मानव-शास्त्रीय परिषद्) द्वारा प्रयुक्त प्रतीको का प्रयोग करती है। इनमें निम्नलिखित कतिपय परिवर्तन किए गए है ? K थोड़ा सा अग्रीकृत है तथा *a* और *e* से पहले K*y* जैसी ध्वनि देता है, *c* स्पर्शसंघर्षी *ts* है; ? काकलीय स्पर्श है; *v* द्वयोष्ठीय है तथा अक्षर के अन्त में अघोष होता है; *r* मूर्धन्य, अकम्पित, तथा किंचित संघर्षी है और जब अक्षर के अन्त में हो तो अघोष होता है, छोटे कैपिटल वर्ण अघोष् व्यंजनों को द्योतित करते है तथा ये पृथक् स्वनिम हैं; स्वरो के नीचे एक बिन्दु ह्रस्वता का, किसी चिह्न के अभाव का, होपी की त्रिमात्रिक व्यवस्था की 'मध्यम श्रेणी' का द्योतन करता है। ('उदात्तस्वर') ऊंचे उठाए गए स्वराधीन तथा पर्याप्त रूप में दृढ़ बलाघात का द्योतन करता है, तथा एकाक्षरीय पदो पर इसका चिह्न नहीं होता परन्तु उसे मान लिया जाता है। ('अनुदात्त स्वर') स्वराघात के निम्नस्तर, तथा दुर्बल बलाघात का द्योतन करता है, तथा इसका निर्देश तब होता है जब यह एकाक्षरीय पदो में होता है। वृत्ति-प्रत्यय तथा अधिकतर निपातो के, जब वे वाक्यो के अन्त में आते है तो विशेष विरामीय रूप होते है। ये केवल उदाहरण में प्रयुक्त –q*o*?, प्रत्यय के अतिरिक्त दिए नहीं गए है।

आश्रित वृत्तियो का प्रयोग करते है, जिनका द्योतन दृढ कथन प्रत्यय से परे कोई अन्य प्रत्यय जोड़ कर किया जाता है। प्रत्येक वृत्ति एक प्रकार की बन्धुता द्योतित करती है जिसमे दोनो ही बाते सम्मिलित है, शृखलता तथा विविक्तता या असमानता। इनसे और आगे, विशेषक निपातो को जोडने से ये वृत्तियाँ बहुत से सम्भव सम्बन्धो का स्पष्ट भेद इतनी ही अधिक मात्रा मे प्रकट कर सकती है, जितना कि ग्रीक भाषा की तीन तिर्यक् कारको की मौलिक व्यवस्था को बहुत सारे पूर्वसर्गो द्वारा विकसित किया जा सकता है। परन्तु वृत्तिगत सम्बन्ध कारकीय सम्बन्ध नही है, न ही वृत्तियाँ भारोपीय क्रियार्थक-सज्ञा या भावार्थक सज्ञाओ की तरह विकारी रूप है, अपितु इनकी पूरी धातु-रूपावली होती है।

विविक्तता-सम्बन्ध (Discretness Connections) के 'नाम', 'प्रत्यय' तथा 'प्रकार' इस प्रकार है।

हेतुमद् (Conditional) · (-ε? प्रकृति के अन्तिम स्वर का अन्तर्भाव करते हुए) ऐसा प्रतिबन्ध जिसकी आवश्यकता दूसरे उपवाक्य मे सूचकेतर (प्रत्याशी या प्रथापरक) दृढकथनो की सगति सिद्ध करने के लिए पडती है (अग्रेजी के when जब, if (यदि) (वृत्ति उपवाक्य, तर्कसम्मत रूप से इसी दृढ कथन के अन्तर्गत आ जाता है, यद्यपि यह किसी दृढकथन प्रत्यय से युक्त नही होता), सह-सम्बन्धी (Correlative) (-pɒY), दूसरे उपवाक्य के कथन की व्याख्यात्मक सगति (अग्रेजी) because (क्योकि) since (क्योकि), As (जैसा कि) .for (इसलिए), (क्रियार्थक सज्ञापदीय रचना), सगामी (Concursive) (Kaŋ, KaKaŋ) समानान्तरीय समसामयिक घटना (अग्रेजी—while (जबकि), as (जसा कि), and (और), अनुक्रमीय (sequential) (-t), काल के अन्तर्गत अनुक्रम अग्रेजी after (इसके बाद) and then (और फिर), कर्तृवाची Agentive (qa) एक उपवाक्य मे किसी वस्तु या व्यक्ति की दूसरे who (कौन), उपवाक्य के अन्तर्गत कर्ता होने की योग्यता, वृत्ति उपवाक्य (अग्रेजी के who, (कौन) which (कौन सा) तो होते है, यद्यपि अग्रेजी का whom (किसे) नही होता, परा-सम्बन्धी (-q -qo') सामान्य बन्धुता-परा-सम्बन्धी जो दो उपवाक्यो मे उद्देश्य के अन्तर की पूर्ति करता है (अग्रेजी मे इसकी समकक्ष अभिव्यक्ति नही है) । प्रत्येक वृत्ति एक विशेष प्रकार की असमानता या विषमता की ओर सकेत करती है, तथा दो उप-वाक्यो के सम्बन्ध को भी निर्दिष्ट करती है, और दो उपवाक्यो मे उद्देश्यो या कर्ताओ की पृथकता अन्य मौलिक प्रकार की असमानताओ के स्तर पर स्वय एक मौलिक प्रकार की असमानता है, और उपवाक्यो मे से एक उपवाक्य के अन्तर्गत परासम्बन्धी वृत्ति को अनिवार्य बना देता है। अत. सभी अन्य वृत्तियाँ उन परिस्थितियो की ओर सकेत करती है जिनमे उप-वाक्यो का 'उद्देश्य' एक ही है अर्थात् उपवाक्य-वैषम्य, जो उद्देश्यो की असमानता को छोडकर अन्य कारणो पर आधारित होता है। यदि परासम्बन्धी वृत्ति के साथ सामान्य अर्थो के साथ उन तत्वो की अभिव्यक्ति भी जोडनी अपेक्षित हो जो अन्य

वृत्तियो मे आधारभूत है तो पृथक् निपातो की सहायता से ऐसा करना सम्भव है। परासम्बन्धी का उद्देश्य, बहुत-सी रचनाओ मे, तथा; कर्तृवाचक उद्देश्य कुछ रचनाओ मे कर्म-कारकीय होता है, अन्य सभी वृत्तियो का कर्ताकारक मे होता है। इन वृत्तियो के प्रयोगो के कतिपय उदाहरण नीचे दिए है। इन उदाहरणो मे तथा इसमे आगे इस लेख मे सभी जगह वृत्ति प्रत्यय सयोजक रेखा द्वारा जोडे गये हैं ताकि आश्रित क्रिया को पहचानने मे सहायता मिल सके।

हेतुमद् वृत्ति : ni'm-ɛ' mı.'nat tiwa'ni

जव वह घर जायेगा तो नदी को देखेगा (प्रत्याशी); ni'ma-o' mı' nat tıwa'ŋ^wı जव वह घर जाता है तो नदी को देखता है (प्रथापरक)।

सह सम्वन्धी : nı'ma-qa'Y mi 'nat tiwa क्योकि वह घर गया, उसने नदी को देखा nı'ma mı.'nat tiwa'ni–qaY वह घर गया ताकि नदी को देखे: अर्थात् वह घर गया क्योकि उसका नदी को देखना प्रत्याशित था, (उसके द्वारा नदी को देखने की आशा की जा रही थी ; pa'Nqa W–qaY ya'w mı.'nat tı'wa उसने कहा कि उसने नदी देखी (उसके यह कहने से, उदाहरणार्थ, 'उसने नदी देखी') ।

संगामी : nı'ma-kaŋ' mi 'nat tı'wa

जव वह घर गया तो उसने नदी देखी, wını'ma-ka'ŋ ta.'–wlawi उसने नृत्य किया और गाया' (एक ही साथ)।

अनुक्रमीय : ki y 'aw pıtı'-t mi.'nat tı'wa

घर पहुँचने के पश्चात् (या जव) घर पहुँचा तो उसने नदी को देखा; wini' ma'-t pt'' ta 'wla'wi 'उसने नृत्य किया और तव उसने गाया।'

कर्तृवाची : ta 'qa nı'ma-qa mı.' nat tı'wa

'वह पुरुष जो घर गया उसने नदी देखी' nı' tı wa ta.' qat nı' ma–qa–t 'मैंने उस पुरुष को देखा जो घर गया' (कर्तृवाची मे सज्ञाकारक लगते है और यहाँ पर यह कर्मकारक मे है, इसी प्रकार इसका उद्देश्य भी कर्मकारक मे है।[4]

परासम्बन्धी : nı'm—-q ta 'qa'aw pıtı'nı जव वह घर जायेगा तो एक व्यक्ति मिलेगा (उसके पास पहुँचेगा); nı'ma·q mo'ŋ^wi'aw' pıtı'ŋ^wi जव वह घर जाता है तो मुखिया उसे मिलता है (प्रथापरक); tı'yo wını ma-q 'o' νıy ma.'na ta.'wla'wı क्योकि लडका नाचा इसलिए लडकी ने गाया, pa'NqaW-q yaw ma.'na nı'ma उसने कहा कि लड़की घर गई; na.t ta 'wlaW-p ma.'na wını'ma जव उसने गाया लडकी नाची; pa'nis wini'ma'-q pı''ma.'ठीक उसके na ta 'wla'wı पश्चात् जव (या ज्योही) वह नाचा लडकी ने गाया, 'a' son nı'ma-q mo'ŋ ı' aw pıtı' ni जव वह घर चला जायेगा तो मुखिया उसे मिलेगा।

---

4. यह कर्म-कारक कर्तृवाची उपवाक्य उस नियम का एक अपवाद है जिसके अनुसार कर्ता की विषमता को परासम्बधी की आवश्यकता पड़ती है।

हमारा सम्बन्धवाचक, उपवाक्य सम्बन्धवाचक सर्वनामी कर्म के साथ होपी भाषा का परासम्बन्धी है। इसमे कारण है उद्देश्य सम्बन्धी असमानता का होना, जैसे ta.' qat nı' tıwa-q nıma' वह पुरुष जिसे मैंने देखा था घर चला गया। (पुरुष कर्मवाची मेरे देखने पर वह घर चला गया पर आश्रित है)। होपी भाषा पुरुष-पुरुष को देखने वाले उप वाक्य का कर्म मानती है, जबकि घर जाने वाले उप वाक्य का कर्ता वह है जिसकी अभिव्यक्ति क्रिया-पद द्वारा की गई है। अंग्रेजी भाषा, ऐसी रचनाओ मे तथा उन रचनाओ मे जिन्हे होपी भाषा कर्तृवाचक द्वारा अभिव्यक्त करती है, बहुत कम भेद दिखाती है—होपी प्राय उसी सयोजक 'that' जिसे, या 'which' जिसने, जो, को दोनो के लिए प्रयोग कर देती है, अतः बाह्य रूप से समान प्रतीत होने वाले बहुत से सम्बन्ध-वाचक उपवाक्यो मे होपी मे अनुवाद करते समय कई प्रकार के विभिन्न सरचनात्मक परिवर्तन उपस्थित हो सकते है। एक होपी-भाषी के लिए ये परिवर्तन बिल्कुल स्पष्ट होते है : एक द्विभाषी होपी भी, जब उसके समक्ष अग्रेजी के एक ही रूप मे रगे दो प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाए 'the man that I saw went house' पुरुष जिसे मैंने देखा था घर चला गया, और पुरुष जिसने मुझे देखा तो घर चला गया तो वह तुरन्त दो नितान्त भिन्न अभिरचनाओ ta.'qat nı' tıwa'-nı'ma, तथा ta.'qa nıy tıwa' qa nı'ma, के रूप मे प्रतिक्रिया करेगा। होपी मे परा-सम्बन्धी रूपो की रचना होती है जो हमारे पूर्वसर्ग के कर्मभूत सम्बन्धवाचक सर्वनाम का अनुवाद करते है, तथा इस विषय मे हमारी अभिरचनाओ से होपी की दूरी अपनी पराकाष्टा पर है जैसे yama'kpıt? aŋwa' yma-q le'pe 'the bridge on which he was walking collopse' (वह पुल, जिस पर वह चल रहा था, टूट गया) (bridge) पुल (कर्मवाची) on ıt (उस पर) being his walking (उसका चलना होने पर) ıt collapsed (वह टूट गया)। भारोपीय दृष्टिकोण के लिए सबसे अधिक विस्मयकारी वह ढग है जिसके अन्तर्गत होपी भाषा अपने ही व्यवस्थित तर्क द्वारा वृत्तियो को प्रकारताओ के साथ मिला देती है।

ऐसा न हो कि वृत्तियो की सूची से 'आज्ञार्थ' का अभाव विचित्र प्रतीत हो, इसलिए मै यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि वह उन विध्यर्थक (वृत्तियो) मे ही समाविष्ट है (आज्ञार्थ, अर्ध-आज्ञार्थ, इच्छार्थक वृत्ति, Vetatıve (प्रतिबन्धात्मक) जिनकी रूपावली अनियमित है तथा वे न तो वृत्तियाँ है, और न ही प्रकारताए है।

स्थिति कोटि (Status)

स्थिति कोटियो को अस्तिवाचक (शून्य रूप, उद्घोषक वाक्य) नकारात्मक, प्रश्नवाचक, अनिश्चयवाचक आदि नाम दिए गए है। सूचक तथा प्रथारूढ कोटियों मे नकारात्मक की रचना क्रियापद से पहले *qo* निपात जोड कर की जाती है और प्रत्याशी मे *So? on* जोड़कर प्रश्नवाचक, 'हा' या 'न' मे उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न पूछने की स्थिति है। इसकी रचना वाक्य के आरम्भ मे *pı* निपात जोड़

कर की जाती है जैसे pi' ma.'na ti'yot ti'wa 'क्या लड़की ने लड़के को देखा?' किसी भी अन्य प्रकार के वाक्य में भिन्न अनुतान प्राप्त नही होती। उत्तरवाची रूप मे होते है ?owi.y हाँ, qa?e या qa? ey 'न' तथा Pi'hi जिसका विश्लेषणीय अर्थ "मैं नही जानता" होता है । अनिश्चयवाक वाक्य की वह 'स्थिति' है जिसमे एक प्रश्नवाचक (या अनिश्चयवाचक कहना अधिक उचित रहेगा) सर्वनाम, क्रिया विशेषण, या क्रियापद (जैसे क्रियापद–'क्या करें') होता है। यह आवश्यक नही है कि वह सही अर्थो मे एक प्रश्न ही हो क्योकि ऐसे प्रश्नवाचक शब्द अनिश्चयवाचक भी होते है (अर्थात् 'क्या?') और 'कोई चीज' शब्द एक ही हैं'), या दूसरे शब्दो मे एक शब्द का अर्थ एक अनिश्चयात्मक सकेत है जिसका निहितार्थ यह भी होता है कि वक्ता की न्यूनाधिक जिज्ञासु मनोवृत्ति है (पता नही क्या? की तरह की । होपी के इस वाक्य का अर्थ hi'mi' pe wi? 'कोई चीज आ रही है' मनोवैज्ञानिक ढग से यह भी समझा जा सकता है—'(न जाने) आश्चर्य है कि क्या आ रहा है?'। आया इसे अधिक सूचना प्राप्त करने के लिए अभ्यर्थना समझा जाए, या इसे केवल एक मनोरजक टिप्पणी माना जाए—यह उस प्रसग पर निर्भर करेगा जिसमे वक्ता का सामान्य व्यवहार भी सम्मिलित हो सकता है।

प्रकारता (Modality)

साधारण शब्दो मे होपी भाषा मे प्रकारता वह चीज है जिसका निर्देश भारोपीय भाषा मे (Subjunctive) सम्भावनार्थ वृत्ति या अन्य वृत्तियो द्वारा किया जाता, परन्तु हमे इस प्रकार की परिभाषा से सन्तुष्ट नही हो जाना चाहिए। मैं यह कहना चाहूँगा कि होपी की प्रकारताएँ परिवर्तकों की परिवर्तक है, अर्थात् ये उस त्रि-दृढ़कथन व्यवस्था को और अधिक सुधारने तथा विस्तृत करने के वे तरीके है जो तर्कसगत तथ्यो के तीन क्षेत्रो का भेद स्पष्ट करते हैं, ताकि इसके परिणाम स्वरूप तर्कसगत तथ्यो के तीन से बहुत अधिक क्षेत्रो तथा उपक्षेत्रो मे प्रभेद किया जा सके—ठीक उसी तरह जैसे ग्रीक के पूर्व-सर्गीय सम्बन्ध, कारक सम्बन्धो की मौलिक व्यवस्था का विस्तार करते है। प्रकारताओ का दृढ कथनो के साथ वही सम्बन्ध है, जो हमारे वृत्तियो के उदाहरणो मे na.t,?a'son आदि निपातो का वृत्तियो के साथ है। उनका द्योतन (modalizen) प्रकारक नामक निपातो द्वारा किया जाता हैं । प्रकारता कोटि का सुनिश्चित विवेचन करने पर जितने रूपिम मिल सकते हैं उससे कही अधिक रूपिम-प्राचुर्य प्रकारको की शब्द-कोटियो मे है। यू तो प्रकारक जाति के बहुत से निपात है, परन्तु आठ प्रकारताओ की एक व्यवस्था बनाने के निमित्त परस्पर समन्वित आठ निपातो का भेद स्पष्ट करना नितांत आवश्यक है। इन प्रकारताओं मे हम रूपरेखा व्यवस्था आधार पर नवी अर्थात् निश्चयार्थक प्रकारता या शून्य रूप का भी समावेश कर सकते है। प्रकारताओ तथा अन्य प्रकारको के शाब्दिक प्रयोग मे बहुत स्पष्ट अन्तर नही है, तथापि कुल मिलाकर प्रकारताए परस्पर

व्यावर्तक रूपो का एक वर्ग है (कुछ अपवादो को छोडकर) जबकि दूसरे प्रकारक अधिक स्वतन्त्र रूप से एक दूसरे के साथ प्रयुक्त होते है, या प्रकारता प्रकारकों के साथ कम स्थानो पर तथा कुछ कम रूपात्मक अभिरचनागत प्रयोगो मे घटित होते है, और सम्भवत. उन्हे बहुत आसानी से शाब्दिक इकाई माना जा सकता है (इस लेख के अन्त मे उदाहरण देखिये)। प्रकारताओ के नाम इस प्रकार है— (Indicative) निश्चयात्मक, (Quotative) उद्धरणात्मक, (Inhibitive) निरोधात्मक, (Potential) विध्यर्थक, (Indeterminate) अनिश्चयवाचक, (Advisory) परामर्शी, (Concessive) अनुमोदनात्मक, (Necessitative) आवश्यकता सूचक, (Impotential) अविध्यर्थक।

उद्धरणात्मक Quotative प्रकारक : Yaw : यहाँ पर दृढ कथन एक भाषाई सूचना का दृढकथन बन जाता है। एक लोक कथा बताते हुए Yaw का प्रयोग अग्रेजी के 'So' या, and (so) या की तरह प्रत्येक लम्बे वाक्य के आरम्भ मे किया जाता है, यहाँ इसका प्रयोग 'कथा के अनुसार' या 'बात यह है' के अर्थ में होता है। एक साधारण स्वतन्त्र वाक्य में इसका प्रयोजन 'वे कहते हैं' या 'कहते हैं कि' इत्यादि अर्थ जोडने का होता है। इसे प्रधान उद्धरण के तुरन्त पीछे जोडा जाता है, अन्तिम शब्द जिसके अन्तिम अक्षर पर उच्च बलाघात होता है और यह संयोग उच्चरित उद्धरण-चिन्हो के समकक्ष है। इसका प्रयोग अप्रधान उपकथन मे भी किया जाता है, कहने और सुनने आदि अर्थ वाली क्रियाए सह-सम्बन्धी तथा तथा परा सम्बन्धी वृत्तियो मे होती है (इन वृत्तियो के नीचे उदाहरण देखिये) ninavo' t–q Yaw mi'ni 'मैंने सुना कि वह गिर गया' (शाब्दिक सूचना) का भेद, ni? navo't–q mini मैंने उसे गिरते हुए सुना (गिरने की आवाज सुनी) से कीजिए। तथापि, उद्धरणात्मक का अर्थ सूचना का समर्थन या सूचना की सत्यता की स्वीकृति भी नही हो सकता, जो कि अनुमोदनात्मक प्रकारता (Kır) का कार्य है, अत: मैंने ni? navo't–q kır mını (इस विषय मे) सुना कि वह गिर गया है (इस वाक्य मे यह स्वीकृति है कि घटना वास्तव मे घटित हुई)।

निरोधात्मक (Inhibitive) प्रकारक : Kır hi'n· इसका अर्थ है कि क्रिया द्वारा अभीष्ट कार्य को करने के लिए कर्ता को रोका जाता है या उसका निरोध किया जाता है। इसमे इस परिस्थिति के कारण के सकेतन का पूर्ण अभाव होता है, यह सकेत नही मिलता कि निरोधकर्ता के सामर्थ्य के कारण हुआ अथवा बाह्य कारणो से, इसका अनुवाद केवल 'नही कर सकना' द्वारा किया जा सकता है।

विध्यर्थक (Potential) : यह सूत्रीकरण एक अग्रेजी भाषी को पहले पहले यदि अटपटा नही तो कम से कम उलटा पुलटा अवश्य लगता है। इसका अनुवाद Can 'कर सकना' द्वारा किया जाता है परन्तु यह निरोधात्मक का निषेध मात्र है जिसका द्योतन Kır hın *qà* द्वारा किया जाता है, तथापि इसका विश्लेषण सिद्ध करता है कि यह रूप विलक्षण रूप से तर्कसगत है। इस ढग से होपी भाषा पूर्णतया तटस्थ की रचना कर सकती है, विध्यर्थक (Can) 'सकना' न केवल

व्यक्तिगत योग्यता का सकेत देता है अपितु, यह भी द्योतित करता है कि कर्ता के लिए मार्ग पूरी तरह खुला है यदि वह चाहे तो सम्भावना को क्रियाशीलता मे बदल सकता है, क्योकि (Can) 'सकना' व्यक्तिगत तथा विशेष योग्यता के लिए', 'यह कैसे किया जा सकता है' इस अर्थ के लिए एक निश्चित क्रिया है, जिसका प्रयोग क्रियाशीलता द्योतक क्रियापद के प्रत्याशी सहसम्बन्धी के साथ होता है। परन्तु प्रश्न यह है कि इस प्रकार के तटस्थ विध्यर्थक Can 'सकना' की अभिव्यक्ति कर्ता तथा क्रिया के बीच आने वाले निरोधी अथवा विफल बनाने वाले व्यवधानों के अभाव मात्र का द्योतन करने वाले निषेघात्मक रूप द्वारा कैसे हो सकती है?

अनिश्चयवाचक (Indeterminate) **: प्रकारक** Sɛn : यह 'अनिश्चय' का संकेत देता है जिसका अर्थ 'स्यात्', 'सम्भवत:' हो सकता है या प्रत्याशी 'may' के समान माना जा सकता है, जैसे ni'm-ɛ? Sɛn moy w it? aw piti'ni जब वह घर जाएगा (जाता है) तो वह सरदार से मिल सकता है (और पुन: वह न भी मिल सके)। यहां पर 'अनिश्चितता' की प्रकृति ऐसी है जैसे सकारात्मक एवं नकारात्मक सम्भावनाओ के बीच सन्तुलन बनाना, अत:, जैसे ni? ?aw ti viyta-qSEn ni'máni 'मैंने उससे पूछा (आया) वह जाने वाला है' (परा सम्बन्धी रचना)। यहां पहले पहल ऐसा लगता है कि Sɛn अंग्रेजी के if 'यदि' की तरह कार्य करता है परन्तु वास्तव मे ऐसी बात नही है। यह केवल if 'यदि' के द्वारा अभिव्यक्त की गई अनिश्चितता का कार्य करता है, जबकि 'if' का 'योजन' तथा 'सम्बन्धन' कार्य परासम्बन्धी-वृत्ति सम्बन्ध (वाची) द्वारा सम्पन्न किया जाता है, Sɛn स्वयं किसी प्रकार का सयोजन करने मे बिल्कुल असमर्थ है।

परामर्शी (Advisory) **प्रकारक** Kɛ: यह Sɛn जैसी ही अनिश्चितता का द्योतन करता है, परन्तु नकारात्मक परिणाम की अपेक्षा सकारात्मक परिणाम पर थोडा सा बल देता है। यदि इस प्रकार की सकारात्मक सम्भावना का दृढतापूर्वक कथन, विरोधी मनोवृत्ति की उपस्थिति मे, या विरुद्ध परिणाम के भय की (उपस्थिति) मे किया जा रहा है तो यह अग्रेजी के might 'कर सकना' (मे समर्थ होना), may nevertheless 'तथापि कर सकना' या सूचनावाचक might have done so 'ऐसा कर सका हो', का आभास देता है। अत: ta 'qa tiw ɛ'? Kɛ wa' ya'ni. When the man sees it may run away. जब पुरुष इसे देखेगा तो वह भाग सकता है (उसका सम्भावित भाग जाना ऐसा तथ्य है जिसे ध्यान मे रखा जाना चाहिए) अत: Kɛ से युक्त वाक्य की प्रकृति परामर्शी है क्योकि यह केवल अनिश्चितता का पूर्वाभास ही नही कराता, अपितु उसके एक सम्भव परिणाम की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है। काफी तर्कसगत ढंग से हमारा may not 'न कर सकना' Kɛ qa है, Sɛn qa' नही। जैसे ni'm-ɛ? Kɛ qa' tiwa'ni 'जब वह घर जाएगा तो इसे नही देख सकेगा'।

अनुमोदनात्मक प्रकारक : Kɪr यह द्योतित करता है कि दृढ़कथन को वस्तुपरक अनुभूति की अपेक्षा एक 'धारणा' के रूप मे मान्यता दी जाती है [5]। जैसे 'यह स्वीकार किया जाता है', 'अनुमत होता है', 'प्रस्तुत प्रमाण से अनुमानित होता है, मान लिया जाता है', 'जाना हुआ समझ लिया जाता है', इत्यादि। स्वतन्त्र वाक्य में इसका अनुवाद ऐसा प्रतीत होता है कि स्पष्टतया, प्रामाणिक रूप से या केवल 'अच्छा तो' के रूप मे किया जा सकता है जैसे Kɪr mo'ywc nima 'अच्छा तो मुखिया घर चला गया'। केवल मिश्र वाक्यो मे ही इसका सूक्ष्म महत्त्व लक्षित होता है। परासम्बन्धी अभिरचना पर विचार कीजिए nɪ? tɪwa-q pa'la 'मैं देखता हूँ कि यह लाल है' (मेरे देखने से यह लाल है), nɪ? tiwa-q rɪpɪ' pɪta 'मैं देखता हूँ कि यह चमकता है'। होपी भाषा इस अभिरचना का प्रयोग उसी अर्थ मे करने से इन्कार करती है—जिसका यह द्योतन करती है जिसे 'मैं देखता हूँ कि यह नवीन है, जो नवीनता को अभिव्यक्त करने वाले उपवाक्य मे अनुमोदनात्मक की अपेक्षा करता है अर्थात् ni? tɪwa'-q Kɪr pi hi (मेरे देखने से यह

---

5. हम यहां पर 'Objective' वस्तुनिष्ठ के स्थान पर 'Sensory' संवेदी न पढ़ें, क्योंकि उन अनुभूतियों को, जिन्हें मनोविज्ञान संवेदनों के स्तर की अपेक्षा प्रत्यक्ष ज्ञान के स्तर पर, या साधारण धारणाओं के स्तर पर भी रख सकता है, (उन्हें) अनुमोदनात्मक की आवश्यकता नहीं है, यद्यपि उन्हें संवेदनाओं से भिन्न माना जाता है। वे एक ऐसी क्रिया या इस प्रकार के तथ्य, जिसका शाब्दिक नाम (क्रिया) है, को देखने के प्रत्यक्षबोध हैं, (अथवा साधारण धारणाएँ) तथा उन्हें निश्चयार्थक परासम्बन्धी में रख दिया जाता है, जब कि यह अब देखने की क्रिया है जो कि स्वतन्त्र वृत्ति में है जैसे nɪ? tɪwa wa ya-qo 'मैने उसे भाग जाते हुए देखा' nɪ? tɪwa cɪrot mɪ? a-qo? 'मैंने उसे पक्षी को गोली से मारते हुए देखा'। यह एक महत्त्वपूर्ण बात है कि होपी लोग अपनी भाषा में प्राप्त सूचना के उन चार प्रभेदों को मान्यता प्रदान करते हुए प्रतीत होते हैं जो कि मनोविज्ञान द्वारा किए गए क्रम निर्धारण के अनुरूप है : (१) संवेदी, जैसे 'मै देखता हूं कि यह लाल है', 'मैं उसे गिरते हुए सुनता हूं' (अर्थात् मैं उसके गिरने का शब्द सुनता हूं), संवेदनशील क्रिया-पद परासम्बन्धी में है, सूचना देने वाला क्रिया-पद निश्चयार्थक में है, (२) प्रत्यक्ष बोधात्मक धारणात्मक, जैसे 'मैं उसे गिरते हुए देखता हूं, संवेदनात्मक क्रियापद स्वतन्त्र वृत्ति में हैं, सूचना क्रियापद परासम्बन्धी में, (३) प्रकट भाषाई, जैसे मैंने सुना कि वह गिर गया (अस्वीकृत), संवेदनात्मक क्रियापद परासम्बन्धी में, सूचना क्रिया-पद उद्धरणात्मक में, (४) शुद्ध धारणात्मक, जैसे 'मैं' देखता हूं कि यह नया है 'मैने सुना कि वह गिर गया' (एक स्वीकृत सत्य) संवेदनात्मक क्रियापद परासम्बन्धी में सूचना क्रियापद अनुमोदनात्मक में ।

निष्कर्षत. नवीन हो गया), दूसरे शब्दो में नवीनता 'लाली' या "प्रकाश" की तरह एक चाक्षुप सवेदन नही है, यह प्रत्यक्ष रूप से नही देखी जाती, अपितु Kir प्रस्तुत सामग्री से इसका अनुमान लगाया जाता है, या इसे मान लिया जाता है। हमे यह मनोवैज्ञानिक विश्लेपण की तरह प्रतीत होता है, परन्तु होपी के लिए यह एक स्पप्ट तथा व्यावहारिक प्रमेद है। अग्रेजी की साधारण हेतुमद् if (यदि) युक्त रचना के लिए होपी मे हेतुमद् या परासम्बन्धी वृत्ति अपेक्षित है, जो हमारे if 'यदि' का सयोजक कार्य भी सम्पन्न करती है, if (यदि) के बन्धक रखने के कार्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए उसका अनुमोदनात्मक होना आवश्यक है, अन्यथा उसका उस वृत्ति का अनुवाद, when (जब) होगा if (यदि) नही। अत Kir ni'm-ɛ?mi' nat tiwa' ni 'यदि वह घर जाए तो वह नदी को देखेगा' (यह मान लिया जाता है कि वह घर जाता है इत्यादि)। तथ्य का विरोध if एक अन्य विषय है ?as, see below (नीचे देखिए)।

आवश्यकता (Necessitative) **सूचक प्रकारक :** So'? on qa इसका अर्थ है 'आवश्यक रूप से' स्वाभाविक रूप से, 'अनिवार्य रूप से' तथा इसका दोहरा नकारात्मक होना जो होपी मे सदैव सकारात्मक बनाता है, यह भारोपीय दृष्टिकोण से बडा अजीब सा लगता है। यह qa 'नही' तथा So'?on 'प्रत्यागी नहीं', का संयोग है। अत: इसका अर्थ है कि 'नकारात्मक की कोई सम्भावना नही है'। इसके द्वारा प्राय: अग्रेजी के must 'अवश्य होना चाहिए' तथा 'करना पडेगा' का अनुवाद किया जाता है, परन्तु यह किसी प्रकार की अनिवार्यता कर्त्तव्य या बाध्यता की धारणा से रञ्जित नही है, क्योकि यह पूर्णतया तटस्थ तथा निरपेक्ष है। इसका प्रयोग प्राय: हेतुमद् कथनो के निष्कर्ष मे एक आवश्यक परिणाम दिखाने के लिए किया जाता है जैसे Kir ni'm-ɛ?So'? on qa'minattiwáni यदि वह घर जाता है तो नदी को देखेगा।

असम्भाव्यार्थक (Impotential) (**अविध्यर्थक**) ?as : हमारी चिन्तन पद्धति के शब्दो मे इस प्रकारता को अभिव्यक्त करना बहुत कठिन है। यह उस तथ्य की ओर सकेत करता है जिसे मैं उद्देश्य-मूलक अप्रभावोत्पादकता कह सकता हू। हम कुछ दूर तक तो होपी के मार्ग पर इस प्रकार के दृढकथन रूपो को मान्यता प्रदान करते हुए साथ साथ चलते है जैसे 'may' कर सकता (आशा) और 'Can' कर सकना (सामर्थ्य) जो केवल 'करता है' या 'नही करता है' से भिन्न स्तर पर है, तथा इन अधिक प्राथमिक दृढकथनो की तुलना मे इनकी एक स्थिति है। जिसमे वे विशेषताए है जो सकारात्मक एव नकारात्मक का, वास्तविकता एव अवास्तविकता का मिश्रण है। वे इन दो विपरीत ध्रुवो के मध्यभूमिवर्ती होते है यद्यपि रूपात्मक दृष्टि से ये सकारात्मक अभिरचना मे ढले होते है, परन्तु हमारी सभी "मध्यभूमि अभिव्यक्तियाँ अन्तर्हिति के क्षेत्र का सकेत देती है, इस कथन की सकारात्मक-नकारात्मक द्विविध प्रकृति का कारण यह है कि इस विषय मे सत्य अन्तर्हिति सम्बन्धी है जिसकी आविर्भूति भविप्य के गर्भ मे है। होपियों

की भाषा मे इस तरह की मध्य-भूमिवर्ती अभिव्यक्तियाँ भी है जैसी हम देख चुके हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त उनकी भाषा मे ऐसी भी मध्यवर्ती अभिव्यक्तियाँ है जिनमे द्विविध सकारात्मक-नकारात्मक प्रकृति, अन्तर्हिति का विषय नही है, अपितु उसका सम्बन्ध उन घटनाओ से है जो पहले ही घटित हो चुकी है। इसके अतिरिक्त, ऐसी अभिव्यक्ति जो ऐसे विषय को निर्दिष्ट करती हो जो पहले कभी घटित ही नही हुआ हो, तो उसका सम्वन्ध वास्तविक घटनाओ के निर्देशो के साथ साथ उभी अर्धवास्तविकता के क्षेत्रो से जोडा जा सकता है। कसौटी, जो भाषण की विषय-वस्तु पर मानो अर्धवास्तविकता का विशेष लाञ्छन मढ़ देती है, वह है. प्रयोजन, लक्ष्य, प्रेरणा आवश्यकता, कार्यआदि विषयक अप्रभावोत्पादकता, (जहाँ पर हमारी अपनी विचारधारा की त्रिविध धारणाएँ लागू होती है) जो मूलरूप से किसी भी क्रियाशीलता का आधार वनाते है। यदि होपी एक ऐसी घटनाओ के अनुक्रम की सूचना दे रहा है जिसमे एक आदमी अपना पीछा करने वाले लोगों से भाग गया परन्तु वाद मे उनके द्वारा पकड़ा गया तो वह यहाँ, अविध्यर्थक का प्रयोग करेगा और कहेगा ta' qa? as wa'ya 'कि व्यक्ति भाग गया था' (और 'भाग गया था' का अर्थ कभी यह नही होगा कि वह 'बच निकला')। यदि व्यक्ति भाग गया और वच निकला तो वह केवल इस प्रकार कहेगा ta' qawa' ya. Ni? maqto का अर्थ है 'मैं शिकार के लिए गया' ni ? ?as maqto की भी यही वात है, केवल अन्तर यह है कि 'मैं खाली हाथ चला आया।" हम इस प्रकार की सूचना एक निराशा भरे स्वर मे यह कह कर देते 'हा, मैं शिकार के लिए गया था,' परन्तु होपी वाक्य की तुलना वास्तव मे इस वाक्य से नहीं की जा सकती। यह पूर्णतया भाव-रहित कथन है, ?as भाव की अभिव्यक्ति न होकर बौद्धिक अभिव्यक्ति है और इसका प्रयोग किया जाता है चाहे वक्ता भावना हीन हो या अप्रसन्न, अथवा प्रसन्न हो जैसे cö 'viw ?as wa'ya 'हरिण' भाग गया था (परन्तु मैंने उसे पकड़ लिया)। इस प्रकारता को मैंने impotential 'असमर्थी' नाम इसलिए दिया है कि यह क्रियाशीलता तथा प्रयत्न-विषयक कथनो को असमर्थता की अभिव्यजकता प्रदान करता है। प्रत्याशी मे यह अनुवाद को 'will' 'गा, गे, गी' से वदल कर 'प्रयत्न करता है' वना देता है. जैसे ma'na? as wïni' máni लडकी नाचने का प्रयत्न करती है (परन्तु नाचने मे सफल नही हो पा रही है)। फिर भी प्रत्याशी असमर्थी (प्रकारता) यह संकेत नही देता कि वाद के प्रयत्न सफल नही होगे। जव प्रत्याशी किसी वृत्तान्त के भूतकाल का सकेत देता है तो इसकी असमर्थी प्रकारता अतीत के उस हताश प्रयत्न का वोध कराती है जो वास्तव मे घटित नही हुआ जैसे ?as wa' ya' ni उसने 'भागने का प्रयत्न किया था' किसी कैदी के विषय मे जो भागने मे सफल नही हो सका। जव असमर्थी प्रकारता किसी आश्रिता वृत्ति मे होता है (अर्थात् जव यह हेतुमद् या परासम्वन्धी हो तथा दूसरा उपवाक्य प्रत्याशी) तो वास्तविकता कदापि अनुभूत न होने वाली सैद्धान्तिक भूतकालिक सम्भावना के रूप मे और भी अधिक सूक्ष्म हो जाती है। अतः हमारी वस्तुस्थिति के विपरीत परि-

स्थिति होपी मे असमर्थी प्रकारता होती है जैसे ?as nim-ϵ? on qa' mi' nat tïwanı 'यदि वह घर गया होता तो उसने नदी को देखा होता' (जव वह कभी अनुभूत न होने वाली घर जाने की योग्यता मे था तो तव वह नदी देखने की अकिंचन प्रत्याशा मे था)। ऐसी स्थिति मे असमर्थी के साथ अनुमोदनात्मक भी जोडा जा सकता है विशेषतः यदि वृत्ति परासम्वन्धी है तो जैसे Kır ?as nıma-q so'? on qa mo' ywı'? aw piti'nt. (यदि वह घर गया होता तो उसे मुखिया मिल गया होता) हमारे 'although'यद्यपि But 'परन्तु', Yet 'तथापि' आदि, दो विरोधी प्रवृत्तियो के वीच एक प्रकार के तनाव की ओर इगित करते है। होपी भाषा विना गलती के इस विषय मे भेद स्पष्ट करती है कि आया इनमे से किसी एक प्रवृत्ति ने दूसरी को निष्फल वनाया है (असमर्थी अर्थ) या विरोध इस प्रकार का है जिसे Kϵ, Sϵn या किसी अन्य ढग से दिखाया जाए। अतः सगामी मे ni? ?as qati-Kay mayi' 'यद्यपि मैं वैठा हुआ था फिर भी मुझे थकान अनुभव हो रही थी।' परासम्वन्धी मे ?as wa' ya'-qni? a 'यद्यपि वह भाग गया फिर भी मैंने उसे पकड़ लिया।' दूसरी ओर ?as का प्रयोग ऐसे वाक्य मे ठीक नही होगा, 'यद्यपि वह भाग रहा था फिर भी गा रहा था' क्योकि यहाँ किसी भी प्रवृत्ति ने दूसरी के प्रयोजन को निष्फल नही वनाया है, इस विषय मे होपी केवल wárıki'w-Kay tá wá lá wi, 'जव वह भाग रहा था तो गा रहा था, या सम्भवतः इसमे हल्के से आश्चर्य को प्रकट करने वाला कोई तत्त्व जोड़ दे। आनुक्रमिक रूप में '?as piti'-t qa' wïni'ma 'यद्यपि वह पहुँच गया था फिर भी वह नाचा नही', ?as का अर्थ है कि आने का कार्य नाचने के लिए था, यदि ऐसा न होता तो वह आता भी नही।'

भारोपीय से अभिरचना विषयक वैषम्य इसी सम्वन्ध मे है जवकि ये सारी प्रकारताए भारोपीय विध्यर्थक (Subjunctive) से मिलती जुलती है, इनमे से एक भी इससे तालमेल नही रखती। होपी भाषा हमारे विध्यर्थक का विभिन्न प्रकार से अर्थ लगाती है। वे अर्थ उन सम्वन्धों की मान्यता के अनुसार होते हैं जिनके विषय में हम भाषाई ढग से अभिज्ञ नही है। अतः (If I were King) 'यदि मैं राजा होता' मे were "होता" असमर्थी है; (to see if he were brave) 'यह देखने के लिए कि वह वीर था' मे were 'था' अनिश्चयार्थक है। 'यद्यपि वह जिद्दी हो' (Though he be stubborn) मे "be" (हो) परामर्शी है, 'यदि वह सही हो' (If he be right) मे "be" 'हो' अनुमोदनात्मक है। या यूं कहा जाए कि, आखिर होपी अभिरचना भारोपीय से इतनी भिन्न है क्या? यह एक

6. संक्षेप में (might-as-well- not-have-been) का क्षेत्र सकारात्मक तथा नकारात्मक के बीच की वह मध्य-भूमि है जिसका प्रतिनिधित्व अविध्यर्थक करता है। जिसे 'हम हो-सकता था' कहते हैं वह होपी के इस क्षेत्र का एक भाग मात्र है। यह प्रत्याशा (सामर्थ्य, प्रवृत्ति, सम्भावना, इच्छा) है जो कि नहीं भी हो सकती थी।

सत्य है कि सामान्य रूप से ऊतो-अज्तेकन भाषाएँ तथा विशेष रूप से होपी अमरीकी इण्डियन भाषाएँ व्याकरण की प्रकृति के कारण असामान्य रूप मे भारोपीय के सस्मरण है। क्या यह सम्भव हो सकता है कि भारोपीय के प्राचीन रूपो मे, सम्भवतः हित्ती मे वाक्य विन्यासात्मक रचनाएं मिल जाएँ जिनका विश्लेषण कुछ कुछ होपी की रूपरेखा पर किया जा सके ?

अन्य प्रकारक

होपी मे बहुत से ऐसे प्रकारक भी है जिनके प्रयोग प्रकारता व्यवस्था से कुछ कम निश्चित रूप मे रूपात्मक है। उनकी अभिव्यक्ति की विशाल श्रेणी का निदर्शन निम्न-लिखित रूपों द्वारा किया गया है। ?ïra स्मृति, स्मरण करना, स्मरण के अनुसार बात इस प्रकार है, Pisnïnti'q: सम्भावना, यथोचित प्रत्याशा, तर्कसगत पूर्वानुमान या आशा—'फर्ज़ करके' तथा प्रत्याशी मे हमारे 'यदि सब कुछ ठीक चलता रहा तो' की तरह। náwïs विना किसी बाध्यता के स्वेच्छापूर्वक किसी कार्य को करने की कर्त्तव्य भावना, अग्रेजी के "ought to" 'करना कर्त्तव्य है' या "should" (करना) चाहिए से भिन्न है, क्योकि होपी की इस अभिव्यक्ति मे कार्य किए जाने की अधिक वडी प्रतिज्ञा है, और इसका कभी 'कभी "has to" 'करना पड़ेगा' अनुवाद किया जा सकता है, परन्तु मेरे सूचक के अनुसार यह हमारी can't very well refuse to ('करने के लिए अच्छी तरह इन्कार 'नही कर सकता') के समान है। PɛV: लगभग, प्राय:, PɛVKɛ सम्भवत: लगभग, लगभग (कर सके) pi परिस्थितियो की स्वीकृति 'वे जैसे भी हैं' या 'जैसी होनी चाहिए', आविवाद्य तथ्य, अनिवार्यता, कभी कभी यह अग्रेजी शब्द बलाघात के सदृश होती है, जैसे pam pitɪ' ni 'वह पहुच जायेगा' pɪ' pam pitini वह पहुच जायेगा; 'वह कम से कम पहुच तो जायेगा।' यह हमारे After all 'आखिरकार' के भी समकक्ष है तथा इससे भी अधिक कन्धो को झटका देने के समान है जबकि pay pɪ' "पहले ही' में pɪ अपरिवर्तनीय वास्तविकता के प्रति दार्शनिक समर्पण है, pay pi'wa ya 'वह भाग गया और यह ऐसा ही है।' नकारात्मक pi' qa' तथा आवश्यकतापरक so'? on pi' qa' के साथ सयोग भी बहुत सामान्य है।

ta' tam ऐसी आवश्यकता जिसके प्रति कोई व्यक्ति आत्म-त्याग की भावना सहित आत्मसमर्पण करे; must 'अवश्य' या may as well (अवश्य करेगा भी) इस भावना से ओत प्रोत: का अर्थ है कि कर्ता अपने स्वार्थ तथा पसन्द का त्याग कर रहा है।

tïr : इच्छा जिसमे कार्य करने का स्पष्ट संकल्प नही, 'करना चाहता है' या 'करने की इच्छा रखता है' से भी अधिक अस्पष्ट, 'करने की सोच रहा था' के अधिक निकट 'करना चाहेगा।'

जिस सीमा तक 'वृत्तिपरक भावना' का वैभिन्य है तथा (जिस सीमा तक) इसकी प्रयोग-चातुरी विभिन्न भाषाओ मे स्पष्ट रूप से भिन्न है परन्तु इन क्षेत्रो मे जितनी दूर तक होपी भाषा गई है उस सीमा तक सम्भवत: अन्य भाषाएँ नही गई हैं।

भाषा : व्यवस्था की धारणा एवं योजना

सम्पादकीय टिप्पणी : व्होर्फ ने 1938 मे यह तालिका तथा सलग्न रूपरेखा पाण्डुलिपि के रूप मे अपने चुने हुए साथियो मे घुमाई थी । यह याले विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग के George P. Murdock तथा उसके सहयोगियो द्वारा मानवशास्त्र के क्षेत्र-कार्यकर्त्ताओ के निर्देशनार्थ तैयार की गई (सास्कृतिक सामग्री की रूप रेखा) Outline of cultural materials के परिशिष्ट के रूप मे लिखी गई थी, तथा इसे सक्षेप मे उस रूप-रेखा का Language खण्ड कहा जाता है।

व्होर्फ ने अपने लेखो मे कई स्थानो पर भाषाओ के विश्व-सर्वेक्षण की वाञ्छनीयता की चर्चा की है। निस्सन्देह इस तालिका का उद्देश्य यह था कि विशिष्ट भाषाओं के विषय मे सूचना एकत्रित करने के लिए एक ऐसा प्रस्तावित मानक ढाचा तैयार किया जाए जिसकी भविष्य मे इस प्रकार के सर्वेक्षण करने मे आवश्यकता पड़ सकती है।

पाठक का ध्यान पहले पृष्ट154की तालिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जो व्होर्फ द्वारा कल्पना की गई सम्पूर्ण योजना को प्रदर्शित करती है। परवर्ती रूपरेखा, जो तालिका के "अर्थविज्ञान खण्ड के विस्तार" को प्रस्तुत करती है, इस तालिका की सलग्निका मात्र है, यद्यपि इसमे अधिकाश भाषाई सामग्री है। इस सामग्री को उस मूल पाण्डुलिपि मे केवल छोटे मोटे परिवर्तन एव सशोधन करके छाप दिया गया है जिसे शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नार्मन मेक्कवोन ने जुटाया था।

[तालिका के अर्थविज्ञान खण्ड का विस्तार]

(क) वाक्य

1. वाक्यान्त अकन. अनुतान के द्वारा (एक अभिरचना, कई अभिरचनाएँ)

विराम रूप

विशिष्ट अकन तत्त्व

शब्दक्रम

भावात्मक अकन। वाक्यान्त का अकन करने वाली अनुताने या अन्य तत्त्व तथा इनका भी द्योतन करने वाले, जैसे वल, अभिरुचि, आश्चर्य, आशका, परिप्रश्न, विश्वास की दृढता, भावात्मक लव्वीकरण या अभिवर्धन आदि।

2. वाक्यारम्भ अकन : शब्दक्रम द्वारा, जैसे क्रिया सदा पहले आएगी आदि।

भाषा

योजना तथा व्यवस्था की धारणा

भाषा

- व्याकरण (वास्तव में इनका विलयन हो जाता है)
  - स्वनप्रक्रिया
    - स्वनिमिकी
      - रणन
      - स्वनिमिकी (खण्डात्मक):
        - स्वनिमों की तालिका
        - अभिरचना अन्विति
        - संस्वनिक या सोपाधिक परिवर्त
        - संस्वनिक समूह
      - वनगुणिमिक स्वप्नविज्ञान :
        - अक्षर विज्ञान
        - दीर्घता
        - स्वराघात
        - वल, सुर,
        - तान
    - रूपस्वनिमिकी (स्वन प्रक्रियात्मक प्रक्रम)
      - सम्पर्क परिवर्तन :
        - सामान्य
        - संकोचन
        - संलयन
        - लोप
        - विशेष
        - आन्तरिक रचनात्मक
        - परप्रत्यययोजन
        - इत्यादि
        - बाह्य (सन्धि)
      - अन्त्य परिवर्तन
        - आक्षरिक
        - शब्द-अन्त्य
        - शब्द-आदि
      - स्वनगुणिमिक रूप से अनुबन्धित परिवर्तन
  - अर्थविज्ञान
    - वाक्य :
      - वाक्यान्त चिन्ह्न
      - वाक्यारम्भ
      - चिन्ह्न
      - अन्तर्वाक्यीय शृंखलता (वाक्य विन्यास)
      - वाक्यान्तरीय शृंखलता
      - विधेयन
      - अल्पतम तथा संक्षेपीकृत वाक्य
      - विस्मय-बोधक
    - शब्द
      - रूप विज्ञान (प्रकट संरचना)
        - प्रविधियाँ
          - उपसर्ग
          - परप्रत्यय
          - मध्यसर्ग
          - अपश्रुति
          - अभ्यास
          - निष्कासन
      - अप्रकट संरचना
        - प्रविधियाँ
          - क्रम
          - वरण
          - सार्वनामिक
          - सम्बन्ध निर्देश
          - प्रतिघात
      - कोटियाँ
        - शब्द कोटियाँ
        - परिवर्तक कोटियाँ
        - गूढ़ प्ररूप
    - शाब्दिम:
      - अनुपूर्वयताएं
      - धातु
      - अंग
      - प्रातिपदिक
      - आदि ।
      - धातु की संरचना, आदि
      - व्युत्पत्ति, प्रविधि तथा प्रकार
      - सरचना
      - आर्थी-धातु
      - रचना
- शैली शास्त्र
  - वार्तालाप शैली
  - आलंकारिक शैली
  - भाषण
  - उद्घोषणाएँ आदि
  - कथा शैली
  - सामान्य
  - पौराणिक
  - गीत, या पद्यात्मक शैली
  - जादू टोना शैली
  - गूढ़ व्याख्याएँ
  - शब्द परिहार
  - रति (सैक्स) शैलियाँ

वाक्य-प्रारम्भक
अनुतान
अन्य
अनुपस्थित

3. अन्तर्वाक्यीय शृंखलता (वाक्य विन्यास) (वाक्य के अन्दर ही एकीकरण करने वाला नियम) शब्दक्रम। शब्दक्रम का विस्तार, उद्देश्य-विधेय क्रम, सन्निकट क्रम (विशेषक पहले, विशेषक बाद मे, मिश्रित), व्यवहित क्रम (समस्त पद प्रवेश); जैसे अंग्रेजी विभक्त भावार्थक संज्ञा।

प्रकार्यात्मिक कोटियाँ (जैसे, संज्ञाएँ, क्रियाएँ, विधेयक आदि) विभिन्न प्रकार से अंकित। कोटियों को 'ख' 'शब्द' के नीचे देखिए।

सम्बन्धों का अंकन, जैसे कारकों द्वारा, पूर्वसर्गों या परसर्गों द्वारा, क्रिया निर्देशको द्वारा (अर्थात् क्रिया—लक्ष्य, कारण-कार्य, सकर्मकों, प्रयोगात्मकों के के विभिन्न अंकन) et al

सन्निवेशन (क्रिया के अन्तर्गत सम्बन्ध-निर्देश, या वाक्यरचना का अन्य संकेत शब्द)

सार्वनामिक समावेशन या निर्देश, संज्ञा समावेशन

निमित्तवाची और करणवाचक तत्त्व, तथा शरीरावयव तत्त्व, इत्यादि।

'क्रिया पद', एक केन्द्रक वाक्य, (उदाहरणार्थ नवाहो भाषा में)

एकशब्दीय वाक्य (बहुसंश्लेषण का एक रूप, जिसमें क्रिया अधिकांश वाक्य का समावेश कर लेती है)

वाक्यगत अनुरूपता, अर्थात्, रूप सम्बन्धी वर्ग की अनुरूपता, जैसे लिंग, वचन, मे अनुरूपता आदि (बाँटू इसका उत्कृष्ट उदाहरण है)।

4. वाक्यान्तरीय, शृखलता (बाह्य वाक्य-विन्यास) (एक वाक्य को दूसरे वाक्य के साथ जोड़ना)

संयोजकहीन-वाक्यविन्यासात्मक (समन्वय कारक)
वाक्यों की सन्निधि
समन्वयकारी तत्त्व
स्वन गुणिमिक (अनुताने, आदि)
उपशाब्दिक (प्रत्यय, आदि)
निपात (पूर्वाश्रयी या शब्द, जैसे='और')
आश्रित वाक्य-विन्यास (अधीनता सूचक) (आश्रित उपवाक्यो का प्रयोग) क्रम
स्वनगुणिमिक का अर्थ है (अनुतान आदि, जैसे अग्रेजी अर्धविराम अनुतान)
उपशाब्दिक अकन, जिसमें विशेष क्रियारूप सम्मिलित है—
क्रियार्थक संज्ञाएँ, अधीनता सूचक निपात, समुच्चय बोधक।

5. विधेयन

प्रविधियाँ

शब्दक्रम या वाक्य अभिरचना (अयोगात्मक प्रकार)

उपशाब्दिक विधेयक (अर्थात् प्रत्यय आदि, जिसके साथ वे जुड़ते है, उससे "क्रिया" की रचना करते है। यहाँ पूरी "क्रिया" नही, अपितु प्रत्यय ही विधेयक हैं)

विधेयक शब्द-श्रेणियाँ (क्रियाएँ तथा बहुत प्रकार की अर्धक्रियाएँ; विधेयात्मक शक्ति शाब्दिक *अर्थ* के साथ-मिलाकर एक कर दी जाती है, जैसे 'eat' (खाना); 'kill' (मारना), 'stand' (खड़े होना)

शब्द 'ख' के नीचे कोटियाँ देखिए।

केवल क्रियात्मक वाक्य

क्रियात्मक तथा नामिक वाक्य—नामिक वाक्य जो क्रम अभिरचना, उपशाब्दिक रूप इत्यादि द्वारा निर्दिष्ट किए जाते हैं।

प्रचालक (विधेयन के लिए विशेषीकृत शब्द, अन्यथा शाब्दिक अर्थ 'शून्य', [जैसे अंग्रेजी मे 'be, become, cause, do'] या अस्पष्ट अर्थ [make, turn, get इत्यादि])।

सहायक क्रियाएँ

प्रविधियो का मिश्रण

विधेयन की कोटियाँ

संयोजक (*be*) (हो)

सामान्य

अन्तर्निष्ट (स्पैनिश Ser), या आत्मनिष्ठ वस्तुनिष्ठ (स्पैनिश estar)

सामान्य क्रियार्थक जिसमे निम्नलिखित सभी सम्मिलित है:

प्रेरणार्थक

    कर्तृ-प्रेरणार्थक

    अकर्मक-भाववाच्य

    सकर्मक

अकर्तृ-प्रेरणार्थक

    अकर्मक

    सकर्मक

अप्रेरणार्थक

    स्थैतिक

    परिणामवाची

    कर्मवाच्य

अन्य (उपरिलिखित का विवरण भाषा की अभिरचना के अनुसार भिन्न प्रकार से दिया जा सकता है, जैसे—करणात्मक क्रिया, आदि)

6. अल्पतम और सक्षेपीकृत वाक्य

संक्षेपीकृत वाक्य

भूतलक्षी रूप, जैसे 'I did,' 'Will you'? ।

लुप्तरूप जैसे But tomorrow—।

सामाजिक सूत्रात्मक प्रयोग ('Thank you, hello, please, आदि) ।

अल्पतम वाक्य

सम्बोधन प्रकार जैसे (John! Mother!)

आज्ञार्थक प्रकार (Come!) 'आओ'!

अन्य

'Yes' तथा 'No'

विस्मयबोधक

साधारण ('Oh, Ouch, Alas' आदि) ।

"शपथवाची शब्द"

विशेष सास्कृतिक बल से युक्त अन्य प्रकार

(ख) शब्द (शब्द वाक्य के अश के रूप मे)

1. रूप विज्ञान (प्रकट सरचना)

प्रविधियाँ (प्रकट अकन की) (यदि सम्भव हो तो मात्रा का उल्लेख कीजिए जैसे हल्का, सामान्य, प्रचुर, विपुल)

पूर्वप्रत्यय योजन

परप्रत्यय योजन

मध्यप्रत्यय योजन

स्वरात्मक अपश्रुति

प्रातिपदिक के एक स्वर का परिवर्तन, दो या अधिक का परिवर्तन अपश्रुति का लोप, दीर्घता परिवर्तन, कम्पनशील

व्यञ्जनपरक अपश्रुति

बलाघात और (या) तान परिवर्तन

द्वित्व (पूर्ण, आशिक, प्रारम्भाक्षरिक, अन्त्याक्षरिक, स्वरात्मक, प्रक्षिप्त अंश सहित द्वित्व)

आगमात्मक अभ्यास (सामान्यत जिसे द्वित्व कहा जाता है)

स्वरागमात्मक, प्रारम्भिक (tak–atak), अन्त्य (lem–leme)

व्यञ्जनागमात्मक, प्रारम्भिक (lem–mlem), अन्त्य (lem–leml) मिश्रित (जैसे lem–lemel)

स्वर-सगति अन्य प्रविधियो के साथ

कोटियाँ, रूपविज्ञानात्मक। देखिए नं० ३ कोटियाँ

2. अप्रकट सरचना और सम्बन्ध

प्रविधियाँ

वरण* (जैसे John, come, dog, kill के बीच अन्तर)

सर्वादेश (जैसे go, went)

क्रम (वाक्याश या वाक्य मे)

सार्वनामिक सम्बन्ध निर्देश (जैसे अंग्रेजी मे लिंग श्रेणी का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त)

सम्बन्ध-निर्देश सूचक शब्द द्वारा जो सर्वनाम न हो प्रतिघात (शब्द जो अप्रकट सम्बन्धों द्वारा अन्य शब्दों के वरण का नियन्त्रण करता है, जैसे नवाहो भाषा मे वृत्ताकार बनाम लम्बी वस्तुओं के नाम, क्रिया रूपों की प्रकृति के वरण का नियन्त्रण करता है)

कोटियाँ, अप्रकट देखिए न० 3 कोटियाँ

3. कोटियाँ

प्रकट या अप्रकट हो सकती हैं। यदि सम्भव हो तो यह भी बताइए कि कौन सी और किस प्रकार निर्दिष्ट होती है या मिलाई जाती है, जैसे, क्रियाएँ, परप्रत्यय योजन, सज्ञाएँ, शुद्धवरण; संज्ञाएँ, अन्य अंकन प्रणाली का अभाव।†

I–शब्द कोटियाँ

(क) प्रकार्यात्मक—शाब्दिक

सज्ञा

क्रिया

विशेषण

क्रिया विशेषण

इनमे से एक भी नहीं (यह याद रखना चाहिए कि इनमें से कोई सी या सभी प्रकारों की सत्ता का न होना सम्भव है, जैसे प्रत्येक धातु मे लगने वाले क्रिया-करण के प्रत्यय के बिना क्रियारूप की सिद्धि असम्भव हो सकती है। अत. यहाँ क्रियाओ की कोई श्रेणी नही है केवल एक "परिवर्तक कोटि" हैं (q. v.) क्रियाकरण की)

(ख) प्रकार्यात्मक

सर्वनाम (पुरुषवाचक, संकेतवाचक, निमित्तवाची के प्रकार बताइए,—द्योतित विचारों का निर्देश कीजिए—प्रश्नवाचक, निषेधात्मक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक आदि)

---

* वरण : अर्थात् शुद्धवरण-वरण अन्य शब्द कोटियों के निर्देश के साथ भी आता है। शुद्धवरण के लिए अप्रकट शब्द कोटियों की सत्ता अपेक्षित है। (q v.)

† जहाँ सम्भव हो सामान्यतः मिलने वाली कोटियों के परिहार का उल्लेख कीजिए, जैसे बहुवचन-रहित, लिंग-रहित।

निपात (वाक्य का निर्देशन या जोड़ने के लिए प्रयुक्त शब्द देखिए अन्त्य-निर्देशक, आरम्भ-निर्देशक (आरम्भी) पूर्व एवम् परसर्ग, सयोजक, वृत्तिवाचक निपात, विधेयक, प्रचालक आदि।)

उपपद देखिए II ग निश्चायक—अनिश्चायक

(ग) सम्वन्ध निर्देश कोटियाँ (जिसमें अनुभव, विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ स्थिति या क्रिया का वर्गीकरण निहित होता है।)

लिंग (वहुत से विभिन्न प्रकार, पुल्लिग, स्त्रीलिंग, चेतन, अचेतन, पुरुषवाचक, तर्कसम्मत, अतर्कसम्मत, समेकित आदि।)

वहु सम्वन्ध निर्देश कोटियाँ (वहुत सी लिंग जैसी श्रेणियाँ, जिनका अर्थ प्राय: अविवेच्य होता है, जैसे वाँटू)

सामाजिक स्थिति तथा पदवी श्रेणियाँ

आकृति श्रेणियाँ, (जैसे, नवाहो, हैदा) (Haida)

उपस्थिति—अनुपस्थिति

गोचरता

स्थान तथा विस्तार श्रेणियाँ

(घ) शुद्ध रूपात्मक श्रेणियाँ, जैसे

(ङ) पुरुषवाचक नाम श्रेणियाँ, लिंग, आयु, आदर, आदि।

II–परिवर्तक कोटियाँ (ये शव्द श्रेणियों को उनमें ही सीमित नही करती हैं; ये किसी एक श्रेणी को या श्रेणियो को जो पहले ही दूसरी विधियों से सीमित कर दी गई हैं, उनमे विशेषाधान करती है)।

(क) सामान्यत: उपयोज्य

विधेयन

क्रियाकरण (विधेयन 'be' होना के अतिरिक्त)

"नामीकरण" या संज्ञा-निर्देशन

निरपेक्षिक प्रत्यय, नाम निर्देशक उपपद, शून्य अंकन, इत्यादि

विशेषणीकरण

(ख) मिश्रित उपयोजन—कभी कभी साधारणतया उपयोजित तथा कभी विशेष रूप से उपयोजित।

सख्या (इस प्रकार 1, 2, 3, कई, वहुत, वहुवचन)

समुदायवाचकता तथा वितरण

अवधि

काल निर्देशन (विस्तारण—अवधि)

समय या काल

तुलना, जैसे विशेषणो की

सम्वन्ध निर्देश कोटियो को भी देखिए, ये ही विचार परिवर्तक कोटियों पर भी लागू किए जा सकते हैं।

(ग) विशेष उपयोजन

प्राय: क्रियापदो पर लागू किया जाता है (या क्रियाकरण के साथ)

विधेयन की कोटियाँ, q. v. क वाक्य मे देखिए

वाच्य : कर्तृ कर्म इत्यादि

विश्लेपण : सकर्मक, अकर्मक, कर्म (वाच्य और विश्लेपण मिल जाते है)।

पक्ष (अवधि, विस्तारण, इत्यादि जैसे काल विन्दु निष्ठ, आवधिक, पूर्णतावाची; अपूर्णतावाची, आरभमाण, सातत्यवोधक, घटमान, पौन:पुनिक, आम्रेड़ित, अभ्यासी (Usitative) आदि)

अतिवाचक

काल व्यवस्थाएँ

प्रकार (वृत्ति) जैसे निश्चयार्थक, संभावनार्थक, अनुमिति, सशयवाचक, इच्छार्थक, विध्यर्थक, अनुज्ञापक, अनुमतिवाचक, विरोधवाचक, et al: स्थिति, जैसे; प्रश्नवाचक, निषेधात्मक, उद्धरणात्मक, अवधारक, विस्मय-सूचक, तथा अन्य प्रभावी रूप

सम्वोधन के रूप, जैसे, आज्ञार्थक, निषेधात्मक, (नकारात्मक आज्ञार्थक); उद्‌वोधक, इत्यादि

क्रियार्थक संज्ञाएँ या अधीनता सूचक (देखिए क 4 के अन्तर्गत)

प्राय: सज्ञा शव्दों पर लागू होता है (अथवा नामीकरण के साथ)

स्थिति (अर्थात् अधिकृत, अनधिकृत, सार्वनामिक रूप से अधिकृत रूप)

कारक (विभिन्न कारक)

विशेषणीकरण (सामान्य मे भी दिए गए है)

निश्चयवाचक—अनिश्चयवाचक (उपपद, आदि)

अंशसूचक (कुछ या कोई)

सामान्य कथन, जैसे, 'एक आदमी, एक औरत, एक कुत्ता' इन शव्दो के विरोध में 'आदमी, औरत, कुत्ता',

सतत, जैसे 'छड़ी, धातु का टुकड़ा' इनकी तुलना मे 'लकडी, धातु' एकलकरण; जैसे 'छडी'

अन्य—देखिए निर्देश कोटियाँ जिनमे ये मिलकर एक हो जाती है।

(घ) प्रभावी परिवर्तक कोटियाँ (एक विचार की अपेक्षा वक्ता की भावनाओं को व्यक्त कीजिए)

प्रभावी लघ्वीकरण (लघुतावाची)

प्रभावी प्रवर्धन

सम्मान सूचक रूप

वल, विस्मयादि वोधक, तथा अन्य रूप—कौन सी शव्द श्रेणियों पर प्रभावी परिवर्तक कोटियाँ लागू होती है ?

III—गूढ़प्ररूप। अप्रकट शब्द कोटियाँ जिनका सूक्ष्म अर्थ केवल प्रतिघातो द्वारा अंकित किया जाता है। सर्वेक्षण में बहुत स्पष्ट दशाओ के अतिरिक्त इसे छोड़ दीजिए, क्योंकि गूढ प्ररूप के निश्चय के लिए प्राय. किसी भी भाषा के गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है।

(ग) शब्दिम (शब्द या प्रातिपदिक शब्दकोष की एक इकाई के रूप मे, और विश्लेषित अथवा वाक्य शब्दों से निकाले गए अंश के रूप मे)।

1. शब्दगत अनुक्रम

(क) भाषा में धातुओ तथा साधित रचनाओ (प्रातिपादिक, प्रकृति, अग) मे अन्तर होता है। ऐसी अवस्था मे अल्पतम अखण्डनीय रूप को धातु कहा जाता है।

(ख) भाषा के अन्तर्गत शब्दगत तत्त्व का एक ही प्रकार या एक मुख्य प्रकार होता है। ऐसी अवस्था में ऐसा तत्त्व प्राय. प्रातिपदिक कहलाता है, जैसे, अल्गोन्कियन, याना मे प्रातिपदिक। यदि सम्भव हो तो भाषा की विशेषताएँ इस प्रकार से बताइए।

(ग) शब्दिम शब्द के एकरूप हो सकती है (वाक्य मे शब्द) शब्दिम सदा शब्द से भिन्न। शब्दिम वाक्य मे प्रयोग होती है—

1. रूपात्मक तत्त्वो के साथ
2. बहुश्लिष्ट रचना मे

2. धातु और प्रातिपदिक प्रकार—

बहुरूपात्मक (धातु और प्रातिपदिक के लिए कोई विशेष रूप नही—तथापि, यह दुर्लभ है, अपर्याप्त विश्लेषण पर आधारित आविर्भाव, जैसे, जहाँ तक धातुओं का सम्बन्ध है अंग्रेजी भाषा बहुरूपात्मक नही है)

एकरूपात्मक। एक विशिष्ट धातु प्रकार, या एक या दो सम्बद्ध प्रकार, जैसे, व्यञ्जन-स्वर, व्यञ्जन-स्वर-व्यञ्जन, इत्यादि नियन्त्रित। एक ऐसा प्रकार जिसे कुछ प्रतिबन्धो सहित रूप की स्वतन्त्रता प्राप्त है, जैसे, धातु या प्रातिपदिक के अन्दर ही सयुक्त व्यञ्जनो की स्थिति और प्रकार पर नियन्त्रण, जैसे अंग्रेजी। यदि सम्भव हो तो सयोगो पर प्रतिबन्धो का निर्देश भी कीजिए।

3. व्युत्पत्ति (गौण शब्दिमो की रचना, अर्थात् धातुओ से शब्दो के प्रातिपदिक):

प्रविधियाँ। प्रकट। ये रूपात्मक प्रविधियो के समान है जैसे पूर्व-प्रत्यययोजन, परप्रत्यययोजन, इत्यादि

अप्रकट प्रविधियाँ—एक विभिन्न प्रकट श्रेणी मे बदल देना तथा प्रकट अंकन के साथ अर्थ मे परिवर्तन, जैसे '(to) stand, (a) stand (position), (a) stand (pedestal)'

व्युत्पत्ति की कोटि—कोई नही, हल्का, सामान्य, महान, सञ्चयी (साधित पर साधित का जोड़ते चले जाना, जैसे, कृत्रिम, विद्वत्तापूर्ण शब्द 'honorificabilitudinity', यह अञ्नेक में पाया जाता है, ग्रीक और सस्कृत मे कम, शायद माग्यार (Magyar) और तुर्की मे भी)

व्युत्पत्तिमूलक प्रकार †

क्रिया जैसी प्रकृतियो से सज्ञा प्रकार

क्रियावाचक और स्थितिवाचक सज्ञाएँ, भाववाचक सज्ञाएँ

कर्तृ सज्ञाएं—कर्त्ता की सज्ञाएँ

करणात्मक सज्ञाएँ—करण की सज्ञाएँ

स्थान सज्ञाएँ

Nomen Patientis { किसी प्रभावित की सज्ञा / उत्पन्न स्थिति की सज्ञा }

विशेषण सज्ञाएँ

अन्य—बहुत सी सभावनाएँ होती हैं

सज्ञा जैसी धातुओ से क्रिया प्रकार

सक्रियकरण की क्रिया, अधिकार या आधिपत्य क्रिया, आदि

4 रचना

समास रचना (तत्त्वत. द्विचर मिश्रण, दो मुख्य भाग अलग भी हो सकते हैं)

विशेषक प्रकार। क्या विशेषक पहले आता है या बाद मे?

प्रकार: सज्ञा-सज्ञा, क्रिया-सज्ञा, सज्ञा-क्रिया, आदि।

समानाधिकरण प्रकार, जैसे, 'दिक्-काल' 'दिक्-कालसम्बन्ध में'

बहुसश्लेषणात्मक रचना

क्रम के नियमानुसार बहुत से प्रातिपदिको की रचना

जैसे अलगान्क्विन मे

आगे सम्भावना यह है: प्रातिपदिक (शब्दिम) और परिवर्तक कोटियो के चिन्हको मे कोई अन्तर नही। इस विषय मे परिवर्तक कोटियो के अन्तर्गत देखिए

मिश्रित प्रकार, जैसे, "अन्तरायित सश्लेषण"

अथवास्वन मे—छोडा भी जा सकता है क्योकि प्राय इसका विश्लेषण कठिन होता है।

अपृथक् करणीय शब्दिम—कुछ, बहुत सी, या सभी शब्दिम

5. अर्थ सम्बन्धी धातु-सरचना

बहुत या कम अस्पष्ट अशो और अर्थो मे विश्लेपण योग्य धातु,

---

† ये उसी में मिल जाएँ या रूपात्मक कोटियों के तद्रूप हो जाएँ, और कुछ भाषाओं में यह भाग शब्दिम से शब्द में परिवर्तित किया जाता है: रूपविज्ञान।

जैसे tread, track, trip धातु-केन्दक (जैसे tr) और धातु-निर्धारक।
स्वनिमिक प्रतीकवाद (ध्वनि और भाव मे सवाद) अर्थ के एक प्रकार के साथ उसी स्वनिम या स्वनिम समूह की पुनरावृत्ति अर्थ सम्बन्धी और प्रभावी परिणामो के लिए स्वनिमो का प्रकट--सयोजन (जैसे कुछ उत्तर पश्चिमी तटवर्ती भाषाओ मे वचकाने रूप) धातुएँ पर्याप्त अन्तर्मूलशब्दीय विश्लेपण के लिए सवेदनशील।

भाषा के साथ अभ्यासगत विचार तथा व्यवहार का सम्बन्ध*

"मानव न तो केवल वस्तुपरक ससार मे रहता है, और जैसा साधारणतया समझा जाता है, न ही केवल सामाजिक क्रियाओ के ससार मे ही रहता है; अपितु वह उस विशेष भाषा की दया पर निर्भर करता है जो उस समाज मे अभिव्यक्ति का साधन बन चुकी है। यह कल्पना करना काफी बडी भ्रान्ति है कि मनुष्य भाषा के प्रयोग के बिना ही निश्चित रूप से वास्तविकता के साथ समझौता कर लेता है, और यह कि भाषा सचारण या चिन्तन की विशिष्ट समस्याओ को सुलझाने का केवल प्रासगिक साधन है। तथ्य की बात यह है कि 'वास्तविक ससार' बहुत अधिक सीमा तक अचेतन रूप मे एक वर्ग की भाषाई आदत पर निर्मित होता है—हम सुनते है, और देखते है, तथा जैसा कुछ अधिकतर हम अनुभव करते है वह सब इसीलिए है कि हमारे वर्ग की भाषाई आदते अर्थ निर्णय के कुछ विकल्प पहले ही निश्चित कर देती हैं।"

—एडवर्ड सपीर

सम्भवत: इस प्रस्ताव पर व्यापक सहमति प्राप्त हो जाएगी कि शब्दो के प्रयोग की स्वीकृत अभिरचना प्राय. एक निश्चित चिन्तन पद्धति तथा व्यवहार के विशेष रूपो से पूर्ववर्ती होती है। परन्तु जो व्यक्ति अपनी सहमति प्रकट करता है उसे अक्सर ऐसे वक्तव्यो मे एक ओर दार्शनिक तथा विद्वत्तापूर्ण शब्दावली की मोहिनी शक्ति की निरर्थक सी मान्यता दिखाई पडेगी, या दूसरी ओर नारेबाजी और सामूहिक शोर दृष्टिगोचर होगा। केवल इसी सीमा तक अवलोकन करने वाला व्यक्ति निश्चय ही उस महत्त्वपूर्ण तथ्य से चूक जाता है, जिसे सपीर ने भाषा; सस्कृति एव मनोविज्ञान के अन्त सम्बन्ध के विषय मे देखा और जिसे इस प्रारम्भिक उद्धरण मे अभिव्यक्त किया। भाषा के इन विशिष्ट प्रयोगों के विषय में हमे भाषा के उस प्रभाव को, जो व्यक्तिगत, अथवा सास्कृतिक जैसी अन्य गतिविधियो पर पडता है—मान्यता प्रदान करने की इतनी आवश्यकता नही है जितनी भाषा की सामग्री को व्यवस्थित करने की, निरन्तर विधियो, तथा इस तथ्य के साधारणतम दैनिक विश्लेपण की आवश्यकता है।

---

* Reprinted from pp-75-93 Language, culture, and personality, essays in memory of Edward sapir. edited by Leslie spier (Menasha, wis:—sapir Memorial Publication Fund, 1941) यह लेख सन् 1939, ग्रीष्म में लिखा गया।

व्यवहार पर प्रभाव डालने वाली परिस्थिति का नाम

इस समस्या के एक पक्ष के साथ मेरा सम्पर्क उस समय हुआ था जब मै डा० सपीर से नही पढा था, तथा एक ऐसे क्षेत्र मे सम्पर्क हुआ, जो प्राय. भाषा-विज्ञान से वहुत दूर का माना जाता है। यह सम्पर्क, उस समय हुआ जवकि मै अग्नि-वीमा कम्पनी मे व्यवसायी विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहा था, और जहाँ मैंने कई सौ उन रिपोर्टो का विश्लेषण करने का कार्यभार सम्भाला हुआ था, जो आग लगने की प्रारम्भिक परिस्थितियो तथा कई स्थानो पर विस्फोटो के कारणो से सम्वन्धित थी। मैने विश्लेषण कार्य शुद्ध भौतिक परिस्थितियो को लक्ष्य मे रख कर किया था—जैसे दोषयुक्त विजली के तार, धातु के जाल और लकडी के ढाचो के वीच रिक्त वायवी स्थानो की उपस्थिति या अभाव, इत्यादि, और परिणाम इन्ही शब्दो मे व्यक्त किए गए थे। वास्तव मे इस कार्य को लेते समय यह कल्पना भी नही की गई थी कि किसी अन्य प्रकार के परिणाम अथवा प्रमाण भी मिल सकते है। परन्तु कुछ ही समय मे यह स्पष्ट हो गया कि भौतिकी के रूप मे भौतिक परिस्थितियाँ ही एकमात्र कारण नही है, अपितु इन परिस्थितियो का लोगो के मन मे जो 'अर्थ' है वह भी लोगो के व्यवहार द्वारा आग लगने के कारणो मे से एक है। और,' अर्थ सम्वन्धी यह कारण तव पूर्णतया स्पष्ट हो गया, जव इसे उस भाषाई अर्थ के रूप देखा गया जो परिस्थिति पर साधारणतया लागू होने वाले भाषाई विवरण मे स्थित या 'नाम' के अन्तर्गत विराजमान है। अत. एक स्टोर के आसपास यदि 'गैसोलीन ड्राम' लिखा हो तो लोगो का व्यवहार एक विशेष प्रकार का होगा, अर्थात् अत्यधिक सावधानी वरतेगे परन्तु खाली गैसोलीन के ड्रमो के स्टोर के आसपास लोगो का व्यवहार भिन्न होगा, अर्थात् असावधानी का होगा और वे जलते हुए सिग्रेट के टुकडो को फैंकने में सावधानी नही वरतेंगे, तथापि खाली ड्राम अधिक खतरनाक होते है क्योकि उनमें विस्फोटक वाष्प होती है। भौतिक रूप से स्थिति अधिक जोखिम वाली है परन्तु नियमित सादृश्य के अनुसार भाषाई विश्लेषण 'खाली' शब्द का प्रयोग अवश्य करेगा जो जोखिम के अभाव का सकेत देता है। खाली शब्द दो भाषाई अभिरचनाओ मे प्रयुक्त होता है (1) निष्प्रभाव एवं शून्य, अभावात्मक तथा क्रियाशून्य आदि के वास्तविक पर्याय के रूप में। (2) ड्राम के अन्दर स्थित भाप, तरल अवशेष, या कूडा करकट आदि की उपेक्षा करते हुए जो भौतिक परिस्थितियो के विश्लेषण मे प्रयुक्त हो। एक अभिरचना मे परिस्थिति का नाम-करण किया जाता है और दूसरी परिस्थिति मे उस नाम 'पर आचरण किया जाता है' या 'नाम को सार्थक' किया जाता है। जोखिम की स्थिति मे डालने वाले व्यवहार के भाषाई अनुवन्धन का यही सूत्र है।

एक वार लकड़ी के आसवन सयन्त्र पर धातु के भभको (stills) को विद्युत ऊष्मारोधी वनाने के लिए 'चूना पत्थर' के वने मिश्र का प्रयोग किया जाता था जिसे सयन्त्र पर 'धुना हुआ चूना' कहते थे। इस आवरक पदार्थ को अत्यधिक

ऊष्मा या आग की लपटों से बचाने का कोई प्रयत्न नही किया गया था। कुछ दिन के प्रयोग के बाद भभके के नीचे की आग—'चूना पत्थर' पर फैल गई और सभी को आश्चर्य यह हुआ कि वह बडे जोर से जलने लगी। भभको से निकलने वाली गुक्तोय तेजाब के धुए के सम्पर्क ने (कैलसियम-कार्बोनेट) 'चूना पत्थर' के कुछ अशो को, 'कैलसियम अम्ल' मे परिवर्तित कर दिया था। इसे जब आग मे तपाया जाता है तो यह अलग हो जाता है और जलने वाला अम्ल बन जाता है। उस आवरक के पास आग की उपस्थिति की उपेक्षा के व्यवहार का कारण (Lime Stone) "चूना-पत्थर" शब्द का प्रयोग था, क्योंकि यह 'पत्थरान्त' पद है जिसका अर्थ यही समझा जाता है कि पत्थर ज्वलनशील पदार्थ नही है।

वारनिश उबालने का लोहे का बना एक विशाल पतीला अत्यधिक गरम हो उठा था और तापमान इतना बढ गया था कि उसमे आग लग सकती थी। कारीगर ने उसे आग से नीचे उतार दिया और काफी दूर ले गया परन्तु ढका नही। कुछ देर बाद वारनिश मे आग लग गई। यहाँ भाषाई प्रभाव कुछ जटिल है। यहाँ यह सब 'कारण' के आलकारिक विपर्यीकरण की वजह से हुआ और 'कारण' "वस्तुओं" के सम्पर्क अथवा स्थानगत सन्निधि के माध्यम से विशेष परिस्थिति, अर्थात् 'आग के ऊपर' बनाम 'आग से नीचे उतारा हुआ' के विश्लेपण मे निहित है। वास्तव मे वह अवस्था जब बाह्य अग्नि (तापमान बढाने मे) मुख्य कारण थी, अब बीत चुकी थी और अत्यन्त तपित पतीले से वारनिश का अनितपन एक आन्तरिक सवहन की प्रक्रिया थी और वह प्रक्रिया आग से 'नीचे उतार दिए' जाने पर भी चलती रही।

एक बार दीवार पर लगा हुआ दीप्ति तापक (हीटर) बहुत कम प्रयुक्त होता था, एक कारीगर को वह कोट टागने का सुविधाजनक हैंगर प्रतीत हुआ। रात को चौकीदार अन्दर आया और उसने स्विच दबा दिया, उसके लिए इस क्रिया का अर्थ (लाइट) प्रकाश करना था। परन्तु रोशनी दिखाई नही दी और इस परिणाम का उसने यह अर्थ लिया कि 'लाइट समाप्त हो चुकी है।' वह हीटर की दीप्ति नही देख सका क्योंकि उस पर कोट टगा हुआ था। शीघ्र ही हीटर ने कोट को सुलगा दिया जिससे सारे भवन मे आग लग गई।

एक चर्मशोधनालय का पशुपदार्थयुक्त गदा पानी बाहर एक कुण्ड मे एकत्रित था और उसका आधा भाग लकडी के ढक्कन से ढका हुआ था, आधा भाग खुला था। वह परिस्थिति ऐसी थी कि साधारणतया उसका नामकरण "पानी का गड्ढा" के रूप मे किया जा सकता था। एक कारीगर ने अपनी लालटेन जलाई और माचिस की तिल्ली उस पानी मे डाल दी। परन्तु अपघटित होता हुआ कचरा लकडी के ढक्कन के नीचे गैस बना रहा था, अत वहाँ की स्थिति 'जलीय' होने से उलटी थी, तुरन्त ही आग की लपट ने लकडी के ढक्कन मे आग लगा दी, जिससे बिल्डिग मे आग लग गई।

खाल सुखाने के कमरे मे एक ओर हवा फैकने वाली (Blower) धौकनी लगी हुई थी जिससे एक ओर से वायु प्रवाह कमरे मे होता हुआ दूसरी ओर एक झरोखे से निकल जाता था। धौकनी के गरम धारूक (वेर्यरिंग) पर आग लग गई जिसने गरम शोलो को सीधा खालो पर फैक दिया और उन्हे सारे कमरे मे धधका दिया, अत सारा माल जल गया। यह खतरनाक परिस्थिति हवा फेकने वाला" (ब्लोअर) पद के कारण उत्पन्न हुई क्योकि इसका भाषाई सादृश्य' "वह जो हवा फेकता है" के साथ है जिसका कार्य अनिवार्य रूप से केवल हवा फैकना ही समझा जाता था। इसके कार्य को 'खाल सुखाने के लिए हवा फैकने वाला' आदि शब्दो मे भी व्यक्त किया जा सकता है, उस समय यह भुला दिया जाता है कि यह दूसरी चीजो को भी फैक सकता है जैसे शोले, चिंगारी आदि। वास्तव मे एक धौकनी केवल वायु का एक प्रवाह बनाती है, हवा फेक भी सकती है और खीच भी सकती है। अत: इसे कमरे की वायु बाहर निकालने वाले झरोखे पर लगाया जाना चाहिए था ताकि वह हवा को खालो के ऊपर से प्रवाहित कराता हुआ फिर जोखिम के स्थान (अपने खोल और धारूक वेर्यरिंग) मे से गुजारता हुआ बाहर निकाल देता।

कोयले की आग पर सीसा बनाने के लिए पिघलाने वाले बरतन के निकट 'रद्दी सीसे' का ढेर पड़ा था। रद्दी सीसा एक भ्रामक शब्दीकरण है क्योकि उस ढेर मे पुराने रेडियो सघनित्र (Condensers) के सीसे की परते थी जिनके बीच मे अब भी पैराफिन कागज थे। शीघ्र ही पैराफिन मे आग भडक उठी और छत मे आग लग गई जिससे वह आधी जल गई।

ऐसे उदाहरण, जिन्हे और अधिक बढाया जा सकता है, यह बतलाने के लिए पर्याप्त है कि किस तरह एक विशेष व्यवहार प्रणाली को भाषाई सूत्रो के सादृश्य द्वारा प्रेरित किया जाता है, जिनमे स्थिति अभिव्यक्त की जाती है, और जिनके द्वारा एक सीमा तक विश्लेषित की जाती है, और उसका स्थान उस ससार मे नियत कर दिया जाता है जो कि "बहुत हद तक अचेतन रूप मे उस वर्ग की भाषाई आदतो पर बना हुआ होता है।" और, हम सदैव यही मान बैठते है कि हमारे वर्ग द्वारा किया गया भाषाई विश्लेषण सत्य को उससे अधिक व्यक्त करता है जितना वास्तव मे वह 'करता' है।

व्याकरणिक अभिरचनाएँ अनुभूतियों के अर्थ निर्णायक के रूप में

ऊपर दिए गये दृष्टान्तो मे भाषाई सामग्री एकल शब्दो, वाक्याशो, और सीमित क्षेत्र की अभिरचनाओ तक सीमित है। इस प्रकार की सामग्री के बाध्यकारी व्यवहार का अध्ययन, बडे पैमाने की व्याकरणिक कोटियो की कही अधिक प्रभावशाली बाध्यता की आशका किए बिना नही किया जा सकता, वे (व्याकरणिक कोटियाँ) है—जैसे बहुवचनता, लिंग, तथा इसी प्रकार के अन्य वर्गीकरण (सजीव तथा निर्जीव) काल, वाच्य, तथा अन्य क्रिया रूप, 'शब्द भेदो के प्रकारो का वर्गीकरण, तथा यह विषय, कि एक विशेष अनुभव एक रूपिम की इकाई, द्वारा, 'पद' द्वारा,

या किसी वाक्य विन्यासात्मक सयोग द्वारा व्यक्त किया जाता है। एक कोटि जैसे वचन (एक वचन: बहुवचन) एक सम्पूर्ण बडे अनुभव क्रम का, वस्तुत ससार का, या प्रकृति का, प्रयत्नकृत अर्थ-प्रतिपादन है। यह स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है कि अनुभव का किस प्रकार खण्डीकरण किया जाए, और कौन सा अनुभव 'एक' कहलाता है और कौनसा 'कई', परन्तु इस प्रकार के व्यापक प्रभाव का मूल्याकन करने मे बहुत बडी कठिनाई इसके पृष्टभूमिगत गुण के कारण है, इसलिए भी कि अपनी भाषा से (द्रष्टा के रूप मे) तटस्थ रहना तथा वस्तुगत दृष्टि से निरीक्षण करना कठिन है क्योकि भाषा एक अभ्यास है, तथा सास्कृतिक निर्विवाद-मान्यता, (non est disputandum) है। और यदि हम एक अत्यधिक असदृश भाषा को (निरीक्षणार्थ) लेते है तो यह भाषा प्रकृति का एक अग बन जाती है, और हम इसके साथ भी वही करते है जो कुछ हम प्रकृति के साथ पहले ही कर चुके है। विजातीय भाषा का परीक्षण करते समय हम अपनी भाषा मे सोचते है, या हम शुद्ध रूपिमीय जटिलताओ को सुलझाने के काम को इतना भीमकाय समझ बैठते है, कि ऐसा प्रतीत होने लगता है मानो उसी मे सभी का समावेश हो गया है। यद्यपि समस्या कठिन भले है तथापि सुलझाई जा सकती है, और श्रेष्ठ मार्ग है विजातीय भाषा का माध्यम, क्योकि उसके अध्ययन से हम अन्तत. जबरदस्ती ही अपनी लीक से बाहर फैक दिए जाते है। तब हमे पता चलता है कि विजातीय भाषा हमारी अपनी भाषा का (रूप पहचानने के लिए) दर्पण है।

होपी भाषा का अध्ययन करते समय यह समस्या जिसे मैं अब सुअवसर मानता हू, परन्तु उस समय जबकि मुझे इसका बोध भी न था, वास्तव मे पहले मुझ पर थोप दी गई थी। रूपविज्ञान का विवरण देने का कार्य, जो अन्तहीन प्रतीत होता था, अन्तत· समाप्त हो गया। तथापि, यह स्पष्ट हो गया, विशेष रूप से सपीर के नवाहो पर भाषण के प्रकाश मे, कि उस भाषा का वर्णन "पूर्णता" से अभी बहुत दूर है। उदाहरणार्थ, मुझे बहुवचनो की रूपिमीय रचना विधि का तो ज्ञान था परन्तु यह पता नही था कि प्रयोग कैसे किया जाता है। यह बात स्पष्ट थी कि होपी मे बहु-वचनीय कोटि वही चीज नही थी जैसा कि अग्रेजी, फ्रेच या जर्मन मे। कुछ चीजे जो इन भाषाओ मे 'बहुवचन' थी होपी मे वे एक वचन थी। इस अवसर पर प्रारम्भ होने वाली खोज का पक्ष मेरे लगभग दो वर्ष खा गया।

इस कार्य ने पाश्चात्य भारोपीय भाषाओ तथा होपी भाषा की तुलना का रूप ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। यह भी सुस्पष्ट हो गया कि होपी व्याकरण का होपी सस्कृति से सम्बन्ध था और योरोपीय भाषाओ के व्याकरण का हमारी पाश्चात्य या योरोपीय सभ्यता से, और यह भी प्रकट हुआ कि भाषा द्वारा अनु-भूतियो के वृहद सन्निवेशन मे लाए गए अन्त सम्बन्ध भी है जैसे हमारे अपने पद (Time) 'काल' (Space) 'दिक्' (Substance) 'पदार्थ' (Matter) 'भौतिक तत्त्व', क्योकि इस वैशिष्ट्य की तुलना के विषय मे अग्रेजी, फ्रान्सीसी, जर्मन या अन्य योरोपीय भाषाओ मे कोई अन्तर नही है। सम्भवत· बाल्टोस्लाविक

या अभारोपीय भाषाएँ सम्भव अपवाद है, अत मैंने इन भाषाओं को एक वर्ग में एकत्रित कर दिया जिसे SAE या 'Standard Average European का नाम (मानक सामान्य योरोपीय) दिया है।

उस सारी खोज का वह अंग, जिसका यहाँ उल्लेख किया जायेगा, दो प्रश्नों में सकलित किया जा सकता है। (१) 'काल', 'दिक' तथा 'भौतिक तत्त्व' सम्बन्धी हमारी धारणाएं क्या सभी मानवों को उनके अनुभव द्वारा तत्त्वत. उसी रूप में दी जाती है, या वे अशत. विशिष्ट भाषा की सरचना द्वारा अनुबन्धित है? (२) क्या (अ) सास्कृतिक तथा व्यवहारगत प्रतिमानों (ब) तथा बड़े पैमाने पर भाषाई अभिरचनाओं में किसी प्रकार का अनुमार्गणीय घनिष्ट सम्बन्ध है? इस विषय का दावा करने वालों में—कि भ षा और सस्कृति में "सहसम्बन्ध" जैसी कोई निश्चित चीज है, मुझे अन्तिम व्यक्ति होना चाहिए, और विशेष रूप से नृकुल विज्ञान सम्बन्धी शीर्षकों में सहसम्बन्ध जैसे 'कृषीय, शिकार' आदि, तथा भाषाई शीर्षकों में जैसे 'Inflected' विभक्तिपरक 'SYNTHETIC' श्लिष्ट या 'ISOLATING' वियोगात्मक।[1] जब मैंने इस विषय का अध्ययन आरम्भ किया तो समस्या इतने स्पष्ट ढग से सूत्रित नहीं हुई थी, और मुझे ऐसा आभास भी नहीं था कि उत्तर ऐसे बन पायेंगे जैसे कि बन गए।

भाषायों और होपी में—बहुवचनता तथा गणना (प्रणाली)

हमारी भाषा में अर्थात् (SAE) भाषायों में बहुवचनता तथा गण सख्या का दो तरह से प्रयोग किया जाता है, वास्तविक बहुवचनों के लिए तथा काल्पनिक बहुवचनों के लिए। या अधिक निश्चित परन्तु कुछ कम सक्षिप्त शब्दों में—इन्द्रिय-गोचर 'स्थानिक समष्टियाँ' तथा 'आलकारिक समष्टियाँ।' हम "दस व्यक्ति" कहते है और 'दस दिन' भी। दस दिखाई देते है, या देखे जा सकते है, 'दस', एक सामूहिक अवलोकन में,[2] उदाहरणार्थ गली के मोड पर दस व्यक्ति। परन्तु 'दस दिन' वस्तुनिष्ठ रूप में अनुभूत नहीं किए जा सकते। हम केवल 'एक दिन' का अनुभव करते है, केवल आज का, दूसरे नौ (या दस के दस) का स्मृति द्वारा या कल्पना द्वारा सकलन किया जाता है, यदि दस दिनों को एक वर्ग के रूप में समझा जाए

1. हमारे पास पर्याप्त मात्रा में प्रमाण है जिनसे सिद्ध होता है कि वास्तविक स्थिति यह नहीं है। केवल होपी तथा ऊते पर विचार कीजिए, इनमें ऐसी भाषाएँ है जो प्रकट-रूपरचनात्मक तथा शाब्दिक स्तर पर इतनी समान हैं जितनी अंग्रेजी और जर्मन। भाषा एवं संस्कृति में 'सहसम्बन्ध' की धारणा, सहसम्बन्ध के सामान्य रूप से स्वीकृत अर्थों में, निश्चित रूप से भ्रामक है।
2. जैसा कि हम कहते है, ' ten at the SAME TIME ' (दस एक ही उसी समय), यह दिखाते हुए कि हमारे भाषा एवं विचार में हम सामूहिक अवबोधन के तथ्य का पुनर्कथन एक धारणा—'काल' के शब्दों में करते हैं, जिसका बृहद् भाषाई संघटन इस लेख में आगे प्रकट होगा।

तो वह एक 'काल्पनिक' मानसिक रूप से रचित वर्ग होगा। परन्तु यह मानसिक अभिरचना आती कहाँ से है ? जैसे आग लगाने वाली गल्तियाँ इस तथ्य के कारण होती है कि हमारी भाषा दो भिन्न परिस्थितियो मे भ्रान्ति उत्पन्न कर देती है क्योकि दोनो (परिस्थितियो) के लिए अभिरचना एक ही है। जब हम दस कदम आगे, घण्टी पर दस चोट, या इसी प्रकार वर्णित अन्य आवर्ती अनुक्रमो या किसी भी प्रकार के 'कालो' की चर्चा करते है तो हम वही कुछ कर रहे है, जो कि हमने 'दिनो' के साथ किया था। "चक्रीयता" या "आवर्तिता" काल्पनिक बहुवचनो की प्रतिक्रिया का आह्वान करती है। परन्तु चक्रीयता का समष्टियो के साथ सादृश्य भाषा के पूर्व निश्चित रूप मे अनुभूति द्वारा प्रदत्त नही है। अन्यथा यह सभी भाषाओ मे मिलता, परन्तु ऐसा है नही।

'काल' तथा 'चक्रीयता' सम्बन्धी हमारे बोध मे कुछ तात्कालिकता एव आत्मपरकता के तत्त्व अवश्य है—उत्तरोतर उत्तरवर्ती होने का आधारभूत ज्ञान। परन्तु हम 'माशायो' (SAE) लोगो के अभ्यासगत विचार मे यह किसी भिन्न विषय के अन्तर्गत आता है, वह यद्यपि मानसिक विषय है तथापि उसे आत्मपरक नही कहना चाहिए। मैं इसे 'विषयीकृत' या काल्पनिक कहता हू क्योकि यह बाह्य ससार पर अभिरचित है। वास्तव मे वह यह तथ्य है जो हमारे भाषाई प्रयोग का द्योतन करता है। हमारी भाषा विविक्त इकाइयो को गिनने वाली सख्याओ तथा उन "केवल अपने आपको ही गिनने वाली" सख्याओ मे कोई भेद नही करती। हमारी अभ्यासगत विचारणा यह मान बैठती है कि उत्तरवर्ती विषय मे (अर्थात् अपने आप को गिनने वाली सख्या के विषय मे) भी सख्याए इसी प्रकार किसी वस्तु पर गिनी जाती है, जैसे कि पूर्ववर्ती। इसी का नाम विषयीकरण है। काल विषयक धारणाए 'उत्तरवर्ती' होने के आत्मपरक अनुभव से सम्पर्क तोड़ लेती है तथा उनका विषयीकरण गिनी हुई मात्राओ के रूप मे हो जाता है, विशेष रूप से जैसे दीर्घताए इकाइयो द्वारा बनी हुई होती है क्योकि एक दीर्घता का चिह्नन इन्चो मे प्रकट रूप मे किया जा सकता है। 'एक' काल की दीर्घता भी इसी प्रकार की इकाइयो द्वारा बनी हुई परिकल्पित की जाती है— जैसे बातलो की पक्ति हो।

होपी मे भिन्न प्रकार की भाषाई स्थिति है। बहुवचन तथा गणना सख्या उन्ही इकाइयो के लिए प्रयुक्त किए जाते है जो या तो वस्तुपरक समुदाय बनाते है या बना सकते है। वहा किसी प्रकार के काल्पनिक बहुवचन नही होते अपितु एक वचन के साथ क्रमसख्या का प्रयोग होता है, 'दस दिन' जैसी अभिव्यक्ति का प्रयोग नही होता। इसका समकक्ष वक्तव्य एक क्रियात्मक प्रकार का है जो कि एक दिन तक उपयुक्त गणना द्वारा पहुचना है वे दस दिन ठहरे 'वहा' ग्यारहवे दिन आने तक ठहरे बन जाता है या 'वे दसवे दिन के बाद चले गए'। 'दस दिन नौ दिन से बडा है।' यह अभिव्यक्ति इस प्रकार व्यक्त की जाती है— 'दसवा दिन नवे दिन से उत्तरवर्ती है। हमारी काल सम्बन्धी दीर्घता, दीर्घता

नही मानी जाती अपितु उसे उत्तरवर्तिता की दो घटनाओं के बीच एक 'सबध' मानते है। उस चेतना की सामग्री की भाषाई रूप मे उन्नत विपयीकरण जिसे हम 'काल' कहते है, होपी भाषा ने उसके स्थान पर कोई ऐसी अभिरचना नियत नही की है जो काल के सारभूत आत्मपरक 'उत्तरवर्ती होना' को माप सके।

मासायो तथा होपी में भौतिक मात्रा वाली संज्ञाएं

हमारे पास भौतिक पदार्थों का द्योतन करने वाली दो प्रकार की सज्ञाए है व्यक्ति या व्यष्टि सज्ञाए तथा राशिवाचक सज्ञाए राशिवाचक सज्ञाए जैसे 'पानी, दूध, लकडी, (ग्रेनाइट) कणाश्म, रेत, आटा, मास' ।व्यष्टि सज्ञाएँ निश्चित रूपरेखाओं वाले पिण्डो का द्योतन करती है: 'एक वृक्ष, एक लाठी, एक पुस्प, एक पहाडी' । राशिवाचक सज्ञाए विवक्षित सीमा रहित समरूप सातत्यक का द्योतन कराती है । यह अन्तर भाषाई आकृति द्वारा निर्दिष्ट होता है जैसे राशिवाचक सज्ञाओं के बहुवचन[3] नही होते ।

अग्रेजी मे उनके साथ आर्टिकल का प्रयोग नही होता और फ्रासीसी मे उनके साथ अशसूचक आर्टिकल, दु, दे, ला, देस du, de, la, des का प्रयोग होता है । यह भेद पदार्थों की इन्द्रियगोचर बनावट की अपेक्षा भाषा मे अधिक व्यापक है । वास्तव मे कुछ ही प्राकृतिक घटनाए असीमित विस्तार के रूप मे अपने आप को प्रस्तुत करती है—जैसे 'वायु' तथा प्राय पानी, वर्षा, बरफ, रेत, चट्टान, गदगी, घास । मक्खन, मीट, मास, कपडा, लोहा, शीशा या बहुत मे अन्य इस प्रकार प्रकट लक्षणो वाले पदार्थ हमे (असीमित विस्तारमे) दिखाई नही देते अपितु छोटे या बड़े पिण्डो मे निश्चित रूप रेखा सहित मिलते है । यह प्रभेद भाषा की अनिवार्य अभिरचना द्वारा हमारे घटना विषयक वर्णनो पर कुछ कुछ थोप दिया गया है । बहुत से विपयो मे यह इतना असुविधाजनक हो जाता है कि हमे राशिवाचक सज्ञाओ को अन्य भाषाई विधियो द्वारा किसी प्रकार व्यष्टिपरक बनाना पडता है । यह अशत पिण्ड प्रकारो के नाम द्वारा किया जाता है Stick 'of wood'—etc. लकडी की लाठी, कपडे का टुकडा, शीशे का फलक (पल्ला), साबुन की टिकिया, तथा इससे भी अधिक पात्रो के नामो द्वारा, चाहे पात्रो में रखे पदार्थ वास्तविक विपय वस्तु हो . 'पानी का

---

3. बहुवचन के अभाव के इस नियम का यह कोई अपवाद नहीं है कि एक राशिवाचक संज्ञा कभी 2 शब्दिम में किसी एक ऐसी सज्ञा के समान व्यवहार करे जिसका बहुवचन भी होता है जैसे 'STONE' (पत्थर) (कोई बहुत नहीं) a STONE की तरह (जिसका बहुवचन STONES है) विविधता को द्योतित करने वाला बहुवचन जैसे 'WINES' (शराबें) आदि, वास्तव मे, वास्तविक बहुवचन से भिन्न वस्तु हैं; यह मासाय (SAE) राशि संज्ञाओ से उत्पन्न विचित्र विकास है जो एक अन्य प्रकार की काल्पनिक समष्टियों की ओर ले जाते है जिन्हें इस लेख में स्थान नहीं दिया जाएगा ।

गिलास, कॉफी का कप, खाने की तश्तरी, आटे का बोरा, बीयर की बोतल।' ये अधिक सामान्य 'पात्र परक' सूत्र जिनमें 'का' का स्पष्ट, इन्द्रियगोचर अर्थ (पात्र की सामग्री) कम स्पष्ट पिण्ड-प्रकारीय सूत्रो लकड़ी की लाठी, गूथे आटे की लोई, आदि के विषय में हमारी भावनाओं को प्रभावित करते है, ये सूत्र बहुत समानता रखते हैं · व्यष्टि सज्ञा तथा एक सदृश सम्बन्धदर्शी अंग्रेजी का ऑव (of)। एक सुस्पष्ट विषय में यह 'सबन्धदर्शी' पात्र सामग्री का द्योतन करता है। अस्पष्ट विषयो मे यह सम्बन्धदर्शी पात्र-सामग्री का सकेत मात्र करता है। अत पिण्ड, खण्ड, प्रखण्ड (Blocks) तथा टुकडे आदि ऐसे प्रतीत होते है मानो उनमे कुछ है, जैसे कोई 'उपादान' 'सामग्री', 'पदार्थ', 'द्रव्य' जो 'पात्र सामग्री' सूत्र मे 'जल', काफी, या आटे की विवक्षापूर्ति करते है। अत. 'मासाय' लोगो के लिए दार्शनिक 'पदार्थ' और 'द्रव्य' भी साधारण विचार है, वे तुरन्त 'स्वीकरणीय "सामान्य सूत्र" है। ऐसा भाषाई अभ्यास के माध्यम द्वारा होता है। हमारी भाषाई अभिरचनाएँ हमसे यह अपेक्षा करती है कि हम एक भौतिक पदार्थ का नामकरण एक ऐसे द्विपद द्वारा करे जो सकेतितार्थ को दो भागो में विभक्त कर दे अर्थात् एक आकृति रहित इकाई+एक आकृति।

होपी पुन. इस विषय में भी भिन्न है। इस मे रूपात्मक ढग से सज्ञाओं का एक विशिष्टता प्राप्त वर्ग है। परन्तु इस वर्ग मे राशिवाचक सज्ञाओ का कोई रूपात्मक उपवर्ग नही है। सभी सज्ञाओ का एक व्यष्टिपरक अर्थ होता है और उनमे दोनो, 'एक वचन' तथा 'बहुवचन' रूप होते है। हमारी राशि-वाचक सज्ञाओ का अनुवाद करने वाली सज्ञाएँ अस्पष्ट पिण्डो या अस्पष्ट रूप से परिसीमित विस्तारो की ओर सकेत करती है। उनसे अनिश्चितता तो ध्वनित होती है परन्तु रूपरेखा और आकार का अभाव नही। सुनिश्चित वक्तव्यो मे 'पानी' का अर्थ होता है पानी की एक विशेष राशि अथवा मात्रा, वह कदापि नही जिसे हम 'जलतत्त्व या पदार्थ' कहते है। वक्तव्य की सामान्यता, क्रिया अथवा विधेयक द्वारा अभिव्यक्ति की जाती है, सज्ञा (द्वारा) नही। क्योंकि सज्ञाए पहले ही व्यष्टिपरक होती है, अत· उनका व्यष्टिकरण न तो पिण्ड प्रकारो से किया जाता है और न ही पात्रो के नामो द्वारा ही। यदि पात्र या आकृति पर बल देने की विशेष आवश्यता नही है तो सज्ञा स्वय ही अनुकूल पिण्ड-प्रकार या पात्र का द्योतक होती है। वे 'पानी का गिलास' नही बोलते परन्तु Kəyi 'एक पानी' बोलते है। 'पानी का कुण्ड' नही कहते परन्तु 'पा ह' pa hə कहते है, 'मक्की के आटे की तश्तरी' नही कहते अपितु yəmni आटे की एक मात्रा कहते हैं, मांस का टुकडा नही कहते परन्तु Sikwi एक मास बोलते है।

---

4. पानी की मात्राओं के लिए होपी में दो शब्द हैं, kəyi तथा pahə : अन्तर कुछ इस प्रकार का है जैसे 'पत्थर' और 'चट्टान' में; pahə (का अर्थ है अधिक बड़ा आकार, 'प्रचण्डता'; बहता हुआ पानी, चाहे घर से बाहर है

उस भाषा मे न तो आवश्यकता है न ही ऐसे सादृश्य है जिन के बल पर अरूपात्मक इकाई तथा रूप के द्वैत के रूप मे सत्ता विषयक धारणा बना सके। अरूपात्मकता की अभिव्यक्ति सज्ञेतर प्रतीकों द्वारा की जाती है।

मासाय तथा होपी में काल चक्रों के पक्ष

हमारे लिए ऐसे पद जैसे ग्रीष्म, शरद्, सितम्बर, प्रात, दोपहर, सूर्यास्त आदि सज्ञाए है, और इनका दूसरी सज्ञाओ से किसी प्रकार का रूपात्मक भाषाई भेद नही है। वे कर्त्ता हो सकते है, या कर्म, और हम 'सूर्यास्त होने पर' या 'शरद् मे' ठीक इसी तरह कहते है जैसे हम 'कोने पर' या 'बागीचे' मे कहते हैं।[5] उनका बहुवचनीकरण तथा गणना भौतिक पदार्थों वाली सज्ञाओ की तरह होता है— यह हम देख ही चुके है। अतः इन सकेतितार्थों के प्रति हमारे विचार विपर्यीकृत हो जाते हैं। विपर्यीकरण के बिना यह वास्तविक काल का आत्मपरक अनुभव हो जायेगा अर्थात् 'उत्तरोत्तरवर्ती होने' की चेतना का—केवल एक कालचक्रीय पक्ष जो कि सदैव उत्तरवर्ती होने वाली अवधि मे एक पूर्ववर्ती चक्र के सदृश है। केवल कल्पना द्वारा ही ऐसा चक्रीय पक्ष एक के साथ दूसरा और फिर दूसरा स्थानपरक समाकृति (अर्थात् दृष्टिगोचर रूप मे) की विधि से रखे जाते हैं (चक्रीय पक्ष एक के साथ दूसरे इस प्रकार रखे जाते है जैसे आँख से देखे जाने वाले पदार्थ)। यह भाषाई सादृश्य की शक्ति ही है जिसके बल पर हम इस चक्रीय पक्षता का विपर्यीकरण कर लेते है। हम 'पक्षता' के स्थान पर 'एक पक्ष' या बहुत से पक्ष कह कर भी ऐसा करते है। और, हमारे व्यष्टिपरक तथा राशिवाचकों की अभिरचनाएँ परिणामभूत द्विपदीय सूत्र 'अरूप' विषय और 'रूप सहित', इतना सामान्य है कि यह सभी सज्ञाओ के लिए अव्यक्त रूप मे मान लिया जाता है। अत. हमारे पास (Substance) 'पदार्थ' तथा (Matter) 'द्रव्य' जैसी सामान्यीकृत अरूप इकाइयाँ है जिनके द्वारा हम 'द्विपदीयों' को सज्ञाओ की अतिविशाल श्रृखला के स्थान पर भर सकते हैं। परन्तु ये भी पूर्णतया या पर्याप्त रूप मे इतनी सामान्यीकृत नही है कि हमारी पक्षसज्ञाओ को समाविष्ट कर सके। अत हमने इन पक्ष सज्ञाओ के लिए एक 'अरूप' इकाई बनाई है जिसे हम 'काल' कहते है। हमने इसे 'एक काल" के रूप मे प्रयोग करके बनाया है, अर्थात् राशिवाचक सज्ञाओं की अभिरचना मे

या नही है, या प्रकृति मे है, वह सब pahe है, ऐसे ही 'आर्द्रता' है। परन्तु STONE (पत्थर) तथा rock (चट्टान) के विसदृश, इनमें अन्तर अनिवार्य है, वह केवल गुणार्थकता तक ही सीमित नही है, तथा दोनों का अन्तर्बदल कदापि नहीं हो सकता है।

5. पूर्णतया निश्चित होने के लिए यह कहना आवश्यक है कि, इनमें अन्य सज्ञाओं से बहुत ही नगण्य से अन्तर है, उदाहरणार्थ अंग्रेजी में (articles) 'आर्टिकलों' का प्रयोग।

'एक अवसर या पक्ष' (के रूप मे) ठीक इसी तरह जैसे हम 'एक ग्रीष्म' से 'ग्रीष्म' बना लेते हैं। अत द्विपद-सूत्र द्वारा हम 'काल का क्षण' 'काल का एक सेकिण्ड', 'काल का एक वर्ष' आदि अभिव्यक्त कर सकते है और सोच सकते हैं। मैं पुन ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा कि अभिरचना बिल्कुल वैसी ही है जैसे 'दूध की एक बोतल या 'पनीर का एक टुकडा'। अत हमे यह कल्पना करने मे सहायता मिलती है कि "एक ग्रीष्म" वास्तव मे काल की इतनी या इस प्रकार की मात्रा से युक्त है, या बना है।

होपी भाषा मे सभी पक्षीय पद जैसे ग्रीष्म, प्रात इत्यादि 'सज्ञा' नही हैं अपितु, यदि मासाय के निकटतम सादृश्य का प्रयोग किया जाए, तो एक प्रकार के 'क्रियाविशेषण' हैं। वे स्वय अपने आप मे भाषा के रूपात्मक भाग हैं जो सज्ञाओ से, क्रियापदो से, और होपी के 'क्रियाविशेषणो' से भी भिन्न है। इस तरह का एक शब्द कारक रूप भी नही है या अधिकरण अभिरचना भी नही है-जैसे des Abends 'देस् अबेन्दस्' या 'प्रात काल मे' है। इसमे 'in the house' 'घर के अन्दर' या 'वृक्ष के ऊपर' जैसी कोई रूपिम भी नही है। इसका अर्थ यह है कि 'जब प्रात. काल होता है' या 'जब प्रातकालीन पक्ष चल रहा है। इन 'काल सूचको का प्रयोग' 'कर्त्ता' या 'कर्म (के रूप मे)या कभी भी सज्ञाओ के रूप में नही होता। वहा पर कोई भी यह नही कहता कि 'यह एक गरम ग्रीष्म है' या 'ग्रीष्म गरम है', ग्रीष्म गरम नही है, ग्रीष्म तभी है जब परिस्थितियाँ गरम है, जब गरमी पडती है। उस भाषा मे कोई यह नही कहता 'यह ग्रीष्म' परन्तु 'अब ग्रीष्म' या 'अभी होने वाली ग्रीष्म' कहते है। वहाँ 'प्रदेश, विस्तार, मात्रा आदि के रूप में आत्मपरक आवधिक भावना का विषयीकरण नही होता है। काल के विषय मे किसी प्रकार का सकेत नही किया गया है, सिवाय 'उत्तरवर्ती' होने के। अत. यहाँ हमारे 'काल के समकक्ष किसी अरूप इकाई के लिए कोई आधार नही है।

मासाय तथा होपी मे क्रियापदों के कालसूचक रूप

मासायक्रियापदो की त्रिकालीन व्यवस्था कालके विषय मे हमारे समस्त चिन्तन को रञ्जित कर देती है। यह व्यवस्था-अवधि के आत्मपरक अनुभव के विषयीकरण की योजना के साथ एकीकृत कर दी जाती है जैसा कि हम पहले दूसरी अभिरचनाओ मे देख चुके हैं—द्विपद-सूत्र में, जो सामान्य रूप में सज्ञाओ पर लागू होता है, काल सूचक सज्ञाओ मे, बहुवचनता तथा गणनाओ मे। यह विषयीकरण हमे कल्पना द्वारा काल की इकाइयो को एक पक्ति में खडा करने मे

6. 'वर्ष' तथा ऋतु के नाम के साथ 'वर्ष' के कुछ योग, परन्तु ऋतुओं के नाम अकेले विरले ही अधिकरण रूपिम at के साथ आते हो, परन्तु यह अपवादस्वरूप है। यह किसी पूर्ववर्ती अभिरचना का ऐतिहासिक अवशेष है, या अग्रेजी सादृश्य का प्रभाव है, या दोनों ही है।

समर्थ बना देता है। काल विषयक पक्तिवद्ध कल्पना तीन कालो की व्यवस्था के साथ समस्वर हो जाती है जब कि 'दो' की व्यवस्था अर्थात् पूर्ववर्ती तथा उत्तरवर्ती होने की अवधि की उस भावना से अधिक सगत है जिस रूप में उसकी अनुभूति होती। क्योंकि यदि हम चेतना का निरीक्षण करे तो हमे भूत, वर्तमान, भविष्य जैसी कोई चीज नही मिलेगी परन्तु जटिलता का समावेशन (समालिंगन) करने वाली एक एकता ही मिलेगी। सब कुछ चेतना मे है और चेतना में जो सब कुछ है वह है, और एक साथ है, इसमे कुछ तो इन्द्रिय ग्राह्य है कुछ अनिन्द्रिय ग्राह्य है। हम उसे इन्द्रियग्राह्य कह सकते है जो कुछ हम देख रहे है, सुन रहे है, छू रहे है—अर्थात् वर्तमान, जबकि अनिन्द्रियग्राह्य मे स्मृति का एक विशाल 'बिम्ब-जगत' होता है जिसे हम 'भूतकाल' कह देते है, और दूसरा 'विश्वास', अन्तदृष्टि, तथा अनिश्चितता का क्षेत्र है, जिसे 'भविष्य' कहते है, तथापि सवेदन, स्मृति, पूर्वदृष्टि—ये सभी चेतना मे एक साथ मिलते है—केवल एक नही होता—"जो अभी हुआ नही है", न ही दूसरा—'एक बार, परन्तु अब कभी नही"। जहा वास्तविक काल का क्षेत्र आता है वह यह कि जो कुछ चेतना में है वह सब 'उत्तरकालीन' होना है, सम्बन्धो को अनुत्क्रमणीय ढग से परिवर्तित करना है। इस उत्तरकालीनीकरण तथा अवधिकरण मे मुझे, ध्यान के केन्द्र पर उत्तरकालीनतम नवीनतम 'क्षण' मे, तथा शेष मे, अर्थात् पूर्वकालीन मे, एक परम वैपम्य प्रतीत होता है। बीसियो ऐसी भाषाए है जो अपना कार्य सुचारू रूप से 'काल' जैसे दो रूपो से चलाती है जो इस 'उत्तर-कालीन' तथा 'पूर्वकालीन' के परम सम्बन्ध के अनुकूल है। निस्सन्देह हम भूत, वर्तमान और भविष्य की व्यवस्था को एक बिन्दुओ की विषयीकृत आकृतियो के रूप में बुद्धि-व्यापार द्वारा रच सकते है तथा उन पर चिन्तन भी कर सकते है। हमारी विषयीकरण की सामान्य प्रवृत्ति हमे यही कुछ करने मे प्रवृत्त करती है तथा हमारी 'काल-व्यवस्था' इस तथ्य की पुष्टि करती है।

अग्रेजी मे 'वर्तमानकाल' ऐसा है जो उस सर्वोच्च कालसूचक सम्बन्ध के साथ सब से कम सामजस्य मे है। ऐसा लगता है मानो इससे कई तरह के काम लिए जाते है जो पूरी तरह सगत नही है। उनमे से एक 'कार्य' यह है कि वह वर्णन, विचारविमर्श, वाद-विवाद, तर्क तथा 'दर्शन' आदि मे विषयीकृत भूत, तथा विषयीकृत भविष्य, के बीच विषयीकृत मध्य बन कर खडा रहे। दूसरा कार्य इन्द्रियग्राह्य क्षेत्र मे समावेशन का द्योतन करना है : 'मैं उसे देखता हू' एक अन्य कार्य है 'रूढिपरक' के लिए, अर्थात् प्रथागत रूप में, या साधारणतया प्रचलित वक्तव्य "हम अपनी आखो से देखते है।" ये बहुमुखी प्रयोग विचारो मे सकरता का प्रवेश कराते है, जिसके विषय में हमे बहुत हद तक ज्ञान भी नही होता।

होपी, जैसा कि हम आशा कर सकते है, इस विषय मे भी भिन्न है। क्रिया-पदो के हमारी भाषाओ जैसे 'काल' नही होते। परन्तु वहाँ मान्यता सूचक रूप

है, (दृढकथन) पक्ष, तथा उपवाक्य सयोजन रूप (वृत्तियाँ) हैं, जिनके द्वारा भाषा मे अधिक सुनिश्चितता आ जाती है। वे मान्यता सूचक रूप प्रकाशित करते है कि बोलने वाला (कर्त्ता नही) स्थिति की सूचना दे रहा है (जो हमारे भूत तथा वर्तमान के समान है), या वह इसकी आशा करता है (जो हमारे भविष्य के समान है)[7]। या, वह एक प्रथागत-कथन कर रहा है (जो हमारे प्रथागत वर्तमान के समान है)। ये पक्ष अवधि की भिन्न अवस्थाओ का तथा "अवधिकाल मे" भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियो का द्योतन करते है। अभी तक हमने किसी ऐसे पक्ष पर ध्यान नही दिया है जिससे यह सकेत मिल सके कि जब दोनो घटनाओ की सूचना दी जा रही हो तो उनमे से कौन सी घटना 'पूर्वकालीन' है तथा कौन सी 'उत्तर-कालीन'। परन्तु इसकी आवश्यकता उस समय तक नही पडती जब तक कि हमारे पास दो क्रियाएँ न हो अर्थात् दो उपवाक्य न हो। उस परिस्थिति मे 'वृत्तियाँ' दो उपवाक्यो के बीच सम्बन्ध द्योतित करती है जिसमे उत्तर-कालीन का पूर्वकालीन के साथ सम्बन्ध है, तथा युगपत्ता का सम्बन्ध सम्मिलित है। तब बहुत से ऐसे पृथक् शब्द है जो इसी प्रकार के सम्बन्धो को अभिव्यक्त करते है तथा वृत्तियो एव पक्षो के सम्पूरक का कार्य करते हुए इस प्रकार के सम्बन्धो को अभिव्यक्त करते है। हमारी त्रिकालीय व्यवस्थाओ के कार्य तथा इसके त्रिभागीय रैखिक विषयीकृत 'काल' का वितरण बहुत सी उन क्रियापदीय कोटियो मे किया गया है जो हमारे 'कालो' से भिन्न है और होपी क्रियाओ मेंअन्य होपी अभिरचनाओ की तरह कोई अन्य आधार विषयीकृत 'काल' के लिए नही है, तथापि, होपी क्रियापदो अथवा अन्य अभिरचनाओ मे लेशमात्र भी ऐसी बाधा उत्पन्न नही करता जिससे कि वे वास्तविक स्थितियो की उपयुक्त सत्यता के साथ घनिष्ठ रूप मे समन्वित न हो सके।

मासाय तथा होपी में अवधि, तीव्रता, तथा प्रवृत्ति

वक्तव्य को वास्तविक बहुविधि परिस्थितियो के साथ सगत करने के लिए सभी भाषाओ को अवधियो, तीव्रताओ तथा प्रवृत्तियो को अभिव्यक्त करने की

7. प्रत्याशी तथा सूचनात्मक दृढ़कथनों का व्यतिरेक "सर्वोच्च सम्बन्ध" के अनुसार होता है। प्रत्याशी, वस्तुपरक तथ्य से पूर्वस्थित प्रत्याशी को अभिव्यक्त करता है तथा वह उस वस्तुपरक तथ्य के साथ सम्पाती होता है जो वक्ता की यथापूर्वस्थिति के पश्चवर्ती है, यह यथापूर्व स्थिति, जिसमें भूत के सभी सन्निवेशन सम्मिलित है, सूचनात्मक द्वारा अभिव्यक्त की जाती है। हमारी 'भविष्य' की धारणा पूर्ववर्ती (प्रत्याशी) तथा पश्चवर्ती (बाद मे, जो कुछ होगा), दोनो का एक साथ प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत होती है, जैसा कि होपी से विदित है। यह विरोधाभास इस बात की ओर संकेत कर सकता है कि वास्तविक काल का रहस्य कितना दुर्ग्राह्य है, तथा इसे भूत-वर्तमान-भविष्य के रेखीय-अनुक्रम सम्बन्ध द्वारा कितनी कृत्रिमता से प्रकट किया जाता है।

आवश्यकता पडती है। मासाय भाषाओं का तथा सम्भवत. अन्य बहुत सी भाषाओं का यह वैशिष्ट्य है कि वे इन्हे रूपकात्मक ढग से अभिव्यक्त करती हैं। ये, रूपक स्थानपरक विस्तार से सम्वन्धित है, अर्थात् परिमाण, वचन स्थिति, आकृति तथा गति के है। हम अवधि को 'Long' दीर्घ, 'Short' 'अल्प', 'Great' 'वडा' 'much' अधिक, 'quick' आशु, 'slow' मन्द, आदि द्वारा (अभिव्यक्त करते हैं), तीव्रता को 'Large' वृहद्, 'great' वड़ा, 'much' अधिक, 'heavy' भारी, 'light' हल्का, 'low' धीमा, 'sharp' तीव्र, 'faint' धुधला आदि द्वारा; प्रवृत्ति को 'more' और अधिक, 'increase' वढाना, 'grow' विकसित होना, 'turn' मुड़ना, 'get' प्राप्त करना, 'Approach' निकट जाना या पहुचना, 'go' जाना, 'come' आना, 'rise' उठना, 'fall' गिरना, 'stop' रुकना, 'smooth' चिकना, 'even' सम, 'Rapid' तेज, 'slow' धीमा, तथा इस प्रकार के अन्य वहुत से रूपको की अनन्त सूची द्वारा अभिव्यक्त करते है, जिन्हे हम इस रूप मे मान्यता भी प्रदान नही करते है क्योकि वास्तव मे वे ही एक मात्र उपलब्ध भाषाई माध्यम है। इस क्षेत्र में अरूपकात्मक रूप जैसे 'early' समय से पूर्व, जल्दी, 'late' देर से, 'soon' शीघ्र, 'lasting' चिरस्थाई, 'intense' तीव्र, 'very' वहुत, 'tending' (की ओर) प्रवृत्ति या झुकाव होना, आदि केवल मुट्ठी भर है तथा आवश्यकताओ के लिए नितान्त अपर्याप्त।

यह स्पष्ट हो गया कि किस प्रकार यह प्रतिवन्ध यहाँ ठीक वैठता है। यह हमारी **विषयीकरण** की समस्त योजना का एक भाग है—कल्पनात्मक रूप से उन गुणों तथा अन्तर्निहित तत्त्वों का स्थानीकरण करना जो पूर्णतया अस्थानिक हैं (जहाँ तक स्थानपरक रूप से, अनुवोधक इन्द्रियाँ हमे वता सकती है)। सज्ञा का अर्थ (हमारे लिए) भौतिक पिण्डो से प्रारम्भ हो कर वहुत ही भिन्न प्रकार के समुद्दिष्टो तक पहुँच जाता है। क्योकि भौतिक पिण्डो तथा इन्द्रियग्राह्य स्थान के अन्तर्गत उनकी रूपरेखाओ का द्योतन परिमाग तथा आकृति पदो द्वारा किया जाता है, तथा उनकी गणना सूचक सख्याओ तथा वचनो द्वारा की जाती है; अत: ये द्योतन तथा गणना की अभिरचनाए अस्थानिक अर्थो वाले प्रतीको तक विस्तृत हो जाती है और इस प्रकार एक **काल्पनिक स्थान** का निर्देश करती है। भौतिक आकृतियाँ, 'गतिशील होना, रुकना, उठना, डूवना, पास पहुचना' आदि इन्द्रियगोचर स्थान मे है, तो ये अन्य समुद्दिष्ट अपने काल्पनिक 'स्थान' मे क्यो न हो? यह (प्रवृत्ति) इस सीमा तक वढ चुकी है कि हम किसी साधारणतम अस्थानिक परिचित का निर्देश भौतिक रूप की निरन्तर शरण के बिना नही कर सकते। मैं दूसरे व्यक्ति के तर्क का 'सूत्र' 'पकडता' हू, परन्तु यदि इसका (Level) स्तर (Over my head) (मेरे सिर के ऊपर) 'मेरी समझ से वाहर है' तो मेरा ध्यान इधर उधर (wander) भटक सकता है और इसके प्रवाह से 'Loose touch' अपना 'सम्पर्क' खो सकता है। यहाँ तक कि जव वह अपने 'point' विषय पर 'आता है' तो हम ' 'differ widely'

बहुत अधिक 'भिन्न' हो जाते हैं, हमारे 'Views'(दृश्य) विचार, निश्चय ही 'far apart' भिन्न हैं, कि thing' (चीजें) जो बातें वह कहता है वे (appear) प्रतीत होती है (much अधिक) बहुत ही मनमानी या 'a lot' ढेर सारी बकवास प्रतीत होती है।

होपी भाषा मे इस प्रकार के रूपको का अभाव महत्वपूर्ण है। जहाँ पर (स्पेस) स्थान का सम्बन्ध नही है, वहाँ स्थान-पदो (स्पेस टर्मज) का प्रयोग होता ही नही, मानो उन पर पूर्णतया मद्यपान-निषेध नियम लागू कर दिया गया हो। कारण स्पष्ट है—हमे विदित है कि होपी भाषा मे बहुत अधिक मात्रा मे ऐसे क्रियापदीय तथा शाब्दिक माध्यम है जिनके द्वारा अवधि, तीव्रता तथा प्रवृत्ति आदि सीधे ढग से व्यक्त की जा सकती है और हम यह भी जानते हैं कि होपी की मुख्य व्याकरणिक अभिरचनाएँ हमारी भाषाओ की तरह एक काल्पनिक (स्पेस) स्थान के लिए सादृश्य प्रस्तुत नही करती। बहुत से क्रिया-पदीय 'पक्ष' आविर्भाव की प्रवृत्ति तथा तीव्रता को अभिव्यक्त कर देते है जबकि कुछ 'वाच्य आविर्भाव उत्पन्न करने वाली शक्तियो या कारणो की अवधि, प्रवृत्ति, और तीव्रता को अभिव्यक्त करते है। और फिर, वहाँ एक विशेष शब्द-भेद, "तीव्रक", जो एक विशाल शब्द वर्ग है, केवल तीव्रता, प्रवृत्ति, अवधि, तथा अनुक्रम का द्योतन करता है। तीव्रको, का कार्य तीव्रताओ, "शक्तियों" को अभिव्यक्त करना है और यह कि वे किस प्रकार अपने परिवर्तन की गति जारी रखते है या बदलते है, ताकि तीव्रता की विशाल,धारणा जब आवश्यक रूप मे सदैव परिवर्तनशील तथा या निरन्तर रहने वाली मानी जाती है तो, वे प्रवृत्ति और अवधि का भी समावेश कर ले। तीव्रक मात्रात्मक, दरजा, गति,, निरन्तरता, आवृत्ति, तीव्रता का घटना या बढना, निकटतम अनुक्रम बाधा या मध्यान्तर के पश्चात् अनुक्रम आदि को सूचित करते है, साथ मे शक्तियो के गुणो को भी सूचित करते है जिन्हे हम रूपकात्मक ढग से अभिव्यक्त करते हैं जैसे चिकना, समतल, कठोर, खुरदरा। इनका एक आश्चर्यजनक वैशिष्ट्य यह है कि इनमे वास्तविक "स्पेस" स्थान या गति वाले शब्दो से समानता का अभाव है परन्तु जिनका हमारे लिए "एक ही अर्थ है।" होपी मे ऐसे स्थानवाचक शब्दो से केवल स्पष्ट व्युत्पत्ति के आभास-मात्र से अधिक और कुछ नही है।[8] अतः

---

8. इस प्रकार का एक आभास या सकेत मात्र यह है कि तीव्रक (Long in duration) 'अवधि में दीर्घ, जबकि विशेषण (Long in space) 'स्पेस में दीर्घ' से बिल्कुल भिन्न है तथापि इसमें वही धातु प्रतीत होती है जो (large) स्पेस की 'विशालता' में है। दूसरा वह है जिसमें किन्हीं तीव्रकों के साथ प्रयुक्त स्पेस का (some where) "कहीं पर" का अर्थ है किसी 'अनिश्चित समय पर'। सम्भवतः यह बात सत्य नहीं, तथा यह केवल तीव्रक ही है जो काल तत्त्व प्रस्तुत करता है, जिससे कि 'Somewhere' 'कहीं' अब भी स्पेस का द्योतन करता है तथा इन अवस्थाओ से तथा स्पेस;

जब कि होपी भाषा अपनी सज्ञाओं के विषय मे अत्यधिक मूर्त है, वह तीव्रको के विषय मे इतनी अमूर्त है कि हमारी समझने की शक्ति से बाहर हो जाती है।

मासाय तथा होपी में अभ्यासगत विचार

मासाय तथा होपी भाषियो के अभ्यासगत विचार-जगत् की यहा की जाने वाली तुलना निस्सन्देह अपूर्ण है। यहाँ पर केवल कुछ प्रमुख वपम्यो का विवेचन करना ही सम्भव है जो कि पहले ही विवेचित भाषाई प्रभेदो से उद्भूत होते प्रतीत होते है। 'अभ्यासगत विचार' तथा 'विचार-जगत्' से मेरा अभिप्राय केवल भाषा से कुछ अधिक है, अर्थात् स्वय भाषाई अभिरचनाओ से भी अधिक। इसमे अभिरचनाओं के सभी सादृश्यमूलक तथा अभिव्यजक मूल्यो को भी सम्मिलित करता हूँ (जैसे—हमारा काल्पनिक स्थान (स्पेस) तथा उसका दूरस्थ तात्पर्य) तथा भाषा और सम्पूर्ण सस्कृति के बीच समस्त आदान प्रदान को, जिस मे बहुत अधिक मात्रा ऐसी है जो भाषाई नही है परन्तु फिर भी भाषा के आकृतिदायक प्रभाव को प्रकट करती है। सक्षेप मे, यह 'विचार-जगत्' एक लघु ब्रह्माण्ड है जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर लिए रहता है, और जिसके द्वारा वह ब्रह्माण्ड को, जैसे भी सम्भव हो मापता है और समझने का प्रयत्न करता है। मासाय लघु ब्रह्माण्ड ने वास्तविकता का विश्लेषण अधिकतर वस्तुओं, (पिण्डो तथा अर्धपिण्डो) तथा प्रसारात्मक परन्तु अरूपात्मक सत्ता की विधियो, जिसे 'द्रव्य' या 'पदार्थ' भी कहते है, के रूप मे किया है। यह सत्ता को ऐसे द्विपद-सूत्र के माध्यम से देखने की प्रवृत्ति रखता है जो किसी भी सत्व (सत्तायुक्त पदार्थ) को स्थानगत रूप (form) तथा रूप से सम्बन्धित स्थानगत अरूपात्मक सातत्यक के रूप मे अभिव्यक्त करता है, जिस प्रकार पात्रगत सामग्री अपने पात्र की रूपरेखा से सम्बन्धित है। अस्थानीय सत्वो का कल्पनात्मक रीति से स्थानीकरण कर लिया जाता है, तथा रूप और सातत्यक के समान अर्थो से युक्त कर दिया जाता है।

होपी लघु ब्रह्माण्ड ने वास्तविकता का विश्लेषण घटनाओं के (अधिक उपयुक्त शब्दो मे घटनन) रूप में किया प्रतीत होता है, जिनका निर्देशन दो प्रकार से किया जाता है—वस्तु परक तथा आत्मपरक ढग से। वस्तुपरक ढंग से, यदि यह केवल इन्द्रियगम्य भौतिक अनुभव हो तो घटनाओ की अभिव्यक्ति केवल रूप-रेखाओ रगो, गतियो तथा अन्य गोचर सूचनाओ के रूप मे की जाती है। आत्मपरक ढग से,

---

से निरपेक्ष्य अनिश्चित स्पेस का अर्थ केवल सामान्य प्रयोजनीयता होता है। एक अन्य संकेत है कालचक्र-दर्शी शब्द 'after-noon'; इस शब्द में वह तत्व जिसका अर्थ 'after' पश्चात है, 'to seperate' पृथक करना धातु से व्युत्पादित है। इस प्रकार के अन्य आभास भी मिलते है, परन्तु वे बहुत विरले तथा अपवादमात्र है, तथा स्पष्टतया वे हमारे अपने स्पेसीय रूपकीकरण की तरह नही है।

भौतिक तथा अभौतिक दोनो के लिए घटनाओ को अदृश्य तीव्रता के कारण की अभिव्यक्ति समझ लिया जाता है, जिनपर उनकी स्थिरता या झुकाव निर्भर करता है। इनका अर्थ यह हुआ कि विद्यमान (सत्व) सभी एक प्रकार से उत्तरोत्तर कालीन नहीं होते परन्तु कुछ पौधो के वढने के क्रम की तरह, कुछ असगठित तथा लुप्त होकर, अन्य रूपान्तरण के प्रक्रिया-क्रम द्वारा, और कुछ हिसक शक्तियो का प्रभाव पड़ने से पहले तक एक ही रूप मे स्थिर रहकर (उत्तरोत्तर कालीन) हो जाते है। प्रत्येक 'विद्यमान' (सत्व) जो अपने आप को एक सुनिश्चित पूर्ण के रूप मे अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखता है, उसके स्वभाव मे अपनी आवयविक विधि की शक्ति निहित होती है: तथा उसकी वृद्धि, ह्रास, स्थैर्य, चक्रीयता, अनुतिता या सर्जनात्मकता। अत. सभी कुछ पहले ही उस मार्ग के लिए तैयार है जो वह अपनी पूर्ववर्ती अवस्थाओ द्वारा प्रकट करता है, और जो कुछ वाद मे होगा, जो कुछ अशत: हो चुका है, तथा अशत वैसा तैयार होने की प्रक्रिया मे है। एक विशेप महत्व तथा वल, इस तैयार करने की प्रक्रिया पर, या जगह के तैयार किए जाने वाले पक्ष पर आश्रित रहता है और वह होपी के लिए उस 'वास्तविकता के गुण' के समान है जो गुण हमारे लिए द्रव्य या पदार्थ का है।

होपी संस्कृति में अभ्यासगत व्यवहार के वैशिष्ट्य

हमारा तथा होपियो का व्यवहार भापाई रूप से अनुवन्धित लघु ब्रह्माण्ड के साथ वहुत प्रकार मे समन्वित होता हुआ प्रतीत होता है। जैसा कि मेरी अग्निकाण्ड सम्बन्धी नोटवुक से विदित है कि लोग परिस्थितियो के विपय मे उसी तरह का व्यवहार करते हैं, जैसी कि वे उनके वारे मे वातचीत करते है। होपी व्यवहार का एक वैशिष्ट्य है—"तैयारी करने पर वल देना" इसमे घटनाओ से काफी पहले घोपणा करना तथा तैयारी करना, अपेक्षित परिस्थितियो के नैरन्तर्य को सुनिश्चित वनाने के लिए कठिन पूर्वोपाय, तथा सही परिणाम को तैयार कराने वाली शुभकामना पर वल भी सम्मिलित है। दिनो की गणना पद्धति के सादृश्यो पर ही विचार कीजिए। समय की गणना मुख्यत. 'दिन द्वारा' की जाती है (talk,-tala) या 'रात्रि द्वारा' (tok), जो कि सज्ञा शब्द नही है अपितु तीव्रक हैं, पहला शब्द प्रकाश या 'दिन' धातु से वनाया गया है, दूसरा अन्य धातु से, जिसका अर्थ 'सोना' है। गणना, क्रमसूचक सख्यावाचको द्वारा की जाती है। यह पद्धति कुछ भिन्न मनुष्यो या भिन्न वस्तुओ को गिनने की पद्धति नही है, यद्यपि वे क्रमश. उत्तरोत्तर प्रतीत होते है; क्योंकि, फिर भी वे एक समुदाय मे एकत्रित हो सकते हैं। यह एक ही ऐसे व्यक्ति या वस्तु की क्रमश. उत्तरोत्तर पुन: प्रकटन की गणना है जो एक समुदाय का रूप ग्रहण करने मे असमर्थ है। दिन की आवर्तनीयता के विपय मे वहुत से व्यक्तियो की तरह (वहुत मे दिन) व्यवहार करने से सम्वन्धित यह सादृश्य नही है, जैसा कि करने की हमारी प्रवृत्ति है, परन्तु इसका सादृश्य ऐसे व्यवहार से है जिसमे उसी व्यक्ति का पुन पुन.आगमन हो। कोई भी, केवल एक ही व्यक्ति को विपय वनाकर कई व्यक्तियो को वदल नही सकता, परन्तु कोई भी तैयारी कर सकता है, और

उसी व्यक्ति के उत्तरवर्ती आगमनो को, प्रस्तुत आगमन पर कार्य द्वारा प्रभाव डाल कर वदल सकता है। भविष्य विषयक विवेचन करने का होपी मे यही ढग है जिससे यह अपेक्षित है कि प्रस्तुत परिस्थिति के अन्दर कार्य करके प्रकट, तथा गुप्त दोनो प्रकार के सस्कारो को भविष्यवर्ती दिलचस्प घटना तक ले जाए। कोई भी यह कह सकता है, कि होपी समाज हमारी इस लोकोक्ति (well begun is half done) 'अच्छी तरह आरम्भ किया हुआ काम आधा होने के वरावर है' को तो समझता है, परन्तु इस अभिव्यक्ति 'कल दूसरा दिन है' को नही समझ सकेगा। यह तथ्य अधिकाश होपी वैशिष्ट्य की व्याख्या कर सकता है।

होपी के इस तैयारी वाले व्यवहार को घोषणा, वाह्य तैयारी, आन्तरिक तैयारी, अप्रकट सहभागिता; तथा अध्यवसाय मे विभाजित किया जा सकता है। घोषणा करना या उपक्रमात्मक विज्ञापन एक विशिष्ट अधिकारी प्रधान उद्घोषक का महत्वपूर्ण कार्य होता है। वाह्य तैयारी के अन्दर पर्याप्त मात्रा मे दृश्य गतिशीलता होती है। यह आवश्यक नही कि उसमें सभी कुछ हमारी समझ के लिए प्रत्यक्ष रीति से उपयोगी हो। उसमे सम्मिलित है—साधारण अभ्यास, पूर्वाभ्यास, तैयार होना, प्रारम्भिक औपचारिकताए, विशेष खाद्य सामग्री के लिए तैयारी करना आदि आदि, (ये सभी किसी मात्रा मे हमें वहुत श्रमसाध्य प्रतीत हो सकती हैं), सघन एवं सतत, (शारीरिक) पेशीय क्रियाएं, जैसे भागना, दौडना जिनके विषय में यह समझा जाता है कि ये घटनाओ के विकास की गति को वढा देती है, (जैसे फसल की वृद्धि) अनुकरणात्मक तथा अन्य प्रकार के जादू, वे तैयारियाँ जो गोपनीय सिद्धान्तो परआधारित हैं,सम्भवतः जिनमे रहस्यमय उपकरणों—जैसे प्रार्थना की छडी, प्रार्थना के लिए पक्षियों के 'पख', प्रार्थना, भोजन, आदि का समावेश होता है, और अन्ततः महान चक्रीय धर्मानुष्ठान तथा नृत्य भी, जिनका महत्व वर्षा तथा फसल को तैयार करने का है। 'तैयार करने' के अर्थ वाली वहुत सी क्रियाओ में से एक से 'फसल' या 'खेती' संज्ञा व्युत्पन्न की गई है: 'na' twani 'तैयार किया हुआ' या 'तैयारी मे'।१

आन्तरिक तैयारी में प्रार्थना तथा मनन चिन्तन, होता है, यदि कुछ कम प्रवलता अपेक्षित हो तो शुभकामनाओ तथा शुभकाक्षाओं का प्रयोग अपेक्षित फल की अभिवृद्धि के लिए किया जाता है। होपी व्यवहार 'इच्छा' तथा विचार की शक्तियो पर वल देता है। उनके 'लघु व्रह्माण्ड' के अनुसार यह नितान्त स्वाभाविक है कि उन्हे वलदेना चाहिए। इच्छा तथा विचार सव से पहली अतः सवसें अधिक महत्वपूर्ण तथा तैयारी की सवसे अधिक नाजुक तथा निर्णायक अवस्था है। इसके अतिरिक्त,

---

१. होपी के 'तैयार करना' (preparing) अर्थ को प्रकट करने वाली क्रियाएँ स्वाभाविक है; वे हमारी क्रिया (prepare) से प्राँजल रूप में समान नहीं हैं; अतः ' na'twani ' का अर्थ 'अभ्यास किया हुआ', 'परखा हुआ', या अन्य प्रकार से भी किया जा सकता है।

एक होपी के लिए किसी व्यक्ति की इच्छाएं तथा विचार न केवल उसके अपने कार्यों को प्रभावित करते है अपितु प्रकृति के कार्यो को भी। यह सब पूर्णतया स्वाभाविक है। चैतन्य को स्वय कर्म, प्रयत्न, तथा उस क्रियाशक्ति का बोध है, जो चिन्तन और इच्छा करने मे रहती है। भाषा से भी अधिक प्राथमिक अनुभव यह बताता है कि यदि कर्मशक्ति का विस्तार कर दिया जाए तो उसके परिणाम उत्पन्न होगे। हमारी यह विश्वास करने की प्रवृत्ति है कि हमारे शरीर इस शक्ति को रोक सकते है, तथा इसे दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालने से भी वर्जित कर सकते है, जब तक कि हम यह इच्छा न करे कि हमारे शरीर इस प्रत्यक्ष-कार्य को करे। परन्तु यह इसलिए हो सकता है कि हमारे अपने भाषाई आधार ऐसे सिद्धान्त के लिए है, जिनके अनुसार 'द्रव्य' जैसी अरूपात्मक इकाइया भी अपने आप मे 'चीजे' है, जो केवल समान वस्तुओं द्वारा ही पीट कर बढाई जा सकती है (आघातवर्ध्य है), अधिक द्रव्य द्वारा, अतः जीवन तथा विचार की शक्तियो के प्रभाव से सरक्षित है। 'घर के बाहर जलाई गई रोशनी' यह सब करती है. ऐसा सोचने, या करने से, यह सोचना अधिक अस्वाभाविक नही है, कि विचार प्रत्येक वस्तु से सम्पर्क स्थापित कर लेता है तथा सारे विश्व मे व्याप्त हो जाता है। और यह फर्ज करना भी अस्वाभाविक नही है कि विचार--किसी भी अन्य शक्ति की तरह अपने प्रभाव के चिन्ह छोड देता है। अब, जबकि हम एक विशेष वास्तविक गुलाब के पौधे के विषय मे सोचते है तो हम यह नही मान बैठते है कि हमारा विचार उस वास्तविक पौधे तक जाता है, और उसके साथ इस प्रकार सम्पर्क स्थापित करता है जैसे उस पर फेकी गई रोशनी। अब हम गुलाब के पौधे के विषय मे सोच रहे है, तो हमारी चेतना किस प्रकार व्यवहार कर रही है, तब इस विषय मे हम क्या फर्ज करते है ? सम्भवत. हम मान लेते है कि यह एक मानसिक प्रतिकृति के साथ व्यवहार कर रही है जो एक गुलाब का पौधा तो नही है अपितु उसका मानसिक प्रतिनिधि है। परन्तु यह सोचना स्वाभाविक क्यो होना चाहिए कि हमारा विचार एक 'प्रतिनिधि' के साथ व्यवहार कर रहा है, और वास्तविक गुलाब के पौधे के साथ नही ? सम्भवत. हम इसलिए सोचते है कि हमे थोडा सा यह बोध है कि हम अपने साथ सदैव एक सम्पूर्ण काल्पनिक (स्पेस) स्थान रखते हैं जो मानसिक प्रतिनिधियो से भरा पडा है। हमारे लिए मानसिक प्रतिनिधि पुराने परिचित यात्री है। काल्पनिक (स्पेस) 'स्थान' की प्रतिकृतियो के साथ साथ, जिन्हे हम गुप्तरूप से सम्भवत. केवल काल्पनिक मानते है, हम वास्तविक रूप में विद्यमान गुलाब के पौधे का विचार भी जोड देते है, जो एक बिल्कुल अलग बात हो सकती है, शायद ठीक इसीलिए कि हमारे पास इसके लिए केवल वही एक सरल सुगम "स्थान" है। होपी विचार-जगत् मे कोई काल्पनिक स्पेस नही है। इसका उपपरिणाम यह हुआ कि वह वास्तविक स्पेस का विवेचन करने वाले विचार का स्थान कहीं भी निर्धारित नही कर सकता, केवल वास्तविक स्पेस मे (निर्धारित) कर सकता है, न ही वह वास्तविक स्पेस को विचारो के प्रभाव से अलग रख सकता है। एक होपी भाषी स्वाभाविक रूप से यह मान लेगा कि उसका विचार (या वह

स्वय) गुलाव के पौधे के साथ टकराता है, या अधिक सम्भावना इस बात की है कि उसका विचार 'अनाज के पौधे' के साथ टकराता है जिसके विषय मे वह सोच रहा है। अत, विचार खेत मे खडे पौधे के पास, अपने कुछ चिन्ह (प्रभाव) अवश्य छोडेगा। यदि यह अच्छा विचार है, या स्वास्थ्य तथा विकास एव वृद्धि सम्बन्धी है, तो वह पौधे के लिए अच्छा रहेगा, यदि वुरा विचार है तो परिणाम इसके विपरीत होगे।

होपी-भाषी विचार के तीव्रता-पक्ष पर अधिक वल देते है। अधिक प्रभावशाली होने के लिए यह आवश्यक है कि विचार, चेतना मे विल्कुल स्पष्ट, निश्चित, स्थिर, सतत तथा दृढतापूर्वक अनुभूत भावनाओ से भरा हो। वे इस विचार को अग्रेजी के अनुसार इस प्रकार व्यक्त करते है" 'Concentrating' " 'ध्यान केन्द्रित करना' 'Holding it in your heart' 'अपने हृदय मे धारण करना', 'putting your mind on it' 'अपने मन को इस पर लगाना' 'earnestly hoping' 'सच्चे हृदय से आशा करना'। विचारशक्ति ही धर्मानुष्ठानो, प्रार्थना-छडियो, तथा कर्मकाण्डीय धूम्रपानो की आधार है। प्रार्थना का हुक्का 'ध्यान केन्द्रित करने का' साधन माना जाता है (यह मुझे मेरे सूचक ने वताया) इसका नाम है nat wanpi 'नात्वॉन्पी' अर्थात् 'तैयारी कराने का उपकरण।'

'अप्रकट रूप से सम्मिलित होने' का अर्थ है—उन लोगों का मानसिक सहयोग जो वास्तविक कार्य मे भाग नही ले रहे है, चाहे वह कोई साधारण काम हो या शिकार, दौड या धर्मानुष्ठान, वे अपने विचार तथा शुभकामनाओ को उस कार्य की सफलता के लिए उस ओर प्रेषित करते है। घोषणाएँ प्राय ऐसे मानसिक सहायको के सहयोग प्राप्ति का अनुरोध करती है तथा प्रकट रूप मे भाग लेने वालो के सहयोग की अपेक्षा भी, तथा उन मे लोगो के लिए उपदेश होता है कि वे अपनी सक्रिय शुभाकाक्षाओ द्वारा सहायता करे[10]। सहानुभूतियुक्त श्रोताओ या फुटवाल के खेल मे (तालियाँ वजाकर) प्रोत्साहित करने वाले दर्शको के विषय मे हमारी धारणाओ के के साथ समानता से यह तथ्य छुपना नही चाहिए कि वह मौलिक रूप से प्रेषित विचार की शक्ति होती है, साधारण रूप मे सहानुभूति या प्रोत्साहन मात्र नही, जिसकी अपेक्षा अप्रकट रूप मे भाग लेने वालो से की जाती है। वास्तव मे ये अप्रकट रूप से भाग लेने वाले लोग अपने घातकतम कार्यो को पहले ही प्रविष्ट कर देते है, खेल होने के समय नही। विचार शक्ति का एक उपपरिणाम, अशुभ के लिए 'अशुद्ध

10. देखिए, जैसे Ernest Beaglehole notes on Hopi economic life (yale University pnblication in Anthropology, no. 15, 1937) विशेष रूप से वह प्रसग जहां खरगोश के शिकार की घोषणा है, तथा पृष्ठ 30 पर तोरेवा (Toreva) वहार की स्वच्छता से सम्बन्धित गतिविधियों के वर्णन—विविध गतिविधियों के आयोजन का उद्घोषण, तथा अन्ततः प्राप्त किए गए अच्छे परिणामों की अविच्छिन्नता के लिए आयोजन. तथा बहार के निरन्तर प्रवाह के निमित्त तैयारियाँ।

विचार की शक्ति' के रूप मे हुआ, अत. अप्रकट रूप मे भाग लेने का उद्देश्य अशुभ-कामियो के अशुभ एव हानिकारक विचारो को परास्त करने के लिए बहुत से शुभा-कांक्षियो की सामूहिक विचार शक्ति को प्राप्त करना। इस प्रकार का व्यवहार पारस्परिक सहयोग तथा सामाजिक भावना को बहुत अधिक प्रोत्साहन देता है। इस का यह अभिप्राय नही है कि होपी समाज मे पारस्परिक वैमनस्यगत स्पर्धाए अथवा परस्पर विरोधी स्वार्थो का बाहुल्य नही है। इतने छोटे से, पृथक् समाज मे विचार की शक्ति द्वारा, उपक्रमात्मक सिद्धान्त तर्क-सगत ढग से समस्त समाज के समन्वित, तीव्रीकृत तथा सम्मिलित महान् विचार को महान् शक्ति की ओर ले जाता हुआ, सामाजिक विघटन की प्रवृत्ति के विरुद्ध सहयोग की असाधारण कोटि के प्रति अवश्य सहायक होता है, जैसा कि बहुत से व्यक्तिगत झगडो के होते हुए भी होपी गाँव अपनी समस्त महत्वपूर्ण सास्कृतिक गतिविधियो मे (सहयोग=भावना को) प्रदर्शित करता है। होपियो की "उपक्रमात्मक" गतिविधियाँ आग्रही, तथा निरन्तर आग्रही आवृत्ति, या दोहराने पर बल देने के रूप मे पुन. अपने भाषाई विचारो की पृष्ठ भूमि के परिणाम का प्रकाशन करती है। असख्य छोटे-छोटे सवेगो के एकत्रीभूत मूल्यो की भावना, हमारी काल सम्बन्धी धारणा के समान ही काल की विषयीकृत तथा स्थानीकृत धारणा द्वारा कुण्ठित कर दी जाती है, जिसका (धारणा का) सवर्धन एक प्रकार की चिन्तन पद्धति द्वारा किया जाता है, जो अवधि के आत्मपरक बोध, तथा घटनाओ के निरन्तर "उत्तरकालीनीकरण" के बहुत निकट है। हमे—जिनकी दृष्टि से काल, स्थान के ऊपर एक गति है, अपरिवर्तनशील आवृत्तियाँ अपनी शक्ति को उस स्थान की इकाइयो की पक्ति के साथ विकीर्ण करती हुई, तथा नष्ट होती हुई प्रतीत होती है। होपी के लिए अपरिवर्तनशील आवृत्ति नष्ट नही होती अपितु सगृहीत होती रहती है, क्योकि उसकी दृष्टि मे काल एक गति नही है, अपितु उस प्रत्येक वस्तु का, जो कभी की जा चुकी है, उत्तरकालीन 'होना' है। यह (प्रक्रिया) एक अदृश्य परिवर्तन का सचयीकरण है जो उत्तरवर्ती घटनाओ मे विद्यमान रहता है।[11] जैसा कि हम देख चुके है यह इस तरह है

---

11. शक्ति सग्रहण की इस धारणा का, जो होपी के पर्याप्त व्यवहार से प्रकट होती है, भौतिकी मे एक सादृश्य है। होपी के बहुत अधिक व्यवहारो से प्रकट होती प्रतीत होने वाली शक्ति संग्रहण की इस धारणा का भौतिकी में एक तुल्य रूप है : त्वरण (acceleration); यह कहा जा सकता है कि होपी विचार-धारा की भाषाई पृष्ठभूमि उसे यह मान्यता देने के लिए स्वाभाविक रूप से सज्जित करती है कि शक्ति, गति या तीव्रगति के रूप में प्रकट नहीं होती, अपितु एक सग्रहण या त्वरण के रूप मे होती है। हमारी भाषाई पृष्ठभूमि हमारे अन्दर इसी मान्यता को रोकने में प्रवृत्त होती है, क्योंकि उचित रूप से जब हम धारणा बना लेते हैं कि शक्ति वह तत्व है जो परिवर्तन लाता है, तब हम परिवर्तन के विषय में एक शुद्ध गतिहीन परिवर्तनता की धारणा अर्थात् सग्रहण या त्वरण द्वारा सोचने के बदले अपने भाषाई रूपकात्मक

मानो दिन का लौटना ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसी व्यक्ति का लौट आना, वह थोड़ा सा पुराना अवश्य हो जाता है परन्तु उसमे कल के सभी लक्षण विराजमान होते है, वह "दूसरे दिन" की भाँति नही होता, अर्थात् बिल्कुल भिन्न व्यक्ति की तरह नही होता। यह सिद्धान्त विचारशक्ति के साथ तथा सामान्य प्यूब्लो सस्कृति के वैशिष्ट्यो के साथ सयुक्त होकर होपी के धर्मानुष्ठानीय नृत्य मे अभिव्यक्त होता है, जिसके द्वारा वर्षा तथा फसल की वृद्धि अपेक्षित होती है। यह अभिव्यक्ति नृत्य के सभी, पिस्टन की तरह के, छोटे छोटे पद सचालनो मे होती है जिन्हे हजारो बार कई घटो तक दोहराया जाता है।

पाश्चात्य सभ्यता में भाषाई अभ्यास के कुछ प्रभाव

होपी की अपेक्षा, भाषाई रूप मे अनुबन्धित हमारी अपनी सस्कृति की विशेषताओ के विषय मे कतिपय शब्दो के माध्यम से न्याय करना दोनो कारणो से अधिक कठिन है (१) विषय की विशालता, तथा वस्तुनिष्ठ ज्ञान की कठिनाई के कारण, (२) तथा विश्लेषणीय मनोवृतियो के साथ हमारी गहरी पैठी हुई परिचितियो के कारण। मेरी इच्छा है कि केवल कुछ इन वैशिष्टयो की मात्र रूपरेखा प्रस्तुत करूँ जो हमारी रूप+अरूप इकाइयो या "पदार्थ" की भाषाई द्विपदीयता के साथ, हमारी रूपकात्मकता के साथ, हमारे काल्पनिक 'स्पेस' के साथ, हमारे विषयीकृत काल के साथ सगत हो। ये सब, जैसा कि हम देख चुके है, भाषाई है।

उन दार्शनिक विचारोने जो "पाश्चात्य ससार" के अत्यधिक परम्परागत वैशिष्ट्य है, 'रूप' 'पदार्थ' के द्विभागीकरण से बहुत बडी सहायता प्राप्त की है। इसमे भौतिकवाद, मन-शारीरिक समानान्तरताए, भौतिकी—कम से कम अपने परम्परागत "न्यूटनी रूप मे", तथा सामान्य रूप से जगत् के विषय मे द्वैत विचार सम्मिलित है। वास्तव मे इसी मे सभी कुछ सम्मिलित है जो "कठोर, व्यावहारिक, सामान्य ज्ञान" है। पूर्णतावादी, तथा वास्तविकता के विषय मे सापेक्षतावादी विचार दार्शनिको तथा कुछ वैज्ञानिको को बहुत अच्छे लगते है, परन्तु वे पाश्चात्य जगत् के सामान्य लोगो के 'सामान्य ज्ञान' को अच्छे लगने मे समर्थ नही है—इसलिए नही, कि प्रकृति स्वयं उनका निराकरण करती है (यदि वह करती तो दार्शनिक इसका पता लगा लेते) अपितु, इसलिए कि उनके विषय मे चर्चा की जानी चाहिये और वह चर्चा एक नई भाषा के समान होगी। "सामान्य ज्ञान" जैसा कि इसके नाम से

तुल्य रूप 'गति' के द्वारा ही सोचते हैं, अतः हमारी साधारण भावना को एक धक्का सा लगता है जब हमें भौतिकी के प्रयोगों द्वारा पता चलता है कि गति के माध्यम से शक्ति की परिभाषा करना सम्भव नहीं, और यह, कि गति एवं रफ्तार, तथा इसी प्रकार 'विश्राम की स्थिति में होना' पूर्णतया सापेक्षिक है तथा यह, कि शक्ति का मापन केवल त्वरण द्वारा किया जाता है।

स्पष्ट है, और "व्यावहारिकता" जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट नही, ये मुख्यतः बातचीत के विषय हैं, ताकि बोलने वाले को आसानी से समझा जा सके। कभी कभी यह भी कहा जाता है कि न्यूटनी (स्पेस) दिक्, काल, तथा पदार्थ को सभी लोग अन्तर्दृष्टि द्वारा समझ लेते है, जिस पर सापेक्षता का दृष्टात यह दिखाने के लिए दिया जाता है कि किस प्रकार गणितशास्त्र अर्न्तदृष्टि को झूठा सिद्ध कर सकता है। यह, अन्तर्दृष्टि के प्रति अन्याय होने के साथ-साथ, एक तात्कालिक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न है, (१) जिसे इस लेख के प्रारम्भ में प्रस्तुत किया गया था, और जिसका उत्तर देने के लिए शोध कार्य आरम्भ किया गया था। उस शोध के परिणामो का प्रस्तुतीकरण अब समाप्ति के निकट है और मेरा विचार है कि उत्तर स्पष्ट मिल चुका है। लापरवाही से दिया गया वह उत्तर जो ब्रह्माण्ड के रहस्यो, जैसे सापेक्षतावाद का उद्घाटन करने मे हमारी सुस्ती का आक्षेप अन्तर्दृष्टि पर करता है—वह गलत है। सही उत्तर यह है न्यूटनी दिक्, काल, और पदार्थ अर्न्तदृष्टि हैं ही नही। वे सस्कृति और भाषा के मनश्चित्र है। न्यूटन ने उन्हे वही से प्राप्त किया।

'काल' विषयक हमारी विषयीकृत धारणा, फिर भी ऐतिहासिकता के अनुकूल है, तथा सबके अनुकूल है, जिनका सम्बन्ध रिकार्ड रखने से है, जबकि होपी की धारणा इसके प्रतिकूल है। होपी इस विषय मे बहुत सूक्ष्म, जटिल, तथा सदैव विकासशील है, उसके पास इस प्रश्न का, कि कब एक घटना समाप्त होती है और कब दूसरी घटना आरम्भ होती है, कोई बना बनाया उत्तर नही है। जब यह विवक्षित है कि प्रत्येक चीज जो एक बार हो चुकी वह अब भी है, परन्तु जो कुछ रिकार्ड बताते हैं या स्मृति बताती हैं उससे अनिवार्यतः भिन्न रूप मे है, तो वहाँ अतीत का अध्ययन करने की बहुत कम प्रेरणा होती है। जहा तक वर्तमान का सम्बन्ध है, प्रोत्साहन उसके अभिलेखन के लिए नही होगा, अपितु इसे "उपक्रम" मानने के लिए होगा। परन्तु हमारा विषयीकृत 'काल' हमारी कल्पना के समक्ष एक फीते या खर्रे जैसी चीज प्रस्तुत करता है जिसमे समान रिक्त स्थान अंकित हैं जिनकी रिक्त-स्थान पूर्ति करना आवश्यक है। इसमे सन्देह नही कि काल के भाषाई विवेचन के प्रति लेखन पद्धति ने काफी सहायता की है, जिस प्रकार भाषाई विवेचन ने लेखन की उपयोगिताओं का मार्ग-निर्देशन किया है। भाषा तथा समस्त संस्कृति के पारस्परिक आदान प्रदान के द्वारा हमे निम्नलिखित उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ. (1) लिखित रिकार्ड, दैनन्दिनी, हिसाब-किताब रखना, लेखाशास्त्र द्वारा प्रोत्साहित गणितशास्त्र। (2) सुनिश्चित अनुक्रम मे अभिरुचि, तिथीकरण, पचाग, कैलेण्डर, कालानुक्रम, घडियाँ, काल-वेतन, काल-रेखा-चित्र, काल जैसा कि वह भौतिकी मे प्रयुक्त होता है। (3) वर्ष-इतिवृत्त, इतिहास, ऐतिहासिक प्रवृत्ति अतीत मे अभिरुचि, पुरातत्व विज्ञान, अतीत कालो की रीतियो के अनुकरण की प्रवृत्ति जैसे : श्रेण्यता, स्वच्छन्दतावाद।

जैसे हम अपने विषयीकृत काल के बारे मे यह सोचते हैं कि वह भविष्य मे

प्रसारित हो जाता है, और इसी तरह यह अतीत मे भी होता है, अतः हम अपने भविष्य विषयक अनुमानो को उसी रूप मे ढालते है जैसे कि हमारे अतीत के रिकार्ड है, एवम् तदनुसार कार्यक्रम, समय सारिणी तथा (वजट) आय-व्ययक, आदि वनाते है। (स्पेस) 'स्थान' की तरह को इकाइयो का वह रूपकात्मक गुण जिसके द्वारा हम काल को मापते है, या समझते है, हमे यह सोचने को वाध्य करता है 'कि काल की' 'रूपहीन इकाई' या काल का 'पदार्थ' समरूप है, तथा इकाइयो की सख्या के अनुपात मे है। परिणाम स्वरूप, काल विषयक मूल्यो का यथानुपात आवंटन है जो अपने व्यापारिक ढाचे का वह रूप प्रदान करता है जो कालगत—यथानुपातीय मूल्यो पर आधारित है · काल वेतन (काल-कार्य, छुटपुट कार्यों का स्थान निरन्तर लेता रहता है) किराया, उधार, सूद, अवमूल्यन शुल्क, तथा वीमे की किश्ते, इत्यादि। इसमे सन्देह नही कि यह विशाल व्यवस्था, यदि एक वार वन जाए तो काल के किसी भी प्रकार के भाषाई विवेचन के अन्तर्गत सुचारू रूप से चलती रहेगी, पर इसका इस प्रकार वनना और इस विशेष रूप, तथा वृहदाकार को प्राप्त करना, जो इसने पाश्चात्य जगत् मे प्राप्त किया है, वह एक सत्य है, जो निश्चित रूप से मासाय भाषाओ की अभिरचनाओ के अनुरूप है। काल के साथ अत्यधिक भिन्न भाषाई व्यवहार करने पर क्या हमारी जैसी सभ्यता सम्भव हो सकती है ? —यह एक वहुत वडा प्रश्न है—हमारी सभ्यता मे, हमारी भाषायी अभिरचनाओ मे, तथा कालक्रम के साथ हमारे व्यवहार की सगति जैसी भी है, वह सव परस्पर अनुरूप है। हमे निस्सन्देह कलेण्डरो, घण्टों, और घड़ियो का प्रयोग करने की प्रेरणा प्राप्त है और हम 'काल' को अधिकाधिक सुनिश्चित रूप मे मापना चाहते हैं, यह व्यवहार विज्ञान को सहायता प्रदान करता है, और वदले मे विज्ञान इन प्रसिद्ध सास्कृतिक लीको पर चलता हुआ, सस्कृति को एक उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त करने वाला प्रयोगो का, आदतो का, और मूल्यो का ऐसा भण्डार सौप देता है जिसके द्वारा सस्कृति पुनः विज्ञान का निर्देशन करती है। परन्तु इस सर्पिल प्रगति के वाहर क्या रह जाता है ? विज्ञान ने अब यह पता लगाना आरम्भ कर दिया है कि इस विश्व में कुछ ऐसी चीजे भी है जो उत्तरोत्तर वर्धनशील सर्पिल गति विषयक हमारी धारणाओ के अनुरूप नही हैं। विज्ञान एक नई भाषा वनाने का प्रयत्न कर रहा है जिसके द्वारा वह अपना तालमेल एक विशालतर विश्व के साथ वैठा सके।

यह स्पष्ट है कि किस प्रकार 'समय वनाने' की धारणा पर वल देना उपरोक्त सभी स्थानो पर लागू होता है तथा यह काल का वहुत ही स्पष्ट विषयीकरण है, जो रफतार के उस उच्च मूल्याकन की ओर ले जाता है, जो अपने आप को हमारे व्यवहार मे वहुत अधिक प्रकट करता है।

एक अन्य व्यवहार-परक प्रभाव यह है कि अनन्त मापक फीते पर समरूप मे अकित 'काल' विषयक हमारा मनश्चित्र, जो नियमितता एवं एकरसता के वैशिष्ट्य से युक्त है, हमे इस प्रकार व्यवहार करने को प्रोत्साहित करता है

मानो वह एकरसता उससे अधिक सत्य हो जितनी कि वह वास्तविक रूप मे है। अर्थात् यह हमे नित्य-क्रमबद्ध होने मे सहायता प्रदान करता है। जो कुछ भी इस विचारधारा को धारण करता है, सत्ता के नित्य-क्रमिक पक्षो का सहयोग देने के लिए हमारी प्रवृत्ति उसी का चयन, तथा उसी का पक्ष लेने की हो जाती है।

इस का एक पक्ष है—सुरक्षा की मिथ्या भावना प्रदर्शित करना, या यह धारणा बना लेना कि सभी कुछ ठीक चलता रहेगा, तथा जोखिमो को पहले से ही जानने तथा उनमे अपनी सुरक्षा करने की भावना का अभाव। ऊर्जा (energy) को काम मे लगाने की हमारी विधि नित्यक्रमिक कार्यवाहन मे ठीक कार्य करती है, और नित्यक्रमिक पद्धतियो द्वारा ही हम उसमे सुधार करने का प्रयत्न करते है। उदाहरणार्थ, हम ऊर्जा को दुर्घटना करने, आग लगाने, और विस्फोट करने आदि से, जिन्हे वह निरन्तर बहुत बडे पैमाने पर कर रही है, रोकने मे अपेक्षाकृत उदासीन है। एक छोटे, एकाकी, तथा खतरनाक परिस्थितियो वाले समाज के लिए, जैसा कि होपी समाज अब है, या कभी था, जीवन की आकस्मिकता के प्रति इस प्रकार की उदासीनता विनाशक सिद्ध हो सकती है।

अत हमारा भाषाई रूप से निर्धारित विचार-ससार न केवल हमारे सास्कृतिक अभिपूजित-मूल्यो एव आदर्शो को सहयोग देता है, अपितु, हमारी अचेतन व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओ को भी अपनी अभिरचनाओ मे व्यस्त कर लेता है, और उन्हे एक विशेष प्रकार का वैशिष्ट्य प्रदान करता है। उनमे से एक वैशिष्ट्य जैसा कि हम देख चुके है, उदासीनता या लापरवाही है, जैसे बेतहाशा गाडी चलाने, या रद्दी की टोकरी मे जलता हुआ सिग्रेट का टुकडा फेक देने आदि के व्यवहार मे। दूसरे प्रकार का वैशिष्टय है, बोलते समय आगिक चेष्टाए। इनमे से बहुत सी आगिक चेष्टाए, जो कम से कम अग्रजी भाषियो, या सम्भवत: सभी मासाय भाषियो द्वारा की जाती है, वे 'स्पेस' मे चेष्टा के द्वारा ऐसे सकेतो का दृष्टाँत देने मे सहायक होती है जो वास्तविक स्थानिक सकेत तो नही अपितु अस्थानिक सकेतो मे से एक है, जिसको हमारी भाषा काल्पनिक स्पेस के रूपको द्वारा प्रयोग करती है। अर्थात् हम 'समझ जाने' की अग-चेष्टा उस समय करने मे अधिक प्रवृत्त होते है जब हम दुर्ग्राह्य मायावी विचारो को समझने की बात करते है, न कि उस समय जबकि हम दरवाजे के कुण्डे को समझने की बात करते है। आगिक चेष्टाए रूपकात्मक, अत. कुछ स्पष्ट सकेतो को अधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से प्रयुक्त की जाती है। होपी मे आगिक चेष्टाएं बहुत कम है, सभवत: जिन अर्थो मे हम समझते है, उन अर्थो मे तो बिल्कुल नही है।

ऐसा प्रतीत होगा मानो गतिसवेदना, या पेशियो की चेष्टाओ का बोध, यद्यपि भाषा से पहले प्रकट होता है, फिर भी उसे काल्पनिक स्पेस के भाषाई प्रयोग, तथा गति के रूपकात्मक प्रतीको द्वारा बहुत अधिक चेतन बना दिया जाना चाहिए। गति-सवेदना यूरोपीय संस्कृति के दो पक्षो मे अभिलक्षित होती है, कला, तथा खेल कूद मे। यूरोपीय मूर्तिकला, जिसमे यूरोप अग्रगण्य है, शारीरिक

गतियों के महान अर्थो की अभिव्यक्ति करने के कारण अत्यधिक गति-सवेदनात्मक है। यूरोपीय चित्रकला भी इसी तरह की है। हमारी सस्कृति मे नृत्य, 'प्रतीकवाद' या धर्मानुष्ठानो की अपेक्षा 'गति मे उल्लास' को अभिव्यक्त करता है, और हमारा सगीत हमारे नृत्य के रूपो से बहुत अधिक प्रभावित है। हमारे खेलकूद भी "गति मे सगीत" की भावना से अत्यधिक ओत-प्रोत है । होपी की दौडें तथा खेल अधिकतर सहनशक्ति, तथा दीर्घीकृत सतत तीव्रताओ पर बल देते प्रतीत होते है । होपी के नृत्य अत्यन्त प्रतीकात्मक है, तथा बहुत अधिक गभीरता-पूर्वक किए जाते है, परन्तु उनमे बहुत अधिक गति या दोलन नही होते ।

सह-सवेदन, या किसी अन्य इन्द्रिय से सम्बन्धित वैशिष्ट्यो का विशेष इन्द्रिय-ग्रहणो द्वारा अभिव्यजित करने, जैसे 'प्रकाश' या 'रग' को ध्वनियो द्वारा, तथा इसके विपर्यय अर्थात् ध्वनियो द्वारा प्रकाश या रंग को अभिव्यञ्जित करने को 'अधिक चेतन' उस भाषाई रूपकात्मक व्यवस्था द्वारा बना देना चाहिए जो अस्था-नीय अनुभवो को स्थानीय अनुभवो के शब्दो द्वारा निर्दिष्ट करती है। यद्यपि यह व्यवस्था, निस्सन्देह, गहरे स्रोतो से उद्भूत होती है। सभवत:, पहले तो रूपक सहसवेदन से उत्पन्न होता है, इसका विपर्यय नही, (अर्थात् रूपक से सहसवेदन उत्पन्न नही होता) तथापि रूपक के लिए भाषाई अभिरचना मे पूरी तरह बद्धमूल होने की आवश्यकता नही, जैसा कि होपी भाषा प्रकट करती है। 'अस्थानिक' अनुभव के पास एक सुव्यवस्थित इन्द्रिय है--श्रवणेन्द्रिय, क्योकि गन्ध तथा स्पर्श बहुत कम व्यवस्थित हैं। अस्थानिक चेतना मुख्यत विचार, भावना और ध्वनि का क्षेत्र है। स्थानिक चेतना, प्रकाश, रग, रूप, (दृश्य) और स्पर्श का क्षेत्र है, तथा आकृतियो और आयामो को प्रस्तुत करती है। हमारी रूपकात्मक व्यवस्था, अस्थानिक अनुभवो का स्थानिक अनुभवो के सादृश्य पर नाम रख कर ध्वनियो, गधों, स्वादो, भावो, तथा विचारो पर, रगो, प्रकाशिताओ,आकृतियो, कोणों, बनावटो, तथा स्थानिक अनुभवो की गतियो के गुणो का आरोप कर देती है। और, कुछ सीमा तक विपरीत रूपान्तरण भी घटित होता है, क्योकि स्वरो के विपय मे कि सुर ऊचा है, नीचा है, तेज है, मन्द है, भारी है, शानदार है, धीमा है इत्यादि, काफी ज्यादा चर्चा करने के बाद बोलने वाले को सुर-तत्वो के सादृश पर स्थानिक अनुभावो के कुछ तत्त्वो के विपय मे सोचना आसान हो जाता है। अत: हम रगो के 'सुर' की (a grey "monotone") जैसे "एक-सुरा" भूरा रग', 'लाउड नेकटाई' उच्चस्वरयुक्त नेकटाई, तथा पोशाक के (taste) 'जायके' की बात करते है : जो सब के सब उल्टे रूप मे 'स्थानिक' रूपक हैं। योरोपीय कला अपने उस ढग मे निराली है जिस ढग से वह जान बूझकर सह-सवेदन के साथ खिलवाड करना पसन्द करती है। सगीत 'दृश्यों', रगो, गतियो, ज्यामिति के नमूनो का द्योतन करने का प्रयत्न करता है; चित्रकला तथा मूर्ति-कला प्राय: जानबूझ कर सगीत की लय से निर्दिष्ट होती है, रगो को समस्वरता, तथा विषमस्वरता के लिए भावनाओं के साथ जोड़ दिया जाता है। योरोपीय

रंग-मंच तथा गीतिनाट्य बहुत सारी कलाओ का संश्लेषण करना चाहता है। यह भी सम्भव है कि इस ढंग से हमारी रूपकात्मक भाषा, जो एक प्रकार से विचारों का सम्मिश्रण है—कला के माध्यम से गहरे तथा व्यापक मूल्यो वाले परिणामो को उत्पन्न कर रही है—एक गहरी सौंदर्यपरक भावना को (उत्पन्न कर रही है) जो हमारी इन्द्रियों द्वारा विविध रूपो मे प्रस्तुत, दृश्यसत्ता की आधारभूत एकता के सीधे 'बोध' की ओर ले जाती है।

इतिहास-सम्बन्धी निहितार्थताएँ

भाषा, संस्कृति तथा व्यवहार का जाल ऐतिहासिक रूप मे किस प्रकार व्यक्त होता है? कौन सी चीज पहले थी,—भाषाई अभिरचनाए या सांस्कृतिक मानक? मुख्य रूप से ये दोनो एक दूसरे को प्रभावित करते हुए एक ही साथ विकसित हुए हैं। परन्तु इस साझेदारी मे भाषा की प्रकृति एक ऐसा तत्व है जो स्वच्छन्द लचीलेपन को सीमित कर देता है और विकास के साधनो को अधिक निरंकुश रूप मे कठोर बना देता है। ऐसा इसलिए होता है कि भाषा एक व्यवस्था है न कि मानको का एक समूह। बडी बडी व्यवस्थित रूपरेखाए किसी वास्तविक नई चीज मे बदल तो सकती है, परन्तु बहुत धीरे धीरे, जबकि बहुत सी दूसरी सांस्कृतिक नवीनताए अपेक्षाकृत अधिक तेजी से लाई जा सकती है। अत: भाषा; सम्प्रदाय के मन का प्रतिनिधित्व करती है। यह आविष्कारको तथा नवीनताओं के द्वारा प्रभावित तो होती है, परन्तु बहुत कम, और बहुत धीरे, जब कि यह आविष्कारकों, तथा नवीनता लाने वालो के लिए तात्कालिक आज्ञप्तियो द्वारा नियम बना देती है।

'भासाय' वा भाषा-संस्कृति 'मिश्र' प्राचीन काल से चलता आया है। इसके बहुत सारे 'स्थानिक' के द्वारा 'अस्थानिक' के रूपकात्मक निर्देश, प्राचीन भाषाओ मे ही नियत हो चुके थे और विशेषतया लैटिन मे। निस्सन्देह यह लैटिन का प्रसिद्ध वैशिष्ट्य है। यदि हम हिब्रू से तुलना करे तो पता चलेगा कि हिब्रू मे 'अस्थान' के 'स्थान' के रूप मे कुछ थोडे से निर्देश है परन्तु लैटिन मे अधिक है। 'अस्थानिको' के लिए educo, religis, principia, comprehendo जैसे' शब्द रूपकीकृत भौतिक संकेत है: अंग्रेजी मे लीड आउट (lead out) 'बाहर नेतृत्व करना', ट्राइग बैंक, 'पीछे प्रयत्न करना' पुन. प्रयत्न करना आदि। यह, सब भाषाओ के विषय मे सच नही हैं—होपी के विषय मे यह बात बिल्कुल असत्य है। यह तथ्य, कि लैटिन मे विकास की दिशा 'स्थानिक' से 'अस्थानिक' की ओर थी; ('अंशत: बौद्धिकता मे अपरिपक्व रोमनो का यूनानी संस्कृति के साथ सम्पर्क होने पर, सूक्ष्म अथवा अमूर्त चिन्तन को गौण प्रेरणा मिलने के कारण) और यह, कि उत्तरकालीन भाषाए लैटिन का अनुकरण करने मे अत्यधिक उत्साहयुक्त थीं—उस "धारणा" के लिए सम्भाव्य कारण प्रतीत होता है, जो भाषा-विज्ञानियों में अब भी रेंग रही है कि यह सभी भाषाओ मे अर्थपरिवर्तन की स्वाभाविक दिशा है;

तथा पाश्चात्य विद्वजनमण्डलो मे (प्राच्य विद्वजनमण्डलो के नितान्त विरोध मे) इस अटल धारणा के लिए कारण यह है कि वस्तुपरक अनुभव आत्मपरक अनुभव का पूर्ववर्ती है। दर्शन-प्रणालियाँ इससे उल्टी दिशा के पक्ष की पुष्टि करती है, और निश्चित रूप से कभी-कभी विकास की दिशा इससे उल्टी होती है। अतः होपी भाषा मे 'हृदय' के लिए शब्द, होपी भाषा की एक ऐसी धातु से, जिसका अर्थ सोचना या याद रखना है, बाद मे बनाया हुआ दिखाया जा सकता है। या इस पर विचार कीजिए कि 'रेडियो' शब्द का ऐसे वाक्य मे क्या अर्थ हो गया, जैसे "उसने एक नया रेडियो खरीदा" और इसकी तुलना "बेतार की टेलीफूनी के विज्ञान' से करे, जो इसका पहला अर्थ था।

मध्यकालीन युग मे लैटिन मे पहले से ही बनी अभिरचनाए बढते हुए मशीनी आविष्कारो, उद्योगो, व्यापार, तथा पाण्डित्यपूर्ण एव वैज्ञानिक विचारो के साथ अन्तर्गुम्फित होनी आरम्भ हो गई थी। उद्योग तथा व्यापार मे मापन की आवश्यकताओ, मालगोदामो तथा भिन्न प्रकार के डिब्बो मे भरी जाने वाली ढेर सारी सामग्रियो, भिन्न प्रकार के आकार-प्रकार के ढाचो जिन्हे बहुत से पदार्थो के लिए प्रयुक्त किया जाता था, मापक और तौलक इकाइयो के मानकीकरण, घडियो के आविष्कार, तथा समय का मापन, लेखा जोखा, हिसाब-किताब, इतिवृत्त, इतिहासो, गणित शास्त्र के विकास, तथा विज्ञान और गणित की साझेदारी आदि उपरोक्त बातो ने परस्पर सहयोग द्वारा हमारी भाषा एव विचार जगत् को वर्तमान रूप प्रदान किया है।

होपी इतिहास मे, यदि हम समझने का प्रयत्न करे तो, हमे वहाँ एक भिन्न प्रकार की भाषा, और भिन्न प्रकार के सास्कृकि एव वातावरणात्मक प्रभाव एक साथ काम करते हुए प्रतीत होगे। एक शान्तिपूर्ण समाज, जो भौगोलिक विशेषताओ तथा यायावर शत्रुओ के कारण सब से अलग कटा हुआ, बहुत कम वर्षा वाले प्रदेश मे बसा हुआ, अनुर्वर कृषि, जिसे केवल अत्यन्त परिश्रम द्वारा ही सफल बनाया जा सके, (अत. उस समाज मे डट कर काम करने और बारबार करने का मूल्य है), सहयोग की अनिवार्य आवश्यकता, (अत. वहाँ सामूहिक कार्य की मनोवृत्ति पर, तथा सामान्य रूप से अन्य मानसिक कारणो पर बल दिया जाता है) खेती और वर्षा मूल्यनिर्धारण के प्राथमिक मापदण्ड, अनिश्चित जलवायु, तथा अनुर्वर भूमि मे अच्छी फसल सुनिश्चित बनाने के लिए बडी मात्रा मे तैयारियाँ तथा सावधानियाँ, प्रकृति पर आश्रित रहने की गहरी अनुभूति के कारण प्रार्थना करना, तथा प्रकृति की शक्तियो के प्रति धार्मिक भावना, विशेषतः प्रार्थना और धर्म को सदैव-अपेक्षित वर्षा का वरदान प्राप्ति के लिए प्रयुक्त करना;—ये सब बाते होपी भाषाई अभिरचनाओ के साथ पारस्परिक आदान प्रदानात्मक प्रभाव डालती रही है ताकि उन्हे (भाषाई अभिरचनाओ को) विशेष साँचे मे ढाल सके, और पुनः उनके द्वारा ढाली जा सके और इस प्रकार धीरे धीरे होपी के जगत्‌विषयक दृष्टिकोण को मूर्तरूप दे सके।

इस विषय का समाहार करने के लिए, इस अध्याय के आरम्भ मे उठाए गए हमारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है : सभी मनुष्यो को "काल" तथा "द्रव्य" विषयक धारणाए, अनुभव द्वारा, तत्वत: उसी रूप मे नही दी जाती, अपितु उस भाषा या भाषाओ की प्रकृति पर निर्भर करती है जिनके प्रयोग द्वारा उनका विकास हुआ है। वे किसी एक व्याकरणगत व्यवस्था (जैसे काल, या सज्ञा) पर इतना अधिक निर्भर नही करती, जितना कि उन अनुभवो के विश्लेषण करने और सूचना देने के तरीको पर, जो भाषा मे बोल-चाल के प्रचलन के रूप मे एकीकृत, या स्थिर हो गए है, और जो विशेष व्याकरणिक वर्गीकरण की सीमा के पार निकल जाते हैं, ताकि इस प्रकार के 'प्रचलन' मे शाब्दिक, रूप-प्रक्रियात्मक, वाक्यविन्यासात्मक तथा सामजस्य के एक विशिष्ट ढाचे मे समन्वित, परन्तु अन्य प्रकार से व्यवस्थित रूप मे भिन्न तरीके भी सम्मिलित किए जा सके। हमारा अपना 'काल' होपी की "अवधि" से भिन्न है। इसे (काल को) अत्यधिक सीमित विमाओ वाले एक स्थान की भाति माना जाता है, या इस प्रकार के स्थान के ऊपर एक प्रकार की गति, तथा तदनुसार एक बौद्धिक उपकरण के रूप मे प्रयुक्त माना जाता है।[12] होपी "अवधि" स्थान तथा "गति" के सदर्भ मे अचिन्तनीय प्रतीत होती है क्योकि वह एक रीति है जिसमे जीवन, रूप से बिल्कुल भिन्न है, एक चेतना है, जो चेतना के स्थानिक तत्वो से पूर्णतया भिन्न है। हमारी 'कालविषयक' धारणा से उत्पन्न हुए कुछ विचार, जैसे कि सम्पूर्ण समकालिकता या युगपत्ता का विचार, इसे या तो होपी धारणा के अन्तर्गत अभिव्यक्त करना बहुत कठिन होगा, या अर्थहीन होगा, और उसे परिचालनात्मक धारणाओ द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा। हमारा 'पदार्थ', 'द्रव्य' या 'वस्तु' का भौतिक उपप्रकार है, जिसे बढाई हुई अरूपगत इकाई के रूप मे अवगत किया जाता है, जिसका 'रूप' के साथ सयोग करना आवश्यक है यदि किसी प्रकार की वास्तविक सत्ता अपेक्षित है तो होपी मे इसके समकक्ष कोई धारणा नही है, वहाँ पर किसी प्रकार की 'अरूप-गत' बढाई गई इकाइयाँ नही है, सत्ता का 'रूप' नही भी हो सकता है और हो भी सकता है, परन्तु रूप सहित और रूप रहित जो चीज होपी मे है, वह है "तीव्रता" तथा "अवधि" ये न बढाई गई इकाइयाँ है, और निम्नस्तर पर भी वैसी ही है।

परन्तु हमारी "स्थान" विषयक धारणा का क्या बना जिसे हमारे पहले प्रश्न मे सम्मिलित किया गया था ? होपी और मासाय मे जैसे काल विषयक कोई विशेष अन्तर नही वैसे ही स्थान के विषय मे भी कोई ऐसा असाधारण अन्तर नही है, और सम्भवत. अनुभव द्वारा स्थान विषयक 'बोध' तत्वत: उसी रूप में दिया जाता है, चाहे भाषा कोई भी क्यो न हो। जेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिको के चाक्षुष बोध द्वारा किए गए प्रयोग इसे 'सत्य' के रूप मे स्थापित करते प्रतीत होते हैं।

12. इनमे 'Newtonian' तथा 'Euclidean' 'स्पेस' इत्यादि सम्मिलित हैं।

परन्तु स्थान की धारणा भाषा के साथ साथ कुछ बदलती अवश्य है क्योंकि बौद्धिक उपकरण के रूप मे यह अन्य, 'काल' तथा 'द्रव्य' की व्यवस्था वाले बौद्धिक उपकरणो 12के सहगामी नियोजन के साथ निकटतम रूप मे सम्बन्धित है, जो भाषाई रूप मे अनुबन्धित है। हम भी अपनी आँखो से वस्तुओ को उसी 'स्थानिक' रूप मे देखते हैं जिसमे होपी देखता है, परन्तु स्थान विषयक हमारी धारणा के अन्तर्गत काल, तीव्रता, प्रवृत्ति आदि अस्थानिक सम्बन्धों के प्रतिनिधि के रूप मे कार्य करने का भी वैशिष्ट्य है, तथा एक 'शून्य' के रूप मे कार्य करने का वैशिष्ट्य है, जो कल्पित रूपरहित इकाइयो द्वारा भरा जाना चाहिए, जिनमे से एक का नाम 'स्थान' भी है। होपी द्वारा समझे गए 'स्थान' का ऐसे प्रतिनिधियो के साथ कोई मानसिक सम्बन्ध नही होगा, परन्तु वह अपेक्षाकृत "शुद्ध" तथा बाह्य धारणाओ से अमिश्रित होगा।

हमारे दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध मे जो कि इस अध्याय के आरम्भ मे उठाया गया था, सास्कृतिक मानको तथा भाषाई अभिरचनाओ के बीच सम्बन्ध तो है परन्तु सहसम्बन्ध अथवा अन्योन्याश्रय या भेद-निरूपणात्मक अनुरुपताए नही है। यद्यपि होपी मे काल-वाचक के अभाव से मुख्य उद्घोषको का अनुमान लगाना या मुख्य उद्घोषको से कालवाचको के अभाव का अनुमान लगाना असम्भव होगा, किन्तु एक भाषा एवम् उसका प्रयोग करने वाले समाज मे तथा शेष सस्कृति मे एक सम्बन्ध है। चाहे यह व्यापक रूप मे सत्य है या नही परन्तु जैसे भी दृष्टान्त है जहाँ "बोलने के प्रचलन" समस्त सामान्य सस्कृति के साथ प्रगाढ रूप मे एकीकृत है, और एकीकरण के अन्दर, प्रयोग मे लाए गए भाषाई विश्लेषणो, एव विविध व्यवहारपरक प्रतिक्रियाओ, तथा विविध सांस्कृतिक विकासो द्वारा ग्रहण किए गए रूपो मे इस एकीकरण के अन्दर पारस्परिक सम्बन्ध है। अत: 'उद्घोषक–मुख्यों' के महत्व का सम्बन्ध तो है, परन्तु काल-व्यवस्था-रहितता के साथ नही, अपितु विचारो की एक व्यवस्था के साथ, जिसमे हमारे काल सूचको से भिन्न कोटिया होनी स्वाभाविक है। इन सम्बन्धो के विशेष शीर्षको के विषय मे भाषा-विज्ञान, मानव-जाति-विज्ञान, या समाजशास्त्रीय विवरणो पर ध्यान केन्द्रित करने से इतना पता नही लगाया जा सकता जितना संस्कृति और भाषा का सम्पूर्ण परीक्षण करने से, (सदैव, तथा केवल तब, जबकि दोनो पर्याप्त समय तक ऐतिहासिक रूप मे एक साथ रहे हो) जिनमे ऐसी श्रेणियो के अस्तित्व की अपेक्षा की जा सकती है जो इन विभागीय पद्धतियो (भाषा और सस्कृति) मे आरपार व्याप्त हो गई हो, और यदि उनका अस्तित्व है ही, तो वे, अन्ततोगत्वा, अध्ययन द्वारा अन्वेपणीय हैं।

शॉनी में प्रातिपदिक रचना का जेस्टाल्ट तकनीक

C F. Voegelin ने शॉनी के जटिल समस्त-पदों की एक विशाल संख्या का विश्लेषण करने का कठिन तथा असाधारण कार्य सम्पन्न किया है। उसने शॉनी समस्तपदों के विश्लेषण कार्य को, घटक शब्दिमों, तथा अन्य रूपिमों को, शॉनी व्याकरण की रूपात्मक कोटियों के अनुसार वर्गीकृत करते हुए, तथा महत्वपूर्ण देशीय अर्थपरक सम्बन्ध का पता चलाते हुए, सम्पन्न किया। वह अर्थपरक सम्बन्ध एक ऐसी उपस्थित शब्दिम का था, जिसका व्यापक अर्थपरक प्रभाव होता है, और जो मातृभाषा को उस उपस्थित शब्दिम के अनिवार्य रूप से अनुवाद करने के लिए प्रेरित करता है, जबकि वह समस्तपद के अन्दर अन्य शब्दिमों के विशिष्ट अनुवाद की अवहेलना तक कर देता है।

Voegelin ने भाषाई प्रणाली के एक ऐसे भिन्न पक्ष के विनियोग का स्पष्टीकरण करने के लिए मुझसे कहा जिसे रूपात्मक व्याकरणिक विश्लेषण कर चुकने पर लागू किया जा सके, परन्तु जो कभी कभी ऐसे सिद्धान्तों का भी द्योतन कर सके जिनके द्वारा विभिन्न अर्थवाली शब्दिमों को विशेष अनुक्रमों में रखा जा सके, वे अनुक्रम चाहे समासों में हों अथवा वाक्यात्मक रचनाओं में हों, ताकि वे अर्थपरक प्रभाव उत्पन्न कर सकें।

भाषा-शास्त्री भारोपीय भाषाओं का अध्ययन इतने दीर्घकाल से करते आ रहे हैं कि वे उन भाषाओं के अत्यधिक विशिष्ट अनुक्रमों तथा परिणामी अर्थपरक प्रभावों का सामान्यीकरण ऐसे सामान्य सूत्रों के रूप में कर सकने में समर्थ हुए हैं, जैसे उद्देश्य और विधेय, कर्तृ-क्रिया-कर्म, विशेषण तथा विशेष्य, बहिष्केन्द्रीय बनाम अन्त: केन्द्रीय; तथा उन सम्बन्धों को जोड़ने तथा प्रयोग करने में सफल रहे हैं जो ऐसी "भारोपीयेतर" भाषाओं से केवल ऊपरी समानता रखते हैं, जो भारोपीय भाषाओं से अन्यथा बहुत भिन्न हैं। परन्तु यह अन्तिम योग्यता बहुत से विषयों में केवल सुखद सिद्ध हो सकती है, परन्तु कई बार सम्भवत: यह एक दु:खद संयोग सिद्ध हो। जब संरचना के नियम स्वयं ही इतने अधिक भिन्न हैं, तो ये वर्गीकरण लागू नहीं होते, और ये न तो अनुक्रम के नियमों का, और न ही पारिणामिक

---

* Appendix, PP. 303–406, to C. F. Voegelin, Shawnee stems and the Jacob P. Miami dictionary से पुनर्मुद्रित। Indianpolis : Indiana Historical Society, 1940 (Prehistory Research Series Vol I, no 9, April 1940).

अर्थपरक प्रभावो का विवरण दे सकते है। मै ऊतो-अज्तेकन परिवार की अज्तेक भाषा से एक साधारण सा उदाहरण प्रस्तुत करता हू । यह अज्तेक भाषा भारोपीय के वाक्य-विन्यास प्रकार से बहुत अधिक भिन्न नही है। इस भाषा मे विशेषण और विशेष्य का स्पष्ट सम्बन्ध बहुत निश्चित है, और विशेषणपद या विशेषक सदा विशेष्य पद से पहले आता है (यह आवश्यक निष्कर्ष क्यो है, इस तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए काफी विस्तार की आवश्यकता पडेगी ।) तो भी बहुत सी अभिव्यक्तियाँ Narrow Road 'तग सडक' जैसी अभिव्यक्तियो का अनुकरण करती है –O?–picak-tli जिसमें 'narrow' 'तग' की अभिव्यक्ति एक प्रकार के क्रियापदीय भूतकालिक कृदन्त विशेषण के रूप द्वारा की जाती है—' 'narrowed' ' तग बनाई गई (–picak–) और क्योकि यह कृदन्त अन्त मे रखा जाता है इसलिए Road 'सडक' (–O?–) के बाद आएगा। इस भाषा मे शब्द क्रम के साथ विशेषण तथा विशेष्य का पूर्ण सह-सम्बन्ध यह निष्कर्ष निकालने पर बाध्य करता है कि 'narrow' (तग) विशेष्य है तथा road 'सड़क' विशेषण है जैसे कि अग्रेजी शब्द road side 'सडक के किनारे' मे है। तो भी यदि कोई new road 'नई सडक' good road 'अच्छी सडक' brick road ईट की सडक' कहना चाहे तो इनमे road सडक' विशेष्य होगी और अन्त मे आएगी । ऐसी स्थिति मे अज्तेक भाषा मे रचना करने के इच्छुक व्यक्ति के लिए विशेषण और विशेष्य की कोटिया किस काम की, जब वे road 'सडक' जैसी साधारण धारणा के विषय मे यह भी नही बता सकती कि अर्थप्रभावों मे road 'सडक' विशेषण है या विशेष्य, जब कि narrow road 'तंग सडक' तथा good road 'अच्छी सडक' आपस मे इतने अधिक समान प्रतीत होते है ? इससे व्यक्ति यही निष्कर्ष निकालता है कि एसी कोटियाँ भ.ष.ई गोत्र व्यवस्थाए है, तथा सामाजिक गोत्रव्यवस्थाओ के समान किसी सार्वभौमिक मानदण्ड का अनुकरण नही करती।

यही बात उद्देश्य-विधेय, कर्तृ-कर्म, कर्म-क्रिया के वर्गीकरणो के साथ है, यहाँ तक कि अंग्रेजी भाषा मे भी The tree stood here 'वृक्ष यहाँ था' जैसे वाक्य का कर्तृ कर्म के रूप मे किया गया विवरण कृत्रिम है, यद्यपि वह रूपात्मक दृष्टि से The boy ran 'लडका दौडा' इस वाक्य के समान है। सम्भव है कि एक परिकल्पित अमेरिकन भाषा 'क' दूसरे वाक्य के लिए दो की अपेक्षा तीन या उससे अधिक शब्दिमो का प्रयोग करे। movement of the foot 'पैर की गति', (2) on a surface 'एक सतह पर' (3) Manifestation of the boy occurs quickly 'लडके का आविर्भाव शीघ्रता से होता है।' सम्भवत: (3) मे प्रत्यय भी जुडे हुए हो, जो इसे रूपात्मक दृष्टि से 'क्रिया' अथवा 'गति' बनाए—परन्तु ऐसे प्रत्यय पूरे वाक्य पर लागू होने वाले निपात (Operators) होंगे जो एक अथवा किसी दूसरी शब्दिम पर लागू नही होते। ऐसा वाक्य सचमुच उद्देश्य और विधेय में बांटा नही जा सकता, यहाँ तक कि उस समय भी नही

जबकि उसमें केवल दो रूपात्मक शब्द हों। तथापि उसका विश्लेषण किया जा सकता है, तथा उसके अंश उन आवश्यक तत्वों के समान हैं, जिन्हें सूचित स्थिति से पृथक् किया गया है--अर्थात् उस स्थिति में कुछ ऐसा है जिसे 'सतह' के नाम से पुकारा जा सकता है, तथा कुछ ऐसा जिसे 'गतिशील चरण' कहा जा सकता है और कुछ ऐसा जिसे 'लड़का' कहा जा सकता है। हमारी समस्या यह निश्चित करना है कि समान परिस्थिति में से भिन्न भाषाएं भिन्न तत्वों को कैसे पृथक कर लेती हैं। प्रायः किसी भी भाषा का विवरण देने के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, तथा यह नहीं मान लेना चाहिए कि भाषा की परिस्थितियों के आवश्यक तत्वों का पृथक्-पृथक् रूप से प्रतिनिधित्व करने वाली शब्दिमों तथा रूपिमों को वाक्यों में जोड़ने के लिए दिए गए रूपात्मक नियमों के विवरण से हमें इसका उत्तर मिल चुका है। हमारी परिकल्पित भाषा 'क' वाक्य (1)-(2) (3) को एक रूपात्मक शब्द में प्रकृति तथा प्रत्ययों के बहुसंश्लेषणात्मक संयोजन द्वारा अभिव्यक्त कर सकती है, जैसा प्रायः शाँनी में होता है, या कुछ शब्दों के द्वारा, जिनका विन्यास एक ऐसे वाक्य में किया जा सके, जो अंग्रेजी वाक्य की तरह वियोगात्मक हो। तो भी दोनों स्थितियों में अंग्रेजी से, वास्तविक रूप में, महत्वपूर्ण भिन्नता एक सी ही है, जैसे कि इसने (1)-(2)-(3) तत्वों के विचित्र वर्ग को अलग कर लिया है, तथा हमारे द्वारा की गई, Boy 'लड़का' (कर्त्ता के रूप में) तथा 'ran' 'दौड़ा' के रूप में, पृथकता की अवहेलना की है। अतः जहाँ हम Cleaning (a, gun) with a ramrod गज़ से (बन्दूक) साफ करना' की बात करते हैं, शाँनी वहाँ किसी 'छड़ी' या 'साफ करने की क्रिया' को अलग से नहीं दिखाती, बल्कि खोखले गतिशील शुष्क स्थान का निर्देश यन्त्र की गति के द्वारा करती है। (शाँनी प्रकृतियाँ भाग III, 157) यही तथ्य है जो अंग्रेजो के दृष्टिकोण से शाँनी को इतना विचित्र तथा विस्मयकारी बनाता है, तथा केवल वह तथ्य नहीं कि यह बहुसंश्लेषणात्मक है। एक भाषा बहु-संश्लेषणात्मक हो सकती है, तथा Claen with a ramrod 'गज़ से साफ करना' इस वाक्य को बहुसंश्लेषणात्मक ढंग से कह सकती है, और इस प्रकार अंग्रेजी के ढंग से पारदर्शी भी हो सकती हैं।

उन प्रणालियों की तुलना करने के लिए यह अपेक्षित है कि पहले एक ऐसी प्रणाली से विश्लेषण करने का सामर्थ्य प्राप्त किया जाए जो किसी एक भाषा या भाषाई परिवार की विश्लेषण प्रणाली से स्वतन्त्र हों, तथा वह सभी प्रेक्षकों के लिए समान हो। यह विश्लेषण उद्देश्य-विधेय, कर्तृ-कर्म, विशेषण-विशेष्य आदि के रूप में परिस्थिति का विवरण देने से नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसे पदों के किसी वैज्ञानिक प्रयोग का अभिप्राय यह होता है कि उनका एक परिवर्तनशील अर्थ होगा, जिसकी प्रत्येक विशेष भाषा के लिए अलग परिभाषा होगी; तथा इसमें यह सम्भावना भी सम्मिलित है कि वे पद कुछ भाषाओं के लिए निरर्थक होंगे। यह विश्लेषण सामान्य रूप से प्रचलित प्रकर से लेकर अर्धवैज्ञा-

निकता की कोटि में आने वाले पदो की सहायता से इतनी अच्छी तरह नही किया जा सकता जितना कि परिस्थितियो को पदार्थो, विषयो, क्रियाओ, भावो, अस्तित्वो तथा घटनाओ के रूप में बाँटने के प्रयत्न से सम्भव है। ऐसे पदो का सावधान रूप से प्रयोग सहायक हो सकता है और सम्भवत. अनिवार्य भी है। परन्तु यह याद रखना चाहिए कि अपने अर्थो की परिधियो मे वे पद आधुनिक भ.रोपीय भाषाओ तथा उनकी सहायक गौण विशिष्ट शब्दावली की सृष्टि है, तथा उन भ.षाओ के अनुभव के खण्डीकरण की विशिष्ट प्रणालियो को प्रतिबिम्बित करते है। वे पद भाषाविज्ञान के लिए वैज्ञानिक नही होते, क्योकि मम्भव है कि उनका भौतिकी तथा रसायन-शास्त्र मे भी प्रयोग होता हो। जब वे मनोवैज्ञानिक अनुभव का निर्देश करते है—जैसे विचार, भाव, धारणाये आदि तो इन पदो के प्रयोग के लिये कम सतर्कता की आवश्यकता नही होती, परन्तु कोई ऐसी शक्तिशाली बाधा नही है जो उन्हे 'मनोवृत्यात्मक' या 'रहस्यात्मक' होने से रोक सके। सही अर्थ मे 'रहस्यात्मक' वे निश्चित रूप से नही है, केवल 'शब्दीकरण' है, 'गुरुत्वाकर्षण' gravitation या 'पनीर' से न अच्छे है न बुरे है।

एक बात, जिस पर भागते हुए लडके के दिखाई देने पर सभी प्रेक्षक, कम स कम प्रश्न पूछने के पश्चात् तथा प्रयोगात्मक परीक्षण के पश्चात् सहमत होगे, यह है कि यह खण्डीकृत किया जा सकता है, और वे सभी उसी प्रकार से उसका विभाजन करेंगे। वे सभी इसे (१) एक आकृति या एक रेखाचित्र अधिक या कम गति से युक्त (लड़का), (२) किसी प्रकार की पृष्ठभूमि जिस पर या जिसमे आकृति दिखाई पडती है, मे बाँटेगे। (अर्थात् यदि हम प्रेक्षण की परिभाषा सामान्य चाक्षुष अर्थ मे ले, तो सभी अन्धे प्रेक्षकों को छोड़ सकते है।)

आधुनिक समाकृतिपरक या जेस्टाल्ट मनोविज्ञान के द्वारा की गई खोज से हमे, सभी प्रेक्षको के लिये उनकी भाषाओं अथवा वैज्ञानिक विशिष्ट शब्दावली से निरपेक्ष, एक निर्देशो की तालिका मिलती है, जिसके द्वारा सभी आँखों से देखने योग्य प्रेक्षणीय परिस्थितियो का भी विभाजन करना, तथा विवरण देना सम्भव है। खोज यह है, कि अबोध शैशव काल पार करने वाले सभी सामान्य लोगो के लिये चाक्षुष बोध मौलिक रूप से समान है, तथा ऐसे निश्चित नियमो के अनुरूप है जिनकी बहुत बडी सख्या सुप्रसिद्ध है। यहाँ इन नियमो का उल्लेख मात्र करने से कुछ अधिक कहना असम्भव है, परन्तु ये स्पष्ट रूप से घोषित करते है कि चाक्षुष बोध का मौलिक तथ्य आकृति तथा भूमि के सम्बन्ध मे निहित है; बोध मुख्यत: रूप-रेखाओ के रूप मे होता है, जिनका वैषम्य न्यूनाधिक भूमियों, क्षेत्रों, तथा रूपरेखाओं की भराई से है, और यह कि गति या क्रिया का बोध समाकृतिपरक प्रकार का है, या जो कम से कम एक अस्पष्ट रूपरेखाओ के गुण वाले बोध से सम्बन्धित है।

यह कहना कि तथ्य सभी प्रेक्षको के लिये तत्वत: समान होते है, इस बात से इन्कार करना नहीं है कि उनमे भी अपनी त्रुटियाँ तथा विशिष्ट भेद होते हैं,

परन्तु ये अपेक्षाकृत गौण होते हैं। मस्तिष्क की क्षतियाँ तथा दृष्टिदोष विकार उत्पन्न करते हैं, और विशेष प्रवीणता या मानसिक प्रयत्न झुकावों को पुनः व्यवस्थित कर सकते हैं और कभी कभी कुछ वस्तुओं के आकृति तथा भूमि के परस्पर कार्यों को बदल भी सकते हैं--जैसे कि जब कोई दृढ़ इच्छा करे तो किनारों की ओर से देखा जाने पर एक 'घन' का रेखाचित्र तीन व्यासार्धों वाले षट्कोण की तरह दिखाई दे सकता है। वर्णान्धता तथा वर्णों के प्रति असमान संवेदनशीलता इसी प्रकार के सीमान्तीय वैभिन्य हैं। आकार की रूप में भी सीमान्तीय वैभिन्नय होता है, जैसे कि चन्द्रमा किसी व्यक्ति को (Nickel) निकल के आकार का दिखाई देता है, तो दूसरे को घर जितना बड़ा, तो भी चक्षुपटल (ratina) पर सदा एक हाथ की दूरी पर पैन्सिल से भी छोटे रूप में अन्तरित हो जाता है। जब आकार की बात होती है तो विभिन्नताएं और अधिक कम तथा हल्की पड़ जाती हैं। ये सब विभिन्नताएं ज्ञात नियमों के ढांचे में काम करती हैं; अतः दृष्ट सामग्री के मानकीय विवरण में बाधा उत्पन्न नहीं करती। तथ्य थोड़े से भिन्न हो सकते हैं--परन्तु नियम सबके लिए समान होते हैं। यदि बोधात्मक प्रभाव ऐसे हैं कि एक सामान्य व्यक्ति को एक निश्चित रूपरेखा दिखाते हैं, तो अन्य सभी सामान्य व्यक्तियों को भी वैसी ही रूपरेखा दिखायेंगे। उदाहरणार्थ, सभी लोग सप्तर्षि तारों को उस रूपरेखा के रूप में देखते हैं जिसे हम कलछी (dipper) की आकृति वाला कहते हैं। चाहे वे इसे कलछी (dipper) न कहते हों, या उनकी संस्कृति में ऐसा कोई बर्तन न हो, और, यद्यपि यह सत्य है कि इन सितारों को इस रूपरेखा अथवा अन्य किसी रूपरेखा में जोड़नेवाली कोई रेखाएं नहीं हैं।

परन्तु दृष्टि के नियम अचाक्षुष अनुभव के लिए निर्देश तालिका कैसे देते हैं? नेति नेति प्रक्रिया के द्वारा। प्रत्येक उस वस्तु के विषय में, जो स्थान (Space) घेरती है, यह सिद्ध किया जा सकता है कि वे सीधे या किसी अन्य ढंग से जानी जा सकती है। प्रत्येक अदृष्ट वस्तु 'अस्थानी' वैशिष्ट्य वाली होती है, (तथा इसका विपर्यय भी सत्य है), तथा अनुभवकर्त्ता को यह तात्कालिक प्रतीत होती है। केवल स्पर्श ही दृष्ट सामग्री के साथ कुछ कुछ मिलता है, और जब स्पर्श से आकार, रूपरेखा, और गठन का पता चलता है तो यह परोक्ष रूप से चाक्षुष ही है। चाक्षुष अनुभव प्रक्षिप्त किया जाता है तथा 'स्थान' की रचना करता है, या वह वस्तु बनाता है जिसे हम प्रेक्षक का बाह्य क्षेत्र कहना चाहेंगे। अचाक्षुष अनुभव अन्तर्क्षिप्त होता है, तथा यह, वह वस्तु बनाता है जिसे जेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों का अनुसरण करते हुए हम, अहं-क्षेत्र, या अहं-सम्बन्धी क्षेत्र कहेंगे; क्योंकि प्रेक्षक, या अहम् ऐसा अनुभव करता है, मानो वह इन संवेदनाओं और चेतनाओं के साथ अकेला है। अतः, किसी विशेष अनुभव का निर्देश अहं-सम्बन्धी क्षेत्र में इसलिए करते हैं, क्योंकि यह चाक्षुष क्षेत्र का विषय नहीं है, न ही इसका सम्बन्ध ऐसे उभयमुखी सीमान्त प्रदेश से है, जैसे कि "संवेदना" को प्रक्षक

के शरीर के अन्दर दोनो विधियो से जाना जा सकता है; अत हम इसे इस तरह वर्गीकृत कर रहे है जैसे सभी प्रेक्षक एक बार इस प्रभेद की प्रकृति को समझ जाने पर इसका वर्गीकरण अपनी भाषा की अपेक्षा किए बिना करते है। इसके अतिरिक्त अह सम्बन्धी क्षेत्र के अपने इन्द्रिय-गुण, लय, आदि के जेस्टाल्ट नियम है, जो सार्वभौमिक है। किसी सुनने, चखने, या सूघने की शब्दिम द्वारा निर्दिष्ट पदार्थ को, चिन्तन, भावनाए, इत्यादि की शब्दिमो के निर्दिष्ट पदार्थो के साथ, बिना झिझक अहम् सम्बन्धी क्षेत्रो मे वर्गीकृत कर सकते है, तथा इनका क्षेत्र, रूपरेखा या गति के अनुभव का निर्देश करने वाली शब्दिम के क्षेत्र से पृथक् होगा। प्रकाश और अन्धकार का भेद, तथा 'देखने' का सकेतित-पदार्थ भी (परन्तु कुछ देखा जाता है उसका सकेतित पदार्थ नही) या तो सीमावर्ती क्षेत्र का, या अहं सम्बन्धी क्षेत्र का विषय है, क्योकि सवेदना गुण अन्तर्क्षिप्त किया जाता है, यद्यपि आकृति-क्षेत्र गुण प्रक्षिप्त किया जाता है। 'कुछ कहने' का सकेतित पदार्थ भी अह सम्बन्धी क्षेत्र का है, क्योकि प्रेक्षक इसमे से एक तत्व को, अपने सुनने के, या ध्वनि के अह सम्बन्धी क्षेत्र के, समकक्ष बनाता हुआ, अपनी तथा दूसरे लोगो की बोली : दोनों को ही इसमें अन्तर्क्षिप्त करता है। 'अधिकार मे रखने' या केवल 'रखने' का सकेतित पदार्थ भी अह सम्बन्धी क्षेत्र का है।

सकेतित पदार्थो का वर्गीकरण करने का यह नियम अभ.ष.ई है, तथा अर्थ-विज्ञान के साधारण अर्थो मे 'अन'-अर्थ-विषयक है। बाह्य, अथवा अहं सम्बन्धी क्षेत्र मे अनुभव की एक 'पृथक् इकाई, जैसे—एक आकृति, या शोर, अर्थ नही है। फिर भी कभी कभी किसी एक भाषा मे रूपिमो तथा उनके अर्थगत परिणमो के समूहो को वर्गीकृत करने के लिए एक सिद्धान्त हो सकता है, जो इस सार्वभौमिक सिद्धान्त से समन्वित होता है। अतः, अग्रेजी भ.षा मे, कर्त्ता के 'अह-क्षेत्र के अनुभव' का निर्देश करने वाली क्रियाए, क्षणिक वर्तमान तथ्य के लिए साधारण वर्तमानकाल का प्रयोग करती है, वर्तमान अपूर्णकालिक काल का नही। अन्य क्रियाएं वर्तमान अपूर्णकालिक काल का प्रयोग या तो क्षणिक या सतत वर्तमान तथ्य के लिए करती हैं, तथा साधारण वर्तमान काल का प्रयोग (Here he comes) जैसे विशेष मुहावरो (या विशिष्ट बोली) को छोडकर, प्रथापरक या रूढ काल पक्ष के लिए करती है। विदेशी लोग अग्रेजी सीखते समय यह सब नही जानते अत: 'I am hearing you, he is seeing you' ऐसा कहते है। अग्रेजी भाषाभाषी 'I hear you,' 'he sees it,' 'he feels sick,' 'I say that,' 'I think that,' ऐसा कहते है, परन्तु इसके विपरीत, 'I am working' कहते है, ('I work' नही), 'the boy is running' कहते है, ('the boy runs' नही कहते, जो कि प्रथापरक है, जैसे the boy runs whenever—)।[1]

---

1. cf. 'he is feeling (outlining) it (वह इसका अनुभव कर रहा है, (रूपरेखा) बना रहा है) बाह्य क्षेत्र का चाक्षुष स्पर्श; तथा he feels it (वह इसका अनुभव करता है) अहं सम्बन्धी 'क्षेत्र संवेदना।

संकेतित पदार्थों तथा स्थितियों का विवरण देने की इस जेस्टाल्ट पद्धति को, बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण वाली, जैसे अंग्रेजी, होपी, अज्तेक और माया आदि भाषाओं के समस्या-जनक विषयों को समझने के लिए, मैंने इतना अधिक सहायक पाया, कि मैंने इसे शॉनी पर लागू करने का निर्णय किया। मैं शॉनी या अन्य किसी अल्गोन्कियन भाषा के विषय में कुछ नहीं जानता था। मुझे थोड़ा सा ज्ञान Voegelin द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थमाला तथा ग्रन्थमाला के अवशिष्ट भाग को पूरा करने के लिए उन पाण्डुलिपियों से प्राप्त हुआ, जो उसके शॉनी तथा मियामी भाषा के शब्दकोष को पूरा करेंगी। परिणाम अधोलिखित हैं, तथा इसके विषय में अल्गोन्की भाषाविद् (Algonkianists) ही बता सकते हैं कि उन परिणामों का कोई महत्व या उपयोग है या नहीं।

शॉनी में प्रातिपदिकों की समास रचना पर मोटे रूप से एक काफी साधारण सा सामान्य नियम लागू होता है। इसके प्रयोग की तुलना मोटे रूप से अंग्रेजी के संज्ञा उपवाक्य रचना के नियम से की जा सकती है: विशेषण, विशेष्य से पहले आता है। कोई भी नियम अपवादरहित नहीं है, जैसे अंग्रेजी में 'brick building' यह उदाहरण उस विशिष्ट स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ सामान्य नियम लागू होता है, परन्तु 'buildings brick except for frame porches' इस अंश में यह अन्य नियमों को असिद्ध करने वाले विशेष नियमों में से एक है। अंग्रेजी की रचना करना सीखने वाले आधुनिक यूरोपियन के लिए अंग्रेजी का यह नियम एक अच्छा साधारण सा पथप्रदर्शक है; क्योंकि उसकी अपनी भाषा पर्याप्त रूप से इतनी समान है कि वह विशेषण तथा विशेष्य का अर्थ समझता है, उसकी भाषा भी अनुभव का वर्गीकरण करती है, और अधिक से अधिक यू ही फ्रान्सीसी भाषा की तरह केवल क्रम को उलट देती है।[2] विशेषण और विशेष्य आदि की शब्दशैली शॉनी की उन प्रातिपदिक समास रचनाओं पर लागू नहीं होती जो क्रिया में परिणमित होती हैं, जैसा कि वे प्रायः होती हैं। शॉनी के लिए सामान्य सा नियम यह है (अभिभावी नियमों को छोड़कर) कि आकृति बाह्य-क्षेत्र से पहले आती है, अधिक आकृति वाला कम आकृति वाले से पहले आता है—परन्तु अहं सम्बन्धी क्षेत्र सामान्यतः इन सबसे पहले आता है। मुख्य अभिभावी नियम ये हैं —

---

2. तथापि कभी कभी अंग्रेजी न बोलने वाला जेस्टाल्ट गलती कर देता है, जैसे कि एक मैक्सिकन ने मेरे लिए desierto de los leones का अनुवाद lion desert किया। सामान्य अंग्रेजी भाषा में 'lion wilderness' या 'fish ocean' का प्रयोग नहीं होता। इसका कारण अन्य नियमों को असिद्ध करने वाला एक कारण है, कि एक छोटी सी आकृति सारे बाह्य-क्षेत्र के विषय की विशेषक नहीं बनती, या साधारण बोली में, 'एक छोटा सा विषय सभी बाह्य पदार्थों का विशेषक नहीं हो सकता।'

(1) अस्पष्ट आकृति के प्रातिपदिकों का समूह (अस्पष्ट गति, सरचना, आकार आदि) सबसे पहले आता है; (2) सामान्य नियम के उल्लघन पर भी अनारम्भिक प्रातिपदिक किसी तरह पहले रखे जाने चाहिए—चाहें वे अपने से पहले आने वाले से कम आकृति वाले होने की बात पूरी करते है या नही, (3) जब परिणाम एक सज्ञा हो (परन्तु सज्ञा की तरह से प्रयुक्त बहुव्रीही या वाक्य नही) तो नियम उलट जाता है तथा भूमि या क्षेत्र सम्बन्धी विषय, आकृति वाले से पहले आते है, (4) दो अग जिनके समस्तपद पीछे छोडे गए नियमो के अनुसार बनाए जाते है, उन्हे एक साथ रखा जा सकता है, जो सम्पूर्ण रचना के अन्तर्गत कभी कभी अनियमित अनुक्रमो में परिणमित होते है; (5) इस प्रकार के अग कभी कभी प्रातिपदिक की तरह प्रयुक्त होते है।

धातुओं के निर्देश के विवरण इस प्रकार होगे :

Svf (Special stem of vague figure) अस्पष्ट आकृति के विशेष प्रातिपदिक (प्राय: अस्पष्ट, गति, दिशा, या तल अथवा पिण्ड की लोच, या रचना, आकार इत्यादि के) ।

ef-(egoic field) अहं सम्बन्धी क्षेत्र निर्देश ।

f-(figure)—यह समूह अन्यो की अपेक्षा रूपरेखा तथा स्थान वितरण को सबसे अधिक अभिव्यक्त करता है । यह आवश्यक रूप से गति को सूचित नहीं करता परन्तु गति उसमें वहां विद्यमान हो सकती है, और एक (f) प्रातिपदिक अधिक आकृतिवाले (f) प्रातिपदिक के बाद प्रयुक्त किया जा सकता है; कुछ अधिक बाह्य क्षेत्र; भूमि, या बाद वाले प्रातिपदिक के आपूरक गुणों का द्योतन करने के लिए ।

frg (figure as relative grounds). सापेक्ष भूमि के रूप में आकृति, जैसा कि पूर्ववर्ती वर्णन में, प्राय: एक शारीरिक अवयव ।

mf.(movoment figure) गति–आकृति, गति की एक विशेष रूप-रेखा की 'कल्पना' या उसकी आकृति ।

fcm (figure containing movement) आकृति जिसके अन्दर गति है, एक अस्पष्ट रूपरेखा वाला क्षेत्र जो अपेक्षाकृत स्थिर है, परन्तु जिसके अन्तर्गत गति है या "गति का विराम होने वाला है)।"

xf (external field or ground) बाह्य क्षेत्र अथवा भूमि, जिसमें आकृतिपरक अथवा रूपरेखीय गुण न्यूनतम है ।

i (instrumental) (करणात्मक) तत्वों का एक छोटा विशिष्ट वर्ग । यह अवस्थान का सामान्य क्रम है, अर्थात् svf, ef, f, frg, mf, fcm, i यद्यपि frg, mf, fcm के सापेक्ष क्रम के विषय मे कोई दृढ नियम नही है। प्रत्ययो के विषय मे बताया जायेगा—

S (Subject formative of), कर्त्ता (का प्रत्यय) ।

O (Object /transitive) कर्म (विषय) और सकर्मक (कर्म या सकर्मक)

t (Transitive element) सकर्मक तत्व ।
m (miscellaneous formatives) विविध प्रत्यय ।
मोटे अर्थों मे frg, , mf, fcm, xf का समूह एक है, और कभी कभी वही प्रातिपदिक इनमे से किसी भी स्थिति मे आ सकता है, यदि इससे पहले या बाद मे प्रातिपदिक इस प्रकार से आता है, कि घटती हुई आकृतिपरक गुण का अनुक्रम तथा बढ़ती हुई भूमि या क्षेत्र गुण की प्रगति कार्यान्वित हो रही है।

Svf प्रकृतियो के उदाहरण—pa?– जाना, उधर घूमना, pɪak सख्त, दृढ, असम्बद्ध रीति से गति, tep उपार्जित करना, 'प्राप्त करना' kt 'बडा, उत्तम' ka'k–'रूखा, सूखा,' laakeet "धीरे से, आसानी से, शीघ्रता से'; laaśɪwe 'नीचे, परे, ऊपर", lo? θɜe "बाहर जाना, पर मे से", liɪl विभिन्नता।

ef प्रकृतियों के उदाहरण : paʔ pa 'खट खट की ध्वनि' (ef क्योकि 'एक ध्वनि'); petśkw घृणा, विमुखता, अरुचि; petoak (y) 'कष्ट, कण्टक (उपद्रव), जटिल, दुर्बोध, भ्रान्त, उत्तेजित; pt– 'आकस्मिक, अनभिप्रेत, भ्रान्तिपूर्ण, अशुद्ध, teepwe– 'सच्चाई' tepat– 'सन्तोषजनक' cl' c 'भय, kɪś 'गरम, तप्त, kɪɪśwe 'अभिज्ञता, चेतना' katawɪ–'योग्यता', katow–'पूछना, माँगना' । lalalwee तीव्रध्वनि खड़खड़ाहट, शोर miɪm' kaw 'खोजा हुआ, स्मरण किया हुआ' wiyakowee–क्रोध, waasɪ–अभिप्रेत; halan–'सूचना देता हुआ'। eele–'विचार'।

(f-xf) के उदाहरण, प्रथम कोटि के वर्ग के उदाहरण जो मुख्यतया (f) के रूप मे कार्य करते है, वे इस प्रकार है :

pap–	'कमरे की तरह की आकृति';
pat–	'आर्द्र स्थान, या पिण्ड',
pep't–	'बहुत कमजोर सहारे पर टिकी समाकृति';
petekw–	'वर्तुलीकृत, चारो ओर, लुढकना';
petakw–	'आवरण, शिखर, ऊपर',
pɪɪt–	'आन्तरिक रूपरेखा, अन्दर की ओर, छिद्र';
pɪ taw–	'मध्याकृति';
pakw–	'पौधे का तरह का, पत्ते की आकृति वाला',
peekw–	'शुष्कस्थान';
poʔkw–	'गुच्छ गुल्मीकृत';
po'k(y)–	'टूटा हुआ, भग्नावस्था',
paśk(y)–	'किसी विवरद्वार से प्रकट होना';
pośkw–	'अनियमित अश, आधा किया हुआ, टूटा हुआ';
tepilahɪ–	'सीधी रूपरेखा';
tepet(w)–	'इकट्ठे, एक समगह मे';
cce–	'अनुरूप युग्म या योग, समान, सम',

kip–	'ढका हुआ, बन्द किया हुआ';
kotekwı–	'मोडा, मरोड़ना, घुमाना,'
kakaanwı–	'लम्बा, (लम्बी रूपरेखा)'
kooky–	'पानी मे डूबा हुआ';
saapw–	'अन्दर और बाहर, आरपार (के पार से)';
skote–	'अग्नि (आग्नेय आकृति)'
laa–	'क्षेत्र का बीच, (क्षेत्र के बीचो बीच')';
leep–	'नीचे से पतला होते चले जाना',
lı?ıpık–	'स्थिरीभूत तरलपदार्थ',
l'pw–	'सकुचित, कूटा हुआ (कूटकर दबाया हुआ)',
laka'kwa–	'कमानीदार रूपरेखा', धोने के लिए फलक की तरह या तालु की तरह';
liiky–	'मिट्टी या राख से ढका हुआ';
lekw–	'उघडा हुआ, (विखण्डित, अलग, पृथक)';
le' θawaa–	'काँटेदार (द्विशाखित') ;
laal–	'नीचे लटकता हुआ, से परे';
lel'ky–	'फटी हुई रूपरेखा या फटा हुआ कपड़ा आदि';
waawıyaa–	'दायरा, वृत्त'

f.g के रूप मे कार्य करने वाली कुछ f प्रकृतियाँ :

(–)lec	'अगुलि, हाथ, अगुलियो मे, हाथ के ऊपर';
eçe–	'पेट, शरीर (वास्तव मे शरीर और शरीर के अगो के सभी पद प्राय: frg होने है)';
a?kwı–	'वनस्पति पेडपौधे, जगल"
–aalaka	'छिद्र खोखलापन';
–kamekwı	'घर, घर मे'
–šee–	'वस्त्र, 'वस्त्राभरण'
–wale	'पीठ की पट्टी';
–api	'बैठी हुई आकृति', बैठी हुई;

कुछ mf प्रकृतियाँ ये है :

peteki	'काल अथवा दिक् मे प्रत्यावर्तन, (गति या मार्ग);'
–pho	'भागते हुए उठाना';
ptoo–	'भागना (भागते हुए);
ci p	'अन्दर पहुचाना, गुप्तरूप से पहुंचाना';
çı? çıp–	'हिलना (हिलता हुआ)',
–?tan	'बहता हुआ, तैरता हुआ',
–ke–	'सामान्य शारीरिक गति',

—eśka—	'शारीरिक गति को प्रारम्भ करना';
—eka	'नाचता हुआ';
—kawi	'टपकता हुआ';
—?θa	'उड़ता हुआ';
loop—	'झूलता हुआ',
lek—	'विलीन होता हुआ, पिघलता हुआ';
miil—	'देता हुआ';
hee—	'जाता हुआ (जाने वाला)';
?θen	'गतिशील वस्तु से टूटकर अलग होता हुआ';

कुछ fcm प्रकृतियाँ हैं :—

pi?te—	'झागवाला (झाग उगलने वाला);
pootəwe	'जलती हुई लकड़ी',
—etekwi	'सरिता';
kapee—	'नदी पार करना';
kalawi—	'बोलता हुआ, (आदमी, बोलता हुआ)';
kon—	'निगलता हुआ',
kwaap—	'पानी से उठाता हुआ';
kwaśkw	'प्रतिक्षिप्त होना, ठिठकते हुए';
kwke—	'पानी मे काटे की गति;'
—a—	'दाँतो की गति,'
?śi-?śin	'शान्त होना';
—laa—	'उबलता हुआ, (उबलने वाला)';

व्युत्पत. 'Xf' रूप मे कार्य करने वाली प्रकृतियो के उदाहरण :

—piiwe	'बाल, पख',
—aapo	'तरल पदार्थ',
—pki	'समतल पर बिखरा हुआ, समतल भूमि';
tepki	'दलदल वाला, दलदल से युक्त भूभाग';
tepe?ki	'रात्रि',
—taskwi	'पेड पौधे';
—la	'रग',
—kami	'पानी का विस्तार',
—? ki	'विस्तार, आधिक्य', .
—? kwatwi	'आकाश',
—ɩwaa	'स्थान, कमरा';
—? skw—atwi	जडी बूटिया',
aəm—	मिटटी, भूमि',

—? ho— 'जल, गीलापन',
—? śk (y) 'नरमी, तनुता'

हाथ, पाव, यन्त्र, अग्नि आदि से व्यापार का सकेत करने वाले बहुत ही सामान्य i प्रकृतियो, (करण) के छोटे से वर्ग के उदाहरणों की कोई आवश्कता नही है।

सरचना के कुछ उदाहरणो की व्याख्या विस्तार से की जा सकती है। शॉनी प्रातिपदिकों के भाग III, 289 मे f प्रकार के प्रातिपदिक kıp-, kıpw-, के अन्तर्गत अवरोध की, या किसी ढके हुए पदार्थ की, रूपरेखा को भूमि पर, किसी विशेप स्थान पर रखा जाता है, या चित्रित किया जाता है, या (क) मृगछाला, (ख) मार्ग, (ग) आखो के क्षेत्र, (घ) हाथ की गति के साथ आखो के क्षेत्र के वातावरण मे रखा जाता है, जैसे (—kıp ıkwee-n,-f-frg-ı), गुदा, क्षेत्र, मुह, कान इत्यादि मे भी । अथवा "दलदलों के बीच" इत्यादि' कथन पर विचार कीजिए। हमारा शब्दीकरण का अपना ढंग यह है कि हम अनुभूति मे से उस आवश्यक तत्व को अलग कर लेते हैं जिसे हम विशिष्ट अग्रेजी सज्ञा के रूप मे, 'swamp' कहते है । क्योकि ऐसी सज्ञा, सभी सज्ञाओ के लिए तैयार किये गए व्याकरणिक साचे मे समा जाती है, तथा व्यक्तिगत पार्थक्य, एकत्व, अनेकत्व, उपपद, तथा पूर्वसर्ग के रूप मे प्रयोग किए जाने के लिए 'उप-युक्तता' से युक्त रूप मे निर्दिष्ट की गई एक विशिष्ट "वस्तु" के रूप मे ग्रहण की जाती है। 'दलदल' और 'तितली' के प्रत्यक्ष-बोधात्मक अनुभव मे बहुत अधिक अन्तर होने पर भी उनके भाषाई व्यवहार मे बहुत थोडा अन्तर है। शॉनी मे हमे शब्दी-करण के अग्रेजी ढग को भूलना पडता है, तथा दृश्यमान स्थिति का आश्रय लेना पडता है। हमारे पूर्वसर्ग 'among' का सकेतित-पदार्थ, रूपरेखा के अधिकाश गुण से युक्त उस चित्र का भाग वास्तविक रूप मे बन जाता है जो ऐसे अनिश्चित क्षेत्र के बीच एक सीमित तथा सुनिश्चित स्थान है—जो "दलदलपने" का क्षेत्र है। चित्र यह है, मानो मोटे रूप से खीचा गया, जिसमे आकृतिपरक तत्व laa 'क्षेत्र के बीच' को सबसे पहले रखा गया, और उसके बाद इसकी भूमि, या पृष्ठभूमि tepkı "दलदलवाला भूभाग" को रखा, laa-tee-kı (X-ef) दलदलो के बीच स्थान, दलदल मे —(भाग II 137)।

भाग II, 157, मे "मैं बन्दूक को छडी घुमाकर साफ करता हू, या सुखाता हू"—हमारी इस अभिव्यक्ति के लिए वहाँ nı-peekw-aalak-h-a, s-f-frgı-o है। सरचना का आकृतिपरक केन्द्र 'सूखा' या 'साफ स्थान' है (peekw) जो प्रातिपदिक aalak-,frg, के द्वारा छिद्र या खोखलेपन के वातावरण मे रखा गया है। एक आकृति, जो प्रथम आकृति के लिए सापेक्ष भूमि, या क्षेत्र के रूप मे काम करती है, तब आकृतिपरक केन्द्र को करण कारक -h- 'यन्त्र की गति के द्वारा' गतिशील बनाता है, या गति प्रदान करता है, और -a प्रत्यय के द्वारा जड पदार्थ के साथ 'सकर्मक' के रूप मे सूचित किया जाता है।

भाग II, 143 में f- प्रातिपदिक cee- संरचना, अनुरूप बनाए गए युग्म की समाकृति, या अनुरूप इकाइयों के लिए आधारभूत रूपरेखा स्थापित करती है। अनुरूप किए गए जोडों के लिए पूरक गुण के आवश्यक तत्व उन xf प्रकृतियों द्वारा जो 'विशेष-प्रकार', सामान्य रूप रंग, वर्ण का महत्व बताती है, या frg प्रकृति द्वारा (व्यक्तियों) या xf-xf द्वारा, जैसे 'रंग+शरीर के बाल', और 'रंग+पानी' के द्वारा प्रस्तुत किए जाते है। अत. इस प्रकार के शब्दो का अर्थ है, 'उसी प्रकार का, समान दिखाई देने वाला, उसी रंग का' आदि।

भाग I, 69 ni-Ppeθ-k-a, s-f-mf-o "मैं इसे ऊपर उठाने के लिए इसके सहारे झुकता हूँ"—मे आश्रय की आधारभूत रूपरेखा, जो दृश्य रूप से प्राय: भट्टी सी T या एक नीचे की ओर मुख वाले lambda अक्षर के समान है, Ppeθ (Ppeʔt) द्वारा दी जाती है, तथा गतिशील सचेत शरीर का अस्पष्ट आकृतिपरक गुण, mf प्रातिपादिक– k 'शारीरिक गति' के द्वारा दिया जाता है। ni-Ppec-śi-n-a, s-f-fem-t-o "मैं उसे गिरने से बचाने के लिए वहाँ रखता हू (किसी आधार पर)" इस मे दूसरी आकृति śi गति की एक अस्पष्ट रूप रेखा जो एक क्षेत्र के अन्दर स्थिर होती जा रही है, स्थिर होती है, आधारभूत आश्रय-रूप-रेखा मे या उसके ऊपर (आपूरक के रूप मे), तथा सजीव पदार्थ के साथ सकर्मक बना दी जाती है।

प्रातिपादिको की समास-रचना के और अधिक उदाहरण इस परिशिष्ट के अन्त मे एक सूची के अन्दर बहुत सक्षेप मे विश्लेपित किए गए है। सज्ञा समास-रचना, तथा प्रकृति समास-रचना के विषय मे अभी बताना शेष है, जो यहाँ प्रकृति समास रचना के आधारभूत नियम पर अभिभावी समझे जाते है। जब समास-रचना का परिणाम सज्ञा होता है तो नियम उलट लिया जाता है क्षेत्र या भूमि आकृति से पहले आते है, कम आकृतिपरक अधिक आकृतिपरक से पहले आता है। क्योंकि अग्रेजी में विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध के सामान्य प्रकार में भी सामान्यतया ऐसा ही होता है, शॉनी सज्ञा को प्राय: (जो क्रिया के समान नही है) ऐसे सम्बन्ध के रूप में समझा जा सकता है, उदाहरणार्थ, भाग III, 290 kopeleko-miyeewi, xf-f,, "लोहा-सडक (रेल-सडक)"। पुन ,जैसे कि अग्रेजी मे विशेष्य पद या आकृति के साथ मानसिक रूप से सम्बद्ध वस्तु इससे पहले आती है, तथा इस प्रकार के विश्लेपण मे स्मृति के कारण यह वक्ता के अह सम्बन्धी क्षेत्र का आधार समझी जाती है अत. efm कही जाती है। इस प्रकार भाग II, 139 takhwaan-ikaawe, ef.n-f, रोटी नृत्य (141) taamin-aapo, 'गेहू तरल' (व्हिस्की), (पृ० 143) cipa-eene, cfm-f, मद्यसार मधुमक्खी (पृ० 145), caki-pkweeoa, frg-f, "छोटी औरते" जहाँ अस्पष्ट आकृति, आकार की मात्रा का बोध, अधिक निश्चित रूपरेखा से पहले आती है।

दो समस्त प्रातिपदिक एक दूसरे के साथ समस्तपद बनाए जा सकते है, परन्तु इनके क्रम पर यदि कोई नियम लागू होता है तो कौन-सा, यह बताने मे मै असमर्थ

हू । साधारण प्र.तिपदिक–समासो की बडी सख्या की तुलना मे उदाहरण थोड़े प्रतीत होते है। इस प्रकार भ.ग I, 67 में एक रूप है जिसका शायद waasinitaś:-palenaweewi-ci प्रातिपदिक-प्र तिपदिक—s के रूप मे विश्लेषण किया जा सकता है । प्रथम प्रातिपदिक होगा waa-i-nitaśi-ef-f "किसी स्थान पर जानबूझ कर होना," और दूसरा pa?lenaweewi, svf-ef "उधर जाता हुआ, रहता हुआ।" दूसरी ओर शायद यहाँ हमारे पास एक प्र.तिपदिक है जिससे पहले दो प्रकृतिया आती है।

यह सम्भव है कि शॉनी मे दो प्रकार के शब्दिम है प्रकृति और प्रातिपदिक (stems and themes) और दो प्रकार की समास रचना की विधियाँ है, एक प्रकृतियो के लिए और दूसरी प्र ातिपदिको के लिए। ऐसे सिद्ध.न्त के अनुसार प्रकृति-समासो मे भूमि से पहले आकृति का सिद्धान्त प्रयुक्त होगा और उसका परिणाम एक क्रियात्मक प्रातिपदिक होगा, जो यदि शब्द के अन्त मे हो तो इसे क्रिया या सामान्य वाक्य वनाता है, और अन्यत्र एक रूढवाक्य वनाता है जिसका प्रयोग सज्ञा की तरह होता है जैसे (बहुव्रीहि रूप) प्रातिपदिक समास आकृति से पहले भूमि वाले सिद्धान्त का प्रयोग करते हैं और इस रचना का परिणाम वही होगा जो अन्तिम प्र.तिपदिक है, क्रिया या संज्ञा। तव यह प्रकट होगा कि कुछ शब्दिम मे, यद्यपि विश्लेपण योग्य नही है, सदा प्रातिपदिक है, जैसे मूलरूप मे सज्ञा शब्दिम तथा svf और cf शब्दिम। ये svf और ef तत्व प्रातिपदिक होने के कारण कम आकृतिपरक के रूप में-xi क्रियात्मक शब्दिमो से पहले आते है। निस्सन्देह, यह वहुत ही अनन्तिम निष्कर्ष है।

इस परिशिष्ट मे व्यवहृत कुछ भी इस वात की व्याख्या नही कर सकता कि मातृभाषी किस प्रकृति को सर्वाधिक व्यापक, अर्थात् अधिक प्रयुक्त होने वाला समझता है। यह प्रश्न समास रचना की पद्धति से विलकुल अलग है। मैं एक अनुमान लगाने का साहस करता हू कि यह किसी सयोग मे विविध प्रातिपदिको के सादृश्यात्मक दवाव की मात्रा पर निर्भर कर सकता है। कुछ प्रातिपदिक विषय की प्रकृति के अनुसार, अन्यो की अपेक्षा, सयोगो के विषय मे अधिक उत्पादक हो सकते है। ऐसा प्रातिपदिक जिसके विचाराधीन सयोग की सवसे अधिक सख्या मे निकटतम समरूप होते है, उस प्रातिपदिक को एक मातृभाषी एक केन्द्रकीय प्रातिपदिक के रूप मे मान सकता है।

अव यहाँ नीचे भाग I, II, III, से विश्लेषित सयोगो की एक सूची दी जा रही है, जिसमे पहले पृष्ठ सख्या तथा वाद मे सूत्र तथा अनुवाद दिया गया है जिसे तकनीक की व्याख्या करने के लिए प्राय: वोजेलिन (Voegelin) के अनुवाद से लिया गया है। यहाँ, अर्थगत परिणामो पर यथावसर टिप्पणिया भी दी गई है :

Part I, 67 pa-kwke, svf-fcm "वह पानी के स्थान पर उसमे काटे को घुमाता हुआ गया, वह मछली का शिकार करने गया।"

67. ni-pá-pem-θe?-to, ε-svf-f-mf o "मै इसे (चारो ओर) हस्तान्तरित करता हूँ (दृढ सकल्प)।"

67. ye?-pa?-nekot-θee-θı-ya, m-svf-f-mf-m-s "जब मैं वहा अकेला जाता हू।"

68. papı-śvaa-wı,f-xf-s "कमरे जैसे अधिवास- की आकृति, सामान्य स्पेस मे घटित होती है; इसमे काफी स्थान है।"

69. nı-pat-śk-α?-m-a, s-f-xf-fcm-t-o "मैंने उसे चूमा (f आर्द्र-स्थान, xf सामान्य कोमलता, fcm ओष्ठ-गति, प्रकृति–ε– को fcm कहा जा सकता है पर शायद ı भी है)

69. nı-pat-śk-a?h-w-a, s-f-xf-ı-t-o 'मैंने उसे कीचड से गीला कर दिया (1, गति यत्र की या उपकरण की गति)।"

70. nı-peteko-n-a, s-f-ı-o "मै इसे लपेटता हू।"

70. peteko-će-śka, f-frg-mf "उसने अपने शरीर को दुगुना किया"। (शरीर या पेट के सापेक्ष क्षेत्र मे वलयित रूपरेखा, सामान्य शारीरिक गति)।

70 ta?petekısı-mıım ? kaweele-ta-m-akwe, प्रातिपदिक-प्रातिपदिक -t-o-s<ta?-peteki-śı, svf-mf-m "उस स्थान पर पुन. लौटना, mıım? kaw-eele, ef-ef", "स्मरण करना।"

71. ni-petśkw-eele-m-a, s-ef-ef-t-o "मैं उससे घृणा करता हू।"

71 petθakı-lee-θa, ef-f-m (व्यक्ति जो) बाधा है।

71 nı-petako-l-aw-a, s-f-mf-t-o "मैंने उसके ऊपर अस्त्रप्रहार किया" (अध्यारोपण की रूपरेखा, अस्त्र की गति)।

71. nı-pt-a-m—a, s-ef-fcm-t-o "मैने उमे सयोगवश काट खाया।"

72 pııć-θe-?θen-wi,-f-mf-fcm-s "यह टूट पडती है तथा अन्दर गिर पडती है।"

72 pııćı-leće-?śın-wa, f-frg-fcm-s "उसने अपना हाथ अन्दर डाल दिया।"

72 ni-pııćı-mııl-a, s-f-mf-o "यह मैने उसे सूराख मे से दिया।"

72 pııt-alwa, f-frg (आन्तरिकता चित्र, गोली भरने की) = "गोली रखने की बोरी।"

72. pı? teewı-laate, fcm-fcm "सापेक्ष आधार के रूप मे" उबलते समय यह झाग देता है।"

73. nı-pi?tawıśe-θe-to, s-fcm-o प्रातिपदिक "मैने कपडे के टुकडे को जोडा।" pı?tawı-śe,f-xf "जोड़ (f) कपडे मे (xf)"।

73. pıimi-pooteθ-wa, ef-f-s "वह सिगरेट पीने मे गलती करता है।"

74. paak-aame?ki, svf-xf "यह भूमिका (Svf) कठोर स्थल है (xf)"।

74-75 nı-paak-eele-m-a, s-svf-ef-t-o "मैं उसकी शक्ति के बारे मे सोचता हू।"

14

76. ni-paki-kaw-?to, f-svf-mf-o "मैं इसे टपकाता हूं।"

77. ni-pkw-e?ko-ta, s-f-fcm-o "मैं इससे एक टुकड़ा काटता हूं।"

83. leelawi-piikwa, f-xf "केन्द्रीय स्थान (f) नीचे उगने वाले झाड़ झखाड़ का (xf) घटित होता है।"

83. kinwi-piikwa, i-xf "लम्बा तग क्षेत्र (f) ब्रुश का (xf) घटित होता है, ब्रुश लम्बी फैलती है।"

83. ni-po?ki-ce-el-aw-a, s-f-frg-mf-t-o "मैंने शरीर में (frg) अस्त्र की गति से छेदन किया (f) उसकी ओर, मैंने उसके शरीर को अस्त्र से वेध दिया।"

83. po?k-iikwe, f-frg "एक ओर, चेहरे के (frg) उसके दरार है (f), उसकी एक आँख बाहर निकली हुई है।"

87. ni-poškwi-piye-en-α, s-f-frg-i-o "मैंने हाथ के विस्तार से (i) लम्बे विस्तार वाला (fig) अनियमित खण्ड उत्पन्न किया। मैंने इस वृक्ष का एक अग तोड दिया।

87. ni-poškwi-n?ke-?ši-m-a, s-f-frg-fcm-t-o "मैंने तोड़ी (f) उसकी भुजा (frg) गति से जो स्थिर हो रही थी। (fcm) उसे किसी वस्तु के विरुद्ध फैंक कर।"

91. ni-paalači-we-l-a, s-f-mf-t-o "मैं ले जाता हू (mf) उसे नीचे की ओर (f) ।"

91. ni-pele-še-en-a, s-f-frg-i-o "मैंने इसकी सीवन उधेड़ी।"

92. meelawaači-paam-?θe, ef-f-mf "वह थका हुआ था (ef) भागने से (mf) चारो ओर (f) ।"

99. piyet- aalak-θen-wi, svf-f-xf-s "यह पड़ा है (is in xf) छिद्र के साथ (f) इस ओर (svf) ।

भाग 2

135. ni-tephikan?θe-to, s-f-fem-o "मै इसे घडे मे रखता हू।"

135. ni-tepi-kiiškwe, s-svf-ef "मैं होश मे आ गया।"

136. pa?-tepowee-ki, svf-ef-s "वे सभा मे गए (सलाह करने)"।

137. ni-tepeto-kalawi-pe, s-f-fcm-m "वे बात कर रहे थे (fcm) एक समूह में, इकट्ठे (f) ।"

137. tepeto-ptoo-ki, f-mf-s "वे इकट्ठे समूह मे भाग रहे थे।"

138. tetep-a?kwi, f-frg "वर्तुलाकार रूपरेखा, वनस्पति की, अगूर की बेल।"

138. ni-waawiyaa-tap-šk-a, s-f-mf-i-o "मैंने लुढकाया (mf) इसे एक दायरे मे (f) ठोकर से (i) ।"

141. ni-me?či-tehe, s-svf -ef "मैंने सोच लिया है।"

119. ni-θakı,ćaalee-pı-l-a, s-f-frg-fcm-t-o "मैने पकडने की रूप-रेखा उत्पन्न की (f) नाक के ऊपर (frg) बाँधकर (fcm), मैंने उस पर नकेल डाल दी ।"

भाग 3

289. kape-ho-kwi, fem-xf-s "वह् ऊपर तैरता हुआ पार करता है।"

293. kotekw-aakamı, f-xf "पानी (xf) पेचदार मे है (f) मार्ग।"

295. nı-kakaanwı-leće s-f-frg "मेरे लम्वे हाथ है।"

297. nı-kookı-tepe-en-a, s-f-frg-ı-o "मैने उसका सिर डुवोया (frg, डूवती-आकृति का भरना) पानी मे।"

298. nı-kkı-lećee-pı-l-a, s-ı-frg-fem-t-o "मैंने पहनाई (वाधने की क्रिया (fcm) एक अगूठी (गोल रूपरेखा, f) उसकी अगुली पर (frg) । "

300. kaśko ?śe, f-frg "उसके तेज कान है।"

300. nı-kiśw-eele-ma, s-ef-ef-t-o "मै उसे योग्य समझता हू, उसे अनुमति दो ।"

301. kııśoo-kwaam-wa,ef-ef-s या svf-ef-s "वह् आराम से सोता है।"

303. nı-kılek-a-m-a, s f-fcm-t-o "मैने मिश्रित समाकृति उत्पन्न की (f), मुह् मे, गति के साथ (fcm), मै इसे मुह् मे घोलता हूँ।"

304. kolep-śın-wa, f-fcm-s "वह् लेटे लेटे पलट गया।"

306-307. nı-kaawat-eele-m-a, s प्रातिपदिक -ef-t-o "मै उसे गोल समझता हू।" (kaaw-at-प्रातिपदिक, अत. ef के पूर्व आ सकता है ?)

308. ni-kwaśko-l-aw-a, s-fem-mf-t-o "मैंने उसे गोली मार कर गिरा दिया।"

308. nı-kwaśkwı-tepe-en-a, s-fcm-frg-ı-o (अनियमित क्रम, परन्तु fcm को f समझा जा सकता है)" मैंने उसका सिर दूर धकेल दिया।"

310 saapoı-aalakat-wı, ı-frg-s "इसमें आर पार एक सूराख है ।"

319. θaak-ho-?θ en-wı, ı-xf-xf-s "यह् आशिक रूप से डूवा हुआ है, और थोडा सा पानी से वाहर हैं।"

320. nı θak-aalow-een-a, s-f-frg ı-o "मैने उसे पूछ से पकडा" ।

माया चित्रलेखों के भाषायी अंशों का अर्थ-निर्धारण*

आदिम अमरीकी जगत मे केवल माया लोग ही पूर्णतया शिक्षित थे। उनके द्वारा वनाई गई तथा अव तक वची हुई पत्थर की इमारते तथा स्मारक उनकी रचनाओ की लिखाई से ढकी हुई है। उन रचनाओ को अभी तक पढा नही गया है। उनकी केवल उन तिथियो को पढा गया है जिनसे उनका लेखन आरम्भ हुआ था। इसके अतिरिक्त, उन्होने वहुत सी पुस्तके तथा पाण्डुलिपियाँ लिखी, तथा काफी वाद के समय की ऐसी तीन पुस्तके भी सुरक्षित है। ये तीन प्रसिद्ध माया प्राचीन पाण्डुलिपियाँ है, तथा इस लेख की समाप्ति से पूर्व, उन तीनो मे से किसी एक के वहुत ही सक्षिप्त अश पढने का मेरा विचार है, तथा वहुत ही साधारण तथा सरल ढग से मै यह दिखाना चाहता हू कि माया लेखन-पद्धति कैसी थी, तथा इसके प्रतीक चिन्ह किस प्रकार एक साथ रखे जाते थे।

इस लेखन-पद्धति मे चिन्ह-समूह तथा विशेष प्रकार की विपय-वस्तु का निर्देश करने वाले चिन्हो के वर्ग तथा चिन्हो के सयोग सम्मिलित है। सख्यावाचक शब्दो, कालावधि, तथा पचाग की शब्दावली का द्योतन करने वाले इन चिन्हो मे गणितीय सम्बन्ध विद्यमान रहते है, तथा इनका प्रयोग गणितशास्त्र की व्यवस्था वनाता है। इन चिन्हो के गणितीय सकेतो का निर्धारण उन गणितीय सम्वन्धो से किया गया है जो उनमे विद्यमान पाए गए है, तथा इस प्रकार हम सौर-चान्द्र पचाग की स्थितियाँ तथा तिथियाँ पढ सकते है, जो अधिकतर शिलालेखो के आरम्भ मे लिखी गई है। इस गणितीय रिकॉर्ड के अतिरिक्त लेखो के विशुद्ध भाषायी अश भी है, जिनके भागो के वीच मे हम व्याकरणिक या भाषायी अग तो देख सकते है पर गणितीय सम्वन्ध नही। इन्ही विशुद्ध भाषायी अशो का मै विवेचन करूगा, तथा प्राचीन पाण्डुलिपियो के लेखो का विवेचन करूगा, शिलालेखो के लेखो का नही, यद्यपि शिलालेखीय लेख सामान्यत प्राचीन पाण्डुलिपियो के लेखो के समान है। यह जानकर वहुत से लोगो को आश्चर्य हो सकता है कि प्राचीन पाण्डुलिपियो में अगणितीय तथा भाषाई चिन्हो की सख्या गणितीय चिन्हो से, सौ और एक के

*Reprinted from pp. 479-502 of the *Smithsonian Report for* 1941 (Washington: Government Printing Office, 1942). This paper was read before the Section on Anthropological Sciences of the Eighth American Scientific Congress, Washington, D. C., May 10-18, 1940.

अनुपात मे अधिक है (उसी चिन्ह की पुनरावृत्ति को न गिनते हुए), (यह सब कुछ) उस विश्वास को पुष्ट करने के लिए है जिसके अनुसार माया लेखन मुख्यतया गणितीय है।

जब चैम्पोलिअन ने मिस्री लेखो का अर्थ-निर्धारण प्रारम्भ किया तो वह अपेक्षाकृत सौभाग्यपूर्ण स्थिति में था, कि उसे उन सुस्थापित सिद्धान्तो के विशाल वर्ग का विरोध नही करना पडा था, जिनके अनुसार ये चिन्ह, लेख नही थे अपितु, अभाषायी प्रतीक थे। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे अथनेसिअस किरचर (Athanasius kircher) की अत्यन्त काल्पनिक अटकलबाजियाँ थी, जिनका सम्बन्ध उस धार्मिक तथा रहस्यात्मक प्रतीकवाद से था, जिस प्रतीकवाद को उसने चित्रलेखो मे पढा। परन्तु विद्याविशेष सम्बन्धी शास्त्रो मे से किसी ने भी इन अटकलबाजियो की पुष्टि नही की, तथा चैम्पोलिअन के अकाट्य तर्कों के सामने शीघ्र ही परास्त हो गई। उस समय भाषा-वैज्ञानिको तथा साहित्यिक विद्वानो का प्राचीन सस्कृतियो के अध्ययन के क्षेत्र मे साम्राज्य था। अत चैम्पोलिअन को भाषाविदो के सामने केवल अपने परिणामो के भाषायी-तर्क को ही सिद्ध करना था। उसे पुरातत्ववेत्ताओ के सामने अपनी पद्धतियो की वकालत नही करनी थी क्योकि भाषाविदो के अतिरिक्त कोई था ही नही। उस समय शास्त्र-विशेषो की विशिष्ट पृथक्ता नही थी जो इस समय है। उस समय भाषा-विज्ञान मार्ग दर्शन करता था, भाषा-विज्ञान से ही शिलालेख पढे जाते थे, तथा इसी से पुरातत्व-विज्ञान को प्रेरणा मिलती थी।

सामान्यत यह माना जाता है कि चैम्पोलिअन के प्रयत्न की सफलता, पूरी तरह, द्विभाषीय लेख से युक्त रोसेटा स्टोन (Rosetta Stone) की खोज के कारण है, तथा यह कि माया चित्रलेखो मे रोसेटा स्टोन के समान कुछ नहीं है। ये दोनों धारणाएँ गलत है। चैम्पोलिअन, अन्तत , रोसेटा स्टोन के बिना भी सफल हो जाता, क्योकि शिलालेख ऐसी भाषा मे थे, जिसे वह जानता था। वह मिस्री भाषा अर्थात् काप्टिक, जानता था, तथा जो उस भाषा का अर्वाचीन रूप है, और अब भी तत्त्वतः वही भाषा है जो प्राचीन मिस्र-देशवासी बोलते, लिखते थे। ठीक ऐसे ही केन्द्रीय अमरीकी लेख ऐसी भाषा मे है जिसे जानना सम्भव है। यदि वे मृतभाषा मे होते तो स्थिति निश्चय ही कठिन होती। परन्तु सौभाग्य से वे माया मे है जो अब भी बोली जाती है, तथा बहुत से स्रोतो मे उसका अध्ययन किया जा सकता है। परन्तु हम कैसे जानते है कि वे माया मे है? यह बात भाषा-विज्ञान के उस विद्वान के लिए बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगी जो इस मूल्य को समझता है, कि यदि मूलपाठ किसी अज्ञात लिपि मे परन्तु ऐसी भाषा मे है जिसे वह जानता है, तो यह सम्भव हो सकता है कि वह चिन्हो की पुनरावृत्त सस्थितियो की प्रकृति, तथा आवृत्ति से, उस तथ्य को ढूढ निकाले। इसके साथ ही माया व्यवस्था मे विभिन्न चिन्ह-गुच्छों का अर्थ परम्परा से जाना जाता है (जैसे महीनो के चित्र) तथा अन्य चिन्ह-गुच्छो का ज्ञान उन चित्रो से होता है जो प्राचीन पाण्डुलिपियो मे उनके साथ दिए जाते है। चित्र-लेखो मे एक

ऐनी भाषा का लेखन है जिसमे किसी विशेष महीने के लिए तथा "बैठने की स्थिति" के लिए लेख उसी प्रतीक से प्रारम्भ होता है, और वह एक 'पख' का चित्र है। यह शर्त केवल माया भाषा मे ही पूरी होती है, जिसमे इन विशेष शब्दो की धातुएँ, तथा 'पख', शब्द की धातु, सभी उसी एक अक्षर से प्रारम्भ होती हैं। पुन, यह ऐसी भाषा है जिसमे "सॉप, मछली" आदि शब्दो तथा किसी विशेष काल की अवधि के लिए लेखन, सभी उसके, अथवा परस्पर विनिमेय चिन्हो से प्रारम्भ होते हैं—यह शर्त भी माया भाषा मे ही पूरी होती है। यह वह भाषा है, जिसमे मधुमक्खी, मिट्टी, तथा दिन का नाम, जिसमे 'हाथ मे पकडना', तथा 'कुछ नही' तथा, 'माला', और पाश, उसी चिन्ह से प्रारम्भ होते है, जो उन गुच्छो मे भी पाए जाते है जिनका अर्थ 'जागु-आर', 'नौ', तथा 'चान्द्रमास', इत्यादि होता है। प्रमाण एकत्रित होते जाते है और अन्तत पूर्णतया सिद्ध हो जाता है। माया भाषा की समीपतम भाषाए चोल्ती तथा त्जेल्तल (cholti and Tzeltal) भी इन शर्तो को पूरी नही कर सकती, केवल माया भाषा मे ही ऐसा होता है।

रोसेटा स्टोन से कुछ कम तुल्य-रूप भी विद्यमान है—अर्थात् प्राचीन महीनों तथा अन्य कैलेण्डर पदो के सुरक्षित नाम, तथा उनको लिखने के लिए चिन्ह-गुच्छ, संख्यावाचक शब्दो को लिखने के ढग, बिशप लैन्दा के द्वारा अभिलिखित 27 वर्ण, मूलभूत दिशाओ के लिए रगो के लिए पशुओ की काफी बडी सख्या के लिए, देवताओ के लिए चिन्ह गुच्छ है—यह एक ऐसे कुछ विषय-खण्डो का सग्रह है, जिनका कुल जोड कुछ कम विचारणीय नही है। अन्तत, प्राचीन पाण्डुलिपियो मे बहुत से ऐसे मूल-पाठ है, जिनमे अर्थ इतना स्पष्ट है, मानो साथ साथ अनुवाद दे दिया गया हो, क्योकि पाठ के साथ साथ, उसका स्पष्टीकरण करने के लिए ब्यौरेवार चित्र भी दिए गए है। अत हमारे पास वास्तव मे माया रोसेटा स्टोन है, साथ ही साथ लेखो की भाषा का ज्ञान भी है ताकि यदि चैम्पोलिअन की विद्वत्ता के समान भाषायी विद्वत्ता प्राप्त हो जाए तो इनमे से कुछ लेखो का अर्थ निर्धारण करना, तथा अनुवाद करना अब सम्भव है, तथा अन्तत, उनमे से सभी लेखो का सम्भव हो जाएगा।

परन्तु, दूसरी ओर, भाषायी अर्थ-निर्धारक को अमरीकी पुरातत्व विज्ञान तथा भाषा-विज्ञानके बीच विद्यमान बडी खाई से ही अपने को सन्तुष्ट करना पड़ता है। भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जिसकी पाण्डित्यपूर्ण अभिरुचि केवल लेखो के स्वरूप मात्र मे है, उस आधुनिक अमरीकी पुरातत्व विज्ञान के लिए विचित्र एव दुर्बोध हो गया है, जिसके सुनिश्चित भौतिक प्रमाण के तर्कसम्मत सहसम्बन्ध का अत्यधिक विकास हुआ है; जबकि इसके लोकप्रिय पक्ष एवं आर्थिक सहायता का सम्बन्ध सौन्दर्यपरक अभिरुचियो से है, तथा उस अभिरुचि से है, जो विशेष रूप से एक आकर्षक प्रकार की ठोस. मानव विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध है। अब भाषागी तथा भाषा वैज्ञानिक अभिरुचि का, दोनो से अर्थात् भौतिक एव भौतिकीय रूप से वैज्ञानिक अभिरुचि से, तथा

सौन्दर्यपरक एव मानवीय अभिरुचि से, भेद दिखाना होगा, क्योंकि, जबकि यह किसी एक से भी पूर्णतया पृथक नही है, और यह शून्य मे भी नही रह सकती-- तो भी इसका मुख्य सम्बन्ध एक अन्य भिन्न स्तर से है, जो इसका अपना स्तर है। भाषायी विद्वान की किसी मूलपाठ मे रुचि भापा के ऐसे स्मारक के रूप मे होती है, जिसे किसी काल-विशेष मे अवरुद्ध करके सुरक्षित रखा गया हो। मुख्यतया उसकी रुचि पाठ की विपय-वस्तु मे नही होती, जैसे इतिहास, लोक साहित्य, धर्म, ज्योतिष या किसी अन्य विपय मे, परन्तु केवल उसके भापायी रूप मे होती है, जो उसके लिए सर्वोत्कृष्ट अभिरुचियो की अभिरुचि है। यहाँ उसकी वस्तुनिष्ठता का एक प्रकार से प्रारम्भ होता है--एक गम्भीर सच्चाई, कि उसका पठन, लेखन के वर्ण्य-विपय से सम्बन्धित सिद्धान्तो से प्रभावित नही होगा। भापायी रूप पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए वह वर्ण्य-विपय को एक ओर रख देता है। शब्दो के अन्दर, इसके व्यजनो और स्वरो के वास्तविक स्थानो के द्वारा, इसके शब्दरूप तथा धातु रूप की रूपावलियो के द्वारा तथा वाक्य-विन्यास की अभिरचनाओ के द्वारा वह भाषा के वास्तविक रूप के पुनर्निर्माण को अपना लक्ष्य बनाता है, और इस प्रकार भापायी वर्गीकरण के सम्पूर्ण क्षेत्र के साथ तथ्यो का एक नया रूप जोड देता है। उसके शोध कार्य का एक उपफल इतिहास और सस्कृति का पठन पाठन है, परन्तु यह प्रश्न उठाया जा सकता है, कि क्या काल परिदृश्य मे, केवल भापायी तथ्य सम्बन्धी उसका अन्वेपण, अधिक महत्त्वपूर्ण नही है? भारोपीय भापाओ के विकास पर प्रकाश डालने के कारण हित्ती का अर्थ निर्धारण, हित्ती राज्यो और विजयो के सभी लेखो से कही अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। हित्तियो के युद्ध और राजनीतियाँ ऐसी ही मृत है जैसे हैक्टर के कफन मे एक कील, परन्तु उनके क्रिया-रूप और सर्वनाम तथा सामान्य शब्द अब भी अमरीकी विश्वविद्यालयो मे सजीव अभिरुचि के विपय है, क्योकि सुचिन्तित अर्थ-निर्धारणसे आविर्भूत हित्ती भाषा के यथार्थतथ्य, भारोपीय भापा विज्ञान विपयक हमारी धारणाओ मे आमूल परिवर्तन कर रहे है। हित्ती का यह प्रामाणिक ज्ञान कभी घटित नही हो सकता था, यदि अर्थ-निर्धारण के विद्वान ऐसे भाषाविद् न होते, जिन्होने धीरे-धीरे और सुचिन्तित रूप से, विद्वत्तापूर्ण पद्धतियो द्वारा, मूलपाट को यथार्थ रूप मे अत्यधिक आदर प्रदान करते हुए, तथा इसे अपना सर्वोपरि कर्त्तव्य समझते हुए, वास्तविक शब्दो और व्याकरण का पता न लगाया होता। यह कभी भी सम्भव नही हो सकता था यदि वे हित्ती इतिहास और सस्कृति के सामान्य सर्वेक्षण मात्र को अपना कर्त्तव्य मान बैठते, या पुरातत्व-विज्ञान की सूखी अस्थियो को मानव आख्यान के माँस से ढकना ही अपना कर्त्तव्य समझते, क्योकि ये बाते महत्त्व-पूर्ण तो है ही।

माया अर्थ-निर्धारण के लिए अपेक्षित ध्येय इससे भिन्न नही है। माया पाण्डुलिपि पढते हुए भापायी रूपो का धीमा और सुचिन्तित अनुसधान होना चाहिए, तथा वह अनुसधान उनकी विपयवस्तु से रुचि अथवा रुच्यभाव से निरपेक्ष होना चाहिए। हमे इतिहास, सस्कृति, धर्म, अथवा और जो भी कुछ उसमे हो, उसकी

-सूचना के लिए माया-साहित्य को सामान्य रूप से पढना अपना काम नही समझ लेना चाहिए। इस विषय का इतिहास माया की प्राचीन पाण्डुलिपियो की सारी सामग्री की एक ही तीव्र झपट्टे के साथ व्याख्या करने, या पढ लेने के, प्रयत्नो से बोझिल हुआ पडा है, जिसमे Brasseur de bourg से लेकर अभी हाल के ऐसे प्रयत्न भी सम्मिलित है। इस तरह की विचित्र बाते, तडक भडक तथा फल प्राप्त करने की इच्छा से उत्पन्न होती है, तथा इन निष्कर्षो से प्राप्तव्य, सबसे अधिक बहुमूल्य, वस्तु के विषय मे नासमझी के कारण भी होती है। दूसरी ओर, सीरस थामस (Cyrus Thomas) का बहुत सा काम तथा मोरले (Morley) तथा अन्यो के द्वारा निर्दिष्ट भाषायी सामग्री के विभिन्न अग, कम से कम ठीक दिशा मे रहे है। ऐसा लगता है कि उन्होने इस बात को समझ लिया है कि वास्तविक समस्या क्या है ?

माया लेखन-पद्धति जटिल परन्तु बहुत ही स्वाभाविक ढग की थी। उन लोगो के लिए स्वाभाविक थी, जो भाषा को दृश्य चिन्हो मे स्थापित करने के विचार का प्रयोग करना प्रारम्भ कर रहे थे। वे चित्र जैसे चिन्हो को, उच्चारणो की ध्वनियो के खण्डो का प्रतिनिधित्व करने के लिए, प्रयोग मे लाना चाहते थे (प्राय किसी अक्षर या उससे भी कम मात्रा की ध्वनियो का), तथा इन चिन्हो को इस तरह जोड़ते थे कि उच्चारण के जोडे गए खण्ड एक वाक्य या शब्द के सम्पूर्ण उच्चारण की रूपरेखा प्रस्तुत कर सके। इस पद्धति को, या किसी विशिष्ट, प्रतीक को 'ध्वन्यात्मक' कहा जाए या 'भाव-मूलक'—इस पर अनावश्यक तथा निष्फल वितण्डावाद से इस पद्धति के अध्ययन मे पहले काफी अवरोध उत्पन्न हुए। समाकृतिपरक भाषायी दृष्टिकोण से, इनमे कोई अन्तर नही है । "भावलिपि" तथा कथित बौद्धिक शब्दावली का एक उदाहरण है, जो हमे भाषायी दृष्टिकोण से कुछ नही बताता। किसी भी प्रकार का लेखन चाहे कितना भी अपरिष्कृत अथवा आदिम हो, अभिव्यक्ति के भाषायी रूपो से पृथक किएहुए विचारो का प्रतीक नही होता है। एक प्रतीक, जब अकेला होता है, तो एक 'शुद्ध विचार' का प्रतीक हो सकता है, परन्तु विचारो के निश्चित क्रम मे से एक विचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसे अवश्य ही एक भाषायी रूप या किसी भाषायी रूप का अग बनना पडेगा। चीनी सहित सभी लेखन पद्धतियाँ साधारणतया भाषायी उच्चारणो की प्रतीक होती है। लिखी जा रही भाषा मे स्पष्टतया अर्थयुक्त अनुक्रम (वाक्यांश या वाक्य, उदाहरणार्थ) के साथ विलक्षण अनुरूपता के लिए ज्योही उच्चारणो के लिए पर्याप्त प्रतीक इकट्ठे कर दिये जाते है तो प्रतीको का वह समुदाय उस भाषा के मूल पाठक के लिए उस भाषायी अनुक्रम का अर्थ अवश्य ही सूचित करता है—चाहे प्रत्येक प्रतीक पृथक् रूप मे किसी भी अर्थ का सकेत करता हो। लेखन चाहे किसी भी प्रकार का हो उसमे अर्थ इसी प्रकार से प्रविष्ट होता है, अन्य किसी तरह नही। रेखाबद्ध या प्रतीको के भौतिक अनुक्रम रेखीय का अर्थ, प्रतीकवादो अथवा द्योतितार्थो का कुल जोड नही है, जो पृथकता मे प्रतीको का हो सकता है, परन्तु सम्पूर्ण भाषायी रूप का अर्थ है जिसका सकेत वह अनुक्रम देता है। अत यह तथ्य , कि कुछ व्यक्तिगत चिन्ह उच्चरित

ध्वनि के शब्दों द्वारा द्योतित विचार, भावो, अथवा वस्तुओ के चित्रो जैसे लगते है, पठन मे कोई वास्तविक 'पार्ट' अदा नही करता, क्योकि ये चिन्ह् उच्चारण के अशो के लिए उतने ही प्रतीकात्मक, सीखे गए और अन्तत यादृच्छिक है, जितने कोई भी अन्य लिपि-चिन्ह् या वर्ण। दूसरी ओर, एक विषय या चित्र से समानता, अर्थ-निर्धारण मे सचमुच महत्त्वपूर्ण हो सकती है।

संख्या	ध्वनि	प्रतीक	विषय-स्रोत	सम्भावित विषय-स्रोत का माया नाम
1	ha, -a, ah		खुरचने का औजार 'cepillo o qualquier instrumento para raspar'	hoob
2	b		छिद्रोरातिर्स 'pequeños agujereados'	bis
3	e		बिन्दु 'punta'	e
4	h		विवर, द्वार 'abrir como puertas'	he
5	haw hw		मुखिया (का मुख) 'rey'	ahów
6	hu hw -u		पत्र, पुस्तक 'carta o libro'	huun
7	i		थन (पशु के) nal) 'teta de mujer y de qualquier animal'	im
8	ka		तवा, कड़ाही 'lebrillo'	kat
9	kak ka		न० ८ परिवर्धित तथा द्विगुणित (?)	
10	ka		ढकना, बन्द कियाहुआ 'cerrar con cerradura, abrochar, atrancar'	kal
11	kum		पख 'pluma de ave'	kukúm
12	l le		पाश, फन्दा 'lazo para cazar'	le
13	l le		दोहरा पाश (न० १२ द्विगुणित)	le
14	l, lu lo		पीने का प्याला (तथा पात्र) 'vaso para beber'	luč
15	m ma		हाथ की पकड़ 'asir tomar con las manos, o empuñar'	mač
16	m men		?	?
17	n, -an ne		पूछ 'cola'	ne
18	s sa		खड्डी मे बुनाई 'tela en el telar'	sakal
19	si s n		तने हुए तार 'extender paños o cueros, colgar estendiendo, armar lazos'	sin 'stretch or string'
20	š, ša		चौराहे 'encrucijada de camino'	šay
21	to tu		लपटे (?) 'quemar'	took 'burn'
22	ç (ts)		कुत्ते का चेहरा (?) 'perro liso sin pelo'	çem (tsem) 'hairless dog'
23	u		बाल-चन्द्राकार ? 'luna'	u 'moon'

ध्वन्यात्मक-मूल्यों से मुक्त माया प्रतीकों के उदाहरण

यह समानता इस रहस्य का सूत्र प्रस्तुत करने मे भी महत्त्वपूर्ण हो सकती है, कि यह चिन्ह् अपने मौलिक प्रयोग के तर्कानुसार तथा परिणामस्वरूप उच्चारण के खण्ड के अनुरूप किस प्रकार आविष्कृत हुआ—अर्थात् ध्वनि, जो पठन के अन्तर्गत इस समस्या का समाधान करती है—एक ऐसा सूत्र जिसका परीक्षण इस दृष्टि से करना होगा कि प्रस्तुत खण्ड या ध्वनि प्रत्येक प्रस्तुत पठन मे कितनी अच्छी तरह सगत बैठती है।

चित्र 3 मे 23 प्रतीक दिखाए गए है, जो समस्त माया साहित्य मे प्राप्त, कई सौ प्रतीको मे से चुने गए है। ये विशिष्ट प्रतीक इसलिए चुने गए है क्योकि ये इस लेख मे अर्थ-निर्धारण के उदाहरणो के रूप मे प्रयुक्त लिखित शब्दो और प्राचीन पाण्डुलिपि वाक्यो मे प्रवेश कर जाते है। उच्चारण के वे खण्ड, जिनके ये प्रतीक नियमित रूप से सदृश है, उनका निश्चयीकरण ऐसे तुलनात्मक प्रमाणो द्वारा किया गया है, जो अन्तत प्रमाणो के उस वर्ग से जा मिलता है जिसे मैंने रोसेटा स्टोन

के नाम से अभिहित किया है । चिन्ह 1, 2, 3, 7, 8, 12, 17, 22 लैन्दा (LANDA) ने भी इन्ही मूल्यो सहित अपनी पुस्तक *Relacio'node les cosas de yucatán* मे दिए हैं, जो माया लोगो पर विजय प्राप्ति के बाद का उनका प्रथम विवरण है। बाईं ओर का कॉलम वर्णमाला के क्रमानुसार उच्चारण के खण्ड दर्शाता है, जो नियमित रूप से[1] 'लिखित रूप मे किसी एक चिन्ह की आकृति के सदृश होता है। दाईं ओर का अगला कॉलम उन लिखित चिन्हो का सामान्य रूप प्रदर्शित करता है, जिनके साथ कुछ स्थितियो मे सामान्य पाठभेद भी जोड दिए गए है। इस सूची मे उन सभी चिन्हो के एक तिहाई से भी कम चिन्ह सम्मिलित है, जिनके ध्वन्यात्मक मूल्य को मै अच्छी तरह सिद्ध मानता हूँ।"Probable object Source" (विषय का सम्भव स्रोत) के शीर्षक वाला कॉलम उस वस्तु या परिस्थिति को अभिलक्षित करता है जिसका लिखित चिन्ह शायद किसी समय एक चित्र था। तथापि, चित्रात्मक उत्पत्तियो के ये सिद्धान्त, जबकि वे सम्भव प्रतीत होते है और उनका महत्त्वपूर्ण मूल्य है, ध्वन्यात्मक मूल्यो के लिए प्रमाण नही है, और 'उनका

---

1. निरपवाद रूप से तो नहीं, परन्तु नियमित रूप से इन सभी चिन्हों के विषय में, क्योंकि माया लेखन-पद्धति में बहुस्वनता एक सामान्य वैशिष्ट्य है जैसा कि यह सुमेरी एवं अक्कादी (बेबीलोनियाई) कीलाक्षरो का भी है । अर्थात् बहुत से चिन्ह एक वर्ग के अन्तर्गत थोड़े से भिन्न मूल्यों के साथ साथ दो या अधिक व्यतिरेकी वर्गो के ध्वनिमूल्यो से युक्त बहुस्वन हैं, जैसे ha या h स्वर रहित अथवा अनिश्चित; ऐसी मामूली भिन्नताएं बहुस्वनिक व्यतिरेक से भिन्न स्तर पर हैं । उसी देश का पाठक जो शब्दो के सम्पूर्ण रूपो को समझने में समर्थ है इन बहुस्वनिक मूल्यों के कारण भ्रम में नहीं पड़ता, उसे एक के साथ जोड़े गए दूसरे चिन्हों से ज्ञात हो जाता है कि कौनसा बहुस्वनिक मूल्य उस स्थान पर लागू होता है ठीक ऐसे ही, जैसे एक अंग्रेजी पाठक women के अन्तर्गत O से तथा colonel के अन्तर्गत olo से भ्रम में नहीं पड़ता, परन्तु वह सम्पूर्ण विन्यास से इस प्रकार निर्दिष्ट होता है कि उसकी उच्चारण खण्डों के प्रति प्रतिक्रिया लिखित रूप O एवं o lo के साथ नियमित रूप से सम्बन्धित प्रतिक्रिया से नितान्त भिन्न होती है। इसलिए बहुस्वनता उसी प्रकार की चीज है जैसे वर्णमालीय लेखन पद्धति में अनियमित वर्तनी । अतः चित्र 3 माया चिन्ह नं० 5 का मूल्य la, तथा l भी हैं जैसे (lak'ın, lık'n) (पूर्व) आदि शब्दो के लिखने मे; बहुत सम्भव है कि यह मूल्य lalaıl "विशालतम" महानतम, मुख्य, प्रधान शब्द से ग्रहण किया गया हो जो कि abaw का निकट पर्याय है। चिन्ह नं० 15 का मूल्य कभी कभी ć होता है जैसे कि ćık'ın "पश्चिम" लिखने में, यह मूल्य सम्भवतः ćuk, "हाथ से पकड़ना या लपकना" शब्द से ग्रहण किया गया है जो mäc का निकट पर्याय है।

गलत सिद्ध होना' न तो ध्वन्यात्मक मूल्यों को रद्द करता है और न ही पठनो को परिवर्तित करता है, बल्कि उनका केवल यही अर्थ होगा कि चिन्ह का मूल स्रोत कोई अन्य है, वह नही जिसकी मैंने कल्पना की है। कुछ चिन्ह ऐसे है जिनकी कोई भी व्याख्या देने मे मै असमर्थ हूँ (जैसे स० 16), फिर भी जिनके लिए ध्वन्यात्मक मूल्य यथोचित रूप से निश्चित है। मैंने सख्या 6 के सम्भावित विषय स्रोत का भी अनुमान तब तक नही लगाया जब तक कि कई वर्षों तक मै इसका ध्वन्यात्मक मूल्य नही जान गया था।

दाईं ओर के अन्तिम कॉलम मे माया शब्द दिए गए है, ठीक वैसे ही जैसे वे मोतुल शब्दकोष[2] मे किसी वस्तु या स्थिति के लिए विषयस्रोत मानकर

---

2. मोतुल शब्दकोष सोलहवीं शताब्दी के किसी अज्ञात रचयिता की कृति है, जिसका श्रेय Fray Antonio de ciudad Rèal के नाम पर आरोपित किया जाता है, तथा विजयकालीन माया भाषा के विषय में सूचना देने वाला यह सबसे बृहद् एवं प्रामाणिक स्रोत है। वास्तव मे यह न केवल शब्दकोष है अपितु एक व्याकरण तथा उद्धरणिका भी है क्योंकि इसमें अधिकतर शब्दो के उल्लेख के साथ-साथ उपवाक्यो तथा वाक्यों के प्रचुर उदाहरण भी दिए गए है। इन उदाहरणो में उस काल की माया भाषा की प्रातिपदिक रचना पद्धति बड़े सुन्दर ढंग से दी गई है, वाक्यविज्ञान के विषय में भी यही बात सत्य है। चित्र-3 के माया शब्दो का उल्लेख पारम्परिक माया लेखन पद्धति में नही किया गया है परन्तु उन ध्वन्यात्मक वर्णों में किया गया है जिन्हे आजकल के अधिकतर भाषा विज्ञानी अमरीकी इण्डियन भाषाओ के लिए करते है, American Anthropological Association की संशोधन पद्धति केवल वर्त्स्य स्पर्श-संघर्षी C (ts जैसी ध्वनि) के स्थान पर C का प्रयोग किया जाता है। यहां पर केवल (सेडिला) एक छोटी सी घुण्डी जैसे Ç C में जोड़ दी गई है, ताकि माया लेखन पद्धति में K का प्रतिनिधित्व करने वाले C के साथ भ्रम उत्पन्न न हो। प्रतीक 22 का उल्लेख landa द्वारा C के मूल्य के रूप में किया गया है, यह निश्चित है कि उसका अभिप्राय स्पेनिश Ç या कोमल ध्वनि C से था जैसा कि Ce वर्ण के नाम में है, जिसे बहुत सम्भव है उसने अपने माया सूचक को लिखने के लिए कहा होगा। C की यह कोमल ध्वनि पुरानी स्पेनिश में ts के निकट थी, और यही कारण है कि उसे ts के लिए प्रयुक्त माया चिन्ह 22 के तुल्य माना गया है। ć तथा ś ध्वनियाँ अंग्रेजी की Ch तथा sh ध्वनियाँ हैं K' कण्ठयीकृत K है इस भाषा में इस प्रकार कण्ठ्यीकृत ध्वनियो की एक श्रेणी है: p', t', ċ, ć', K' किसी विचित्र भूल के कारण मोतुल शब्दकोष में ne (पूँछ) का उल्लेख नहीं है, परन्तु वास्तव में, यह एक प्रसिद्ध माया शब्द है।

दिए गए है। आगे चलकर हम यह देखेंगे कि इस विषय के माया नाम की प्रारम्भिक ध्वनि (अर्थात् प्रथम व्यञ्जन और / या प्रथम व्यञ्जन तथा स्वर) वह ध्वनि है, लेखन मे, जिसका प्रतिनिधित्व चिन्ह करता है—जैसा कि वाई ओर के कॉलम मे दिखाया भी गया है, केवल स० 1 की स्थिति को छोड कर जिसमे a या ah वनाने वाला आरम्भिक h या तो लुप्त हो जाता है या उसका स्थान वदला जाता है। विषय स्रोत के अग्रेजी नाम के नीचे स्पेनिश लेखन वह ढग है, जिसमे मोतुल शब्दकोप, विल्कुल दाई ओर के कॉलम मे माया शब्दो की परिभाषा देता है।
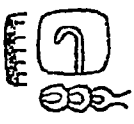
तव आकृति सख्या 3 स्वत स्पष्ट होनी चाहिए। यहाँ अधोलिखित सपूरक टिप्पणियाँ जोडी जा सकती है· सख्या 1 शब्द के आरम्भ मे नही आती। माया मे प्राथमिक शब्दारम्भिक h जव गौण रूप से शब्द के मध्य मे आता है—जैसे जव यह समस्त शब्द के उत्तरपद के आरम्भ मे आता है तो इसकी प्रवृत्ति क्षीण हो जाने की या लुप्त हो जाने की होती है। यह वताता है कि क्यो एक अक्षर मूल रूप से ha को सूचित करने पर भी जव केवल शब्दो के अनारम्भिक खण्डो को लिखने के लिए प्रयुक्त होता है तो a को सूचित करता है। सख्या 6 विशेष रूप से दिलचस्प है। माया मे 'लिखना' या 'पुस्तक' के लिए साधारण तथा विश्लेषण-योग्य शब्द है—ये शब्द 'रग भरना' या 'रेखा चित्र वनाना' से सम्वन्धित नही है जैसे अज्तेक तथा अन्य वहुत सी अमरीकी भाषाओ मे है। यह तथ्य, अन्य परिस्थितियाँ समान होने पर, इन अन्य सस्कृतियो से माया सस्कृति मे लेखन की अधिक प्राचीनता को प्रमाणित करता है। माया पत्र तथा पुस्तके (उदाहरणार्थ, प्राचीन पाण्डुलिपियाँ) पतले और महीन कपडे की एक लम्वी वनाई हुई पट्टी पर लिखी गई है, जो कि तव मोडी जाती थी, और वाँधे जाने पर उसकी वाह्याकृति अपने लिफाफे मे वन्द एक आधुनिक पत्र के समान या सख्या 6 के समान होगी[3] प्राचीन पाण्डु-

---

3. जैसा कि इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि नं० 6 जिस वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है उसके विषय में मै पहले सिद्धान्तों को मानता हूं; जिनमें से एक को जो इसे 'मक्के का दाना' कहता है (जिसके साथ इसका कोई साम्य नहीं है) मै नितान्त काल्पनिक मानता हूं। यह तथ्य कि कुछ माया चित्रों में मक्के का पौधा लेखन के वर्णो से प्रस्फुटित होता दिखाया जा सकता है, तथा वर्ण वहुत से व्यक्ति अथवा पदार्थो वाले दृश्यो में भाग ले सकते हैं, एक गौण प्रतीकवाद है, यह वह मौलिक तर्क नहीं जिससे वर्णो की उत्पत्ति हुई। समस्त विस्तृत गौण प्रतीकवाद, सम्भवतः अधिकतर धार्मिक एवं जादु सम्बन्धी प्रतीकवाद का वर्णो के उनके लेखन प्रतीको के सामर्थ्य के रूप में पठन से कोई सम्वन्ध नहीं, यदि कुछ है तो वह उससे अधिक नहीं जितना कि गुरू परम्पराओ मे हिब्रू वर्णों के चारो ओर विकसित विस्तृत प्रतीकवाद तथा संख्या-सगुनौती हिब्रू पाठो के पठन पर एक लवमात्र का प्रभाव डालती है। यह गौण प्रतीकवाद अन्ततोगत्वा तुलनात्मक साहित्यिक

लिपियो मे i के लिए घुण्डी (im) चिन्ह् प्राय तीन घुण्डियो के साथ प्रकट होता है, जो मुझे यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि इसके लिए हिरण अथवा किसी अन्य पशु के थन, मूलरूपो मे से एक रहे होगे। कभी कभी ये दो के साथ भी प्रकट होता है। लैन्दा इसे दो घुण्डियो के साथ ही देता है, तथा ik(दिन) का चिन्ह् केवल एक घुण्डी के साथ मूल मानवीय वक्ष, रूप पर आधारित हो सकता है। न० 8 शायद Kat का प्रतिनिधित्व करता है जो कुछ मिट्टी की डलिया जैसी, या लकडी के कडाहे जैसी, ट्रे (किश्ती) या नीची समतल टब, प्राय किश्ती की सी आकृति की होती है। इसे cem या 'नाव' भी कहा जाता था (देखिए मौतुल शब्दकोष (HEM Lıcıl PPO और CHEM CHE) तथा इसके विपरीत एक नाव 'kat' कही जाती होगी। कबे की सी रेखाएं लम्बी धारी वाली नेमि का प्रचलित रूप हो सकती है, या वाहर निकली हुई टोकरी की सी लचीली टहनियो का रूढीकृत रूप हो सकती है, या Kat (किश्ती) मे वैठे हुए लोगो का प्रतिनिधित्व कर सकती है, जिसका अर्थ किश्ती है। स० 10 लेखन प्रतीको तथा माया कलाओ मे मिलने वाले वहुत से सदर्श आरेखणो का उदाहरण है–एक वृत्ताकार चपटा घडा, टोकरी या तुम्बी जिस पर एक ढकना वधा हुआ है, या चिपका हुआ है। जैसा कि सुविदित है, माया वहुत प्राचीन काल से ही परिप्रेक्ष्य मे, ये आरेखण बनाती रही है। नं० 11 Kúkúm "पख या पिच्छक" है, और यह शब्द kúM प्रातिपदिक का वास्तविक आरम्भिक रूप माना जाता था, तथा Kú को एक अभ्यास माना जाता था, एक स्थिति जो ऐतिहासिक दृष्टि से चाहे कभी न रही हो, परन्तु माया जैसी भाषा मे सादृश्य के कारण मानी जाएगी, जिसमे प्रारम्भिक

अध्ययन का विषय बन सकता है, जहाँ पर यह संभवतः महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकेगा। वर्तमान स्थिति में, तथा विशेषतः भाषायी दृष्टिकोण से लेखन पद्धति में माया चिन्हों के कार्य एवं प्रतीको का सही रूप समझने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के सभी प्रतीकवाद से इसे मुक्त कर दिया जाए। दिन Kan को द्योतित करने के लिए नं० 6 का प्रयोग, दिन के मौलिक नाम Hu अर्थात् गिरगिट ıguana का लेखन है (देखिए अज्तेक Cuetzpalın 'गिरगिट' 'उसी दिन' के लिए) केवल Ik, Cımı, Caban तथा सम्भवतः Manık, Cauc एवं EZnab तथा दूसरे एक या दो को छोडकर माया संस्कृति में लेखन पद्धति की स्थापना होने के पश्चात् दिनो के सभी नाम वदल गए। कुछ दिनो के नाम का द्योतन उनके मौलिक नामों के आदि अक्षर या वर्ण से ही होता रहा, ठीक इसी तरह जैसे हम libra के लिए lb लिखते है परन्तु इसे पढ़ते पाउंड है। दिवस प्रतीकों के विषय में seler के प्रचुर चिन्तन को अत्यन्त सावधानी से प्रयोग में लाना चाहिए और वह भी उस स्थिति में जबकि वे निकृष्ट प्रकार की बाधाएं उत्पन्न न करें।

अभ्यास बहुत अधिक प्रयोग मे आने वाली व्युत्पादक प्रक्रिया है। स० 16 के स्रोत के विषय मे अभी कुछ भी धारणा नही बनाई गई है—एक सिर का पार्श्व चित्र तोते जैसी चोंच के साथ—यहाँ सुझाव होगा कि तोते जैसे पक्षी को moan या muan कहा जाता है । चिन्ह, व्यजनात्मक अनुक्रम m। का सवादी है, जिसके मध्य मे कोई स्वर आ सकता है, या स्वराभाव भी हो सकता है, तथा यह एक दिवस चिन्ह के रूप मे दिन का द्योतक है। सख्या 23 बहुत अधिक स० 1 के समान प्रतीत होती है, परन्तु यह हमेशा खड़ी होती है तथा इसके नतोदर पक्ष को समूह की ओर करके इसे चिन्ह समूह के सामने रखा जाता है, जबकि स० 1 को गुच्छ के सामने नही रखा जाता और प्राय पडी होती है।

चित्र 4—शब्दों का प्रतिनिधित्व करने वाले माया चिन्ह समूह ।

चित्र 4 मे प्राचीन पाण्डुलिपियो मे आने वाले 6 शब्दो का लेखन है।[4] चिन्ह-

4—"A Comparative decipherment of 46 Maya written words" नामक एक अप्रकाशित लेख में जो, वाशिंगटन में D C. दिसम्बर 1936 में हुई American Anthropological Association की एक गोष्ठी में पढ़ा गया था, मैंने 46 शब्दों के लेखनों का, समान ढंग से विश्लेषण करके दिखाया था, जिन शब्दों में इन प्रस्तुत 6 चिन्हों में से hu तथा kumhu भी सम्मिलित थे ।

समूहो या विभिन्न पशुओ के चित्र बहुत पहले से ज्ञात है । इनका निश्चय मूलतः Schellhas ने चित्रो के साथ उनकी सगति से किया था[5]। सख्या 1 को Schellhas ने 'सर्प' अर्थ वाले चित्र के रूप मे उद्धृत किया है। यह देखा जायेगा कि यह चित्र 3 के स० 8 Ka, और स० 17 n तथा एक तीसरे प्रतीक से युक्त है। चित्र 4 के अगले चित्र मे तीसरा प्रतीक, तथा गोह आकृति ही ऐसे प्रतीक है, जो इस लेख मे उद्धृत है तथा चित्र 3 मे नही मिलते। प्रथम दो प्रतीको की वर्तनी 'Kan' है जो 'सॉप' के लिए माया शब्द है । तीसरा प्रतीक, सम्भवत अमरीकी रैटल साँप की खडखडाहट से लिया गया है, जिसका अभिप्राय सर्प अर्थात् Kan की भाषायी प्रतिक्रिया जागृत करना है, तथा इसका स्वय का मूल्य Kan सर्प है। फिर भी Kan शब्द को लिखना स्पष्ट रूप से अपर्याप्त है। माया पद्धति मे एकाक्षरिक शब्द को उस अक्षर के मूल्य वाले केवल एक चिन्ह से लिखना प्रचलित नही था, सम्भवत इसलिए कि वह चिन्ह प्राय. बहुस्वनिक तथा अन्य मूल्यो वाला होता था। इसकी अपेक्षा माया पद्धति, अक्षर को उन चिन्हो के सयोग से सकेतित करने की है, जो लेखन की परिपाटियो से प रिचित मायाभाषियो के लिए सम्भवत सुस्पष्ट थे। चिन्हो का वह सयोग दो सिद्धान्तो के अनुसार किया जा सकता था : (1) सॉश्लेपिक ढग से—उन चिन्हो से अक्षर बनाना जो अक्षर के अश समझे जायेगे, तथा जो इकट्ठे मिलकर सम्पूर्ण अक्षर बनाते है । (2) पुनरावृत्त अभिकथन से अर्थात् पुनरावृत्त के अर्थ मे सारे अक्षर को बताने के विभिन्न तरीको को जोड़कर। एक अक्षर वाला एक शब्द, या एक लम्बे शब्द के अन्दर ही प्रायः एक अक्षर को, दोनो मे से किसी एक पद्धति से या दोनो से लिखा जा सकता था जैसेKan शब्द के प्रस्तुत लेखन के विषय मे। सयोगात्मक रूप से Ka तथा n चिन्ह इसे बनाते है, चिन्ह Kan इसे दोहराता है, हम दो बार लिखते है पर पढते एक बार है। यह बात इस तरह है जैसे मानो लेखन पद्धति कहती हो कि कि "मेरा प्रथम Ka है, मेरा द्वितीय n है, मेरा सम्पूर्ण 'Snake-rattle' चिन्ह के मूल्यो मे मे एक है, अत वह Kan होना चाहिए। इसके सभी भागो के योग से सयोग है Ka-n-Kan ,परन्तु हम लिप्यन्तरण सिद्धान्त का प्रयोग यह दिखाने के लिए कर सकते है कि Ka-n-Kan मे अन्तिम Kan केवल लिखने के लिए है, पढने के लिए नही।

चित्र 4, सख्या 2 चिन्ह-समूह है, जिसका अर्थ है 'गोह' या 'बडी छिपकली', एक बिल्कुल स्पष्ट अर्थ—क्योकि इसके साथ पशु का एक सादा चित्र भी है। परन्तु यह चित्र जैसा चिन्ह चाहे यह कितना भी पशु के समान लगे, अपने आप शब्द का अर्थ 'गोह' लिखने के लिए पर्याप्त नही है । जैसा कि पहले ही देखा गया है, माया पद्धति स्वय समर्थ लेखन की एक इकाई के लिए कम से कम एक

5. Paul Schellhas, Gottèrgestalten der Mayahand schriften, 1897.

अन्य चिन्ह है साथ सयोग चाहती है, इस नियम के अपवादो की बहुत ही सीमित सी सूची है। इनमे से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 20 दिवस–चिन्ह है, जो पूर्ण गुच्छ के आकार ने परिवर्धित अकेले तत्त्व है, तथा स्वय समर्थ है। चिन्हो के गुच्छ होने से मास चित्र तथा पचॉग से सम्वन्धित चित्र, सामान्यत, इस नियम के अनुरूप हैं। स० 2 एकाक्षरिक शब्द hu के लिए साधारण चिन्ह चित्र 3 सं० 6 का प्रयोग करता है, जिसमे सवसे ऊपर 'गोह' की आकृति है तथा निस्सन्देह जिसमे पशु के नाम का भाषायी महत्त्व है। यहाँ लिप्यन्तरण मे जिस सूत्र का हम प्रयोग करते हैं वह hu-hu है, जिसका पठन या उच्चारण निस्सन्देह hu किया जाएगा।

स०3 KUMHU शब्द को, जो एक माया महीने का नाम है, पूरी तरह सश्लिष्ट पद्धति से लिखता है। यह इस 'CUMhu' महीने का सुविदित चित्र है, जैसा कि प्राचीन पाण्डुलिपियो मे मिलता है। यह पख चिन्ह Kum, चित्र 3, स० 11, तथा स० 6 का प्रयोग करता है—अत' हम इसका लिप्यन्तरण करते है Kum-hu। प्राचीन पाण्डुलिपियो के कुछ अन्य शब्द जो चिन्ह Kum चित्र 3, स० 11 का प्रयोग करते है, वे है—Kumah प्रकृति 'sit' (बैठना) सकर्मक प्रत्यय के साथ अर्थ है "स्थान" seats (आसन) या carries seated (बैठे हुओ को ले जाता है) और Kumac 'सॉप' अर्थवाला एक अन्य शब्द (देखिए Quinche kumaç 'snake')। इन शब्दो मे स्वरों के मूल्यो के सम्वन्ध मे हम अव भी कुछ सशय मे है, तथापि सामान्य ध्वन्यात्मक रूपरेखा की इस तथ्य से वडे रोचक ढग से पुष्टि होती है, कि प्राचीन पाण्डुलिपियो मे kumah को न केवल kum-ma (11 तथा 15 चिन्हो के साथ) की तरह वल्कि kω-m-a की तरह भी लिखा जाता है, जबकि लैन्दा cumhu मास को लिखने का एक ढग उद्धृत करते हैं जो kω-m-hω का गुच्छ है, जिन दोनों लेखनो मे kω तथा m चिन्ह चित्र 3 मे सम्मिलित नही है (परन्तु अन्य प्रमाणो से इसकी पुष्टि हुई है) जवकि चित्र 3 मे a स० 1 है, तथा hω स० 5 है।

चित्र 4 स० 4 शिकार से सम्वन्धित तथा शिकार चित्रो से स्पष्टीकृत प्राचीन पाण्डुलिपि Tro-cortesianus के मूलपाठ मे आता है। स्पष्टतया यह चिन्ह-गुच्छ, भालो अथवा वाणो मे मारे गए पशुओ का निर्देश करने वाला शब्द है, तथा Tro-cortesianus के villacorta सस्करण[6] के भाष्य मे इसे "signo de caceri'a por medio de flecha y Lanza" कहा है। यह एकाक्षरिक चिन्ह के द्विन्व से सश्लिष्टतया सरचित एक लेखन है। सवसे ऊपर 'प्याला-तथा-फन्दा' चिन्ह lu, lo चित्र 3 का स० 14 है, जो द्वित्व किए गए सख्या 15 m, ma की रूपरेखाओ मे लिखा गया है। द्विगुणित युगल का पूछ के पास का नीचे का सदस्य चित्र 3 का स० 17 है। जव हम किसी चिन्ह ही की द्विरावृत्ति पाते है, जिसे पूरे ढाचे मे सम्भवत. आक्षरिक माना जाएगा, तथा जिसकी पुष्टि एक

---

6 J. Antonio Villacorta C. and Carlos A Villacorta, Co'dices Mayas, published in "Arqueologia Quatemalteca", 1932.

उपाक्षरिक से होगी, तो हम अतिलिपि लिखने की पद्धति के विना ही लिप्यन्तरण कर सकते है; अपेक्षाकृत एक ऐसी पद्धति का प्रयोग करके जो एक दीर्घ व्यञ्जन या स्वर के रूप मे सम्भव व्याख्या की अनुमति देती है—जैसे इस स्थिति मे ma-ma नही वल्कि m-ma लिखा जायेगा। तब सख्या 4 का लिप्यन्तरण lu-m-ma-n या lo-m-ma-n किया गया है, जो ठीक उसी अर्थ वाला शब्द है जो चित्रित दृश्यों की सगति हमे वताती है। यह lom प्रकृति की—an मे कर्मवाच्य भूतकालिक कृदन्तीय रूपरचना है, जिसका अर्थ है चीरना, छुरा भोकना या प्रहार करना, तथा व्युत्पत्ति से इसका अर्थ है 'भाला', जवकि क्रियात्मक रूपरचना के साथ यह "चीरने के कर्म" को द्योतित करती है। मोतुल शब्दकोष "lom tiro de lanza,o dardo, y cosas assi, y estocada'o pun'alada'', देता है। यह प्रकृति सकर्मक क्रियात्मक रूपरचना के साथ मोतुल शब्दकोष मे ऐसे दी गई है—"lomah, ob·fisgar, o harponear, dar estocada o pun'alada, alancear y aguijonear", यह उद्धरण कर्मवाच्य कृदन्तीय रूप से अनुसृत है—"lomán: cosa que esta assi fisgada"अत. माया मूलपाठ के चित्रलेखो मे लिखित, इस loman शब्द का अर्थ है—भाले के द्वारा भोका गया, मारा गया, चीरा गया, घायल किया गया, या मारा गया, इत्यादि।

चित्र 4 का स० 5 एक चिन्ह के स्वाभाविक स्वर के द्वित्व के साथ सश्लिष्ट है। Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि के शिकार के विभाग मे यह सामान्य है, तथा स्पष्टतया पाश अथवा कमन्द के द्वारा, या पाश जाल मे पशुओ के पकडने का द्योतन करने वाला शब्द है, —या एक फन्दे के जाल द्वारा पकडने मे,—ऐसा जाल जिसमे एक फन्दा होता है, जिसे ऐसे एक स्प्रिंग के साथ बाँध दिया जाता है जिसमे एक लम्बी रस्सी के साथ एक घोडा होता है, और रस्सी छोटे झुके हुए वृक्ष मे इस तरह वधी हुई होती है, कि जब पशु इस फन्दे मे कदम रखता है, तथा उस घोड़े को ढीला कर देता है तो वृक्ष पीछे की ओर उछलता है और उछलने से फन्दे की खिसकने वाली गाँठ को खीचते हुए पशु को पकड लेता है। चित्र या चिन्ह गुच्छ स० 5 मे इस क्रिया के चित्र साथ दिए गए है जैसे Tro-cortesianus 42 c villacorta मे इसे "signo de caceri'a por trampa" कहा जाता। इसमे डवल पाश या गाँठ चिन्ह l, le चित्र 3 सं० 13 और विन्दु चिन्ह e चित्र 3 स० 3 है तथा लिप्यन्तरण के लिए le-e तथा पढने के लिए le है, इसके अर्थ है—फन्दा, पाश, खिसनेवाली गाँठ, फन्दे वाला जाल, या जाल। मोतुल शब्दकोष मे है "le lazo para cazar y pescar, y pescar con lazo" क्रियात्मक रूपरचना के साथ—उदाहरणार्थ leah का अर्थ है 'पाश के साथ पकड़ना' जिसके लिए मोतुल शब्दकोष कृदन्तीय रूप देता है—"lean: cosa enlazada o cogida en lazo" यहाँ पुन हम उस सिद्धान्त को देखते है जिसके अनुसार चिन्ह अपने आप मे अपर्याप्त है, स० 13 यद्यपि खिसकने वाली गाँठ या पाश le के चित्र तथा ध्वनि अंश le को बताने वाले

le पाश के चित्र से लिया गया है तो भी इस ध्वनि अर्थात् le पाश युक्त एकाक्षरिक शब्द को अकेले लिखने के लिए असमर्थ है, बल्कि इस नियम के अधीन है कि एक चिन्ह का दूसरे से सयोग अवश्य होना चाहिए, क्योकि यह अकेला नही आ सकता, यहाँ चिन्ह e के जोडने से उसके अन्तर्निष्ठ स्वर की पुनः पुष्टि होती है। अत इस प्रकार के चिन्ह समूहो अथवा चित्रो मे सश्लिष्ट तथा पुनरावृत्त अभिपुष्टि सिद्धान्तो का मिश्रण है। हम क्रियात्मक दृष्टि से रचित रूप leah 'पाश से पकडना' को le–e–a–'a' के लिए चित्र 3 स० 1 के साथ लिखा हुआ भी पाते है, मेरा विश्वास है कि Cyrus Thomas ने समूह का ठीक विश्लेषण किया है यद्यपि उनके कार्य का सकेत दिए बिना मैंने इस पर काम किया है। निस्सन्देह थामस के बहुत से पठन ठीक है।

चित्र 4 स० 6 मे, माया के साधारण बहुसश्लिष्ट शब्दो मे से एक है, जिसमे दो प्रकृतियो का सयोग करके प्रत्यय जोड़े गए है। Tro–cortesianus मे पृष्ठ 46 पर यह क्रिया की तीन उत्तरोत्तर अवस्थाओ को स्पष्ट दिखाने वाले तीन चित्रो के द्वारा स्पष्ट किया गया है—एक हरिण पकडा गया, तथा झुके हुए उस पेड के प्रतिक्षेप से ऊपर झटका गया, जिसमे पाश का फन्दा बधा हुआ है। यह, चित्र 3 के 12, 3, 19 तथा 1 चिन्हो के साथ le–e–sin–a (या –ah) लिखा गया है, तथा पढा जायेगा lesinah । यह शब्द माया समासो मे एक सामान्य प्रकार का विशेष शब्द है। दो प्रातिपदिको वाला तथा दूसरी के बाद जुडी हुई क्रियात्मक रूपरचना वाला यह शब्द माया समासो के सामान्य प्रकार मे अपने ही ढग का है।

प्रातिपदिक है le– जिसकी परिभाषा पहले दी जा चुकी है, तथा 'sin फैलाना या कस कर डोरी लगाना (जैसे किसी ढाचे पर कपडा, खाल या धागे ताने जाते है), 'कस कर खीचना, (draw taut) तने हुए धागो की डोरियाँ कसना, (string up) किसी फन्दे के जाल मे डोरी इस तरह बाँधना कि छूटने पर वह उछल पडे' इत्यादि। मोतुल शब्दकोष के अनुसार "Zin (i e. Sin) . estender pan'os O Cueros y colgar estendiendo O tender desarrug-ando, armar lazos, armar arco o ballesta."

इस प्रकार, समास के प्राय निम्न प्रकार के अर्थ होते है—दो प्रातिपदिको का x और y नामकरण करते हुए, समस्तपद x–y–ah या x–y–t–ah[7] का अर्थ है y के द्वारा x करना, अस्थायी रूप से, या किसी विषय को करना। अत, क्योकि le–ah का अर्थ है 'पाश मे पकडना' तो हम स्वतन्त्र रूप से ऐसे शब्द बना सकते हैं जैसे le–kab–ah (या अधिक आधुनिक le–K'ab–t–ah) हाथ

7. माया के मोतुल शब्दकोष में इस प्रकार के द्विपदीय समासो के लिए–ah प्रत्यय से पहले –t प्रत्यय वाले रूप सामान्य रूप से मिलते है।

की क्रिया द्वारा पाश मे पकडना le–K'ab–ah प्रयत्न करने की क्रिया द्वारा पाश मे पकडना—इत्यादि । तब हमारे शब्द le–sin–ah का अर्थ है 'sin' कर्म द्वारा पाश से पकडना, कसे तनाव के साथ पाश मे पकडना, कस कर तांत लगे पाश की उछाल से पकडना ।[8]

कुछ पृथक् शब्दो के पठन को देख लेने पर, आइये, अब हम माया चित्रलेखों मे लिखा एक छोटा सा वाक्य पढते है । चित्र 5 प्राचीन पाण्डुलिपि Tro–cortesianus के पृष्ठ 38 को दिखाता है; तथा विशेषरूप से वह वाक्य, जिसका हम परीक्षण कर रहे है, खण्ड ख मे बैठी हुई दूसरी आकृति के ऊपर 4 चिन्ह समूहो तथा चित्रो से बनता है । पृष्ठ के तीन क्षैतिज विभाजनो मे से बीच का चित्र 6 इस वाक्य को एक पक्ति पर लिखा हुआ, विश्लेषित, लिप्यन्तरित तथा अनूदित दिखाता है, जैसा कि चित्र 5 मे सुगमता से देखा जा सकता है । वे पाठ जो चित्रो पर टिप्पणी है, या इसे दूसरे ढग से कहे तो, जिनकी चित्रो द्वारा स्पष्ट व्याख्या की जाती है, उन्हे चित्रो के ऊपर रखा जाता है तथा दाएँ से बाएँ चित्र की चौडाई की ओर तथा फिर उसी तरह नीचे की पंक्ति पर पढा जाता है, अथवा ऐसी अवस्थाओ मे जहाँ कोई चित्र नही है वे नीचे की ओर चलती है । यह क्रम, लेखन के सादृश्य चित्र5 Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि का पृष्ठ 38 द्वारा बड़ी सुगमता से प्रदर्शित किया गया है । स्पष्ट रूप मे यहाँ हमारे पास बहुत ही सदृश, छोटे वाक्यो अथवा वाक्याशो की पुनरावृत्ति है । इस प्रकार यदि हम प्रत्येक समूह या चित्र को जो कि वही है, एक वर्ण प्रदान करे, तो प्रथम अथवा बाई ओर के चित्र के ऊपर की मध्यभागीय मूलपाठ A–B है, और तब नीचे की पक्ति पर C–D दाई ओर से आगे सीधा नीचे की ओर जाते हुए A–B-E–F, तो अगले चित्र पर पुन A–B–C–D तब फिर नीचे को A–B-G–H होगा । सबसे ऊपर तथा सबसे नीचे के खण्डो के पाठ उसी प्रकार लिखे हुए देखे जा सकते है, जो प्राचीन पाण्डुलिपियो मे आद्योपान्त सामान्य हैं । हस्तलिपियाँ एक ऐसी रीति मे लिखी प्रतीत होंगी जो आदिम अमरीकी गीतो, रागो, तथा उत्सवो मे काफी सामान्य हैं उपवाक्यो के वर्ग जिनके प्रत्येक वर्ग मे सभी स्थानो

8. प्राचीन पाण्डुलिपियों में हमें इस प्रकार के दूसरे समास भी मिलते हैं, उनमें ऐसे अन्य समास भी सम्मिलित हैं जिनमें Sin दूसरे पक्ष में आता हो, अतः Tro-Cortesianus (जैसे 41 a)में गठरी के रूप में बंधे हुए एक हरिण का चित्र है जिसकी टाँगें रस्सियों से कसकर बांध दी गई हैं, इसी के साथ चिन्ह समूह m--in-a है (Landa के ma चिन्ह से युक्त) जिसे सम्भवतः massinah पढ़ा जाता है, जो macinah (mac तथा sin पदो से बना है) का समीकृत रूप है, जिसका अर्थ है एक साथ कस कर बन्द करना, (बन्द मुट्ठी की तरह) खींच कर तथा कसकर, कसे हुए रस्सो द्वारा या कसकर खींची गई रस्सियों द्वारा ।
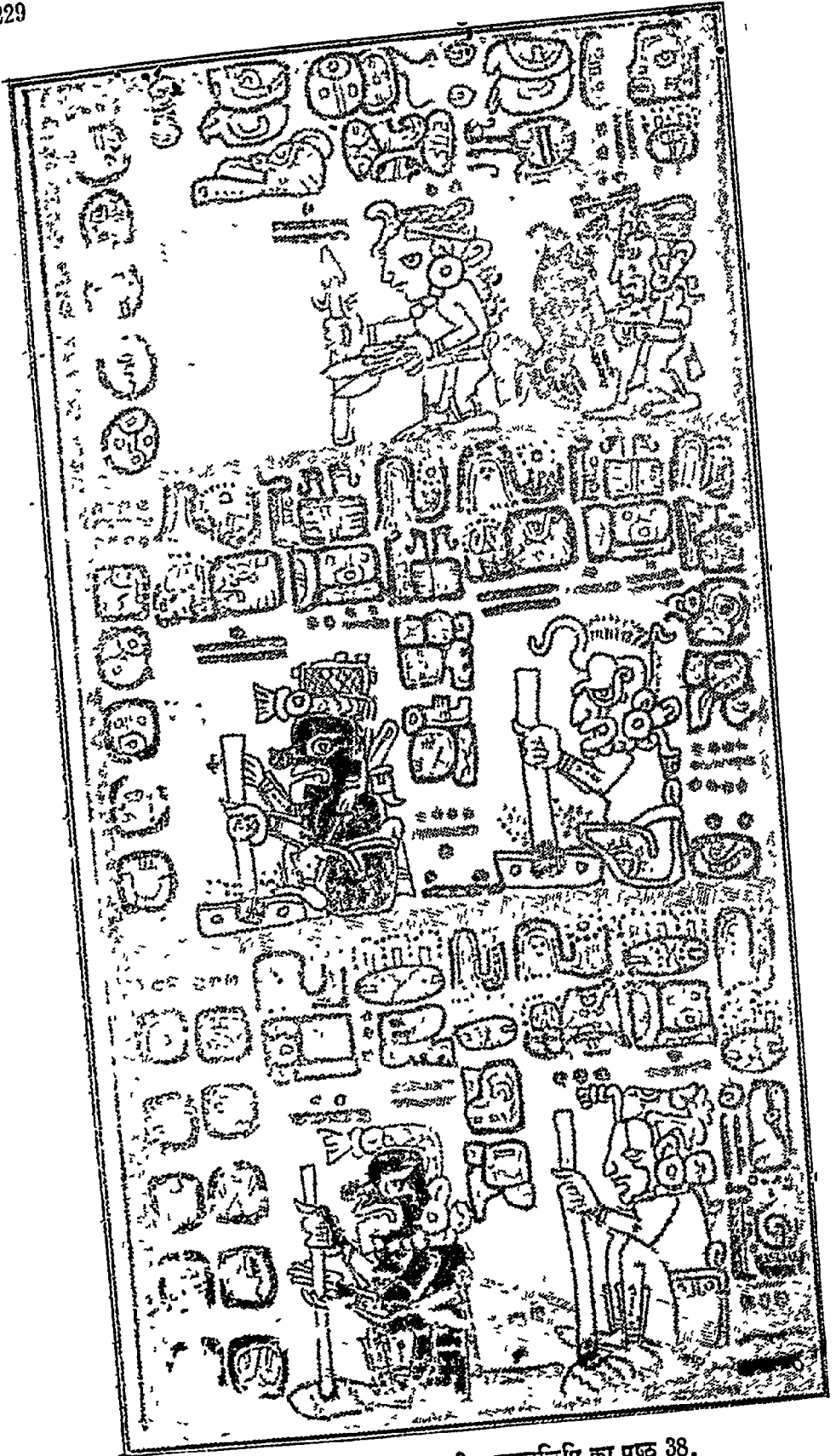
चित्र 5—Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि का पृष्ठ 38.

पर व्यञ्जन तत्त्व दोहराया गया है, जैसे गीत के पद्य की प्रत्येक पक्ति उसी ढंग से प्रारम्भ होती है परन्तु कुछ अन्तर का समावेश कर देती है। इस प्रकार मूलपाठ मे जिसका निरीक्षण हमने अभी किया है, वे पंक्तियाँ हैं जिनमे से प्रत्येक A–B से प्रारम्भ होती हैं और वाद मे भिन्न हो जाती है। निस्सन्देह, नवाहो गीत इस प्रकार के विषय के विशिष्ट उदाहरण है। जैसा कि चित्र दिखाते है—भाले से शिकार करने से सम्बन्धित सबसे ऊपर के खण्ड मे, प्रत्येक उप-वाक्य loman= चीरा गया, शब्द से प्रारम्भ होता है, जिसका अध्ययन हम पहले ही कर चुके हैं। फिर भी, हम इस ऊपर के खण्ड का विस्तार से विश्लेषण करने के लिए नही रुकेगे, क्योकि इस लेख की सीमाए हमे इसकी आज्ञा नही देती हैं।

वीच का, और नीचे का खण्ड, यद्यपि ये एक-रूप नही है पर एक दूसरे के बहुत सदृश है तथा छेदन से सम्बन्धित है जैसा कि चित्रो से देखा भी जा सकता है। वीच के खण्ड के चित्र अग्नि उत्पादन के लिए छेद करना दिखाते हैं, तथा नीचे का सेट किसी वस्तु का छेदन दिखाता है जो पत्थर प्रतीत होता है। प्रत्येक खण्ड मे प्रत्येक उपवाक्य छेदन करना या छेदन के लिए शब्द से प्रारम्भ होता है, जो न केवल इन चित्रो के साथ तुलना करने से स्पष्ट है, वल्कि माया पुस्तको मे से एक अन्य ड्रैस्डन (Dresden) प्राचीन पाण्डुलिपि से भी स्पष्ट है, जिसमे वही चिन्ह-गुच्छ छेदन करने के चित्रो के साथ दिया गया है। यह गुच्छ A प्रथम स्थान रखता है जो 16वी शताब्दी की माया भाषा मे (यदि आज भी नही तो) उप-वाक्य के विधेयक शब्द की नियमित स्थिति है, जैसा कि मोतुल शब्दकोष मे सैकडो छोटे तथा साधारण वाक्यो द्वारा दिखाया गया है। माया व्याकरण मे इस विधेयक के लिए रूप सम्बन्धी क्रिया होना जरूरी नही, (यद्यपि प्राय यह होता है) परन्तु यह वह है जो अग्रेजी अनुवाद मे विधेय से मिलता जुलता है। प्रत्येक उपवाक्य के अन्तिम दो शब्द C–D. आदि माया देवताओ के सुविदित नाम चित्र है। वे चित्रो मे दिखाए गये व्यक्तियो के नाम है, जैसा कि वहुत समय से जाना जाता है और परिणामस्वरूप, निश्चय ही वे उपवाक्यो के व्याकरणिक उद्देश्य है। प्रत्येक उपवाक्य का दूसरा गुच्छ B वीच के खण्ड मे B_1, नीचे के खण्ड मे B_2 कहा जा सकता है, यह निर्देश देने के लिए कि यह प्रत्येक खण्ड मे आद्योपान्त वही है, परन्तु दो खण्डो मे भिन्न हो जाता है विलोपन तथा विधेयक के वाद की स्थिति के द्वारा इसे क्रिया के परिणाम और / अथवा व्याकरणिक 'कर्म' का निर्देश करना चाहिए जो इस तथ्य से सहमत है कि दोनो खण्डो मे, विभिन्न उपकरणो के साथ, तथा विभिन्न परिणामो के साथ छेदन करना चित्रित है। इस प्रकार प्रथम वर्गीकरण के रूप मे हमारे पास है—

A, विधेयक अथवा क्रिया (छेदन करना)

B_1, B_2, उपकरण तथा / या परिणाम (अग्नि, पत्थर)

C, D . इत्यादि, कर्त्ता (देवताओ या व्यक्तियो के नाम)

चित्र 6—Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि के पृष्ठ 38 से लिए गए एक माया वाक्य का विश्लेषण ।

चित्र 6 मध्य भाग के दूसरे चित्र के ऊपर के वाक्य का विस्तृत प्रदर्शन है, जो चित्र प्राचीन पाडुलिपियो के रोमन नाक वाले देवता, या देवता D को छेदन से अग्नि बनाते दिखाता है । सबसे ऊपर की पक्ति मूल पाठ की नकल है, जिसे दो पक्ति की अपेक्षा, जैसा कि मूलपाठ मे है, एक पक्ति मे बाएँ से दाएँ व्यवस्थित किया गया है । मूल हस्तलिपि के समान यह पक्ति प्राचीन पाण्डुलिपियो मे प्रयुक्त लिखने की चित्रात्मक लिपि मे है । यह शिलालेखो की स्मारकीय, चित्रात्मक शैली से बहुत अधिक मिलती जुलती है, परन्तु कम अलकृत है, तथा इसमे वृत्ताकार रूपरेखाएँ अधिक है । इन दोनो ही शैलियो मे एक गुच्छ मे चिन्ह एक कमे समूह या एक पट्टी मे एकत्रित किए जाते हैं, जिसमे वे दो आयामो मे बाँटे जाते है, और वहाँ रेखीय क्रम का केवल चिन्हावशेष इस तथ्य मे है, कि गुच्छ के सामने या एकदम बाई ओर का भाग शब्द के अन्तिम भाग के लिए कभी नहीं होता तथा इसी तरह पिछला या दाई ओर का भाग कभी शब्द के प्रारम्भ के लिए नही होता । एक समूह मे चिन्ह प्राय एक दूसरे के सम्पर्क मे होते है, तथा प्राय उसी गतिशील रूपरेखा मे इकट्ठे, अवगुण्ठित, या इकट्ठे मिले हुए होते हैं । वे केन्द्रीय चिन्ह के ऊपर या नीचे जोडे जा सकते है, या वे दूसरे के साथ एक हो सकते हैं—अर्थात् एक चिन्ह दूसरे के ढाचे या आधार के रूप

मे सेवा करता है । सक्षेप मे, चिन्हो का इकट्ठा रखना हमारे लेखन के प्रकार की अपेक्षा चिन्ह बनाने वाली विधि के अधिक समान है[9]। परन्तु चिन्हो का पढना ठीक इसी तरह से है मानो वे रेखीय क्रम मे लिखे गए थे । यद्यपि यह क्रम प्रत्येक चित्र के लिए अलग से सीखा जाना चाहिए, अत अर्थ-निर्धारक के लिए प्रत्येक चित्र का अलग तथा दीर्घ अध्ययन आवश्यक है ।

चित्र 6 मे ऊपर दूसरी पक्ति, उन चिन्हो को प्रदर्शित करती है, जो एक विमात्मक रेखीय क्रम से समूहित प्रत्येक गुच्छ को व्यवस्थित करते है । ऐसे प्रवन्ध को मैं स्थूल प्रतिलिपि या रेखीय लिपि कहता हू, तथा कुछ साक्षी भी है कि माया मे ऐसी लिपि का रूप वास्तव मे प्रयुक्त होता था, यद्यपि उन शिलालेखो या प्राचीन पाण्डुलिपियो मे नही होता था जो सुरक्षित रखे गए है । लैन्दा एक आदिवासी सूचक के द्वारा इस ढग से[10] लिखे गए उच्चारणो ma ın k'atı तथा elele के दृष्टान्त उद्धृत करता है । ये चिन्ह निरन्तर क्रम-पूर्वक वाए से दाए तथा कुछ सटा करके या एक दूसरे को छूते हुए वनाए गए है । यह असभाव्य प्रतीत नही होता कि जैसे मिस्रियो ने अपनी लोकलिपि का प्रयोग किया, वैसे ही वाद के माया लोगो ने साधारण प्रयोजनो मे सुविधा के लिए ऐसी रेखीय लिपि का प्रयोग किया हो, जबकि चित्रात्मक लिपि अधिक पाण्डित्यपूर्ण, आलकारिक समझी जाती रही हो, तथा इसका प्रयोग महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो, धार्मिक अभिलेखो, तथा शिलालेखो मे होता रहा हो । चाहे कुछ भी हो, चित्रलेखो के किसी लेखाश का स्थूल प्रतिलिपि मे

---

9. यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि हमारी जैसी लेखन पद्धति, अर्थात् वर्णमालीय प्रकार की पद्धति की बहुत सी उन व्यवस्थाओ में, जिनमें समूहन की द्विविमात्मक विधि के अवशेष मिलते है, चिन्हो का रेखीय अनुक्रम पूर्णरूप में नही है । अतः बिन्दुयुक्त अरबी, बिन्दुयुक्त हिब्रू लेखन, तथा पिटमैन के शॉर्टहैन्ड में व्यञ्जनो के साथ स्वर बिन्दुओ का विन्यास द्विविमात्मक है, उन्हें वास्तविक उच्चारण के अनुरूप क्रम से नहीं लिखा जाता । देवनागरी वर्णमाला में स्वर चिन्ह व्यञ्जनो के साथ द्विविमात्मक ढंग से मिला दिए गए है, तथा 'इ' स्वर जिसका उच्चारण व्यञ्जन के पश्चात् होता है, उसे व्यञ्जन से पहले जोड़ दिया जाता है । हमारा अपना ωh इसी प्रकार विपर्यय से लिखा जाता है । यह वास्तव में hω है—एक विशेष चिन्ह गुच्छ जो क्रम की असामान्य स्थितियों को सुरक्षित रखता है । कुछ गुम्फाक्षर तथा आधुनिक विज्ञापन भी अक्षरो के द्विविमात्मक समूहन का प्रयोग करते है ।
10. Diego de Landa, *Relacion de las cosas de Yucatán* पहले उपवाक्य का अर्थ है "मै नही चाहता" । माया दृष्टिकोण से दूसरी अभिव्यक्ति निरर्थक है, परन्तु प्रसंग के दृष्टिकोण से देखते हुए यह निश्चित रूप से सूचक से "L-E" लिखने की प्रार्थना करने पर उसका 'le' लिखने का प्रयत्न है ।

रूपान्तरण एक ऐसी युक्ति है जो अर्थ-निर्धारक के लिए प्राय बहुत सहायक होती है। यह देखा जाएगा कि इस लेखाग के सभी चिन्ह चित्र 3 मे दिए गए है, ताकि स्थूल प्रतिलिपि की इस पक्ति से सारा उच्चारण मोटी रूपरेखा मे पढा जा सके, जैसा कि तीसरी पक्ति या लिप्यन्तरण मे दिखाया गया है। क्योकि बहुत से चिन्ह स्वरात्मक विशिष्ट रणन के लिए अनिश्चित हो सकते है, जबकि अभिमत अन्तर्निहित स्वर को सूचित करते हैं, अभिव्यक्ति के स्वर जहाँ तहाँ दिग्ध है, यद्यपि निश्चित स्वरो का निर्देश सामान्यत मिस्री या अनिर्दिष्ट हिब्रू से बहुत अच्छा है। किसी भी तरह, पूरी तरह नही, बल्कि एक सीमा तक स्वरो का लिप्यन्तरण 16वीं शताब्दी की माया भाषा पर आधारित है जिसमे प्राचीन पाण्डुलिपियो के समय से लेकर जो सम्भवत. बहुत पुराना नही है, इस विषय मे मूलरूप से बिल्कुल अन्तर नहीं आया है, तथा अशत यह अन्य माया बोलियो के तुलनात्मक साक्षी पर भी आधारित है। यह अन्वेषण का एक ऐसा क्षेत्र है जो प्राचीन पाण्डुलिपियो के विद्वत्तापूर्ण तथा भाषायी पठन के साथ साथ चलना चाहिए। परन्तु इस बात पर भी बल दिया जाना चाहिए कि स्वय अभिलेख मे असदिग्ध रूप से इसके बहुत से स्वरो का निर्देश किया गया है। अत चित्र 3 के a, e, i, u, प्रतीक, स्वरो का निर्देशन करने मे असदिग्ध है, चाहे शब्द के अन्तर्गत एक स्वर की स्थिति सदैव स्पष्ट न हो। अत हम इस लिप्यन्तरण पर पहुँचते है।

h--s--e--sa--u--to--kak i--ç,--mn--a k--ka--haw.

प्रथम शब्द मे e की स्थिति पूर्णरूप से स्पष्ट नही है, क्योकि यह e दोनो चिन्हो h तथा S के बीच लिखा गया है, तथा इसका एक अन्य सम्भव लिप्यन्तरण है he--ś--sa या he--e--ś--sa, जिसे या तो heśesah पढना चाहिए या heśˢah, जो यह निर्देश करेगा कि प्रातिपदिक, जिसका अर्थ 'छेदन करना' है, तथा जिसका रूप 16वी शताब्दी की माया भाषा मे haś है, प्राचीन पाण्डुलिपियो की बोली मे hes के अधिक निकट था। इस समय इसकी पुष्टि करने के लिए अधिक प्रमाण की आवश्यकता होगी, स्वर a लिखने मे निर्दिष्ट न होने के कारण, परन्तु माया के भाषायी प्रमाणो से युक्तिसगत पुनर्रचना होने के कारण 'haśesah' पढना अधिक अधिमान्य प्रतीत होता है।

लिप्यन्तर के नीचे माया भाषाविज्ञान के प्रकाश मे सामान्य अमरीकी ध्वन्यात्मक पद्धति मे लिखे गए मूलवाक्य की पुनर्रचना है, तथा इसके अनुवाद के नीचे पुनर्रचना की आवृत्ति है, जो पारम्परिक माया वर्तनी मे लिखी गई है। इसे इसलिए सम्मिलित किया गया है कि माया भाषा का विद्यार्थी वाक्य को सर्वाधिक परिचित ढग से लिखा हुआ देख सके, यद्यपि पारम्परिक वर्तनी का प्रयोग भाषायी प्रयोजनो के लिए उपयुक्त नही बताया जा सकता, क्योकि यह बाधाएँ भी उत्पन्न करता है, तथा इसमे सन्देह नही कि यह विद्यार्थियो के मनो मे काफी भ्रामक धारणाए भी उत्पन्न कर सकता है। अत. यहाँ पुनर्रचना के लिए अधोलिखित

शब्द है—ध्वन्यात्मक लेखन heśesah u-to'k–k'ak' ıçamnaka–ahaw.
पारम्परिक लेखन haxezahu tooc kak Itzamoaca ahau.
ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन के नीचे शाब्दिक अनुवाद है— "makes (or made) by drilling his burning-fire Itzamna our lord (बनाता है (बनाई) छेदन से अपनी जलती अग्नि Itzamna हमारा स्वामी") या अधिक सीधे शब्दों मे : "Our lord Itzamna kindles (kindled) his fire with a drill." (हमारा स्वामी इत्जम्ना छेदक से अपनी अग्नि प्रज्वलित करता है ।")

प्रथम शब्द प्रातिपदिक haś से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है—मरोडना या हथेलियो के बीच घुमाना, छेदन करना, तथा क्रिया-पदीय रूप के साथ, 'हथेलियो के बीच घुमाना, वर्मा चलाना, छिद्र करना, छेदन करना।' मोतुल शब्दकोष मे "has, ah, ab (यानि haś, haśah, haśab) · torcer con la palma o palma- de las manos y hazer tomiza o cordel assı, y lo assı torcido" तथा पुन "haxs; taladrar O agujerar taladrando y la cosa taladrada O agujerada assı."
छेदन के लिए एक यही प्रातिपदिक माया मे है, जिसे मैं जानता हूँ, अत, उदाहरण विशेषरूप से युक्तियुक्त है । वर्मा नाम के औजार के लिए शब्द haśab है। इस प्राचीन पाण्डुलिपि मे यह शब्द नही मिलता, बल्कि क्रियापदीय रूप मिलता है । क्रियात्मक रूपरचना का प्रत्यय es,–s (–ah जिसके बाद आता है) प्रेरणार्थक है, तथा अर्थ मे प्रत्यय—bes के समान है, x–es–ah का अर्थ है "इसे (व्याकरणिक कर्म को) 'x' की स्थिति मे रखता है या रखवाता है, या इसे 'x' के कर्म या स्थिति मे विद्यमान कराता है, और इसे 'x–ing द्वारा बनाता है, 'x' बनाकर । प्रेरणार्थक अर्थ का दूसरा प्रकार वह है जो उपस्थित स्थिति मे उपयुक्त है । प्रत्यय—ah उस सकर्मक क्रिया को बनाता है जो पहले ही सम्पन्न हो चुकी है, तथा इसका विरोध 'iK' प्रत्यय के साथ है जो उस सकर्मक क्रिया को बताता है, जो पूरी नही हुई या भविष्य या वर्तमान मे चलने वाली क्रिया को द्योतित करता है । इस प्रकार haśesah का अर्थ है "छेदन द्वारा इसे बनाता (बनाया) है ।"

छेदन से क्या बनाता है ? ऊपर की हमारी योजना के अनुसार जो अगले चिन्ह गुच्छ B_1 के द्वारा बताया जाता है, —बनाता है । इसी पृष्ठ के नीचे के खण्ड मे सवादी गुच्छ, पत्थर, या छेदन किए जाते हुए विषय पत्थर, को निर्दिष्ट करता है। उस स्थिति मे 'छेदन से बनाता है' का निस्सन्देह यह अर्थ नही है कि पूरी तरह छेदन से विषय को उत्पन्न किया जाता है, प्रत्युत् उस विषय के उत्पादन मे एक चरण पूरा करना है जिसमे छेदन की आवश्यकता है । अत इस विशेष विषय मे haśesah तथा haśah 'इसमे छेद करता है' मे बहुत सूक्ष्म अन्तर है । थोडा सा विषय से हटने पर B, गुच्छ सम्भवत e–ı–l–l.e पढा जाना चाहिए, यहाँ तीन की अपेक्षा बिन्दु कई है, तीन घुण्डियो का

'I' तथा 'डवल' पाश-कुण्डल 1 का पाश-कुण्डलों के बीच प्रस्थान=रेखाओं (laĉ) के द्वारा द्विगुणित किया हुआ रूप मिलता है। शब्द e:l का अर्थ 'तेजधार वाला यन्त्र', अर्थात् शस्त्र की नोक, चाकू इत्यादि हो सकता था। ऐसी नोक, या चाकू माया मे सर्वाधिक पत्थर के होते थे, तथा इसमे सन्देह नही कि कभी कभी उनमे छिद्र किए जाते थे।

मध्य खण्ड के लेख पर पुन. आने पर, यहाँ haŝesah B_1 का अर्थ है 'छेदन से B_1 बनाता है', वास्तव में यह कारण बनना या 'उत्पन्न करना' के अर्थ मे है, क्योंकि स्पष्टतया 'अग्नि' को सूचित करता है। यह मोतुल शब्दकोष के द्वारा उद्धृत 'अग्नि' के बरमे से अग्नि बनाता हैं, के लिए haŝah ḱaḱ (ḱaḱ 'fire') इस अभिव्यक्ति मे ठीक बैठता है, जो haŝesah की अपेक्षा अधिक साधारण तथा कम विभक्ति लगा हुआ रूप hasah प्रयोग करती है। मोतुल शब्दकोष मे "hax kak (अर्थात्, haŝ–[ah] ḱaḱ): encender lumbre casando fuego frotando un palo con otro," तथा "haxab kak (haŝab k'ak' अग्नि के लिए छेदन) artificio o recaudo con que sacan fuego los indios" समूह B_1 का u–to–kak के रूप मे विश्लेषण किया गया है, चित्र 3 के चिन्ह 23 u, चिन्ह to tu, (जिसे यहाँ to पढा जाएगा) तथा चित्र 3 का चिन्ह 1 जो यदि द्विगुणित तथा परिवर्द्धित ka (स० 8) हो तो इसे kaka, kak, या ka पढा जा सकता है। यहाँ kak पाठ बिल्कुल ठीक बैठता है। प्रारम्भिक u पूर्व स्थापित अन्य पुरुष के सार्वनामिक सकेत u को सूचित करता है। हमारे प्रस्तुत प्रयोजनो के लिए इसका कोई मूल्य नही है, कि इसे पूर्व-प्रत्यय समझा जाए या सार्वनामिक प्रातिपदिको से सदा एकदम पहले आने वाला पृथक् शब्द। पूरी तरह अग्रेजी (तथा अन्य भारोपीय भाषाओ) के व्याकरणिक नमूनों के कारण, यदि परवर्ती प्रातिपदिक का अर्थ अग्रेजी क्रिया की तरह किया जाए तो इसका अर्थ he (She, it, they) किया जाना चाहिए, परन्तु यदि प्रातिपदिक का अर्थ अग्रेजी सज्ञा की तरह किया जाए तो इसका अर्थ his (her, its, their) किया जाना चाहिए। परन्तु माया दृष्टिकोण से यह सदा उसी सम्बन्ध को सूचित करता है। माया प्रातिपदिक, अग्रेजी अर्थ मे न तो क्रिया होती है, न सज्ञा, बल्कि एक अकेला अलग वर्ग है, जिसे हमारे शब्दभेद से बिल्कुल भिन्न आधारो पर पृथक् किया गया है। वह प्रातिपदिक जिसके साथ यह u रचना मे है, वह है, जो शेष गुच्छ मे to–kak की तरह लिखा गया है।

फिर भी to–kak लिखना, लगभग ध्वन्यात्मक है, जैसा कि माया लेखन मे सामान्यत है। वह उच्चारण की ध्वनि को मोटी रूपरेखा मे सुझाता है, जिस सुझाव के कारण, पाठक मे, वास्तविक माया शब्द का अनुमान लगाने की आशा की जाती है। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, कि लेखन के लिए माया लोगो के द्वारा किए गए ध्वनि-विज्ञान के विनियोग ने इसमे आगे उन्नति नही की थी। अब,

शब्द, जिसका स्पष्टतया निर्देश किया गया है, वह नही है, जो प्रतिलेखन tokakसे आधुनिक अमरीकी स्वनविज्ञानी समझता है, बल्कि वह है जिसका वह to Kk'ak' के रूप मे प्रतिलेखन करेगा। यह एक समस्त पद है to K–k'ak जिसमे प्रातिपदिक है to·k 'जलाना, ले जाने वाला, ज्वलन' (O दीर्घ O को सूचित करता है)तथा k'ak' 'अग्नि'। मोतुल शब्दकोष इन्हे इस तरह देता है' tooc (अर्थात्, tok) .quemar, abrazar, y cosa quemada" तथा "kak (अर्थात् k'ak'): fuego, O lumbre" ध्यान से देखिए कि 'to·Kk'ak' को लिखने का माया ढग न तो K'ak' के अन्त मे श्वासद्वारीय, रजित तालव्य स्पर्श K' का, tok के अन्त मे सवादी अश्वासद्वारीय रजित स्पर्श K से भेद करता है, न दोनो के क्रम का भेद करना है, न ही KK' का किसी एक अकेले मे, और न ही दीर्घ O का ह्रस्व O से भेद करता है। यह सब कुछ उस ध्वन्यात्मकता का अनिवार्य अग है जो बोधात्मक होने की अपेक्षा अन्तर्निहित अधिक है, तथा स्थूल एवम् रूपरेखात्मक स्वरूप वाली है, और जिसका प्रयोग माया लेखको ने किया है। माया भाषा मे सामान्य तथा श्वासद्वारीय रजित स्पर्शो मे स्वनिमिक अन्तर है, परन्तु यह न्यूनतम अन्तर है। लेखन मे सामान्य स्पर्श तथा सवर्ण श्वासद्वारीय रजित स्पर्श, दोनो के लिए वही प्रतीक प्रयुक्त किया जाता है—इसके उदाहरण असख्य है। इसका यह अर्थ नही है कि प्राचीन पाण्डुलिपियो की माया बोली मे ये भिन्न ध्वनियाँ नही थी। यह प्राय: निश्चित है कि वे भिन्न ध्वनियाँ थी, जैसे कि वे माया की सभी आधुनिक बोलियो मे भी है। सभवत उनके लिखने मे उसी तरह भेद नही दिखाया जाता था जैसे अल्पतम रूप से भिन्न स्वनिमो मे (उदहरणार्थ लेटिन के दीर्घ और ह्रस्व स्वर) प्राय: लेखन प्रणाली मे भेद नही दिखाया जाता, क्योकि देशीय पाठक सदा प्रसग से बता सकता है कि इसमे कौन सी ध्वनि बोली जानी जानी चाहिए। तथा, यह प्रतिबन्ध थोडी बहुत मात्रा भेद के साथ सभी लेखन पद्धतियो पर लागू होता है, केवल उन लेखनो को छोड कर जो कि भाषा-वैज्ञानिको ने स्पष्ट सुनिश्चितता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त किए है, क्योकि इनका प्रयोजन साधारण सचार की आवश्यकताओ से परे रहा है।

u–to K–k'ak' अभिव्यक्ति का अनुवाद 'उसकी जलती हुई अग्नि' या शायद और अच्छा "उसकी प्रज्वलित होती हुई अग्नि," "उसका अग्नि को प्रज्वलित करना" किया जा सकता है। यह अभिव्यक्ति माया के द्वि-प्रातिपदिक समास के प्रकार का अनुकरण करती है, शायद वही प्रकार जिसकी पहले ही व्याख्या की जा चुकी है, यद्यपि "के साधन द्वारा" का भाग, यहाँ अनुवाद मे भरने की जरूरत नही है। अब हमने सारे विधेय के अनुवाद को प्राप्त कर लिया है; (वह) अग्नि का अपना प्रज्वलन छेदन द्वारा उत्पन्न करता है और यह स्पष्ट है कि इस अभिव्यक्ति का hasesah u–to·k–k'ak मोतुल शब्दकोष मे उद्धृतhaśah k'ak' से अधिक विस्तृत रूप है, जैसे कहने का यह ढंग, कि अग्नि के वर्म से अग्नि जलाना आरम्भ करता है, यह उसी मौलिक अभिरचना का अनुसरण करता है ।

भ्रान्त धारणा के कारण किए जा सकने वाले एक आक्षेप का पूर्वानुमान करके, मैं यह कहने के लिए, यहाँ सक्षेप मे विपयान्तर पर जाना चाहूँगा, कि कभी कभी चिन्हगुच्छ to–kak प्राचीन पाण्डुलिपियो मे वहाँ भी आता है जहाँ अग्नि का कोई चित्रित सकेत नही होता, तथा ऐसी दशाओ मे यह शिकार दृश्य मे एक पशु का सकेत देता हुआ प्रतीत होता है। इसका एक उदाहरण चित्र 5 मे ऊपर का खण्ड, दूसरे चित्र के ऊपर, देखा गया है, जहाँ गुच्छ to–kak-a चित्र 3 स० 1 के –a के साथ तथा पूर्ववर्ती u के विना मोटे रूप मे loman u–NORTH tokaka x "speared (in) his north (is) व्याकरणिक विषय) –x" के रूप मे विश्लेपण-योग्य वाक्य का अग बन कर आता है। मैं पहले एक सुझाव दूँगा जो वहुत गम्भीर तो नही, परन्तु एक ऐसा स्पष्टीकरण है, जो मनोवादी उपगम पर अधिक वल देता है। मैं यह सुझाव दूँगा कि यह चित्र दोनो के साथ, अर्थात् अग्नि के चित्रो तथा शिकार किए गए पशु के चित्रो के साथ क्यो आता है — इसका कारण यह है कि यह एक ऐसा चित्र है जो वलि देने, या यज्ञ का द्योतन करता है, अत. इसका अर्थ या तो यज्ञीय अग्नि या यज्ञीय-पशु है। अव स्पष्टतया इस प्रकार की व्याख्या, अपने नृकुल-विज्ञान सम्वन्वी प्रसग की हल्की झलक के साथ कुछ उन लोगो के मस्तिष्को को ठीक जचती है, जो स्वय को माया चित्रलेखो मे व्यस्त रखते है। परन्तु इसके विरुद्ध चेतावनी दी जानी उचित है कि यह वहुत आवश्यक है कि चित्रलेखो को भाषा-विज्ञानी ही हाथ लगाए दूसरे कोई नही। निस्सन्देह, प्रस्तुत विषय मे यह व्याख्या पूर्णतया मेरे द्वारा घडी गई है। मेरा विश्वास है कि एक प्रशिक्षित भाषाविद् यह पूछना चाहेगा कि क्या तुमने इस सर्वथा अनुमानित परिकल्पना को अपनाने से पहले व्याख्या के लिए उच्चारणो की समाकृतियो तथा शव्द सग्रह की सामग्री की खोज कर ली है? निस्सन्देह, वास्तविक कारण यह है कि tok 'जलाना' प्रातिपदिक के अतिरिक्त माया मे समान ध्वनि वाला प्रातिपदिक tok है (ह्रस्व O के साथ) "ले जाना, वलपूर्वक ले जाना, पकड लेना, दूर ले जाना" इत्यादि। मोतुल शब्द-कोष मे "toc, ab, ob, (अर्थात् tok): quitar, tomar por fuerza, privar, arrebatar, robar y usurpar casas, y cosas muebles" इन स्थिति मे चिन्ह गुच्छ to–kak का प्रयोग समस्त शव्द to'K–K'ak' लिखने के लिए प्रयुक्त नही किया जा रहा, प्रत्युतपदिक tok के किसी समान ध्वनि वाले व्युत्पादी रूप या विभक्ति शब्द को लिखने के लिए किया जा रहा है, तथा शायद शब्द का अर्थ है—"शिकार ले जाया गया", या "मारा गया पशु, पकडा गया पशु, शिकार किया गया पशु" सम्भवत इस शब्द मे tok तथा आम्रे-डित वहुवचन प्रत्यय–ak है, अत इसका "शिकार किए गए कई पशु" अर्थ होगा। यह प्रसग इस शब्द का भेद इसी के समान लिखे जाने वाले, तथा अग्नि से युक्त शब्द से दिखाने के लिए काफी है।

अगला चिन्ह गुच्छ, i–ç–mn–a, Içamna शब्द का लेखन, "Itzamma

प्रमुख माया देवता का नाम , जो प्राचीन पाण्डुलिपियों का रोमन नाक वाला देवता है'', बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि माया चित्रलेखों में लिखा जाने वाला, तथा पढा गया यह पहला व्यक्तिवाचक नाम है। व्यक्तिवाचक नाम, तथा विशेषतया व्यक्तिगत नाम, किसी भी लिपि के अर्थ-निर्धारण में विचित्र विश्वासोत्पादकता रखते है। जब भी वे उपलब्ध हो जाते है तो अर्थ निर्धारण में आदर्श साधन माने जाते है। जब एक अर्थ-निर्धारक अपने ढग की प्रणाली से एक ऐसे सुविदित व्यक्तिवाचक नाम को, जो उसकी पाण्डुलिपि में आना चाहिए, पढ सकता है, तो वह जानता है कि वह ठीक मार्ग पर है। यह स्मरणीय रहेगा कि एक शिलालेख में ये Ptolemy तथा Cleopatra के नाम थे जिन्होने चैम्पोलिअन को सबसे अधिक प्रभावशाली परिणाम दिए, तथा उसी प्रकार Behistun शिलालेख मे Xerxes तथा Darius के नाम थे, जिन्होंने रालिन्सन को कीलाक्षरो के अर्थ निर्धारण के लिए उसका प्रारम्भिक सूत्र प्रदान किया। इस बात पर बहुत पहले सहमति हो चुकी थी कि प्राचीन पाण्डुलिपि चित्रों का रोमन नाक वाला देवता, या देवता D, लक्षणो में परम्परा से Itzamna के रूप मे ज्ञात देवता से मिलता है । उसका चित्रलेख सदा इसी तरह से लिखा जाता है। यदि हम देवताओ के प्राचीन नामो के विषय मे और अधिक जानते तो अर्थ निर्धारण मे हमारी प्रगति को पर्याप्त सहायता प्राप्त होती । दुर्भाग्यवश, देवता Kukulcan, जो प्राचीन पाण्डुलिपियो मे इतनी बार प्रकट होता है, स्पष्टतया प्राचीन पाण्डुलिपियों में या अन्यत्र उसी नाम से नहीं पुकारा जाता, या, यदि वह उस नाम से पुकारा जाता है तो यह ऐकिक शब्द-चिन्ह से लिखा जाता है ।

Kahaw उच्चारण का प्रतिनिधित्व करने वाले अगले चिन्ह-समूह K–ka–haw की पुनर्रचना Ka–ahaw के रूप मे की जानी चाहिए, जिसका अर्थ है 'ईश्वर', 'हमारा स्वामी', हमारा राजा। माया देवराज के रूप में मे Itzamna की यह विशिष्ट उपाधि थी । Chumayel के Chilam Balam मे तथा Tizimin मे भी इस देवता का निर्देश किया गया है, तथा इसे Itzamna kavil कहा गया है । यहाँ kavil अमरीकी स्वनिक पद्धति में K'awil के बराबर है, Kahawil से (–ah– के लोप मे उत्पन्न होने वाला श्वासद्वारीयरजन) Ka–ahawil से, जिसका वही अर्थ है जो Ka–ahaw का है । इस प्रकार यह अर्थ निर्धारण Xerxes के नाम के आधार पर रॉलिन्सन के 'राजा, महान राजा, राजाओ का राजा' के अभिज्ञान के तुल्य माना जा सकता है। मोतुल शब्दकोष ahaw की परिभाषा इस प्रकार देता है "ahau(ahaw): rey O emperador monarca, principe O gran sen'or'' पूर्व-योजित सार्वनामिक Ka (पारम्परिक वर्तनी ca), परवर्ती शब्द पर नियन्त्रण करने वाला मध्यम पुरुष का बहुवचन है, इस सम्बन्ध का अनुवाद 'सम्बन्धवाचक', उस समय होगा जब शब्द का संज्ञा के रूप मे अनुवाद किया जाता है, तथा जब किसी क्रिया के द्वारा अनुवाद किया जाए तो इसका अर्थ 'उद्देश्य' होगा। यहाँ, निस्सन्देह इस शब्द का अनुवाद है "हमारा" । प्राचीन

पाण्डुलिपियों में गुच्छ K–ka–haw "हमारा स्वामी", Itzamna नाम के साथ निरपवाद रूप मे सलग्न रहता है, विरले ही यह छोडा जाता है, तथा विरले ही यह अन्य देवताओ के नाम के साथ आता है । यदा कदा ही देवताओ के नामो के साथ, हम साधारण उपाधि ahaw "स्वामी" a–hw की तरह, a चिन्ह के साथ, जो इस लेख मे सूचीबद्ध नही किया गया है, परन्तु लैन्दा ने जिसे थोडे से भिन्न रूप मे उद्धृत किया है, तथा hw के लिए चित्र 3 की स० 6 के साथ, लिखा हुआ पाते हैं । माया लेखन के इस सामान्य नियम के अनुसार, कि दिवस चिन्हो के अतिरिक्त चिन्हो का पृथक् प्रयोग नही किया जाएगा, ahaw शब्द चिन्ह 5 (haw) के साथ अकेला नही लिखा जाता, उस स्थिति को छोड़ कर जबकि इसका अर्थ ahau दिवस होता है ।

इस प्रकार हम अपने अन्तिम अनुवाद पर पहुँचते है : "हमारा स्वामी Itzamna छेदन से अपनी अग्नि प्रज्वलित करता हैं" ।

इस अर्थ-निर्धारण तथा अनुवाद का महत्त्व, विषय-वस्तु मे रुचि अथवा रुचि के अभाव से बिल्कुल निरपेक्ष है। जहाँ तक उस सूचना का सम्बन्ध है, जो यह अनुवाद हमे माया अथवा स्वय अपनी विषय-वस्तु के बारे मे देता है, वह बिल्कुल नगण्य है, क्योकि यह सूचना उससे अधिक नही है, जितनी कि हम केवल चित्रो से इकट्ठी कर सकते थे। इसका महत्त्व है 'भाषायी' तथा 'वाङ्-मीमाँसात्मक' । भाषायी—क्योंकि यह एक भाषा की सरचना के विषय मे सूचना देता है—भूतकाल के किसी विशेष युग की भाषा के विषय मे इतनी सूचना देता है जितनी कि लेखन अभिव्यक्ति कर सकता है, वॉङ्मीमासात्मक—क्योंकि यह भूतकाल की अवधि मे, तथा ऐतिहासिक प्रसग एवम् परिदृश्य मे साहित्य तया सस्कृति मे प्रतिबिम्बित सभ्यता के अध्ययन का पूर्ववर्ती है । इस छोटे से वाक्य से भाषायी तथा वाङ् मीमासात्मक सामग्री एकत्रित की जा सकती है, जिसके बहुत थोडे से अग पर इस लेख मे विचार विमर्श किया गया है। यह सामग्री ऐसी है जिसकी परीक्षा की जा सकती है, तथा सह-सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है; और आगे आने वाली उत्तरोत्तर बढने वाली कठिनाइयो वाले अनुसन्धानो मे स्वत शोधनात्मक रूप से प्रयोग किया जा सकता है । इस वाक्य की और अधिक शाखाओ का पादटिप्पणियो मे केवल सकेत मात्र दिया गया है, जिन्हे स्थान की कमी के कारण अपेक्षाकृत बहुत सक्षिप्त रखा गया है। इस प्रकार की प्रत्येक पादटिप्पणी वास्तव मे विस्तृत अध्ययन का प्रतिनिधित्व करती है । इस प्रकार अर्थ-निर्धारण स्वय को उन वाक्यो के निरन्तर बढते हुए सश्लेषणो पर स्थापित करता है, जिनका अनुवाद चित्रो के वर्गो से नियन्त्रित है, तथा जो वाक्य एक बढते हुए व्याकरण, वाक्य विन्यास, शब्द-भण्डार, तथा चिन्ह-सूची को परस्पर मिलकर उत्पन्न करते हैं ।

माया चित्र लेखो को पढने का प्रयत्न करने के दो मुख्य गलत रास्ते है । एक गलत रास्ता है—इस विषय से सम्बन्धित सभी कुछ लिख डालने का प्रयत्न करना—

एकान्त मे चले जाना और अन्तत. एक पुस्तक के साथ प्रकट होना—एक पुस्तक जो सभी "कुछ बताती है", जो Tro-cortesianus के प्रथम पृष्ठ से लेकर ड्रेसडन (Dresden) के अन्तिम पृष्ठ तक प्रत्येक विषय पर धडाधड बोलती है, अर्थ लगाती है, व्याख्या करती है, तत्त्व प्रस्तुत करती है। गत सौ वर्षो मे ऐसी कई पुस्तके रही है। प्राय. ऐसी पुस्तके मूल सिद्धान्त की खोज की घोषणा करती है। तब यह मूल सिद्धान्त, लेखक की इच्छा से लागू किया जाता है, और यह चाल इतनी सुगमता से प्रदर्शित कर दी जाती है जैसे एक जादूगर टोप मे से खरगोश निकाल देता है। तिस पर प्राय. ऐसा लेखक, माया-भाषा तथा सामान्य रूप से भाषायी कार्य-प्रणाली से अपने थोडे से परिचय को प्रकट कर देता है। ऐतिहासिक लेखन कभी कुञ्जियो से नही पढे जाते है—कभी कोई कुञ्जी नही होती, केवल खोज होती है । अप्रौढ अर्थ-निर्धारक सीधे लेखन तथा गूढ-लिपि मे मिथ्या-सादृश्य मान लेने मे प्रवृत्त हो सकता है। वास्तव मे शब्द, 'decipher', ('अर्थ-निर्धारण करना') जिसका मैने इस लेख मे इतनी बहुलता से प्रयोग किया है, एक गलत धारणा से युक्त है। मैने इसका प्रयोग क्यो किया है? मेरा अनुमान है कि यह शब्द साधारण एवं विशद् है, इस प्रकार के शोध के लिए प्राय: यह प्रयुक्त होता रहा है, और मैं प्रयोग के वशीभूत हो गया हूँ।परन्तु वास्तव मे कोई व्यक्ति साहित्य का अर्थ निर्धारण नही करता, बल्कि केवल गूढ लिपि का अर्थ निर्धारण करता है। गूढ-लिपि, उन लोगो से, वर्ण्य विषय को जानबूझ कर छिपाने के उद्देश्य से लिखने का एक ढग है, जिनके पास कुञ्जी नही होती। इसका कुञ्जी से अर्थ निर्धारण किया जाता है, क्योंकि पहले यह कुञ्जी से गूढ बनाई गई है। सीधे सादे लेखन का, जिसकी सही लिपि सबसे नही, बल्कि थोडे लोगो से छिपानी अभिप्रेत है, वास्तव मे अर्थ-निर्धारण नही किया जाता, इसका विश्लेषण और अनुवाद किया जाता है, इस प्रकार के विश्लेषण और अनुवाद की पद्धतियाँ, सन्देश का अर्थ निकालने वाली पद्धतियो से काफी भिन्न है। ये मिस्री अर्थ-निर्धारण करने के लिए चैम्पोलिअन तथा यग (Young) की पद्धतियाँ है, बेबीलोनियन को पढने के लिए रालिन्सन तथा ग्रोटेफैन्ड (Grotefend) की पद्धतियाँ, हित्ती को पढने के लिए ह्रोजनी (Hrozny) स्तर्तेवाँ (Sturtevant) की पद्धतियाँ है, वे भाषा-विज्ञान तथा वाङ्-मीमासा की पद्धतियाँ है।

माया प्राचीन पाण्डुलिपियो के भाषायी अग पर आक्षेप करने का दूसरा गलत ढग है, Sitzenfleisch का उपगम। यह काफी समय तक पृथक् चित्रो या शब्दो पर अधिक ध्यान देता है, और यह बडी आसानी से भूल जाता है कि वाक्य जैसी किसी चीज का भी अस्तित्व है। मान लो, कि इस पद्धति से कोई व्यक्ति Itzamna के चित्र का अर्थ निर्धारण, या आशिक अर्थ निर्धारण करने मे सफल हो जाता है। तब फिर उसे, साहित्य मे इत्जमना की प्रत्येक चित्रलिपि का निरीक्षण करने, लेखन के वैशिष्ट्य से लेकर अत्यन्त सूक्ष्म भेदो तक का ध्यान रखने, तथा इसका, पहले, इत्जमना के विषय मे एकत्रित की जा सकने वाली सूचना के प्रत्येक

अंश से सम्बन्ध जोड़ने, और फिर इत्ज़मना से सम्बन्धित किए जा सकने वाले प्रत्येक मध्य अमरीकी क्षेत्र के देवता से सम्बन्ध जोड़ने मे कई वर्ष लगाने पड़ेंगे। किसी व्यक्ति के लिए केवल चित्रलिपि, पौराणिक कथाओं, धर्म तथा लोकविज्ञान के समुद्र मे छलाँग लगाने के तल्ले का कार्य करके दृष्टि से ओझल हो जाती है तथा, सम्भवत: अन्त में वह "इत्ज़मना की धारणा", शीर्षक वाले एक प्रबन्ध को हाथ में लेकर बाहर आ सकती है। यह प्रणाली शब्द अध्ययन पर पूरी तरह ध्यान देने से, मूलपाठ मे शब्द की विशिष्ट आवृत्तियों से इतनी दूर चली जाती है, कि अन्ततः यह बिल्कुल भाषायी नही रहती, तथा कुछ और ही बन जाती है। वाक्यों के बिना शब्द कुछ भी नही है। शब्द क्या हैं—यह निर्भर करता है इस बात पर कि शब्द 'क्या करता है', अर्थात् वाक्य मे 'अपने कार्य' तथा 'स्थिति' पर निर्भर करता है। यह बात, इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि शब्द कैसे लिखा गया है। माया में, अंग्रेजी की तरह, बहुत से समनाम शब्द है तथा ऐसे शब्द भी हैं जो समनाम तो नही हैं, परन्तु लिखे समान रूप से जाते है, जैसे अंग्रेजी में lead (धातु) तथा lead (आगे जाना)। अत. चिन्हों की ध्वनियों तथा उनके चित्रात्मक संयोगों का निर्धारण केवल आधा संघर्ष है।

माया चित्रलेखो के अर्थ-निर्धारण तथा माया साहित्य के पठन के लिए केवल एक ही मार्ग है। यह है वाक्यो की बढती हुई श्रृंखलाबद्धता के द्वारा कम कठिन से अधिक कठिन की ओर बढना; उन वाक्यो से प्रारम्भ करना जिनका अर्थ चित्रों से समझा जा सकता है, भाषायी अभिरुचि तथा भाषायी उपलब्धियो को निरन्तर सर्वप्रथम मानते हुए, तथा विषयवस्तु से सापेक्ष्य निष्कर्षो को दृढतापूर्वक दबाए रखते हुए माया चित्रलेखो को पढना। भाषायी उपलब्धियाँ अन्तत भाषायी विद्वानो की कसौटी पर पूरी उतरनी चाहिएँ तथा बहुत से भाषायी विद्वानो के सहयोग का आधार बननी चाहिएँ। एक व्यक्ति साहित्य की व्याख्या के लिए साधन नही हो सकता, ऐसे कार्य के लिए बहुत से ऐसे विद्वानो के पारस्परिक योगदान की आवश्यकता होती है, जो मौलिक सिद्धान्तो के विषय मे सामान्य सहमति प्रकट करने मे समर्थ हो। भाषायी सिद्धान्तो मे ही इस प्रकार की वैज्ञानिक सहमतियो के लिए आवश्यक दृढ-धारणा निहित है।

ज्यो ज्यो शोध की प्रगति होती है, विस्तार होता है, तथा वह अधिक सुनिश्चित होता जाता है, तो वह ऐसे वाक्यो को कुछ विश्वास के साथ पढने मे समर्थ हो जाता है, जिनमे अनुवाद को नियन्त्रित करने वाले चित्रो का अभाव होता है। इस प्रकार हम शिलालेखो के अशो तथा प्राचीन पाण्डुलिपि Peresianus की लम्बी चित्ररहित हस्तलिपियो को, जिनका अर्थ अब बिल्कुल गूढ है, सावधानी से पढना प्रारम्भ करेंगे। जब प्रमुख भाषायी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त हो जाती है, तो अध्ययन अधिकाधिक वाँङमीमासात्मक हो जाता है, अर्थात् विषयवस्तु, सास्कृतिक सामग्री, तथा इतिहास अधिक महत्त्वपूर्ण भाग लेने लगते हैं, केवल पठन का ही नही, अपितु जितना अधिक सम्भव हो सकता है, उन सकेतो, निर्देशो,

अभाषायी प्रसगो तथा, उन सास्कृतिक अभिरचनो को समझने का विषय भी हो जाता है, जो मानो, अनुवादो के केवलमात्र शब्दो तथा व्याकरण के माध्यम से केवल झलकियो मे देखे जाते है। यह वाङ मीमासा है। परन्तु वाँङ मीमासा के आधार के रूप मे हमारे पास भाषा-विज्ञान अवश्य होना चाहिए। केवल इसी ढंग से हम भी माया भाषा के इतिहास तथा सस्कृति को समझने की आशा कर सकते है।

होपी की वास्तुकला* शब्दावली के भाषायी घटक

होपी मे मकान बनाने का सामान्य पदार्थ पत्थर है। रायोग्रान्दे (Rio Grande) प्रदेश मे भवन-निर्माणार्थ प्रयोग मे लाई जाने वाली कच्ची ईंटो (adobe) का प्रयोग यहाँ कम होता है। पत्थर, स्वय होपी लोगो द्वारा, खान से निकाला जाता है तथा थोड़ा सा तराशने के बाद बिना चूने के ही चिन दिया जाता है। दीवारे केवल पत्थर की बनी हुई होती है। छत तथा छत के नीचे का हिस्सा, दीवारो मे फँसाई गई गोल बल्लियो या शहतीरो के ऊपर सटाकर रखे गए लट्ठो की तह पर चिकनी मिट्टी की कई इञ्च मोटी परतो से लीप कर बनाया जाता है। दीवारो और छतों के अन्दर की ओर का भाग मिट्टी के पलस्तर या महीन चूने की टीप करके तैयार किया जाता है, और फिर बढ़िया खड़िया-मिट्टी से सफेदी कर दी जाती है। बाहर की ओर दीवारो पर या तो चूने की टीप कर दी जाती है या फिर चिनाई को उसी तरह छोड दिया जाता है। होपी में एक-मञ्जिले मकान सबसे अधिक मिलते हैं, परन्तु दो-मञ्जिले भी काफी मिल जाते है, और वाल्पी (Walpi) मे तो कही कहीं तीसरी मञ्जिलें भी देखने मे आती है। सीढियो और जीनो, दोनो का ही प्रयोग किया जाता है, और दोनो ही मकान से बाहर होते है। विशेष धार्मिक अनुष्ठानों के निमित्त प्रयोग मे लाया जाने वाला तहखाना या कीवा भी तत्वत. इसी के समान होता है, अन्तर केवल इतना है कि यह जमीन के अन्दर होता है तथा पूर्णत या अशत ज़मीन खोखली करके बनाया जाता है। इसका ऊपरी भाग कुएँ की मेढ की तरह ऊपर को उभरा हुआ होता है और ऊपर छत होती है, जो अन्दर जाने की सीढियो को भी ढँक लेती है।

होपी भाषा मे पर्याप्त मात्रा मे ऐसे शब्द है जिन्हें रचना सम्बन्धी तत्त्व या इमारतो के सघटक अग कहा जा सकता है, जिनमे मकानो के आवश्यक सहायक उपकरण भी सम्मिलित है, जैसे सीढियाँ, जीने और खिडकियाँ आदि। ऐसे शब्द व्याकरण की दृष्टि से सभी सज्ञा रूप होते है। नीचे इसका प्रतिनिधित्व करने वाली एक सूची दी जा रही है, जो नीवो से लेकर ऊपर तक रचनाक्रम के अनुसार हैं।

Int. J. Amer. linguistics 19, 141-145 (1953) से पुनर्मुद्रित। यह लेख व्होर्फ द्वारा न्यूयार्क तथा येल की अनौपचारिक भाषायी गोष्ठी को 25 फरवरी सन् 1940 में हुई मीटिंग में प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया था। यह पाण्डुलिपि व्होर्फ द्वारा जार्ज-एल, ट्रेगर के पास छोड़े गए पत्रों से प्राप्त हुई है। इसका पुनरीक्षण एडवर्ड ए० कैनडं ने किया था।

Kiza: "नीव या नीवें"; tekʷa "चिना हुआ मकान का अंग", पूरी बनी हुई इमारत का भाग नही, "अधूरी दीवार, छतरहित दीवार, या किसी खण्डहर की अवशिष्ट दीवारें"; tekʷanmera "घेर या चारदीवारी"; tèwi "टाँड या पैहड़ी, अलमारी और आला", यह शब्द दोनों प्रकार की पैहडियो के लिए प्रयुक्त होता है—स्वाभाविक शिलाफलक या चिन कर बनाए गए रूप के लिए; tekʷni "दीवार", मुख्यरूप से छती हुई दीवार, परन्तु तैयार की गई पत्थरो की चारदीवारी या प्राचीर के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता है; ?èci "विभाजक दीवार" या किसी भी प्रकार का घेरा या अवरोध; ?e?èopı, ?eopi "दरवाजा", अर्थात् बन्द करने की कोई चीज़ या दरवाज़ा ही; höci'wa "द्वार का खुला भाग"—द्वारमार्ग; Pokso "गवाक्ष, हवा के लिए छिद्र, बिना शीशे या बिना रोगन की खिड़की, चिमनी"; panávca "शीशे का टुकड़ा, या शीसे वाली खिड़की"; nayáve "धूप मे सुखाई हुई ईंट"; Palwi Pálwicọqa "पलस्तर करने की मिट्टी" जिसका प्रयोग टीप या सफेदी के लिए होता है, "फर्शी मिट्टी"; ki.qölö एक से अधिक मञ्जिलों वाली इमारत की सबसे निचली मञ्जिल, तहखाना, या ऐसी मञ्जिल जिस पर कोई मञ्जिल हो; kèvẹla kè vẹLpı "छत अन्दर की"; Wúna लकड़ी की बल्ली का कैसा भी टुकड़ा, पालक, फट्टा, खम्बा, लट्ठा, बल्ला", मकान में लगाया हुआ, न लगाया हुआ; lèstàvi "शहतीर या छत की कड़ी या ऊपर की छत—या इसके लिए बल्ली का लट्ठा—प्राय: जब मकान मे उसका प्रयोग किया गया हो"; Kigálmo "ओरी" या "कार्निस" (छज्जा); kı.?ámı "छत" (छत के ऊपर आदि अभिव्यक्तियो के लिए इस शब्द का प्रयोग नही होता); kiska "सुरग या ढका हुआ मार्ग, या छता हुआ रास्ता—छत्ता।"

ये उन्नीस पद कुछ बहुत ही साधारण शब्दो मे से है। इनमे से आठ अविश्लेपणीय प्रातिपदिक है, अथवा कुछ परिस्थितियो मे आगिक रूप से अनुमानतया विश्लेषणीय है। अन्य ग्यारह स्पष्ट रूप से साधितपद अथवा समस्त पद है।

इस वर्ग के सारे पद, जो सरचनात्मक तत्त्वो या अगो के द्योतक है, "सज्ञाएँ" है। इनके दो कारको—कर्त्ता और कर्म मे शब्द रूप मिलते है तथा अधिकृत रूपो का, या रचित-अवस्था रूपो का एक वर्ग मिलता है।

जब हम व्याकरणिक सज्ञा श्रेणी को देखते है तो आन्तरिक त्रिविमात्मक अवकाशो के लिए शब्दो का अभाव, हमारा ध्यान आकृष्ट करता है—जैसे कि हमारे शब्द—कमरा, कक्ष, सभा भवन, गलियारा—बरामदा, कोठरी, गुहागृह, तहखाना, अटारी, छज्जा, तहखाना, गोदाम' आदि, यद्यपि यह सत्य है कि होपी इमारतें कई कक्षो मे विभक्त होती है, कई बार तो विभिन्न प्रकार के निवासो के लिए विशेप रूप से बनाई जाती है। इस वस्तुस्थिति का हमे तब तक पता नही चल सकता जब तक कि हम इसे पहले व्याकरण के दृष्टिकोण से न देखे, क्योकि यदि हम सधारण रूप मे सूचक से कमरे के लिए कोई शब्द पूछे तो हमे उत्तर अवश्य

मिल जाएगा—एक ऐसा शब्द जो उसकी दृष्टि मे हमारे "Room" शब्द का समानार्थक तथा अनुवाद होगा। तथापि इस शब्द तथा ऐसे ही अन्य शब्दो को, जिनका प्रयोग आन्तरिक अवकाशो को बताने के लिए किया गया है, परन्तु परीक्षण करने पर उन सभी भवन निर्माण सम्बन्धी तत्त्वो या संरचनात्मक भागो के शब्दों से, जिन्हे हमने अभी देखा है, भिन्न व्याकरणिक या रूपात्मक तत्त्वो वाला पाया जाएगा। कम से कम ये पूर्ण अर्थो मे 'सज्ञा' शब्द प्रतीत नही होते। कमरे के लिए ?àᶜpávE?, शब्द का कर्त्ता-कारक और कर्म-कारक मे कोई रूप नही होता, न ही कोई सरचित अवस्था है। इस प्रातिपदिक के आधार पर "मेरा कमरा" जैसी कोई अभिव्यक्ति नही की जा सकती, जबकि 'मेरा द्वार', 'मेरी छत' आदि अभिव्यक्तियाँ की जा सकती है, यद्यपि इन अभिव्यक्तियो का समाज मे प्रचलन नही है, क्योकि होपी समाज मे कमरो का, दरवाजो का, या छतो का, व्यक्तिगत स्वामित्व या अधिकार नही होता। यहाँ पर हम शुद्ध भाषायी या सूत्रीय अर्थ मे अन्तर देखते है, अर्थात् जो कहा जा सकता है परन्तु सम्भवत कहा नही जाएगा—जैसे "मेरी छत," और एक ऐसे साँस्कृतिक अर्थ का विषय भी देखते है जिसे व्यावहारिक रूप से मान्यता प्राप्त है तथा जो 'मेरा घर' जैसे भाषायी अर्थ के साथ भी मेल खाता है। इसके विपरीत "My room" जैसी अँग्रेजी की अभिव्यक्ति के रूपात्मक दृष्टि से समान अभिव्यक्ति का अस्तित्व ही नही है, यहाँ तक कि सूत्रीय अर्थ भी नही है। ऐसे स्थानो पर जब होपी भाषा की हम अपनी भाषा से तुलना करते है तो एक अन्तर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यदि हम लोगो से व्यक्तिगत "अपना" कमरा रखने की प्रथा होपी लोग अपना लें, या किसी दूसरे गाँव मे जाने पर एक व्यक्तिगत कमरा किराए पर भी ले ले, तो भी वे 'मेरा कमरा' कहने मे समर्थ नही होगे। ऐसी परिस्थिति में वे जो कुछ कर सकते हैं सम्भवतः वह यही है कि उन्हें इस आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए एक नई अभिव्यक्ति गढनी पडेगी। ऐसा कर सकने के लिए उनके पास कई ढंग है। उदाहरणार्थ—"मेरी छत", "मेरा द्वार", "मेरा फर्श" आदि वे कह सकते है, और कुछ ही समय में 'छत', 'द्वार' या 'फर्श' का अर्थ-विस्तार "मेरा अपना कमरा" के रूप मे हो जाएगा—जैसे कि फ्रासीसी भाषा मे foyer अर्थात् चूल्हा शब्द का अर्थ होता है "घर"। मुख्य विषय से थोडा सा हट जाने का लाभ यह होगा कि इससे पता चल जाएगा कि व्याकरण की अभिरचना कितनी अधिक रुढिबद्ध तथा परिवर्तन विरोधी होती है।

कमरे के लिए शब्द ?àᶜpàvE? पर पुन. विचार करने के लिए, आइए, हम इसकी कारक सम्बन्धी विशेषताओ का परीक्षण करें। यद्यपि इसके कर्त्ता और कर्म-कारक मे रूप नही हैं इसके अधिकरण, परिणामसूचक, तथा अपादान कारको में रूप मिलते है, जैसे ?àpáᵉvE?, ?àᶜpámıq, ?àᶜpázk ये ऐसे कारक सम्बन्ध हैं जो कुछ समान प्रकृति वाले तथा अधिकरणवाची कारक कहे जा सकने वाले सर्वनामों मे पाए जाते हैं। परन्तु सर्वनामो के कर्ता और कर्म कारकीय रूप भी होते है तथा साथ ही ऐसे विशिष्ट गुण भी होते है जो केवल उनके अपने होते हैं। आगे यह

स्पष्ट हो जाएगा कि ?àᵉpə̧ve? ऐसे शब्द-भेद से सम्बन्ध रखता है, जिन्हें स्थान-सूचक कहा जाता है, तथा जिनमे ऐसे शब्द सम्मिलित किए जा सकते हैं जैसे—यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, सामने, पीछे, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और अन्य बहुत से शब्द, जिनमे होपी भौगोलिक नाम आ जाते है, जैसे 'औरेबी' (Oraibi), वाल्पी (Walpı), शिपौलोवी (Shipaulovı)। इन सबकी अधिकरणवाची कारकीय रूपावली होती है तथा प्रत्येक रूप एक प्रत्यय मे अन्त होता है, कोई भी केवल प्रातिपदिक मात्र रूप प्राप्त नहीं होता जैसा कि संज्ञाओं मे होता है तथा वह उनका कर्त्ता रूप बनाता है । "उत्तर" कहने के लिए यह आवश्यक है कि "उत्तर मे", "उत्तर से", या "उत्तर को" आदि कहा जाए। ये सब रूप विधेय की श्रेणी में आते हैं जबकि कर्त्ता के रूप में कोई अन्य ही रूप होता है या फिर कर्त्ता होता ही नही है। दूसरे शब्दों मे ये क्रिया विशेषणात्मक रूप होते हैं। "Room" शब्द का होपी में अनूदित होने पर, अर्थ होता है—"घर के अन्दर, कमरा, या अन्य कोई बन्द कोठरी', या अधिक निश्चित रूप से—'किसी निर्मित भवन का आन्तरिक भाग', या 'ऐसे आन्तरिक भाग में', या "ऐसे आन्तरिक भाग से" आदि, जैसा भी कारक प्रत्यय हो उसी के अनुरूप। ?àᵉpə̧vE? शब्द में –vE? प्रत्यय अधिकरण-कारक सम्बन्धी है। होपी मे एक अर्ध अधिकरणवाची प्रत्यय-vi या-pi भी होता है जिसका प्रयोग ?áᶜpá, प्रातिपदिक के साथ नही हो सकता, न ही अन्य बहुत से अधिकरणवाचियो के साथ ही, परन्तु भौगोलिक स्थान नामो के साथ अथवा कमरे के लिए अन्य एक या दो विशिष्ट शब्दो के साथ इसका प्रयोग हो सकता है।
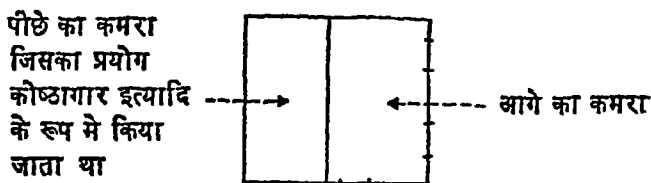
चित्र सं० 7

इसका अधिकरण अर्थ इतना निर्बल है कि इसका प्रयोग कर्त्ता अथवा कर्म कारक संज्ञा रूप मे हो सकता है, यद्यपि इसका यह प्रयोग अति विरल है। भवन के आन्तरिक अवकाश के लिए दूसरा मुख्य शब्द अधिकरणवाची yè môkvı, तथा परिणाम सूचक yè.môk, है जिसका अनुवाद प्राय: "दूसरा कमरा" या "अगला कमरा" किया जाता है, परन्तु इसका प्रयोग "पिछला कमरा, कोठरी, रिक्त स्थान, फाल्तू कमरा, या सामान का कमरा" के अर्थ मे भी किया जाता है। शायद अंग्रेजी मे इसका निकटतम अर्थ होगा "आन्तरिक कमरा", परन्तु इसका अर्थ होपी के परिणामसूचक अर्थो में लगाया जाना चाहिए जिसमे कि एक और कमरा या पास का कमरा आदि अर्थो का समावेश हो जाता है। यहाँ कहने का अभिप्राय यही है कि यह कोई भी दूसरा कमरा है जिसमे किसी एक निर्दिष्ट आन्तरिक कमरे से प्रवेश

प्राप्त होता है। होपी भवनों की सर्वसाधारण योजनाओ मे से एक ऊपर चित्र सं० 7 मे दी गई है।

यह सब होपी में और वास्तव मे अधिकतर या सारी उत्तो-अज्तेकन भाषाओं में आन्तरिक अवकाशो के क्षेत्र या उनकी स्थिति दिखाने के ढंग के अनुरूप है। इन सब को किसी वाक्य मे, लोगो, पशुओ, या विशिष्ट रूप वाले भौतिक पदार्थो, या मानव जातियों, या मानव सम्बन्धो को निर्दिष्ट करने वाले पदो के रूप मे कार्य करने वाली इकाइयों के रूप में नही रखा गया है। परन्तु इन्हे क्रियाविशेषक प्रकार का एक शुद्ध सम्बन्धवाचक सप्रत्यय माना गया है। अत. खोखले अवकाशो जैसे कमरा, कोठरी, सभाभवन आदि का नामकरण अन्य पदार्थो की तरह नही किया जाता अपितु उनका स्थान निर्दिष्ट किया जाता है;—अर्थात् दूसरी वस्तुओ की स्थितियाँ विशेष रूप से निर्दिष्ट की गई हैं ताकि ऐसे खोखले अवकाशो मे उनकी स्थिति दिखाई जा सके। ठोस वास्तु शिल्पीय भागो के लिए पर्याप्तमात्रा में शब्दों के मुकावले, वास्तुशिल्पीय खोखले अवकाशो के लिए शब्दो का असाधारण अभाव पाया जाता है। होपी मे केवल दो प्रातिपदिक कुछ व्यावहारिक महत्त्व के है। आरम्भ मे हमे होपी वास्तुकला मे किसी विचित्र सास्कृतिक कारक का प्रभाव प्रतीत हो सकता है, हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनकी भवन-निर्माण की धारणाएँ एक प्रदत्त सास्कृतिक तथ्य के रूप मे सीमित तथा एकागीन है। भाषा के मर्म को और अधिक जानने पर हमे पता चलता है कि इस न्यूनता का सम्वन्ध भवन कला से विल्कुल नही है, क्योकि हमे वहाँ शव्दो की सम्पन्न श्रेणी भी उपलब्ध होती है, अत. यह भापा की सरचना का विपय है। अभिव्यक्ति के साधनो की न्यूनता या सम्पन्नता की निर्भरता केवल दो प्रातिपदिको पर नही है, अपितु उन अधिकरण कारक सम्वन्धी प्रत्ययो की वडी सख्या पर है जिनका प्रयोग प्रातिपदिको के संयोग से किया जा सकता है, क्योकि ये स्थानसूचक गण से सम्वन्ध रखते है। स्थान-सूचक गण मे शव्द-भण्डार की सम्पन्नता का महत्त्वपूर्ण मानदण्ड प्रातिपदिको की संख्या नही हैं अपितु प्रत्ययों का अत्याधिक्य है जो वास्तव मे यहाँ पर अनारम्भी प्रातिपदिक हैं।
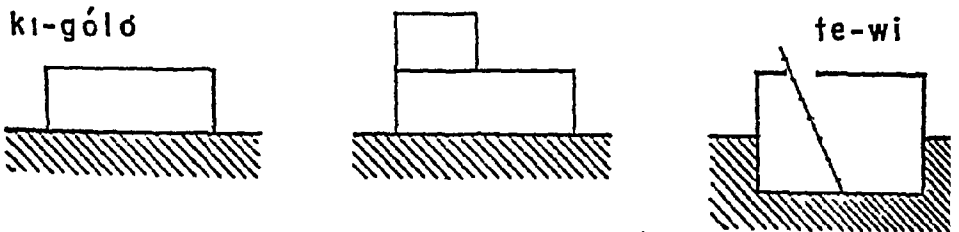
चित्र स० 8

भवन निर्माण सम्वन्धी शव्दो की एक और तीसरी श्रेणी भी, जो यहाँ विचार-णीय है—वह है विभिन्न प्रकार के भवनो के लिए शव्द। होपी संस्कृति मे निश्चित

रूप से विभिन्न संरचनात्मक प्रकार के भवन है । तीन मुख्य प्रकार चित्र आठ मे दिखाए जा सकते है।

इन भवनो को कई प्रकार से विशेष प्रयोगो मे लाया जाता है। इनमे अधिकतर आवास है परन्तु तथाकथित "पिकी गृह" केवल पिकी या होपी की मक्की के आटे की टिकिया पकाने के लिए भट्ठियाँ है, दूसरे का प्रयोग सामान रखने के लिए स्टोर के रूप मे किया जाता है, और "कीवा" का प्रयोग केवल विशेष रस्मो के लिए किया जाता है। गोरे लोगो के प्रभाव के पश्चात् भवनो का प्रयोग केवल स्टोर, गिरजा और स्कूल के लिए भी किया जाता है। अब हमारी भाषा मे तथा अन्य जातियो की भाषा मे जो होपियो से भवन निर्माण कला मे कम निपुण हैं, विभिन्न प्रकार के शब्द विद्यमान है—हमारे पास 'घर', 'भवन', 'झोपडी', 'किला', 'दुर्ग', 'मन्दिर', 'गिरजा', 'महल', 'सौध', 'थियेटर', 'स्कूल', 'स्टोर', 'सराय', 'होटल', 'बुखारी', 'छप्पर', 'अस्तबल', 'छप्पर', 'सिरकी', 'झोपडी', 'कैदखाना', 'जेल', 'मीनार', 'स्टेशन', 'डिपो', आदि आदि है। इनमें से अधिकतर शब्द अधिवास प्रकार के है तथा अन्य 'रचनात्मक' प्रकार के है । यह बात निष्पक्ष दृष्टिकोण से सोची जा सकती है कि अग्रेजी की यह तालिका बिल्कुल एक सम्मिश्रण है और वास्तव मे इसमे किसी प्रकार की व्यवस्था नही है। तथापि हमारे लिए यह स्वाभाविक बात इसलिए प्रतीत होती है क्योकि हमारे भवन निर्माण तकनीक उतने ही बहुमुखी है जितने की होपी लोगो के।

फिर भी तथ्य यह है कि कतिपय सीमावर्ती अत्यन्त स्वल्प प्रयोग वाले शब्दों (नीचे) को छोडकर होपी भाषा में 'भवन' के लिए केवल एक ही शब्द है, और यह बात बिना किसी ऊहापोह के कही जा सकती है कि होपी भाषा मे भवनकला सम्बन्धी कोई शब्दावली नही है, जो भवनो का विभिन्न प्रकारो मे वर्गीकरण करे—बावजूद इस बात के कि होपी मे अन्य प्रयोजनो के लिए भवन कला शब्दावली पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध हैं। यहाँ पर केवल एक शब्द kı. he "घर" (जैसा कि प्राय. अनुवाद किया जाता है) है जिसका वास्तविक अर्थ किसी भी प्रकार का 'भवन' है। यह 'घर' शब्द घर मे अन्त होने वाला समस्तपद नही बनाता परन्तु ऐसे आधार अथवा प्रातिपदिक के रूप मे कार्य कर सकता है जिसमे स्थानसूचक प्रत्ययो की प्रत्ययावली को जोडा जा सके, जिससे कि 'पद', स्थानसूचक अधिकरण-कारक-प्रत्ययान्त बन जाए तथा ऐसा प्रतीत हो मानो यह सर्वनाम है या स्थानसूचक है। अन्य कई सज्ञाओ मे इनमे से कुछ को जोडा जा सकता है, परन्तु 'घर' ही एकमात्र ऐसा सज्ञा शब्द है जिसमे समस्त प्रत्ययावली को जोडा जा सकता है। इस दृष्टि से यह एक स्थानवाची सर्वनाम है, परन्तु यह सर्वनाम है नही, क्योकि इसके रचित अवस्था रूप मिलते है जो केवल सज्ञाओ के होते है, जिससे कि "मेरा घर", "तुम्हारा घर" जैसी अभिव्यक्ति हो सके।

kı he के अतिरिक्त अन्य सीमान्ती पदो का उल्लेख यहाँ किया जा सकता है जिन्हें सम्भवत. भवनवाची शब्द माना जा सकता है, और यह भी स्पष्ट किया

जाएगा कि ये पद सामान्य अर्थों में वास्तविक भवन के वाचक नहीं हैं। mecàvkı "तम्बू", इसका शाब्दिक अर्थ है—'कपडे का मकान'—यह होपी जाति के लिए विजातीय द्रव्य है और इसका वाचन "घर" के समस्तपद द्वारा किया गया है, tė. tėska 'मठ', एक छोटा सा, पत्थरो का कच्चा घेर, उपर से ढके हुए और निर्दिष्ट वाह्यद्वार युक्त, kıska 'सुरग'—विभिन्न भवनो को एक दूसरे से मिलाने के लिए दीवार और छत युक्त वाह्य मार्ग है।

होपी भवनो के लिए शब्दावली की न्यूनता का एक कारण यह है कि होपी लोग या तो अधिवास शब्दो का प्रयोग उन भवनो के समानार्थक के रूप मे नही करते जिन भवनो मे अधिवास आवासित है, या यदि वे करते भी है तो उन्होंने अभी कुछ दिन पूर्व ही करना आरम्भ किया है, अत इस प्रकार के कुछ शब्द जमा हो गए हैं। कम से कम उनके पास इस प्रकार की बद्धमूल अभिरचना नही है जैसी कि हमारे पास स्वाभाविक रूप ग्रहण कर चुकी है, जिसमे कि एक 'गिरजा' अर्थात् एक 'सस्था', एक शब्द है जो कि नितान्त अदृष्ट रूप से 'गिरजा' मे समा जाता है—अर्थात् एक प्रकार का भवन जिसका उपयोग उस सस्था के सम्मेलन के स्थान के लिए किया जाता है। इस अन्तर का अनुभव भी किसी को नही हो पाता जब तक कि उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट न किया जाए, या जिसमे 'स्कूल'—एक सस्था का एक स्कूल के लिए भवन से, या गैरेज का जो एक प्रकार का अधिवास प्रकट करता है, गैरेज से अर्थात् भवन से जिसमे अधिवास आवासित है, या हस्पताल अधिवास का हस्पताल के भवन से, या थियेटर के नाट्यकला सम्बन्धी अर्थो का थियेटर, एक भवन मे भेद विरले ही किया जाता है। होपी भाषा मे इस प्रकार का अदृश्य एकीकरण नही है अपितु दोनो मे स्पष्ट अन्तर है। अधिवास और भूमि का वह भाग या फर्श जिस पर अधिवास विद्यमान होता है, उसे होपी मे साधारण रूप से 'भवन' kı he मात्र कहेंगे। यह शैलीशास्त्र का विषय नही है, क्योकि यह बोलने वाले के कलात्मक बलाघात परिवर्तन से परिवर्तित नही होता। परन्तु यह भाषाविज्ञान का विषय है क्योकि यह एक ऐसा रूप है जिसे मातृभाषी यूं ही समझ जाएगा, जैसे कि वह व्याकरण की बातो को समझ जाता है। पिकी गृह का अधिवास एक ऐसे शब्द से सूचित किया जा सकता है, जिसका अर्थ है—वह "स्थान जहाँ तवा स्थापित किया गया है", परन्तु इस आशय की अभिव्यक्ति ऐसे की गई है मानो इसकी स्थापना घर से बाहर की गई हो। और इस प्रकार स्वय पिकी-गृह के लिए अग्रेजी के सिवाय, होपी मे कोई शब्द नही है, यद्यपि पिकी गृह एक विशिष्ट भवनकलात्मक प्रकार का है।

अभिव्यक्ति की निर्वाध-गति का जहाँ तक सम्बन्ध है वहाँ इन भवन सम्बन्धी शब्दो की कमी की पूर्ति इस तथ्य द्वारा कर दी जाती है कि अधिवास शब्दो का प्रयोग पृथक् तथा असयुक्त शब्द 'भवन' kı he के साथ पर-प्रत्ययो की श्रेणी को जोडकर किसी भवन के आन्तरिक तथा वाह्य किसी भी स्थान का निर्देश किया जा सकता है। तथापि यह बड़ा विचित्र सा लगता है कि भाषा मे बिल्कुल विभिन्न

आकृति वाले भवनों जैसे एक मञ्जिला भवन, दोमञ्जिला पीछे का भवन, या कीवा के लिए भी कोई शब्द न हो, इस तथ्य का भाषा की विचित्र सामग्री के रूप में रिकार्ड करना पड़ेगा जो कि न तो भाषा की अन्य अभिरचना द्वारा, न भवन सरचना की किसी बात से, न ही सस्कृति के ही किसी विषय द्वारा निर्वचनीय है।

विशेष रूप से हमारी दृष्टि मे यह बात बड़ी विचित्र लगती है कि होपी भाषा में कीवा के लिए भी कोई शब्द नही, जबकि उसकी प्यूबलो सस्कृति अत्यधिक वैशिष्टयपूर्ण है, और उसका उनके धर्म के साथ इतना अन्तरंग सम्बन्ध भी है। बहुत लोग जानते है कि हमारा 'कीवा' शब्द होपी भाषा से लिया गया है, परन्तु वे सोचते है कि यह 'कीवा' के लिए होपी शब्द है, जो कि सही नही है।

भवन-निर्माण संबंधी होपी शब्दावली

अविश्लेषणीय प्रातिपदिक: ʔa'epa—'आन्तरिक', ʔàepavè' 'अन्दर (की ओर) पर', ʔeéci 'द्वार', ʔèecpi, ʔéʔcepi "द्वार पर", ʔéci "अवरोध, विभाजन"; Saeqa "सीढी"; tèekwa "पत्थरो की बनी हुई कोई चीज, परन्तु पूरी बनी हुई बिल्डिग नही, पत्थरो की चिनाई, अपूर्ण दीवार, किसी खण्डहर का अवशिष्ट खडा हुआ भाग, tè.wi "आला या पैहडी (स्वाभाविक या चिनी हुई), wèna "शहतीर, तख्ता, फट्टा"। ki.he "भवन, गृह।"

ki: के साथ समस्त (प्रातिपदिक) अधिवास शब्द— hè yaNki "गोदाम, व्यापारिक स्थान", tè.teqàyki "स्कूल।"

स्थान सूचक प्रत्यय. kico ʔo 'छत', kicéʔo've "छत से"; kico'ʔo' mig "छत को", yè mok "किसी दूसरे अवरोध मे, कमरे मे, कोठरी मे" आदि आदि; yè mokvi —"बहुत दूर अन्दर की ओर।"

समस्त तथा सम्मिश्रित भवन निर्माणात्मक शब्द. kiza, ki het zaʔat- 'नीव' (घर की जड); kiska "सुरंग, ढका हुआ रास्ता", ki.coki "गाँव", ki'.sonvi "चौक" hociwa "खुलाभाग, द्वारमार्ग", kè,vèla "छत"; kiqàlmo "छज्जा"; ki'.qolo "मकान की सबसे निचली मञ्जिल, गुफा", lèstavi "शहतीर या छत का आधार"; mecávki "तम्बू"; navávè "ईंटे", pàlwicoqa "पलस्तर की मिट्टी"; panàvca "खिड़की, शीशा, दर्पण"; pokso, "सूराख, चिमनी, खिडकी का सूराख"; tekʷni छती हुई दीवार, पत्थर की बाड़"; tekʷànmère "चार दीवारी, बाड़ा।"

विज्ञान और भाषिकी*

संसार का प्रत्येक व्यक्ति अबोध शैशव पार करने पर बोलने की क्षमता रखता है, और बोलता है। इस तथ्य के कारण प्रत्येक सभ्य या असभ्य व्यक्ति, वाणी तथा विचारो के साथ इसके सम्बन्ध मे सीधी सादी परन्तु बद्धमूल धारणाएँ जीवन-पर्यन्त बनाए रखता है। अचेतन एवम् स्वचालित हो जाने वाली वाक्प्रवृत्ति के साथ विचारो का दृढ सम्बन्ध हो जाने के कारण ये धारणाएँ किसी भी प्रकार के विरोध के प्रति प्राय: असहिष्णु हो उठने की प्रवृत्ति रखती है। वे किसी भी प्रकार से पूर्णतया व्यक्तिगत एवम् अव्यवस्थित नही होती; उनका आधार निश्चित रूप से व्यवस्थित है, अत. हम उसे स्वाभाविक तर्क की व्यवस्था कहना उचित समझते है—यह नाम उसी विषय के लिए प्राय: प्रयुक्त होने वाले "सामान्य-ज्ञान" की अपेक्षा मुझे अधिक वरीय प्रतीत होता है।

स्वाभाविक तर्क के अनुसार, यह 'तथ्य' कि प्रत्येक व्यक्ति शैशवकाल से ही धाराप्रवाह रूप मे बोलता आया है, उस व्यक्ति को उस प्रक्रिया का विशेषज्ञ बना देता है जिसके द्वारा वह नियम सूत्रित करता है तथा सञ्चारण करता है। उसे केवल तर्क अथवा विवेक के सामान्य अध.स्तर से परामर्शमात्र करना पडता है, जिसका उसके, या प्रत्येक व्यक्ति के पास होना स्वाभाविक माना जाता है। स्वाभाविक तर्क के अनुसार बोलना एक आनुषगिक प्रक्रिया है, जिसका सञ्चारण के साथ सुनिश्चित रूप में सम्बन्ध है, न कि विचारो के सूत्रीकरण के साथ बोलने या भाषा के प्रयोग से केवल यह आशा की जाती है कि वह उन विचारो को 'अभिव्यक्त' कर दे जिनका सूत्रीकरण पहले ही अभाषायी रूप मे कर दिया गया है। सूत्रीकरण एक स्वतन्त्र प्रक्रिया है जिसे विचार या चिन्तन कहा जाता है, और वह विशिष्ट भाषाओ की प्रकृति से अधिकतर तटस्थ माना जाता है। भाषाओ का व्याकरण होता है, जिन्हें प्राय: परम्परागत तथा सामाजिक शुद्धता का मानक मात्र माना जाता है, परन्तु भाषा के प्रयोग से यह आशा की जाती है कि वह व्याकरणो से इतना पथ प्रदर्शन प्राप्त न करे जितना कि सही, युक्तियुक्त या मेधावी चिन्तन से।

इस मत के अनुसार 'विचार' व्याकरण पर निर्भर नही करता अपितु तर्क एवम् विवेक के उन नियमो पर करता है, जो विश्व के समस्त प्रेक्षको के लिए समान माने जाते हैं—ताकि वे विश्व मे तर्काधार का प्रतिनिधित्व कर सकें, जिस तर्काधार

---

* *Technology Review* 42: 229-231, 247-248 न० 6 (अप्रैल 1940) से पुनर्मुद्रित।

प्रकार है कि दो राजकुमारों मे इस बात पर झगडा हो गया कि उनमे से किसको देश के सब से बड़े विद्वान वैयाकरण के जूते पहनने का सम्मान प्राप्त हो,—कहते है कि इस पर उनके पिता "खलीफा" ने टिप्पणी करते हुए कहा कि यह उसके साम्राज्य का गौरव है कि यहाँ वैयाकरणों को राजाओ से भी अधिक सम्मान प्राप्त है ।

'अपवाद' नियम को सिद्ध करते हैं, इस सुपरिचित उक्ति मे काफी बुद्धिमत्ता निहित है, यद्यपि औपचारिक तर्कशास्त्र के दृष्टिकोण के अनुसार यह लोकोक्ति उसी समय बेतुकी हो गई जब "prove" (सिद्ध करो) का अर्थ "put on trial" (इसका परीक्षण करो) नही रहा । यह पुरानी कहावत उसी समय से "गहरे मनोविज्ञान" का रूप ग्रहण करने लगी, जब से तर्कशास्त्र मे इसे महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना बन्द हो गया । आज हमे यह उक्ति जिस तथ्य को सुझा सकती है, वह यह है कि यदि किसी नियम का कोई भी अपवाद न हो, तो, न तो उसे नियम माना जाता है न कुछ और चीज ही । तब यह उस पृष्ठभूमि का अंग बन जाता है जिसके विषय मे हमारी प्रवृत्ति अनभिज्ञ बने रहने की रहती है । इसके विरोध का किसी भी वस्तु मे अनुभव न करने के कारण हम इसकी न तो पृथक् सत्ता स्थापित कर सकते है, न इसे एक नियम के रूप मे सूत्रित कर सकते है, जब तक कि हम अपने अनुभव को इतना विशाल न बना लें और अपने निर्देशो के आधार को इतना विस्तृत न कर ले कि हमे इसकी नियमितताओ मे व्यवधान दिखाई देने आरम्भ हो जाएँ । उपस्थित स्थिति कुछ ऐसी है जैसे कि पानी के अभाव का अनुमान तब तक न हो पाना जब तक कि कुआँ सूख न जाए; या दम घुटने की स्थिति आने से पहले यह न समझ पाना कि हमे वायु की आवश्यकता है ।

उदाहरणार्थ, यदि किसी जाति के लोगो मे कोई ऐसा शारीरिक दोष हो जिससे वे केवल नीला रग ही देख सके तो वे यह नियम कदापि सूत्र-बद्ध नही कर पाएँगे कि उन्होने केवल नीला रग ही देखा है । "नीला" शब्द उनके लिए किसी भी अर्थ का द्योतन नही करेगा, उनकी भाषा मे रगवाची शब्दो का अभाव रहेगा, और उनके नीले रग के विभिन्न सवेदनो के वाचक शब्द हमारे हल्के, गहरे, सफेद, काले आदि आदि के प्रत्युत्तर तथा अनुवाद होगे न कि हमारे 'नीला' शब्द के । केवल मात्र 'नीला' देखने का नियम या मानक सूत्रित करने से पहले उन्हे कुछ अलौकिक क्षणो की आवश्यकता पडेगी जिनमे वे दूसरे रग देख सकें । गुरुत्वाकर्षण का तथ्य अपवादरहित नियम बनाता है। यह कहने की आवश्यकता नही है कि अशिक्षित व्यक्ति किसी भी गुरुत्वाकर्षण के नियम से नितान्त अपरिचित है, अनभिज्ञ है, क्योकि उसके मस्तिष्क मे यह बात प्रवेश ही नही कर सकती कि वे एक ऐसे विश्व की कल्पना कर सके जिसके पिण्डो का व्यवहार पृथ्वीतल पर हुए उनके व्यवहार से भिन्न हो। जिस प्रकार हमारी प्रकल्पित जाति के लिए नीला रग है, इसी प्रकार हमारी जाति के

की उपलब्धि स्वतन्त्र रूप से कोई भी बुद्धिमान प्रेक्षक कर सके चाहे वह चीनी भाषा बोलता हो या चोकताओ। हमारी अपनी सभ्यता मे रूपात्मक तर्कशास्त्र
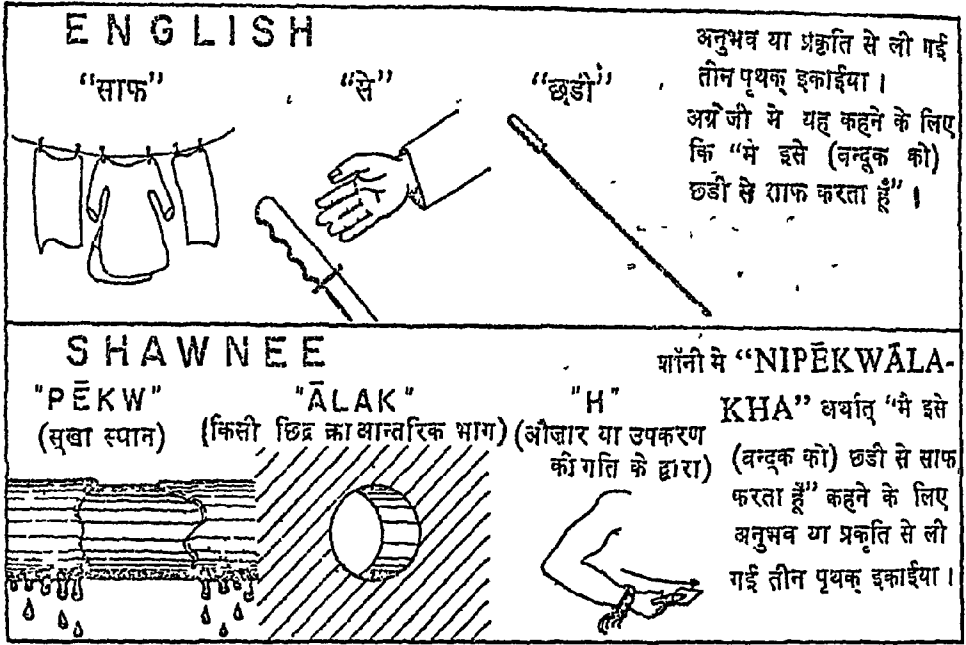
चित्र सं 9 : भाषाएँ प्रकृति का विभाजन भिन्न रूप से करती हैं। बन्दूक के अंदर छड़ी घुमाकर उसे साफ करने के एक ही अनुभव की सूचना देने के लिए अंग्रेजी तथा शॉनी द्वारा प्रयुक्त की गई (विचारो) अर्थ की भिन्न-भिन्न पृथक् इकाइयाँ। सर्वनाम 'मैं' (I) तथा "इसे" (It) प्रतीकों द्वारा नहीं दिखाए गए हैं, क्योंकि उनका प्रत्येक भाषा में वही अर्थ है। शॉनी में 'मैं' (I) के समान है, तथा 'इसे' (It) के समान है।

तथा गणितशास्त्र के सूत्रो ने इस प्रकार के पदार्थो के इस अनुक्रम का विवेचन करने की प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है—अर्थात् शुद्ध विचारो के क्षेत्र तथा नियमो के विवेचन की। स्वाभाविक तर्क की धारणा है कि विभिन्न भाषाएँ केवल इसी एक विचारके तर्काधार की अभिव्यक्ति के लिए तत्वत· समकक्ष रीतियाँ है, अत वास्तविक भेद बहुत मामूली से होते है, परन्तु उनका महत्त्व केवल सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ही दृष्टिगोचर होता है। इसके अनुसार गणित, प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र, दर्शन आदि वे व्यवस्थाएँ है, जिनका, विचार के क्षेत्र का सीधा विवेचन करने वाली 'भाषा' से विरोध है। यह सत्य है कि वे स्वय भाषा के विशेषीकृत विस्तार है। स्वाभाविक तर्क का भाषा के प्रति दृष्टिकोण एक ऐसी पुरानी लोकोक्ति से स्पष्ट हो जाता है, जो एक ऐसे जर्मन वैयाकरण के प्रति कही गई थी, जिसने अपना समस्त जीवन सम्प्रदान कारक के अध्ययन मे लगाया। स्वाभाविक तर्क के इस दृष्टिकोण के अनुसार सम्प्रदान कारक और सामान्य रूप से व्याकरण भी नितान्त गौण विषय है। कहा जाता है कि प्राचीन अरबो मे इससे भिन्न दृष्टिकोण था। कहानी कुछ इस

लिए गुरुत्वाकर्षण का नियम प्रत्येक अशिक्षित व्यक्ति के लिए एक पृष्ठभूमि है, ऐसी कोई वस्तु नही है जिसे वह उस पृष्ठभूमि से पृथक् देखता हो। यह नियम तब तक सूत्रित नही हो सकता जब तक कि सदैव नीचे की ओर गिरने वाले शरीरपिण्डो को वृहत्तर खगोलीय ससार के सन्दर्भ मे न देखा जाए जहाँ कि पिण्ड अपनी कक्षाओ मे परिक्रमा करते है, और इधर से उधर जाते है।

इसी प्रकार जब हम अपना सिर घुमाते है तो किसी भी दृश्य का बिम्ब हमारी पुतली के सामने से ठीक ऐसे ही गुजरता है, जैसे उस दृश्य के हमारे चारो ओर घूमने पर गुजरेगा। परन्तु यह 'कार्य' पृष्ठभूमि है और हम इसकी सत्ता को स्वीकार भी नही करते; हम कभी भी एक कमरे को अपने चारो ओर घूमता नही देखते, हम तो गतिहीन कमरे मे अपने सिर को घुमाने की प्रक्रिया से ही परिचित है। यदि हम अपनी आँखे या सिर घुमाते समय ध्यानपूर्वक देखे तो हमे पता चलेगा कि यह सच है कि दृश्यो मे गतिशीलता नही
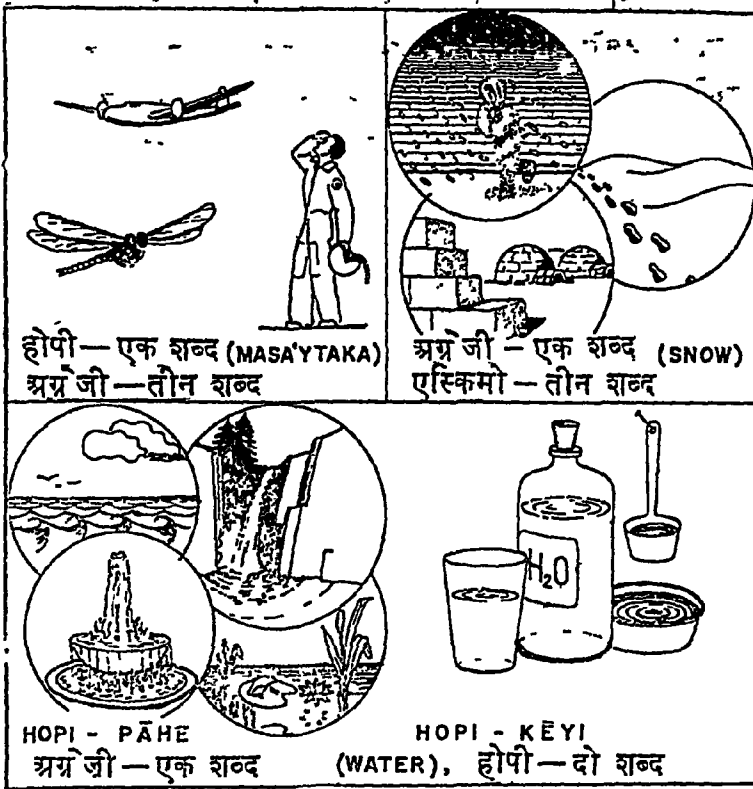
चित्र 10. भाषाएँ अनुभव की इकाइयों का भिन्न रूप से वर्गीकरण करती हैं। भाषा 'क' के अन्तर्गत एक शब्द तथा एक विचार के संवादी वर्ग को भाषा 'ख' में दो या दो से अधिक शब्दों तथा विचारो के संवादी दो या अधिक वर्ग माने जा सकते हैं।

है; फिर भी दो स्पष्ट दृश्यों के बीच दृश्यो का धुँधला रूप प्रवाहित होता हुआ दिखाई देता है। साधारणतया हम इस प्रकार के निरन्तर धुंधलेपन से सर्वथा

अनभिज्ञ होते है, और ऐसा लगता है जैसे हम स्पष्ट दृश्यो को देखते है। जब कभी हम किसी वृक्ष या घर के पास से गुजरते है, तो इसका विम्व हमारे दृष्टि-पटल पर इस प्रकार परिवर्तित होता है मानो वृक्ष या घर अपने अक्ष के चारों ओर घूम रहे हो, फिर भी हम साधारण गति से चलते समय घर या वृक्ष को घूमते हुए नही देखते। कभी कभी गलत लगे हुए चश्मे से इधर-उधर देखने पर दृश्य मे विचित्र गति होती हुई प्रतीत होती है, परन्तु जब हम चलते है तो हमे वातावरण की सापेक्ष गतिशीलता का अनुभव नही होता। हमारी मानसिक प्रवृत्ति उस समय दृश्य-सत्ता की अवहेलना करने की अभ्यस्त हो चुकी है, जो कि इतनी व्यापक है कि हमारे दैनिक जीवन एवम् आवश्यकताओ के लिए सर्वथा निरर्थक है।

स्वाभाविक तर्क मे दो तर्क-दोष है : पहला, यह इस बात को नही देखता कि भाषा के तथ्य उस भाषा के बोलने वालो के लिए अधिकतर पृष्ठभूमि के वैशिष्ट्य वाले होते है, अत. स्वाभाविक तर्क के प्रतिपादन करने वाले भाषाभाषी की समालोचनात्मक चेतना तथा नियन्त्रण से बाहर होते है। अत: जब कभी कोई व्यक्ति स्वाभाविक तार्किक के रूप मे विवेक, तर्क, तथा सही चिन्तन के नियमो के विषय मे चर्चा कर रहा हो तो समझ लीजिए कि उसकी प्रवृत्ति केवल उन शुद्ध व्याकरणिक तथ्यों के ढर्रे पर चलने की हो सकती है, और वे तथ्य उसकी भाषा अथवा उसके भाषा परिवार की पृष्ठभूमि के वैशिष्ट्य वाले होते हैं; परन्तु वे तथ्य न तो समस्त भाषाओ मे व्यापक रूप से मिलते है और न ही किसी भी अर्थ मे विवेक के सामान्य आधार हो सकते है। दूसरे, स्वाभाविक तर्क भाषा के प्रयोग द्वारा प्राप्त वस्तुविषयपरक अनुरूपता का 'अभेद', उस भाषायी प्रक्रिया के ज्ञान से लेकर बैठता है, जिस ज्ञान के द्वारा अनुरूपता प्राप्त की जाती है—अर्थात् घृणित वैयाकरण के (और इसकी धारणा के कारण अनावश्यक है) क्षेत्र से अभेद कर देता है। उदाहरणार्थ, धाराप्रवाह रूप से अंग्रेजी बोलने वाले दो व्यक्ति अपने भाषण की विषयवस्तु के विषय मे शीघ्र ही अपनी सहमति प्रकट कर देते हैं—अर्थात् वे उस विषय पर एकमत हो जाते है जिसकी ओर उनकी भाषा सकेत करती है। उनमे से एक "अ" निर्देश दे सकता है, जिसका पालन दूसरा "ब", "अ" की पूर्ण सन्तुष्टि सहित कर सकता है। क्योकि 'अ' तथा 'ब' एक दूसरे को पूर्णतया समझते हैं। यदि वे स्वाभाविक तार्किक की भाँति यह जानना चाहे कि यह सब कैसे सम्भव हुआ, तो वे सोचेंगे कि यह केवल विचारो को व्यक्त करने वाले शब्दो को चुनने की सीधी सी बात है। यदि आप 'अ' से पूछे कि तुमने 'ब' की सहमति कैसे प्राप्त की, तो वह उसी बात को सक्षेप मे, या विस्तार से दोहरा देगा, जो उसने "ब" से कही थी। उसे सम्बन्धित प्रक्रिया का बिल्कुल ज्ञान नही होता। भाषायी सरचनाओ तथा वर्गीकरणो की आश्चर्यजनक रूप मे जटिल व्यवस्था, जो 'अ' तथा 'ब' के पास एक दूसरे को समझने से पहले होनी चाहिए, यही 'अ' तथा 'ब' के लिए पृष्ठभूमि है।

ये पृष्ठभूमि-तथ्य वैयाकरणो के क्षेत्र हैं, वैयाकरणो को अधिक आधुनिक वैज्ञानिक नाम "भाषिक" से अभिहित करने पर इन्हे भाषिको के क्षेत्र कह सकते हैं। 'लिंग्विस्ट' (भाषिक) शब्द सामान्य बोलचाल या समाचार-पत्रों की भाषा मे कुछ सर्वथा भिन्न अर्थो मे प्रयुक्त होता है—अर्थात् एक ऐसा व्यक्ति जो शीघ्र ही भिन्न भिन्न भाषाएँ बोलने वाले भिन्न भिन्न लोगों से विषय-वस्तु सम्बन्धी सहमति प्राप्त कर सके। ऐसे व्यक्ति को अधिक अच्छे शब्दो मे 'पालीग्लोट' या 'मल्टीलिंग्विल" (बहुभाषी) कहा जा सकता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले वैज्ञानिक भाषिक बहुत पहले यह समझ चुके हैं कि किसी भाषा को धाराप्रवाह रूप में बोलना उसे भाषायी ज्ञान प्रदान नही करता, अर्थात् उसके पृष्ठभूमि सम्बन्धी तथ्यों तथा इसकी व्यवस्थित प्रक्रियाओं एवम् रचनाओ का ज्ञान ठीक इसी प्रकार नहीं हो पाता, जैसे कि बिल्यार्ड का अच्छा खेल, बिल्यार्ड की मेज पर क्रियान्वित होने वाले यान्त्रिक नियमों का न तो ज्ञान प्रदान करता है, और न ही उसकी अपेक्षा करता है।

यहाँ की परिस्थिति विज्ञान के किसी अन्य क्षेत्र से भिन्न नही है। सभी वास्तविक वैज्ञानिकों की दृष्टि मुख्य रूप मे पृष्ठभूमिगत तथ्यों की ओर रहती है, जिनकी उपादेयता हमारे दैनिक जीवन के लिए बहुत ही कम है। तथापि उनका अध्ययन इस अकल्पित तथ्य के साम्राज्य तथा इस प्रकार की निश्चित अग्रभूमिगत गतिविधियो, जैसे—पदार्थो का परिवहन, खाना तैयार करना, रोगियो का उपचार करना या आलू उत्पन्न करना आदि के बीच निकट सम्बन्ध स्थापित करने का मार्ग बनाता है। वह मार्ग कुछ समय पश्चात् पर्याप्त परिष्कृत हो सकता है, क्योकि वह शुद्ध वैज्ञानिक तत्वान्वेषण है जिसका स्वयं इन जड पदार्थो से कोई सम्बन्ध नही। भाषिकी का उदाहरण भी इसी के सदृश है; पृष्ठभूमिगत तथ्य जिनसे इसका सम्बन्ध है, वे सब हमारी अग्रभूमिगत गतिविधियो, जैसे बात करना और सहमति पर पहुँचने, सभी कानूनी व्यवस्थाओ मे, सभी मध्यस्थताओ, समझौतों, ठेकों, सन्धियो, लोकमतो, वैज्ञानिक सिद्धान्तो के परीक्षणो, तथा वैज्ञानिक परिणामो के सूत्रीकरण आदि सभी विषयो पर तर्क करना तथा बहस करना आदि है। जब कभी मनुष्य के कार्यो मे किसी प्रकार की सहमति या ऐक्य प्राप्त होता है, तो चाहे गणित विज्ञान या विशिष्ट प्रतीक विज्ञान उस प्रक्रिया के साधक अग बने, या न बने, परन्तु यह सत्य है कि यह सहमति भाषायी प्रक्रिया द्वारा प्राप्त होती है, या फिर प्राप्त होती ही नहीं।

जैसा कि हम देख चुके है कि भाषायी प्रक्रिया का प्रकट ज्ञान, जिसके द्वारा सहमति प्राप्त की जाती है, किसी प्रकार की सहमति प्राप्त करने के लिए आवश्यक नही है परन्तु यह निश्चित रूप से उसमे बाधक भी नही है। जितना पेचीदा और कठिन विषय होगा उतना ही यह ज्ञान स्पष्ट रूप मे सहायक होगा और अन्त मे एक सीमा आ सकती है, (मेरा विचार है कि आधुनिक युग उस बिन्दु पर पहुँचने ही वाला है) जबकि ज्ञान न केवल सहयोगी ही बन पाएगा अपितु अपरिहार्य भी हो जाएगा। इस परिस्थिति की तुलना नौ-सचालन से दी जा सकती है। प्रत्येक चलने वाली नौका नक्षत्रीय शक्तियो के प्रभाव मे है, परन्तु एक लडका अपनी नौका को

बन्दरगाह पर एक ओर से दूसरी ओर चला सकता है, उसे इस कार्य मे भूगोलशास्त्र, खगोलविज्ञान, गणितशास्त्र या अन्तर्देशीय राजनीति से कोई लाभ नही पहुँचेगा। परन्तु एक वडे समुद्री जलपोत के कप्तान के लिए इन सभी विषयो का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

जब भाषिक भिन्न रचनाओ वाली बहुत सी भाषाओ का वैज्ञानिक तथा समालोचनात्मक दृष्टि से परीक्षण करने लगे तो उनके सदर्भो का आधार विस्तृत हो गया, उन्हे अनुभूति हुई कि अब तक सार्वभौमिक रूप से व्यापक माने जाने वाली दृश्य-सत्ता मे कुछ वाधा आने लगी है, और उन्हे एक महत्त्वपूर्ण तथ्यो की नई तथा सम्पूर्ण व्यवस्था दृष्टिगोचर होने लगी। इस बात का पता चला कि पृष्ठभूमिगत भाषायी व्यवस्था (दूसरे शब्दो मे व्याकरण) प्रत्येक भाषा मे विचारो को अभिव्यक्त

वस्तुनिष्ठ क्षेत्र	वक्ता (प्रेषक)	श्रोता (प्रापक)	विषय का विवेचन अन्य पुरुष का दौडना
स्थिति 1क			अंग्रेजी . "HE IS RUNNING" (वह दौड रहा है) होपी "WARI" (दौड रहा है तथ्य का कथन)
स्थिति 1ख वस्तुनिष्ठ क्षेत्र शून्य दौडने की क्रिया रहित			अंग्रेजी "HE RAN" (वह दौडा) होपी "WARI" (दौड रहा है तथ्य का कथन)
स्थिति 2			अंग्रेजी "HE IS RUNNING" (वह दौड रहा है) होपी "WARI" (दौड रहा है तथ्य का कथन)
स्थिति 3 वस्तुनिष्ठ क्षेत्र—शून्य			अंग्रेजी "HE RAN" (वह दौड़ा) होपी . "ERA WARI" (दौड रहा है स्मृति पर आधारित तथ्य का कथन)
स्थिति 4 वस्तुनिष्ठ क्षेत्र—शून्य			अंग्रेजी "HE WILL RUN" (वह दौडेगा) होपी . "WARIKNI" (दौड़ रहा है , प्रत्याशा का कथन)
स्थिति 5 वस्तुनिष्ठ क्षेत्र—शून्य			अंग्रेजी "HE RUNS" (वह दौडता है) (जैसे, किसी लीक पर) होपी . "WARIKNGWE" (दौड रहा है नियम का कथन)

चित्र 11. कालयुक्त भाषा (अंग्रेजी) तथा कालरहित भाषा (होपी) का वैषम्य। अंग्रेजी की दृष्टि में जो काल के भेद हैं, होपी भाषा में वे प्रामाणिकता के प्रकार के भेद हैं।

करने का उत्पादक यन्त्र मात्र ही नही है, अपितु स्वयं विचारो को रूप देने वाला है। वह व्यक्ति विशेष की मानसिक क्रियाशीलता के लिए कार्यक्रम तथा पथ-प्रदर्शक भी है, ताकि वह अपने सस्कारो का विश्लेषण करे, तथा अपने व्यवसाय सम्बन्धी मानसिक संग्रह का सश्लेषण कर सके। विचारो के सूत्रीकरण, पुराने अर्थो मे पूर्णतया बुद्धिसगत, एक स्वतन्त्र प्रक्रिया नही है, परन्तु किसी विशेष व्याकरण का एक अग है, तथा भिन्न भिन्न व्याकरणो मे थोड़े से लेकर बहुत अधिक तक भिन्नता लिए हुए होते है। हम प्रकृति का विभाजन अपनी मातृभाषाओ की पद्धति के अनुसार करते है। वे कोटियाँ तथा प्रकार, जिन्हे हम दृश्यसत्ता के ससार से विविक्त करते है, हमे वहाँ दिखाई नही देते, क्योकि वे प्रत्येक प्रेक्षक के लिए एक समस्या बन कर खडे हो जाते है। इसके विपरीत संसार एक विचित्र बहुरूपदर्शी सस्कारो का प्रवाह सा दिखाई देता है, जिसे हमारी बुद्धि को व्यवस्थित करना होता है—जिसका अर्थ है कि अधिकतर हमारे मस्तिष्क मे विराजमान भाषायी व्यवस्थाओ द्वारा ही व्यवस्थित करना। हम प्रकृति का विभाजन कर देते है तथा उसे धारणाओ मे व्यवस्थित करते है, तथा उन धारणाओं पर महत्त्वो का आरोपण करते है; अधिकतर इसलिए कि उन्हे इस प्रकार व्यवस्थित करने की सहमति मे हमारा हाथ है—एक सहमति जो हमारे समस्त भाषाभाषी जनसमुदाय मे व्याप्त है और हमारी भाषा के ढाचे के अनुसार ही नियमबद्ध की गई है। वह सहमति, यह सच है कि, अप्रत्यक्ष तथा अनभिव्यक्त है **परन्तु इसकी शर्तें पूर्णतया आबन्धक है**; हम तब तक विचारो की वाग्व्यापार द्वारा अभिव्यक्ति नही कर सकते जब तक कि सहमति से निर्दिष्ट सामग्री का वर्गीकरण तथा सगठन न कर दिया जाए।

यह तथ्य आधुनिक विज्ञान के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योकि इसका अभिप्राय. यह हुआ कि कोई भी व्यक्ति प्रकृति का पूर्णतया निष्पक्ष भाव से वर्णन करने में समर्थ नही है, बल्कि विशेष प्रकार के अर्थ-प्रतिपादन से उस समय भी नियन्त्रित होता है, जबकि वह अपने आप को सर्वथा मुक्त मानता है। इन विषयों मे स्वतन्त्रता के निकट केवल वह भाषिक हो सकता है जो बहुत सी विविध भाषायी व्यवस्थाओ से परिचित हो। अभी तक कोई भी भाषाविज्ञानी इस स्थिति मे नही है। अत· हमारा परिचय एक नए सापेक्षता सिद्धान्त से हुआ है, जिसकी धारणा है कि सभी प्रेक्षक विश्व के एक ही चित्र के विषय मे एक ही भौतिक प्रमाण से प्रेरित नही होते, जब तक कि उनकी भाषायी पृष्ठभूमि समान न हो या किसी प्रकार उनका व्यासमापन न किया जा सके।

यह, कुछ अधिक चकित करने वाला परिणाम, इतना स्पष्ट नही हो पाता, यदि हम केवल आधुनिक भारोपीय भाषाओ की ही तुलना करते जिनमें काफी मात्रा मे ग्रीक और लैटिन के तत्त्व विराजमान है। इन भाषाओ मे मुख्य रचना का मतैक्य है जो कि पहली दृष्टि मे ही स्वाभाविक तर्क को सिद्ध करता हुआ प्रतीत होता है। परन्तु यह मतैक्य इसीलिए वर्तमान है कि ये सब भाषाएँ भारोपीय परिवार की बोलियाँ है, इनकी एक ही आधारभूत योजना है, क्योकि वे एक ही मूलभाषा, जो कभी

एक जन-समुदाय की भाषा थी, उससे ऐतिहासिक रूप मे विकसित हुई है। क्योकि इन सभी आधुनिक भारोपीय भाषाओ ने बहुत दिन तक एक सामान्य सस्कृति बनाने मे योग दिया है, और क्योकि इस सस्कृति का अधिकाँश भाग, विशेष रूप से बौद्धिक पक्ष ग्रीक तथा लैटिन की भाषायी पृष्ठभूमि से लिया गया है। अतः यह भाषायी वर्ग इससे पूर्ववर्ती पैराग्राफ के अन्त मे भाषायी सापेक्ष सिद्धान्त विषयक कथन की विशेष धारा, जो जब तक कि से आरम्भ होती है कि पुष्टि करता है। इस अनुवन्ध के कारण आधुनिक वैज्ञानिको के सम्प्रदाय मे ससार के वर्णन का मतैक्य है। परन्तु इस बात पर बल देने की आवश्यकता है कि "समस्त आधुनिक भारोपीय भाषाभाषी प्रेक्षक", और "समस्त प्रेक्षक" ये एक ही चीज नही है। आधुनिक तुर्की या चीनी वैज्ञानिक ससार का वर्णन यदि पाश्चात्य वैज्ञानिको के ढंग से ही करते है, तो सच ही इसका अर्थ यह है कि उन्होने पाश्चात्य वैज्ञानिको की वैज्ञानिक व्यवस्था पद्धति को पूरी तरह ग्रहण कर लिया है—इसका अर्थ यह नही है कि उन्होने इस व्यवस्था का समर्थन अपने देशीय प्रेक्षण-स्थलो के आधार पर किया है।

जब सेमेटिक, चीनी, तिब्बती, या अफ्रीकी भाषाओ का वैषम्य हम अपनी भाषा से दिखाते है, तो ससार का विश्लेषण सम्बन्धी अन्तर अधिक स्पष्ट हो जाता है; और जब हम अमरीका के मूलवासियो की भाषाओ का समावेश भी यह वैषम्य दिखाने के लिए कर लेते है, तो यह तथ्य कि भाषाएँ प्रकृति का विभाजन कई प्रकार के विभिन्न ढगो से करती है, दृढ हो जाता है, क्योकि अमरीका की मूलभाषाओ के भाषा समुदाय कई हज़ार वर्षों से एक दूसरे से स्वतत्र रूप मे तथा पुरानी दुनियाँ की भाषाओं से भी अप्रभावित रूप मे पनपते रहे है। समस्त धारणात्मक व्यवस्थाओ की सापेक्षता, जिनमे हमारी व्यवस्था भी सम्मिलित है, तथा उन व्यवस्थाओ की भाषा पर निर्भरता स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती है। यह कहना भी उचित नही कि केवल अपनी देशीय भाषा बोलने वाले अमरीकी इण्डियनो से वैज्ञानिक प्रेक्षक होने की अपेक्षा नही की गई है। मनुष्य के बौद्धिक अन्वेषण की सहायता से जो परिणाम उनकी भाषाओ से उपलब्ध हुए है, उन्हे प्रमाण कोटि से बाहर रखना तो कुछ ऐसा है जैसे किसी वनस्पति शास्त्री से आशा की जाए कि वह केवल अनाजो के पौधो तथा घरेलू गुलाबो का अध्ययन करके हमे बता दे कि सारा वनस्पति ससार किस प्रकार का है।

आइए, हम कुछ उदाहरणो पर विचार करे। अग्रेजी मे हम अधिकाँश शब्दो को दो श्रेणियो मे विभक्त करते है, जिनके पृथक्-पृथक् व्याकरणिक तथा तर्कसंगत गुण धर्म है। श्रेणी I को हम सज्ञा कहते है जैसे 'House' घर, 'Man–मनुष्य' श्रेणी 2 क्रियाएँ है जैसे 'hit-मारना, run-भागना'। किसी श्रेणी के वहुत से शब्द ऐसे है जो गौण रूप से दूसरी श्रेणी के शब्दों की भाति व्यवहार कर सकते है, जैसे–'a hit, 'a Run' ('एक हिट', 'एक दौड') या to man (the boat) (कश्ती चलाना) परन्तु मुख्यस्तर पर दो श्रेणियो मे विभाजन पूर्णतया सुनिश्चित है। अत हमारी भाषा, प्रकृति का द्विध्रुवीय विभाजन करती है। परन्तु प्रकृति स्वयं इस प्रकार ध्रुवीभूत नही है। यदि यह कहा जाए कि 'ताडना, घूमना, दौडना' आदि क्रियाएँ है, क्योकि वे अस्थायी या क्षणिक घटनाओ अर्थात् गतियो का निर्देश करती है तो "a fist" घूंसा

संज्ञा क्यों है ? यह भी तो एक अस्थायी घटना है । फिर 'lightening' विजली, 'spark–चिनगारी,' 'wave–लहर', eddy–भवर', 'pulsation–फड़कन', 'flame-शोला', 'storm-तूफान, 'phase –कला-प्रावस्था', 'cycle –आवर्तन', 'spasm –दरार', 'noise –शोर', 'emotion–मनोवेग', आदि शब्द संज्ञा किस प्रकार है ? ये सब अस्थायी घटनाएँ है। यदि 'मनुष्य', 'घर', संज्ञा शब्द इसलिए है कि चिरस्थायी तथा स्थिर घटनाएँ—अर्थात् वस्तु है तो फिर 'keep-रखना', 'adhere –चिपकना', 'extend–बढाना', 'project–प्रक्षेपण करना', 'continue–बना रहना', 'persist–डटे रहना'. 'grow–वढना', 'dwell –रहना' , इत्यादि क्रिया की श्रेणी मे क्या कर रहे है ? यदि यह आपत्ति उठाई जाए कि 'possess–कब्जा रखना', 'adhere–चिपकना' आदि इसलिए क्रिया हैं कि ये स्थिर सम्बन्ध का द्योतन करते है न कि स्थिर प्रत्यक्ष वस्तु का तो 'Equilibrium (सन्तुलन)', 'pressure (दवाव),' 'current (धारा)', 'peace (शान्ति)', 'group (वर्ग)', 'Nation (राष्ट्र)', 'Society (समाज)', 'tribe (कवीला, वंश)', 'sister–(वहन)', या कोई भी पारिवारिक सम्बन्ध दिखाने वाला शब्द संज्ञा शब्दो के अन्तर्गत क्यो है ? हमे पता चलेगा कि हमारे लिए "घटना" का अर्थ वह है जिसे हमारी भाषा क्रिया की श्रेणी मे रखती है या. उसके सादृश्य पर वनाई गई कोई भी अन्य चीज़, और, इस तथ्य का भी ज्ञान होगा कि 'Event (घटना)', 'thing (वस्तु)', 'object (विषय, कर्म)', 'retalionship (सम्बन्ध)', आदि की परिभाषा प्रकृति से देना सम्भव नही है, परन्तु इनकी परिभाषा देने के लिए, परिभाषा देने वाले की भाषा को घूमकर व्याकरणिक कोटियो का आश्रय लेना पड़ता है।

होपी भाषा मे, 'Lightening (विद्युत्)', 'wave (लहर)', 'flame (शोला)', 'meteor (धूम्रकेतु)', 'puff of smoke (धुएँ की घूट)', या 'pulsation (धडकन)', आदि क्रिया शब्द है–वे घटनाएँ जो आवश्यक रूप से क्षण स्थायी होती हैं, सिवाय "क्रिया" के और कुछ नही हो सकती। "वादल", या "तूफान" आदि संज्ञा शब्द कालावधि के न्यूनतम स्तर के समान है। होपी भाषा मे, आप देखेंगे, कि वास्तव मे घटनाओ (या भाषायी इकाइयो) का वर्गीकरण कालावधि प्रकार का है, जो कि हमारी विचार पद्धति के लिए विल्कुल विचित्र है। एक ओर नूत्का मे–जो वानकुवेर द्वीपो की भाषा है, हमे सारे शब्द क्रिया ही प्रतीत होगे, उसमे वास्तव मे प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, आदि की व्यवस्था नही है। वहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति का वह एकात्मक रूप ग्रहण किया गया है जो हमे प्रत्येक प्रकार की घटनाओ के लिए एक श्रेणी के शब्द प्रदान करता है। "घर" को द्योतन करने के लिए 'a house occurs (घर घटित होता है)', या 'it houses (यह बसाता है)'–आदि प्रयोग करने पडते हैं। ठीक ऐसे जैसे 'A flame occurs (एक ज्वाला या लौ उठती है)', या 'it burns (यह जलती है)'–ये शब्द हमे क्रियाओ की तरह प्रतीत होते है, क्योकि इनकी रूपरचना आवधिक और कालसूचक अर्थ भेदो के लिए की जाती है, ताकि 'house event (घर की घटना)' के शब्द मे प्रत्ययो के अर्थ होगे–'चिरस्थायी घर', 'अस्थायी

घर', 'भावीघर', और "घर जो कभी था," या जो "घर होना प्रारम्भ हुआ है", आदि आदि।

होपी भाषा मे एक सज्ञा है जो सभी उड़ने वाली चीजो या प्राणियों का द्योतन करती है; केवल पक्षियो को छोडकर जिनका द्योतन दूसरी सज्ञा द्वारा किया जाता है। पहला सज्ञा शब्द एक श्रेणी का सकेत करता है जिसे हम (Fc-B) (flying class minus birds), 'उडने वाली श्रेणी—पक्षियो को छोड़ कर' कह सकते हैं। होपी लोग मच्छरो, हवाई जहाजों, और वायुयान चालक सभी को एक ही शब्द से पुकारते है, और उन्हे इस विषय मे किसी कठिनाई का अनुभव नही होता। वास्तव मे परिस्थिति ही किसी वडी भाषायी श्रेणी जैसे Fc-D श्रेणी के विषम सदस्यो मे किसी प्रकार की सम्भावित भ्रान्ति को दूर करती है। हमे यह श्रेणी बहुत वडी तथा अभ्यावर्तक दिखाई देती है । परन्तु एक एस्कीमो को हमारी "snow" (बर्फ) श्रेणी ऐसी ही प्रतीत होगी। हमारी भाषा मे केवल एक ही शब्द है, जिसका प्रयोग गिरने वाली वर्फ, पृथ्वी पर पडी हुई वर्फ, वर्फ जो सिल के रूप में ढाल दी गई है, गलती हुई वर्फ, हवा के द्वारा उडाई गई वर्फ, आदि कैसी भी स्थिति के लिए किया जाता है। एक एस्कीमो के लिए इस प्रकार का सभी कुछ अभ्यावर्तन करने वाला शब्द अकल्पनीय है। वह कहेगा कि गिरती वर्फ और पिघलती वर्फ आदि इन्द्रियार्थता की दृष्टि से या कार्यवाहकता की दृष्टि से भिन्न है–अर्थात् दो वस्तुएँ है। वह इन सवके लिए और अन्य प्रकार की वर्फ के लिए भिन्न भिन्न शब्दो का प्रयोग करता है। अज्तेक लोग इससे विपरीत दिशा मे हमसे भी आगे वढ जाते है—क्योकि उनकी भाषा मे 'cold (ठण्ड)', 'ice (जमी वर्फ)', 'snow (वर्फ)' आदि के लिए केवल एक ही प्रातिपदिक है, परन्तु प्रत्यय भिन्न भिन्न जुडते है। 'ice (वर्फ)' संज्ञा रूप है, "cold" (ठण्ड) विशेषण रूप है, और "snow" वर्फ की धुन्ध है।

सवसे अधिक आश्चर्य इस बात का है कि पाश्चात्य ससार के बहुत से महान सामान्यीकरण जैसे 'Time' (समय), 'velocity' (वेग), तथा 'matter' (द्रव्य) आदि भी विश्व का सुसंगत चित्र प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य नही। और यह सच है कि जिन मानसिक अनुभूतियो को हम इन शीर्षको के अन्तर्गत रखते है वे भी अक्षुण्ण रूप मे रहती है, तथा दूसरे प्रकार के अनुभवो से व्युत्पन्न कोटियाँ, ब्रह्माण्ड विज्ञान का आधिपत्य अपने हाथ मे ले लेती है, और ऐसा लगता है कि वे समस्त सञ्चालन भलीभाति करती है। होपी काल-निरपेक्ष भाषा कही जा सकती है। यह भाषा मनोवैज्ञानिक काल को मान्यता प्रदान करती है जो कि वर्गसन के आवधिक काल के बहुत अधिक समान है, परन्तु यह काल गणितशास्त्र के काल "T," से बहुत भिन्न है, जिसका प्रयोग भौतिकीशास्त्री द्वारा किया जाता है। होपी काल की विचित्र विशेषताओ मे से कुछ ये हैं कि यह प्रत्येक प्रेक्षक के साथ बदल जाता है, इसमे समकालिकता को कोई स्थान नही और इसकी शून्य विमाएँ है—अर्थात् इसे एक से अधिक संख्या नही दी जा सकती। होपी लोग यह कभी नही कहते कि "मैं पाँच दिन ठहरा" परन्तु कहते हैं "मैं पाँचवे दिन चला गया"—इस प्रकार के काल का निर्देश

करने वाले 'दिन' जैसे शब्द का बहुवचन नही हो सकता। समस्या चित्र (चित्र 11 पृष्ठ 257) उस व्यक्ति को बौद्धिक व्यायाम करने का अवसर प्रदान कर सकता है जो कि यह जानना चाहे कि होपी क्रियाएँ किस प्रकार काल रचनाओ के बिना काम चलाती है। वास्तव मे एक क्रिया वाले वाक्यो मे हमारे कालों का एक ही व्यावहारिक लाभ है, वह यह कि चित्र मे दिखाई गई पाँच भिन्न विशेष परिस्थितियो का किस प्रकार प्रभेद दिखाया जा सके। काल-रहित होपी क्रिया-रूप किसी घटना के वर्तमान, भूत और भविष्य मे प्रभेद नही दिखाती परन्तु यह संकेत अवश्य करती है कि वक्ता उस वक्तव्य से किस प्रकार की तर्कसंगति की अपेक्षा करता है: (a) किसी घटना की सूचना (चित्र मे 1, 2, 3 परिस्थितियाँ), (b) किसी घटना की प्रत्याशा (स्थिति 4), (c) सामान्यीकरण या घटनाओ का नियम (स्थिति 5), स्थिति I, जहाँ वक्ता और श्रोता एक ही विषय क्षेत्र के सम्पर्क मे है, हमारी भाषा द्वारा दो अवस्थाओ मे विभाजित की जाती है, ((I) a b) जिसे क्रमश. वर्तमान और भूत की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार का विभाजन उस भाषा के लिए अनावश्यक है जो हमे यह विश्वास दिलाए कि कथन एक सूचनामात्र है।

होपी व्याकरण अपने पक्ष और वृत्तियो के माध्यम से क्षणिक, निरन्तर, और बार बार घटने वाली घटनाओ मे आसानी से प्रभेद कर सकता है, और सूचित घटनाओ के वास्तविक क्रम का द्योतन भी आसानी से करता है। अत. विश्व का वर्णन, विमात्मक काल की धारणा का आश्रय लिए बिना किया जा सकता है। प्रश्न यह है कि इस पद्धति पर बनाई गई भौतिकी किस प्रकार काल 'T' के समीकारों (equations) के बिना कार्य कर सकेगी ? जहाँ तक मै समझ सकता हूँ यह आवश्यक है कि उसके लिए एक भिन्न प्रकार की विचारधारा और भिन्न प्रकार के गणितशास्त्र की आवश्यकता पड़ेगी। हाँ 'V' (वेग) की धारणा को भी तिलाञ्जलि देनी होगी। होपी भाषा मे कोई शब्द ऐसा नही है जो वास्तव मे "speed" (तीव्र गति) "rapid (तीव्रगामी) का सही समानार्थक हो। इसका अनुवाद प्रायः किसी भी गत्यर्थक धातु के साथ तीव्र या बहुत अधिक जोड़ कर किया जाता है। यही हमारी नई भौतिकी की प्रकृति जानने के लिए सूत्र है। हमे एक नए शब्द (Intensity) तीव्रता "I" का समावेश करना पड़ेगा। प्रत्येक घटना या वस्तु का एक 'I' होगा, चाहे हम उस वस्तु या घटना को 'चल मानें' या अस्थायी अथवा अस्तित्वयुक्त मानें। शायद विद्युत् चार्ज (आवेश) का 'I' इसकी वोल्टेज् हो या (potential) विभव हो। हम घड़ियो का प्रयोग किसी प्रकार की तीव्रताओ को या कुछ सापेक्षिक तीव्रताओ को मापने के लिए करेंगे, क्योकि किसी भी वस्तु की निरपेक्ष तीव्रता निरर्थक होगी। हमारा पुराना मित्र (acceleration) त्वरण वहाँ अब भी होगा परन्तु निश्चित रूप से किसी दूसरे नाम से। हम शायद इसे 'V' नाम से पुकारें जिसका अर्थ Velocity (वेग) नहीं होगा अपितु Variation (अपक्रम) होगा। शायद सभी अभिवृद्धियो तथा सञ्चयो को 'V' ही कहा जाएगा। हमें "Rate" (रफ्तार) की धारणा कालिक या कालवाचक अर्थों में नही रखनी

चाहिए, क्योकि "Velocity" (वेग) की भाँति Rate (रफ्तार) भी गणितीय तथा भाषायी काल का सन्निवेश करता है। वास्तव मे हमे पता है कि सभी 'मापन' अनुपात है परन्तु तीव्रताओ का मापन किसी घड़ी या नक्षत्र की मानक तीव्रता की तुलना से किए गए तीव्रताओ के मापन को हम इतने ही अनुपात मे मान सकते है जितना कि एक फासले को एक मापक गज की तुलना मे मानते है।

दूसरी सभ्यता से आया हुआ एक वैज्ञानिक जो 'T' काल तथा 'V' वेग का प्रयोग करता आया है, हमे बडी कठिनाई से इन धारणाओं को समझा पाएगा। जब हम रासायनिक प्रतिक्रिया की तीव्रता 'I' की बात करना चाहेंगे तो वह इसके 'V' वेग या रफ्तार के विषय मे बात करेगा—वह उन शब्दो का प्रयोग करेगा जिन्हे हम पहले यही समझे थे कि उसकी भाषा मे ये शब्द केवल तीव्रता मात्र (Intensity) के लिए है। हमारी ही तरह पहले वह भी यह सोचेगा कि "तीव्रता" हमारा अपना शब्द 'V' (वेग) के लिए है। एक बार हम सहमत हो सकते है, परन्तु कुछ देर बाद हम असहमति प्रकट करना आरम्भ कर सकते है और दोनों पक्षो को यह आभास हो सकता है कि यहाँ परिमेयकरण (Rationalization) की दो भिन्न व्यवस्थाओ का प्रयोग किया जा रहा है। उसके लिए हमे यह समझाना बहुत कठिन होगा कि वह वास्तव मे रासायनिक अभिक्रिया से क्या समझता है। हमारे पास कोई ऐसा शब्द नही जो यहाँ ठीक बैठ जाए। वह इसे दौडते हुए घोडे के सादृश्य द्वारा समझाना चाहेगा, या अच्छे घोडे और सुस्त घोड़े के अन्तर द्वारा। उस समय हम दर्पमय हँसी हँसकर उसे बताने का प्रयत्न करना चाहेंगे कि वह सादृश्य तो भिन्न तीव्रताओ से सम्बन्धित है और इसके अतिरिक्त एक घोड़े तथा बीकर मे होने वाली रासायनिक अभिक्रिया मे कोई साम्य नही। हम यह भी स्पष्ट करना चाहेंगे कि एक दौडता हुआ घोडा स्थावर पृथ्वी के साथ एक जगम सापेक्ष है, जबकि प्याले के अन्दर रखा द्रव्य स्थिर है।

भाषायी दृष्टिकोण के द्वारा विज्ञान को एक महत्त्वपूर्ण देन यह भी हो सकती है कि इससे हमारे संदर्श ज्ञान का बहुत अधिक विकास हुआ है। अब केवल कुछ आधुनिक भारोपीय बोलियो को तथा उनकी रचनाओ से प्राप्त किए गए परिमेयकरण के तकनीको को मानव मस्तिष्क के विकास की चरम सीमा नही मानेगे, न ही ऐसे उनका वर्तमान विस्तार किसी योग्यतमावशेष के नियम के कारण या किसी ऐसे ही अन्य कारणवश है, अपितु कुछ 'ऐतिहासिक घटनाओ' के कारण है—घटनाएँ जिन्हे हम अनुगृहीत पक्षो के सकुञ्चित दृष्टिकोण से 'भाग्यशाली' कह सकते है। उन्हे या उनके साथ हम अपनी विचार प्रक्रियाओ को भी अब अधिक समय तक विवेक और ज्ञान के सप्तक मे सर्वव्यापी नही मान सकते, अपितु इस आकाश गगा के वृहद् विस्तार मे एक तारा पुजमात्र मान सकते है। पृथ्वीमण्डल पर फैली हुई भाषायी व्यवस्थाओ की अविश्वसनीय विविधता की मात्रा का सम्यक् बोध मनुष्य पर इस अपरिहार्य भावना की छाप लगा देता है कि मानवी मनोवृत्ति कल्पनातीत रूप से पुरातन है, तथा इतिहास के कुछ हजार वर्ष, जिनके विषय मे हमे लिखित

प्रमाणों द्वारा पता चलता है, इस भूमण्डल पर हमारे अतीत के अनुभागो को आँकने वाले मापक पर पैन्सिल के चिन्ह की मोटाई से अधिक नही है। तथा, इन अर्वाचीन सहस्राब्दियों की घटनाओ ने विकासक्रम मे भी कोई विशेष छाप नही डाली है, न ही मानव जाति ने कोई अचानक तेजी से ऊँची छलाँग ही लगाई है, न ही इन अर्वाचीन सहस्राब्दियो मे कोई प्रभावशाली सश्लेषण ही प्राप्त किया है, परन्तु कतिपय भापायी सूत्रीकरणो तथा प्रकृति विपयक विचारो के साथ, जो उसे अनिर्वचनीय दीर्घतर प्राचीन काल से रिक्थ मे प्राप्त हुए है, थोड़ा खेल अवश्य किया है। तथापि, न तो इस भावना से, और न ही अधिकतर अज्ञात, स्वय भापायी उपकरणो पर सन्दिग्ध रूप से आश्रित होने की भावना से हमे हताश होना चाहिए, अपितु हमे अपने अन्दर उस विनय का समावेश करना चाहिए जो प्रत्येक सच्ची वैज्ञानिक भावना के साथ होता है, और जो मन के उस 'दम्भ' का निषेध कर सके जो सच्ची वैज्ञानिक जिज्ञासा तथा तटस्थता मे वाधक होता है।

भाषाविज्ञान—एक यथार्थ विज्ञान*

विज्ञान के ससार मे 1890 के पश्चात् जो क्रान्तिकारी परिवर्तन, विशेपरूप से भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीव-विज्ञान, तथा मानवविज्ञान मे हुए है, वे नए तथ्यो के कारण नही अपितु तथ्यो पर नए ढग से सोचने के कारण हुए है। हाँ, नए तथ्य भी स्वय पर्याप्त मात्रा मे तथा वजनदार रहे है, परन्तु उनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण शोध के वे क्षेत्र है जिनमे वे प्रकट हुए है, जैसे सापेक्षतावाद, प्रमात्रावाद, विद्युदणु-विज्ञान, उत्प्रेरण, कोलाइड-रसायनशास्त्र, जीव-सिद्धान्त, जेस्टाल्ट-मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, निष्पक्ष सास्कृतिक मानवशास्त्र आदि आदि। विज्ञान के महान श्रेण्य काल मे अप्रतिवादित रूप से प्रचलित विश्व सम्वन्धी विचार-धारा मे सगत न होने के कारण तथा स्पष्टीकरण के लिए प्रयत्नो, समन्वयो, तथा पुनर्कथनो द्वारा ये विज्ञान के शोध क्षेत्र अभूतपूर्व मात्रा मे मौलिक रूप से नूतन धारणाओ के वैशिष्टच से युक्त है।

मैं 'तथ्यो' के विपय मे सोचने को नए ढग कहता हूँ, परन्तु अधिक सही कथन के अनुसार 'तथ्यो के विपय मे (Talk) बात करने के नए ढग' कहना उचित होगा। शोध सामग्री के विपय मे भाषा का यह प्रयोग किसी वैज्ञानिक प्रगति मे प्रमुख साधन होता है। इसमे सन्देह नही कि (Talk)वात करना' शब्द के साथ जो हीन भावना का धुधला सा व्यग्य जुडा है, उससे हमे अपने आप को मुक्त करना पडेगा। जैसे कि "Just talk" (वस यू ही वात करना) उपवाक्य मे, 'काम करने' तथा 'वात करने' मे जो असत्य विरोध है, परन्तु जिसकी कल्पना सभी अग्रेजी भाषी करना चाहते है (हमे उससे भी अपने आपको मुक्त करना पड़ेगा)। मनुष्य के समस्त कार्यो मे सवसे अधिक मानवीय कर्म "वात करना" के विषय मे हमे किसी प्रकार का खेद प्रकट नही करना चाहिए। पशु सोच भले ही सकते हो परन्तु वात नही कर सकते। "Talk" —बात करना, "वोलना" शब्द वास्तव मे "सोचना" शब्द से अधिक शिष्ट एवं प्रतिष्ठित माना जाना चाहिए। हमे इस सत्य को भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि विज्ञान का आरम्भ और अन्त वातो मे ही होता है, यही तथ्य किसी भी प्रकार की हेयता का निषेध करता है। ऐसे शब्दो, जैसे 'Analyze,—विश्लेषण करो', 'Compare—तुलना करो', 'Deduce—निगमन करो', 'Reason,—तर्कणा करो', 'Infer अनुमान लगाओ', 'Postulate पूर्वधारणा बनाओ', 'Theorize—सिद्धान्तीकरण करो', का अर्थ है कि जब कभी वैज्ञानिक कुछ करता है तो

---

* Technology Review 43:—61—63, 80—83 (दिसम्बर 1940) से पुनर्मुद्रित।

जो कुछ करता है उसके विषय मे बात करता है। जैसा कि ल्यूनार्ड ब्लूमफील्ड ने प्रदर्शित किया है कि वैज्ञानिक शोध वाक्यो के एक सेट से आरम्भ होता है जो कि विशेष प्रेक्षणों एवम् परीक्षणो के लिए मार्ग प्रशस्त करते है, तथा जिनके परिणाम तब तक पूर्णतया वैज्ञानिक नही हो पाते जब तक कि वे भाषा मे पुन. समाविष्ट न हो जाएँ, और पुन: ऐसे वाक्यो के एक सेट को जन्म न दे दें जो कि 'अज्ञात' के क्षेत्र मे छानबीन करने का आधार बन सके। भाषा का यह वैज्ञानिक प्रयोग समस्त भापा का अध्ययन करने वाले विज्ञान अर्थात् भापिकी के नियमो या सिद्धान्तो के अधीन है।

जैसा कि मैं अप्रैल मास के रिव्यू के लिए लिखे गए अपने पिछले लेख मे यह स्पष्ट करने की चिन्ता मे था कि हम सब 'बात करने' के विपय मे भ्रान्तिग्रस्त है, एक भ्रान्ति, कि बात करना नितान्त निर्बाध एवम् सहज है, तथा हम इससे जो कुछ भी व्यक्त कराना चाहते है यह कर देती हैं। यह भ्रान्तिपूर्ण आभास इस तथ्य के परिणामस्वरूप है कि बोलने के प्रत्यक्ष, उन्मुक्त प्रवाह के अन्तर्गत अनिवार्य प्रपञ्च इतना अधिक स्वेच्छाचारी है कि बोलने वाला और सुनने वाला दोनो ही अचेतन रूप से मानो प्रकृति के नियमो की जकड मे आ गए हो।

भापा के तथ्य पृष्ठभूमिगत तथ्य है, जिनके विषय मे बोलने वाले बिल्कुल अनजान होते है या अधिक से अधिक उन्हे बहुत थोडा सा ऐसा आभास होता है जैसा कि कमरे के अन्दर हवा मे धूलि के कणो का हो सकता है यद्यपि भाषायी तथ्य बोलने वालों पर गुरुत्वाकर्षण की तरह अधिक नियन्त्रण रखते है अपेक्षाकृत धूलि' के उदाहरण के। भाषा के सहज, अविवेचित तथा अनभिप्रेत ढाँचे सभी लोगो के लिए समान नही होते, परन्तु प्रत्येक भाषा के लिए विशिप्ट होते हैं तथा भापा के व्याकृत या रूपीकृत रूप को प्रस्तुत करते है, या भाषा का व्याकरण बनाते है। यहाँ पर 'व्याकरण' शब्द उस व्याकरण शब्द से अधिक अर्थयुक्त है जिसे हमने अपने स्कूल के दिनो मे पाठ्य पुस्तको मे पढा था।

इस तथ्य से ही उस नियम का समारम्भ होता है जिसे मैंने "भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त" का नाम दिया है। जिसका, अनौपचारिक शब्दो मे अर्थ है, कि स्पप्ट रूप से भिन्न व्याकरणो का प्रयोग करने वाले व्यक्ति, अपने व्याकरण द्वारा, भिन्न प्रकार के प्रेक्षण, तथा बाह्यरूप से समान प्रेक्षण-कार्यो के भिन्न मूल्याकन की ओर निर्दिष्ट कर दिए जाते है, अत: वे प्रेक्षक के रूप में समान नहीहैं, तथा ससार के विषय मे उन्हें कुछ भिन्न परिणामों पर पहुँचना चाहिए। (इस विषय मे एक अधिक औपचारिक उल्लेख पिछले अप्रैल के मेरे लेख मे किया गया है)। इस प्रकार के प्रत्येक असूत्रीकृत एवम् ससार सम्बन्धी साधारण दृष्टिकोण से एक सुस्पष्ट वैज्ञानिक संसार सम्बन्धी दृष्टिकोण का आविर्भाव उन्ही आधारभूत व्याकरणिक ढाँचो के ऊँचे विशेषीकरण के द्वारा हो सकता है, जिन्होने पहले साधारण तथा अस्पष्ट दृष्टिकोण को जन्म दिया था। अत आधुनिक विज्ञान का संसार सम्बन्धी दृष्टिकोण पाश्चात्य भारोपीय भाषाओ के आधारभूत व्याकरणो के उच्चतर

विशेषीकरण द्वारा आविर्भूत हुआ है। निस्सन्देह 'विज्ञान' इस व्याकरण द्वारा उत्पन्न नही किया गया है, यह इसके द्वारा केवल रञ्जित किया गया है। इस भाषावर्ग मे विज्ञान का आविर्भाव इसलिए हुआ क्योकि ससार के जिस कोने मे ये भाषाएँ प्रमुख रूप से बोली जाती थी, वहाँ कुछ ऐतिहासिक घटनाओ का ऐसा ताँता बँधा कि उन्होने वाणिज्य, मूल्याकन, उत्पादन, तथा तकनीकी आविष्कारो को प्रोत्साहन दिया।

किसी एक 'दत्त' ससार—दृष्टिकोण मे भाग लेने वालो को उन सरणियो के मुहावरेदार होने का बोध नही होता जिनमे बोलना और सोचना प्रवाहित होता है, वे उन्हे युक्तियुक्त अनिवार्यताएँ मान लेते है । परन्तु किसी विदेशी व्यक्ति का उदाहरण लीजिए जो पर्याप्त मात्रा मे भिन्न भाषा और सस्कृति का अभ्यस्त हो, या किसी वैज्ञानिक को लीजिए, जो परवर्ती युग का हो और उसी मौलिक प्रकार की परन्तु कुछ भिन्न भाषा बोलता हो, तथा एक दत्त ससार-दृष्टिकोण मे भाग लेने वालों को जो कुछ युक्तियुक्त तथा अनिवार्य लगता हो, उसे वैसा न लगता हो। औपचारिक रूप से प्रचलित कारण उसे मुख्य रूप से बहुत ही अधिक मुहावरेदार "Facons de parler" बोलने का ढंग प्रतीत हो सकता है। अब विचार कीजिए प्रकृति विषयक प्रश्नो के उन उत्तरो पर जो किसी समय विद्वान लोगो द्वारा भी दिए जाते थे। पानी पम्प मे ऊपर क्यों चढता है ? क्योकि प्रकृति 'शून्यता' से घृणा करती है। पानी आग को क्यो बुझाता है? क्योकि पानी आर्द्र होता है, या क्योकि आग्नेय तत्त्व और जल तत्त्व परस्पर विरोधी है। अग्नि की ज्वाला ऊपर क्यो उठती है? अग्नि तत्त्व के हल्के होने के कारण। कोई व्यक्ति पत्थर को एक चमडे के चूषक से कैसे उठा सकता है? क्योकि चूषण-क्रिया पत्थर को ऊपर खीच लेती है। एक पतंगा प्रकाश की ओर क्यो उडता है ? क्योकि पतगा उत्सुक है या प्रकाश उसे अपनी ओर खीचता है। यदि ये वाक्य किसी समय तर्क-सम्मत माने जाते थे और आज इन्हे विचित्र वृत्ति-भाषा की स्वभाव-विशेषता समझा जाता है, तो यह परिवर्तन इसलिए नही हुआ कि विज्ञान ने नए तथ्यो को खोज निकाला है। वास्तव मे विज्ञान ने पुराने तथ्यो के लिए नए भाषायी सूत्र अपना लिए है, और अब जबकि हम नई बोली के अभ्यस्त हो गए है तो पुरानी भाषा की कई विशेषताएँ हम पर लागू नही होती।

हम आधुनिक लोग अभी तक इस स्थिति मे नही है कि पुराने युग के ज्ञान-दम्भियो का उपहास कर सके, जिन्होने पानी की आर्द्रता के द्वारा उसके कई गुणो को समझाया है। वह शब्दावली जिसे हम भाषा तथा साँस्कृतिक तथ्य के लिए प्रयुक्त करते हैं प्राय 'पानी की आर्द्रता' या 'प्रकृति की शून्यता से घृणा' आदि की कोटि की होती है। अनेक तथा विविध भाषाओ की विशेषताओ पर भाषा-विज्ञानियो को शोध करने की बहुत आवश्यकता है; यदि हम सरलतापूर्वक सोचना चाहते हैं, तथा उन दोषो से बचना चाहते है जिनका भय हमे अचेतन रूप से अपनी भाषा-पृष्ठभूमि को स्वीकार कर लेने से हो सकता है। इस निबन्ध के आरम्भ मे

उल्लिखित विज्ञान के उन नए क्षेत्रो से विवक्षित नए सोचने के ढग भाषाविज्ञान से उत्तरोत्तर अधिक योगदान की अपेक्षा रखते है। अज्ञात की ओर विज्ञान के अगले महा-अभियान के लिए इसकी बहुत आवश्यकता है।

इस परिस्थिति मे वे दार्शनिक तथा गणितज्ञ विश्लेषक, जो स्वय भाषाविज्ञान के अल्पज्ञान द्वारा उच्चतर भाषायी प्रतीकवाद के क्षेत्र का अवलोडन करना चाहते है, सहायक सिद्ध नही हो सकते। दुर्भाग्यवश, आधुनिकतम लेखको के इस क्षेत्रगत प्रयासो मे शिक्षुता सम्बन्धी प्रशिक्षण के अभाव का बहुत बड़ा दोष है। जबकि भाषा के प्राथमिक नियमो का भी सम्यक् ज्ञान न हो तो भाषायी अर्थो के निमित्त उच्चतर गणितीय सूत्र बनाने का प्रयत्न करना आपत्ति मे फँसना मात्र है। भौतिकी का प्रारम्भ आण्विक सरचनाओ तथा अन्तरिक्ष किरणो से नही होता, अपितु साधारण

C,C,>C,

(OVERRIDING RESTRICTION)

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15)
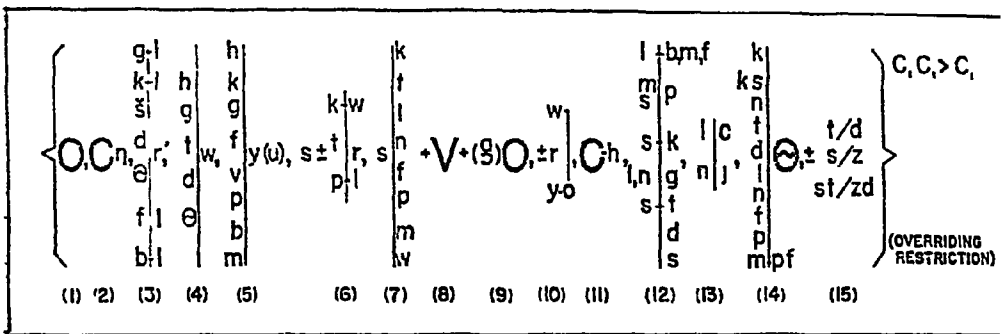
चित्र 12. अंग्रेजी (मानक मध्य पश्चिमी अमरीकी अंग्रेजी) एकाक्षरिक शब्द का संरचनात्मक सूत्र। इस सूत्र को किन्हीं विशिष्ट अक्षरों के वर्ग के लिए विशेष प्रतीकों द्वारा सरल बनाया जा सकता है, परन्तु यह सरलीकरण इसकी व्याख्या को और अधिक कठिन बना देगा। एक एकाक्षरिक शब्द के लिए सरलतम सूत्र C+V हो सकता है, तथा कुछ भाषाएं इस सूत्र का अनुसरण करती है। पोलिनेशियाई भाषाओं का इससे दुसरे नम्बर पर सरलतम सूत्र है 0, C+V। ऊपर दिखाई गई अंग्रेजी शब्द संरचना की जटिलता से इसका वैषम्य देखिए।

से स्थूल भौतिक पदार्थो की गति तथा इन गतियो की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति द्वारा होता है। इसी प्रकार भाषा-विज्ञान का प्रारम्भ न तो अर्थ से होता है और न ही युक्तिसगत तर्क वाक्यो की सरचना से, वल्कि किसी एक भाषा की स्थूल श्रव्य ध्वनियो द्वारा वनाई गई अविकल्पी अभिरचनाओ तथा इन को अभिव्यक्त करने के लिए निजी प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियो द्वारा होता है। इन स्थूल ध्वनि अभिरचनाओ से सम्बन्धित साधारण शब्दावली से ही विज्ञान की उच्चतर विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओ का विकास होता है, जैसे कि लकडी के गिरते और खिसकते खण्डो से सम्बन्धित साधारण से प्रयोगो तथा गणितों से समस्त उच्चतर भौतिकी गणित यहाँ तक कि प्रमात्रा-सिद्धान्त भी विकसित हुआ है। वैसे तो ध्वनि-अभिरचन सम्बन्धी तथ्य भी कुछ सरल नही है; परन्तु वे भाषण के अचेतन, अविकल्पी, पृष्ठ-भूमिगत तथ्य को इतना सुस्पष्ट बनाते है जितना कि कोई अन्य नही बना सकता।

उदाहरणार्थ अंग्रेजी भाषा के एकाक्षरी शब्दो के लिए रचनात्मक सूत्र (चित्र 12) मे कुछ थोड़ा प्रतीत होता है। फिर भी, एक भाषायी अभिरचन के लिए यह अपेक्षाकृत कुछ सरल है। अग्रेजी-भाषी जगत मे दो और पाँच वर्ष की आयु के वीच वाले बच्चे अन्य सूत्रो के साथ इस सूत्र द्वारा दी गई अभिरचना को सीखने मे लगे रहते है। जब बच्चा छह वर्ष का होता है तो यह सूत्र उसके मस्तिष्क मे पूरी तरह अकित तथा स्वाभाविक हो जाता है। इस तथ्य का समर्थन बच्चो द्वारा वनाए गए अनर्गल शब्द भी करते है—बच्चे इसकी सम्भावनाओ की छानवीन भले ही करे परन्तु इस सूत्र से रत्ती भर भी वाहर नही जाते। वाल्यावस्था मे ही बच्चो के

चित्र 13. परिवर्त्तक तथा परिवर्त्त : A आरेख द्वारा तथा गणितीय सूत्र द्वारा (समीकरण) परिवर्त्तकों का एक सह-सम्बन्ध दिखाता है। B विस्तारणीय उदाहरणो द्वारा तथा एक अभिरचना सूत्र द्वारा परिवर्त्तो का एक सह-सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। सूत्र का अर्थ है कि अंग्रेजी का प्रत्यय जो सैद्धान्तिक दृष्टि से ("मूल द्वारा",√) एक अन्तिम 'S' है जो किसी दत्त विषय में चार परिवर्तों में से किसी एक का रूप धारण कर लेता है : किसी ऊष्म वर्णान्त व्यञ्जन के पश्चात् "—ız" का, किसी घोष स्वर या व्यञ्जन के पश्चात् "—z", किसी अघोष व्यञ्जन के पश्चात् "—s" का, केवल विशेष परिवर्त्त 'f#', के बाद यह '—z' का रूप धारण करता है, "f#" 'v' में प्रत्यावर्त्तित होता है।

लिए यह सूत्र वैसा ही हो जाता है जैसा कि यह एक वयस्क के लिए है। इस सूत्र से हट जाने वाले किसी भी ध्वनिक्रम का बड़ी कठिनाई के पश्चात् भी उच्चारण

नही हो सकता। नए शब्द जैसे "blurb" अर्थहीन शब्द जैसे लेविस कैरोल (Lewis caroll) के ("mome raths") सयोग जिनका प्रयोग पशुओ और जगली लोगों की चिल्लाहट का सकेत देने के लिए किया गया है जैसे "glub" तथा "Squonk" आदि भी इस सूत्र के साँचे से बन कर निकलते है। जब कभी कोई युवक किसी विदेशी भाषा को सीखना प्रारम्भ करता है तो वह अचेतन रूप से इसी सूत्र के अनुसार अक्षर बनाने का प्रयत्न करता है। इसमे सन्देह नही कि यह सूत्र वहाँ काम नही आएगा, क्योकि विदेशी भाषाएँ अपने सूत्रो के अनुसार ढली होती है। प्राय:
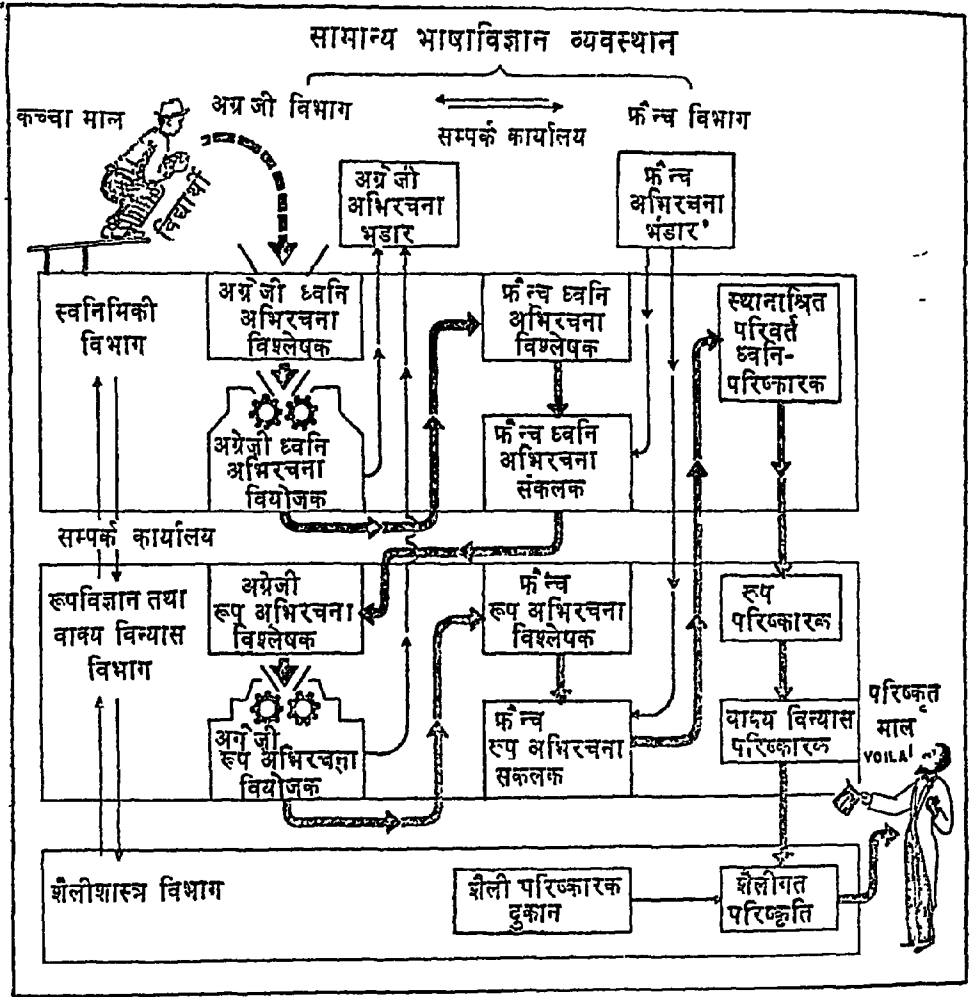
चित्र 14. फ्रेंच को सरलतापूर्वक सीखने की प्रक्रिया का संशोधित प्रवाह पत्र। गारन्टी : उत्पादन में कोई अड़चन नहीं।

शिक्षार्थियों के लिए यह समय बहुत ही कठिनाई का होता है। यह बिलकुल न जानते हुए कि कोई सूत्र इस कठिनाई का मूल कारण है, वह प्राय: अपने आप को दोषी ठहराता है। प्रारम्भिक अवस्था मे उत्पन्न हुई ये निराशाएँ एवम् कुण्ठाएँ उसके विदेशी भाषा का प्रयोग करने के प्रयत्न में निरन्तर बाधक बनी रहती है। या फिर, उदा-

हरणार्थ, वह सुनता भी अपने सूत्र के अनुसार ही है ताकि जो अंग्रेजी ध्वनि-संयोग वह बनाता है, उसे वे शुद्ध फ्रैन्च ध्वनियाँ प्रतीत होती है। तब वह कुछ कम कुण्ठाग्रस्त होता है तथा "बुरी" फ्रासीसी भाषा का "धाराप्रवाह" वक्ता हो सकता है।

यदि किसी प्रकार वह इतना भाग्यशाली है कि उसे प्रारम्भिक फ्रासीसी पढाने वाला कोई ऐसा सैद्धान्तिक भाषाविज्ञानी मिल जाए, जो उसे अंग्रेजी ध्वनि सूत्रों का अभिरचन पहले ही समझा दे जिससे कि वे अर्धचेतन हो जाएँ, और परिणाम-स्वरूप उस पर उन अभिरचनाओ की जकड़ कम हो जाए जो उसे संस्कारवश मिली है; यद्यपि जहाँ तक अंग्रेजी बोलने का सम्बन्ध है वे स्वाभाविक रूप मे विद्यमान रहती है। तब वह फ्रासीसी भाषा के अभिरचन को आन्तरिक विरोध के बिना ही सीख लेता है तथा भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करने की अवधि कम होकर एक लघ्वंश मात्र रह जाती है। यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि सम्भवतः प्रारम्भिक फ्रासीसी इस ढग से कही नही पढाई जाती—कम से कम सरकारी सस्थाओ मे तो कही नही। बहुत से वर्षो का समय तथा करोडो डालर मूल्य के अपव्ययित शैक्षणिक प्रयत्न बचाए जा सकते है, यदि इन प्रणालियो को अपना लिया जाए तो, परन्तु ऐसे व्यक्ति, जिनकी सैद्धान्तिक भाषाविज्ञान मे गति है, बहुत ही अल्पसख्या मे है तथा उच्चतर सस्थाताओ मे है ।

आइए (चित्र 12) मे दिए गए अंग्रेजी भाषा के सूत्र का परीक्षण करें। यह गणितीय प्रतीत होता है परन्तु है नही। यह अभिरचन प्रतीकविद्या की अभिव्यक्ति है, एक विश्लेषणात्मक रीति है, जो भाषा-विज्ञान से उद्भूत होती है, तथा इसका सम्बन्ध भाषा-विज्ञान के साथ लगभग वैसा ही है जैसा कि उच्चतर गणित का भौतिकी के साथ। इस तरह के अभिरचना सूत्रो से कई प्रकार की प्रक्रियाएँ की जा सकती है, जैसे कि गणितीय अभिव्यक्तियो का जोड किया जा सकता है, गुणन किया जा सकता है, या अन्य किसी प्रकार से उन्हें प्रयोग मे लाया जा सकता है। केवल अन्तर यह है कि यहाँ पर प्रक्रियाएँ जोड और गुणन आदि की नही है अपितु उन अर्थो की है जो भाषायी प्रसग मे लागू होते है। इन प्रक्रियाओ द्वारा कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते है और जाँच-अधीन भाषा द्वारा प्रस्तुत अव्यवस्था के वास्तविक कठिन स्थलो पर बुद्धिमत्तापूर्वक आक्षेप किए जा सकते है। साधारणतया भाषा-विज्ञानी को कागज़ पर सूत्र लिखकर काम चलाने की आवश्यकता नही पडती, परन्तु वह अपने मन मे साकेतिक प्रक्रियाएँ करके बता देता है कि "पूर्ववर्ती अनुसन्धाता द्वारा "क" श्रेणी की धातुओ के रूपो का विवरण ठीक रूप से नही दिया गया है"; या" "देखिए इस भाषा मे एकान्तर बलाघात होने चाहिए यद्यपि मै उन्हे पहले सुन नही पाया था", या, यह अजीब बात है परन्तु "इस भाषा मे 'द' और 'ल' एक ही ध्वनि के उपरूप होने चाहिए" आदि आदि। तत्पश्चात् वह किसी मातृभाषी पर प्रयोग करके छानबीन करता है तथा उसे पता चलता है कि उसका निष्कर्ष युक्तियुक्त है। अभिरचन-प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ गणित की तरह सुनिश्चित

है परन्तु परिमाणात्मक नही हैं। वे अन्तत. गणित की सख्या और विमा की ओर नही अपितु अभिरचन और सरचना की ओर सकेत करते है। न ही उनका सिद्धान्त या प्रतीकात्मक तर्क के साथ ऐक्य समझना च।हिए, चाहे वे किसी प्रकार सम्वन्धित भले ही हो।

सूत्र का पुन· अनुसरण करने पर इसका सरलतम भाग आठवाँ पद है, (पदो के नम्बर नीचे दिए गए है) जिसमे दो धन चिन्हो के बीच V है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक अग्रेजी शब्द मे स्वर होता है (जो कि सभी भापाओ के लिए सही नहीं है) और क्योकि v दूसरे प्रतीको द्वारा सीमित नही किया गया है, अत कोई भी अग्रेजी स्वर एकाक्षरी शब्दो मे आ सकता है। (यह वहु-अक्षरी अग्रेजी शब्दो के सभी अक्षरो के विषय मे सही नही है)। इसके बाद हम पहले पद की ओर मुडते है जो शून्य है और जिसका अर्थ है कि स्वर से पहले किसी अन्य ध्वनि का न होना भी सम्भव है,—अर्थात् शब्द स्वर से आरम्भ हो सकता है—एक सरचना जो वहुत सी भाषाओ मे असम्भव है। पदो के बीच अर्धविराम "या" के सूचक है। दूसरे पद मे C—ऋण एक लम्बी पूँछ वाला n है । इसका अर्थ यह हुआ कि एक व्यञ्जन को छोडकर कोई भी एकल अग्रेजी व्यञ्जन शब्द के आरम्भ मे आ सकता है। उस एक मात्र व्यञ्जन को, जो शब्द के आरम्भ में नही आता, भापा-विज्ञानी लम्बी पूँछ वाले n से लिखते है, तथा उस ध्वनि को प्राय हम ng से लिखते हैं जैसे hang मे। यह ng ध्वनि अग्रेजी शब्दों के अन्त मे प्राय. आती है, परन्तु शब्दो के आरम्भ मे कभी नही। वहुत सी भाषाओ जैसे होपी, एस्किमो, या समोअन मे यह एक शब्द के लिए साधारण प्रारम्भिक ध्वनि है। हमारे अभिरचन इन आरम्भिक ng वाले विदेशी शब्दो के उच्चारण करने मे भयकर बाधा उपस्थित करते है। परन्तु ज्यो ही हमे 'ng' के उच्चारण करने की क्रियाविधि बता दी जाती है और हमे यह पता चलता है कि हमारा असामर्थ्य अभ्यसित अभिरचन के कारण है तो हम ng को जहाँ चाहे वहाँ रख सकते है, तथा इन शब्दो का उच्चारण बडी आसानी से कर सकते है। अत. उक्त सूत्र मे जो वर्ण है वे सदैव उन वर्णो के तुल्य नही है जिनके द्वारा हम सामान्य वर्त्तनी मे अपने शब्दो को अभिव्यक्त करते हैं, परन्तु वे असन्दिग्ध प्रतीक हैं जिन्हे भाषाविज्ञानी वर्तनी की नियमित एवम् वैज्ञानिक व्यवस्था मे कुछ ध्वनियो के लिए निर्धारित करते है।

तीसरे पद के अनुसार दो कॉलम है—पहले कॉलम का कोई भी ऐसा व्यञ्जन शब्द के आरम्भ मे आ सकता है जिसका अनुवर्ती 'र्' हो, या 'ग्, क्, फ्' के साथ, अथवा ऐसे 'व्' के साथ जिसका अनुवर्ती 'ल्' हो । s चिन्ह sh ध्वनि का द्योतक है । अत: हमारी भाषा मे shred होता है shled नही । यह सूत्र इस तथ्य को प्रस्तुत करता है कि shled अग्रेजी की प्रकृति के विरुद्ध है और यह shred के चीनी उच्चारण का प्रतिनिधित्व करता है, या जर्मन भाषा के sled का। (sl सातवे पद द्वारा अनुज्ञात है)। ग्रीक 'थेटा' "th" का प्रतीक है, इसीलिए हमारी भाषा मे thread हो सकता है thled नही । अत: परवर्ती शब्द यह

संकेत देता है कि वह या तो चीनी thread का उच्चारण कर रहा है, या बच्चा तुतलाकर जर्मन sled बोल रहा है। परन्तु tr तथा pr. तथा pl तीसरे पद मे क्यो नही है? क्योकि वे 'S' पूर्वक हो सकते है, अत छटे पद मे उनका आयोजन किया गया है। इसी प्रकार चौथे पद का अर्थ है कि पहले कॉलम के व्यञ्जन अनुवर्ती W सहित शब्द के आरम्भ मे आ सकते है। Hw अंग्रेजी की सभी बोलियो में नही आते; साधारण वर्तनी मे इनका क्रम उल्टा करके लिखा जाता है, जैसे wh। यदि किसी बोली मे hw नही है तो वह wh का साधारण w की तरह उच्चारण करेगा। thw कतिपय शब्दो मे आता है, जैसे thwack और thwart और gw बडे भोडे ढंग से केवल नामो मे आता है, जैसे Gwen, Gwynn, Kw साधारणतया 94 लिखा जाता है तथा इसके पूर्व S आ सकता है, अतः इसका स्थान छटे पद मे है।

पाँचवाँ पद दिखाता है कि शब्द का आरम्भ पहले कॉलम के किसी एक व्यञ्जन तथा अनुवर्ती y से हो सकता है, परन्तु केवल उसी समय जबकि शब्द में "u" स्वर हो, अत. हमारे पास hue (hyuw), cue, few, muse जैसे शब्द हैं। कुछ बोलियों मे tyu, dyu, nyu भी है (जैसे tune, due, new मे) परन्तु मैंने यह सूत्र उत्तरी अमेरिका की विशेष बोलियो के लिए प्रस्तुत किया है, जहाँ इन शब्दों मे सदा tu, du, nu है। छटा-पद गुच्छो को दिखाता है जो शब्द के आरम्भ मे अकेले या पूर्ववर्ती S सहित आ सकते है; अर्थात् (क्, त्, प्) K, t, p अनुवर्ती r सहित, Kw, तथा pl भी, (देखिए train, strain, crew, screw, quash, squash, play तथा splay) सातवाँ पद जिसका अर्थ है कि दूसरे कॉलम के किसी भी व्यञ्जन से अनुवर्तित S के द्वारा शब्द का आरम्भ हो सकता है, तथा यह उन शब्दाशो को पूर्ण कर देता है जो इसके स्वर से पहले आ सकते है।

आठवे पद से आगे वाले पद स्वरो से परे आने वाली ध्वनियों का विवरण प्रस्तुत करते है। यह भाग शब्दारम्भ से कुछ अधिक पेचीदा है, तथा प्रत्येक बात की विस्तारपूर्वक व्याख्या करने मे काफी समय लग सकता है। इस प्रतीकवाद के सामान्य नियम पहली व्याख्याओ से स्पष्ट हो जाएँगे। नवाँ पद अपने 'शून्य' द्वारा स्पष्ट करता है कि शब्द स्वरान्त हो सकता है यदि स्वर a हो तो, जिसका अभिप्राय यह हुआ कि (1) उपपद का स्वर a तथा विस्मयबोधक huh? तथा (2) pa एवम् ma का स्वर तथा विस्मयबोधक ah ! bah ! या स्वर, शब्द के अन्त मे आ सकता है यदि वह aw ध्वनि है तो जैसे paw, thaw मे। कुछ बोलियो मे (पूर्वी न्यू इगलैण्ड, दक्षिणी सयुक्त राज्य, और दक्षिणी ब्रिटिश) वे शब्द स्वरान्त होते है जिनकी वर्तनी मे–ar होता है जैसे car, star (इन बोलियो मे Ka और sta); परन्तु संयुक्त राष्ट्र की बहुत सी बोलियो मे ये शब्द निश्चित रूप से r मे अन्त होते हैं। परन्तु दक्षिणी सयुक्त राष्ट्र को छोडकर पूर्वी न्यू-इंग्लैण्ड तथा दक्षिणी ब्रिटिश की बोलियो मे, ये शब्द अनुवर्ती

शब्द के प्रारम्भ मे आने वाले स्वर से पहले संयोजक r को प्रकट करते हैं। इस प्रकार far off शब्द को fa of, कहता है; बोस्टन निवासी तथा ब्रिटिशवासी fa rof, आरम्भिक अन्तस्थ r के साथ बोलते है, परन्तु संयुक्त राष्ट्र का बहुत सा भाग लोडित पश्च r के साथ far of कहता है। कुछ बोलियो के लिए पद नौ कुछ भिन्न होगा क्योंकि वह एक अन्य सम्भव अन्तिम स्वर दिखाता है, जैसे मध्य पश्चिमी प्रदेश के लोग बोस्टन वालों के द्वारा किए गए fur, cur, के उच्चारण (fa, Ca) मे देखेंगे और इसमे सन्देह नही कि उन्हे यह उच्चारण बड़ा विचित्र लगेगा। यह अनाखी ध्वनि वेल्श, गैलिक, तुर्की, ऊते तथा होपी में सामान्य रूप से पाई जाती है; परन्तु मुझे विश्वास है कि बोस्टन ने यह ध्वनि इनमे से किसी भी स्रोत से नही ली है।

क्या एकाक्षरिक शब्द e, i, o या u मे अन्त हो सकते हैं ? नही, इंगलिश मे नहीं होते। इस प्रकार की वर्तनी वाले शब्द व्यञ्जन ध्वनि y या v मे अन्त होते है। इस प्रकार 'I, को जब सूत्र रूप मे अभिव्यक्त किया जाता है तो यह ay है, we, wiy है, you, yuw, तथा how, haw है आदि आदि। स्पैनिश 'नो' कि अंग्रेजी 'नो' से तुलना करने पर पता चलता है कि स्पैनिश 'नो' ओकारान्त है अर्थात् O ध्वनि मे अन्त होता है, परन्तु अग्रेजी में वही शब्द w ध्वनि में अन्त होता है। जिस अमिरचन के हम अभ्यस्त है वह हमे बाध्य करता है कि हम अधिकतर अन्तिम स्वरो को व्यञ्जनान्त बनाएँ। अत हम जब स्पैनिश सीखते है तो Como, no, कहने की अपेक्षा Kowmow, now कहते हैं, Si के स्थान पर हम अपना शब्द See (siy) बोलते है। फ्रैन्च में Sibeau को हम see bow बोलेंगे।

दसवे पद का अर्थ है कि इस अवसर पर r, w या y का आगम हो सकता है, केवल उस स्थान को छोड़ कर जहाँ आगम के परिणामस्वरूप w तथा y की परस्पर सन्धि होने की सम्भावना है। ग्यारहवें पद का अर्थ है कि शब्द h को छोड़कर किसी भी एकल व्यञ्जन ध्वनि में अन्त हो सकता है। यह अपवाद बहुत सी भाषाओ के असदृश है, जैसे सस्कृत, अरबी, नवाहो तथा माया आदि जिनमे बहुत से शब्द h ध्वनि मे अन्त होते हैं। पाठक यदि अब तक समझ गया है तो आगे भी 12, 13, 14 का हिसाब लगा सकता है। छोटा c ch के समान है जैसे child मे, J का उच्चारण ऐसे होता है जैसे Jay मे। पद न० 13, जिसमे ये वर्ण है, "gulch," "bulge," "lunch", "lounge," आदि शब्दों की सम्भावना को अभिव्यक्त करता है। पद नं० 14 'health,' 'width', 'eighth' (eyt), 'Sixth', 'xth' (eksθ) आदि शब्दो के अभिरचन की ओर सकेत करता है। यद्यपि हम 'nth power' या 'fth' power का उच्चारण कर सकते है पर अननुज्ञान 'Sth' power या 'hth' power बोलने मे हमे कठिनाई होगी। 'Hth' power को इस प्रकार *eyco के रूप मे प्रस्तुत

किया जा सकता है। (तारक चिन्ह का अर्थ है कि इस रूप का प्रयोग नही होता)। पद नं० 14 के अनुसार दोनो mθ एवम् mpt शब्दान्त मे सम्भव है जैसे mpt humph तथा oomph (umpf) आदि शब्दो मे। पद नं० 15 के तत्त्व किसी शब्द के भी अन्त मे जोड़े जा सकते है— t तथा S रूप अघोष ध्वनियों के पश्चात् तथा d और z घोष ध्वनि के पश्चात्। अतः 'Towns' tawnz, है जिसमें wnz की सिद्धि पद नं० 10+11+15 के द्वारा प्राप्त हुई है। इस प्रकार सिद्ध हुए कई संयोग बहुत ही सामान्य रूप मे उपलब्ध हैं; अन्य बहुत ही विरल है, परन्तु फिर भी अग्रेजी रूपो मे सम्भव हो सकते है। यदि चारली मैक्कार्थी (Charlie Mcgarthy) अपने लजीले ढंग से गुनगुना सकता है—"Thon oomphst" "does thou not?" या शेक्सपीयर का अभिनेता गरज सकता है—"Thou triumphst" तो इसमे कारण यह है कि mpfst जैसी अनोखी बडबड का उत्पादन सूत्र के पद न० 14 और 15 के योग द्वारा होता है। न तो श्री बर्जेन मे, न ही श्री शेक्सपीयर मे इस सूत्र को बदलने की शक्ति है।

इस सारी अभिव्यक्ति पर लागू होने वाला नियम है –'द्वित्व का निषेध'। सूत्र चाहे कुछ भी कहे परन्तु एक ही प्रकार के दो व्यञ्जन कदापि साथ नहीं आ सकते जबकि हम पद नं० 15 के अनुसार 'flip' मे t जोडकर 'flipt' (flipped) प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु 'hit' मे t जोडकर "hitt" सिद्ध नही कर सकते। अभिरचनो के उन स्थलो पर जहाँ hitt की अपेक्षा की जा सकती है, इसके बदले मे हमे साधारण "hit" ही मिलता है (I hit it yesterday; I flipt it yesterday)। कुछ भाषाएँ जैसे अरबी आदि मे hitt, fadd आदि शब्द मिलते है और उनमे दोनो युग्मक व्यञ्जन स्पष्ट सुनाई पडते है। क्रीक इण्डियन-भाषा मे तीन व्यञ्जन अनुज्ञात है जैसे—nnn।

जिस ढंग से अग्रेजी शब्दो के रूपो को इस सूत्र मे सक्षेप से दिए गए अभिरचन नियन्त्रित करते है, वह वास्तव मे आश्चर्यजनक है। वाल्टर विन्चैल (walter winchell) एक नया एकाक्षरीय शब्द या किसी Plugging Adman द्वारा घडा हुआ नाश्ते के दलिए के लिए कोई नया नाम निश्चित रूप मे इस साँचे से इस प्रकार निकल कर आएगा जैसे कि मैंने लीवर (खटका) खीचा हो, और उसके मस्तिष्क पर एकदम छाप पड गई हो। अत. भाषाविज्ञान, भौतिक विज्ञानो की तरह भविष्यवाणी करने की शक्ति प्रदान करता है। मैं किसी हद तक यह भविष्यवाणी कर सकता हूँ कि विन्चैल क्या कहेगा और क्या नही। वह thrub शब्द घड सकता है, परन्तु वह srub जैसा शब्द नही घाड़ेगा, क्योकि सूत्र sr का उत्पादन नही कर सकता। एक दूसरा सूत्र सकेत करता है कि यदि विन्चैल th से आरम्भ होने वाले किसी शब्द का आविष्कार करता है, जैसे thell तथा therg, तो th की वही ध्वनि होगी जो thing शब्द मे है, वह ध्वनि नही होगी जो "this" या there" मे है। विन्चैल परवर्ती ध्वनि से आरम्भ होने वाले शब्द का आविष्कार नही करेगा।

हम कठोर से कठोर व्यञ्जनों को एक के बाद एक बडी आसानी से बोल सकते है यदि वे केवल इस सूत्र के उत्पादक अभिरचनो के अनुसार है तो। हम आसानी से thirds या sixths बोल सकते है यद्यपि sixths मे ksθs इन चार व्यञ्जनो का बहुत ही भद्दा अनुक्रम है, परन्तु इससे सरल sisths का अनुक्रम अभिरचना के प्रतिकूल है, अत. इसका उच्चारण कठिन है।"Glimpst" (glimpsed) मे gl पद नं० 3 के कारण है, i नं० 8 के कारण, mpst नं० 12 तथा 15 के कारण। लेकिन dlinpfk का बहिष्करण कई कारणो से हो जाता है, पद नं० 3 dl की अनुज्ञा नही देता और किन्ही भी पदों के सम्भव योग के द्वारा npfk की सिद्धि नही होती; फिर भी भाषाविज्ञानी dlinpfk इतनी आसानी से बोल सकता है जितना कि वह "glimpsed" बोल सकता है। सूत्र अन्त्य mb की अनुज्ञा नहीं देता, अत: हम "lamb" का उच्चारण इसकी वर्तनी के अनुसार न करके lam करते है। "Land" इसके बिल्कुल समान है परन्तु सूत्र के अनुज्ञात होने के कारण वर्तनी के अनुसार तुरन्त हमारी जीभ से रिपट पड़ता है। यह समझना कठिन नही है कि अब भी कुछ गम्भीर पाठ्य पुस्तको में पाई जाने वाली यह व्याख्या—कि भाषा मे सुश्रवता के लिए यह होता है, (भाषा यह करती है) वैसे ही है जैसे कि यह प्रसिद्ध कथन कि "प्रकृति शून्य से घृणा करती है"।

इस सूत्र की सुनिश्चितता अन्य सैकड़ों सूत्रो की भांति यह बताती है कि भाषायी सूत्रीकरण गणित के नही है तथापि ये सुनिश्चित है। यह बात हमें समझ लेनी चाहिए कि इस सूत्र की जब अंग्रेजी के अर्थ से सम्बन्ध रखने वाले व्याकरणिक सूत्रो से तुलना की जाए तो ऐसा साधारण प्रतीत होगा जैसे calculus के एक पृष्ठ के मुकाबले मे एक साधारण सा जोड़ का प्रश्न। सामान्यत: जटिल अभिरचनाओ के विवेचन के लिए सरल सूत्रो तथा सुनिश्चित वाक्यो मे बद्ध उत्तरोत्तर पैराग्राफो द्वारा करना अधिक सरल है, अपेक्षाकृत इसके कि एक ही जटिल सूत्र मे सभी को बाँधने का प्रयत्न किया जाए। पैराग्राफो की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि प्रत्येक उत्तरवर्ती पैरा, अपने पूर्ववर्तियो की पूर्वकल्पना करता हो।

भाषाविज्ञान भी एक प्रयोगात्मक विज्ञान है। इसकी सामग्री नियन्त्रित परिस्थितियो मे किए गए निरीक्षणो के परिणामस्वरूप उपलब्ध होती है; वे परिस्थितियाँ ऐसी है जो व्यवस्थित रूप से बदल जाने पर सुनिश्चित तथा भिन्न प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती है। उन प्रयोगो का निर्देशन भौतिकी और रसायनशास्त्र की तरह ज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष द्वारा किया जाता है। उन प्रयोगो को मशीनी उपकरणो की भी आवश्यकता नही होती। उपकरणो के स्थान पर भाषाविज्ञान अपने तकनीक बनाता है और उनका प्रयोग करता है। यह आवश्यक नही कि प्रायोगिक का अर्थ 'मात्रिक' समझा जाए। मापन, तोलन, और सकेंतक वाचन आदि युक्तियो की भाषाविज्ञान मे आवश्यकता नही होती, क्योंकि मात्रा और संख्या अभिरचनाओ के क्षेत्र मे भाग नही लेती, जहाँ कि कोई परिवर्तनशीलताएँ नही है, अपितु बदले मे एक समाकृति से दूसरी समाकृति मे आकस्मिक प्रत्यावर्तन होते है।

गणितीय विज्ञान में सही मापन अपेक्षणीय है परन्तु भाषाविज्ञान को 'सुनिश्चित' अभिरचनो की आवश्यकता है—सम्बन्धों की सुनिश्चितता की चाहे विमाएँ कुछ भी हो। मात्रा, विमा, आकार आदि यहाँ केवल रूपकमात्र है क्योकि ये दिक्-रहित सम्बन्धात्मक क्षेत्र सही रूप में उनके नही है। मैं शायद इस उपमा का प्रयोग करना चाहूँ। रेखाओं तथा कोणों के सुनिश्चित मापन की आवश्यकता सही वर्गाकार या दूसरे नियमित बहुभुज बनाने के लिए पड सकती है; परन्तु मापन चाहे कितने भी ठीक क्यो न हो एक वृत्त खीचने मे कुछ सहायता नही कर सकते। यद्यपि दोषरहित वृत्त बनाने की योग्यता प्राप्त करने के लिए केवल "कृम्पास नियम" परिधि नियम का पता लगा लेना मात्र ही आवश्यक है। इसी प्रकार भाषाविज्ञान ने कुछ प्रविधियाँ विकसित की है जो कम्पासों की ही भाँति इसे बिना किसी सच्चे मापन के ही निश्चित रूप से उन्ही अभि-रचनाओं का विशेष विवरण देने का सामर्थ्य प्रदान करती है जिनसे इसका (भाषाविज्ञान का) सम्बन्ध है। या मैं प्रस्तुत विषय की तुलना अणु की उन आन्तरिक परिस्थितियों से करना चाहूँगा जहाँ पर तत्त्व समाकृति से समाकृति मे प्रत्यावर्तित होते हुए प्रतीत होते है, न कि अनुमापनीय स्थितियो के रूप मे चेष्टा करते हुए। एकान्तर के रूप मे प्रमात्रा तत्त्वो का विवेचन, विश्लेषण की एक ऐसी विधि से किया जाना चाहिए जो प्रतिबन्धो के एक वर्ग के अन्तर्गत अभिरचना के एक बिन्दु को स्थितियो के दूसरे वर्ग के अन्तर्गत किसी एक बिन्दु मे प्रतिस्थापित करदे—एक ऐसी विधि जो भाषायी तथ्यों के विश्लेषणार्थ की जाने वाली विधि के समान है।

भौतिकी और रसायन विज्ञान का सम्बन्ध निर्जीव पदार्थो से होने के कारण उन्हे अपने प्रयोगों के लिए मुख्य रूप से निर्जीव संयन्त्रो तथा पदार्थो की आव-श्यकता पड़ती है। आजकल ये प्रयोग क्योकि बहुत बड़ी मात्रा मे किए जाते हैं अत: उन्हे बहुत उच्च कोटि के भौतिक उपकरणों की आवश्यकता पग पग पर पड़ती है, तथा उन भौतिक यन्त्रों पर बहुत बड़ी लागत लगती है। उनके प्रयोग वैज्ञानिको की सख्या से निरपेक्ष तथा सापेक्ष दोनों ही रूपों मे बहुत महँगे पड़ते हैं। प्रयोगात्मक जीवविज्ञान भी बहुत से निर्जीव उपकरणों का प्रयोग करता है परन्तु उसके आधारभूत उपकरण है प्रायोगिक पशु तथा उनकी वृद्धि के लिए सुसाध्यताएँ। जिस मात्रा मे इनकी आवश्यकता पड़ती है ये भी काफी महँगे पड़ते हैं। जब तक ये अथवा भौतिक विज्ञानो के क्षेत्र मनुष्य के ज्ञान तथा कल्याण मे वृद्धि का कारण बनते रहते हैं तब तक कोई भी इन वैज्ञानिक प्रयोगो पर किए गए खर्चे को बुरा नही समझता।

भाषाविज्ञान के उपकरण इनके मुकाबले मे बहुत कम लागत वाले हैं, परन्तु इन पर भी पैसा खर्च तो होता ही है। प्रायोगिक भाषाविज्ञानी जीवविज्ञानी की भांति पशुओं का प्रयोग करता है और उसे उनकी आवश्यकता पड़ती है। अन्तर यह है कि पशु मानव जाति के होते हैं। वे उसके सूचक होते हैं तथा

उन्हें उसके साथ काम करने के लिए कुछ रकम देना आवश्यक है। कभी कभी उसे इण्डियनो के सुरक्षित स्थानों मे या अफ्रीका के गाँवो में जहाँ उसके सूचक रहते है जाना पडता है। किसी अन्य अवसर पर सूचकों को अपने पास लाना अधिक सुविधाजनक रहता है। वे ही प्रायोगिक अनुसन्धान के क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं। वे उपकरण है शिक्षक नही। इस प्रकार इण्डियनो, अफ्रीकनो, तथा अन्य आदिवासियो की बोलियो का अध्ययन करना इतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि ब्रुकलिन, वोस्टन, रिचमाण्ड, या लन्दन की बोलियो का अध्ययन करना।

यद्यपि सूचक ही प्राथमिक उपकरण है फिर भी भाषाविज्ञानी मशीनी साधनों की सहायता से अपने कार्य को सुधार सकता है और उसकी गति तेज कर सकता है, ठीक ऐसे ही जैसे जीव विज्ञानी अपने पशुओ तथा पौधो का अनुवीक्षण यन्त्रो, एक्सरे मशीनों तथा अन्य बहुमूल्य यन्त्रो की सहायता से अध्ययन करता है। फोनोग्राफी-सम्बन्धी पुनरुत्पादन के तरीके का अच्छा प्रयोग भाषाविज्ञानी की सहायता करता है। अन्य व्यापारी मशीनो की सहायता से भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

यद्यपि भाषाविज्ञान बहुत पुराना विज्ञान है परन्तु इसका आधुनिक प्रायोगिक पक्ष, जो कि अलिखित भाषा के विश्लेषण पर बल देता है, नवीनतम विज्ञानो मे से एक कहा जा सकता है। जहाँ तक हमारा ज्ञान है भाषाविज्ञान की नीव या इसे प्रस्तुत आधार पर ईसा से भी कई शती पूर्व किसी पाणिनी ने भारत मे स्थापित किया था। इसके प्राचीनतम रूप को अर्वाचीनतम रूप का पूर्वाभास था। पाणिनी बहुत अधिक बीजगणितीय था अर्थात् अपने निरुपणो मे अभिरचन-प्रतीकात्मक था। उसने सस्कृत की अविकल्पी अभिरचनाओ के विवेचन के लिए बहुत ही आधुनिक ढंग से सूत्रो का प्रयोग किया है। ये ग्रीक लोग थे जिन्होंने इस विज्ञान का पतन किया। उन्होने यह दिखा दिया कि वे हिन्दू वैज्ञानिक चिन्तकों से कितनी असीम मात्रा में अवर थे, और उनकी अवैज्ञानिकता का प्रभाव दो हजारवर्ष पूर्व तक चलता रहा। पाश्चात्य जगत को 19वी शताब्दी के प्रारम्भिक चरण मे पाणिनी का पता लग जाने से आधुनिक वैज्ञानिक भाषा-विज्ञान का श्रीगणेश हुआ।

जहाँ तक इसके आवश्यक उपकरणो, सूचको की उपलब्धि, तथा न्यूनतम साधन पुस्तकादि का प्रश्न है भाषाविज्ञान आज भी अपने अबोध शैशव मे ही है। मशीनी साधनो के लिए धन की प्राप्ति, जिसका मैंने ऊपर उल्लेख किया है; इस समय केवल एक सुखद स्वप्न है। शायद यह अव्यवस्था विज्ञापन की कमी के कारण है—विज्ञापन जो कि अन्य विज्ञानो को सुलभ है अत: वे काफी धन प्राप्त भी कर लेते है। अब हम सभी जानते हैं कि भौतिकी, रसायनविज्ञान और जीव-विज्ञान द्वारा जिन शक्तियो का अध्ययन होता है वे सशक्त एवम् महत्त्वपूर्ण हैं। परन्तु अभी तक साधारणतया लोग यह नही जानते कि भाषाविज्ञान द्वारा जिन शक्तियों का अध्ययन किया जाता है वे कही अधिक सशक्त एवम् महत्त्व-

पूर्ण है, कि इसके सिद्धान्त मानवजाति की सभी प्रकार की सहमतियों तथा सूझबूझो को नियन्त्रित करते है, और यह कि आज या कल इसे (भाषाविज्ञान) निर्णायक के रूप मे बैठना पडेगा, जबकि अन्य विज्ञान अपने अपने परिणामो को इसके न्यायालय मे इसलिए लाएँगे कि वे जान पाएँ कि उनका अर्थ क्या है। जब यह शुभ समय आएगा तो भाषाविज्ञान की बहुत बडी और सुसज्जित प्रयोगशालाएँ होगी जैसाकि अन्य असदिग्ध विज्ञानो के लिए है ।

भाषाएँ और तर्क*

अंग्रेजी के "I pull the branch aside" तथा "I have an extra toe on my foot" इन वाक्यो मे बहुत कम साम्य है। कर्त्ता, सर्वनाम तथा वर्तमानकाल के प्रतीको को छोड़कर, जो कि अंग्रेजी वाक्यविज्ञान की आवश्यकताओ के अनुसार सामान्य तत्त्व है, हम कह सकते हैं कि इनमे कोई समानता नही है। सामान्य अथवा वैज्ञानिक कथन के अनुसार भी ये वाक्य असमान इसलिए है कि ये उन चीजो की बात कर रहे हैं जो मौलिक रूप से भिन्न है। इसी ढग से श्री 'जनताजनार्दन'—प्राकृतिक तार्किक अपना तर्क उपस्थित करना चाहेगा। पुराने ढंग का रूपात्मक तर्कशास्त्र शायद उससे सहमत हो जाए।

इसके अतिरिक्त यदि हम निष्पक्ष अंग्रेजीभाषी वैज्ञानिक प्रेक्षक से प्रार्थना करे कि इन दो तथ्यो का निरीक्षण करे और देखे कि क्या उनमे कोई ऐसी समानता है जिसे हम देख नही पाए है, तो उससे भी यही आशा की जा सकती है कि वह तार्किक अथवा श्री जनताजनार्दन के निर्णय का ही समर्थन करे। वह प्रेक्षक जिससे हमने परीक्षण करने की प्रार्थना की थी शायद वह पुरानी पद्धति के तर्कशास्त्री से सहमत न हो तथा उसे गलती करते हुए देखकर उसे निराशा न हो। तथापि वह वाध्य होकर दुखपूर्वक अपनी असफलता स्वीकार करेगा। वह कहेगा, "मेरी इच्छा थी कि आपको कृतार्थ कर पाऊँ, परन्तु कितना भी प्रयत्न करूँ पर मै इन दो तथ्यो मे कोई समानता नही देख पा रहा हूँ।"

इस समय तक हमारी हठीली सशय रेखा जागृत हो उठती है, एवम् हमें आश्चर्य होने लगता है कि पता नही मगलग्रह से आने वाला व्यक्ति भी कोई समानता देख पाए अथवा नही। परन्तु इस अवसर पर एक भाषा-विज्ञानी कह उठता है कि मंगलग्रह जितनी दूर जाने की कोई आवश्यकता नही है; हमने अभी तक इस पृथ्वी पर भी पूरी खोज नही की है—जिससे कि हम देख पाएँ कि ससार की वहुत सी भाषाएँ क्या इन दो तथ्यो को इतनी विषमता से वर्गीकृत करती है जितना कि हमारी भाषा करती है। हमे पता चलता है कि शॉनी भाषा मे ये दो कथन क्रमशः इस प्रकार है ni–l'θawa–'ko–n–a तथा ni–l 'θawa' ko θite (θ यहाँ पर 'thin' वाली th ध्वनि है, और वर्ण लोप का चिन्ह (,) "श्वासद्वारीय स्पर्श" का द्योतन करता है) ये वाक्य बहुत

* Tech. Rev., 43: 250–252, 266, 268, 272 (April 1941) से पुनर्मुद्रित।

ही समान दिखाई देते है; वास्तव में ये दोनों शब्दान्त में ही थोड़े से भिन्न है। इसके अतिरिक्त शॉनी भाषा में किसी रचना का आरम्भिक भाग प्राय: महत्त्वपूर्ण और अधिक जोरदार होता है। दोनों वाक्यों का आरम्भ ni-(मै) से होता है जो कि एक उपसर्ग मात्र है। तत्पश्चात् वास्तविक महत्त्वपूर्ण सकेत शब्द l'θawa है, यह एक सामान्य शॉनी शब्द है जो द्विशाखित रूपरेखा का द्योतन करता है
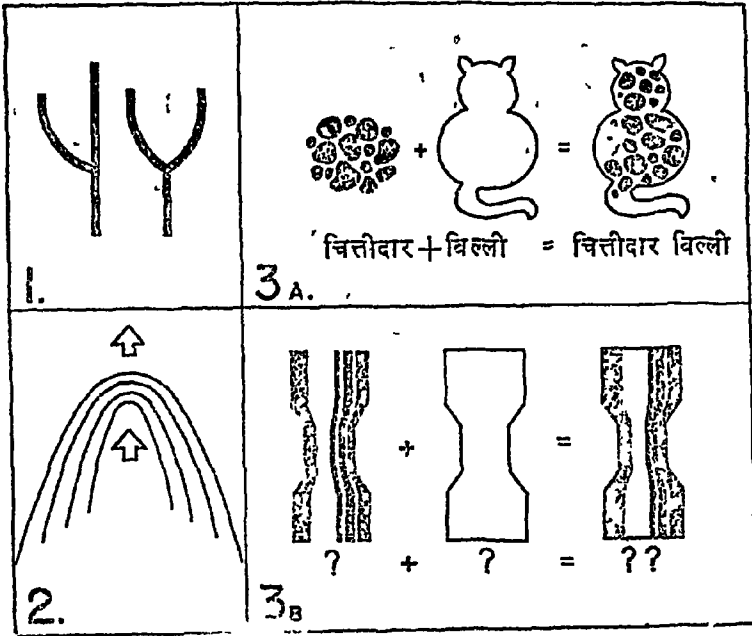
15. ऊपर कुछ भाषायी धारणाओं का सुझाव दिया गया है। जैसा कि लेख में स्पष्ट किया गया है, इन धारणाओं को आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता।

जैसा कि चित्र नं० 15 के नं० I मे दिखाया गया है। दूसरा तत्त्व -'Ko है जिसके विषय मे हम निश्चित रूप से नही कह सकते परन्तु यह आकार मे -a'kw या -a'ko प्रत्यय के परिवर्त के अनुरूप है जिनका अर्थ है वृक्ष, झाडी, वृक्ष का भाग, शाखा या ऐसी ही सामान्य आकृतिवाली अन्य कोई वस्तु। पहले वाक्य में -n-का अर्थ है 'हाथ द्वारा क्रिया' और, या मौलिक स्थिति (द्विशाखित रेखा-चित्र) को हाथ द्वारा उत्पन्न करना, या इसे बढ़ाना, या दोनो ही (अर्थ) हो सकते है। अन्त्य-a का अर्थ है कर्त्ता (मैं) यह क्रिया किसी उपयुक्त विषय पर करता है। अत: पहले वाक्य का अर्थ हुआ—मै खीचकर (वृक्ष की शाखा जैसी किसी चीज़ को) चौडा करता हूँ या जहाँ से यह द्विशाखित होती है वहाँ से अलग करता हूँ। दूसरे वाक्य मे -θite का अर्थ है—पैर की अगुली से सम्बन्धित-और इससे आगे प्रत्ययों के अभाव का अर्थ है कि कर्त्ता इस स्थिति को अपने ऊपर प्रकट करता है। इसलिए वाक्य का अर्थ केवल यह हो सकता है—मेरे पैर मे एक फालतू अंगुली है जो एक शाखा की तरह सामान्य अगुली से (बाहर की ओर) शाखित है।

शॉनी भाषा के तार्किक तथा प्रेक्षक इन दो तथ्यो को मौलिक रूप से समान मानेंगे। हम यदि अपने प्रेक्षक को यह सब बता दे तो वह अपने समस्त उपकरणों को पुन. इन दो तथ्यों की ओर केन्द्रित करेगा तथा उसे हर्ष होगा कि वह तुरन्त ही एक सुस्पष्ट साम्य देखने लगा है। चित्र न० 16 इसी के समान स्थिति का चित्रण करता है। 'मैं उसके सिर को पीछे की ओर धकेलता हूँ', "मै इसे पानी में फैंकता हूँ और यह ऊपर तैरता है," यद्यपि अंग्रेजी मे ये वाक्य बहुत ही असमान है, परन्तु शॉनी मे समान है। भाषायी सापेक्षता का दृष्टिकोण श्री जनताजनार्दन की अभ्युक्ति को बदल देता है : यह कहने की अपेक्षा कि "वाक्य असदृश है क्योकि वे असदृश तथ्यो के विषय मे बताते हैं" वह तर्क प्रस्तुत करता है "ये तथ्य उन भाषाभाषियो के लिए असमान है जिनकी भाषा-पृष्ठभूमि उनका असमान सूत्रीकरण प्रस्तुत करता है।"
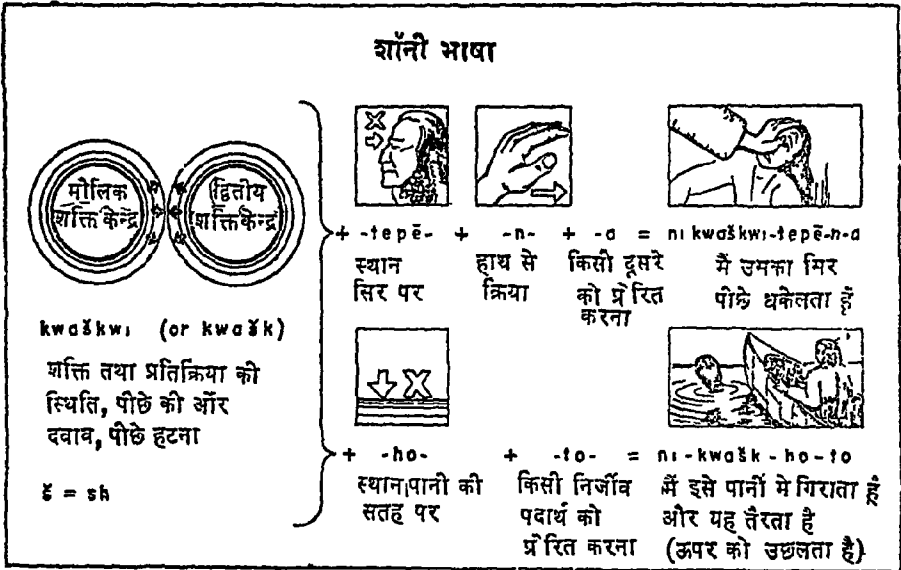
16. अंग्रेजी के वाक्य 'I push his head back' तथा 'I drop it in water and it floods' असदृश है। परन्तु शॉनी में इनके संवादी कथन निकट रूप से समान हैं, और इस तथ्य पर बल देते है कि प्रकृति का विश्लेषण एवम् घटनाओं का वर्गीकरण, यदि वे समान या उसी वर्ग (तर्क) के हो तो, व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होते है।

इसके विपरीत अंग्रेजी मे ये वाक्य—"The boat is glounded on the beach' (नौका समुद्रतट पर पडी है) तथा "The boat is manned by picked men," (नौका चुने हुए लोगो द्वारा चलाई जाती है) हमे समान प्रतीत होते हैं, क्योकि प्रत्येक वाक्य नौका के विषय मे है; प्रत्येक वाक्य नौका का सम्बन्ध अन्य विषयो से बताता है—या यह हमारा कथन है। भाषाविज्ञानी व्याकरणिक अभिरचना में समानता इस प्रकार दिखाएगा—"The boat is xed

preposition Y" । एक तार्किक भाषाविज्ञानी के विश्लेषण को इस प्रकार बदल सकता है "A, is in the state x in relation to Y" A, Y, के सम्बन्ध मे x की अवस्था में है और फिर शायद fA=x Ry मे। इस प्रकार के प्रतीकात्मक ढग युक्तियुक्त अनुक्रम का उपयोगी तकनीक प्रदान कर सकते हैं, हमारे चिन्तन को प्रेरित कर सकते है, तथा बहुमूल्य अन्तर्दृष्टि दे सकते हैं। तथापि हमें यह जान लेना चाहिए कि मौलिक वाक्यो मे समानताएँ या विषमताएँ, जिन्हे पूर्वोक्त सूत्र के अन्तर्गत कल्पित किया गया है, मातृभाषा के वरण पर निर्भर करती है तथा भाषा के वे गुण अन्ततोगत्वा हमारे ही द्वारा पोषित गणित अथवा तर्क के ताने बाने मे रचनागत वैशिष्ट्य के रूप मे झलकते दिखाई देते हैं।

वान्कुवेर द्वीप की नूत्का भाषा में नौका सम्बन्धी पहला कथन tlih–is–ma है, दूसरा Lash–tskwiqista–ma है, अत: पहला I–II–ma,है, दूसरा III–IV–V–ma; और ये दोनों काफी असदृग है क्योकि अन्त्य-म्-केवल अन्य पुरुष निश्चयार्थक का चिन्ह है। किसी भी वाक्य मे अर्थ की ऐसी कोई इकाई नही जो हमारे (boat) नौका या (Canoe) कश्ती शब्द के ही निकट हो । पहले वाक्य मे भाग I का अर्थ है–सकेत के अनुरूप चलना या इस प्रकार चलना जैसे कि रेखा-चित्र 15 नं० 2 मे दिखाया गया है–अत. नौका मे यात्रा या नौका की तरह यात्रा करना, या इस गति की एक स्थिति की तरह कोई घटना। यह एक सज्ञा नही है जिसे हम 'एक वस्तु' कह सकें, परन्तु भौतिकी मे (वेक्टर) सदिश के अधिक समान है। भाग II का अर्थ है—'समुद्र तट पर', अत. I–II–ma का अर्थ हुआ–यह समुद्र तट पर है–सकेत के अनुरूप–नौका की गति की एक घटना (स्थिति) की तरह, और सामान्यत: यह एक नौका की ओर मकेत करता है जो स्थल पर आ गई है। दूसरे वाक्य मे भाग III का अर्थ है–चुनना, उठाना और भाग IV का अर्थ है—अवशिष्ट, परिणाम, III–IV का अर्थ हुआ 'चुने हुए', भाग V का अर्थ है "एक नौका मे चालको के रूप मे दल"। सारी अभिव्यक्ति III–IV–V–ma का अर्थ हुआ या तो 'वे नौका मे है चुने हुए चालको के दल के रूप मे," या नौका मे चुने हुए चालको का दल है। इसका अभिप्राय: यह हुआ कि चुने हुओ से सम्बन्धित समस्त घटना तथा नौका चालको का दल एक प्रक्रिया मे है।

रासायनिक इञ्जीनियरी मे शिक्षित होने के कारण, अभ्यासवश, मुझे रासायनिक उपमाएँ अच्छी लगती है। शायद पाठक मेरा आशय समझ ले जब मैं कहता हूँ: शॉनी और नूत्का के वाक्यो मे उनके घटक जिस ढग से एक साथ रखे जाते है। वह एक (Chemical compound) रासायनिक मिश्रण की तरह है जबकि अग्रेजी के वाक्यावयवों का सयोजन (Mechanical Mixture) यान्त्रिक मिश्रण से अधिक मिलता है। यह मिश्रण पर्वतारोहियों के potlicker की तरह है, इसका एकत्रीकरण लगभग किन्ही चीजो से किया जा सकता है, परन्तु इसके बाह्य आकार पर किसी प्रकार का विशेष अन्तर नही पड़ता । दूसरी ओर

रासायनिक मिश्रण केवल कुछ ही परस्पर अनुकूल द्रव्यो को एक साथ रख कर किया जा सकता है, और उसका परिणाम केवल शोरबा ही नही होगा अपितु त्रिस्टलो की एक फसल भी हो सकती है, या धुएं का एक बादल भी बन सकता है। इसी प्रकार शॉनी या नूत्का के विशिष्ट सयोग अपनी शब्दावली के कुछ पदो का प्रयोग करते हुए दिखाई देते है, जिनका चयन सम्भवत. उनके निकटस्थ एवम् तात्कालिक प्रसगो के लाभार्थं इतना नही किया गया जितना कि पदो की बहुत प्रकार से, परस्पर अभिव्यञ्जनापूर्ण सयोजन करने की क्षमता को को ध्यान मे रख कर किया गया है ताकि वे नवीन तथा उपयोगी चित्र उपस्थित कर सके। शब्दावली का यह सिद्धान्त तथा घटनाओ के विश्लेषण करने का यह ढग उन भाषाओ मे नही मिलता जिनसे हम सुपरिचित है।

यह पूर्ण प्रकृति का विश्लेपण है— मौलिक शब्दावली तक--जो कि इस प्रकार के अभिव्यञ्जक सयोजनों की क्षमता रखता है तथा जो शॉनी और नूत्का जैसी बहु-सश्लेषणात्मक भाषाओ का विशिष्टतम गुण है। उनका विशिष्ट गुण, जैसा कि कुछ भाषाविज्ञानियों का विचार है, संयोगो की अभेद्यता या अवियोज्यता का विषय नही है। शॉनी पद l'θawa सम्भवत. अकेला भी बोला जा सकता है परन्तु तब इसका अर्थ होगा "यह (या कोई वस्तु) द्विभुजी है"—एक अभिव्यक्ति जो इसके संयोजनो से उत्पन्न होने वाले नए अर्थो की ओर बहुत ही कम सकेत देती है —कम से कम हमारे मस्तिष्क या हमारी तर्कणा-विधि के लिए। शॉनी या नूत्का केवल रासायनिक प्रकार के सश्लेषणो का ही प्रयोग नही करती है, वे बाह्य प्रकार की वाक्य रचना का बहुत अधिक प्रयोग करती है, जिसमे यह सत्य है कि कोई मौलिक रचनात्मक प्राथमिकता नही है। हमारी भारोपीय भापाओ मे भी रासायनिक प्रकार के सयोजन का पूरी तरह अभाव नही है। परन्तु वे इस विधि से वाक्य कभी नही बनाती, तथा इसकी सभावनाओ का कोई सकेत नही देती अपितु किसी अन्य विधि को रचनात्मक प्राथमिकता देती है। तो यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि उस समय अरस्तू ने हमारे परम्परागत तर्कविज्ञान का आधार पूरी तरह से दूसरे ही ढंग का बनाया।

मैं यहाँ पर रसायनशास्त्र से नही अपितु चित्रात्मक कला से एक दूसरा सादृश्य प्रस्तुत करना चाहूँगा। हम एक बहुत अच्छे शान्त सजीव चित्र की ओर देखते है और हमे ऐसा लगता है मानो हम एक चमकदार चीनी मिट्टी के प्याले को तथा एक कोमल रोम वाले शफतालू को देख रहे है। परन्तु यदि सारे चित्र का विश्लेषण किया जाए और एक कार्ड मे बनाए गए सूराख मे से उसे देखा जाए तो हमे कुछ भद्दे से रगीन धब्बे दिखाई देगे और वे धब्बे प्याला और फल का वह रूप नहीं दिखा सकते जो कि सम्पूर्ण चित्र को देखने पर प्रकट होता है। चित्र के द्वारा प्रस्तुत किया गया सश्लेपण सम्भवत: रासायनिक प्रकार की वाक्य रचना है तथा यह तथ्य उन मनोवैज्ञानिक आधारों की ओर सकेत करता है जो कला और भाषा दोनो में प्रवेश कर जाते है। भाषा और कला मे यान्त्रिक ढग चित्र न० 15 के 3 क द्वारा

दिखाया जा सकता है। पहला तत्त्व, चित्तियो का क्षेत्र, "चित्तीदार" विशेषण के समान है, दूसरा 'बिल्ली' इस सज्ञा शब्द के सदृश है। इन दोनो को साथ रखने से हमारा चित्तीदार बिल्ली (spotted cat) शब्द बनता है। इस तकनीक का चित्र-15 न० 3 ख के तकनीक से विरोध देखिए । यहाँ पर "बिल्ली" का सादृश्य दिखाने वाला चित्र अस्पष्ट अर्थ वाला है—"फीते की तरह का", हम कह सकते है कि पहला तत्त्व और भी अधिक अस्पष्ट है। परन्तु इन दोनो का योग एक सिलेण्डर की तरह के पदार्थ का चित्र प्रस्तुत करता है, जैसे कि धुरे की ढलाई का साँचा।

इन दोनो तकनीको मे सामान्य बात यह है कि दोनो ही अभिरचना का व्यवस्थित संश्लेषणात्मक प्रयोग करते है और यही वात सभी भाषा तकनीको मे सामान्य रूप से मिलती है। मैंने चित्र 15, न० 3 ख, के तत्त्वों के नीचे प्रश्नसूचक चिन्ह इसलिए लगा दिए हैं कि अग्रेजी मे इसके समान अभिव्यक्ति ढूंढने मे कठिनाई का सकेत मिल सके, तथा इस तथ्य का भी पता चल सके कि इस तरीके के लिए परम्परागत तर्कशास्त्र मे सम्भवत. कोई स्थान नही । तथापि नई भाषाओं का परीक्षण और आधुनिक तार्किको द्वारा स्वयं प्रस्तुत किए गए नए प्रकार के तर्क की सम्भावना सकेत करती है कि यह विषय आधुनिक विज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है। नए प्रकार की तर्कणा हमे अन्तत: यह समझने मे सहायता कर सकती है कि इलैक्ट्रोन, प्रकाश की तीव्र गति, और भौतिकी के विषयवस्तु के अन्य भाग क्यो तर्क विरुद्ध व्यवहार करते है, या वे प्रपच जो गत वर्ष के दृढ सामान्य बोध की अवहेलना कर रहे थे आज किस प्रकार सत्य हो सकते हैं। आधुनिक चिन्तकों ने बहुत पहले सकेत किया था कि विज्ञान की महान सीमान्तवर्ती वर्तमान समस्याओ के सामने तथाकथित यान्त्रिक चिन्तन का गतिरोध उपस्थित हो चुका है। इस प्रकार की चिन्तन पद्धति से छुटकारा पाना अत्यन्त कठिन है, जबकि हमारे पास कोई दूसरा भाषायी अनुभव नही है, और जबकि हमारे सबसे अधिक प्रगतिशील तर्कविज्ञानी एवम् गणितज्ञ भी कोई दूसरा अनुभव प्रस्तुत नही कर सकते और स्पष्ट है कि वे भाषायी अनुभव के बिना कर भी नही सकते। क्योकि चिन्तन का यान्त्रिक ढंग सम्भवत जनताजनार्दन द्वारा नित्य पाश्चात्य भारोपीय भाषाओ के प्रयोग के कारण एक स्वाभाविक वाक्य रचना प्रकार बन गया है, जिसका दृढीकरण और जड़ीकरण अरस्तू और उसके मध्यकालीन तथा आधुनिक अनुयायियो द्वारा कर दिया गया है।

जैसा कि मैंने अप्रैल 1940 रिव्यू के लिए लिखे गए "विज्ञान तथा भाषा विज्ञान" नामक लेख मे कहा था कि भाषण (शक्ति) की सहजता, तथा जिस उपचेतन ढग से हमने बचपन मे ही उसे सीख लिया था, उसी के कारण हम यह सोचने लगते है कि बाते करने और सोचने की क्रिया पूर्णतया सीधी और पारदर्शी है। अत' हम स्वाभाविक रूप से सोचने लगते है कि उनमे स्वय-प्रमाण नियम निहित है और वे सभी मनुष्यो के लिए समान है। हम सभी उत्तरो का ज्ञान रखते है। परन्तु जब सूक्ष्म निरीक्षण किया जाता है तो सभी उत्तर धूमिल पड़ते चले जाते हैं। हम भाषा का प्रयोग विषय वस्तु सम्बन्धी सहमति पर पहुँचने के लिए करते है। मैं कहता हूँ

"कृपया द्वार बन्द कर दीजिए", मैं और मेरा श्रोता इस बात पर सहमत है कि "द्वार" हमारे वातावरण की किसी वस्तु विशेष का सकेत देता है और यह कि मै कुछ परिणाम उत्पन्न कराना चाहता हूँ। हमारे ये स्पष्टीकरण कि हम किस प्रकार एक दूसरे को समझ पाएँ यद्यपि प्रतिदिन के सामाजिक स्तर पर बिल्कुल सन्तोषजनक है परन्तु वे उसी विषय सम्बन्धी और अधिक सहमतियाँ है, (द्वार आदि) जिन्हे सामाजिक तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओ के बारे मे उत्तरोत्तर अधिक कथनो द्वारा बढा दिया गया है—ऐसी आवश्यकताएँ जो हमे परस्पर वाग्विनिमय करने के लिए बाध्य करती है। यहाँ पर विचार के कोई नियम नही हैं। तथापि रचनात्मक नियमितताएँ हमे यह समझने योग्य बना देती है कि नियम कही न कही पृष्ठभूमि मे अवश्य हैं। स्पष्ट है कि ऐसे वाक्यो की व्याख्या "And so I ups and says to him, says I, see here, why don't you!" उस प्रक्रिया की समझ से बाहर है जिसके द्वारा मैं और वह परस्पर बातचीत कर रहे थे। इसी प्रकार सामाजिक एवम् भावात्मक आवश्यकताएँ जो मानवजाति को परस्पर वाग्विनिमय करने के लिए विवश करती है, उनका सामाजिक एवम् मनोवैज्ञानिक वर्णन भी उसी विधि का शिष्ट रूपान्तर है जो मनोरजक तो अवश्य है। परन्तु उस प्रश्न को टाल जाता है। इसी प्रकार के विषय मे प्रश्न की टालमटोल, वाग्वाक्य से शरीर-विज्ञान, और "प्रेरणा" के माध्यम द्वारा सामाजिक परिस्थिति तक छलाँग लगा कर की जाती है।

पारस्परिक समझ की 'क्यो' बहुत समय तक रहस्यमय रह सकती है; परन्तु 'कैसे' या समझने की तर्कविधि का—इसके नियमो की पृष्ठभूमि या नियमितता का पता लगाया जा सकता है। यह हमारी मातृभाषा की व्याकरणिक पृष्ठभूमि है जिसमे न केवल हमारे तर्कवाक्य बनाने की विधि ही शामिल है अपितु वह तरीका भी है जिसके द्वारा हम प्रकृति का विभाजन करते है और अनुभूति के प्रवाह को वस्तुओ और इकाइयो मे तोडते है ताकि उनके विषय मे तर्क-वाक्य बनाए जा सके। यह सत्य विज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योकि इसका अर्थ यह है कि विज्ञान का एक विवेक-युक्त एवम् तर्कसगत आधार हो सकता है चाहे यह एक सापेक्षिक हो परन्तु जनसाधारण का प्राकृतिक तर्क न हो। यद्यपि यह प्रत्येक भाषा के अनुसार परिवर्तित हो सकता है और इसे परिवर्तनो की विमाओ के अस्थिर मानचित्रो की आवश्यकता पड सकती है, फिर भी यह खोजे जा सकने योग्य नियमो से युक्त तर्क का एक आधार है। विज्ञान बाध्य नही है कि वह इसके सोचने और तर्क करने के तरीकों को उन प्रक्रियाओ मे बदलते हुए देखे जो केवलमात्र भावात्मक प्रेरणाओ और सामाजिक समन्वयो की वशवर्तिनी है।

इसके अतिरिक्त, मेरी राय मे, भाषा के अत्यधिक महत्त्व का अर्थ आवश्यक रूप मे यह नही हो सकता कि इसके पृष्ठ पर ऐसा कुछ नही है जिसे परम्परा से "मन" कहा जाता है। मेरे अपने अध्ययन मुझे सकेत देते है कि भाषा अपनी समस्त राजसी भूमिका मे किसी न किसी अर्थ में एक सतही कशीदाकारी है। यह कशीदाकारी

चेतना की गूढ़तर प्रक्रियाओं पर है जो कि किसी भी सञ्चार से पहले आवश्यक है चाहे वह सञ्चार सकेतात्मक है या प्रतीकात्मक है, तथा जो स्वयं कभी आवश्यकता पड़ने पर पारस्परिक सञ्चार को भाषा या प्रतीक विज्ञान की सहायता के विना प्रभावित कर सकता है (चाहे सही सहमति को न कर पाए)। मै इसे सतही उस अर्थ मे मानता हूँ जिस अर्थ मे, उदाहरणार्थ, रसायन विज्ञान की सभी प्रक्रियाएँ भौतिक सत्ता की उन गहरी परतो पर सतही कही जा सकती है जिन्हे हम विद्युदाण्विक या, उपविद्युदाण्विक कहते है। इस कथन का कोई भी यह अर्थ नही लगाएगा कि सारा रसायन विज्ञान महत्त्वहीन है। वास्तव मे अभिप्राय यह है कि जो जितना सतही है वह उतना ही किसी निश्चित व्यावहारिक अर्थ मे अधिक महत्त्व-पूर्ण हो सकता है। इस सूचिका मे यह भी सम्भव है कि कैपिटल "L" से वनने वाला LANGUAGE (भाषा) जैसा कोई पदार्थ ही न हो। यह कथन कि "चिन्तन, भाषा का विषय है" एक अधिक सही कथन "चिन्तन विभिन्न भाषाओं का विषय है" का गलत सामान्यीकरण मात्र है। विभिन्न प्रकार की भाषाएँ ही वास्तविक सत्ताएँ हैं, और शायद भाषा जैसा कोई व्यापक सामान्यीकरण न करके एक अधिक अच्छा सामान्यीकरण करें जिसे (Sublinguistic) उपभाषायी या (Super-linguistic) अधिभाषायी कह सकते हैं—और वह, जिसे हम अव मानसिक कहतें हैं, उससे सर्वथा असमान नही है, चाहे काफी असमान भले ही हो। इस प्रकार के सामान्यीकरण इस क्षेत्र के सत्य की खोज के लिए अन्तर्भाषायी अध्ययनो के महत्त्व को घटायेंगे नही अपितु वढायेंगे ही।

ससार के जीवो की विभिन्न सजीव जातियो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वनस्पति शास्त्रियो तथा जीवविज्ञानियो ने यह आवश्यक समझा कि ससार के प्रत्येक भाग मे पाए जाने वाली जातियो का वर्णन किया जाए तथा काल सापेक्ष महत्त्व वढाने के लिए जीवाश्मो (fossils) या जीवावशेषो का भी अध्ययन आवश्यक समझा गया। तव उन्होंने विभिन्न जातियो के साम्य और वैषम्य का अध्ययन भी आवश्यक समझा ताकि परिवार और श्रेणी वनाई जा सके, तथा विकासात्मक उद्गम, आकृति-विज्ञान तथा वर्गीकरण भी किए जा सकें। भाषाविज्ञान में भी इस दिशा मे प्रयत्न आरम्भ हो गया है। वह दूरस्थ लक्ष्य, जिसकी ओर यह प्रयत्न आरम्भ हुआ है वह "भाषा और विचार" की एक नई तकनीक विद्या है। पृथ्वी की भाषाओं को पारिवारिक वर्गों मे वर्गीकृत करने की दिशा मे, तथा प्रत्येक भाषा एक पूर्ववर्त्ती भाषा से कैसे विकसित हुई तथा काल के अन्तर्गत उनके आद्योपान्त विकास विषयक खोज करने की दिशा मे काफी प्रगति हुई है। उपरोक्त प्रयत्न के परिणाम का नाम है—(Comparative linguistics) तुलनात्मक भाषाविज्ञान। विचार की भावी तकनीक विद्या के लिए इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण वह है—जिसे हम (Contrastive linguistics) व्यतिरेकी भाषाविज्ञान कहते है। यह भाषाओ के परस्पर मुख्य वैषम्यों का चित्रण करता है—विशेषरूप से उन वैषम्यों का जो उनके व्याकरण, तर्क तथा अनुभव के सामान्य विश्लेषण मे मिलते है।

जैसा कि मैंने 1940 के अप्रैल के रिव्यू मे उल्लेख , किया था कि प्रकृति का खण्डीकरण करना व्याकरण का एक वह पक्ष है जिसका कि वैयाकरणो ने अभी बहुत कम अध्ययन किया है। हम घटनाओ के विस्तार एवम् प्रवाह को अपने ढग से विभाजित करते है और उन्हे व्यवस्थित करते है, प्राय ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम अपनी मातृभाषा के माध्यम से इस प्रकार की सहमति मे भागी है, इसलिए नही कि प्रकृति स्वय इस प्रकार प्रत्येक प्रेक्षक के लिए विभक्त है । भाषाएँ एक दूसरी से न केवल इसलिए भिन्न है कि उनकी वाक्य रचना किस प्रकार की है, अपितु इसलिए भी कि वे वाक्यो मे रखने के लिए तत्त्वो की प्राप्ति प्रकृति का खण्डीकरण किस प्रकार करके प्राप्त करती है। इस प्रकार का खण्डीकरण हमे शब्द-कोष की इकाईयाँ प्रदान करता है। (word) शब्द उनके लिए वहुत अच्छा "शब्द" नही है । (Lexeme) शब्दिम का सुझाव दिया गया है परन्तु अब (term) 'पद' काम चला सकता है। परन्तु इन लगभग स्पष्ट पदो के द्वारा हम अनुभूतियो के अशो को अर्धकाल्पनिक व्यतिरेक प्रदान करते है। अग्रेजी के पद जैसे 'Sky' (आकाश) ,'hill' (पहाड़ी) तथा 'Swamp' (दल दल) आदि प्रकृति के अनन्त वैविध्य रूपी पक्ष को एक स्पष्ट 'वस्तु' लगभग मेज कुर्सी आदि की तरह मान लेने के लिए प्रोत्साहित करते है। अत: अग्रेजी तथा अन्य मिलती जुलती भाषाएँ हमे यह सुझाव देती है कि विश्व इन शब्दों के अनुरूप, स्पष्ट पदार्थो तथा घटनाओ का एक सग्रह है । वास्तव मे, यह श्रेण्य भौतिकी एवम् खगोल-विज्ञान द्वारा प्रस्तुत किया गया विवक्षित चित्र है-कि ससार निश्चित रूप से भिन्न आकार के पृथक् पृथक् पदार्थो का सग्रह है।

इस विषय का विवेचन करते समय पुराने तार्किको ने दृष्टान्तो का प्राय दुर्भाग्य-पूर्ण चयन किया है। वे दृष्टान्त के रूप मे मेज, कुर्सी और मेज पर रखे हुए सेव को, परीक्षण विषयो के रूप मे वास्तविकता का पदार्थो जैसा स्वभाव दिखाने और उसकी तर्क के साथ एक से एक की अनुरूपता दिखाने के लिए, ग्रहण करने की प्रवृत्ति रखते है। मनुष्य की शिल्पी तथा कृषि सम्वन्धी उपज , जिन्हे वह सजीव पौधो की कोटि से अलग करता है, पार्थक्य की एक अनन्य कोटि होती है, हम आशा कर सकते है कि भाषाएँ उनके लिए पर्याप्त रूप मे पृथक् पदो का प्रयोग करेगी। वास्तविक प्रश्न यह है कि भाषाएँ इनके साथ कैसा व्यवहार करती है-अर्थात् इन कृत्रिम रूप से पृथक् किए हुए पदार्थो के साथ नही, परन्तु अपनी गति, रग तथा परिवर्तनशील रूप से युक्त प्रकृति के प्रवाहशील रूप के साथ, वादलो के साथ, समुद्रतटो और पक्षियो की ऊँची उडान के साथ, क्या करती है ? क्योकि जिस प्रकार का हमारा प्रकृति के रूप का खण्डी-करण होता है, उसी प्रकार की हमारी भौतिकी वनती है ।

यहाँ हम खण्डीकरण मे और मौलिक पदो के चुनाव मे अन्तर पाते है । हम प्रकृति में किसी चीज को यह कह कर पृथक् कर सकते है कि "यह बरसने वाला झरना है"। (Apache) अपाचे ga धातु से एक कथन का निर्माण करती है 'श्वेत बनो' (जिसमे रग रहित, साफ इत्यादि सम्मिलित है) तथा 'no' उपसर्ग के साथ निम्न-गामी गति का अर्थ प्रविष्ट हो जाता है ("श्वेतता नीचे की ओर जाती है"), तब

to उपसर्ग जोड दिया जाता है, जिसके दोनो अर्थ है—जल और झरना, और परिणाम हमारे बरसते हुए झरने के सदृश होता है। परन्तु संश्लिष्ट रूप से यह पानी या झरनो की तरह श्वेतता नीचे की ओर जाती है। यह हमारे सोचने के ढग से कितना भिन्न है। वही धातु 'ga' एक ऐसे उपसर्ग, जिसका अर्थ है—'परिस्थिति' को स्थान अभिव्यक्त करता है' से युक्त होकर gohlga पद बनाता है 'स्थान सफेद है, स्वच्छ; एक साफ जगह, एक मैदान। ये उदाहरण बताते है कि कुछ भाषाओ मे अभिव्यक्ति का साधन रासायनिक सयोजन है—जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, जिनमे पृथक् पद इतने पृथक् नही है जितने कि अग्रेजी मे है, परन्तु प्लास्टिक के सश्लेष से बने हुए पदार्थो की तरह एक दूसरे मे प्रविष्ट या प्रवाहित होते दिखाई पड़ते है। अत ऐसी भाषाएँ, जो विश्व का भिन्न-पदार्थक चित्र इस मात्रा मे प्रस्तुत नही करती जितना कि अग्रेजी तथा अन्य बहुत भाषाएँ, एक नए प्रकार के सम्भव तर्क तथा नए ब्रह्माण्डीय सम्भव चित्रण की सम्भावना की ओर सकेत करती है।

भारोपीय तथा अन्य बहुत सी भाषाएँ दो भाग वाले वाक्य को बहुत महत्त्व देती हैं—जिसमे प्रत्येक भाग शब्दो के वर्ग सज्ञा, या क्रिया के चारो ओर बनाया जाता है, जिन्हे वे भाषाएँ भिन्न प्रकार से व्यवहृत करती है। जैसा कि मैंने अप्रैल 1940 के रिव्यू मे दिखाया था कि यह भेद प्रकृति से नही लिया गया है, अपितु यह केवल इस तथ्य का परिणाम है कि भाषाओ का कोई न कोई रचनात्मक ढंग होना चाहिए, और उन भाषाओ ने इस प्रकार के ढग को अपना कर अपना काम चलाया है। ग्रीक लोगो ने, विशेष रूप से अरस्तू ने इस व्यतिरेक को उपस्थित किया, और इसी को तर्कशास्त्र का सिद्धान्त बनाया। तभी यह व्यतिरेक तर्कशास्त्र मे बहुत प्रकार से अभिव्यक्त किया गया है : उद्देश्य तथा विधेय, कर्त्ता तथा क्रिया, पदार्थ तथा पदार्थो मे सम्बन्ध, पदार्थ तथा उनके विशेषण, मात्राएँ तथा व्यापार। और, व्याकरण का अनुसरण करते हुए यह विचारधारा दृढ़ हो गई है कि इन इकाइयो का एक वर्ग स्वाधिकार से विद्यमान रह सकता है परन्तु 'क्रिया' वर्ग दूसरे वर्ग की सत्ता के बिना नही रह सकता—जिसे हम 'पदार्थ' वर्ग का नाम देते है तथा जो आलम्बन के लिए खूँटी का काम करता है। इस विचारधारा के नारे पर "Embodiment is necessary" "मूर्त्तरूप आवश्यक है" किसी ने सशक्त आपत्ति नही उठाई है, तथापि आधुनिक भौतिकी का सम्पूर्ण सुझाव, जिसका बल "क्षेत्र" (field) पर है, वास्तव मे इस विचारधारा के लिए अन्तर्गूढ चुनौती है। यह व्यतिरेक हमारे गणित मे दो प्रकार के प्रतीको मे प्रकट होता है। एक तो–1, 2, 3, x, y, z प्रकार का और दूसरा +, −, −, $\surd$, log−, यद्यपि 0, $\frac{1}{2}$, $\frac{3}{4}$, π तथा दूसरो के विषय में द्विवर्गीय वर्गीकरण सुनिश्चित रूप से लागू नही होता। द्विवर्गीय धारणा हमारे चिन्तन के पीछे अवश्य रहती है यद्यपि उसे प्राय. प्रकट रूप से अभिव्यक्त नही किया जाता है।

हमारी अमरीकी-इण्डियन भाषाएँ बताती है कि एक उपयुक्त व्याकरण की सहायता से हम अच्छे वाक्यो का चयन कर सकते है जिनका विभाजन उद्देश्य और विधेय में नही किया जा सकता। एक प्रयत्नपूर्वक किया गया विभाजन अग्रेजी के अनुवाद या

इस वाक्य के भावानुवाद का विभाजन है, न कि स्वयं इण्डियन वाक्य का। हम एक सश्लिष्ट "राल" को सैलूलॉयड या लवलेशो मे वियोजित करने का प्रयत्न कर सकते है, क्योकि "राल" की नकल सैलूलॉयड और लवलेशो से की जा सकती है। अल्गोन्कियन भाषा परिवार, जिसकी एक सदस्य शॉनी भाषा भी है, हमारे उद्देश्य—विधेय प्रकार के वाक्यो का प्रयोग करता है, परन्तु चित्र 15 मे दिखाए गए उदाहरण की तरह वाक्यो को भी प्रधानता देता है। सुनिश्चित होने के लिए nı को अनुवाद मे उद्देश्य के रूप मे प्रस्तुत किया गया है परन्तु इसका अर्थ 'मैं' और 'मेरा' दोनो ही हैं और वाक्य का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है—(My hand ıs pulling the branch aside) मेरा हाथ शाखा को एक ओर दूर खीच रहा है। या nı– अनुपस्थित भी रह सकता है, यदि ऐसा है तो हमे एक उद्देश्य गढने मे प्रवृत्त होना चाहिए, जैसे 'he-वह', 'ıt-यह', 'Somebody- कोई', या फिर हमे अपने अग्रेजी उद्देश्य के लिए शॉनी तत्त्वो मे से किसी एक से मिलता जुलता कोई विषय चुन लेना चाहिए।

जब हम नूत्का भाषा को देखते हैं तो हमे उद्देश्य और विधेय रहित वाक्य का एक ही प्रकार उपलब्ध होता है। विधेयन पद का प्रयोग तो किया गया है परन्तु इसका अर्थ है 'वाक्य'। नूत्का भाषा मे शब्द-भेद नही है; साधारणतम कथन भी एक वाक्य होता है जो किसी घटना या घटना-ग्रन्थि से सम्बन्धित रहता है। लम्बे वाक्य–वाक्यो के वाक्य (संश्लिष्ट वाक्य) हैं, केवल शब्दो के वाक्य नही। चित्र-17 मे नूत्का का साधारण वाक्य है न कि सश्लिष्ट वाक्य। उसका अनुवाद "वह लोगो को प्रीतिभोज पर निमन्त्रित करता है" उद्देश्य और विधेय मे विभक्त कर देता है। परन्तु नूत्का का वाक्य इस प्रकार विभक्त नही है। वह पकाने या उबालने की क्रिया से आरम्भ होता है tl'ımsh , तत्पश्चात् ya (परिणाम) आता है= पकाया हुआ, तब '—is 'खाना'—पकाया हुआ भोजन खाना, तब it आता है(जो करते है) पकाए हुए भोजन को खाने वाले, तब '—ıtl (के लिए जाना) आता है, तब अन्य पुरुष निश्चयार्थ का चिन्ह,–ma आता है और पूर्ण अभिव्यक्ति tl'imshya' 'ısitáıtlma बन जाती है, जिसका अशोधित सा भावानुवाद इस प्रकार है "वह" या 'कोई', जाता है, पका हुआ खाना, खाने वालो के लिए (निमन्त्रण के लिए)।

अग्रेजी भाषा का बात करने का तकनीक 'संज्ञा और क्रिया' नाम के दो कृत्रिम वर्गो के व्यतिरेक तथा पूर्वोक्त प्रकृति की द्विविभाजक धारणा पर निर्भर करता है। हमारे सामान्य वाक्य मे, यदि वह आज्ञार्थक न हो तो, क्रिया से पहले सज्ञा का होना बहुत आवश्यक है। यह आवश्यकता उस दार्शनिक तथा साधारण धारणा के अनुरूप है, जिसके अनुसार 'क्रिया को करने वाला कर्त्ता होना ही चाहिए।' अन्तिम बात ऐसी न हुई होती यदि अग्रेजी हजारो क्रियाएँ "hold" (पकड़ना) जैसी स्थितियों का द्योतन करने वाली होती। परन्तु हमारी अधिकतर क्रियाएँ एक प्रकार के खण्डी-

करण का अनुसरण करती है जो कि प्रकृति से उन्हे पृथक् करता है, जिन्हें हम "Actions"(क्रियाएँ) अर्थात् "गतिशील रूपरेखाएँ कहते है।

अत बहुमत नियम का अनुसरण करते हुए हम प्रत्येक वाक्य मे गति देखते है—'I hold it' (मैं इसे पकड़ता हूँ, रोके रखता हूँ) जैसे वाक्य मे भी । एक

यहाँ वे भिन्न प्रकार दिखाए गए हैं जिनके द्वारा अंग्रेजी और नूत्का एक ही घटना को सूत्रित करते है। अंग्रेजी का वाक्य उद्देश्य और विधेय में विभाज्य है; नूत्का वाक्य नहीं है, तथापि वह पूर्ण एवम् तर्क संगत है। इसके अतिरिक्त नूत्का वाक्य केवल एक शब्द है जिसमें पाँच प्रत्ययों से युक्त tl'imish धातु है।

क्षण भर के चिन्तन से पता चल सकता है कि "hold' = पकड़े रखना कोई "क्रिया" नही है, परन्तु सापेक्षिक स्थितियो की एक अवस्था है, तथापि हम इसे क्रिया के रूप मे ही सोचते है और "क्रिया" के रूप मे देखते भी है—क्योकि भाषा इसका भी सूत्रीकरण इसी प्रकार करती है जैसे कि अन्य असख्य अभिव्यक्तियो का, जैसे "I strike it" (मैं इस पर चोट मारता हूँ) आदि का जो गतियो और परिवर्त्तनो से सम्बन्धित है।

हम निरन्तर प्रकृति मे कृत्रिम क्रियाशील इकाइयो को देखते है, केवल इसलिए कि हमारे 'क्रिया -शब्दो' के सामने सज्ञा-शब्द अवश्य होने चाहिएँ । हमे कहना पड़ता है "it flashed" (यह चमका) या "A light flashed" (एक प्रकाश चमका) ताकि हम "flash" (चमकना) क्रिया के लिए एक कर्त्ता प्रस्तुत कर सके जो इस क्रिया को करने वाला हो। यद्यपि flashing (चमकना) या light (प्रकाश) एक ही चीज है। होपी भाषा "flash" (चमकना) की सूचना एक ही क्रिया शब्द rehpi. मे देती है । वहाँ पर उद्देश्य और विधेय का विभाजन नहीं

है, न ही लैटिन के tonat (यह गरजता है) की तरह 't' जैसा कोई प्रत्यय है। होपी मे क्रिया शब्द बिना कर्त्ता के है और हो सकते है—यह एक ऐसा तथ्य है जो उस भाषा मे एक ऐसी सम्भाव्यता उत्पन्न करता है जिसका विकास, विश्व के कुछ पक्षो को समझने के लिए एक तर्क संगत व्यवस्था के रूप मे, सम्भवत, कभी नही किया जाएगा। इसमे सन्देह नही कि आधुनिक विज्ञान—जिस पर पाश्चात्य भारोपीय भाषाओ की छाप है, प्राय ऐसा ही करता है जैसे कि हम सब करते है, अर्थात् वहाँ भी गतियाँ और शक्तियाँ देखता है जहाँ कि "अवस्थाओ" को देखना अधिक अच्छा हो सकता है। दूसरी ओर, 'अवस्था' एक सज्ञा है जिसे परम्परा मे 'पदार्थ' वर्ग के साथ सम्बन्धित होने के कारण काफी श्रेष्ठ पद प्राप्त है, अत विज्ञान "अवस्थाओ" की बात करने के लिए बिल्कुल तैयार है, यदि उसे "संज्ञा" जैसी धारणा से काम चलाने की अनुमति प्राप्त हो जाए तो। शायद "अणु" की अवस्थाओ या विभाजक कोशिकाओं के स्थान पर यदि हम "क्रिया" की तरह की धारणा को इतनी ही तत्परता से काम मे ले आते, परन्तु "कर्त्ता और कर्म" की गुप्त भूमिका के विना, तो बहुत ही अच्छा होता।

मै उनके साथ सहानुभूति रखता हूँ जो कहते है "इसे सादा और सरल अग्रेजी मे कहिए" विशेष रूप से उस समय जबकि वे भाषा को अर्धशिक्षित शब्दो से लादने के सारहीन रीतिवाद का विरोध करते हैं। परन्तु चिन्तन को केवल अग्रेजी की अभिरचनाओ तक सीमित रखना—और विशेष रूप से उन अभिरचनाओ तक जो अग्रेजी मे सादगी की पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करती है, चिन्तन की शक्ति को खोना है जो एक बार खो जाने पर कभी प्राप्त न हो सकेगी। अंग्रेजी के "सरलतम" रूप में ही प्रकृति विषयक सर्वाधिक अचेतन मान्यताएँ विद्यमान हैं। यही कठिनाई मौलिक अग्रेजी की योजनाओ के साथ होती है, जिनमे एक अशक्त बनाई गई ब्रिटिश अग्रेजी अपनी कठिनतर गुप्त मान्यताओ के साथ सरलमन ससार पर शुद्ध विवेक के तत्त्व के रूप मे लादी जाती है। हम अपनी सरल अग्रेजी को भी बहुत अधिक प्रभावपूर्ण ढग से व्यवहार मे ला सकते है यदि हम बहुभाषाई बोध की अनुकूल अवस्थिति से इसका सञ्चालन करे। इसी कारण मेरा विश्वास है कि जो लोग अग्रेजी, जर्मनी, या रूसी या किसी अन्य एक भाषा बोलने वाले, भावी ससार की कल्पना करते है, वे भ्रान्त धारणा रखते हैं और वे लोग मानव मन के विकास का सबसे बडा अपकार करेंगे। पाश्चात्य सभ्यता ने भाषा के माध्यम से वास्तविकता का अनन्तिम विश्लेषण किया है, तथा शोधक प्रयत्नो के बिना ही उस विश्लेषण को दृढतापूर्वक 'अन्तिम' मानती है। एकमात्र-सशोधक उन सभी भाषाओ मे निहित है जो युगो के स्वतन्त्र विकास द्वारा भिन्न परन्तु इतने ही तर्क सगत अन्तरिम विश्लेषण पर पहुँचे है।

एक बहुत ही उपयोगी लेख "Modern logic and the task of the natural sciences" (आधुनिक तर्क और प्राकृतिक विज्ञानो का कर्त्तव्य) में हैरोल्ड एन ली (Harold N. Lee) कहते हैं "वे विज्ञान जिनकी शोध्य सामग्री परिमाणात्मक मापन का विषय है, उनका विकास बहुत ही सफलतापूर्वक किया गया

है; क्योकि जिन अनुक्रम व्यवस्थाओ के दृष्टान्त हमारे गणित विज्ञान ने प्रदर्शित किए है, उनके अतिरिक्त-अनुक्रम व्यवस्थाओ के विषय मे हमे बहुत कम ज्ञान है । हम निश्चयपूर्वक यह कह सकते हैं कि इन व्यवस्थाओ के दूसरे प्रकार अवश्य हैं क्योकि गत अर्ध शताब्दी मे उच्चतर तर्कविज्ञान ने इस ओर स्पष्ट सकेत किया है। हम आज की सुस्थापित वैज्ञानिक व्यवस्थाओ के बहुत से क्षेत्रो मे उन्नति की आशा कर सकते है यदि तर्क विज्ञान की प्रगति हमे दूसरे प्रकारो का पर्याप्त ज्ञान प्रदान कर दे तो। हम अन्य बहुत से खोज के विषयो की आशा कर सकते है जिनके तरीके आज के युग मे पूरी तरह वैज्ञानिक नही है परन्तु वैज्ञानिक हो सकते है यदि हमे नई अनुक्रम व्यवस्थाएँ उपलब्ध हो जाएँ।[1]" इसके साथ यह भी जोड़ा जा सकता है कि नई अनुक्रम व्यवस्थाओं की रचना के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र, जो आधुनिक गणित-शास्त्र के समरूप तो नही अपितु समान अवश्य है, वह क्षेत्र हमारी भाषाओ मे अब तक के किए गए अनुसन्धानो से बहुत अधिक विचक्षण अनुसन्धान करने मे निहित है।

1. Sigma XI Quart, 28 : 125 (Autumn 1940).

भाषा, मन और वास्तविकता*

इन हाल के दिनो मे केवल थोडी सी सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता यह देखने के लिए पड़ती है कि आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का महान प्रकाशक-विज्ञान किसी इरादे के बिना ही एक सीमान्त पर पहुच गया है। अब या तो इसे अपनी मृतप्रायः रूढियो को दफना देना होगा, अपनी व्यवस्था समाप्त करनी होगी, प्रतिष्ठित स्थान छोडना होगा और उत्तरोत्तर बढने वाली अपरिचितताओ के क्षेत्र मे तथा सस्कृति विशेष मे जकडे इस ज्ञान को व्याघात पहुचाने वाली सामग्रियो से भरे हुए क्षेत्र मे आगे बढना होगा, या इसे— claude Houghton की सारगर्भित उक्ति के अनुसार, स्वय अपने ही अतीत का 'भाव-चोर' बनना पडेगा । इस सीमान्त का सिद्धान्त रूप मे बहुत पहले आभास हो गया था और उसका नामकरण भी कर दिया गया था जो कि हमारे पास तक पौराणिक कथाओ से घिरा होने के कारण अस्पष्ट रूप में पहुँचा है। उसका नाम 'बेबल' (babel) है । क्योकि विज्ञान के पूर्णतया तथ्यपरक होने के सतत एव शौर्यपूर्ण प्रयत्न ने अन्तत उसे भाषाई व्यवस्थाओ के ऐसे तथ्यो के साथ उलझा दिया है, जिनके विषय मे सन्देह भी नही हो सकता था। पुराने श्रेण्य विज्ञान ने न तो कभी भी इन तथ्यो को माना, न इनका सामना किया और न ही इनको कभी तथ्य समझा । इसके विपरीत, ये उसके घर मे पिछले द्वार से घुसे और इन्हे स्वय ही विवेक का तत्त्व मान लिया गया।

जिसे हम "वैज्ञानिक विचार" कहते है, वह पाश्चात्य भारोपीय प्रकार की भाषा का विशिष्टीकरण है, जिसने तर्क विद्याओ का एक वर्ग ही विकसित नही किया अपितु वास्तव मे भिन्न बोलियो का एक वर्ग भी विकसित कर लिया है । ये बोलियाँ अब परस्पर अबोधगम्य होती जा रही है। जैसे कि 'स्पेस' पद एक मनोवैज्ञानिक और एक भौतिकविज्ञानी के लिए एकार्थक न तो है और न हो सकता है। यदि मनोवैज्ञानिक यह प्रतिज्ञा भी कर ले कि चाहे कुछ भी हो—आफत आए या तूफान आए, वे "स्पेस" पद का प्रयोग उसी अर्थ मे करेंगे जिसमे कि भौतिकविज्ञानी करता है, तो वे इससे अधिक नही कर पाएगे जितना कि अग्रेजी भाषा मे अग्रेज लोग, फ्रासीसी भाषा की उक्ति le sentiment का फ्रासीसी अर्थ मे ही प्रयोग कर सकते है जो समान वर्तनी वाली होती हुई भी भिन्न वृत्तिमूलक है।

यह केवल उन विस्तार सम्बन्धी उलझनो को ही उत्पन्न नहीं करता है जिन्हे शायद एक कुशल अनुवादक सुलझा सकता था। यह इससे भी अधिक जटिलता उत्पन्न

* थियोसोफिकल सोसाइटी की अनुमति से Theosophist (Madras, India), जनवरी तथा अप्रैल सन् 1942 के अंकों से पुनर्मुद्रित।

करने का काम करता है। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक सुगुम्फित तकनीकी उपभाषा कुछ दृष्टिकोणों का समावेश करती है तथा कुछ अत्यधिक भिन्न दृष्टिकोणो के प्रति कुछ व्यवस्थित विरोधों को अन्तर्निहित रखती है। विशेष रूप से ऐसा तब होता है यदि भाषा का सर्वेक्षण गतिशील तथ्य के रूप मे नही किया गया हो, अपितु उसे साधारण रूप मे स्वीकार कर लिया गया हो, तथा विशिष्ट चिन्तक द्वारा प्रयुक्त किए गए स्थानीय एव सीमित रूप को इसका सम्पूर्ण रूप समझ लिया गया हो। ये प्रतिरोध न केवल भिन्न विज्ञानो को एक दूसरे से कृत्रिम रूप मे अलग करते है अपितु सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रवृत्ति को विकास की ओर एक नया बडा कदम उठाने से रोकते है—एक ऐसा कदम जो विज्ञान के लिए अभूतपूर्व दृष्टिकोणों को अपरिहार्य बनाता है तथा परम्पराओ से पूर्ण विच्छेद आवश्यक मानता है। क्योकि कुछ विशिष्ट भाषाई अभिरचनाएं ऐसी है जिनका विज्ञान की तर्कविद्या (बोली) मे जडीकरण हो चुका है और जो भारोपीय सस्कृति के उस मूलस्रोत मे प्राय. सन्निहित है, जिससे आधुनिक विज्ञान का आविर्भाव हुआ है, तथा जिनकी चिरकाल से 'शुद्ध विवेक' के रूप मे पूजा होती आई है—वे अभिरचनाए अब मृतप्राय. बन चुकी है। विज्ञान भी यह समझने लगा है कि किसी तरह भी समझ लीजिए परन्तु यह सत्य है कि वास्तविकता के कुछ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पक्षो का प्रेक्षण करने के लिए उनकी उपादेयता समाप्त हो चुकी है, जिनके सही प्रेक्षण किए जाने पर विश्व को समझने की समस्त भावी प्रगति निर्भर कर सकती है। इस प्रकार पाश्चात्य ज्ञान के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कदम, अपनी चिन्तन शैली की भाषाई पृष्ठभूमि का पुनरीक्षण करना है और फिर समस्त चिन्तन का पुनरीक्षण। थियोसोफिकल श्रोताओ के समक्ष इस विषय का विकास करने का मेरा अभिप्राय किसी भी थियोसोफिकल सिद्धान्त का अनुमोदन या पुष्टि करना नही है, अपितु यह है कि मैं जिन श्रेणियो के लोगों के सम्पर्क मे आया हूँ उनमे सबसे अधिक थियोसोफिकल लोग ही मुझे ऐसे लगे जो कि विचारो किंवा नए विचारो से उत्तेजित होते हो। और मेरा काम है कि मैं एक विचार का स्पष्टीकरण उन सब लोगो के समक्ष करू—यदि पाश्चात्य सस्कृति प्रस्तुत बर्बरता की बाढ से बच जाए तो—जो समस्त मानवी प्रकृति को पुनर्गठित करने के निमित्त घटनाचक्र द्वारा नेतृत्व पद पर आरूढ किए जा सके।

यह विचार इतना गम्भीर है कि इसका किसी एक वाक्य मे लिखा जाना सम्भव नही। अत. मै इसका नामकरण ही नही करता। यह विचार इस प्रकार है कि एक परासत्ता का ससार—एक दिगातीत, उच्चतर विमाओ का ससार उन सारे विज्ञानो से—खोज का प्रत्याशी है जिनका वह सयोजन एव एकीकरण कर देगा, वह प्रत्याशी है अभिरचनाबद्ध सम्बन्धो के क्षेत्र के प्रथम पक्ष के अन्तर्गत खोज का, जो कल्पनातीत रूप मे बहुविध है और फिर भी भाषा के समृद्ध एव व्यवस्थित सगठन के साथ स्वीकार्य सम्बन्ध रखती है। उन सगठनो मे सबसे नीचे गणित एव संगीत भी सम्मिलित है जो अन्तत भाषा के ही सजातीय हैं। यह विचार प्लाटो से भी पुराना होते हुए इतना आधुनिक है जितना कि हमारे सब से अधिक क्रान्तिकारी चिन्तक। यह

विचार White head 'व्हाइटहेड' के 'प्राग्ग्रहणात्मक पक्ष वाले ससार मे ध्वनित है, तथा चतुर्विमात्मक सातत्यक (Four dimensional Continuum) सहित सापेक्ष सिद्धान्त तथा उसके (Riemann-Christoffel.) के (टेन्सर) आतानक-जो ससार के तत्त्वो का समाहार किसी भी विन्दु-क्षण पर करता है उसमे अन्त-र्निहित है, जबकि आधुनिक ग्रन्थो मे सबसे अधिक विचार प्रेरक और मेरे विचार मे सर्वाधिक मौलिक Ouspensky. की Tertium Organum है। मुझे प्रस्तुत विषय पर जो कुछ कहना है वह नया हो सकता है और वह है भाषा मे पूर्वाभास—एक अज्ञात, विशाल ससार का पूर्वाभास—उस ससार का जिसका भौतिक रूप वाह्याकार मात्र या चर्ममात्र है, तथापि हम उसी ससार मे है और उसी ससार के है। गणित की सहायता से वास्तविकता जानने का मार्ग, जिसे आधुनिक ज्ञान अपनाना आरम्भ कर रहा है वह भाषा के साथ इस सम्वन्ध के एक विशेष विषय के माध्यम द्वारा ही अपनाना आरम्भ कर रहा है। इस विचार का आशय है कि, जिन्हे मैंने अभिरचनाएँ कहा है, वे एक वास्तविक ब्रह्माण्डीय अर्थ मे मौलिक है, और यह कि अभिरचनाएँ पूर्णो का निर्माण करती है, जो मनोविज्ञान के Gestelten के सदृश है, जिनका समावेश बृहत्तर पूर्णो मे अनवरत श्रेणी द्वारा होता रहता है। अत ब्राह्माण्डीय चित्र स्तरो या तलो की श्रेणियो के आनुक्रमिक या आनुपूर्वीय गुण वाला है। इस प्रकार के अनुक्रमो की मान्यता के अभाव के कारण विभिन्न विज्ञान इस ससार का खण्डीकरण ऐसे करते है मानो वे खण्ड प्राकृतिक स्तरो की दिशा को आरपार तिरछा काटते है—या परिवर्तन के किसी मुख्य स्थल पर पहुँचते है तो बीच मे रुक जाते है, और तब तथ्य बिल्कुल भिन्न प्रकार के हो जाते है, या यू कहिए कि पुराने निरीक्षणात्मक तरीको की पकड से बाहर हो जाते है।

परन्तु भाषिकी के विज्ञान के अन्तर्गत भाषाई साम्राज्य के तथ्य उन आनुक्रमिक स्तरो की मान्यता को अनिवार्य बना देते हैं, जो अभिरचनाओ के प्रेक्षित क्रम द्वारा स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किए गए है। यह इस प्रकार है मानो कोमल बेलबूटो की डिजाइन वाली नक्काशी से ढकी हुई भित्ति देखकर हमे पता चले कि यह नक्काशी अधिक स्पष्ट परन्तु फिर भी लघु एव मृदुल कुसुमों की अभिरचनाओ का आधार बनाती हैं, और यह कि इस कुसुमित विस्तार का बोध होने पर हम यह देखे कि इसके अन्दर अन्तरालो का बाहुल्य एक अन्य मरगोल या कुन्डलित अभिरचना का निर्माण कर रहा है, और यह कि उन मरगोलों या कुण्डलियों के समूहो द्वारा अक्षर बनाए जा रहे है और उन अक्षरो के क्रम को यदि ठीक ढग से देखा जाए तो वे शब्द बना रहे है और शब्द ऐसे वर्गो मे पक्तिबद्ध है, जो इकाइयों को श्रेणीबद्ध तथा वर्गीकृत कर रहे है, और इसी प्रकार आरपार काटने वाली अभिरचनाओ के निरन्तर विलास को देखते हुए हमे अन्तत. पता चलता है कि यह भित्ति ज्ञान का एक महान ग्रन्थ है।

पहले "निम्नतम स्तर मे" भाषायी तथ्य पूर्णतया भौतिक है, ध्वनिक है, ध्वनि तरगो द्वारा निर्मित प्रपच मात्र है, उसके बाद तरगित मासपेशियों तथा वागवयवो

की अभिरचनाओं का स्तर आता है, अर्थात् शारीरिक स्वनिक स्तर, तत्पश्चात् स्वनिमिक स्तर—एक अभिरचन जो प्रत्येक भाषा के लिए व्यंजनो, स्वरो, बलाघातो एव अनुतानों का एक सुव्यवस्थित सेट बनाता है, तब रूप-स्वनिमिक-स्तर आता है जिसमें पूर्ववर्ती स्तर के स्वनिम रूपिमों (शब्द, तथा उपशब्द, जैसे प्रत्यय आदि), के रूप में सयुक्त होते हुए दिखाई पडते है, तत्पश्चात् रूपविज्ञान का क्षेत्र, तत्पश्चात् पेचीदा, अधिकतर अचेतन अभिरचना का स्तर है जिसका अर्थ-हीन Syntax नाम प्रचलित है, तब इससे भी ऊँचे स्तर है जिनका पूरा आशय शायद किसी दिन हमारी समझ में आ जाए और हमे चकित कर डाले।

भाषा सब से बडा प्रदर्शनीय परिधान है जिसे मनुष्य धारण करता है। विकास के रगमच पर यह उसका अपना अभिनय —जिसमें वह ब्रह्माडीय पृष्ठपट के आगे आता है और वास्तविक रूप में अपने करतब दिखाता है। परन्तु हमे सन्देह है कि दर्शक देवगण यह भाप जाता है कि जिस आश्चर्यजनक चालो के सेट द्वारा मनुष्य अपने करतब को पराकाष्ठा पर पहुँचाता है, वह इस विश्व से चुरा लिया गया है। यह विचार, कि प्रकृति और भाषा आन्तरिक रूप से सम्बन्धित है जिससे आधुनिक संसार सर्वथा अनभिज्ञ है, चिरकाल तक बहुत सी उच्चकोटि की उन संस्कृतियो को सुविज्ञात था, जिनकी पृष्ठभूमि पर ऐतिहासिक अविच्छिन्नता पाश्चात्य योरोपीय सभ्यता से बहुत अधिक लम्बी है। भारतवर्ष में इस विचार का एक पक्ष मन्त्र और मन्त्र-विद्या के रूप मे विद्यमान रहा है। साधारण सांस्कृतिक स्तर पर मन्त्र एक पुरातन जादू-टोना मात्र है जैसा कि अविकसित सभ्यताओ में पाया जाता है। उच्चतर सभ्यताओं मे इसका सर्वथा भिन्न, बौद्धिक अर्थ हो सकता है जो ब्रह्माडीय व्यवस्था तथा भाषा की आन्तरिक सजातीयता के विवेचन से सम्बन्धित है। इस से भी ऊँचे स्तर पर यही "मन्त्रयोग" बन जाता है। जिसमें मन्त्र एक बहुविध चेतन अभिरचन बन जाता है जिसकी रचना परासत्तात्मक अभिरचनाओं के ससार मे चेतना की सहायता करने के लिए की जाती है जहाँ वह "चालक की सीट" पर बैठ जाता है। तब यह मानव अवयव संस्थान को इस प्रकार व्यवस्थित कर सकता है कि वे उन शक्तियो का हजार गुणा अधिक सप्रेषण, नियन्त्रण और प्रवर्धन कर सकें जिनका प्रेषण साधारणतया वे अवयव संस्थान अलक्षणीय एव अल्प मात्रा में करते है।

इसी से मिलता जुलता वह गणितीय सूत्र है जो एक भौतिक विज्ञानी को कुछ तारों की कुण्डलियों, टीन की परतों वाली प्लेटों, तन्तुपटो तथा अन्य नितान्त अचेतन एव निर्जीव (गैजिटों) जुगतो की सहायता से उन्हे एक ऐसी समाकृति देने में समर्थ बना देता है जिसके द्वारा वे सुदूरवर्ती देश में सगीत प्रसारित कर सकते है, तथा वह सूत्र भौतिक विज्ञानी की चेतना को अशिक्षित मनुष्य की चेतना से भिन्न स्तर पर पहुँचा देता है तथा पदार्थ की सगति, एक बहुत ही अनुकूल समाकृति के साथ, सम्भव बना देता है,—एक ऐसा समायोजन जिसके द्वारा शक्ति का असाधारण प्रकटीकरण सम्भव होता है। अन्य सूत्र बिजलीघर मे तारों और चुम्बकों की अनुकूल व्यवस्था को सम्भव बना देते है ताकि जब चुम्बको (या चुम्बको के अन्दर या चारों ओर

सूक्ष्म शक्तियों के केन्द्रों) को गतिशील बनाया जाए तो शक्ति इस रूप में प्रकट हो जाए जिसे हम बिजली का करन्ट या "वह्य" कहते है। हम एक रेडियो स्टेशन या विद्युत सयन्त्र को भाषाई प्रक्रिया रूप मे अभिकल्पित नही करते है। परन्तु यह वास्तव मे एक भाषाई प्रक्रिया की तरह ही है। (इसमें प्रयुक्त) आवश्यक गणित एक भाषाई संयत्र है और इसके अत्यावश्यक अभिरचन के सही विनिर्देशन के बिना वे एकत्रित की हुई जुगतें समानुपात रहित तथा समजनहीन रहेगी और परिणामस्वरूप निष्क्रिय रहेगी। परन्तु इस प्रकार के विषय में प्रयुक्त होने वाला गणित एक विशेषीकृत सूत्रभाषा है जिसका आविष्कार केवल धातु पिण्डो के माध्यम से एक विशेष प्रकार की शक्ति प्रकटीकरण की उपलब्धि के लिए किया जाता है जिसे हम "इलेक्ट्रीसिटी" विद्युत कहते है, और नाम के अनुरूप ही उसकी परिभाषा करते है। मन्त्रो की सूत्रभाषा एक भिन्न प्रकार से विशेषीकृत है। इससे अन्य प्रकार की शक्ति-प्रकटीकरण की उपलब्धि नाडी व्यवस्था तथा ग्रन्थियों की अवस्था में पुनर्रभिरचन द्वारा होती है या पुन उन सूक्ष्म "विद्युदात्विक" या "ईथरीय" शक्तियो द्वारा होती है जो उन शरीर पिण्डो में या उनके चारो ओर रहते है। उन अवयव सस्थानो के अवयव, यदि उनका अनुकूल अभिरचन नही किया गया है तो वे भी इतने ही संज्ञाहीन "जुगत" है और इतने ही गतिशील शक्ति के उत्पादन में असमर्थ हैं जितने कि ढीले तार तथा ढीले चुम्बक, परन्तु सही अभिरचना मे वे ही कुछ अन्य पदार्थ बन जाते है, जिन्हे अनभिरचित अवयवों के गुणो से समझना असम्भव है तथा अब वे सुप्त-शक्तियों के सक्रियकरण तथा सवर्धन में समर्थ है।

मैं इस प्रकार भाषा के मान्त्रिक तथा यौगिक प्रयोगो के सूक्ष्म प्राच्य विचारों का सम्बन्ध उस समाकृतिपरक या अभिरचन पक्ष के साथ जोड़ूंगा जो भाषा मे अत्यधिक मौलिक है। परन्तु ऐसा करना भी मुझे अपने विषय के प्रतिपादन के अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थल पर ले आता है। हमे भाषा के विषय मे और अधिक ज्ञान प्राप्त करना होगा। यह हम पहले ही देख चुके हैं कि इसके विषय मे जानने से अभिप्राय वह नही है जो कि अन्य बहुसख्यक-वैज्ञानिक या साधारण जन समझते है। जब हम लगभग विना प्रयत्न के बात करते रहते है और हमें यह ज्ञान भी नही होता कि हम अत्यधिक जटिल रचना-तन्त्र या प्रक्रिया का प्रयोग कर रहे है तो यह तथ्य एक प्रकार का भ्रम उत्पन्न कर देता है। हम सोचते है कि हमें पता है कि हम कैसे बोलते है और यह कि इसमे कोई रहस्य की बात नही है, और हमारे पास सभी प्रकार के उत्तर हैं। दुख है कि वे उत्तर कितने गलत हैं। यह इस प्रकार हुआ जैसे कि एक मनुष्य के असस्कृत ऐन्द्रिय सस्कार उसके समक्ष विश्व का एक चित्र प्रस्तुत करते है जो सरल, सुबोध तथा सन्तोषप्रद तो है परन्तु सत्य से बहुत ही दूर है।

जरा सोचिये कि यह ससार उस व्यक्ति को कैसा दिखाई देता है जो कितना ही बुद्धिमान एवं अनुभवी भले ही हो परन्तु उसने ब्रह्माण्ड के विषय में वैज्ञानिक आविष्कारों से सम्बन्धित एक शब्द भी नही सुना हो। उसके लिए पृथ्वी चपटी है, सूर्य और चन्द्रमा छोटी छोटी चमकीली चीजें है जो आकाश के पूर्वी छोर से नित्य-

प्रति ऊपर उभर आती है ऊपरी वायु के क्षेत्र मे घूमती हैं और पश्चिमी किनारे मे आकर डूब जाती है, अतः स्पष्ट है कि नक्षत्र अपनी रात कही पृथ्वी के नीचे गुजारते है। आकाश किसी नीले पदार्थ से बना उल्टा रखा हुआ प्याला है। तारे, छोटे और अपेक्षाकृत निकटवर्ती पदार्थ, ऐसे लगते हैं मानो सजीव है क्योंकि वे शाम के समय आकाश से ऐसे निकल आते है जैसे खरगोश या "रैटल स्नेक" अपने बिलों से, तथा प्रात काल पुन. वही लीन हो जाते है। उसके लिए "सौर-व्यवस्था" का कोई अर्थ नही और "गुरुत्वाकर्षण" का नियम उसकी समझ से बिल्कुल बाहर की चीज है—इतना ही नही, बल्कि निरर्थक बकवास भी है। उसकी दृष्टि मे पिण्ड नीचे की ओर गुरुत्वाकर्षण के कारण नही गिरते अपितु इसलिए गिरते है कि उन्हे पकड़े रखने के लिए कोई अन्य पदार्थ नही है, अर्थात् वह यह कदापि नही सोच सकता के ये पिण्ड कुछ और कार्य भी करते है। वह अन्तरिक्ष की कल्पना ही नही कर सकता जब तक कि उसमे पूर्व, पश्चिम, ऊपर और नीचे का समावेश न हो। उसके लिये रक्त प्रवाहित नही होता न ही हृदय रक्त को पम्प करता है, वह सोचता है कि हृदय वह स्थान है जहाँ प्रेम, दया तथा विचार रखे जाते है। किसी वस्तु का शीतल होना उसमे से ऊष्णता का निकल जाना नही है अपितु उसमे शीतलता का बढ़ जाना है, पत्तों का हरा होना उसमे क्लोरोफिल जैसे रासायनिक पदार्थ के कारण नही है अपितु उनमे 'हरेपन' के कारण है। उसके इन विश्वासों को तर्क द्वारा डिगाना असम्भव होगा। वह दावे के साथ कहेगा कि यह तो साधारण सा बुद्धियुक्त सामान्य ज्ञान है, जिसका अभिप्राय यह है कि वे विश्वास उसे सतुष्ट करते है क्योंकि वे उसके तथा उसके साथियो के बीच एक पूर्णतया पर्याप्त संचार-व्यवस्था का निर्माण करते है, अर्थात वे भाषाई रूप मे उसकी सामाजिक आवश्यकताओ की पूर्ति करने के लिये पर्याप्त है और तब तक पर्याप्त रहेगे जब तक आवश्यकताओ के एक अतिरिक्त समुदाय की आवश्यकता नही पडती और उनका विनियोग भाषा मे नही होता।

परन्तु जैसे यह व्यक्ति ऐसे भौतिक ससार के गर्भ मे विद्यमान है जिसके विस्तार एव अनुक्रम का उसे लेशमात्र भी सकेत नही, उसी प्रकार हम सभी गँवार, जगली से लेकर शिक्षित विद्वान तक, भाषा के गर्भ मे है। केवल भाषिकी के विज्ञान ने ही थोडा सा इस क्षेत्र मे प्रवेश करना आरम्भ किया है और इसकी खोजों से दूसरे विज्ञान अभी तक अनभिज्ञ है। अपने प्राकृतिक रूप मे मनुष्य चाहे साधारण सा मूर्ख है अथवा वैज्ञानिक है, उस पर प्रभाव डालने वाली भाषायी शक्तियो के विषय मे उससे अधिक नही जानता जितना कि एक असभ्य व्यक्ति गुरुत्वाकर्षण के विषय मे जानता है। उसकी धारणा है कि बात करना एक क्रियाकलाप है जिसके करने मे वह स्वतन्त्र एव निर्बाध है। उसके लिये यह एक साधारण सुस्पष्ट क्रिया है जिसके लिये उसके पास आवश्यक स्पष्टीकरण है। परन्तु ये स्पष्टीकरण उन आवश्यकताओ के कथन के अतिरिक्त और कुछ नही निकलते जो आवश्यकताए उसे वाग्विनिमय करने के लिये बाध्य करती है; और जिस प्रक्रिया द्वारा वह वाग्विनियम करता है वे उसके साथ सम्बन्धित नही है। अतः वह कहेगा कि वह कुछ सोचता है और जैसे जैसे विचार

आते जाते हैं वह उन्हे शब्द प्रदान करता रहता है । परन्तु यह पूछने पर कि उसके मस्तिष्क में बोलने से पहले वे ही विचार क्यों आए तो उसका उत्तर पुन उस क्षण की सामाजिक आवश्यकताओं की कहानी मात्र निकलता है। यह एक धुन्धला उत्तर है जो कोई प्रकाश नही डालता। परन्तु फिर वह यह मान लेता है कि इस बोलने की प्रक्रिया पर कोई प्रकाश डालने की आवश्यकता ही क्या है क्योंकि वह अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसका व्यवहार खूब अच्छी तरह कर लेता है। अत गलत ढग से उसका अभिप्राय यह हुआ कि सोचना एक स्पष्ट, सीधी क्रिया है जो समस्त बौद्धिक प्राणियों के लिए समान है और भाषा उसकी सीधी सी अभिव्यक्ति है।

वास्तव मे सोचने की क्रिया अत्यधिक रहस्यमय है और इस पर जितना भी प्रकाश डाला गया है वह भाषा के अध्ययन द्वारा ही अधिकतर डाला गया। यह अध्ययन बताता है कि मनुष्य के विचारो के रूप अभिरचनाओं के अदम्य नियमो द्वारा नियन्त्रित किए जाते है जिनके प्रति मनुष्य अनभिज्ञ रहता है। वे अभिरचनाएँ उसकी अपनी भाषा के अदृश्य, पेचीदा व्यवस्थीकरण है—जिन्हे अनायास ही दूसरी भाषाओ के साथ तुलना एव वैषम्य दिखाकर स्पष्ट रूप में दिखाया गया है—विशेष-रूप से उन भाषाओं के साथ, जो दूसरी भाषाई परिवार की है। उसका चिन्तन स्वय एक भाषा में है जैसे अग्रेजी मे, सस्कृत मे, चीनी में।[1] और प्रत्येक भाषा एक विशाल अभिरचना व्यवस्था है, जो दूसरी व्यवस्थाओ से भिन्न है, जिन मे सास्कृतिक रूप से वे रूप और कोटियाँ निहित है जिनके द्वारा व्यक्तित्व न केवल वाग्-विनियम करता है अपितु प्रकृति का विश्लेषण भी करता है, भिन्न प्रकार के सम्बन्धो और प्रपचो को देखता है या उपेक्षा करता है,अपनी तर्कणा को प्रणालीबद्ध करता है तथा अपनी चेतना का प्रासाद निर्मित करता है।

यह सिद्धान्त पाश्चात्य विज्ञान के लिए नया है परन्तु यह अकाट्य प्रमाणो पर आधारित है। इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन तथा आधुनिक थियोसोफी को इस

---

1. विषय का पूर्वानुधान करते हुए यह कहा जा सकता है कि "एक भाषा में सोचने" के लिए शब्दो का प्रयोग करना ही आवश्यक नहीं है। एक अशिक्षित असभ्य Choctaw 'चोक्ताउ' इतनी ही आसानी से दो अनुभूतियों के 'काल' और 'लिंग' का व्यतिरेक दिखा सकता है जितना कि एक बहुत कुशल साहित्यिक विद्वान, यद्यपि उसने ऐसे व्यतिरेको के लिए 'काल' या 'लिंग' जैसे शब्दो को कभी नहीं सुना है। अधिक चिन्तन शब्दो का समावेश बिल्कुल नही करता, परन्तु सम्पूर्ण रूपावली, शब्दवर्गो तथा ऐसी व्याकरणिक व्यवस्थाओं, जो व्यक्तिगत चेतना के केन्द्र बिन्दु के "पीछे" या "ऊपर' होती हैं, उनका व्यवहार कुशलता पूर्वक कर लेता है।

सिद्धान्त का या इस जैसी किसी चीज का पूरा ज्ञान है। यह सिद्धान्त इस तथ्य से ढका हुआ है कि सस्कृत की दार्शनिक शब्दावली, मेरे 'लैंग्वेज' शब्द का सही समानार्थक, भाषायी व्यवस्था के मोटे अर्थो मे, प्रस्तुत नही करती। भाषायी व्यवस्था समस्त प्रतीकवाद का समावेश करती है। यह सभी प्रतीकवादी प्रक्रियाओं का, सभी प्रसगो, और तर्क की प्रक्रियाओ का आलिगन करती है। नाम जैसे पद इस व्यवस्था के उपवर्गो की ओर सकेत करते है जैसे शाब्दिक (लैक्सिक) स्तर, स्वनिक स्तर। उसका निकटतम समानार्थक मनस् शब्द है जिसके लिए हमारा अस्पष्ट शब्द "माइण्ड' न्यायसंगत नही है। व्यापक अर्थो मे मनस् ससार की सरचना मे मुख्य आनुक्रमिक सोपान है। यह एक "मानसिक स्तर" है जैसा कि इसे स्पष्ट शब्दो मे कहा गया है। यहाँ पर पुन 'मेन्टल प्लेन' शब्द एक अंग्रेजी भाषी के लिए भ्रामक सिद्ध हो सकता है। अग्रेजी का शब्द "मेन्टल" एक दुर्भाग्यपूर्ण शब्द है जिसका कार्य हमारी सभ्यता मे प्राय एक बौद्धिक व्याख्या के स्थान पर खड़ा होना मात्र है और एक धुंधले "लिम्बस" सीमित अर्थ का द्योतन करता है न कि अभिरचन-गुणात्मक ब्रह्माण्डीय संरचनात्मक व्यवस्था का। कभी कभी मनस् का प्रयोग केवल व्यक्तिगत 'मन' के अर्थ मे भी किया जाता है, यह बात श्री 'फ़िट्ज़ कुज़्' के अनुसार 'द व्हॉयस ऑव सायलेन्स' The voice of the Silence की एक प्रसिद्ध उक्ति का विषय है (The mind is the great slayer of the real) मन सत्य का महान घातक है।

यह कहा जाता है कि 'मनस्' के क्षेत्र मे दो महान् स्तर हैं जिन्हें रूप तथा अरूप कहा जाता है। निम्नतर क्षेत्र नाम और रूप का है। यहां रूप का अर्थ है स्पेस ("हमारी" त्रिविमात्मक स्पेस) मे सगठन। यह व्यापक अर्थ मे "पैटर्न" या अभिरचन के साथ सहविस्तारी नही है। तथा नाम भाषा या भाषाई क्रम नही है परन्तु इसमें केवल एक स्तर है--पदार्थो को नाम देने की प्रक्रिया या सभी बहुविध अनुभूतियों के अगों के शब्दीकरण या नाम अथवा शब्द प्रदान करने का स्तर है—उन अंगों को शब्द प्रदान करने का स्तर है जिन्हें इस प्रक्रिया के द्वारा अर्धकृत्रिम एकान्त मे खड़ा कर दिया जाता है। अत 'Sky' (आकाश) जैसा एक शब्द, जिसके साथ अंग्रेजी मे 'board' (तख्ते) शब्द की भांति व्यवहार किया जा सकता है, The sky, a sky, skies, some skies, piece of sky आकाश, एक आकाश, बहुत से आकाश, कुछ आकाश, आकाश का एक अश। हमे एक प्रेतछाया या एक अपार्थिव दृश्याकृति के विषय मे भी ऐसे ढग से सोचने की प्रेरणा दे सकता है जो कि अपेक्षाकृत पृथक् स्थूल पिण्डो के विषय मे सोचने के लिए उचित ढग है। Hill (पहाड़ी) तथा Swamp 'दलदल' हमे यह सुझाव देते है कि हम पदार्थो मे ऊँचाई सम्बन्धी या धरती की रचना सम्बन्धी स्थाई विभेदो को इतना ही भिन्न मानें जितना कि मेज़ और कुर्सियाँ है। प्रत्येक भाषा भौतिक-सत्ता के निरन्तर विस्तार एवं प्रवाह का क्रम विच्छेदीकरण अपने-अपने ढग से करती है। शब्द तथा भाषा एक ही

वस्तु नही है। जैसा कि हम आगे उल्लेख करेंगे वाक्य-सरचना की अभिरचनाए जो शब्दो का निर्देशन करती है—शब्दो से कही अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अत रूप और नाम का स्तर—'आकृति-खण्डीकरण' तथा शब्दावली, भाषाई व्यवस्था के अग है—परन्तु एक कुछ अल्पविकसित एवम् आत्मनिर्भर अग है। यह अग अधिक ऊँचे सगठन स्तर पर निर्भर करता है—वह स्तर जहाँ इसकी सयोजक योजना प्रकट होती है। वह 'अरूप' स्तर है—अभिरचना-संसार का सर्वोत्कृष्ट रूप। इस 'अरूप' 'रूपरहित' का अर्थ भाषाई रूप या व्यवस्था से रहित होना नही है, परन्तु दैशिक, दृश्याकृति या स्पेस मे खण्डीकरण के निर्देश के बिना, जैसा हमने पहाड़ी और दलदल के विषय मे देखा था, शाब्दिक स्तर पर अर्थनिर्देश का एक महत्त्व-पूर्ण लक्षण है। 'अरूप' अभिरचनाओ का वह क्षेत्र है जिसे दिक् तथा काल के अन्तर्गत—निम्न स्तर की सामग्री मे क्रियान्वित किया जा सकता है परन्तु स्वय दिक्-काल के प्रति उदासीन है। वे अभिरचनाए शब्दो के अर्थो की तरह नही है परन्तु कुछ इस ढग की है जिससे 'अर्थ' वाक्य मे प्रकट होता है। वे पृथक वाक्यों की तरह नही है परन्तु वाक्यो की योजना और वाक्य सरचना के अभिरचन की तरह है। हमारे व्यक्तिगत चेतन "मन" इन अभिरचनाओ को उन गणितीय या व्याकरणिक सूत्रो के प्रयोग द्वारा सीमित रूप मे समझ सकते हैं जिनमे शब्द, मूल्य तथा मात्राओं इत्यादि का प्रतिस्थापन किया जा सकता है। इस अवसर पर एक साधारण सा दृष्टान्त दिया जाएगा।

यह "चेतना के सस्कारो" की सम्भावनाओ के अन्तर्गत है कि mental (मान-सिक) क्षेत्र के अरूप स्तर के साथ, चेतना के विस्तृत क्षेत्र मे, सीधा सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। Ouspensky के ग्रन्थ A New Modle of the Universe मे असाधारण मानसिक अवस्थाओ की वे मोहक झलकियाँ है जिन्हें उस दार्श-निक ने अनुभूत किया—परन्तु रूपरेखा मात्र मे, क्योकि ये पूर्णतया अशाब्दिक दृश्य शब्दों मे अच्छी तरह नही रखे जा सकते। वह हमे उन "चल-लिपिचित्रों" के विषय मे बताता है जो पूरी तरह "गणितीय सम्बन्धो" से बने हुए थे और उन लिपिचित्रो की शाखा, प्रशाखा तथा विस्तार के विषय मे इस सीमा तक बताता है कि वह विश्व के एक पूर्ण पक्ष की व्याख्या बन जाता है। "ओउस्पेस्की" की गणितीय अभिरूचि तथा उसका ऐसे विषयो का अध्ययन जैसे "अनुकलीदसीय ज्यामिति" (non-Euclidean-geometry) अति-दिक्—hyperspace —— तथा "काल और चेतना का सम्बन्ध" आदि ने उसे गणितीय सादृश्यो पर बल देने की प्रेरणा दी होगी। गणित एक विशेष प्रकार की भाषा है जिसका विस्तार विशेष-वाक्यो द्वारा किया गया जिनमे 1, 2, 3, 4—सख्या वाचक शब्द है तथा X, Y, Z, आदि है। परन्तु प्रत्येक भाषा का प्रत्येक अन्य वाक्य-प्रकार भी एक महान व्यवस्था का सम्भावित केन्द्र हो सकता है। विरले ही लोगो को इस प्रकार की चेतना की उपलब्धि स्थायी अवस्था के रूप मे प्राप्त होती है तथापि बहुत से गणितज्ञ और वैज्ञानिक भाषिको को एक क्षणिक झलक मे सम्पूर्ण सम्बन्धो की ऐसी व्यवस्था देखने

का अनुभव हुआ होगा जिस पर पहले कभी एक इकाई बनाने का सन्देह भी नही हुआ था। उस सम्पूर्ण एव विशाल व्यवस्था मे समरसता और वैज्ञानिक सौन्दर्य क्षण भर के लिए मनुष्य को सौन्दर्यपरक आनन्द की वाढ से अभिभूत कर लेते है। उदाहरणार्थ यह "देखना" कि किस प्रकार अग्रेजी भाषा की सभी साधारण ध्वनियाँ ("स्वनिम") तथा उनके योगों को अग्रेजी के सभी एकाक्षरीय शब्दों के सम्भव रूपों मे एक पेचीदा परन्तु सुव्यवस्थित नियम द्वारा समन्वित किया जाता है चाहे वे रूप अर्थ युक्त है अथवा अर्थहीन, विद्यमान है अथवा ऐसे है जिनके विषय मे अभी सोचा भी नही है, (विशेषता यह है) कि अन्य सभी रूपों का इतने ही अनिवार्य रूप मे वहिष्कार किया जाता है जितना कि एक रासायनिक मिश्रण का सूत्र एक प्रकार की डलियो को छोड़ कर अन्य सभी प्रकार की डलियो को वनने से रोक देता है। इसलिए अथवा अभिरचना के सम्पूर्ण सूत्र को दिखाने के लिए, जिसे तथा कथित मर्षस्वानिमिक सरचनात्मक सूत्र कहा जाता है, मुझे एक ज़रा वडे कागज की आवश्यकता पडेगी, परन्तु मैं इसे यहाँ सक्षिप्त रूप मे इस प्रकार प्रस्तुत कर सकता हू।[2]

$$O,\ C\text{–}ng, C_1, C_2, C_3\ C_4, \text{ etc} \ldots$$
$$S \pm C_m\ C_n + V + (V_1)O, \pm (r,w,y);$$
$$C\text{–}h, C'_1\ C'_2, C'_3, C'_4, \text{ etc} \ldots\ldots$$
$$C'_m C'_n \pm (t/d, S/z, st/zd)$$

इस सूत्र के अनुसार अग्रेजी के शब्दो को या तो लिपि प्रतीक दिए जाने चाहिएं या उनकी वर्तनी उस स्वानिमिक वर्तनी के अनुसार होनी चाहिए जिसका विवरण ल्यूनार्ड ब्लूमफील्ड ने अपने ग्रन्थ "लैंग्वेज" मे किया है। इस पद्धति मे सयुक्त स्वरो का प्रतिनिधित्व एक शुद्ध स्वर (V) तथा अनुवर्ती w या y, (r,w,y) पद से करते है जिससे कि note का प्रतिलेखन 'nowt' है (या newt होगा जो वोलीगत विभेद पर निर्भर करता है),
date, deyt हैं और ice ays है। वह भौतिक अथवा अकूस्टिक ध्वनिक स्तर पर सही विश्लेषण है इसका प्रमाण हमे इस तथ्य से मिलता है कि यदि हम ice "आयस्" की फोनोग्राफिक रिकार्डिग को उल्टें तो हमें sya ध्वनि प्राप्त होगी और यदि हम ठीक ढग से ysa की फोनोग्राफिक रिकार्डिंग करें और फिर उसे उल्टे तो मशीन "आयस" वोलेगी। अग्रेजी का यह विश्लेषण अकूस्टिक या ध्वनिक स्तर से दो दर्जे और ऊपर सरचनात्मक स्तर पर भी ठीक उतरता है, क्योकि ays (आयस) का यस् अभिरचना की दसीं

2. वह पूरा सूत्र जिससे इसे सक्षिप्त किया गया है मेरे लेख (Linguistics as an exact Science) Technol Rev., Dec 1940 Massachusetts Institute of Technology cambridge Mass (P.223 in this volume) में छपा है और उसकी व्याख्या भी की गई है।

लोक पर है जिस पर (else) का (ls) है, (Since) सिन्स का ns है तथा (hats) का ts आदि आदि। यह दो व्यंजनो के एक साथ रखने के लिए एक सामान्य सरचनात्मक योजना है ।

अव यदि इस सूत्र मे अर्धविरामो को "या" पढ लिया जाए तो हमे पता चलेगा कि यह सूत्र सहायक उपसूत्रो की एक बहुत बडी श्रेणी के समान है । इनमे से सब से सरल O+V+C–h है, (देखिए यह बडे सूत्र मे किस प्रकार विद्यमान है) जिसका अर्थ है कि शब्द का आरम्भ व्यजन के बिना किसी भी स्वर से हो सकता है तथा h को छोड़ कर उसका अनुवर्ती कोई भी व्यजन हो सकता है—जिससे हमे at या it , और if जैसे शब्दो की प्राप्ति होती है । पहले पद को बडे सूत्र के अगले प्रतीक मे वदल कर हमे C–ng+V+C–h की प्राप्ति होती है जिसका अर्थ है कि पहले की तरह अन्त होने वाला शव्द किसी भी व्यजन से आरम्भ हो सकता है 'केवल ng ध्वनि को छोडकर" (जो Sing मे ng की ध्वनि है) (ng) ध्वनि एक ही वर्ण से लिखी जानी चाहिए परन्तु छापने वाले का ध्यान रखते हुए मैं सामान्य चिन्ह का प्रयोग करूँगा यह अभिरचना शव्दो की एक वहुत वडी श्रेणी प्रदान करती है जैसे—hat, bed, dog, man तथा हमे नए शब्द गढने की अनुमति देती है--जैसे tig, nem, zib परन्तु ध्यान रहे कि ngib या zih जैसे शब्दों के लिए नही ।

अव तक तो अभिरचनाएँ सरल है, परन्तु इससे आगे वे पेचीदा हो जाती है। इस सक्षिप्त रूप मे सूत्र को अपने साथ छँटे हुए व्यंजनों की सूचियो की श्रेणी की आवश्यकता है यह लाण्ड्री की बहुत सी सूचियो की तरह है तथा प्रत्येक सूची का प्रतिनिधित्व इन प्रतीको मे से कोई एक करता है जैसे— C_1, C_2 इत्यादि। C_1 C_2 सूत्र का अर्थ है कि आप शब्द का प्रारम्भ C_1 सूची के किसी भी व्यजन से कर सकते है और इसके पीछे सूची का कोई भी व्यजन आ सकता है जिसमे केवल r और l है। क्योंकि C_1 मे p, b f है। अत उदाहरणार्थ हम 'Pray', 'Play', brew, blew, free, flee तथा 'frig, blosh आदि निरर्थक शब्द वना सकते हैं। परन्तु मान लीजिए कि हमे एक शव्द की आवश्यकता है जो Sr, Zr, tl या dl से आरम्भ होता हो, तो हम अपनी C_1 सूची देखते है परन्तु हमे आश्चर्य होगा कि s, z, t, या d वहाँ है ही नही। हम किंकर्त्तव्यविमूढ से हो जाते है । तव हम दूसरी सूचियो को उठाते हैं परन्तु हमारी हालत पहले से कुछ अच्छी नही है। इस सूत्र के अनुसार अपनी सूचियो को जोडने का कोई ऐसा मार्ग नही मिलता जिससे कि हम आदि व्यजन सयोगो को प्राप्त कर सके। स्पष्ट है कि इस प्रकार के शब्द अग्रेजी भाषा मे है ही नही और अधिक बड़ी वात तो यह है कि कोई उदीयमान Lewis Carrolls या Edward Lears भी रहस्यपूर्ण ढग से ऐसे शव्द गढने से इन्कार कर देगा। इस से स्पष्ट है कि शव्दो का गढना निर्वाध कल्पना का कार्य नही है, इससे यह सिद्ध होता है कि विल्कुल ही अनर्गलता की वेढगी उडान मे भी शब्दों का गढ़ना निर्बाध कल्पना का काम नही है अपितु पहले ही अभिरचित सामग्री का अनिवार्य रूप से

प्रयोग करता है। यदि किसी अंग्रेजी भाषी से यह कहा जाए कि वह ऐसे शब्द का आविष्कार करदे जो भाषा की इस अभिरचना मे पहले नही है।तो उसका उत्तर ऐसा ही नकारात्मक होगा जैसा कि उस व्यक्ति का होगा जिससे कहा जाए कि अण्डो के विना ही तले हुए अण्डे तैयार कर दे।

अत: यह सूत्र उन सभी सयोगो को एकत्रित करता है जो अंग्रेजी के एकाक्षरीय शब्द या शब्द जैसे रूपों मे पाए जाते हैं, और उन सबका निषेध करता है जो उन मे नही है या नही आ सकते। इसमे सूत्र के अन्तर्गत Glimpsed का mpst है, Sixths का ksths है, ftht है he fifthed it का, nchst विचित्र भले हो परन्तु सम्भव है, Thoumunchst it greedily और अन्य ढेर सी अटपटी एवं खुरदरी ध्वनियाँ है जो हमारे मुँह के लिए स्निग्ध एवं सहज बन जाती है, परन्तु वे ही ध्वनियाँ अन्यथा हमे भौचक्केपन से देखने पर बाध्य कर सकती थी और हफा सकती थी। दूसरी ओर, यह सूत्र अनगिनित सरल गुच्छो का, निषेध करता है जैसे—'htk' 'fpat' 'nwelng' 'dzogb' तथा अन्य वहुत से, ये सब गुच्छ कुछ भाषाओ के लिए सम्भव है तथा सरल है परन्तु अंग्रजी के लिए नही।

यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे एकाक्षरीय शब्दों मे संरचना की अविश्वसनीय जटिलता है तथा 'सरलता' अभिव्यजित करने वाली पुरानी मुख-बन्धनी, जैसे "इसे एकाक्षरीय शब्दो मे कहिये", सूक्ष्मतर अन्तर्दृष्टि के दृष्टिकोण से एक सब से अधिक पक्की वकवास है, तथा ऐसी अन्तर्दृष्टि के लिए ऐसी पिष्टोक्तियाँ इस सत्य का प्रमाण है कि जो लोग सरलतापूर्वक तथा धारा प्रवाह मे भाषा की पेचीदा व्यवस्था का प्रयोग करते हैं, वे लोग उन व्यवस्थाओ के अस्तित्व के प्रति तब तक पूर्णतया, अन्धे या वहरे होते हैं जब तक कि उन्हे उस के विषय मे कुछ कठिनाई के साथ सकेत न दिया जाए।

और यह कहावत कि "जैसा ऊपर है वैसा ही नीचे है" यहाँ पर पूर्णतया संगत है। जैसा नीचे, भाषा के स्वानिमिक स्तर पर महत्त्वपूर्ण व्यवहार का नियन्त्रण व्यक्तिगत चेतना के केन्द्र से वाहर स्थित अभिरचना द्वारा किया जाता है, अत: ऐसा ही नियंत्रण भाषा के उन उच्चतर स्तरों पर किया जाता है जिन्हें हम विचारो की अभिव्यक्ति कहते हैं। जैसा कि हम भाग दो में देखेगे कि चिन्तन भी मार्गो के एक ऐसे जाल का अनुसरण करता है जिसे किसी एक भाषा मे विछाया जाता है—भाषा जो एक ऐसी व्यवस्था है जो वास्तविकता के कुछ पक्षों पर, और बौद्धिकता की कुछ अवस्थाओ पर व्यवस्थित रूप मे ध्यान केन्द्रित कर सके तथा अन्य भाषाओ में मिलने वाली व्यवस्थाओं का व्यवस्थित रूप में वहिष्कार कर सके। व्यक्ति विशेष इस व्यवस्था के विषय मे नितान्त अनभिज्ञ होता है और इसके अभेद्य बन्धनो मे पूर्णतया बन्दी बना रहता है।

II

हमने भाग I मे देखा कि भाषाई तथा मानसिक तथ्यो मे महत्त्वपूर्ण व्यवहार (या दोनो—'व्यवहार' और 'महत्त्व' एक ही है जब तक कि वे परस्पर बन्धे हुए

रहते हैं) का नियन्त्रण एक विशिष्ट व्यवस्था या सगठन द्वारा किया जाता है अर्थात्—आकृति सिद्धान्तो की एक ज्यामिति द्वारा जो प्रत्येक भाषा की अपनी विशेषता है। यह 'सगठन' व्यक्तिगत चेतना के सकुचित वृत्त के बाहर से थोपा जाता है, उस चेतना को कठपुतली मात्र बना दिया जाता है जिसकी भाषाई युक्तियो को अभिरचना के अभेद्य तथा अतर्कित बन्धनो मे जकड दिया जाता है। यह कुछ इस प्रकार है जैसे कि व्यक्तिगत मन जो शब्दो को तो चुनता है परन्तु अभिरचना से अधिकतर अनभिज्ञ है—मानो वह मन किसी अन्य उच्चतर तथा बहुत अधिक बुद्धिमुक्त मन की जकड मे है जिसे घरो, बिस्तरो, और दलिये की पतीलियो के विषय मे बहुत कम ज्ञान है। परन्तु वह उन पैमानो तथा उन सीमाओ का व्यवस्थीकरण तथा गणितीकरण कर सकता है जिसके समीप तक भी स्कूल का कोई गणितज्ञ कभी नही पहुँचा होगा।

और अब "इन्सानी बिरादरी" का यह महान् तथ्य प्रकट होता—कि सभी मानव इस विषय मे एक समान है। जहाँ तक कि हम भाषा के व्यवस्था-विज्ञान द्वारा अनुमान लगा सकते है वह यह है कि पापुअन शिकारी का उच्चतर मन या 'अचेतन' उतनी ही अच्छी तरह गणितीकरण कर सकता है जितना कि आइन्स्टाइन का, और इसके विपरीत एक वैज्ञानिक और गँवार, एक विद्वान और आदिवासी; सभी अपनी व्यक्तिगत चेतना को बडे धुँधले से ढग से प्रयुक्त करते है और एक ही प्रकार के तर्कसगत अवरोध मे फँसते है। वे इस मनोहर एवं अटल व्यवस्था से, जो उनका नियन्त्रण करती है, ऐसे ही अनभिज्ञ है जैसे कि एक ग्वाला (कॉस्मिक) ब्रह्माडीय किरणो से अनभिज्ञ होता है। बात करने या तर्क-वितर्क करने मे प्रयुक्त प्रक्रिया के विषय मे उनका ज्ञान शुद्ध रूप से कृत्रिम, बाह्य तथा व्यावहारिक है, जिसकी तुलना बालिका 'स्यूस्मिथ' के रेडियो विषयक ज्ञान से की जा सकती है जिसे वह इस प्रकार घुमाती है मानो सोने के समय की कहानी का आह्वान कर रही हो। कुछ लोग इस अज्ञान का बहुत बडा लाभ उठाने की प्रबल प्रवृत्ति रखते है ताकि वे मन के कार्यो को अच्छी तरह समझने के प्रयत्नो की निन्दा कर सके। यदि निन्दक एक देहाती गँवार है तो वह इसे "असम्भव" या "सिद्धान्तीय" बात कह कर टालना चाहेगा और यदि उसने वैज्ञानिक की परम्परागत सही पोशाक पहन रखी है तो वह इसे "तत्त्वमीमासा', 'रहस्यवाद', 'ज्ञानमीमासा' कह डालेगा। पाश्चात्य सभ्यता मे भाषा पर खोज करने वालो के लिए 'मान्यता' का अनिच्छापूर्ण मधु तथा अत्यन्त अल्पमात्रा मे पुरस्कार सुरक्षित रखे है, यद्यपि उसे मानव की उस स्वाभाविक प्रवृति का प्रतिकार करना पडता है जो भाषा को रहस्यपूर्ण मानती है। जैसा कि वह है ही, तथा इसे सर्वाधिक रोचक विषयो मे से एक मानती है—यह विषय ऐसा है जिसके विषय मे लोग अवैज्ञानिक ढग से चर्चा करना तथा कल्पनाएँ करना पसन्द करते है तथा शब्दो के अर्थो का अनन्त रूप से विवेचन करना चाहते है, या यह चर्चा उन्हें अच्छी लगती है कि ओशकोश के आदमी को बोस्टन से आने वाले व्यक्ति की या बोस्टन के लोगों को ओशकोश से आने वाले व्यक्ति की भाषा किस प्रकार

अटपटी लगती है इत्यादि। उच्चतर मन किसी भी, प्रकार का शुद्ध बौद्धिक करतब दिखाने की क्षमता रखता हुआ तो प्रतीत होता है परन्तु व्यक्तिगत स्तर पर 'सचेत' होता हुआ प्रतीत नही होता। अर्थात् यह व्यावहारिक मामलों तथा व्यक्तिगत अहं-कार के अपने निजी समीपवर्ती पर्यावरण पर ध्यान केन्द्रित नही करता। कुछ स्वप्न तथा असाधारण मानसिक अवस्थाएं हमें इसे इसके अपने मानसिक स्तर पर 'चेतन' मान लेने का सकेत दे सकती है और यदाकदा इसकी चेतना उसके द्वारा व्यक्तित्व तक आ सकती है, परन्तु योग जैसे कुछ तकनीकों को छोड़कर यह साधारणतया व्यक्तिगत चेतना के साथ कोई सम्बन्ध नही बनाता। हम इसे उच्चतर अहकार कह सकते है—यह ध्यान मे रखते हुए कि इसका एक विशेष गुण जो प्रत्येक भाषा के द्वारा प्रकट होता है, और इसकी एक ध्यानाकर्षक समानता व्यक्तिगत आत्मा से हैं अर्थात् यह अपनी व्यवस्थाओ का सगठन तीन या अधिक सार्वनामिक "पुरुष" कोटि के एक केन्द्र के चारों ओर करता हैं, जो 'एक' पर केन्द्रित है जिसे हम प्रथम-पुरुष एक वचन कहते हैं। यह किसी भी भाषायी व्यवस्था में कार्य कर सकता है—एक बालक किसी भी भाषा को पूरी तत्परता से सीख सकता है—पृथक् पृथक् अनुतानो तथा बलाघातों वाले एकाक्षरीय शब्दों वाली चीनी भाषा से लेकर वान्कुवेर द्वीप की नूतका भाषा तक जिसमे अधिकतर एकशब्दीय वाक्य है जैसे mamamamama hln' ıqk' ok ma qama (उन में से प्रत्येक ने ऐसा किया क्योंकि वे श्वेत लोगो से मिलने वाली विशेषताओ से युक्त है)[3]।'

उच्चतर मन की व्यवस्थात्मक तथा आकृतिपरक प्रकृति होने के कारण, भाषा का अभिरचनात्मक पक्ष सदैव lexation या 'नाम देने की प्रक्रिया' के पक्ष को अभिभूत एवं नियन्त्रित करता है। अत· विशिष्ट शब्दों के अर्थ इतना महत्त्व नही रखते जितना कि हम बड़े प्यार से कल्पना करते है। भाषा का सार वाक्य है न कि शब्द, ठीक इसी तरह जैसे (Equation) समीकरण तथा (function) फलन गणित के वास्तविक तत्त्व है न कि अकेले संख्यावाचक। हमारा सामान्य विश्वास, कि किसी शब्द का एक "निश्चित अर्थ" होता है, गलत हैं। हम देख चुके हैं कि उच्चतर मन उन प्रतीकों का व्यवहार करता है जिनका किसी एक निश्चित पदार्थ की ओर संकेत नही है, अपितु वे (ब्लैंक चेक) कोरे चेक की तरह है, जिन्हें आवश्यकतानुसार किसी भी विशिष्ट परिवर्तनीय मूल्य जैसे उपरोक्त सूत्र मे C's और V's या बीज-गणित के x, y, z आदि के लिए भरा जा सकता है। यह एक विचित्र पाश्चात्य धारणा है कि उन प्राचीन लोगों ने जिन्होने बीज गणित का आविष्कार किया एक

---

3. इस शब्द तथा वाक्य में केवल एक नाम या शब्द है mamahl या "श्वेत जाति का व्यक्ति"। शेष समस्त व्याकरणिक रचना है जो किसी भी चीज का निर्देश कर सकती है। गुड़िया के लिए नुत्का नाम या शब्द पर यदि ये ही प्रक्रियाएँ की जाएँ तो उसका अर्थ होगा, 'इनमें से प्रत्येक ने ऐसा किया क्योंकि उनमे गुड़िया की समानता थी'।

बहुत बड़ी खोज की थी यद्यपि मानव का अचेतन मन इसी प्रकार का कार्य युगों से करता आया है। प्राचीन 'माया' लोग या प्राचीन हिन्दू आश्चर्यचकित कर देने वाले गणित-ज्योतिषीय सख्याओ के आवर्तनो पर आवर्तनो का व्यवहार मानव होने के कारण ही करते रहे है। हमे किसी प्रकार भी यह सोचने की गल्ती नही करनी चाहिए कि शब्द, चाहे उनका प्रयोग निम्न व्यक्तिगत मन द्वारा किया जा रहा है, इन परिवर्तनीय प्रतीको के विपरीत ध्रुवो का प्रतिनिधित्व करते है, और यह कि एक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है, वह एक दत्त वस्तु के लिए प्रतीक होता है तथा किसी एक परिवर्तनीय (Variable) का एक मूल्य है।

निम्न मन ने भी भाषा की बीजगणितीय प्रकृति को समझ लिया है अतः 'शब्द' शुद्ध अभिरचनाओं (अरूप) के परिवर्तनीय प्रतीको तथा सच्ची नियत मात्राओ के बीच की वस्तु है। अर्थ का वह अश जो शब्दो मे है और जिसे हम "निर्देश" या, समुद्देश्य कह सकते हैं केवल सापेक्ष रूप मे ही नियत हैं। शब्दो का निर्देश या समुद्देश्य उन वाक्यो तथा व्याकारणिक अभिरचनाओ की दया पर निर्भर करता है जिनके बीच वे प्रयुक्त होते है। और यह आश्चर्यजनक बात है कि यह निर्देश तत्त्व किस प्रकार न्यूनतम मात्रा तक घटाया जा सकता है। यह वाक्य I went all the way down there just in order to see Jack (मैं यहाँ से सारे रास्ते वहाँ नीचे इसलिए गया कि जैक को देख सकूँ) केवल एक सुनिश्चित पक्का निर्देश रखता है—अर्थात्—"जैक"। शेष सब केवल एक अभिरचना मात्र है जो किसी पदार्थ के साथ विशिष्ट रूप से सम्बद्ध नही। 'See' का भी स्पष्ट रूप से वह अर्थ नही जिसकी अपेक्षा की जा सकती है अर्थात्—'एक दृष्टिगत बिम्ब की प्राप्ति'।

या, पुन., शब्द निर्देश मे हम परिमाणों का विवेचन उसे परिमाण श्रेणियों में विभक्त करके करते है—छोटी, मध्यम, बड़ी और बहुत बडी इत्यादि। परन्तु 'परिमाण' वस्तुगत दृष्टि से श्रेणियों मे विभक्त नही होता है परन्तु सापेक्षता का एक शुद्ध सातत्यक (Continuum) है, तथापि हम निरन्तर परिमाण के विषय मे वर्गों की एक श्रेणी के रूप मे सोचते है क्योकि भाषा ने अनुभूति का खण्डीकरण तथा नामकरण इसी तरह किया है। सख्यावाचक शब्दो का निर्देश उन सख्याओं की तरफ नही होता जिनकी गणना होती है बल्कि लोचयुक्त सीमाओ वाली सख्या श्रेणियो की ओर होता है। अत. अग्रेजी भाषा का शब्द few अपने क्षेत्र को, निर्देश के परिमाण, महत्त्व तथा दुर्लभता के अनुसार व्यवस्थित करता है। 'few' कुछ राजा, युद्धपोत, या हीरे-केवल तीन या चार हो सकते हैं, और (कुछ) 'few' (peas etc) 'कुछ मटर', 'कुछ वर्षा की बूदें', या 'चाय की पत्तियाँ' तीस या चालीस हो सकती है।

आप कह सकते है कि हाँ, निस्सन्देह यह large, small आदि जैसे शब्दो के विषय मे सत्य है, स्पष्ट रूप मे वे सापेक्ष्य पद है, परन्तु dog, tree, house जैसे शब्द भिन्न है—उनमे से प्रत्येक एक विशिष्ट वस्तु का नाम है। परन्तु बात ऐसी नही है, ये पद भी उसी नाव मे सवार है जिसमे Large और small, किसी विशेष व्यक्ति द्वारा किसी विशेष समय मे कहे गए fido शब्द का निर्देश एक विशिष्ट वस्तु की

ओर हो सकता है परन्तु शब्द लोचमयी सीमाओ वाली एक श्रेणी का निर्देश करता है। ऐसी श्रेणियो की सीमाएँ विभिन्न भाषाओ मे विभिन्न होती है। शायद आप यह सोच बैठे कि शब्द (tree) का अर्थ सर्वत्र तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए वही वस्तु है। परन्तु ऐसा बिल्कुल नही है। पोलिश भाषा का शब्द जिसका अर्थ-वृक्ष है, उसी का अर्थ 'wood' लकडी भी होता है । सन्दर्भ तथा वाक्य अभिरचना ही यह निश्चित करते है कि पोलिश शब्द (या कोई शब्द, किसी भाषा मे) किस प्रकार के विषय की ओर सकेत करता है। होपी भाषा मे, जो Arizonaकी अमरीकी–इण्डियन भाषा है, कुत्ते के लिए 'pohko' शब्द का अर्थ किसी भी प्रकार का पालतू पशु या घरेलू पशु है। इस प्रकार होपी भाषा मे pet eagle पालतू गिद्ध का शाब्दिक अर्थ eagle dog' 'गिद्ध कुत्ता' है, और इस प्रकार सन्दर्भ को नियत करके होपी भाषी इसके पश्चात् उसी 'eagle' को अमुक व्यक्ति का pohko कह कर निर्दिष्ट करता है ।

परन्तु, ताकि ऐसा न हो कि इसे 'प्राचीन' भाषा की सनक समझ कर छोड दिया जाए (और कोई भी भाषा 'प्राचीन' नही है) आओ, हम अपनी प्यारी भाषा अग्रेजी की एक और झाकी देखे। 'hand' शब्द लीजिए । His hand मे यह शब्द मानव शरीर पर एक स्थान का सकेत करता है Our land मे यह असाधारण रूप से भिन्न विषय का निर्देश करता है, " all hands on deck' मे एक अन्य प्रसग को दिखाता है, goob hand at gardening मे दूसरे को, 'he held a good hand (at Cards) मे किसी दूसरे को, 'जबकि he got the upper hand' मे यह शब्द किसी अर्थ का सकेत नही करता अपितु अभिविन्यास की अभिरचना मे विलीन हो जाता है। लोहे की छड़ अथवा वाक्याँशो मे प्रयुक्त bar शब्द को देखिए, (लोहे की छड़)'Iron bar, bor to progress' (उन्नति मे बाधा,) he should be behind bars (उसे जेलखाने मे होना चाहिए) studied for the bar (उसने कानून की शिक्षा प्राप्त की,) let down all the bars(सभी बन्धनोहको तोड़ दिया) bar of music(सगीत दण्ड),Sand bar(बालू भित्ति),Candy bar (मिसरी की डली), mosquito bar (मच्छरदानी का डण्डा), bar sinister, (अमगल का निषेध करो), bar none (किसी का निषेध न करो), Ordered drinks at the bar (मधुशाला मे शराब के लिए आदेश दिया) ।

परन्तु आप कह सकते है कि ये तो प्रसिद्ध मुहावरे है। भाषा का वैज्ञानिक और तर्कसगत प्रयोग नही । ओह, बेशक । "Electrical" विद्युतीय (विद्युत सम्बन्धी) एक वैज्ञानिक शब्द माना जाता है । क्या आप जानते है कि इसका सकेतित पदार्थ क्या है? क्या आप यह भी जानते है कि electrical शब्द "electrical apparatus" (बिजली का सयन्त्र) मे वही नही है जो "electrical expert" (बिजली के काम मे 'दक्ष') मे है। प्रथम प्रयोग मे यह सयंत्र मे बिजली के प्रवाह की ओर सकेत का निर्देश करता है परन्तु दूसरे मे यह कुशल व्यक्ति मे बिजली के प्रवाह का सकेत नही करता । जब "group" जैसा एक शब्द काल के अन्तर्गत पक्षो के अनुक्रम, अथवा भूमि पर वस्तुओ के ढेर

ओर सकेत कर सकता है, तो इसके सकेतन का तत्त्व गौण है। वैज्ञानिक शब्दो से सकेतित पदार्थ प्राय "अस्पष्ट" होते है, विशेप रूप से उन अभिरचनाओ के प्रभाव के अन्तर्गत जिनमें वे पाए जाते है। यह बहुत ही अर्थगर्भित बात है कि यह वैशिष्ट्य (Babbittry) 'बेबिट्री' (बैबिट के धातु के प्रयोग की काग) का प्रमाणाक होने से बहुत दूर की चीज़ है फिर भी बौद्धिक चर्चाओ मे, आश्चर्यजनक कथाओ, तथा प्रेम की भाषा मे सर्वाधिक दिखाई पडता है। और ऐसा होना आवश्यक है क्योंकि विज्ञान, काव्य, और प्रेम इन दृष्टियो से समान है कि ये सभी, शाब्दिक सकेतो तथा साधारण से नीरस विस्तारो के दास जगत् मे बहुत दूर तथा ऊँची उडाने है, व्यक्तिगत आत्मा के तुच्छ सकीर्णतायुक्त दृष्टिकोण को विशाल बनाने के निमित्त "प्रयास" है, अरूप की ओर, अनन्त समन्वय, सहानुभूति तथा अपरिवर्तन शील सत्य एव अमर पदार्थो की व्यवस्थाओ के ससार की ओर 'उन्नयन' है। और जबकि सभी शब्द अपनी केवल "letter that killeth" दशा के कारण दयनीय है—निश्चित है कि वैज्ञानिक शब्दावली जैसे ',force' (शक्ति) "average" औसत, "sex', 'सेक्स' "allergic" 'एलर्जिक' "biological" ('जीवशास्त्रीय' कुछ कम दयनीय नही है और अपने ढग मे "sweet" (मीठा) "gorgeous" (शानदार) 'rapture' (आनन्दातिरेक) enchantment (सम्मोहन) "heart" (हृदय) 'soul' (आत्मा) 'star dust' (तारिका धूलि) आदि से अधिक निश्चित अर्थो वाले नहीं है। आपने सम्भवत (star dust) 'स्टार डस्ट' के विषय मे सुना होगा—यह क्या चीज है? क्या यह नक्षत्रो का एक पुज है, या चमकीला पाउडर है, या मगल नक्षत्र की मिट्टी है, आकाश गगा है, दिवास्वप्नो की एक अवस्था है, काव्यमयी कल्पना है या स्वत. जलनशील लोहा है, या सर्पिल नीहारिका (नेबुला) है, या "पिट्सबर्ग" का निकटवर्ती उपनगर है, या एक प्रचलित गीत है? आप नही जानते और न ही कोई दूसरा ही जानता है। क्योंकि 'शब्द' केवल एक शब्दीकरण (Lexation) है, दो नही है अत· इसका अपना कोई निर्दिष्ट अर्थ नही है। कुछ शब्द इसी प्रकार के है।[4]

जैसा कि हम देख चुके है कि निर्देश अर्थ का छोटा भाग है, अभिरचन बडा भाग है। विज्ञान, अर्थात् 'सत्य की खोज", प्रेम की भाति एक दिव्य उन्माद है। और सगीत? क्या यह भी उसी श्रेणी मे नही? सगीत एक अर्थभाषा है, जो ((लेक्सेशन" या शब्दीकरण का विकास किए बिना पूर्णतया अभिरचनो पर आधारित है।

कभी कभी निर्दिष्टार्थ पर अभिरचना का प्रभुत्व बडा विचित्र परिणाम उत्पन्न करता है, विशेप रूप से तब जबकि एक अभिरचना ऐसे अर्थो को उत्पन्न कर देती है जो "नाम" के मौलिक सकेतितार्थ से, (अभिधार्थ) से बिल्कुल परे होते है। तब निम्न

4. 'Kith' तथा 'thore' " की तुलना कीजिए जिनका कोई अर्थ नहीं है और उनका प्रभाव तब तक, भ्रामक— है जब तक कि उन्हे "kith & kin", and "in thores of" आदि अभिरचनाओ मे न देखा जाए।

मन भ्रामक स्थिति में पड़ जाता है और वह यह नहीं समझ पाता कि कुछ शक्तिशाली सूत्र इस पर अप्रतिरोध्य प्रभाव डाल रहे हैं, तथा वह मनमाने ढंग से प्रसन्नतापूर्वक चैन के साथ अपनी मनपसन्द स्पष्ट सी व्याख्याओं की शरण ले लेता है तथा उन सब वस्तुओं को देखकर, और "वस्तुओं" के विषय में सुनकर जो उसकी व्याख्या में सहायक सिद्ध होती है वह अपनी व्याख्याएँ प्रस्तुत करने लगता है। "Asparagus" शब्द प्रथम भाग में दिखाए गए शुद्ध रूप में "ध्वन्यात्म. अंग्रेजी अभिरचना के दबाव से पुनर्गठित 'Sparagras' के रूप में पुनर्गठित हुआ है, और फिर क्योंकि 'Sparrer' 'Sparrow' (चिड़िया) शब्द का बोलीगत रूप है, इसलिए 'Sparrow-grass' शब्द निकलता है, और तत्पश्चात् हमें धार्मिक मान्यता प्राप्त ऐसे विवरण प्राप्त होते हैं जिनमें चिड़ियों का इस घास के साथ सम्बन्ध दिखाया गया है। 'Cole slaw' जर्मन भाषा के 'Kohlsalat' से बना है 'गोभी का सलाद' परन्तु अभि रचना के दबाव के कारण यह 'cold slaw' में पुनर्गठित हो गया है और इसने कुछ प्रदेशों में एक नए नाम 'slaw' को जन्म दिया तथा परिणामस्वरूप एक नया भोज्य पदार्थ 'hot slaw' प्रचलित हो गया। बच्चे प्राय. निरन्तर पुनरभिरचन करते रहते हैं परन्तु वयस्कों के उदाहरण का दबाव अन्ततः उनकी भाषा को भी सामान्य स्तर पर ले आता है, उन्हें सीखना पड़ता है कि 'Mississippi', Mrs. Sippy नहीं है और equator पशुशाला का 'lion' (शेर) नहीं, परन्तु एक काल्पनिक रेखा है। कभी कभी वयस्कों के पास इतना ज्ञान नहीं होता जितना कि संशोधन के लिए आवश्यक है। न्यू इंग्लैण्ड के कुछ भागों में एक विशेष प्रकार की फारसी बिल्लियाँ हैं जिन्हें 'Coon' कून कैट कहा जाता है। और इस नाम ने इस धारणा को जन्म दिया है कि ये बिल्लियाँ बिल्ली तथा 'रकून' की संकर संतान है। प्रायः जीवविज्ञान से अनभिज्ञ लोगों का तो यह दृढ़ विश्वास है क्योंकि भाषाई अभिरचना का प्रभाव (पशु नाम–I पशु नाम II को परिवर्तित करता है) रकून पशु के शारीरिक गुणों को बिल्ली के शरीर में स्थित 'देखने' (या मनोवैज्ञानिक जिसे (प्रोजेक्ट) आरोपण कहते हैं) का कारण बनता है, वे उसकी घनी पूंछ लम्बे बाल आदि की ओर संकेत करते हैं। मुझे एक सच्ची घटना का पता है–एक महिला जिसके पास एक सुन्दर "कून कैट" थी वह प्राय. अपने मित्र का कड़ा विरोध करती हुई अपने मित्र से कहा करती थी, क्यों ? जरा देखो न इसकी ओर ! इसकी पूंछ-इसकी विचित्र आँखें—क्या आप देख नहीं सकते ? "मूर्ख न बनिये", उसके अधिक शिष्ट मित्र ने कहा। "अपने प्राकृतिक इतिहास के विषय में सोचिये", "कून बिल्लियों के साथ प्रजनन नहीं कर सकते। वे दूसरे परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु उस महिला को क्योंकि पूर्ण विश्वास था, अत. उसने एक प्रसिद्ध जीव-विज्ञानी को बुलाकर अपने विश्वास की पुष्टि करानी चाही। कहते हैं कि उसने सीधी व्यवहार कुशलता से उत्तर दिया कि "यदि आप ऐसा सोचना चाहती हैं तो सोच सकती हैं।" उस महिला ने बड़े रोष के साथ बाद में अपने मित्र को बताया, "ओह ! वह तुमसे भी अधिक क्रूर था," और पूरी तरह विश्वस्त रही कि उसकी पालतू बिल्ली एक आशिक मिज़ाज रकून तथा एक अवारा बिल्ली के मेल का परिणाम थी। जरा बड़े

पैमाने पर परन्तु ठीक इन्ही तरीको से निहित स्वार्थो से उत्पन्न माया के जाल बुने जाते है। मुझे किसी ने बताया कि "कून बिल्लियो का नाम किसी कैप्टेन कून के नाम पर पड़ा है जो पहली बार अपने जहाज द्वारा इन बिल्लियो को फारिस से (Maine state) माइने प्रदेश मे लाया था।

अधिक सूक्ष्म विषयो मे हम सब अनजान मे किसी विशिष्ट भाषा के भाषाई सम्बन्धो का समस्त विश्व पर अध्यारोपण कर देते है और वे उन्हे वहाँ 'देखते' भी है जैसे कि उस भद्र महिला ने भाषाई सम्बन्ध ('Coon'=Raccoon) को अपने पशु मे प्रकट होते हुए देखा। हम कहते है कि उस 'लहर' को देखिए—ठीक उसी ढंग से जैसे हम "उस घर को देखिए' कहते है। परन्तु भाषायी अध्यारोपण के बिना आज तक किसी ने एक लहर को नही देखा है। हम केवल तल को सदैव परिवर्तनशील तरंगित गति में देखते है। कुछ भाषाएँ 'एक लहर नही कह सकती वे वास्तविकता के अधिक निकट है। होपी लोग Walalata (बहु व० तरगण होता है) कहते है, और वे हमारा ध्यान उस तरंगण मे एक स्थान पर आकृष्ट करते है, क्योकि एक स्थान पर ही हम देख सकते है। परन्तु, क्योकि वास्तव मे एक लहर अकेली विद्यमान नही रह सकती—'Wala रूप जो हमारे एक वचन का सम्पाती है, वह अंग्रेजी के 'a wave' का समानार्थक नही, परन्तु उसका अर्थ "एक छलक" होता है, ऐसी छलक जो किसी द्रव पदार्थ से भरे घडे मे झटका लगने पर उठती है।

अंग्रेजी की अभिरचना 'I hold it को भी ठीक ऐसा ही मानती है जैसा कि I strike it को (मैं इस पर वार करता हूँ), या 'I tear it (मैं इसे फाड़ता हूँ) को, तथा असख्य अन्य विषयो को जो "पदार्थ" परिवर्तन लाने वाली क्रियाओ को द्योतित करते हैं। तथापि 'hold वास्तव मे कोई क्रिया नही है, अपितु सापेक्ष्य अवस्थाओ की एक स्थिति है। परन्तु हम इसे मानते है, और इस क्रिया के रूप में देखते भी है, क्योकि भाषा इस समस्या को भी उसी प्रकार व्यवस्थित करती है जैसे कि एक अधिक साधारण विषयों की गतियों और परिवर्तनों से सम्बन्धित एक अधिक साधारण विषयो की श्रेणी को। हम hold 'पकड़ना' पर क्रिया का आरोप इसलिए करते है क्योकि "सज्ञा+क्रिया=कर्त्ता+उसकी क्रिया (उसका कर्म) यह सूत्र हमारे वाक्यो मे प्राथमिक है। अत हम बहुत से विषयो मे प्रकृति के अन्दर कृत्रिम क्रियाशील इकाइयो को देखने पर बाध्य हो जाते है क्योकि हमारे वाक्य-अभिरचन क्रिया रूपो से, यदि वे आज्ञार्थ नही है तो, एक पूर्ववर्ती सज्ञा शब्द की अपेक्षा करते है। हमारे लिये यह कहना अनिवार्य हो जाता है It flashed "यह चमका" या a light flashed "एक प्रकाश चमका" जिसमे हमे 'it यह या (a light) एक प्रकाश को flash या चमकना "क्रिया" के कर्त्ता के रूप मे स्थापित करना पडता है परन्तु flashing "चमकना" और light प्रकाश एक ही चीज है। यहाँ कोई चीज ऐसी नही जो कुछ करती हो, न ही कुछ "किया जाता है"। होपी भाषा केवल rehpi कहती है। होपी मे बिना कर्त्ता के क्रिया रूप हो सकते है और यह विशेषता उस भाषा को तर्कसंगत व्यवस्था की शक्ति प्रदान करती है, जिसके द्वारा वह ब्रह्माण्ड के कुछ पक्षों

को समझ सकती है। वैज्ञानिक भाषा जो पाश्चात्य भारोपीय भाषाओ पर आधारित है न कि होपी पर, प्राय. उन स्थानो पर भी क्रियाओं और शक्तियों को देखती है जहाँ पर केवल "अवस्थाएँ" है। क्या आप इसे सम्भव नही मानते है कि वैज्ञानिक अथवा बिल्ली रखने वाली महिलाएँ—सभी अनजाने मे एक विशेष प्रवाह की भाषा की भाषाई अभिरचनाओ का आरोपण ब्राह्माण्ड पर करते है और वे उन्हे स्वय प्रकृति के आनन पर प्रकटित होते हुए भी देखते हैं। भाषा मे परिवर्तन हमारी ब्रह्माण्ड सवधी धारणा को वदल सकता है।

यह सब उस निम्न व्यक्तिगत मन का वैशिष्ट्य है जो उसके मार्गो के लिए भी अबोधगम्य, वृहत्तर जगत् की पकड़ मे होने के कारण अपनी भाषा की विचित्र प्रतिभा को माया का जाल बुनने मे, वास्तविकता का अन्तिम विश्लेपण करने तथा उसी को अन्तिम मान लेने मे प्रयुक्त करता है। इस विपय मे पाश्चात्य सभ्यता सबसे आगे जा चुकी है, उस अन्तिम विश्लेषण को सुनिश्चित पूर्णता मानने मे सबसे आगे जा चुकी है तथा इसे अन्तिम मानने के निश्चय मे भी सबसे आगे है। पाश्चात्य भारोपीय भाषाओ मे इस माया (अथवा भ्रान्ति) के साथ गठजोड सीलबन्द हो चुका है और इस माया से बाहर आने का मार्ग भाषा के उस व्यापक ज्ञान मे निहित है जो उस ज्ञान से अधिक है जितना कि पाश्चात्य भारोपीय भाषाएँ प्रदान कर सकती हैं। पाश्चात्य चेतना का यह मन्त्र योग है, यह एक नया महान् कदम हैं जिसे उठाने को वह अब तैयार भी है। सम्भवत पाश्चात्य मानव के लिए सबसे उपयुक्त मार्ग "चेतना का परिष्कार" प्रारम्भ करना है जो उसे निस्सन्देह एक महान आलोक मे ले जा सकता है।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार के भाषायी ज्ञान द्वारा मानव-भ्रातृत्व के महान पक्ष की प्राप्ति होती है। बहुत ही भिन्न प्रकार की भाषाओ के वैज्ञानिक ज्ञान के लिए—उन्हे बोलना जरूरी नही है अपितु उनकी सरचनाओ का विश्लेपण करना—भ्रातृत्व के पाठ की शिक्षा है, जो सार्वभौमिक मानवीय सिद्धान्त मे भ्रातृत्व है—मनस के पुत्रों का भ्रातृत्व। यह हमे स्थानीय सस्कृतियो, राष्ट्रीयताओ, शारीरिक विचित्रताओं जिन्हे जाति ('Race') कहा जाता है, उनसे ऊपर उठाता है, और हमें यह ज्ञान प्रदान करता है कि उनकी भाषायी व्यवस्थाओं मे, चाहे व्यवस्थाए कितनी भी भिन्न क्यों न हों, फिर भी इन व्यवस्थाओ के क्रम, समन्वय और सौन्दर्य मे, तथा उनकी अपनी अपनी सूक्ष्मताओं एव वास्तविकता के विचक्षण विश्लेषण मे सभी मनुष्य समान है। यह तथ्य भौतिक सस्कृति, वर्वरता, सभ्यता, नैतिक विकास आदि आदि से सम्बन्धित दिशा की अवस्था से निरपेक्ष्य एव स्वतन्त्र है, जो कि आज के सभ्य यूरोपियन के लिए बहुत ही आश्चर्यजनक है, सदमा पहुँचाने वाला है, वास्तव मे एक कड़वी गोली है। लेकिन यह सत्य है कि असभ्य से असभ्य जगली भी अनजाने मे प्रयत्न-रहित सुगमता के साथ एक ऐसी भाषायी व्यवस्था का प्रयोग कर सकता है जो इतनी पेचीदा, विविध रूप से व्यवस्थित, तथा बौद्धिकता मे कठिन है कि उसकी व्यवस्था का विवरण देने मे हमारे सबसे बडे विद्वान को भी जीवन भर अध्ययन करने की आवश्यकता पड सकती है।

मानसिक स्तर तथा उच्चतर अहम् सभी को समान रूप से प्राप्त हुए है, और पुरानी से पुरानी सभ्यता–जिसके खण्डहर आज मिट्टी मे मिल चुके है—उससे भी बहुत पहले मानवी भापा का विकास पूर्ण होकर अपनी गौरवमयी पूर्णता मे पृथ्वी के ऊपर नीचे फैल चुका था।

भाषाई ज्ञान के लिए विविध प्रकार की बहुत सी सुन्दर व्यवस्थाओ के तर्क-सगत विश्लेषण को समझने की आवश्यकता पड़ती है। इसके माध्यम से, अन्य सामाजिक वर्गो के विभिन्न दृष्टिकोणो से देखे जाने वाला ससार, जिसे हमने पराया समझ रखा था, अब नई परिस्थिति मे हमे बोधगम्य एव परिचित लगता है। वह परायापन, ससार को देखने के लिए एक नए तथा प्राय. स्पष्टीकरण करने वाले मार्ग मे परिवर्तित हो जाता है। जापानियों पर विचार कीजिए। जापानियो के विषय मे हमारी धारणा उनकी सरकारी नीतियो के कारण प्रकट रूप मे भी क्यो न हो, भ्रातृत्व को प्रोत्साहन देने वाली नही है। परन्तु जापानियो के विषय मे यदि उनकी भाषा के सौन्दर्यपरक तथा वैज्ञानिक मूल्याँकन के माध्यम से सोचा जाए तो तस्वीर बिल्कुल बदल जाती है। अर्थात् हम आत्मा के विश्वव्यापी बन्धुत्व का अनुभव करने लगेगे। इस भापा की एक बहुत प्यारी अभिरचना यह है, इसके वाक्यो मे दो भिन्न स्तरीय 'कर्त्ता' हो सकते है। हम अपनी क्रियाओं के 'कर्म' subject के दो वर्गों से तो परिचित है, एक निकटवर्ती अथवा तात्कालिक "कर्म" तथा दूसरा दूरवर्ती विषय या ध्येय या जिन्हे सामान्य रूप से "direct" 'उक्त' तथा Indirect "अनुक्त" कर्म कहा जाता है। परन्तु सम्भवत हमने कभी भी इस विचार के 'कर्त्ता' पर लागू होने की सम्भावना के बारे मे नही सोचा होगा। इस युक्ति का प्रयोग जापानी मे मिलता है। दो कर्त्ता जिन्हे-कर्त्ता$_1$ तथा कर्त्ता$_2$ कहा जा सकता है– 'wa' तथा 'ga' 'निपातों द्वारा निर्दिष्ट किए जाते है, और उन्हे एक ऐसे आरेख द्वारा दिखाया जा सकता है, जिससे प्रत्येक कर्त्ता शब्द से निकल कर एक एक रेखा अर्थात् दो रेखाए एक ही विधेय पर आकर मिले, जबकि हमारे अंग्रेजी वाक्यों मे एक ही कर्त्ता हो सकता है जिसकी एक ही रेखा उद्देश्य से आकर मिलती है। एक दृष्टान्त, "Japan is mountainous" "जापान पहाड़ी प्रदेश है" इसे जापानी मे कहने के ढग से मिल सकता है।

"Japan$_1$ mountain$_2$ (are) many" [5]जापान पहाड (है) बहुत : या Japan, in regard to its mountains are many "जापान पर्वतों के विषय मे 'बहुत' है। "John is long-legged" "जान लम्बी टाँग वाला है" जापानी मे 'जॉन$_1$ टाँगे$_2$ (है) लम्बी "John legs (are) long" यह अभिरचना बहुत अधिक लाघव प्रदान करती है तथा साथ ही सुस्पष्टता भी। हमारे अस्पष्टार्थक शब्द mountainous के स्थान पर, जापानी भाषा 'mountainous' जिसका अर्थ है पर्वत जो बहुत ऊचे नही है वहुसख्यक है, और mountainous जिसका अर्थ है 'बहु-सख्यक' नही

5. "है" कोष्ठक में हैं क्योकि "बहुत हो" को एक क्रिया जैसे शब्द द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। जापानी सामान्यतः बहुवचन का प्रयोग नहीं करते।

(परन्तु) सारे क्षेत्र की अपेक्षा ऊँचे है, का प्रभेद सूत्रीकरण की समान सुसहृति के साथ कर सकती है। हमे पता चलता है कि किस प्रकार इस अभिरचना का तर्कसगत प्रयोग जापानियों को विचारो का सक्षिप्त वैज्ञानिक विवेचन करने की शक्ति प्रदान कर सकता है, यदि इस शक्ति का सही ढग से विकास कर लिया जाए तो।

जिस क्षण भी हम 'भाषा' मे निष्पक्ष वैज्ञानिक खोज आरम्भ करते है तो हमे बाह्य रूप से अनाकर्षक जातियो तथा सभ्यताओं मे अभिव्यक्ति की उन सुन्दर प्रभावशाली तथा वैज्ञानिक विधियो का पता चलता है जिनसे पाश्चात्य भारोपीय भाषाएँ तथा मनोवृत्तियाँ पूर्णतया अनभिज्ञ है। अल्गोन्कियन भाषाए बहुत ही साधारण, शिकार करने वाली तथा मछली पकडने वाले, इन्डियनो द्वारा बोली जाती हैं, परन्तु ये भाषाए विश्लेषण तथा सश्लेषण मे अद्भूत हैं। उनकी एक विशिष्ट व्याकरणिक चातुरी है, जिससे, "Obviative" "ओव्वियेटिव" 'द्वितीय अन्य पुरुष' कहते है, जिसका अर्थ यह हुआ कि उनके सर्वनामो के, "तीन की अपेक्षा, चार पुरूष है या हमारे दृष्टिकोण से दो अन्य पुरूष।" इससे जटिल परिस्थितियो का सुस्पष्ट विवरण किया जा सकता है जिसके लिए हमे बोझिल वाक्यीय रचनाओं की शरण लेनी पडती है। आइए हम उनके तृतीय एव चतुर्थ पुरूष को अपने लिखित शब्दो पर 3, और 4 सख्या वाचकों द्वारा चिन्हित करें। एक अल्गोंकियन व्यक्ति विलियम टेल की कथा इस प्रकार सुना सकता है

"William Tell Called his_3 son and told him_4 to bring him_3 his_3 bow and arrow, $which_4$ he_4 then brought to him_3. He_3 had him_4 stand still and placed an apple on his_4 head, then took his_3 bow and arrow and told him_4 not to fear. Then he_3 shot it_4 off his_4 head without hurting him_4".

"विलियम टेल ने अपने"[3] लड़के को बुलाया, और उससे[4] कहा, कि उसके लिए[3] उसका[3] तीर कमान ले आए, जिसे[4] वह[4] तब उसके[4] पास ले आया। उसने[3] उसे[4] सीधा खड़ा किया और एक सेव उसके[4] सिर पर रखा तब अपना[3] तीर कमान उठाया और उसे[3] कहा डरो मत। तब उसने[3] उसे[4] तीर मारकर उसके सिर से उड़ा दिया उसे[4]—जख्मी किए बिना ही।" इस प्रकार की युक्ति हमारी जटिल कानूनी परिस्थितियो की स्पष्ट अभिव्यक्ति मे बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है और हमे The party of the first part."पहले भाग के वादी" तथा The aforesaid John Doe shall, on his part etc. "पूर्वकथित जॉन डो अपनी ओर से" आदि आदि मे छुटकारा मिल सकता है।

Chichewa" (चिचेवा), जुलू से सम्बन्धित एक भाषा, जो पूर्वी अफ्रीका के एक अशिक्षित कबीले द्वारा बोली जाती है, दो भूतकालो से युक्त है—एक भूत घटित घटनाओ के वर्तमान परिणाम वाला है, तथा दूसरा ऐसे 'भूत' के लिए प्रयुक्त होता है जिसका वर्तमान पर कोई प्रभाव नही है। एक ऐसा भूत, जो बाह्य परिस्थितियो मे अंकित है उसका प्रभेद ऐसे भूत से दिखाया गया है जिसका अकन केवल मन या स्मृति

पर ही है,—अत. काल का एक नया विचार हमारे समक्ष प्रस्फुटित होता है। नं० 1 को पहले काल का तथा न० 2 को उत्तरवर्ती का प्रतिनिधित्व करने दीजिए। फिर चिचेवा के अर्थभेदो पर चिन्तन कीजिए । I came here मैं यहाँ[1] आया, मैं वहाँ[2] गया, वह बीमार था[2], वह मर गया[2], ईसा क्रास पर मर गया[2], ईश्वर ने ससार को बनाया[1], मैने खाया[1] का अर्थ है मैं[2] भूखा नही हू, मैने खाया था[2] का अर्थ है मै भूखा हू। यदि आप को भोजन के लिए कहा जाए और आप कहे "नही, मैं खा चुका हू" तो यह ठीक होगा परन्तु यदि आप ने दूसरे भूतकाल का प्रयोग किया वह अपमानजनक हो जाएगा। चिचेवा का थियोसोफी मतानुयायी वक्ता—ससार को वर्तमान स्थिति मे रहने के योग्य बनाने वाले चिदणुओ के भूतकालिक Involution, प्रत्यावर्तन के विषय मे बोलते हुए काल[1] का प्रयोग कर सकता है, जबकि वह काल [2] का प्रयोग उन नक्षत्रीय व्यवस्थाओ के लिए करेगा जो अब विघटित हो चुकी है और उनका विकास समाप्त हो चुका है। यदि वह पुनर्जन्म के विषय मे बात कर रहा है तो वह [2] का प्रयोग पिछले जन्मो की अपनी विषय परिधि में ही करेगा, परन्तु वह[1] का प्रयोग उनके कर्मो का द्योतन करने के लिए करेगा । यह बहुत सम्भव है कि यदि ये लोग दार्शनिक, या गणितज्ञ बन जाए तो वे 'काल' के विषय पर हम सब से अग्रगण्य दार्शनिक बन सकते है ।

या Coeur d' Alene नाम के छोटे से कबीले द्वारा उसी नाम की इदाहो (Idaho) मे बोली जाने वाली भाषा का उदाहरण लीजिए । हमारे Cause प्रेरण की साधारण धारणा जिसका आधार "साधारण से" (उसे करने की प्रेरणा देता है)या उससे यह करवाता है, पर आधारित है, इसके स्थान पर Coeur d'Alene व्याकरण उसके बोलने वालो से यह अपेक्षा करता है (जिसका वे आसानी मे प्रभेद कर लेते है) कि वे तीन प्रेरणार्थक प्रक्रियाओ मे प्रभेद करे जिनका द्योतन तीन प्रेरणार्थक क्रिया रूपो द्वारा होता है (1) नैसर्गिक कारण का सवर्धन या सपुष्ट परिपक्वन (2) बाहर से जोडना या बढाना (3) सहायक सयोजन अर्थात् प्रक्रिया मे प्रभावित चीज को जोडना। अत. यदि यह कहना हो कि इसे मीठा कर दिया गया है तो वे रूप का प्रयोग उस आलूचे के लिए करेंगे जो पकाकर मीठा किया गया है, रूप [2] का प्रयोग वे कॉफी के कप के लिए करेंगे जिसे शक्कर डाल कर मीठा किया गया है, और रूप [3] का तवे पर बने हुए केक के लिए करेंगे जिन्हे शक्कर की चाशनी मे डालकर मीठा किया गया है। यदि उन्हे अधिक परिष्कृत सभ्यता प्राप्त हो जाए तो उनके विचारक उन प्रभेदो को जो अब अचेतन रूप से है, त्रिकात्मक कारणवाद के सिद्धान्त मे विकसित कर सकते है और उनका प्रयोग वैज्ञानिक निरीक्षणो के लिए किए जाने पर वे उनके द्वारा विज्ञान के लिए बहुमूल्य बौद्धिक उपकरण प्रस्तुत कर सकते है। हम कृत्रिम रूप मे इस प्रकार के सिद्धान्त का अनुकरण कर सकते है परन्तु शायद हम इसका प्रयोग नही कर सकते क्योकि हम प्रतिदिन की जीवनचर्या मे इस प्रकार के प्रभेद सरलतापूर्वक बिना प्रयत्न करने के अभ्यस्त नही है । इससे पहले कि वैज्ञानिक उन धारणाओ का प्रयोग अपनी प्रयोगशालाओ मे करे उन (धारणाओं

का) आधार नित्य की बोलचाल मे निहित होता है। सापेक्षतावाद का आधार भी पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं (तथा अन्य भाषाओं) में है—यह एक तथ्य है कि भाषाएं बहुत से (दिक्) स्पेस शब्दो का तथा अभिरचनाओ का प्रयोग काल का विवेचन करने के लिए करते है।

भाषा का और अधिक महत्त्व उन मनोवैज्ञानिक घटको मे निहित है जो आधुनिक भाषाई उपगम से भिन्न स्तर पर हैं, परन्तु संगीत, काव्य, साहित्यिक-रीति तथा प्राच्य "मन्त्र" के लिए महत्त्वपूर्ण है। मैं अब तक जो कुछ कहता आया हू उस का सम्बन्ध अधिक दार्शनिक अर्थो मे मनस् से है "उच्चतर चेतना" या आत्मा से (उस अर्थ मे) जिसमे इसे "Jung" ने प्रयुक्त किया है। और, अब मैं जो कुछ कहने जा रहा हू वह Psyche "मन" से सम्बन्वित है, (फ्राइड के द्वारा प्रयुक्त किए गए अर्थ में) निम्नतर अचेतन, मनस् जो विशेष रूप से "सत्य का घातक है", "काम " का स्तर, भावुकता या भावना का स्तर (Gefuhl)। नाम-रूप एवं अरूप के स्तरो से युक्त एक आनुक्रमिक सम्बन्ध मे यह अचेतन मन का स्तर अरूप स्तर से दूसरी ओर "नाम रूप" के स्तर पर है तथा "नाम" या शब्दीकरण, एक दृष्टि से इन दोनो के अन्तिम छोरो की मध्यस्थता करता है। अत. Psyche 'मन' भाषा में स्वानिमिक स्तर का मनोवैज्ञानिक सह-सम्बन्धी है, जो उसके साथ सरचनात्मक ढग से ऐसे सम्बन्वित नही है जैसे नाम या लेक्सेशन है, भाषा इसका प्रयोग ऐसे खण्ड बनाने के लिए भी नही करती जैसे कि शब्द रचना स्वनिमो का प्रयोग करती है (स्वर, व्यजन, बलाघात आदि) परन्तु ये इस प्रकार सम्बन्वित हैं जैसे स्वनिमो का "भावात्मक अंश"। अनुभूतियो का सम्बन्ध जोडने का एक व्यापक भावनात्मक प्रकार है, जो प्रयोगशाला के अनुसन्धानो मे प्रकट होता है तथा भाषा मे स्वतन्त्र प्रतीत होता है—और वह मूलत सभी व्यक्तियो के लिए समान है। इस विश्व मे किसी अनुक्रम अथवा आनुपूर्वी क्रम व्यवस्था के बिना यह कहना पड सकता था कि ये मनोवैज्ञानिक प्रयोग तथा भाषाई प्रयोग एक दूसरे का प्रतिवाद करते है। मनोवैज्ञानिक प्रयोगों मे मानव प्रयोग-व्यक्ति एक लम्बी श्रेणी मे प्रकाशयुक्त, ठण्डा, तीक्ष्ण, कठोर, उच्च, हल्का (वज़न मे) चपल, उच्चस्वर, सकरा आदि की अनुभूतियो का परस्पर सम्बन्ध जोड़ता हुआ प्रतीत होता है और इसके विपरीत एक अन्य लम्बी श्रेणी मे (dark) अन्धेरा" (warm), गरम, (yielding) समर्पण-शील, (soft) कोमल, (blunt) कुण्ठित, (low) निम्न, (heavy) भारी, (slow) मन्द, निम्न (स्वर) (wide) चौडा, आदि को एक साथ रखता है। ऐसा होता ही है चाहे इस प्रकार से सम्बन्धित अनुभूतियो के शब्द समान है अथवा नही, परन्तु साधारण व्यक्ति शब्दो का सम्बन्ध केवल उसी समय देख सकता है जब इस प्रकार की श्रेणी मे रखे गए शब्दो के स्वर अथवा व्यजनो मे समानता हो तथा जब सम्बन्ध व्यतिरेक अथवा विरोध का हो तो वह इन पर ध्यान दिए बिना ही इन्हे छोड देता है। 'समानता' का सम्बन्ध देखने की "क्षमता" साहित्यिक शैली के प्रति भावप्रवणता का एक तत्त्व है, या जिसे प्रायः गल्ती से "शब्दो" का "संगीत" कहा जाता है। विरोध का सम्बन्ध देखना इससे

भी अधिक दुस्साध्य है, अपने आप को माया मे बहुत अधिक मात्रा मे स्वतन्त्र करना है, और चाहे यह बिल्कुल "अकाव्योचित" अथवा रूखा है, परन्तु यह वास्तव मे उच्चतर मनस् की ओर प्रगति है, और भौतिक ध्वनि से बहुत अधिक ऊची समता की ओर (प्रगति है)।

हमारे निबन्ध के लिए जो महत्त्व की बात है, वह यह है कि भाषा ने 'लेक्सेगन' 'नाम' के द्वारा भाषी को कुछ धुधले मानसिक सवेदन के प्रति अत्यधिक सचेत कर दिया है। उसने वास्तव मे अपने से भी नीचे स्तर पर चेतना (awareness) को उत्पन्न किया . एक ऐसी शक्ति (को) जो 'जादू' के गुणो से युक्त है । भाषा की शक्ति के लिए निम्न चित्तीय तथ्यो से स्वतन्त्र रहने मे, उन्हे अभिभूत करने मे, कभी उन्हे ऊपर उठाने मे, कभी उन्हे क्षेत्र से बाहर फेक देने मे, शब्दो के अर्थ-भेदों को अपने ढग से मोडने मे एक यौगिक रहस्य है चाहे ध्वनियो का चित्तीय परिवेश ठीक बैठता हो अथवा नही। यदि ध्वनियाँ उपयुक्त है तो ध्वनियो का चित्तीय गुण बढ जाता है और साधारण व्यक्ति इसे देख लेता है । यदि ध्वनिया ठीक नही बैठती तो चित्तीय गुण भाषाई अर्थ के साथ अनुकूलता प्राप्त करने के लिए बदल जाता है—चाहे वह ध्वनियो से कितना ही "असगत या बेतुका" क्यो न हो, और इस तथ्य पर साधारण व्यक्ति ध्यान नही देता।

अत अग्रेजी का a स्वर (जैसे father शब्द मे), o, u प्रयोगशालीय परीक्षणो मे, dark—warm—soft श्रेणियो के साथ सम्बन्धित है, e, (अग्रेजी a जैसे dat मे), ı (अग्रेजी के be मे e) का साहचर्य bright-cold-sharp वर्ग के सा दिखाया जाता है। व्यजनो का साहचर्य भी इसी प्रकार है जैसाकि इस विषय में साधारण भावना से भी आशा की जा सकती है । होता यह है कि जब किसी शब्द के अर्थ की उसकी ध्वनि के साथ भी समानता होती है तो हमारा ध्यान उस ओर चला जाता है जैसे कि अग्रेजी मे 'सोफ्ट' soft और जर्मन sanft साँफ्त परन्तु जब इसके विपरीत स्थिति होती है तो किसी का भी ध्यान उस ओर नही जाता । अत जर्मन zart "चार्ट" "कोमल" मे इतनी तीक्ष्ण ध्वनि है कि a स्वर के रहते हुए भी जर्मन भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति को इसका अर्थ bright-sharp की कोटि का लगेगा परन्तु जर्मनभाषी को यह कोमल प्रतीत होता है—और सम्भवतः warm, dark भी । इस से अच्छा Deep का मामला है । इसका ध्वनिक साहचार्य PEEP या अन्य निरर्थक शब्दो जैसे VEEP, TREEP, QUEEP आदि के साथ होना चाहिए अर्थात् bright "चमकदार",sharp तीक्ष्ण, quick शीघ्र, झटपट, के साथ । परन्तु अग्रेजी भाषा मे इसका भाषाई अर्थ इस प्रकार के साहचर्य के लिए गलत प्रकार की अनुभूति का सकेत देता है । यह तथ्य इसकी वस्तुनिष्ठ ध्वनि की पूर्णतया उपेक्षा करता है और इसे 'आत्म-निष्ठ' Subjective रूप मे dark, warm, heavy soft आदि की तरह बना देता, जैसे कि इसकी ध्वनिया भी वास्तव मे उसी प्रकार की हो। यदि यह "अकाव्यात्मक" या नीरस है, तो भाषाई विश्लेषण को, एक शब्द के अन्तर्गत दो संगीतो, का एक अधिक मानसिक और दूसरा अधिक

चित्तीय के विरोध का पता लगाने के लिए अपने आप को माया-मुक्त करना पड़ेगा। मनस् मे यह सामर्थ्य है कि वही चित्तीय स्तर के गुणो की उपेक्षा कर सके, ठीक इसी तरह जैसे यह समीकरणात्मक x की उपेक्षा कर सकता है चाहे वह x मोटर का निर्देश करे अथवा भेड़ का। यह अपनी अभिरचनाओं के अशो का अनुभूति पर इस तरह आरोपण कर सकता है कि वे भ्रान्ति को विकृत एव परिवर्धित कर दे या इस तरह से कि वे वैज्ञानिक सिद्धान्तो एवं अनुसन्धान के उपकरणो को प्रकाशित कर दें और उन्हें दृढ बना दें।

पतंजलि ने योग की परिभाषा इस प्रकार दी है—"योग वहुमुखी प्रवृत्ति वाले चित्त की सभी वृत्तियो का पूर्ण निरोध है"[6]। यह हम देख चुके है कि ये वृत्तिया अधिकतर व्यक्तिगत-सामाजिक प्रतिक्रियाओ से युक्त है—उन प्रतिक्रियाओ से जो व्यक्तिगत चेतना के ऊपर या पीछे से कार्य सचालन करने वाले अरूप स्तर द्वारा बिछाए गए अभिरचना के मार्गजालो पर सचरण करती है। अरूप स्तर चेतना की 'पकड़' से परे इसलिए नही है कि वह तात्विक रूप मे भिन्न है (जैसे कि मानो यह गतिहीन तन्त्र हो) परन्तु इसलिए कि व्यक्तित्व, विकास एव अभ्यास के कारण उपरोक्त वहुमुखी वृत्तियो पर (ध्यान) केन्द्रित रखती है। इस वृत्ति का शमन तथा इस केन्द्रित ध्यान की निवृत्ति; यद्यपि कठिन है और दीर्घ प्रशिक्षण एवं अभ्यास की अपेक्षा रखती है, फिर भी भिन्न एवं पर्याप्त पृथक्, पाश्चात्य एव प्राच्य, दोनो ही स्त्रोतो से उपलब्ध विश्वसनीय विवरणो के अनुसार यह चेतना का अनन्त विस्तारण, उज्ज्वलीकरण तथा निर्मलीकरण है, जिसमे बुद्धि अकल्पित तीव्रता एव निश्चितता से कार्य करती है। भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन और भाषाई सिद्धान्त बुद्धि को, कम से कम आशिक-रूप मे ही सही, इस स्तर की ओर उठाने वाले तो है।

बृहद् भाषाई अभिरचना के बोध द्वारा वहुमुखी चित्तवृत्ति पर केन्द्रित ध्यान आशिक रूप से हटाया जा सकता है। ऐसे बोध का एक रोग निवारक उपयोग भी है। बहुत से स्नायविक रोग शब्द व्यवस्था की बार बार विवशकारी आवृत्ति के कारण होते हैं, जिनसे रोगियो को भाषा की प्रक्रिया एव अभिरचना दिखाकर मुक्त कराया जा सकता है।

यह सब हमे पुन. उस विचार की ओर ले जाता है जिसका विवेचन हमने पहले भाग मे किया था कि भाषा मे उपलब्ध अभिरचनात्मक सम्बन्धो के प्रकार कारण-ससार की अस्थिर विकृत, सत्वहीन, तथा सारहीन छाया के अतिरिक्त और कुछ भी नही है। जैसे भाषा पृथक् (शब्दीकरण-खण्डो) Laxation-Segmentation (नाम-रूप) तथा व्यवस्थित अभिरचनाओ से बनी है, जिसके अन्तर्गत अभिरचनाओ का पृष्ठ भूमिगत वैशिष्ट्य अधिक है, जो कम व्यक्त है परन्तु अधिक

6. Bragdon's paraphrase of the Yoga Sutras, An Introduction to Yoga, Claude Bragdon, New York 1933.

अनुल्लंघनीय एवं सार्वभौमिक है। इसी तरह भौतिक ससार भी अर्धस्पष्ट (अणुओ क्रिस्टलो, जीवाणुओ, ग्रहो तथा नक्षत्रो आदि) इकाइयो का समुच्चय हो सकता है जो समुच्चय के रूप मे पूरी तरह बुद्धिगम्य नही है परन्तु कारणो के उस उद्‌गामी क्षेत्र के रूप मे समझा जा सकता है, जो स्वय व्यवस्थाओ एवं अभिरचनाओ का वैविध्य है। विज्ञान आज वाड के उन खम्बो पर टिका है, जिनके पार वह इस क्षेत्र के इन पात्रो से मिल सकता है। जैसे जैसे भौतिकी अन्तराण्विक तथ्यो मे खोज करती जाती है, स्पष्ट भौतिक-रूप एव शक्तिया शुद्ध अभिरचना सम्बन्धो मे अधिकाधिक लीन होती चली, जाती हैं। उदाहरणार्थ एक स्पष्ट इकाई (इलेक्ट्रॉन) 'विद्युदणु' का स्थान अनिश्चित हो जाता है तथा बाधित हो जाता है; यह इकाई एक सरचनात्मक स्थिति से दूसरी संरचनात्मक स्थिति पर प्रकट और लुप्त होती दिखाई देती है और इसकी स्थिति इन दो भिन्न स्थितियो के बीच कही भी नही कही जा सकती। इसकी "स्थिति", जिसके विषय मे पहले सोचा गया था और उसका विश्लेषण एक "निरन्तर परिवर्तनीय" के रूप मे किया गया था, अब अधिक सूक्ष्म निरीक्षण के पश्चात् केवल एक (alternation) एकान्तरिक प्रत्यावर्तन मात्र बन जाता है, स्थितिया इसका स्थिरीकरण करती है, और एक सरचना जो मापक दण्ड की पहुच से परे है, इसका नियन्त्रण करती है, जहाँ पर त्रिविमात्मक रूप कोई है ही नही, उसके स्थान पर है—अरूप।

विज्ञान अभी तक इस प्रकार की परिस्थिति के पारलौकिक तर्क को नही समझ सकता, क्योकि इसने अभी तक अपने आप को सामान्य तर्क की उन भ्रामक आवश्यकताओ से मुक्त नही किया है, जो केवल पाश्चात्य आर्य व्याकरण की व्याकरण अभिरचनाओ की आवश्यकताओं के निम्नतर स्तर हैं, उन पदार्थों की आवश्यकता जो वाक्य की कुछ स्थितियो मे, संज्ञाओ के लिए आवश्यक हैं, शक्तियो की आवश्यकताएं आकर्षण आदि, जो अन्य स्थितियो मे केवल क्रियाओ की आवश्यकताएँ हैं इत्यादि, इत्यादि। विज्ञान यदि आसन्न अन्धकार से सुरक्षित बच रहा तो अगले कार्यक्रम मे भाषाई सिद्धान्तो पर विचार करेगा और अपने आप को इन मायावी भाषाई आवश्यकताओ से मुक्त करेगा, जिन्हे बहुत समय तक स्वयं विवेक का सार समझा जाता रहा है।

(क) ग्रन्थ-सूची

(1) बेंजमिन ली व्होर्फ की प्रकाशित रचनाएँ

1925 "Purpose vs evolution" Lettei to the editors of the *New Republic,* issue of December 19, 1925.

1927 ["On the connection of ideas"] Printed for the first time in this volume, pp 35-39

1928 "Toltec history" Twenty-Third International Congress of Americanists, New New, 1928 · *Abstracts of Papers,* no 109

1928 "Aztec linguistics." Twenty-Third International Congress of Americanists, New York, 1928. *Abstracts of Papers,* no 116.

1928 "An Aztec account of the period of the Toltec decline" *Proceedings of the Twenty-Third International Congress of Americanists,* New York, 1928 pp 122-129.

1929 "The reign of Huemac," American Anthropologist, 31 667-684 (1929).

1931 "A central Mexican inscription combining Mexican and Maya day signs" *American Anthropologist,* 34 296-302 (1932).

1933 "The Maya manuscript in Dresden." *Art and Archaeology,* 34 270 (1933)

1933 *The phonetic value of certain characters in Maya writing* Cambridge, Mass Harvard University Press, 1933 (*Papers of the Peabody Museum,* vol. XIII, no 2) With an introduction by Alfred M. Tozzer *xii,* 48 pp.

1935 Review of A L Kroeber, *Uto-Aztecan languages of Mexico American Anthropologist,* 37 343-345 (1955).

1935 "The comparative linguistics of Uto-Aztecan" *American Anthropologist,* 37 600-608 (1935).

1935 "Maya writing and its decipherment." *Maya Research,* 2.367-382 (1935).

1936 Appendix to J Alden Mason, "The classification of the Sonoran languages," pp. 197-198 in Robert H Lowie (editor), *Essays in anthropology in honor of Alfred Louis Kroeber* Berkeley: University of California Press, 1936

1936 Notes on the "Glossary," pp 1198-1326 in Elsie Clews Parsons, *Hopi Journal of Alexander M. Stephens,* Part 2 New York: Columbia University Press, 1936 (*Columbia Contributions to Anthropology,* 23)

1936 "The punctual and segmentative aspects of verbs in Hopi" *Language,* 12 127-131 (1936)

1936 "Notes on the Tübatulabal language." *American Anthropologist,* 38.341-344 (1936).

1936 "Loan-words in ancient Mexican." *Philogical and Documentary Studies (Middle American Research Institute, Tulane University of Louisiana),* 1 1-17 (1943). Also Studies in Linguistics, 5 49-64 (1947).

1936 (?) "An American Indian model of the universe" *International Journal of American Linguistics,* 16 67-72 (1950).

[Reprinted in *Etc, a Review of General Semantics,* 8:27-33 (1950), also in *Collected papers on metalinguistics,* Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D C, 1952]

1936 (?) "A linguistic consideration of thinking in primitive communities." Printed for the first time in this volume, pp 65 86.

1937 "The origin of Aztec TL." *American Anthropologist,* 39.265-274 (1937)

1937 (with Geoge L Trager) "The relationship of Uto-Aztecan and Tanoan" *American Anthropologist,* 39:609-624 (1937).

1937 "Grammatical categories" *Language,* 21.1-11 (1945).

1937 [“Discussion of Hopi linguistics”] Printed for the first time in this volume, pp. 102-111.

1938 “Some verbal categories of Hopi” *Language*, 14:275-286 (1938)

1938 Review of K T Preuss and Ernst Mengin, *Die Mexikanische Bilderhandschrift Historia Tolteca-Chichimeca die Manuscripte 46-58bis der Nationalbibliothek in Paris*, Teil I, *Die Bilderschrift nebst Ubersetzung* (Berlin, 1937) *American Anthropologist*, 40 729-730 (1938)

1938 “Language plan and conception of arrangement” Printed for the first time in this volume, pp 125-133.

1939 “The relation of habitual thought and behaviour to language” Pp 75-93 in Leslie Spier (editor), *Language, culture and personality* (Menasha, Wis : Sapir Memorial Publication Fund, 1941) [Reprinted in *Collected papers on metalinguistics*, Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D C, 1952]

1939 “The Hopi Language, Toreva dialect” Pp 158-183 in Harry Hoijer (editor), *Linguistic structures of native America* (New York Viking Fund, 1946).

1939 “The Milpa Alta dialect of Aztec, with notes on the Classical and the Tepoztlan dialects” Pp 367-397 in Harry Hoijer (editor), *Linguistic structures of native America* (New York. Viking Fund, 1946)

1939 “Gestalt technique of stem composition in Shawnee” Appendix, pp 393-406, to C F Voegelin, *Shawnee stems and the Jacob P. Dunn Miami Dictionary* Indianapolis · Indiana Historical Society, 1940 (*Prehistory Research Series*, vol I, no 9, April 1940).

1940 “Blazing icicles” [Article on fire prevention] Hartford, Conn : Hartford Fire Insurance Company, n d [Reprinted from the *Hartford Agent*]

1940 Decipherment of the linguistic portion of the Maya hieroglyphs,” pp 479-502 in *The Smithsonian report for* 1941, Publication 3669 (Washington U S. Government Printing Office, 1942). [Also in

Spanish, "Interpretacion de la parte linguistica de los geroglificos Maya" *Tzunpame, Organo de Publicidad del Museo Nacional y Auexos (San Salvador)*, 5 50-73 (August 1945), and *Supplemento* (Figure 1-4)]

1940 "Phonemic analysis of the English of eastern Massachusetts" *Studies in Linguistics,* 2 21-40 (1943).

1940 "Linguistic factors in the terminology of Hopi architecture" *International Journal of American Linguistics,* 19.141-145 (1953).

1940 "Science and linguistics" *Technology Review (M I.T)*, 42 229-231, 247-248 (1940).

[Reprinted in S.I. Hayakawa, *Language in action* (New York: Harcourt-Brace, 1941), pp. 302-321; T. Newcomb and E. Hartley, *Readings in social psychology* (New York: Holt, 1947), pp. 210-218, and *Collected papers on metalinguistics* (Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D C, 1952)]

1940 "Linguistics as an exact science" *Technology Review (M I T.)*, 43 61-63, 80-83 (1940).

[Reprinted in *Collected papers on metalinguistics* (Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D.C., 1952).]

1941 "Languages and logic" *Technology Review (M I.T)*, 43.250-252, 266, 268, 272 (1941)

[Reprinted in *Collected papers on metalingustics* (Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D C., 1952)]

1941 'Language, mind, and reality." *The Theosophist (Madras, India)*, 63.1.281-91) (January, 1942); 63 2 25-37 (April 1942).

[Reprinted in *Etc, a Review of General Semantics,* 9 167-188 (1952).]

1940-41 Articles in the journal *Main Currents in Modern Thought* · 1 1 3-5 (1940) · Review of *Living light,* by E. N. Harvey (Princeton University Press, 1940).

1·1.9-10 (1940) : "we may end the war that is within all wars that are waged to end all war"

1.1 12-13 (1940) Digest of review in *American Anthropologist*, October-December 1940, of the *Work of the gods in Tikopia* (Polynesia), by Raymond Firth, as reviewed by E G Burrows

1·1 14 (1940) Digest of "Notes on the demonstration of 'wetter' water,' by C R Caryl in *Journal of Chemical Education*

1, 1 15 (1940) [Concerning descriptive linguistics at Yale]

1 3 4 (1941). (with F Kunz) [Commentary regarding logic and science]

1, 3 6 (1941) · "H G. Wells."

1 3 12-13 (1941): "Interpretations of isotopes"

1 3 15 (1941) · "The Hurrians of Old Chaldea"

1 4 10-11 (1941) · Review of *The ways of things*, by W P Montague (Prentice-Hall, 1940).

1 4 13-14 (1941) "A brotherhood of thought"

1, 5 12-14 (1941) · "Dr Reiser's humanism" (Review of *The promise of scientific humanism*, by Oliver L Reiser, New York, 1940).

1 6 16 (1941) [Note on shrinking glass]

1.7 14-15 (1941), (with F Kunz) "Toward a higher mental world"

Unknown ["On psychology"] Printed the first time in this volume, pages 40-42.

(ii) अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ (महत्त्वपूर्ण)

c 1928 "A contribution to the study of the Aztec language" 43 pp A detailed linguistic and literary treatment of the second poem found in D G Brinton's compilation (*Ancient Nahuatl poetry*), with Appendix A, Original text of the poem, and Appendix B, A list of the most common roots in the Aztec language. Manuscript 157, Franz Boas collection (See *Lan-*

guage *Monograph* no. 22, 1945). Another copy in family papers.

1928 "Investigations in Aztec linguistics and Toltec history. Part II. The phenomenon of oligosynthesis in Nahuatl or Aztec." 13 pp [This paper was given before the Twenty-third International Congress of Americanists, New York, September 1928] Among family papers

1928 "Notes on the oligosynthetic comparison of Nahuatl and Piman, with special reference to Tepecano" 23 pp Among family papers [This manuscript was submitted as a supporting document when the author applied for an SSRC Research Fellowship, December 1, 1928.]

1930 "Stem series in Maya and certain Maya hieroglyphs." 28 pp. Among family papers [This is a revision, dated October 30, 1930, of a paper read before the Linguistic Society of America, Cleveland meeting, December 1929. It was further revised and published as *The phonetic value of certain characters in Maya writing.* (1933).]

1930 "Notes on two recent findings from central Mexico" 7 pp MS in the library of Peabody Museum, Harvard University. [This is the text of a paper read before the American Anthropological Association, Cleveland meeting, December 1930 It is a summary of material later prepared (1) in the article "A central Mexican inscription combining Mexican and Maya day signs" (1931), and (2) in the unpublished manuscript listed below for the year 1931, "Pitch tone and the saltillo in modern and ancient Nahuatl."]

1931 "The problem of American history before Columbus" 55 pp Among family papers Annotated in pencil, "Read before Conn Historical Society, Hartford, Conn, Apr. 7, 1931"

1931 "Pitch tone and the saltillo in modern and ancient Nahuatl." 54 pp. Manuscript 275, Franz Boas collection (See *Language Monograph* no. 22, 1945).

1932-5 (?) "First report on Hopi" 4 pp MS 276, Franz Boas collection (See *Language Monograph* no 22, 1945).

1933 "Recent determinations of phonetic characters in Maya writing" 8 pp. Among family papers [Read before Linguistic Society of America, Washington meeting. December 1933 Amplifies and goes beyond analysis published (1933) in the Peabody Museum papers]

1935 "The Hopi language" 59 pp. Original among family papers, with note "corrected and corrections rechecked–BLW" Carbon copy is Manuscript 192, Franz Boas collection (See *Language Monograph* no 22, 1945)

1935 (?) "First steps in the decipherment of Maya writing." 112 pp Among family papers [Mentioned in "Maya writing and its decipherment" (1935) as being worked on–"it may be a year before publication ']

1936 "A comparative decipherment of forty-one ancient Maya written words" 10 pp MS among family papers [Text of paper read before American Anthropological Association, Washington meeting, December 1936]

1938 "The reading of Maya glyph C of the Supplementary Series and other glyphs" Abstract and pencil draft of paper. MS among family papers

1939 "Classification of the languages of North America north of Mexico." Typewritten MS, 3 pp, dated December 1939, among papers of G L Trager. [Apparently the basis of a talk, "Linguistic groupings north of Mexico," before American Anthropological Association, Chicago meeting, December 1939]

1940 "The parts of speech in Hopi" 15 pp, handwritten, MS among family papers. Annotated "finished Oct. 12, 1940."

(iii) व्होर्फ की रचनाओं से सम्बंधित पुस्तकें और लेख (चुनी हुई)

Andrews, E. Wyllys "The phonetic value of Glyph C of the Maya supplementary series" *American Anthropologist,* 40 755-758 (1938).

Brown, Roger W., and Lenneberg, Eric H "A study in language and cognition." *Journal of Abnormal and Social* Psychology, 49.454-462 (1954).

Carroll, John B Foreword to Whorf's "Language, mind and reality." *Etc, a Review of General Semantics,* 9 167-168 (1952).

Carroll, John B. *The study of language* Cambridge Harvard University Press, 1953.

Chase, Stuart. "How language shapes our thoughts" *Harper's Magazine,* April 1954, pp. 76-82

Chase, Stuart *The power of words.* New York. Harcourt, Brace, 1954.

Doob, L. W. *Social psychology.* New York. Holt, 1952

Feuer, Lewis S. "Sociological aspects of the relation between language and philosophy" *Philosophy of Science,* 20 85-100 (1953)

Hackett, Herbert. "Bibliography of the writings of Benjamin Lee Whorf" *Etc., a Review of General Semantics,* 9 189-191 (1952) [The present bibliography represents a revision and expansion of Hackett's bibliography] Hackett, Herbert "Benjamin Lee Whorf" *Word Study,* 29 3.1-4 (1954).

Hoijer, Harry "The relation of language to culture." Pp. 554-573 in A.L. Kroeber (editor), *Anthropology today* Chicago University of Chicago Press, 1953

Hoijer, Harry (editor) *Language in culture; conference on the interrelations of language and other aspects of culture* With papers by F Fearing, J H Greenberg, C F Hockett, H Hoijer, N. A McQuown, S Newman, C F Voegelin J F Yegerlehner, and Florence M. Robinett Chicago. University of Chicago Press, 1954 (Also published as Memoir 79 of the American Anthropological Association)

Kluckhohn, Clyde, and Leighton, Dorothea *The Navaho.* Cambridge Harvard University Press, 1946

Kluckhohn, Clyde. "Culture and behavior" Chapter 25, pp 921-976 in Gardner Lindzey (editor), *Handbook of social psychology* Cambridge Addison-Wesley Press, 1954

Kluckhohn, Clyde, and MacLeish. Kenneth "Moencopi variations from Whorf's Second Hesa Hopi *International Journal of American Linguistics,* 21.150-156 (1955).

Lenneberg, Eric H. "Cognition in ethnolinguistics." *Language,* 29 463-471 (1953).

Long, Richard C E "Maya and Mexican writing" *Maya Research,* 2 24-32 (1935).

Long, Richard C E "Maya writing and its decipherment" *Maya Research,* 3 309-315 (1936)

Mason, J Alden "The native languages of Middle America." Pp 52-87 in *The Maya and their neighbors.* New York · D Appleton-Century Co, 1940.

Murdock, George P, *et al* *Outline of cultural materials* New Haven Institute of Human Relations, Yale University, 1938

Osgood, Charles E. and Sebeok. Thomas A (editors) *Psycholinguistics : a survey of theory and research problems* Indiana University Publication in Anthropology and Linguistics. Memoir 10, 1954. (Also issued as a supplement to vol 49, *Journal of Abnormal and Social Psychology,* 1954)

Thompson, J Eric S "Pitfalls and stimuli in the interpretation of history through loan words" *Philological and Documentary Studies (Middle American Research Institute, Tulane University of Louisiana),* 1 2 (1943)

Thompson J Eric S *Maya hieroglyphic writing introduction* Washington D C · Carnegie Institution of Washington (Publication 589), 1950 Appendix III "Whorf's attempts to decipher the Maya hieroglyphs."

Thompson, Laura M. *Culture in crisis* New York Harper, 1950 [Chapter 8, pp 152-172, includes excerpts from Whorf's writings.]

Tozzer, Alfred M. (editor). *Landa's Relación de las cosas de Yucatan*, Cambridge, Mass, 1941 (*Papers of the Peabody Museum of American Archaeology and Ethnology, Harvard University*).

Trager, George L "Comments on B L Whorf's 'Phonemic analysis of the English of eastern Massachusetts.'" *Studies in Linguistics*, 2:41-45 (1943).

(घ) ग्रन्थ-सूची

(अनुवादक द्वारा तैयार की गई)

Adler, George J, *Wılhelm von Humbodt's Linguıstıcal Studıes,* (New York, Wynkop and Hallenbeck, 1966).

Austerlitz, Robert, *Semantıc Components of Pronoun Systems Gılyak,* Word, 15 (1959), 102-109

Barker, George C, *Socıal Functıons of Language ın a Mexıcan-Amerıcan Communıty,* Acta American Communıty, Acta Americana, V (1947), pp 185-202

Basilıus, Harold, *Neo-Humboldtıan Ethnolınguıstıcs,* Word, VII (August, 1952), 95-105.

Beckner, Morton, *The Biological Way of Thought* (New York, Columbıa, Unıversıty Press, 1959)

Bedau, H A, Review of J B Caroll (ed), *Language, Thought, and Realıty ın Phılosophy of Scıence,* XXIV (1957), 289-93.

Black, Max., *Lınguıstıc Relatıvıty: The Vıews of Benjamın Lee Whorf,* Phılosophıcal Review, LXVIII (Aprıl, 1959), 228-238

Boas, Franz (ed), Introduction, In *Handbook of Amerıcan Indıan Languages,* Part I, Washıngton, D.C, 1911.

Brıght, Wılliam, *Socıolınguıstıcs,* Mouton, The Hague, 1966.

Brown, Roger Longham, *Wılhelm Von Humboldt's Conceptıon of Lınguistıc Relatıvıty,* Mouton, The Hague, 1967

Brown, Roger and Albert Gılman, *The Pronouns of Power and Solıdarıty,* ın Thomas A Sebeok, ed, Style ın Language (New York); The Technology Press of the Massachusetts Institute of Technology and John Wıley and Sons, 1960, pp. 253-276.

Carroll, John B, *Lingıustıc Relatıvıty, Constrastıve Lınguis-*

tics, and Language Learning, International Review of Applied Linguistics in Language Teaching, I (1963), 1-20.

————*Language and Thought* (Englewood Cliffs, N J., Prentice-Hall, Inc, 1964).

Chambers, W W, *Language and Nationality in German Pre-Romantic and Romantic Thought,* Modern Language Review, XLI (October, 1946, 645-671).

Conklin, H C, *Lexicographical Treatment of Folk texonomies,* Int J Amer, Ling., 28 (1962), 119-141.

Feuer, Lewis, S, *Sociological Aspects of the Relation between Language and Philosophy,* Philosophy of Science. XX (April, 1953), 85-100.

Fishman, Joshua, A., *A Systematization of the Whorfian Hypothesis,* Behavioral Science, V (October, 1960), 323-339.

Fishman, Joshua, A., *Readings in the Sociology of Language,* Mouton, The Hague, 1968.

Goodenough, W H., *Property, kin, and Community on Truk.* Yale Univer Publ. Anthrop. No. 46 (1951).

Greenberg, Joseph H, *Concerning Inferences from Linguistic to Non linguistic Data,* in Language in Culture, edited by H. Hoijer (Chicago, University of Chicago Press. 1954), 3-19.

Haas, W., *The Theory of Translation,* Philosophy, XXXVII (July, 1962), 208-28.

Harris, James, *Hermes or a Philosophical Enquiry Concerning Universal.*

Hoijer, H., *Cultural Implications of some Navaho Linguistic Categories,* Language, 27 (1951), 111-120.

————(ed.) *Language in Culture* (Amer. Anthrop. Assn Memoir, No. 79), (Chicago Univer. Chicago Press, 1954).

Hoijer, Harry, *Linguistic and Cultural Change,* Language 24, 335-45.

Hoijer, Harry and Others, *Linguistic Structures of Native America,* Viking Fund Publications in Anthropology, No. 6, 1946.

Hoijer, Harry, *The Relation of Language to culture,* Anthropology Today (by A L Kroeber and others), pp 554-73, Chicago, University of Chicago Press

Hymes, Dell H, *On Typology of Cognitive Styles in Language,* Anthropological Linguistics, III (January, 1961), 22-54

Hymes, Dell H, *Linguistic Features peculiar to Chinookan Myths,* International Journal of American Linguistics, 24 (1958), 253-57

Linguistic Aspects of Studying Personality Cross-Culturally, in Studying Personality Cross-Culturally, ed by Bert Kaplan (Evanston, Row, Peterson, 1961), pp 313-59 (b).

Landar, H J, Ervin, S M, and Horowitz, A E, *Navaho Color Categories,* Language, 36 (1960), 368-382

Lee, D D, *Linguistic reflection of Wintu thought,* Int J. Amer Ling, (1944), 181-187.

Lee, DD, *Conceptual Implication of an Indian Language,* Phil Sci, 5 (1938), 89-102

Levi-Strauss, Claude, Jakobson, Roman, Voegelin, C F., and Sebeok, Thomas, *Results of the Conference of Anthropo logists and Linguists* (Indian University Publications in Anthropology and Linguistics, Memoir 8), Baltimore, Waverly Press, 1953

Levi Strauss, Clause, *Language and the Analysis of Social Laws,* American Anthropologist 53 155-63, 1951.

Lounsbury, F G, *A Semantic analysis of the Pawnee kinship usage,* Language, 32 (1956), 158-194

Lounsbury, F G., *Similarity and contiguity relation in language and in culture,* Inst Lang Ling Monogr, No. 12 (1959), 123-128

Lounsbury, F G, *Transitional Probability, linguistic structure, and system of habit-family hierarchies,* in Osgood and T.A Sebeck (eds), *Psycholinguistics . a survey of theory and research problems* (Ind Univ Publ Anthrop. Ling, 10 (1954), 93-101

Mandelbaum, David G (ed), *Selected writings of Edward Sapir.* Berkeley and Los Angeles, University of Califor-

nia Press, 1949.

Miller, Robert L, *The Linguistic Relativity Principle and Humboldtian Ethnolinguistics*, Mouton, The Hague, 1968.

Morris, Charles, Signs, *Language and Behavior* (New York. Prentice Hall, 1946).

O'Flaherty, James C, *Unity and Language A Study in the Philosophy of Johann George Hamann* (Chapel Hill, Uni veristy of North Carolina, 1952)

Postman, Neil, *Language and Reality*, Holt Rinehar and Winston, Inc., New York, 1966.

Ryle, Gilbert, *Systematically Misleading Expression*, in Logic and Language, edited by A Flew, First series (Oxford B Blackwell, 1952).

Sapir, Edward, and Morris Swadesh, *American Indian Gram-* Science, 74 578, 1931.

Sapir, Edward, and Morris Swadesh, *Americal Indian Grammatical Categories*, Word, 2 (1946) 103-12 Reprinted in Hymes (1964 a), 100-07.

Schneider, D M, and Roberts, J M, *Zuni kin terms*, Lab. Anthrop Note Book No. 3, (1956), 1-23.

Voegelin, C F, *Linguistics without Meaning and culture without words*, Word, 5.36-42, 1949.

Vogt, Evon Z, *Navaho Veterans: A Study of Changing Values. Papers of the Peabody Museum of American Archaeology and Ethnology*, Harvard University, 41, No 1, 1951.

Wallace, A.F C, and Atkins, J, *The Meaning of Kinship terms*, Amer, Anthrop, 62 (1960), 58-80.

पारिभाषिक-शब्दावली

अकन notation
अग theme
अतराण्विक intra-atomic
अतर्मुखता intraversion
अतर्निष्ठ inherent
अतर्मूलशब्दीय intra radical
अंतर्वाक्यीय शृंखलता intra-sentential linkage
अंशाकन calibration
अशसूचक partitive
अक्षर syllable
अघोष unvoiced/voiceless
अचिरस्थाई सघात non durative impact
अदृश्यता invisibility
अधिकरण locative
अधिभाषायी super linguistic
अधीनता सूचक subordinator
अधीनता subordination
अनवरत श्रेढी continual progression
अनुक्रमात्मक पदिम texemes of order
अनुबन्धात्मक सम्बन्ध linkage bond
अनुबन्ध शृंखलता linkage
अनुतान intonation
अनुलिपि mimeograph
अन्विति accord, agreement
अपक्रम variation
अपेशीय non motor
अपृथक्करणीय शब्दिम non-isolatable lexeme
अप्रकट covert
अप्रकट सरचना covert structure
अप्रेरणार्थक incausal
अभिभावी नियम overriding rule
अभिरचना pattern
अभिवर्धन augmentation
अभ्यास extrusion/reduplication
अयोगात्मक isolating
अर्थवाह ध्वनियाँ phonestheme
अर्थविज्ञान semasiology, semantics
अर्थिम semanteme
अल्पतम minimal
अल्पप्राण unaspirated
अवधि duration
अवरोध closure
अविकल्पी अभिरचनाएँ obligatory patterns
असमर्थी impotential
अस्थानिक unspatial
आतरिक संवहन inter convection
आकृति श्रेणी shape class
आक्षरिक syllabic
आक्षरिक लेखन syllabic writting
आगम augment
आगमनात्मक inductive

आज्ञार्थक imperative
आतानक tensor
आद्य initial, proto
आनुक्रमिक hierarchical
आवर्त्तगति rotative motion
आवृत्ति frequency
आश्रित वाक्य-विन्यास hypotectic
आश्रित उपवाक्य dependent clause
आसवन सयन्त्र distillation plant
इच्छार्थक desiderative/optative
इच्छार्थक वृत्ति optative mood
उच्चारण articulation
उत्तरकालीनीकरण latering
उत्प्रेरण catalysis
उद्घोषक वाक्य declarative sentence
उद्बोधक रूप hortative form
उपपद article
उपभाषायी sub-linguistic
उपरूप allomorph
उपरूपिमिक sub morphemic
उपवाक्य clause
उपवाक्य संयोजन clause linkage
उपविद्युताण्विक sub-electronic
उपशाब्दिक sublexical
उपस्वनिम, सस्वन allophone
ऊष्म sibilant
ऊष्मावरोधी insulated
एकरूपात्मक monomorphous
एकलकरण individuation
एकशब्दीवाक्य monophrastic sentence
कान्तर बलाघात alternating stress
एकाक्षरीय monosyllabic
ओलिगोसिन्थैटिक oligosynthetic
कठ throat
कठोष्ठ्य labiovelar
कपन vibration
कपनशील quavering
करणतत्व instrumental element
कर्त्ता subject/agent/nominative
कर्तृपदीय subjective
कर्तृप्रेरणार्थक casual active
कर्म object
कलन calculus
कला इतिहासज्ञ art historian
कारक case
कारकरूप case form
कारण वाचक प्रत्यय causal suffixes
काल tense
अपूर्ण कालिक काल progressive tense
तथ्यात्मक काल factual tense
भविष्यकाल future tense
भूतकाल past tense
वर्तमान अपूर्णकालिक काल present progressive tense
वर्तमान काल present tense
सामान्यीकृत काल generalized tense
कालनिर्देशन tension
काल व्यवस्था tense system
काल सूचक temporal
क्रिया verb
—आधिपत्य क्रिया verb of possession
—सकर्मक transitive verb
—सक्रिय करण की verb of activation
—सहायक auxiliary verb

क्रिया उद्देश्य action goal
क्रियाकरण verbation
क्रियात्मक वाक्य verbal sentence
क्रिया निर्देशक action director
क्रियारूप conjugation
क्रिया-विशेषण adverb
क्रिस्टल crystal
केन्द्रक वाक्य nuclear sentence
केन्द्रकीय nuclear
कैल्शियम कार्बोनेट calcium carbonate
कोलाइड रसायनशास्त्र collied chemistry
कोटि category
  अप्रकट कोटि covert category
  गूढ प्ररूप cryptotype
  परिवर्तक कोटि modulus category
  प्रकट covert
  प्रकट रूप phenotype
  प्रकार्यात्मक कोटि functional covert
  प्रभावी परिवर्तक कोटि affective modulus category
  वरण कोटि selective "
  वर्गिक " texonomic "
  वर्णनात्मक " descriptive "
  विकल्पी " alternative "
  विशिष्ट " specific "
  व्याकरणिक " grammatical "
  शाब्दिक कोटि lexemic category
  शब्द कोटि word "
  सामान्य कोटि generic "
क्षेत्रीय भाषाविज्ञानी field linguist
खंड segment
खगोल cosmos
गणना संख्या cardinal
गति motion
घन cube
घनिष्ठता व्यवस्था rapport system
घोष voiced
घोषत्व voicing
चक्रीयता cyclicity
चतुर्विमात्मक सान्तत्यक four dimensional continuum
चिंतन कार्य thinking function
चित्रलिपि Pictography,
चित्रलेख pictogram
छितराव dispersion
छेदन् drilling
जीवाश्म fossil
जुगत gadgets
ज्ञानमीमांसा epistemology
तन्त्रिकीय neural
तत्त्व element
तत्त्वमीमांसा metaphysics
तत्पुरुष determinative
तर्कसंगत logical
तर्कसंगत अवरोध logical impasse
तद्रूप identical
तान tone
तालव्य palatal
तिर्यक कारक oblique case
तीव्रक tensor
तीव्रता intensity
तुमर्थ infinitive
त्रिकात्मक कारणवाद triadic causality
त्रिविमात्मक three dimensinoal space
त्वरण acceleration

दंत्य dental
दीप्ति तापक glow heater
दीर्घता length
द्विचर-समूहन binray grouping
द्वित्व reduplication
द्वितीय अन्यपुरुष obviative
द्विध्रुवीय विभाजन bipolar division
द्विपद binomial
दृढकथन assertion
प्रत्याशी दृढकथन expectiv assertion
दोलन oscillation
द्रव्य matter
धातु root/verbal root/base
धातु-केन्द्रक root-nucleas
धातु-निर्धारक root determinative
धातु प्रकृति verb-stem
धारूक bearing
ध्वनिकि, ध्वनि, ध्वनि विज्ञान sound, phonetics
नामनिर्देशक उपपद nominative article
नामिक वाक्य nominal sentence
नामिकीकरण nominalisation
नामीकरण nomination
निगृहीत suppressed
निपात particle
निमित्तवाची तत्त्व directive element
निरपेक्ष-कारक absolute case
निरपेक्षिक प्रत्यय absolute suffix
निर्देश reference
निश्चयार्थक वृत्ति indicative mood
निषेधात्मक negative
निषेधात्मक रूप negative form
निहितार्थ implied meaning
नेति-नेति प्रक्रिया process of elimination
पद term/word
पदिम taxeme
अनुक्रमात्मक पदिम taxeme of order
वरणात्मक पदिम texeme of selection
परप्रत्यय suffix
परप्रत्यययोजन suffixing
परसर्ग post-position
परिणामवाची resultative
परिप्रश्न interrogation
परिमेयकरण rationalization
आश्रित परिवर्त conditional alternation
परिवर्तक alternative
परिवर्त, परिवर्तनीय variable
पक्ष aspect
अतिवाचक पक्ष intensive aspect
अपूर्णतावाचीपक्ष impterfective aspect
अभ्यासी पक्ष usitative ”
आरभमाण पक्ष inceptive ”
आम्रेडित पक्ष interative ”
अवधिवोधक पक्ष durative ”
काल विन्दुनिष्ठ पक्ष punctual aspect
कालविंदुनिष्ठ खण्डात्मक पक्ष punctual segmentation aspect
खण्डात्मक पक्ष segmentative ”
पूर्णतावाची पक्ष perfective ”
प्रथापरककाल पक्ष nomic tense ”
पौन पुनिक frequentative ”
प्रक्षेपी पक्ष projective aspect
वर्धमान पक्ष progression ”
सान्तत्य वोधक पक्ष continuative ”
स्थान बोधक पक्ष spatial ”

पाठ text
पार्थक्य isolation
पार्श्विक lateral
पुल्लिंग masculine gender
पुनरावृत्ति recurrence
पुरुष person
पूर्ण-शब्द full-word
पूर्वसर्ग preposition prefex
पूर्व प्रत्यययोजन prefixing
पेशीय motor
प्रकट प्ररूप phenotype
प्रकट रूप overt form
प्रकट संरचना overt structure
प्रकारक modalizer
प्रकारता modality
प्रकारता अनिश्चयवाचक indeterminate modality
प्रकारता, अनुमोदनात्मक concessive modality
प्रकारता, अविध्यर्थक impotential modality
प्रकारता, आवश्यकता सूचक necessitative modality
प्रकारता, उद्धरणात्मक quotative modality
प्रकारता, निरोधात्मक inlulative modality
प्रकारता, निश्चयार्थक indicative modality
प्रकारता, परामर्शी advisory modality
प्रकारता, विध्यर्थक potential modality
प्रकार्यात्मक प्रतीकवाद functional symbolism
प्रकृति, अंग base
प्रक्षिप्त अंश interposition
प्रतिघात reactence
प्रतिबिम्ब रूपवाद enation morphism
प्रत्यय suffix
प्रथापरक nomic
प्रभावी अंकन affective marking
प्रभावी प्रवर्धन affective augmentation
प्रभावी लघ्वीकरण affective diminution
प्रमात्रावाद quantum theory
प्रयोग व्यक्ति subject
प्रयोगात्मक काल applicative tense
प्रयोगात्मक काल usitative tense
प्रविधि technique
प्रश्नवाचक वाक्य interrogative sentence
प्रातिपदिक stem
प्रेरणार्थक casual
फलन function (math)
बल emphasis
बलाघात accent
बलाघूर्णन torque
बहिर्मुखता extraversion
बहुवचनीकारक विश्लेषण pluralising adjective
बहुभुज polygon
बहुरूपात्मक polymorphous
बहुश्लिष्ट रचना polysynthetic
बहुसंश्लेषण polysynthesis composition
बिंदु-क्षण point-moment
बीजगणितीय algebraic
बुदबुदाए हुए शब्द mumbled words
ब्रह्माण्डीय cosmic
भभके stills

भाववाच्य mediopassive
भावात्मक affective
भावात्मक अकन affective marking
भाषायी उपगम linguistic approch
भाषिकी का विज्ञान, भाषा-विज्ञान, भाषिकी science of linguistics
भाषा सार्वभौमिकताएँ language universities
भूतलक्षी रूप retrospective forms
मध्यप्रत्यय योजन infixing
मनोग्रन्थियाँ complexes
मनोविश्लेषण psycho-analysis
मनोवृत्यात्मक mentalistic
मान्यतासूचक रूप validity forms
मुखवन्धिनी gap
युग्मन pairing
रासायनिक इन्जीनियरी chemical engineering
रासायनिक मिश्रण chemical mixture
रिक्त शब्द empty word
रूढ़ customary
रूढिपरक, पर्यायगत nomic
रूप-विज्ञान morphology
रूपात्मक प्रविधियाँ morphological techniques
रूपावली शब्द paradigm word
रूपिमीय morphemic
रूपस्वनिमिक, मर्पस्वनिमिक morphophonemics
लघुतावाची diminutives
लघु ब्रह्माण्ड microcosm
लिंग gender
लिंग, अचेतन inanimate gender
लिंग, अतर्क सम्मत irrational gender
लिंग, तर्कसम्मत rational gender
लिंग, चेतन animate gender
लिंग, पुरुषवाचक personal gender
समेकित लिंग integral gender
स्त्रीलिंग feminine gender
पुल्लिंग masculine gender
लुप्त-रूप elliptic forms
लेखिम grapheme
वाक्य sentence
वाक्य प्रारम्भक sentence introducers
वाक्यगत अनुरूपता sentence harmony
वाक्य-विन्यास syntax
वाक्यारम्भ चिह्न sentence initial marking
वाक्यांत चिह्न sentence and marking
वाक्यों की सन्निधि juxtaposition of sentences
वाच्य, voice
वाच्य, अविकर्म semipassive voice
वाच्य, कर्म passive voice
वाच्य, निज वाचक reflexive voice
वाच्य, परिणाम वाचक resultative voice
वाच्य, विजातीय भाषा exotic language
वाच्य, विभक्तिपरक inflexional voice
वाच्य, सम्बन्ध-वाचक possessive voice
वाच्य, समर्थक transitive voice
वाच्य, समाप्ति सूचक cessative voice
विद्युत् आवेग electric charge
विद्युत् विभव electric potential
विद्युदणु electron
विद्युदणु-विज्ञान electronics

विद्युदाण्विक electronic
विधेयक predicater
(उद्देश्य) विधेय क्रम subject-predicate order
विधेयन predication
विधेयात्मक predicative
वियोगात्मक isolating
विराम रूप pause forms
विस्तारित कर्मवाच्य extended passive voice
विशेषक modifier
विशेष चिह्न तत्त्व special marking elements
विशेषण attribute/adjetive
विशेषणीकरण adjectivization
विश्लेषण resolution
विषयीकरण objectification
विविक्तता सम्बन्ध discreteness connections
विस्मय बोधक interjections
विस्मयसूचक रूप exclamative forms
वेग elements
वंश परम्पराविज्ञ geneologist
वनस्पतिशास्त्री botanist
वरण selection
(पदिम) वरणात्मक texeme of selection
वर्गिकी कोटियाँ taxonomic categories
वर्णलोप apostraphe
वृत्ति mode
वृत्ति अनुक्रमणीय segmential mode
वृत्ति अनुज्ञापक permissive mode
वृत्ति अनुमतिवाचक concessive mode
वृत्ति, अनुमिति inferential mode
वृत्ति, इच्छार्थक optative mode
वृत्ति, कर्तृवाची agentive mode
वृत्ति, निश्चयवाचक indicative mode
वृत्ति, परासम्बन्धी transselative mode
वृत्ति, विध्यर्थक potential mode
वृत्ति, विरोधवाचक adversative mode
वृत्ति, सगामी concursive mode
वृत्ति, सभावनार्थक subjunctive mode
वृत्ति, सशयवाचक dubilative mode
वृत्ति, सहसम्बन्धी co-relative mode
वृत्ति, स्वतत्र independent mode
वृत्ति, हेतुमद् conditional mode
वृत्ति, उपवाक्य mode clause
वृत्तिभाषा jargon language
व्यजन consonant
व्यवहित क्रम interrupted order
व्युत्पत्ति derivation
शपथवाची शब्द swear words
शब्द-क्रम word-order
शब्दगत अनुक्रम lexical hierchies
शब्दिम् lexeme
शब्दीकरण lexation
शाब्दिक अनुक्रियाएँ verbal response
शाब्दिक मिश्र verbal complex
शून्य-रूप zero-form
श्वासद्वारीय स्पर्श breath-catch
सकेतित पदार्थ referent
सघनित्र condenser
सचयी cumulative
सचार communication
संज्ञा noun

संज्ञा, उत्पन्न स्थिति की noun ofstate produced
संज्ञा, करण की noun of the instrument
संज्ञा, करणात्मक iustrumentive noun
सज्ञा, कर्त्ता की noun of the doer
सज्ञा, कर्तृ agentive noun
संज्ञा, क्रियावाचक action noun
संज्ञा, क्रियार्थक infinitives noun
सज्ञा, क्रियार्थक gerundials noun
संज्ञा, पक्ष Phase noun
संज्ञा, भाववाचक abstract noun
संज्ञा, भावार्थक gerunds noun
संज्ञा, स्थान place noun
(विशेपण) संज्ञाएँ nouns of the affecte
संज्ञा निर्देशन noun designation
संज्ञा समावेशन noun incorporation
संज्ञा, स्थितिवाचक state noun
संतत continual
संन्निकट क्रम adjacent order
संन्निवेशन subsumption
संपाती होना coincide
सप्रेक्षण transmit
संवोधन vocative
संवोधन रूप address forms
संभावनार्थ subjunctive
सम्मानसूचक रूप respect forms
संयन्त्र apparatus
सयुक्त व्यंजन consonant cluster
संयोग combination
सयोजक copulative
सयोजक विघटन copulative resolution
संयोजकहीन वाक्य-विन्यासात्मक paratactic
सरचना structure
संरचनात्मक architectonic
सश्लेपण synthesis
अन्तरायित सश्लेपण interrupted synthesis
सक्रियकरण activation
सक्रियात्मक प्रतीकवाद operational symbolism
सदिश vector
समकक्ष corresponding
समन्वयकारक co-ordinating
समशब्दार्थ iso-semantic
समाकृति configuration
समानाधिकरण प्रकार coordinate types
समास compound
समास रचना compounding
समीकरण equation (math)
समुच्चयबोधक conjunctions
समुदाय वाचकता collectivity
समुदिष्ट referent
सर्वनाम pronour
सर्वनाम, अनिश्चयवाचक indifinite pronoun
सर्वनाम, निमित्तवाची directive "
सर्वनाम, निपेधात्मक negative "
सर्वनाम, पुरुषवाचक personal "
सर्वनाम, प्रश्नवाचक interrogative "
सर्वनाम, सम्बन्धवाचक relative "
सर्वनाम, सश्लिष्ट synthetic "
सर्वनामीय अनुबध pronominal linkage
सर्वादेश suppletion
सह विस्तारी co-existence

सह्-सम्बन्धी corelative
सान्तत्यक continuum
सांस्कृतिक मानवशास्त्र cultural anthropology
साधित रचनाए derivative formations
सापेक्षतावाद relativity theory
सामग्री apparatus
सामान्य general
सामान्यता generality
सामान्य लिंग common gender
सार्वनामिक pronominal
सार्वनामिक समावेशन pronominal incorporation
सूचकेतर non-reportive
सूचनात्मक दृढ़कथन reportive assertion
सूत्र formula
स्थानपरक प्रसार spatial extension
स्थान श्रेणी locus class
स्थिति status
स्थिति, अनिश्चयवाचक indefinite status
स्थिति, उद्धरणात्मक quotative status
स्थिति, निषेधात्मक indefinite "
स्थिति, प्रश्नसूचक interrogative "
स्थैतिक static
स्पन्दनात्मक गति vibrative motion
स्वनगुणिमिक prosodic
स्वनगुणिमिक जटिलता prosodic complexity
स्वनिम phoneme
स्वनिमिक प्रतीकवाद phonemic symbolism
स्वनिमिक कलन phonemic calculas
स्वनिमो का प्रकट संयोजन overt manipulation of phonemes
स्वर vowel
स्वर-संगति vowel-harmony